3 1761 04116 0441

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ

ΕΚΛΟΓΩΝ ΒΙΒΛΙΑ Β.

IOANNIS STOBÆI

ECLOGARUM PHYSICARUM ET ETHICARUM LIBRI DUO.

ACCEDIT

HIEROCLIS COMMENTARIUS

IN

AUREA CARMINA PYTHAGOREORUM.

AD MSS. CODD.

RECENSUIT

THOMAS GAISFORD, S.T.P.

ÆDIS CHRISTI DECANUS

NECNON

LINGUÆ GRÆCÆ PROF. REG.

TOM. I.

OXONII:

E TYPOGRAPHEO ACADEMICO.

MDCCCL.

PRÆFATIO.

CODICES Eclogarum Physicarum et Ethicarum Ioannis Stobæi, quotquot hactenus innotuerunt, recentes[a] sunt admodum, mutili et mendosi. Ceteris fortasse minus vitiis inquinati sunt Vaticanus et Augustanus: ambo, ut videtur, ex eodem fonte profecti. Horum quum Augustano, hodie in Bibliotheca Regia Monacensi custodito, per aliquod tempus mihi frui licuerit, eum cum editione Heereniana sedulo contuli, hoc præsertim consilio, ut de fide viri eruditissimi in isto codice excutiendo judicium ferre possem. Vidi statim eum haud raro secus ac debuerat lectiones istius codicis exhibuisse, nonnulla subinde prætermisisse, haud semel aliis codicibus lectiones tribuisse quæ in Augustano comparent. Igitur diligentiore collatione instituta, ad novam editionem pa-

[a] His dudum scriptis intellexi ex Catalogo Codd. MSS. Escurialensium, studio et labore Em. Milleri confecto et Parisiis edito a. 1849. (p. 89.) etiamnum in Bibliotheca ista exstare n. Σ. II. 14. Ioannis Stobæi Eclogarum codicem membranaceum sæculo XI exaratum. Subirascor viro egregio quod nullum ne brevissimum quidem specimen protulerit quo quis certius de codicis hujus indole et præstantia statuere queat. Quanto melius fecisset et litterarum reipublicæ gratius si dieculam unam atque alteram seposuisset huic codici accuratius explorando et lectiones ab editis diversas hinc inde excerpendo, missis aliis haud paucis, quibus absque incommodo carere-mus. Insuper satis mirari nequeo indiligentiam Tychsenii, qui annis abhinc plus minus sexaginta Bibliotheca Escurialensi lustrata duos tantum ibi se reperisse profitetur codices Stobæi (vid. Heeren. Præfat. p. xxxviii. xxxix.) utrumque chartaceum et recentem, alterum olim Antonii Augustini, alterum ex ipsa editione Canteriana descriptum. Nam præter vetustum illum tres recentes memorat Millerus, notatos R. I. 11. T. II. 2. V. 1. 6.

randam me accinxi, in qua animus est non ex incertis conjecturis, sed quoad ejus fieri potest Excerptorum verba ad MSS. exemplarium fidem exacta emendare, necnon haud pauca ab Heerenio inconsulto omissa in suum quæque locum reponere. Quod si aliquoties ex editione Heereniana huc irrepserint, id quod factum esse nunc serius vereor, quæ et ipse minus probo et quæ peritioribus displicitura sunt, ea omnia corriget, ut poterit, æquus et eruditior lector.

Præter codices Augustanum et Vaticanum in præfatione editionis Gottingensis a. 1792. commemorantur duo Neapolitani, duo Escurialenses, unus Parisiensis, unus Mediolanensis, quorum lectiones iterandas curavi quemadmodum ab Heerenio proditæ sunt. His nunc accedat unus Musei Britannici, Harleianus n. 6318. chartaceus, recentissimus, quod ad principium et finem attinet cum editione Canteriana conveniens, foliis scilicet sicut in ea editione perverso ordine collocatis, nonnulla tamen exhibens quæ in ea editione non reperiuntur, veluti lib. I. c. 3. nn. 2—13. 56. et fortasse alia. Eum raptim percurri, lectionesque hinc inde excerpsi infra videndas, quibus perpensis nemo dubitabit codicem hunc contextui constituendo parum aut potius nihil profuturum.

Lectiones e codice ms. Harleiano excerptæ.

Ed. Oxon.
p.18.v.12. οἴῳ τε εἶναι] εἶναι om.
—, 14. βασιλεὺς] βασιλεύων
—, 16. τοῦτε] τοῦτο
—, ib. τὸ Διὸς] τὸ om.
—, 17. χρήσεσθαι] χρῆσθαι
p.19,20. τὸν μὲν] τὸν δὲ
—, ib. τοιῶδε] τῷ δὲ
—, 21. διαλέγηται] διαλέγεται
—, 22. ὁ δὴ] ὁ δὲ
—, 25. τούτοις] τόποις
p.19,32. πρᾶτον] πρῶτον
—, 33. χορευτὰ et κορυφὴν
—, 34. ὁ δὲ] οὐδὲ
p.20,38. σώμασι] σώματι
—, 40. οἰκητέρου
—, 41. οὗτος] οὕτως et mox ὄντος
—, 42. ἐσσόμενον et mox ἐσσόμενος
—, 43. λεγόμενος om.
—, 44. ἐπ' ὠκ.] ἐς ὠκ.
—, 4. χρὴ] χρῆν
—, 7. τῆς ἐπανόδου τῶν θεῶν
p.21.18. διὰ τοῦ] διὰ τοῦτο
—, ib. θείαν] θείας
p.22,20. χρὴ] δεῖ
—, 21. ἐνδιοικούσας] ἐνδιηκούσας
—, 29. αὐτὸς ὁ] ὁ αὐτὸς

p.22,30. δαίμονα om.
—, 32. ἔχον μὲν] ἔχομεν
—, 33. συνεξομοιούμενον] συνεξωμοιούμενος
p.23 ad n. [u]. τὸ μὲν ἓν λείπει fere ut ed. Cant. Seq. κ[e] β. τὴν δὲ περὶ τοὺς ἀρ. .
—, ib. ἀνάγκην] ἐνανάγκην
—, pen. φιλίαν] φ. καὶ λ.
—, ult. κόσμου et πρὸς τανλυθήσεται
p. 24, 2. μετέχοντας] μετέχον
—, 9. παντὸς] πάντα
—, 10. Θεὸν] Θεῖον
—, 12. ἐνδιοικεῖν] ἐνδιήκειν
—, 13. τὴν μὲν ἀειδῆ π. ut Cant.
p. 25, 1. δὲ τὸ] δὲ om. τὸ μονοφυὲς om.
—, 5. συμπεπλεγμένον] συπεπνιγμένον
—, ib. τῷ παθητῷ] τῷ πάθει τὸ
—, 7. ὅ τε] ὅτι
—, 8. παραδείγματα δὲ] παράδειγμα δ'
—, 9. ἄλογοι] λόγοι
—, 10. καὶ ἀσώ.] καὶ om. et mox αἰσθητὸς ὁ τοῦ
—, 13. χωριστὸν om.
p. 26, 1. στοικοὶ ἐρὸν θ.
—, ib. ἐμπεριειληφὸς πάντας] ἐμπεριειληφῶς τὰς
—, ib. ἐνδιῆκον] μὲν ἓν διῆκον
—, 40. δι' ἧς κεχώρηκε παραλλάξαι
—, 42. θεὸν
—, 44. διαρήτους—Tum εἰδώλων om.
—, 46. κενὸν] καινὸν
—, 47. ὁμοιομερίαι
—, 48. Ἑρμοῦ om.
—, ib. τῶ σῶμα
—, 52. ἀναθεῖναι
p.27,53. τοῦ κραταίου—ἐκάθαρεν
—, 54. προβάτα
—, 55. θειαυτῶν—ὀλαιοδότα
—, 56. πρεσβὶς—ὑγίας
—, 57. ἐπιφανέντα
—, ult. πάρεδρος
—, 1. ἐν παντὶ ἔργῳ
—, 2. ἃ πάντα φύονται
—, 3. ἀρείαν
—, 4. ὑμνέωμες
—, 5. ἐν ποιῶν
—, 7. εἰ μὴ ἐγὼ
p. 28, 8. Θεοῦ 'στὶν om. εἰ μὴ
—, 9. deest vs.
—, 11. πᾶσα
—, 12. ἁπανταχοῦ—παρὼν om.
—, 16. ἐφ. ἑκάστου
—, 19. γενόντων
—, 20. ἀχρηστίαν
p.29,30. κολεὸν
—, 31. ἐπιτελεσμένων
—, 32. τεχνήτου ut sic inf.
—, 37. πρὸς τὴν συνουσίαν ἑκατέρου
—, 42. προστιθέαμεν. Tum καὶ συντίθεμεν om.
p.30,55. οὐρανοῖς mox δοκεῖ σοι ἔφη
—, 2. ἐκφέρει καρπόν
—, 4. ἀποβάλλει et φυλλοροεῖ om.
—, 5. συνειρούμενα
—, 10. ἐνδέδυται
—, 12. συναφεῖ
—, 13. οὖσα
—, 20. ἀναπνευστικῶς
p.31,21. ἴσ. ἐφεστικῶς marg.
—, ib. οὗ τῶν
—, 22. σαυτῇ
—, 23. κρινόμενος—πρώτοις
—, 24. τετυποκῶσι τέχναις τε ἄλλαι
—, 26. οὐχ οἵων ὥστε
—, 27. ἴσχυν δίδωσιν
—, 30. ἀπέχεσθαι
—, 31. μέρος ὢν et mox τὸν ὅλον
—, 35. πρὸς τὸν Ποιμ.
—, 38. παραμυθείαν—ἀπεργάζονται
—, 40. πᾶσαν
—, 42. ἡ πεπρωμένη
p.32,44. τὸν ἄτακτον
—, 47. βουλῇ
—, 48. ἅρματα
—, 51. δὲ καὶ
—, 53. τὸ δὲ ἄ.—κεχωρισμένω σωματικῶς
—, 54. ἱδρωμένος sine γὰρ
—, 57. οἰκονομεῖται qui om. seqq. ut Cant. Pergit ὅλως δὲ ut Cant.
p.37.not.[b] νομεὺς ἡ—γὰρ ὁ θεὸς—συμπάντως — δυνάμεις — νομεῖς —καὶ τὰ π.
—, 33. αἰσθητὰ—δοκέει.

p.38. 33. εἶμεν
—, 35. βασιλεύει
—, 39. εἰσι—σύν τε τῷ
—, 40. πράττω
—, 42. ὑπεροχῆς
—, 44. τὸν πρᾶτον—χορευταὶ ποτὶ om.
—, 45. στρατιῶτα
—, 47. ἔχοντα
—, 49. καθαγεωμένω ξοινὸν—ἔστιν
—, 50. τὸ ἄρχοντι (α)—δύναντο
—, 52. οὐδὲ χορευταὶ π. συναοιδίαν οἱ δὲ
p.39,53. στρατηγὸν ἀπολειφθέντες ἀγεμόνος τοὶ μὲν στραταγῷ κορυφαίω
—, 54. συγγενέως
—, 55. ψυχῷ (ας)
—, 56. οἱ γὰρ δι' ὅλων ἐστὶ ψυχὰς
—, 57. κρατὲν
—, 58. τοῦ σ.
—, 59. θεῖόν ἐστι
—, ib. θαντὸν καὶ θεμολογὲς—μιαίνειν
—, ib. τό τε φ. post νόθον pergit H. τὴν ἐνανάγκην—v. sup. p. 23=5. ed. Cant.
—, 1. δι' ἀδίαν
—, 3. γενέως
—, 4. ἐστι
—, 5. γὰρ om.
—, 6. δινούμενα—δὲ καὶ
—, 7. ἐστι—τὸς διόλω
p.40, 8. τοῦτο δὲ—διαιρεῖν
—, ib. περὶ ἐβαρεστήσεως
—, 10. ἡ μὲν
—, 12. οἱ καὶ εἶναι καὶ
—, 15. ἀνθρωπίνων
—, 16. πέμπει
—, 21. οὕτως
—, 23. εἰς με
—, 25. ἐπεσκεμμένως
p.41.n.3. ὁρᾶ—δίκαν ἅ. ἔγουσαν
p.42,1. πέφυκε
— n. 6. οὐ δῆκται πῶς
— n. 8. εἱμαρμένων
— n. 9. οὐχ εὕδει—ὧν πόνω
— n. 10. γηράσεται
p.43,38. ὁποσοῦν
—, 39. γράφοντας
—, 42. βούλεσθαι
—, 44. τοῖσι
—, 47. βροτῶν
—, 48. καδίκων. Mox post δίκη plene interpungit, et nescio an a seqq. sejungat.
— n. 17. ἑστὼς—ὁρόμενον (λ)—ᾧ μελει
— n. 18. ὥστε τῆς ἐπικουρίας—βῆμα ἂν—τέλος γ. ἵκηται
— n. 19. lemma deest
— ib. λεύσων—πάνθ' ὅμως
— n. 20. πίπτει—φύσις βλαστὸν
— n. 21. οὔ τι—σιγῇ—μάρτει
— n. 22. γὰρ παραύτικ'—καὶ οὐ δι' —ἂν ηὔξατο
— n. 23. lemma ἀνδρομᾶ (χ) αἰσχὶ (λ)
p.46.n.28. στείχοντα—δόχμειον ἄλλο δ'
— n. 29. οὐδ' ἓν—ποιεῖς
— n. 30. ad h. v. in marg. ἠξίονος
— n. 31. τιόυσι.
— n. 33. ἔστι κακός.
— n. 34. Ζεὺς π. Ζεῦς μὲν—λεωργὰ καὶ θέμιτας οἷ
p.47.n.36. βλάπτειν—φύγοι
— n. 37. τὰς δίκας
— n. 38. κλεοποίνους—τε om.—ἐφεποῦσα—λήγουσαι—πρὶν ἂν ἀποδώωσι
— n. 39. αἴαντος in marg.
— n. 40. δοκεῖ—αὐθέντεσι—ἢ τὰ. —δίκην
— n. 41. μόνη εἰσιν
p.48.n.42. μηδὲν σὺ ποίει
— n. 43. κακὰν
— n. 44. κακῶσ (ο)
— n. 45. τὰς ἀ. βιωτὰς
— n. 46. ἄνδρασι
— n. 47. δοκεῖς θεῶν—μακρὰν ἀποκεῖσθαι—οὐκ ἴσθα (χ)
p.49.n.48. εἰ δ' ἂν—ὅσιος
— n. 49. lemma δημοσθενόω
— ib. ἐὰν τύχῃ—φορᾶται—καταρεῖ
— n. 50. καλοὺς μηδὲ ἀγαθοὺς
— ib. ὅμοιον τε δρᾶν
— ib. πολὺ αἳ διαφέρον
— n. 51. ἔδωκεν ὁ Ἵππαρ.

p.50. ib. *αἰνίττεσθαι*
— ib. *τλῆθι λέγων*
— ib. *ἀδικέων*
— n. 52. *Ἑρμῆς*
— ib. *ὁρῶσαν* mox *οὖν* om.
— ib. *ἡ* om. ante *πρόνοια*
— ib. *ἐκεῖνα*
— ib. *θεῖον* v. seq. *τὸν θεῖον*
— ib. *θνητῶν ὂν ἐκ κακῶς ὑ. συνεστῶς*
— ib. *ἐκείνης*
— ib. *ἐπικρατῆ — ἡμαρμένη ὑπόκειται*
— n. 53. *προδιαληπτέον*
—, 51. *ἡ* ante *βεβαιότης* om.
—, 53. *ἔμπεδον τὸν ἅπαξ*
p.51,56. *γὰρ ἂν*
—, 57. *καὶ ὢν*
—, 58. *κολάσε*
—, 59. *διοικῶεν*
—, 1. *δύναίται*
—, 3. *ὁ καὶ θυσ.*
—, 8. *αἴτιοι τ. οἱ θεοὶ*
—, 9. *ἀξίοις*
—, 10. *ἐλαττώσεσι*
—, 16. *κοινῶ*
p.52, 2. *προαίρεσιν* etc. om.
— n. 55. *καὶ μέσα τῶν—ἀσεβέστατος εἶναι* p. 54 om.
p.54.n.56. *στυγοῦς*
—, 24. *ἰδοὺ ἡ ἐπὶ—ἀντωνίου*
—, 25. *ἐμισῶν*
—, 26. *λόγον*
—, 28. *δοκιμαστηρίου—ἰδῶν*
p.55. ib. *μὴν θέλοντα*
— ib. *διέρχον τοίνυν*
— ib. *ὁτοῦ οὖν εἰς—ἐπιβάντος*
— ib. *μένων*
— ib. *ἀνάγουσι*
— ib. *τοῦ σπανίως*
— ib. *γιγνόμενον ἔλεγ. ἑκουσίως*
— ib. *ὁμοῦ καὶ*
p.56. ib. *εἰδεῖν*
— ib. *μαζὸν τὸν δεξιὸν* spatiolum *ἥλιον περὶ τὸν ἀρίστερον δὲ*
— ib. *ἁπλῶς* spat. *ἐστί*
— ib. *ἵνα θυτὸν ἔχει*
— ib. *ἐξήτασα*
— ib. *σανδάλως*
— ib. *ἀργύρεος*
— ib. *καὶ ἀσηπτοτάτῳ* om.
— ib. *περὶ τῶν*
p.57. ib. *ἐνδοτέρω κεφαλῇ τούτου—καθήμενον.*
— ib. *ἧς*] *θύρας*
— ib. *οἱ δὲ ἐν*] *ἐν δὲ*
— ib. *στενουμένης αὐτῆς*
— ib. *καὶ* om. ante *δέησιν*
— ib. *νιστεύωσι* mox om. *τινα*
— ib. *τοὺς περὶ*
— ib. *φθινόπωρον*] *φινόμενον*
p.58. ib. *πειρᾶν ἑαυτῶ*
— ib. *γλυφῶς*
— ib. *ἰνδοὶ*] *ἰδοὶ* et mox om. *τοῦ*
— ib. *τιανέα*
— ib. *λέγω—βραχμεῦσι λόγον*
— ib. *ἐμνήσατε*
— ib. *οἶμαι τάνταλον λέγειν*
— ib. *ἀρίσασθαι*
— ib. c. 4. in tit. *κατὰ* om.
—, 30. *κρατοῦσιν*
—, 32. *πᾶν τὸ λῆμ'*
—, 33. *ἡμῶν ἐρείδης τῆς τε*
p.59,37. *ἀνάγκῃ*
—, 38. *θεός* om. ubi *πολεμιωτάτης*
—, 41. *ἦρξα*
—, 42. *ἀψάμενος*
—, 44. *εὗρον οὐδέ τε*
— n. 4. *φιλητοῦ*
— n. 6. Inserit post h. v. *θάλητος. σοφοκλῆς θυέστη. εὐρι^π διδύμου. ἑρμοῦ. ἐκ τοῦ πλάτωνος. ἄκμονα πυθαγόρου.*
p.60.n. 7. *τὶ γὰρ* ut Cant.
—, 51. *Παρμενίδου καὶ Δημοκρίτου*
—, 52. *ἢ δίκην*
—, 55. *λευκίππου* et mox *λευκίππου* pro *λέγει*
— 3. *οὐκ ἐξ ἀνάγκης*
p.61, 5. *ἐγεννήθην οὐ*
p.63,38. *μοῖρα*
—, 41. *δ'* post *θνητοῖς* om.
—, 42. *ὄλβος τ'* tum lemma exhibet fere ut A.
—, 43. *πάνφερσις*
—, 44. *ἐπιχρίπτει*
—, ib. *ἐπάλαν* et mox *δεῖσα*

p.63.n. 4. ἅπαντ' ὁ
— n. 6. ἅτετ' ὄλβιον οὐ π. et post γενέσθαι add. εὐριπι[δ] ἡρακληδῶν
p.64,50. οὔτε mox om. ὁ ante πρόθυμος
— n. 7. in lem. ἐκ τῶν βίωνος βουκολίων εἰς εἰάκινθον.
—, 55. ἐπεβώετο
—, 56. χρεῖεν bis ἀμβροσίᾳ
—, 57. ἀναλθία
— n. 8. μῆρ' οὐδὲν
— n. 10. ἀγχόταται θ. ὀζόμεναι
— n. 12. ἐπακοῦσαται
p.65,10. ἄμιν ῥοδόκολπον
— n. 14. lem. περὶ εἱμαρμένης Ἑρμοῦ
—, 17. νυκτιφανεὶς et om. στυγνὸς κρόνος
—, 18. ad εὔπτερος nihil enotavi
—, 19. ἀργιγένεθλος
p.66,24. χολὴν
—, 26. Κυθέρια
—, 27. τοῦτο
p.67,44. τάξιν
—, 45. δὲ τῷ δευτέρῳ mox ὅρων om.
—, 54. ἐπιβουλὰς
—, 56. ἕκαστα
—, 57. ἄτροπος
p.68, in. αἰτιμολογικὴν
p.69,30. καὶ προτεταγμένην om. Tum τῆς αἰτίας
—, ib. ἐπιτελεῖ — συνδεῖν — πρὸς αὐτὸν — μονοειδῶς — περιλαβοῦσα
p.72,39. κυβερνῶν—στρέφων
—, 40. ζωονῶ
—, 42. ἅπανθ' ὅσα ποιοῦμεν ἢ
—, 43. τύχης ἐστιν
p.73,46. χερεῖν κ.
— n. 4. εὐστόν τι
— n. 5. ἐπηρεατικὸν
— n. 6. ἐπίκοα
— n. 7. πράγματ' habet.
p.74.n.9. in lemmate κηδίου
—, ib. ποῦ θεου
— n. 10. ἐνίατε[ο] χρήσιμον
— n. 11. in lemmate ἀποκαρτελλοῦντι
— ib. οὐδ' ἔτι
— ib. ὅταν γίγνοντ'
— ib. οὐκ ἔστιν
— n. 13. τύχαν—τέρματι καὶ σοφίας καὶ τιμὰν
p. 75. ib. πλάσταγγι
— ib. σὺ δ' ἃ μαχ.
— ib. προφερέστατα
— n. 14. καὶ καθευδ.
— n. 15. μεταστρέφει
— n. 16. οὖν add.
— n. 17. Ἀριστοτέλους
p.78.n.19. in lemmate εὑρίσω
— ib. τάχα
p.79,11. ἀτυχὰ—τῶν—γινομένων
—, 12. φύσιν ἔντιν ὑ. φύσεως
—, 15. ἐπὶ τὸ συμβαῖνον — ἀπροαισθήτως
—, 18. ῥητὸν—ἔχοντα
—, 19. ἄλογος
—, 24. ἀντιδιαιρέοντα
—, 25. ἐπικρατεύσασα
—, 26. καὶ om.
p.80,31. φοβεῖτ'
—, 32. σαφῶς
—, 33. γίγνεσθαι[ε]—ἡ τύχη
—, 36. πονῶ
—, 37. ἀλλ' ουτε κακῶς
—, 42. πείσομεν
p.81,48. θάλην[ει]
—, 51. πρὸς φόροις
— n. 10. in lemmate διότι γένους
— ib. τέτταρες—παραίνουσι
— ib. ἐπιτεθέντι—νόμον
— ib. ἐξούθεος[ε]—πολιτικῶν
p. 82. ib. ἐπιστάτης
— ib. φρονασίας ἀνθρωπίνας τελωθέντων
—, 6. τύχαι—φασοῦμαι[ε] ταῦτα
—, 8. ποῖεν—γένος
— c. 8. in titulo καὶ ποδῶν εἴκε τινος.
— n. 1. τὸ om.
— n. 2. ἐφεύρισκον
p.83,n.5. ἐκπλήττει μεν
— n. 6. δαθανῶν
— ib. παρακλεύομεν[αι]—ἄλλοις μυρίοις
— n. 7. οὐ πώποτ'
— n. 9. ἄναξ

— n. 10. in lemmate Κριτίου
— ib. ἔστιν ὁ. φάρμακον
p.84.n.12. Nicostrato tribuit
— n. 13. δυσάρεστον
— n. 14. in lemmate Λακώνων
— n. 15. οὐδενὸς
— n. 16. in lemmate Ἀγάθωνος μου)
— ib. ὤφελον
— ib. εὐλαβίης
— n. 17. κρύπτεται
— ib. ἀναπτύσει
p.85,40. χαρο[++′] ἅμα
—, 42. μεομένοις
— n. 19. in lemmate πινελο[π′]
— ib. λαβεῖν [θ]
— n. 20. ἄλλος
— n. 21. in lemmate Οἰδίποδες
— n. 22. οὔτοι χρόνος
— ib. ψυχῆ—βιότατα
— n. 23. οὐκ
— ib. καὶ περισκελῆς
p.86.n.25. ἀληθεύει
— n. 30. ἀφικνεῖται τὰν
— n. 31. ποικίλει—ζόντων τρόπον
p.87.n.33. χρόνω μελάας
— n. 34. λάγης
— n. 36. τὰ περὶ ἐν αὐτῷ
— ib. ἅπαξ πᾶσαν
— ib. ἔχει om. tum κύκλω
— n. 37. δὲ om.
— ib. κάρα
— ib. διανδιχῃ sine acc.
— ib. αὗται
p.88,23. βροτίου
—, 25. ἐμφαιρεῖς
—, 38. λαγίνοις
—, 29. εὐρία—πόλει
—, 30. ἀρότραν
—, 31. καρπὸν—ὀμπίου
—, 32. εὐγώτιδος
—, 33. ὀρχάτους μένει
—, 34. κωφεύουσα ῥέουσα
—, 35. δ' ὁ μὲν
—, 40. ἀλλοίωσεν
p.89,44. τότ'
—, 45. εὔβρέθη
—, 46. γλυκία
—, 49. καὶ τὴν καὶ τὸν ἀγριωμένον
—, 50. ἤγωον

p. 89, 52. κἀπιμοίρασαι
—, 53. τ' om.
— n. 39. in lemmate βουκολίων
—, 55. ὁ Μύρ.
—, 58. ἔλαφρος
—, 60. θάλποντας—ὄκνων
—, ib. εἶπε τί τοι φρὴν om.
p. 90, 3. λαλέειν—ἀσχολαὶ ἡμῖν
—, 9. νιφετὸν κρυμνονται
—, 11. μήτ'—ἄμμι
p.100,57. μετρίσειας
—, 3. τὸ τοῦ θεοῦ
—, 4. ἐρεῖ
—, 5. ἔχει [η]
—, 10. ζῆται
p.101. n. 2. in lemmate Οἰδίποδι
— ib. ἑνὸς ἔρωτος—μὴ ἤδ.
— ib. οἱ μὲν τῶν
— ib. οὐδ' εἰς
— ib. ζηλοτὸς
— n. 3. in lemmate βουκολκῶν
— ib. μοῖσα οὐ ἔ.—τ' ἔρωτα
— ib. ἄδην οὐδὲν
— n. 4. in lemmate δίκτυον
—, 18. ἰφύλος γὰρ
—, 20. ἀλλ' οὐκ ἐστι—ἐν βροτοῖς
—, 26. et seqq. om.
p. 102. n. 5. ἔρως
— n. 8. in lemmate αἰδραίου
p.107,12. μύχον
—, 13. τέτηκται
p.108,14. ἐν δέμας—πάντα τάδε
—, 18. τὸ πᾶν
—, 19. οὖν μέρος εἶναι
—, 20. πάντα τάδ'
—, 22. fere ut Cant.
p.109,24. τούτων
—, 27. ἀλλοτρόποις—σχήματι
—, 28. ἀλλάξει τρόπων ἀποκρυπτόμενα
—, 29. ἐσσείοντ'
—, 32. πάντως
—, 34. πρωτισταις καλίρροος ἡ. σαμοῖο
—, 35. ὅποιεν
p.110,37. καλύπτει
—, 38. ὅς ῥ' εἴη μ. θεὸς
—, 39. ὃν om.—ἓν ποιῷ
—, 43. οὐ θεοῦ ἐστιν

p.110,51. νῆστις τ' ἦν—βρόντειον
p.129, 5. σ. τῶν ζώων
—, 7. τοὺς—ὁμονία
—, 8. ἁρμόχθαι
p.130,11. ὕλης et mox αὐτὰς αἰτίας
—, 13. ἡ γὰρ τῶν γεννωμένων ἀπογέννεσις—γεννάτορος
—, 17. καὶ μεταβάλλον
p.135,42. σ. κ. μιμίης περιτείθει
p.164,20. Φιλολάου στωϊκοῦ
—, 21. ἐξ ὑγροῦ et in fine ἀστέρος ῥυέντος
—, 23. εἶναι om. et mox om. ἐν τῷ
—, 27. ἔντοσθεν
—, 28. δυναμένου
—, 29. διαμένειν
—, 31. κινήσεως—συνεχῶς
—, 32. φύσις συνδιαπ.—περιαγεόμενος
—, 33. μεταβάλον
—, 34. ψυχᾶς om.
—, 35. περαιοῦτε
p.165,36. σελήνας
—, 39. οὕτως—ἀνάγκη—ἀεικίνητον
—, 41. μεταβολλᾶς—τε δυνά—
—, 44. κόσμου
—, 46. μεταβλατικᾶς
—, 49. fere ut Cant. nisi quod habet γονὴ pro γοῦν
p.166,53. περὶ τοῦ
—, 55. κινάους
—, 2. λάμψειν ὃ δὴ ἅτε μίαν οὐσίαν
—, 5. περὶ παντὶ
p. 167, 9. ὑποστάσεις
—, 12. αἰσθητὴν ἀρχὰν
—, 14. ψυχροτέρας
—, 15. μεταβάλλοντες
—, 16. οὐ om.
—, 19. λέγοντες
—, 22. καὶ κατ' α.
p.168,24. ὑπ' ἀνῶ
—, 26. γενομένας—ποθεμε sine acc.
—, 28. τὰ ἐν
—, 30. καὶ om.
—, 34. fere ut Cant.

p.169,37. οὔτε μὴν
—, 39. γινομένων
—, 40. αὐτὰ καὶ κινήσαντος
—, 41. δῆλον δ—ἀγέννητος
—, 42. κινάσι
—, 45. τέχνης
—, 46. ὁ θεὸς
p.170,48. λείψεται
—, 49. ἄπαυσιν
—, 50. κάμνον καὶ ἀπαύοιτο
—, 51. ἐξακινάσεως
—, 53. ἀναιρεῖν
—, 54. κατέλιπέτε—ἦμε
—, 55. φύσεως
—, 56. τῶ πάντας ποτ' mox καὶ om.
p.182,27. bis περαίνοντι et mox φαινέονται
—, 28. καὶ πάντα—κοινῇ p. 186 med. om.
p. 210, 1. ἐρυθένεται
—, ib. in lemmate βάκχεων
p.278,45. ἀνάγκα δὲ δύο ἀ. εἰμὲν —τὴν
—, 49. τὰ μὲν
—, 50. τὰ μὲν ὄντα
—, 51. ἀριθμῶς
—, 52. ἀνάγειν—καθ' ὅλω ὠσίας ἡδέος μεταδιδόωμεν
—, 54. ἐν γένεσιν
—, 56. αὐτὸ ταῦτα
p.279,58. δ' εἶμεν
— 1. ἀνάγκαν δὲ δύο λόγον εἶμεν
—, 2. φύσεως
—, 3. πρῶτον
—, 5. εἶμεν
—, 8. ἀλλ' ἀναγκαιοτέραν τ. εἶμεν αἰτ. τ. κινάσοισαν: —Tum tanquam novus art. π̄ᾶν ἐστώτων
—, 12. εἶμεν
—, 14. ἑστώταν ὕλην
p.280,15. τὸν κινούμενον—πόθεν
—, 16. ὑπὸ τὸ κ. δὲ ἐ.
—, 20. γεωμέτροις—παραλαμβάνει
—, 21. συναρμόσαι καὶ ἑνῶσαι τᾷ δυνάσει τε ἐν τὰ ἑστώτων
—, 24. ἔνμορφος

p.280,25. δυσκινέται
—, 26. πρᾶτος—εἶμεν
—, 27. ἐξ αὐτῶν
p.281,29. τᾷ om. mox ὀνόμον
—, 30. εἶμεν— κρίσσον (ε supra ί)
—, 31. ὅπερ om. φανερον sine acc. ὧν om.
—, 33. αὐτὰ δ' ἐστὶ δ' ἔστω
—, 37. καθ' ἑαυτὸ et infra
—, 40. θέα
—, 42. αὐτότητι
—, 46. μηδὲ ἐπάλλοντας
p.283.n. 5. in lemmate ἀρχὰς
—, 15. ἀρχύτας τῶν—τὰ αὐτόθεν
—, 16. ἔτι
—, 17. αἰσθητὰ νοητὰ
—, 20. αἰσθωτῶν σις (sic)
—, 22. νοῆσαι
—, 23. αἴσθησιν
—, 24. καὶ κρίνεται
—, 26. τὸ νοατὸν ἐπιβάλλον
p.284,29. ψευδομετρίαι γραφίαι
—, 32. ἐστὶ ἐν διπλῷ
—, 34. ποτιβάλλον
—, 35. τὰς αἰσθάσιας
—, 36. ποττὰν
—, 39. καὶ om. mox ἀμάχανοι
—, 40. ποῦ τι
—, 41. μὲν ὅτι ἐντι mox om. τῶν
—, 42. ἢ ὅτι
—, 43. ἃ et v. seq. αἰσθάσει
p.314, 8. τῶν τε
—, 12. ἄφθαρτον
—, 23. οὖν αὐτὸς
—, 26. αὐτῷ
—, 28. νοεῖ εἴη ἂν ὁ ν. ἀ. γὰρ τ. ν. ἀφηρεῖται
p.315,30. συμβαίνει
—, 33. πάντα—προσχρόμενον
—, 34. θεωρεῖν
—, 35. προβολῆς
—, 37. ἴδοι
—, 38. γινόμενον
—, 41. καταλήψεται
—, 44. παρυφίσταται — παρασκευάζον ἑ. ἡ αὐτὴ
—, 45. ἐνδεικνύμενον
—, 48. ἴδει
p.316,51. τοῦ αὐτοῦ
—, 52. ἐνεργείας καὶ ὄμμα εἶναι ὧν οὐσῶν τὸ
—, 53. καὶ νοητὸν
—, 55. ἐν om. οὐδὲ νοῦς
—, 56. εἰ δὲ μὴ et mox om. καὶ
—, 1. εἰ κείνοις
—, 3. νοῦς om.
—, 4. ἕτερος
—, 6. οὖν om. νοάσει
—, 7. εἰς τονοῦν— ἑαυτὸν
—, 8. αὐτὸν
p.317, 9. χωρεῖν—mox καὶ ἐξ ἀν.
—, 11. πρὸς
— n. 6. in lemmate αἰσθήσεως
—, 14. αἴσθησις et infra
—, 15. αἰσθήσεων
—, 18. ὀρθαγωνία
—, 20. νοατῶν τῇ φύσει πρῶτον
—, 21. αἴσθησις ἁμῖν τὸ μὲν γάρ ἐστιν
—, 23. τιμωτάτων
p.318,23. αἴσθησις—ἕνεκε
—, 24. συνέστηκε—λειτουργίας
—, 25. τὰν ἐς ταῦτας (sic acc.)
—, 27. αἰσθητῶν et mox αἰσθητὰ
—, 30. τὰ δὲ νοατὰ om.
—, ib. στάσεως καὶ ἰδιότητος. παραπλησίως δὲ καὶ αἱ αἴσθησις
—, 34. ἀτρεμεῖ—νόος τῷ om.
—, 35. ἀκίνητον
—, 37. καὶ om. mox πράττον
—, 39. ἄνθρωπος
—, 40. ἡλίω—χειροτεχνατῶν
—, 41. ἔτι ὁ μὲν—αὐταίρετος
—, 45. ἢ ὂν
p.319,46. ἔστι
—, 49. ἰδέων
—, 50. τὶ om.
—, 51. ἀνάγκης—γεωμετρία
—, 52. καὶ αὐτὰ
—, 54. ψυχὴν
—, 5. ὅθεν om.
—, 6. ἁ δὲ δ. τ. δ. om.
p.513. n. 1. in lemmate ἐκ ταλάντου
—, 5. ἴσου καὶ μὴ
—, 8. ἄλλος τὸ λ. ὑπερφέρει
—, 10. ἀργικοῖς et v. seq. δαιμονίων

p.514. n.3. in lemmate Ἀλεξανδρίδου κανηφόρῳ
— n. 5. in lemmate φιλήτα
— n. 8. in lemmate πιδάρου (sic) nec plura
p.515,27. ὀλίγοιν
—, 31. βρωτέα φρον ἶ
— n. 9. in lemmate παιανῶ ἰοφῶντος βακχῶν
—, 34. τόσούτω
— n. 11. Δημώνακτος
p.522. n. 3. in lemmate τοῦ αὐτοῦ
p.646,35. κοινωνεῖν ψυχῇ
p.647,39. ψυχῆς et similiter infra
— n. 6. in lemmate φιλίμονος παγκρατιαστῇ
—, 49. ἐπὶ τῇ τύχῃ παιδίον
—, 50. τὸ τῇ
—, 52. καὶ ἐὰν
—, 54. τὸ μὲν γὰρ διὰ τύχην
p.648.56. Fere ut Cant. nisi quod habet καὶ τὸ μὴ θ. δ.
—, ult. καινὸν
—, 3. ἱμείρεται
—, 5. κεκλεῖσθαι—δ' ὅμως
—, 7. λέγοντα
—, 9. ἀνθρώποις
—, 10. δὲ om. et om. vers. seq.
p.651,44. δηλούμενον
—, 45. ποτε ἂν
—, 49. ταύτας et mox om. καὶ
—, 52. ἐνέφυσε τ. τὸ πρ.
—, 53. ὅταν
p.652,55. θεὸν αὐτὸν
—, 56. ταῦτα
—, 57. ἀλλὰ
p.653.n.30. init. τῶν ὄντα μὲν
p.654,25. ἐφ' ἡμῖν bis
—, 27. εὗροι
—, 33. ἐπιστρέψαι—δέοιντο
—, 34. ἀσμένους
p.674,43. αὗται
—, 44. ἀποπνηγῆναι
—, 47. ἀνθρωπίνω κακὰ
—, 48. ἐπίστηται—ποδιγετεῖν—ὀχῆν (ει)
—, 49. ἀγαθοῖσιν ὧν
—, 51. τινα β. ἀλκὴν
—, 52. εὔμυθος
—, 53. ἔρρωται
—, 54. ἀνακύδης—οὐ δ' ἂν κ. δ. ἀλλογῇ—χρηέοντα
—, 55. ἀτερπείη
p.675,56. οὗτον κ. (δὲ)
— n. 4. οἱ θεοὶ
— ib. ὁπόσα
—, 5. φωτιζόμενα οὐ εἰς οὖσαι ἀφανέες ὁδοὶ διφασίαι
—, 6. προκαίεται βίον
p.676,10. αὐτὴ
—, 11. ἡγέεται
—, 12. τατίζονται δὲ τοιαίδε
—, 13. οὐ σκεύη λατάπως
—, 15. ἔχει καὶ
—, 16. ὁδὸς θέτε
—, 20. αὐγοειδεστάτω
—, 21. πόλιαις
—, 23. ψυχῶν
—, 24. ἥδε μὲν ὧδε κακῶς—ὁ δὲ ἐπὶ
—, 25. ἔχουσα
—, 27. ὥστε δὲ
p.677,30. δὲ
—, 32. καὶ τοὺς τοῦ
—, 33. ποταμοὺς βορβόρῳ
—, 38. προκρημένος
—, 40. τε om. et. v. seq.
—, 43. ἐπὶ γῆς
—, 46. αὐτῆς ἀλυθῆτε σήματος
—, 47. ὑμετέρας τρόπου
p.678,51. πυθομέναις—ὁμοιούμενα
—, 52. βράχια γῆς
—, 54, τὸν πάντα om.
—, 56. καταδείσας—παραμένοντα
—, 57. τῆς μετὰ
— n. 7. in lemmate τοῖς θεοῖς
—, 1. πολλοὶ δὲ—πρὸς τὸ
—, 4. ἑαυτῆς
—, 6. ἑαυτοὺς
—, 7. ἔχειν μοι
—, 9. δὲ οἱ—αἰτιόωνται
p.679,15. ἂν om.
—, 16. ἴσως om.
—, 19. ἁπάσαις ἀρεταῖς
—, 23. ποιητικά γε
—, 24. ταῦτα χρὴ his verbis desinit MS. Harl.

Quod superest, quum in fine præfationis ad Stobæi Florilegium a. 1822. promitterem, si quando occasio daretur hasce Eclogas edendi, me nonnulla additurum quibus Florilegium emendaretur et suppleretur, fidem tunc datam hodie libero. Itaque primum lectiones profero quas ex codice antiquissimo Bibliothecæ Cæsareæ Vindobonensis mense Iulio anni 1847. deprompsi. De eo codice sic fere Nesselius Catal. par. IV. p. 40.

"Sexagesimus septimus codex membranaceus (excep-"tis quinque prioribus foliis chartaceis[b], quæ manu re-"centiori scripta et in deperditorum foliorum membrana-"ceorum locum substituta sunt) pervetustus, nongento-"rum viginti quinque circiter annorum, sed principio "mutilus, constatque nunc foliis 196, et ad Ioannem "Sambucum olim pertinuit. Apparet antiquissimum "hoc exemplar esse similem primæ Florilegii Stobæi "editioni quam Victor Trincavellus Venetiis edidit a. "1536. contra autem valde discrepare a Gesneri editio-"nibus Tiguri 1559 et al."

Sunt hæc omnino vera: Codex est archetypus istorum exemplarium familiæ unde provenit editio Trincavelliana; et proinde multis caret articulis quos Gesnerus ex MS. Mendozæ protulit, et qui in Parisino A. reperiuntur. Operæ pretium non mihi facturus videbar, si folia chartacea recenti manu descripta cum edito committerem: neque temporis angustia, quo mihi Vindobonæ morari contingebat, longiora quædam excerpta, Platonis verbi gratia et Xenophontis, examinare permisit, a futuro Stobæani operis, si quis erit, editore minime negligenda. Cetera, ut potui, diligentissime exsequutus sum.

Hoc primum: secundo, Appendicem brevem subjunxi in qua præter alia recudendas curavi virorum doctorum observationes memoratu maxime dignas, quæ in libellis

b Sunt item folia 62—67. chartacea manu recenti exarata, quæ proinde conferre neglexi.

non ubivis obviis prodierunt: veluti C. F. Halmii in Lectionibus Stobensibus Heidelbergæ publicatis ann. 1841 et 1842. 4°. item C. A. Bevingii in *Remarques Critiques sur l'Anthol. de Stobée* Bruxell. 1833. 8°. necnon Emendationes G. A. Hirschigii in Miscell. Philolog. Traj. ad Rhen. 1849. Fr. Jacobsii Lectiones Stobenses Ienæ editas a. 1827. 8°. ceteris non immiscui.

Tertio, ut Apographum codicis Florentini Excerpta Ioannis Damasceni complectentis manu canonici Antonii Sartii a. 1781. Ruhnkenii gratia exaratum oculis usurparem effecit insignis Iacobi Geelii humanitas. Is enim statim atque audivisset me hisce Eclogis imprimendis operam dare, librum ipsum cujus usum a Wyttenbachio impetrare nequibam (vid. Præfat. ad Stobæi Flor. p. viii.) peramice ad me misit: quo perlecto, non sine animi angore intellexi permulta esse in editione mea a. 1822. cum omissa tum commissa non nisi Excerpta iterum vulgarem corrigenda. Ea itaque repetenda curavi post Eclogas, lectionibus diversis quæ ad Florilegium pertinent suis locis apud Appendicem collocatis.

Postremo, accedit Hieroclis in Aurea Carmina Pythagoreorum commentarius. Fere omnia istius philosophi fragmenta quæ usque ad nostra tempora devenerunt, conservavit Stobæus: non abs re igitur putavi si eorum numerum explerem hoc insigne disciplinæ ethicæ monumentum addendo, præsertim quum emendationis subsidia ad manus haberem haud contemnenda, quibus edd. priores caruerunt, scilicet, codicis Vindobonensis a. 924[c]. exarati collatio summa qua potui cura confecta, necnon exemplar editionis Curterianæ inter libros Dorvillianos in

[c] 924] Scriptum esse hunc codicem a. 924 an a. 925. videtur incertum. Nota in ejus fine hujusmodi est: ἐγράφη χειρὶ ἰωάννου γραμματικοῦ ἀχρείου δούλου ῑῡ χ̅ῡ μ̊ ἰουλίωι εἰς τὰς εἰκοσιοκτ̃ ἡμερα πέμπτῃ ἰν̊ ῑγ̅ ἔτη κ° ϛυλβ. i. e. A. M. 6432 = A. C. 924. Atqui indictio 13 non ad an. 6432 sed ad an. 6433 pertinet. Igitur error est aut in anni aut in indictionis numero.

Bibliotheca Bodleiana custoditum ad cujus oram complura adlevit Lucas Holstenius[d]. In conferendo usus sum editione Londinensi a. 1742. curante Ricardo Warren Coll. Ies. Cantab. nuper socio, sed auctore revera Carolo Ashton ejusdem Collegii magistro, ut nos docuit Iohannes Nichols in "Literary Anecdotes" T. IV. p. 226. Doctam Ashtoni annotationem retinui, ex antiquæ philosophiæ fontibus Hieroclem plerumque feliciter explicantis, quem tamen non laudo Needhamum quavis oblata occasione iniquius insectantem.

[d] Holstenius] Holstenius usus est duobus codicibus Mediceis, duobus Vaticanis, et alio MS. Salviatorum. Quod ad Mediceos attinet certum est Holstenium adhibuisse eum qui nunc numeratur XXXIII. Plut. LVIII. in Bandini Catal. T. II. p. 480. quandoquidem in ejus fine hujusce subscriptionis meminit: *Μιχαῆλος ἀποστόλης βυζάντιος μετὰ τὴν ἅλωσιν τῆς αὐτοῦ πατρίδος πενίᾳ συζῶν καὶ τήνδε τὴν ἱερὰν βίβλον μισθῷ ἐν Κρήτῃ συνέγραψεν.* Alterum codicem suspicor hodie in eadem Bibliotheca reperiri n. XXXII. Plut. IX. in Bandini Cat. T. I. p. 444. Est tamen ibidem tertius MS. XXVI. Plut. XXXIII. Bandini Cat. T. II. p. 175. a Nicolao Murmurio Naupliensi exaratus.

INDEX MSSTORUM STOBÆI.

A. Codex olim Augustanus, nunc Monacensis.
V. Vaticanus ⎫
E. Escurialensis ⎬ apud Heerenium.
P. Parisinus ⎭

INDEX MSSTORUM HIEROCLIS.

S. Codex Vindobonensis n. 314. ap. Nessel. par. 4. p. 152. olim Io. Sambuci.
Vat. Med. Salv. Codices Holstenii.
G. Codicis Medicei collatio Gudiana.

Numeri in sinistro margine Stobæi indicant paginas ed. Heeren., in dextro ed. Canter. Numeri in sinistro margine Hieroclis indicant paginas ed. Curterianæ, in dextro Needhamianæ.

ADDENDA.

P. 15, n. 19. Ἐκ τοῦ Θυέστου Orio Schneidewini V. 6.

48, n. 47. Ἀρχελάου Εὐριπίδου Orio V. 1. ubi δίκην μακρὰν ἀπωκίσθαι Schneidewinus.

58, l. 32. πάντολμ' ἀν. Tyrwhittus in exempl. servato in Mus. Britann.

65, n. 14. Vid. I. Gronovii notas ad Manethonem p. 267.

73, n. 6. n. a *l.* dedit.

74, n. 12. Euripid. Fr. 143. Dindorf.

75, l. 16. Pone ante Αὐτόματα n. 14 b.

77. Ante Πλάτωνος excidit numerus 17.

80, l. 43. Ante Εὐριπίδου pone 7 b.

84, in nota ad n. 15. *Incertus Caco.* Nescio an Grotius hæc dederit perperam lecto lemmate Λακώνων art. 14.

88, l. 34. ἀκύμων κοὐ τροφὴν φέρουσα γῇ Tyrwhittus.

108, in not. col. 1. pro 4 l. 5.

109, l. 34. l. πρῶτος.

127, l. 28. δὴ] δ' ἦν Damasc. ubi δ' ἡγεῖται

128, l. 40. σχήμασι—τοιούτοις· τό τε ἐξ οὗ λέγονται Damasc. ubi om. τὴν ὕλην.

— l. 43. 44. οὐδ' Damasc.

— l. 49, γίνεται om. Damasc. qui supra habet γίνεται—ψυχήν.

— l. 53. καὶ αἴτιον μὲν ὅτι οὐδὲ αἴτιον Damasc.

129, l. 46. οὐδ' Damasc.

— l. 50. ἐφεξῆς Damasc.

— l. 52. οἱ om. Damasc. ubi mox ὥρισαν τό.

129, l. 3. Ὀκέλλου in lemmate om. Damasc. qui mox σύκκελος pro Ὄκελλος et post paullo αἴτιον εἶναι

— l. 5. σκάνεα τῶν ζώων Damasc.

— l. 7. τοὺς Damasc.

— l. 8. τίς οὐ βῆ α. κ. φύσις Damasc. et ἁρμόχθαι—ἀκοσμίαν

130, l. 10. τὼς οἴκως ὀλιγοχρονία ἦμεν ὅσα μὲν

— l. 11. τὴν

— l. 12. τῆς διαλύσεως. συνέστηκε—μεταβαλλοίσας Damasc.

— l. 13. ἡ γὰρ τῶν γεννωμένων ἀπογένεσις et mox γενέτορος Damasc.

— l. 16. πρῶτον τῇ et in fine τὸ μεταβάλλον Damasc.

— not. m. memini] Nunc video κυβερνοῦσι legi in Dion. Cass. L. 29.

140, l. 36. ἔστι—αἰσθητικὸν Damasc.

141, l. 41. ἑκάστων—et mox ἔμπροσθεν Damasc. qui infra om. ὀλίγα

165, l. 41. l. πρᾶτον

196, l. 2. κρυσταλλοειδῶς et mox ἐν ἑκατέρῳ Damasc.

— l. 8. καὶ habet Damasc.

— l. 11. ἐς ἀεὶ Damasc.

— l. 13. ἐγκυκλικῶς Damasc.

— l. 14. Πυθαγόραιος Damasc.

196, l. 16. ἀειφανὲς Damasc. qui om. ὁ δὲ—ἀφανής.
197, l. 19. ὑποβέβληται Damasc. quod vellem repositum
215, l. 53. l. ΑΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ.
222, not. [a]. ad c. κζ. leg. Plut. III. 1.
317, n. 6. l. Αἰσθήσιος
491, l. 17. ταύτην δὴ Damasc.
— l. 18. φεύγοιο—ἀληθέστατον Damasc.
495, l. 30. Vid. Damasc. infra p. 765, 8.
496, l. 46. κατὰ ταῦτα Damasc.
— l. 2. ἀδιάχυτον Damasc. qui habet infra ταύτῃ—συναύγεια
— l. 6. ποθὲν Damasc.
— l. 9. τοῦ μεταξὺ διεχοῦς om. Damasc.
498, n. 3. περὶ χρωμάτων. Vid. supra c. 16. n. 2.
501, l. 48. τὴν αἴσθησιν Damasc.
513, n. 1. ἐκ Ταντάλου om. Damasc.
— l. 4. ταῦτ' Damasc. et infra ἄλλον λ. ἄ. ἄλλο τῷ λ. ὑπερφέρει
— n. 2. Φιλοκτήτῃ om. Damasc. ubi mox ἀργικοῖς ἐνειμένοι et τῶν δαιμόνων.
514, n. 3. Κανηφόρῳ om. Damasc. ubi θεῖα βέλτεροι
— n. 5. Μιλήτου Damasc. m. sec. deest M m. pr.
— ib. θεὸν νόμιζε] ἐννόμιζε Damasc. et mox βόλου
— n. 6. Ὑποβολιμαίου om. Damasc.
— n. 8. Deest lemma Damasc.
515, l. 27. ὀλίγον] ὀλίγον τοι Damasc.
— l. 28. ἴσχει Damasc.
— l. 29. Ante οὐ γὰρ Damasc. inserit καιάνων sed κ a m. sec.
— l. 31. φρενὶ Damasc.
— n. 9. Βακχῶν om. Damasc.
— ib. δὲ καὶ] δὲ om. Damasc. ubi mox τοσούτῳ
— l. 35. ῥεῖα] εἶα Damasc.
— l. 36. Δημώνακτος ἐταζόντων Damasc.
— l. 38. αὐτῶν ἀκοσμησίας Damasc.
— n. 12. Δημοκράτους Damasc.
— l. 39. προθυμέου Damasc.
— n. 13. ἐκ τοῦ π. Ἴ. Ἀνθρώπων μὲν Damasc.
516, n. 14. τοῦ Πολιτικοῦ Damasc.
— n. 16. Παμβλίων nec plura Damasc.
— l. 8. νενόμικεν — δοξάσαντα Damasc.
— n. 17. Deest lemma Damasc. qui mox Ξενοφῶντος πρώτου
— l. 12. ὡς ἄρα θεὸς om. Damasc. cum lacuna tamen.
— n. 18. Δίδυμος nec plura Damasc.
517, l. 16. καὶ τῶν ut vulg. Damasc. ubi om. αὐτοὺς σ. φησὶν cum lacuna. Tum εἶδεν αὐτὴν—στρατιώτῃ.
— l. 20. πρὸς κοινωνίαν om. Damasc.
— l. 23. τίνος οὔσης om. Damasc.
— n. 19. ἐκ τῶν π. Στυγὸς om. Damasc.
— l. 24. νομίσαιεν Damasc.
— l. 26. αἰνιγμῶν ἐσήμαναν Damasc.
— l. 27. τῷ μὴ διηγουμένως Damasc.
— l. 30. γοῦν Damasc. et infra τὰ δι'
518, l. 32. Κρόνιος τ. ἀπεργάσασθαι Damasc.
— l. 33. ἄλλα τ' ἔφαρ. Damasc.
— l. 34. οὐ γὰρ παρὰ Damasc.
— l. 35. ἑαυτοῦ Damasc.
— l. 40. παμφανὴς Damasc. qui supra φανερὸν ut vulg.
— l. 41. αὐτὸν] αὖ Damasc. qui mox ἤν τις ἀναιδῶς
545, l. 55. ἀρυτόμενος ὅθεν τε δεῖ καὶ ὁπότε καὶ ὁπόσον εὐδαιμονεῖ Tyrwhittus.
562, l. 10. κατὰ τὸ ἀνάλογον] κατὰ τὸν λόγον Tyrwhitt.
588, l. 10. Vid. Florileg. 44, 12.
636, col. 2. not. [c]. Quam] *l.* Quem
646, art. 1. not. [b]. l. ψυχὴ
647, n. 6. l. Παγκρατιαστῇ.
674, l. 54. Vid. Florileg. XLIV. 15.
709, l. 7. l. πάνυ
716, 20. l. μάχαιραν

722. μάλιστα] τάχιστα Herschig.
— n. 24. pro 8 l. 18.
— l. 16. στέγην] σκέπην Herschig. Vulg. habet Ælian.
723, l. 22. λανθάνει Herschig.
725, l. 18. προσμανθάνειν Herschig.
726, l. 21. l. ἀρχαίαν
727, not. ult. pro 13 l. 10.
728, l. 1. ὑπὸ γνάφεως Badhamus apud Herschig.
— n. 2. l. tamen
737, l. 19. μαθητῶν Herschig.
738, l. 11. οὐ δοκεῖ et mox πλημμελῆσαι Herschig.

Hierocl. p. 7. not. [m], *post* λογίσασθαι ἕκαστον *adde* sc. p. 114. Sed vide p. 117, 9. 118, 11.
— p. 8. not. [r]. *post* comm. *adde* p. 161, 7.
— p. 66. marg. sinist. *pro* 104 *leg.* 105.
— p. 142. n. 2. *pro* optus *leg.* opus.

ΦΥΣΙΚΑ

[a] ΦΥΣΙΚΑ

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΩΒΑΙΟΥ.

ΒΙΒΛΙΟΝ ΠΡΩΤΟΝ.

ΠΕΡΙ ΑΡΙΘΜΗΤΙΚΗΣ.

1 Αἰσχύλου. [Prom. 454.]

Ἦν δ' οὐδὲν αὐτοῖς οὔτε χείματος τέκμαρ
οὔτ' [b] ἀνθεμώδους ἦρος, οὔτε καρπίμου
[4] [c] θέρους βέβαιον· ἀλλ' [d] ἄνευ γνώμης τὸ πᾶν
ἔπραττον, [e] ἔς τε δή σφιν ἀντολὰς ἐγὼ
ἄστρων ἔδειξα τάς τε δυσκρίτους δύσεις,
ἀριθμὸν εὑρών, ἔξοχον σοφισμάτων.
ἔπειτα πάσης Ἑλλάδος καὶ ξυμμάχων
βίον διῴκησ' ὄντα πρὶν πεφυρμένον
θηρσίν θ' ὅμοιον· πρῶτα μὲν τὸν πάνσοφον
ἀριθμὸν εὕρηκ' ἔξοχον σοφισμάτων.

[a] ΦΥΣΙΚΑ] Retinui inscriptionem codicis A. Ἰωάννου Στωβαίου βιβλίον πρῶτον περὶ ἀριθμητικῆς V. F. E. Observ. Miscell. T. VII. p. 582. Canterus: Ἰωάννου Στωβαίου φυσικῶν γνωμῶν ἐκλογή. Rectius scribendum Στοβαίου per ο docet Holstenius ad Steph. p. 304.

1.

[b] ἀνθεμώδους] ἀνθεμώδεος A.

[c] θέρους] θέρος A. Obs. Mis.

[d] ἄτερ] ἄνευ A. Obs. Mis.

[e] ἔς τε δή] ἔστι δή A.

2

[6] ὍΤΙ καὶ τὴν [a] περὶ τοὺς ἀριθμοὺς θεωρίαν Ὅμηρος ἠπίστατο, τοὺς μὲν ἐχθροὺς καὶ πολεμίους ἀναρσίους προσαγορεύων,

[b] ἠδ' ὅσ' ἀνάρσιοι ἄνδρες ἐδηλήσαντ' ἐπὶ χέρσου.

Τὸ δὲ ἵλεω καὶ φιλικὸν, [d] ἄρθμιον·

ἢ μὲν ἐμαρνάσθην ἔριδος περὶ [e] θυμοβόροιο·
ἠδ' αὖτ' ἐν φιλότητι διέτμαγεν [f] ἀρθμήσαντε.

Καὶ πάλιν·

ἤκαχε Θεσπρωτοὺς, οἱ δ' ἡμῖν [g] ἄρθμιοι ἦσαν·

ἀναρμοστίαν μὲν τὴν ἔχθραν ἡγούμενος, ἁρμονίαν δὲ τὴν φιλίαν· τὸ γὰρ ἄρθμιον ἐναρμόνιόν ἐστιν, ἅτε δὴ [δεῖ] πάσης ἁρμονίας ἐν λόγοις ἀριθμῶν τὴν γένεσιν ἐχούσης.

Ἡ μονὰς [h] γονὴ ὑπὸ Τιμαίου τοῦ Λοκροῦ προσαγορεύεται, ὡς ἄρχουσα τῆς τῶν ἀριθμῶν γενέσεως.

[8] Τοῦ περισσοῦ καὶ ἀδιαιρέτου λόγου Ἀριστοτέλης ἀπεφήνατο πρῶτον καὶ ἀμέριστον εἶδος τὸ ἕν· κατὰ δὲ τὴν τούτου ποίησιν εἰδοποιουμένη μονὰς, ἀρχὴ καὶ στοιχεῖον τῶν [i] ἀριθμῶν.

2.

[a] περὶ] ἐπὶ A. Obs. Mis.

[b] ἠδ' ὅσ' ἀν.] ἦσαν ἄρ. A. Obs. Mis. Vid. Od. κ'. 459. ἐδηλώσαντ' A.

[d] ἄρθμιον] Sic Heeren. ἀρίθμιον A. Obs. Mis. et sic infra.

[e] θυμοβόροιο] θυμοβόριον A.

[f] ἀρθμήσαντε] ἀριθμήσαντε A. et Obs. Mis. ubi et διέταττον. Locus est Il. η'. 301.

[g] ἄρθμιοι] ἄρσιοι A. Obs. Mis. Locus est Od. π'. 427.

[h] Theolog. Arithm. p. 8: Ὅτι Ἀνατόλιος γονὴν αὐτήν φησι καλεῖσθαι, καὶ ὕλην, ὡς ἄνευ αὐτῆς μὴ ὄντος μηδενὸς ἀριθμοῦ. HEER.

[i] Explicanda hæc sunt ex Aristot. Metaph. XIII. 8. ubi Aristoteles de discrimine numerorum mathematicorum et specierum, (τῶν εἰδῶν) i. e. vel absolute vel in concreto positorum, acute disputat. Oriri autem docet has ex illis, adeoque monadem, (τὴν εἰδοποιουμένην μονάδα) ex uno (ἐκ τοῦ ἑνός). Fieri autem hoc ita, ut uni, quod per se sit sine qualitate, (τὸ μὲν γὰρ ἓν οὐ ποιὸν) tribuatur qualitas (ποιότης).—Verba κ. στ. τ. ἀριθμῶν in codd. male trahuntur ad proxima, ita ut titulum loci sequentis constituant, et continuo legatur: ἀρχὴ κ. στ. τ. ἀριθμῶν Φιλολάου, quod librariorum negligentia factum esse, patet. HEEREN.

3 Φιλολάου.

Θεωρεῖν δεῖ τὰ ἔργα καὶ τὰν [a]οὐσίαν τῶν ἀριθμῶν κατὰ δύναμιν ἅ τις ἐστὶν ἐν τᾷ δεκάδι. Μεγάλα γὰρ καὶ παντελὴς καὶ παντοεργὸς καὶ θείω καὶ οὐρανίω βίω καὶ ἀνθρωπίνω ἀρχὰ καὶ ἁγεμὼν κοινωνοῦσα . . . δύναμις καὶ τᾶς [b]δεκάδος. Ἄνευ δὲ ταύτας πάντ᾽ ἄπειρα καὶ ἄδηλα καὶ ἀφανῆ. [c]Νομικὰ γὰρ ἁ φύσις ἁ τῶ ἀριθμῶ καὶ ἁγεμονικὰ καὶ διδασκαλικὰ τῶ ἀπορουμένω παντὸς καὶ ἀγνοουμένω παντί. Οὐ γὰρ [d]ἦς δῆλον οὐδενὶ οὐδὲν τῶν πραγμάτων, οὔτε [e]αὐτῶν ποθ᾽ αὑτά, οὔτε [f]ἄλλω ποτ᾽ ἄλλο, εἰ μὴ ἦς ἀριθμὸς, καὶ ἁ [g]τούτω οὐσία. Νῦν δὲ οὗτος [h]κατὰ ψυχὴν ἁρμόζων αἰσθήσει πάντα γνωστὰ καὶ
[10] ποτάγορα ἀλλάλοις κατὰ γνώμονος φύσιν ἀπεργάζεται, σωματῶν καὶ σχίζων τοὺς λόγους χωρὶς ἑκάστους τῶν πραγμάτων, τῶν τε ἀπείρων καὶ τῶν περαινόντων . . . Ἴδοις δὲ καὶ οὐ μόνον ἐν τοῖς δαιμονίοις καὶ θείοις πράγμασι τὰν [i]τῶ ἀριθμῶ φύσιν καὶ τὰν δύναμιν ἰσχύουσαν, ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς ἀνθρωπικοῖς ἔργοις καὶ λόγοις πᾶσι [j]πάντα, καὶ κατὰ τὰς δαμιουργίας τὰς τεχνικὰς πάσας, καὶ κατὰ [k]τὰν μουσικάν. Ψεῦδος δὲ οὐδὲν δέχεται ἁ τῶ ἀριθμῶ φύσις,

3.

[a] οὐσίαν] ὠσίαν Heeren. ἐσσίαν Boeck. in *Philolao* Berol. 1819. Mox Boeck. τῶ ἀριθμῶ καττὰν.

[b] Verba καὶ ἁγεμὼν — δεκάδος, corrupta et mutilata sunt, lacunam enim indicant post κοινωνοῦσα Codd. V. E. Legendum forte et supplendum ἁγεμὼν κοινῶς ἐοῦσα φαίνεται δύναμις ἁ τᾶς δεκάδος. *Patet vim ejus omnibus præesse*, vel simile quid. HEEREN. δύναμις om. Obs. Mis. in A. ς tantum legitur, reliqua vocabuli pars periit.

[c] Γνωμικὰ] Obs. Mis. νομικὰ.

[d] ἐντι δῆλον] Sic Heeren. εἰς δῆλον A. Obs. Mis. in qua ἦς latere vidit Koën. ad Greg. D. D. LXXII. et sic mox.

[e] αὐτῶν] αὐτοῖς A. Obs. Mis.

[f] ἄλλω ποτ᾽] ἄλλο πρὸς A. Obs. Mis.

[g] τούτω ὠσία] τούτοις οὐσία A. Obs. Mis.

[h] καττὰν Boeck. qui infra σωματῶν pro σωμάτων.

[i] τῶν ἀριθμῶν Obs. Mis.

[j] παντᾶ Boeck. Mox καὶ κατὰ— πάσας om. Obs. Mis.

[k] Pro τὰν μουσικὰν codd. A. E. habent μούσαν et Vat. μουσίαν, unde veram lectionem refinxi. HEEREN. Hodie periit in A. ista pars folii in qua vox μούσαν extitisse dicitur. μουσίαν Obs. Mis. Mox ἁ τῶ pro αὖ τῶ Jacobs.

οὐδὲ ἁρμονία, οὐ γὰρ [l] οἰκεῖον αὐτοῖς ἐστι. Τᾶς γὰρ ἀπείρω καὶ ἀνοήτω καὶ ἀλόγω φύσιος τὸ ψεῦδος καὶ [m] ὁ φθόνος ἐστί. Ψεῦδος δὲ οὐδαμῶς ἐς ἀριθμὸν ἐπιπνεῖ, πολέμιον γὰρ καὶ ἐχθρὸν [n] τᾷ φύσει τὸ ψεῦδος, ἁ δ' ἀλάθεια οἰκεῖον καὶ σύμφυτον τᾷ τῶ ἀριθμῶ γενεᾷ.

[o] Καὶ [p] τὰ ἐν τᾷ σφαίρᾳ σώματα πέντε ἐντὶ [τὰ ἐν τᾷ σφαίρᾳ] πῦρ, ὕδωρ καὶ γᾶ καὶ ἀήρ, καὶ [q] ἁ τᾶς σφαίρας ὁλκάς, πέμπτον.

4 Ἐκ τῶν Ἀρχύτου διατριβῶν.

[12] Καὶ δοκεῖ ἁ [a] λογιστικὰ ποτὶ τὰν ἄλλαν σοφίαν τῶν μὲν ἄλλων τεχνῶν καὶ πολὺ διαφέρειν, ἀτὰρ καὶ [b] τᾶς γεωμε-

[l] οἰκεῖον] οἰκῶν A. Mox τᾶς γὰρ —ἐστί om. Obs. Mis.

[m] ὁ φθόνος h. l. non est *invidia* sed *reprehensio*. Pro ἐπιπνεῖ melius legeretur ἐμπίπτει, *non cadit in numeros*. Certe πίπτειν et ἐμπίπτειν verbum de hac re solenne. Sic Aristot. Metaph. XII. 8. τῆς μὲν δυάδος ἐμπιπτούσης ἐς τὸν ἀριθμὸν, ἄρτιος γίγνεται. HEEREN.

[n] αὐτῶ τᾷ φύσι Boeck.

[o] Καὶ τὰ—πέμπτον. Non cohærent hæc cum prioribus, etsi in codd. omnibus iis junguntur. Desumta esse videntur ex alio capite ejusdem libri, περὶ πεντάδος. Verba autem ipsa corrupta sunt. Primo enim verba τὰ ἐν τᾷ σφαίρᾳ librarii vitio bis scripta videntur, adeoque uncinis a me inclusa sunt. Tum vero ὁ ὁλκὰς, (leg. saltem ἁ ὁλκὰς) vix explicationem admittit. Difficile est divinare quid sub hac voce lateat. Forte intelligenda est de *æthere,* qui inter σώματα στοιχειώδη quinto interdum loco numeratur. Cf. Theol. Arithm. p. 28. ὅτι καὶ ἀνοικείας (leg. ἀνεικείας cf. Meurs. de Denar. Pythag. Op. T. IV. p. 43) προσηγόρευον τὴν πεντάδα, ἐπειδὴ τὸ πέμπτον καὶ κατ' αὐτὸ τεταγμένον στοιχεῖον ὁ αἰθὴρ κατὰ ταυτὰ ἔχων διατελεῖ. Quare autem ætheri hoc nomen tribuerint, non additur, unde quoque obscurum est, num in nomine vel articulo mendum lateat, et legendum sit ἁ ὁλκὰς, vel ὁ ὅλκος, vel forte ἁ ὁλκὰ, vel aliud nomen, a litterarum ductu longius recedens. Probabile tamen videtur rescribendum esse, ὁ ὅλκος, quod de motu vel vi motrice mundi forte explicari possit, etsi hæc inter principia vix locum habere potest. Varia pentadis nomina diligenter collegit Meurs. l. c. sed nullum in iis reperitur, quod ad n. l. referri possit. HEEREN.

[p] τὰ] τῷ ἐν τῷ A.

[q] ὁ A. ἁ Obs. Misc.

4.

[a] λογιστικὰ] λογικὰ Obs. Mis. et sic infra.

[b] τᾶς γεωμετρικᾶς rescripsi pro τὰς γεωμετρικὰς. Sensus enim est: *Arithmeticam certiorem esse ipsa geometria*, quod facile docent sequentia: quæ et ipsa haud parum corrupta erant. Legebatur: Καὶ ἃ ἐκλείπει γὰρ ἁ γεωμετρία καὶ ἀπόδειξις ἁ λογιστικὰ ἐπὶ τέλει. Pro ultimo Cod. E. recte habet ἐπιτελεῖ, unde reliqua saltem quoad

τρικᾶς ἐναργεστέρῳ πραγματεύεσθαι ἃ θέλει· [c] καθ' ἃ ἐκλείπει [d] γάρ ἁ γεωμετρία, [e] τὰς ἀποδείξεις ἁ λογιστικὰ ἐπιτελεῖ. Καὶ ὅμως εἰμὲν εἰδέων τε ἁ πραγματεία, καὶ τὰ περὶ τοῖς [f] εἴδεσιν.

5 Βουθήρου περὶ ἀριθμῶν.

Ἀριθμὸς ἐκ μονάδων σύγκειται, ὅπερ ἐστὶν [a] ἀρχὴ τῶν ὄντων, καὶ μέτρον, καὶ ἀσύνθετον, καὶ ἀγέννητον, καὶ ἀΐδιον, καὶ μόνον, καὶ εἰλικρινές· ὃ χωρὶς τῶν ἄλλων ἐστὶ, καὶ
[14] αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ, καὶ ἀρχὴ καὶ πρώτη φύσις, καὶ μαθεῖν αὐτὸ μηδ' ἄλλο διορισάμενος . . . . . μόνον ἐστὶν εἰλικρινὲς αὐτὸ [b] δηλοῦν.

sensum facile restituuntur. Vult enim auctor · *probationes geometricas haud raro arithmetices demum ope absolvi, ac certiores reddi.* Unde pro καὶ ἃ dedi καθ' ἃ, et pro καὶ ἀποδ. rescripsi, τὰς ἀποδείξεις. HEEREN.

[c] καθ' ἃ] καὶ ἃ A. Obs. Mis.

[d] γάρ] αὖ A. Obs. Mis.

[e] τὰς ἀποδείξεις] καὶ ἀπόδειξις Obs. Mis. et forte A. in quo periit particula.

[f] Hæremus iterum in ultimis quæ corrupta sunt, et quæ non expedio. Legendum forte: καὶ **ὁμοῦ ἐντι** μὲν εἰδέων τε ἁ πραγματεία καὶ **τῶν** περὶ τὰ εἴδη. *Arithmeticam continere simul doctrinam de speciebus rerum* (quatenus omnia vel ad paria vel ad imparia referenda sunt) *et de iis quæ hisce speciebus conveniunt,* ut magnitudo, quantitas et reliqua universalia rerum attributa. HEEREN.

5.

[a] De variis nominibus quibus Pythagorei Monadem celebrare solebant, cf. Theol. Arithm. p. 5—9. et Meurs. de Denar. Pythag. c. III. ubi eadem fere quæ nostro loco commemorantur.—ἀγέννητον sensu flagitante rescripsi pro γεννητόν. Eo scil. distinguitur Monas a reliquis numeris, ut ipsa sit ἀσύνθετος ac ortum non habeat, cum reliqui ex ea oriantur, cf. Theol. Arithm. p. 1. et 17. Pro καὶ μόνον καὶ εἰλικρινὲς erunt forte qui malint καὶ μόνον εἰλικρ. vel καὶ μόνον ὂν καὶ εἰλικρινές. Sed lectionem nostram veram esse, docent Theol. Arithm. p. 19. Ἔστι γὰρ πόσον τι ἡ μονὰς, καὶ μονώτατον περαῖνον—σὺν γὰρ ἑτέρῳ μόνον οὐκ ἂν ποτε εἴη i. e. *id quod natura sua* **μόνον** *est, alteri non posse jungi, non enim amplius solum esset:* unde patet inter laudes Monadis referri quoque eam esse μόνον τι, atque ab omnibus reliquis sejunctum. HEEREN. γεννατὸν Obs. Mis.

[b] Ultima verba μόνον—δηλοῦν in Cod. Esc. junguntur sequentibus. Codd. V. A. lacunam indicant post διορισάμενος quam voce ὃ explet Apograph. Voss. in Observ. Miscell. l. c. Quo recepto locus sanus videtur, si legamus: καὶ μαθεῖν (scil. ἔξεστι) αὐτὸ (nempe τὸ ἓν), μηδὲν ἄλλο διορισαμένῳ, ὃ μόνον ἐστὶν καὶ εἰλικρινὲς αὐτὸ δηλοῦν. *Unitatis notio adquiri potest nulla posita alia, unde eam puram et solam per se esse, patet.* HEEREN.

Ὁ [c]περισσὸς τοῦ ἀρτίου [d]τελεώτερός ἐστιν. Ὁ μὲν γὰρ ἀρχὴν καὶ τέλος καὶ μέσον ἔχει, ὁ δὲ τοῦ μέσου στερεῖται. Καὶ ὁ [e]μὲν, ὁπότ' ἂν γεννῶνται ἀνὰ λόγον καὶ πρὸς μονάδας, ταῖς αὑτοῦ χώραις καταλαμβάνει τοὺς ταῖς γραμμαῖς περιεχομένους· ὁ δ' ἐν οἰκείᾳ μὲν γινόμενος οὐδέποτε περαίνεται, ὅταν δ' ἐν περισσῇ [f]γένηται, αὐτός τε πέρατος τυγχάνει, καὶ τὴν πλευρὰν λόγον ἔχουσαν ἴσχει.

[g]Τὸ [h]ἓν οὐσία καὶ φύσις καὶ νοῦς καὶ [i]πλήρωμα· ἀρχὴν
[16] γὰρ καὶ μέσον καὶ πέρας ἔχον ἐστί. Καὶ τὰ ἄλλα διὰ τούτου μετείληφεν ἅ ἐστι, καὶ νοεῖται τῇ τούτου φύσει ἕκαστον ἀπὸ τῶν ἄλλων εἰλικρινούμενον, καὶ εἰκών τε καὶ εἴδωλα τοῦ ἑνὸς γιγνόμενα.

[c] Quæ sequuntur inde ab ὁ περισσὸς, non cohærent cum reliquis, et in Cod. Vat. recte ab iis separantur. Non enim amplius disputatur de Monade, sed de paribus et imparibus numeris. Pythagoricorum, juniorum maxime, somnia de his collegit Meurs. l. c. cap. II. qui omnino cum n. l. est conferendus. HEEREN.

[d] τελεώτερος] τελειότερος Obs. Mis. ubi om. ὁ.

[e] Quæ sequuntur obscuriora sunt, quam ut omnino expediri queant, maxime cum in verbis quoque corruptelæ lateant. Pro γεννῶνται legendum est γεννᾶται, in τοὺς autem latere videtur τόπους, nisi post περιεχομένους nomen substantivum exciderit, ad quod τοὺς referri possit. Quidquid id sit, summa disputationis ad hoc redit. Distinguebant Pythagoræi numeros pares et impares. Hos vocabant perfectos, et finitos; illos imperfectos et infinitos. cf. Meurs. l. c. cap. II. Argumentum autem ejus rei petebant ex geometria. Duabus enim lineis nullam figuram terminari, tribus terminari; unde h. l. quoque dicitur numerus impar comprehendere spatia lineis circumscripta. Parem vero, ἐν οἰκείᾳ scil. χώρᾳ γενόμενον, si ipse per se sit, semper esse infinitum, quatenus autem in impari lateat, v. c. dyas in numero ternario, finitum esse. HEEREN.

[f] γεννῆται] γένηται A. Obs. Mis.

[g] Τὸ] τῇ A. ἡ Obs. Mis.

[h] Iterum hæc desumta esse videntur ex capite de Monade; separantur in codd. a reliquis, etsi eidem auctori tribuuntur.— Pro τὸ ἓν male codd. habent τῇ ἐν, etsi τὸ ἓν legendum esse, ultima verba εἴδωλα τοῦ ἑνὸς γιγνόμενα postulant. De laudibus quæ monadi hic tribuuntur cf. Meurs. et Theol. Arithm. ll. cc. HEER.

[i] πλήρωμα rescripsi pro μήνωμα, in Codd. V. A. E. quod non intelligo. Πλήρωμα autem postulant sequentia. Nam πλήρεις dicuntur Pythagoreis numeri impares, adeoque ipsa monas, quippe qui principium finem et medium habent. Plut. de vit. Hom. p. 161. ed. Oporin. [c. 145. Wytt.] Ὁ Πυθαγόρας τὸν μὲν ἄρτιον ἐνδεῆ καὶ ἀτελῆ, τὸν δὲ περισσὸν πλήρη τε καὶ τέλειον ἀπέφηνεν. HEER.

6 Ἐκ τῶν [a] Ἀριστοξένου περὶ ἀριθμητικῆς.

Τὴν δὲ περὶ τοὺς ἀριθμοὺς πραγματείαν μάλιστα πάν- p. 2,
των τιμῆσαι δοκεῖ Πυθαγόρας, καὶ [b] προάγειν εἰς τὸ πρόσθεν,
ἀπαγαγὼν ἀπὸ τῆς τῶν ἐμπόρων χρείας, πάντα τὰ πρά-
γματα ἀπεικάζων τοῖς ἀριθμοῖς. Τά τε γὰρ ἄλλα ἀριθμὸς
ἔχει, καὶ λόγος ἐστὶ πάντων τῶν ἀριθμῶν πρὸς ἀλλήλους.
Αἰγύπτιοι δὲ Ἑρμοῦ [c] φασὶν εὕρημα, ὃν καλοῦσι Θώθ· οἱ
δὲ, ἐκ [d] τῶν θείων περιφορῶν ἐπινοηθῆναι. Μονὰς [e] μὲν οὖν
ἐστὶν ἀρχὴ ἀριθμοῦ, ἀριθμὸς δὲ τὸ ἐκ τῶν μονάδων πλῆθος
συγκείμενον. Τῶν δὲ ἀριθμῶν ἄρτιοι μέν εἰσιν οἱ εἰς
ἴσα διαιρούμενοι, περισσοὶ δὲ οἱ εἰς ἄνισα, καὶ μέσον
ἔχοντες. Οὕτως ἐν περισσαῖς ἡμέραις [f] αἱ κρίσεις τῶν
νοσημάτων γίνεσθαι δοκοῦσι καὶ αἱ μεταβολαὶ, ὅτι ὁ p. 3
[18] περιττὸς καὶ ἀρχὴν καὶ τελευτὴν καὶ μέσον ἔχει, ἀρχῆς
καὶ ἀκμῆς καὶ παρακμῆς ἐχόμενα.

7 Πλάτωνος έ τῶν Νόμων. [p. 747.]

Καὶ κοινῷ λόγῳ νομίσαντα πρὸς πάντα εἶναι χρησίμους τὰς τῶν ἀριθμῶν διανομὰς καὶ ποικίλσεις, ὅσα τε αὐτοὶ ἐν ἑαυτοῖς ποικίλλονται, καὶ ὅσα ἐν μήκεσι παρέχονται καὶ ἐν βάθεσι ποικίλματα, καὶ δὴ καὶ ἐν φθόγγοις καὶ κινήσεσι, ταῖς τε κατὰ τὴν εὐθυπορίαν τῆς ἄνω καὶ κάτω φορᾶς, καὶ τῆς κύκλῳ περιφορᾶς. πρὸς γὰρ ταῦτα πάντα δεῖ βλέψαντα τόν γε νομοθέτην προστάττειν τοῖς πολίταις πᾶσιν εἰς δύναμιν τούτων μὴ ἀπολείπεσθαι τῆς συντάξεως. πρός τε γὰρ οἰκονομίαν καὶ πρὸς πολιτείαν, καὶ πρὸς τὰς

6.

[a] Ἀριστοξένου] Ἀριστοξένους A.

[b] προάγειν] προσαγαγεῖν A.

[c] φησὶ] φασὶν V. A.

[d] τῶν θείων περιφορῶν] αἱ θεῖαι περιφοραὶ sunt motus siderum, quæ a Pythagora, ut a reliquis antiquissimis philosophis, Deos vocari solere, nemo ignorat. HEEREN.

[e] δὲ οὖν] μὲν οὖν V. A.

[f] αἱ κρίσεις] Quæ hic de diebus criticis morborum dicuntur, fluxerunt ex antiqua medicorum opinione, in dies impares in morbis acutis crisin morbi cadere. cf. Galen. περὶ κρίσεων L. II. c. 9. Ultimum ἐχόμενα pendet ex νοσημάτων, quod præcesserat. HEER.

τέχνας πάσας, ἐν οὐδὲν οὕτω δύναμιν παρέχει παιδείας μάθημα μεγάλην, ὡς ἡ περὶ τοὺς ἀριθμοὺς διατριβή. τὸ δὲ μέγιστον, ὅτι τὸν νυστάζοντα καὶ ἀμαθῆ φύσει ἐγείρει, καὶ εὐμαθῆ καὶ μνήμονα καὶ ἀγχίνουν ἀπεργάζεται παρὰ τὴν αὑτοῦ φύσιν ἐπιδιδόντα θείᾳ τέχνῃ.

8 Ἐκ τῶν [a] Μοδεράτου Πυθαγορείου.

[b] Ἔστιν ἀριθμὸς, ὡς τύπῳ εἰπεῖν, σύστημα μονάδων, ἢ προποδισμὸς πλήθους ἀπὸ μονάδος ἀρχόμενος, καὶ ἀναποδισμὸς εἰς μονάδα [c] καταλήγων. Μονάδας δὲ [d] περαίνουσά [ἐστι] [e] ποσότης· ἥτις μειουμένου τοῦ πλήθους κατὰ τὴν ὑφαίρεσιν, παντὸς ἀριθμοῦ στερηθεῖσα, μονήν τε καὶ στάσιν λαμβάνει. Περαιτέρω γὰρ ἡ μονὰς τῆς ποσότητος οὐκ ἰσχύει ἀναποδίζειν· ὥστε μονὰς ἤτοι ἀπὸ τοῦ ἑστάναι καὶ [f] κατὰ ταυτὰ ὡσαύτως ἄτρεπτος μένειν, ἢ ἀπὸ τοῦ διακεκρίσθαι καὶ παντελῶς μεμονῶσθαι τοῦ πλήθους εὐλόγως ἐκλήθη.

9

[20] Τινὲς τῶν ἀριθμῶν ἀρχὴν ἀπεφήναντο τὴν μονάδα, τῶν δὲ ἀριθμητῶν [a] τὸ ἕν. Τοῦτο δὲ σῶμα τεμνόμενον εἰς ἄπειρον· ὥστε τὰ ἀριθμητὰ τῶν ἀριθμῶν ταύτῃ διαλλάττειν, ᾗ διαφέρει τὰ σώματα τῶν ἀσωμάτων. Εἰδέναι δὲ καὶ τοῦτο χρὴ, ὅτι τῶν ἀριθμῶν εἰσηγήσαντο τὰς ἀρχὰς, οἱ μὲν νεώτεροι τήν τε μονάδα καὶ τὴν δυάδα, οἱ δὲ [b] Πυθαγόρειοι

8.

[a] Μοδεράτου Πυθαγορείου] Μοδεράστου Πυθαγορίου A.

[b] Ἔστι δὲ] ἔστιν A.

[c] καταλλήλων] καταλήγων V. A.

[d] περαίνουσιν] περαίνουσα V. A. ἐστι addidit Heeren.

[e] ποσότης] μεσότης V.

[f] κατὰ ταυτὰ, *pari semper modo*, sic recte Codd. V. E. pro κατὰ ταῦτα. HEEREN.

9.

[a] Distinctionem inter unum et unitatem (τὸ ἓν et τὴν μονάδα) explicat Anonym. de vita Pythag. p. 44. ed. Holsten. Ὅτι διαφέρειν ἔλεγον οἱ ἀπὸ Πυθαγόρου μονάδα καὶ ἕν. Μονὰς μὲν γὰρ παρ᾽ αὐτοῖς ἐνομίζετο ἡ ἐν τοῖς νοητοῖς οὖσα, ἓν δὲ ἐν τοῖς ἀριθμοῖς (leg. ἀριθμητοῖς, *quæ numerari possunt*, i. e. quæ sensibus obvia sunt, τοῖς αἰσθητοῖς) ὁμοίως καὶ δύω τὸ ἓν τοῖς ἀριθμητοῖς. Differre nempe ita, (ut nos loquimur,) ut *unitas* sit notio abstracta, *unum* notio concreta. cf. Bruck. vol. I. p. 1048. HEEREN.

[b] Πυθαγορικοὶ] Πυθαγόριοι A.

πάσας παρὰ τὸ ἑξῆς τὰς τῶν ὅρων ἐκθέσεις, δι᾽ ὧν ἄρτιοί τε καὶ περιττοὶ [c] νοοῦνται.

10

[a] Πυθαγόρας πλείστῃ σπουδῇ περὶ τοὺς ἀριθμοὺς ἐχρήσατο, τάς τε τῶν ζώων γενέσεις ἀνῆγεν [b] εἰς ἀριθμοὺς, καὶ τῶν ἀστέρων τὰς περιόδους. Ἔτι δὲ τοῖς θεοῖς ἀπεικάζων [c] ἐπωνόμαζεν, ὡς Ἀπόλλωνα μὲν τὴν μονάδα οὖσαν, Ἄρτεμιν
[22] δὲ τὴν δυάδα, τὴν δὲ ἑξάδα Γάμον καὶ Ἀφροδίτην, τὴν δὲ ἑβδομάδα [d] Καιρὸν καὶ Ἀθηνᾶν. Ἀσφάλιον δὲ [e] Ποσειδῶνα τὴν ὀγδοάδα, καὶ τὴν δεκάδα Παντέλειαν. [f] Αὐτοῦ

[c] Ultima hæc verba admodum obscura sunt. Sensus mihi videtur esse, Pythagoricos non monadem et dyadem, sed omnino parem atque imparem numerorum rationem pro principiis habuisse. Nam *αἱ τῶν ὅρων ἐκθέσεις, δι᾽ ὧν οἱ ἄρτιοι καὶ περιττοὶ νοοῦνται*, sunt placita Pythagoricorum quibus paris et imparis numeri natura explicatur. Sub Pythagoricis autem antiquos Pythagoræ asseclas intelligendos esse, docet præcedens *νεώτεροι*, quibus opponuntur. *Juniores* enim illi, sunt Plato cum suis asseclis. Eum enim hoc systema secutum esse, quo monas et dyas principia rerum ponuntur, testis est Arist. Phys. I. 6. Docte hæc explicat Tiedem. *Geist der speculat. Phil.* p. 114. HEEREN.

10.

[a] Πυθαγόρας] Certum est auctorem, quisquis sit, ante oculos habuisse vitam Homeri, quæ sub Plutarchi nomine circumfertur, quam sæpius verbotenus exscripsit. Petita inde sunt prima statim verba II. [c. 145. ed. Wyttenb.] *Ὁ γὰρ Πυθαγόρας τοὺς ἀριθμοὺς μεγίστην δύναμιν ἔχειν ἡγούμενος, καὶ πάντα εἰς ἀριθμοὺς ἀναφέρων, τῶν τε ἄστρων τὰς περιόδους, καὶ τῶν ζώων τὰς γενέσεις, δύο τὰς ἀνωτάτω ἀρχὰς ἐλάμβανε.* Proxima de deorum nominibus ibi desiderantur, sed aliunde satis nota sunt. cf. Plutarch. de Isid. et Osir. Op. T. II. p. 354 F. Nicomach. ap. Phot. Cod. 187. et Theol. Arithm. passim. Ex recentioribus vero præter Meursium in Denar. Pyth. l. l. maxime. Tiedemannum in *Aelteste Philos. Griech.* p. 392, etc. qui ea docte explicavit. HEER.

[b] *εἰς ἀριθμοὺς*] *ἰσαριθμοὺς* V.

[c] *ἐπωνόμαζεν*] *ἐπονομαζόμενος* Obs. Mis. *ἐπωνομάζομεν* A. qui mox *Ἄρτεμον*.

[d] *καὶ Καιρὸν*] *καὶ* om. A. Obs. Mis.

[e] Neptuni Asphalii nomen explicat Plutarch. in Thes. Op. I. p. 17. *Καὶ γὰρ Ποσειδῶνα ταῖς ὀγδοαῖς τιμῶσιν. Ἡ γὰρ ὀγδοὰς, κύβος ἀπ᾽ ἀρτίου πρῶτος οὖσα, καὶ τοῦ πρώτου τετραγώνου διπλασία, τὸ μόνιμον καὶ δυσκίνητον οἰκεῖον ἔχει τῆς τοῦ θεοῦ δυνάμεως, ὃν* **Ἀσφάλιον** *καὶ γαιήοχον προσονομάζομεν.* Emendandus hinc Anatolius in Theol. Arithm. p. 56. qui *ἡ ὀγδοὰς* inquit *ἀσφάλεια καλεῖται,* quod recepit quoque Meurs. l. c. sed leg. *Ἀσφάλιος*, nempe Neptunus. HEEREN. Mox *παντέλειον* Obs. Mis.

[f] Proxima inde ab *αὐτοῦ δὲ πάλιν* etc. iisdem fere verbis exstant

δὲ πάλιν τοῦ ἀριθμοῦ [g]τὸν μὲν ἄρτιον ἀτελῆ, πλήρη δὲ καὶ τέλειον ἀπεφήνατο τὸν περιττὸν, ὅτι μιγνύμενός τε πρὸς τὸν ἄρτιον ἀεὶ ποιεῖται περικρατεῖν τὸν ἐξ ἀμφοῖν περισσὸν, αὐτῷ τε πάλιν συντιθέμενος γεννᾷ τὸν ἄρτιον, ὁ δ' ἄρτιος οὐδέποτε τὸν περισσὸν, ὡς οὐ [h]γόνιμος ὢν, οὐδὲ ἔχων δύναμιν ἀρχῆς· ὥστε ἐν τῷ διαιρεῖσθαι δίχα, πολλοὶ τῶν ἀρτίων εἰς περισσοὺς τὴν ἀνάλυσιν λαμβάνουσιν, [i]ὡς ὁ ἑξκαίδεκα, τῶν δὲ περισσῶν εἰς ἀρτίους [k]οὐθείς· ἀδιαίρετον γὰρ ἡ ἀρχὴ καὶ τὸ στοιχεῖον εἰς ἕτερα· τοῖς δὲ ἄλλοις εἰς τὰ
[24] αὐτὰ πάλιν αἱ διαλύσεις. [l]Ἔτι δὲ τῇ μονάδι τῶν ἐφεξῆς περισσῶν γνωμόνων περιτιθεμένων, ὁ γινόμενος ἀεὶ τετράγωνός ἐστι· τῶν δὲ ἀρτίων ὁμοίως περιτιθεμένων, [m]ἑτερομήκεις καὶ ἄνισοι πάντες ἀποβαίνουσιν· ἴσον δὲ ἰσάκις οὐδείς.

in Plut. Vita Hom. l. c. ὅθεν καὶ τῶν ἐφεξῆς ἀριθμῶν (qui nempe monadem et dyadem excipiunt) τὸν μὲν ἄρτιον ἐνδεᾶ καὶ ἀτελῆ, τὸν δὲ περισσὸν, πλήρη τε καὶ τέλειον ἀπέφηνε, ὅτι μιγνύμενος πρὸς τὸν ἄρτιον, αἰεὶ τὴν ἑαυτοῦ δύναμιν διασώζει, τοῦ περισσοῦ καὶ ἐν τούτοις ἐπικρατοῦντος. Ἑαυτῷ τε συντιθέμενος γεννᾷ τὸν ἄρτιον· γόνιμος γάρ ἐστι, καὶ ἔχει δύναμιν ἀρχῆς, καὶ διαίρεσιν οὐκ ἐπιδέχεται, ἀεὶ τῆς μονάδος ἐν αὐτῷ περιούσης. Ὁ δὲ ἄρτιος οὔτε γεννᾷ ποτε τὸν περισσὸν συντιθέμενος ἑαυτῷ, οὔτ' ἔστιν ἀδιαίρετος. HEEREN.

[g] τὸν μὲν] τὸ μὲν et ἀπεφήνατο A. non ἀπέφηνε.

[h] γόνιμος] γόνυμος A.

[i] Exemplum, quod Stob. adducit, numeros pares dividendo resolvi in impares, ὡς ὁ ἑξκαίδεκα, non quadrat, dimidium enim forent octo, adeoque numerus par; legendum itaque erit ὡς ὀκτωκαίδεκα, cujus dimidium novem, numerum imparem efficit. Desiderantur autem hæc in Plutarcho, ita ut reliqua. HEEREN. ὁ om. A.

[k] οὐδείς] οὐθείς A.

[l] Ἔτι δὲ etc. Explicanda hæc sunt ex antiqua Pythagoricorum terminologia. Γνώμονες nempe de quibus hic loquitur auctor, vocabantur apud eos omnes numeri impares. Joh. Philop. ad Aristot. Phys. l. III. p. 131. Καὶ οἱ ἀριθμητικοὶ δὲ γνώμονας καλοῦσι πάντας τοὺς περιττοὺς ἀριθμούς. Causam adjicit Simplic. ad eundem locum, Γνώμονας δὲ ἐκάλουν τοὺς περιττοὺς οἱ Πυθαγόρειοι, διότι προστιθέμενοι τοῖς τετραγώνοις τὸ αὐτὸ σχῆμα φυλάττουσι, ὥσπερ καὶ οἱ ἐν γεωμετρίᾳ γνώμονες. Quæ nostro loco leguntur jam satis clara erunt. Vult nempe auctor, monade addita ad primum gnomonem, ad sequentes autem summam, quam proxime antecedentes numeri efficiunt, semper prodire numeros quadratos. v. c. positis gnomonibus 3. 5. 7. 9. primum $1+3=2^2$. tunc porro $1+3$ (i. e. 4) $+5=3^2$. $9+7=4^2$. $16+9=5^2$. et sic porro. cf. Tiedem. *Geist der speculat. Philos.* p. 107. 108. Reliqua expedita sunt. HEEREN.

[m] ἑτερομήκεις] ἑτερομήκαις A.

Καὶ μὴν εἰς δύο διαιρουμένων ἴσα, τοῦ μὲν περισσοῦ μονὰς ἐν μέσῳ περίεστι, τοῦ δὲ ἀρτίου κενὴ λείπεται χώρα καὶ ἀδέσποτος καὶ ἀνάριθμος, ὡς [n] ἂν ἐνδεοῦς καὶ ἀτελοῦς ὄντος. Περὶ δὲ τοῦ κοινοῦ λόγου τῶν ἀριθμῶν τοῦτον διέξεισι τὸν τρόπον.

Κεφ. β΄.

ΟΤΙ ΘΕΟΣ ΔΗΜΙΟΥΡΓΟΣ ΤΩΝ ΟΝΤΩΝ, ΚΑΙ ΔΙΕΠΕΙ ΤΟ ΟΛΟΝ ΤΩΙ ΤΗΣ ΠΡΟΝΟΙΑΣ ΛΟΓΩΙ, ΚΑΙ ΠΟΙΑΣ ΟΥΣΙΑΣ ΥΠΑΡΧΕΙ. p. 3 28

1 Θεοδέκτου.

Ἀπὸ τῶν θεῶν [a] ἀρχὴν δὲ ποιεῖσθαι πρέπον.

2 [Εὐριπίδου Fr. inc. 1.]

[26] Ὁρᾷς τὸν ὑψοῦ, τὸν δ᾽ ἄπειρον αἰθέρα,
καὶ γῆν πέριξ ἔχονθ᾽ ὑγραῖς ἐν ἀγκάλαις;
τοῦτον νόμιζε Ζῆνα, [a] τόνδ᾽ ἡγοῦ θεόν.

3 [Ἀράτου Phæn. 1.]

Ἐκ Διὸς [a] ἀρχώμεσθα, τὸν οὐδέποτ᾽ ἄνδρες ἐῶμεν
ἄρρητον, [b] μεσταὶ δὲ Διὸς πᾶσαι μὲν ἀγυιαὶ,
πᾶσαι δ᾽ ἀνθρώπων ἀγοραὶ, μεστὴ δὲ θάλασσα,
καὶ λιμένες, [c] πάντη δὲ Διὸς κεχρήμεθα πάντες.
τοῦ γὰρ καὶ γένος ἐσμὲν, ὁ δ᾽ ἤπιος ἀνθρώποισι
δεξιὰ σημαίνει, λαοὺς δ᾽ ἐπὶ [d] ἔργον ἐγείρει
μιμνήσκων βιότοιο, λέγει δ᾽ ὅτε [e] βῶλος ἀρίστη
βουσί τε καὶ μακέλῃσι, λέγει δ᾽ ὅτε δεξιαὶ ὧραι
καὶ φυτὰ γυρῶσαι, καὶ σπέρματα πάντα [f] βαλέσθαι.

4 [Ὁμήρου Il. υ΄. 242.]

Ζεὺς δ᾽ ἀρετὴν ἄνδρεσσιν ὀφέλλει τε μινύθει τε

[n] ἂν ἐνδεοῦς] ἀνενδεοῦς A. qui mox διέξησι.

1.

[a] ἀρχήν γε] ἀρχὴν δὲ A.

2.

[a] τόνδ᾽] τοῦτον δ᾽ A.

3.

[a] ἀρχώμεσθα τὸν] ἀρχόμεθα τόνδ᾽ A.

[b] μεσταὶ δὲ] μεσταὶ μὲν A.

[c] πάντη] πάντη δὲ V. A.

[d] ἔργον] ἔργων V. A.

[e] βῶλος] βόλος A. qui mox μακέλλησι.

[f] βαλέσθαι] βάλλεσθαι A. V.

ὅππως κεν ἐθέλῃσιν, ὁ γὰρ [a] κάρτιστος ἁπάντων. p. 3

5

Ὁ γὰρ θεὸς μέγιστος ἀνθρώποις [a] νόμος.

6 Σιμωνίδου.

[28] Ζεὺς [a] πάντων αὐτὸς φάρμακα μοῦνος ἔχει.

7 [Ὁμήρου Od. ζ΄. 188.]

Ζεὺς δ' αὐτὸς νέμει ὄλβον Ὀλύμπιος ἀνθρώποισιν,
ἐσθλοῖς ἠδὲ κακοῖσιν, ὅπως ἐθέλῃσιν [a] ἑκάστῳ.

8 [Ὁμήρου Od. π΄. 212.]

Ῥηΐδιον δὲ θεοῖσι, [a] τοὶ οὐρανὸν εὐρὺν ἔχουσιν,
ἠμὲν κυδῆναι θνητὸν βροτὸν, ἠδὲ κακῶσαι.

9

Ζεὺς ὁ καὶ ζωῆς καὶ θανάτου πείρατα [a] νωμῶν.

10 Σιμωνίδου.

[a] Οὔτις [b] ἄνευ [γε] θεῶν ἀρετὴν λάβεν, οὐ πόλις οὔτις
οὐ . . . .

11 Μενάνδρου [804.]

Ἅπαντα σιγῶν ὁ θεὸς ἐξεργάζεται.

4.

[a] κάρτιστος] κράτιστος V.A. Supra ἄνδρεσιν et ὅπως A.

5.

[a] μόνος] νόμος A. V.

6.

[a] πάντων] Sic Grotius cum MS. Paris. πάντως A. cum Cantero.

7.

Versus Homeri exstant Od. ζ΄. 188. et π΄. 212, 213. ultimum versum, qui ap. Cant. deest, supplent Codd. V. A. E. HEEREN.

[a] ἑκάστῳ om. A. V.

8.

[a] τοὶ οὐρανὸν] τὸν οὐρανὸν V. A. Mox κηδῆναι A. κηδῆσαι Obs. Mis. et ὀδὲ pro ἠδὲ κακῶσαι A. Obs. Mis.

9.

Quæ inde ab hoc versu sequuntur, in Cant. ed. plane desiderantur. Versus ipse in codd. ἀδέσποτος relictus est. HEEREN.

[a] νέμων] νωμῶν A.

10.

[a] Οὔτις] Supplenda hæc sunt ex Theophilo ad Autolyc. II. p. 74. ubi locus hic, ibi quoque Simonidi tributus, plenius sic legitur: Καὶ Σιμωνίδης· Οὔτις ἄνευτε θεῶν ἀρετὴν λάβεν, οὐ πόλις, οὔτις Οὐ βροτὸς, οὐ θεὸς ὃς παμμήτις· ἔστι δ' ἐν αὐτοῖς Οὐδὲν ἀπήμαντον· unde ἄνευτε pro ἄνευ rescripsi apud Stob. ut versus constaret. HEER.

[b] ἄνευ τε] τε om. A. ubi om. οὔτις post πόλις.

12 Κλεάνθους.

[30] Κύδιστ' ἀθανάτων, πωλυώνυμε, παγκρατὲς αἰεὶ
[a] Ζεῦ, φύσεως ἀρχηγὲ, νόμου μετὰ πάντα κυβερνῶν,
χαῖρε· σὲ γὰρ (καὶ) [b] πᾶσι θέμις θνητοῖσι προσαυδᾷν.
ἐκ σοῦ γὰρ γένος ἐσμὲν, † [c] ἤχου μίμημα λαχόντες
[d] μοῦνοι, ὅσα ζώει τε καὶ ἕρπει θνήτ' ἐπὶ γαῖαν.
τῷ σε καθυμνήσω, καὶ σὸν κράτος αἰὲν [e] ἀείσω.
[f] σοὶ δὴ πᾶς ὅδε κόσμος ἑλισσόμενος περὶ γαῖαν
πείθεται, ᾗ κεν ἄγῃς, καὶ ἑκὼν ὑπὸ [g] σεῖο κρατεῖται.
τοῖον [h] ἔχεις ὑποεργὸν ἀνικήτοις [i] ἐνὶ χερσὶν
ἀμφήκη, πυρόεντα, ἀειζώοντα κεραυνόν.
τοῦ γὰρ ὑπὸ πληγῆς φύσεως πάντ' [k] ἐρρίγασιν,
[l] ᾧ σὺ κατευθύνεις [m] κοινὸν λόγον, ὃς διὰ πάντων
[n] φοιτᾷ, μιγνύμενος μεγάλοις μικροῖς τε φάεσσιν.
[o] ὡς τόσσος γεγαὼς, ὕπατος βασιλεὺς διὰ παντὸς,
[32] οὐδέ τι γίγνεται ἔργον ἐπὶ χθονὶ σοῦ δίχα, [p] δαῖμον,
οὔτε κατ' αἰθέριον θεῖον πόλον, οὔτ' [q] ἐνὶ πόντῳ,
πλὴν ὁπόσα ῥέζουσι κακοὶ σφετέρῃσιν [r] ἀνοίαις.
ἀλλὰ σὺ καὶ τὰ περισσὰ [s] ἐπίστασαι ἄρτια θεῖναι,
καὶ [t] κοσμεῖν τὰ ἄκοσμα, καὶ οὐ φίλα σοὶ φίλα ἐστίν.

12.

[a] Ζεῦ] Ζεὺς A. Hunc hymnum post alios ed. Sturzius et Mersdorf. Lips. 1835. 8vo.

[b] πᾶσι] Scaliger πάντεσσι. Alii καὶ πᾶσι.

[c] ἤχου] Lege ὄχου μίμημα. Corpus enim ὄχημα ψυχῆς. SCALIGER. Brunckius ἴῆς, ὅου Ahlwardt. ὃ σοῦ Petersen. Mox λαβόντες Obs. Mis.

[d] μοῦνοι, ὅσα] μοῦνοι A. Obs. Mis. omiss. ὅσα. Ursinus μοῦνον.

[e] ἀείσω] ἀΐδω A. Obs. Mis.

[f] σοὶ δὴ] Ita Scaliger. σοὶ δὲ A.

[g] σεῖο] σοῖον sic A. σοῖο Obs. Mis.

[h] ἔχεις] ἔχοις A. Obs. Mis.

[i] ὑπὸ χερσὶν] ἐνὶ χερσὶν Brunck.

[k] ἐρρίγασιν] ἔρηγα A. Obs. Mis.

[l] ᾧ σὺ] Ante hæc vv. lacuna in A.

[m] κοινὸν λόγον] λόγον κοινὸν A.

[n] φοιτᾷ] Ante h. v. lacuna in A. qui pergit μιγνύμενος μεγάλων μικροῖσι φάεσσι. Heerenius post Brunckium μ. μεγάλοις μικροῖς τε φάεσσιν.

[o] ὡς τόσσος] Ante h. vv. lacuna in A. ὃς τόσσος Ursinus.

[p] δαῖμον] δαίμων V. δαίμων A. Obs. Mis.

[q] ἐνὶ] ἐπὶ A. Mutavit Brunck.

[r] ἀνοίαις] σφετέραισιν ἐννοίαις A. Obs. Mis.

[s] ἐπίστασαι] Sic Obs. Mis. ἐπίστασαι A. Versum om. Ursin.

[t] κοσμεῖς] κοσμεῖν A. Obs. Mis.

ὧδε γὰρ εἰς ἓν [u] πάντα συνήρμοκας ἐσθλὰ κακοῖσιν,
ὥσθ᾽ ἕνα [x] γίγνεσθαι πάντων λόγον αἰὲν ἐόντων,
ὃν φεύγοντες ἐῶσιν ὅσοι θνητῶν κακοί εἰσι,
δύσμοροι, οἵ τ᾽ ἀγαθῶν μὲν ἀεὶ κτῆσιν ποθέοντες
οὔτ᾽ ἐσορῶσι θεοῦ κοινὸν νόμον, οὔτε κλύουσιν,
[y] ᾧ κεν πειθόμενοι σὺν νῷ βίον ἐσθλὸν ἔχοιεν.
αὐτοὶ δ᾽ [z] αὖθ᾽ ὁρμῶσιν ἄνευ καλοῦ ἄλλος ἐπ᾽ ἄλλα,
οἱ μὲν ὑπὲρ δόξης σπουδὴν δυσέριστον ἔχοντες,
οἱ δ᾽ ἐπὶ κερδοσύνας τετραμμένοι οὐδενὶ κόσμῳ,
ἄλλοι δ᾽ εἰς ἄνεσιν καὶ σώματος ἡδέα ἔργα
. . . . . [a] ἐπ᾽ ἄλλο τε δ᾽ ἄλλα φέροντες,
σπεύδοντες μάλα πάμπαν ἐναντία τῶνδε γενέσθαι.
ἀλλὰ [b] Ζεῦ πάνδωρε, κελαινεφὲς, ἀρχικέραυνε,
[34] ἀνθρώπους [μὲν] [c] ῥύου ἀπειροσύνης ἀπὸ λυγρῆς,
ἣν σὺ, πάτερ, σκέδασον ψυχῆς ἄπο, δὸς δὲ κυρῆσαι
γνώμης, ᾗ πίσυνος σὺ δίκης μέτα πάντα κυβερνᾷς,
ὄφρ᾽ ἂν τιμηθέντες ἀμειβώμεσθά σε τιμῇ,
ὑμνοῦντες τὰ σὰ ἔργα διηνεκὲς, ὡς ἐπέοικε
θνητὸν ἐόντ᾽, ἐπεὶ [d] οὔτε βροτοῖς γέρας ἄλλο τι μεῖζον,
οὔτε θεοῖς, ἢ κοινὸν ἀεὶ νόμον ἐν δίκῃ ὑμνεῖν.

13

Θεοῦ [a] θέλοντος [b] μετὰ πάντα γίγνεται.
τί δ᾽ οὐ γένοιτ᾽ ἂν θεοῦ ἐφιέντος [c] τύχῃ;

[u] ἅπαντα] πάντα A.

[x] γίγνεσθαι π. λόγον α. ἐόντα] γίνεσθαι π. λόγων α. ἐόντων A. ἐόντων Obs. Mis.

[y] ᾧ κεν] οἵ κεν A. Obs. Mis.

[z] αὖθ᾽] αὖ. A. scil. post αὖ litera videtur periisse. Mox κακοῦ A. Obs. Mis. καλοῦ Ursin. Infra κερδοσύνης Obs. Mis.

[a] ἐπ᾽ ἄλλοτε] Ante hæc vv. lacuna in A. ἐπ᾽ ἄλλατε Obs. Mis. δ᾽ add. Ursin.

[b] Ζεῦ] Ζεὺς A. Obs. Mis.

[c] ῥύου] Aut μὲν ῥύου aut ῥύσασθαι. SCALIGER. ῥύοιο cum Brunckio Heeren.

[d] οὔτε—ἄλλο τι] οὔτοι—ἄλλο τε A. Obs. Mis.

13.

[a] θέλοντος] θελὸσ sic A. cum ∴. in marg.

[b] μέτα] μετὰ A. ἔργματα vel ἔργα Jacobs. Neutrum probo. Mox γίνεται A. Sequuntur statim in A. Homeri versus infra legendi n. 14.

[c] τύχῃ] τύχην Heeren.

ξὺν τῷ θεῷ πᾶς καὶ γελᾷ κ' ὀδύρεται.
γεννᾷ τὸ θεῖον εὐτυχῆ [d] δωρήματα.
Ζεὺς ἔσθ' ὁ πέμπων τὴν ἐφήμερον τροφήν.
ἄνευ θεοῦ γὰρ οὐδὲ εἷς ἀνὴρ σθένει.
[36] θείᾳ προνοίᾳ πάντ' ἐγέννησε φύσις.
θεὸς μόνος πέφυκεν ἐν βροτοῖς μέγας.

14 [Ὁμήρου Od. ρ'. 485.]

[a] Καί τε θεοὶ ξείνοισιν ἐοικότες ἀλλοδαποῖσι
παντοῖοι [b] τ' ἐλθόντες ἐπιστρωφῶσι πόληας,
ἀνθρώπων ὕβριν τε καὶ εὐνομίην ἐφορῶντες.

15 Ὁμήρου [Od. σ'. 135.]

Τοῖος γὰρ [a] νόος ἐστὶν ἐπιχθονίων ἀνθρώπων,
οἷον ἐπ' ἦμαρ ἄγῃσι πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε.

16

[a] Πανταχοῦ πάρεστι, καὶ βλέπει πάντα θεός.

17

Θεοῦ γὰρ οὐδεὶς χωρὶς εὐτυχεῖ βροτῶν,
οὐδ' εἰς τὸ μεῖον ἦλθε, τὰς θνητῶν δ' ἐγὼ
χαίρειν κελεύω θεῶν ἄτερ προθυμίας.

18 [Ἀρχιλόχου.]

[38] [a] Τοῖος ἀνθρώποισι θυμὸς, Γλαῦκε, Λεπτίνεω παῖ,
γίνεται θνητοῖς, [b] ὁκοίην Ζεὺς ἐφ' ἡμέρην ἄγῃ.

19 [Σιμωνίδου.]

Θεοῦ θέλοντος κἂν ἐπὶ ῥιπὸς πλέοις.

[d] δωρήματα] Sic A. non δωρήματος, quod in codd. se invenisse profitetur Heerenius. Idem in contextu edidit διὰ ῥήματος ex Heynii monitu. Perperam.

14.

[a] Καί τε] καί σε V. E. A. Obs. Mis.

[b] τ' ἐλθόντες] τελέθοντες Hom.

15.

[a] νόος] λόγος Obs. Mis. et A. ubi mox ἀνθρῶν.

16.

[a] Πανταχοῦ] Sic locus Tragici videtur refingendus: Θεὸς—Βλέπει τὰ πάντα καὶ πάρεστι πανταχοῦ. Θεοῦ γὰρ οὐδεὶς χωρὶς εὐτυχεῖ βροτῶν, Οὐδ' εἰς τὸ μεῖζον ἦλθε· τὰς θνητῶν δ' ἐγὼ Χαίρειν κελεύω θεῶν ἄτερ προμηθίας. VALCKENÆR.

18.

[a] Τοῖος] τοῖς A. Obs. Mis.

[b] ὁκοῖον] οἰκοίην A.

20

Θνητοῖσιν ἀνθρώποισι καταφυγὴ θεοί.

21

Καὶ τἀμπλακήματ᾽ ἔρχεται [a] θεοὺς ἔπι,
ὅθεν λαβόντες οἱ κακῶς πεπραγότες
σωτηρίαν, [b] ἀπῆλθον ἐκ δυσπραξίας.

22

[40] Νῦν [a] οὐκ ἔστι μοι δίχα θυμός,
[b] ἀλλ᾽ ἀσαφής, ὅτι καὶ τὰ βροτοῖς Ζεὺς
ἐπικάρσια τέμνει, καθελὼν μὲν
δοκέοντ᾽, ἀδόκητον δ᾽ [c] ἐξαείρων.

23 [Ὀρφέως.]

Ζεὺς πρῶτος γένετο, Ζεὺς ὕστατος ἀρχικέραυνος,
Ζεὺς κεφαλή, Ζεὺς μέσσα, Διὸς δ᾽ ἐκ πάντα [a] τέτυκται·
Ζεὺς ἄρσην γένετο, Ζεὺς ἄμβροτος ἔπλετο [b] νύμφη,
[42] Ζεὺς [c] πυθμὴν γαίης τε καὶ οὐρανοῦ ἀστερόεντος·
[Ζεὺς πνοιὴ πάντων, Ζεὺς ἀκαμάτου πυρὸς ὁρμή·
Ζεὺς πόντου ῥίζα, Ζεὺς ἥλιος ἠδὲ σελήνη·]
Ζεὺς βασιλεύς, Ζεὺς αὐτὸς [d] ἁπάντων ἀρχιγένεθλος·
ἓν κράτος, [e] εἷς δαίμων γένετο, μέγας ἀρχὸς ἁπάντων·
[f] ἓν δὲ δέμας βασίλειον, ἐν ᾧ τάδε πάντα κυκλεῖται,
πῦρ καὶ ὕδωρ καὶ γαῖα καὶ αἰθήρ, νύξ τε καὶ ἦμαρ·
καὶ Μῆτις, [g] πρῶτος γενέτωρ, καὶ Ἔρως πολυτερπής·
[44] πάντα γὰρ ἐν Ζηνὸς μεγάλῳ τάδε σώματι κεῖται·
[h] τοῦ δή τοι κεφαλὴν μὲν ἰδεῖν καὶ καλὰ πρόσωπα

21.

[a] θεοὺς ἔπι] Sic Jacobs. θεὸς ἔπι A.

[b] ἀπῆλθον ἐκ δυσπραξίας] ἀπηλ̃ ἐκ δυσπραξίαν A. Obs. Mis.

22.

[a] οὐκ ἔστι] Sic A. οὐκ ἔτι Heeren.

[b] ἀλλ᾽ ἀσαφής] σαφὲς ἀλλ᾽ de suo Heerenius.

[c] ἐξαείρων] ἐπαείρων Heerenius.

23.

[a] τέτυκται] τέτεκται A.

[b] νύμφη] νύμοη A.

[c] πυθμὴν] λιμὴν A. Obs. Mis. πυθμὴν ex Arist. de Mundo c. 7. et Euseb. Præp. p. 100 B. dedit Heeren. qui et vv. 5, 6. ex Aristotele addidit. Totum locum sumpsisse videtur Stobæus ab Eusebio.

[d] ἁπάντων] πάντων A. Obs. Mis.

[e] εἷς δαίμων om. A. Obs. Mis.

[f] ἓν δὲ] δὲ om. A. Obs. Mis.

[g] πρῶτος γενέτωρ] Sic Euseb. ed. cujus MSS. cum A. Obs. Mis. πρωτογενέτωρ. Mox σώματα A.

[h] τοῦ δή τοι] Sic Euseb. τοῦ δὲ τὸ A. τοῦ δὲ τὴν Obs. Mis.

οὐρανὸς αἰγλήεις, ὃν [i] χρυσέαι ἀμφὶς ἔθειραι
ἄστρων μαρμαρέων περικαλλέες [k] ἠερέθονται·
[l] ταύρεα δ' ἀμφοτέρωθε δύο χρύσεια κέρατα
[m] ἀντολίη τε δύσις τε, θεῶν [n] ὁδοὶ οὐρανιώνων.
ὄμματα δ' ἠέλιός τε καὶ ἀντιόωσα σελήνη·
[o] νοῦς δ' οἱ ἀψευδὴς βασιλήϊος ἄφθιτος αἰθήρ,
ᾧ δὴ πάντα [p] κλύει καὶ φράζεται· οὐδέ τίς ἐστιν
αὐδὴ οὐδ' ἐνοπὴ, [q] οὐδὲ κτύπος, [r] οὐδὲ μὲν ὄσσα,
ἣ λήθει Διὸς οὖας ὑπερμενέος Κρονίωνος.
ὧδε μὲν ἀθανάτην κεφαλὴν ἔχεν [s] ἠδὲ νόημα·
[t] σῶμα δέ οἱ περιφεγγὲς, ἀπείριτον, ἀστυφέλικτον,
ἄτρομον, [u] ὀμβριμόγυιον, ὑπερμενὲς ὧδε τέτυκται.
ὦμοι μὲν καὶ στέρνα καὶ εὐρέα νῶτα θεοῖο
ἀὴρ εὐρυβίης, πτέρυγες δέ οἱ ἐξεφύοντο
[46] [x] τῇς ἐπὶ πάντα ποτᾶτ', ἱερὴ δέ οἱ ἔπλετο νηδὺς
γαῖά τε [y] παμμήτειρ', ὀρέων τ' αἰπεινὰ κάρηνα,
μέσση δὲ ζώνη βαρυηχέος οἶδμα θαλάσσης
καὶ πόντου· πυμάτη δὲ βάσις χθονὸς ἔνδοθι [z] ῥίζαι,
Τάρταρα τ' [a] εὐρώεντα, καὶ ἔσχατα πείρατα γαίης.
[b] πάντα δ' ἀποκρύψας αὖθις φάος ἐς πολυγηθὲς
μέλλεν ἀπὸ κραδίης [c] προφέρειν πάλι θέσκελα ῥέζων.

[i] χρυσέαι ἀμφὶς ἔθειραι] χρύσιαι (ει) ἐμφὶς αἴθειραι A.

[k] ἠερέθονται] Sic Euseb. ἠγερέθοντο A. Obs. Mis.

[l] ταύρεα] ταύρια A.

[m] ἀντολίη τε] ἀντολίη δὲ A. Obs. Mis.

[n] ὁδοὶ οὐρανιώνων] ὁδὸν οὐρανιόνων A. ὁδὸν Obs. Mis.

[o] νοῦς δέ οἱ] νοῦς δ' A. Obs. Mis. cum Eusebii MSS.

[p] κυκλεῖ] κλύει A. Obs. Mis.

[q] οὐδ' αὖ] οὐδὲ A. Obs. Mis.

[r] οὐδὲ μὲν ὄσσα ἣ] οὐδὲν οὐ μένος A. Obs. Mis.

[s] ἠδὲ νόημα] ἡ δ' ἔνι σῆμα A. Obs. Mis.

[t] σῶμα] σῆμα A. Obs. Mis.

[u] ὀμβριμόγυιον] ὀμβρόγυιον A. Obs. Mis. et mox τετύχθαι.

[x] τῇσ'] τῇ A. Obs. Mis. et mox ποτᾶται.

[y] παμμήτηρ] παμμήτορ A. παμμήτωρ Obs. Mis. παμμήτειρ' Euseb.

[z] ῥίζαι] ῥῆξ A. Obs. Mis.

[a] εὐρώεντα] εὐρόεντα A. εὐρυόεντα Obs. Mis.

[b] πάντα δ' ἀποκρύψας] πάνταδα κρύψας A. Obs. Mis.

[c] προφέρειν om. A. Obs. Mis. qui statim πάλαι θέσκελος ῥέζων. Supra μέλλει Obs. Mis.

24

[a]Τί πότ' ἐστι θεός; Νοῦς, φρόνησίς ἐστι. Ζῆνα δὲ σὺ νόμιζε [b]τοῦτον, ὅθεν ἔχομεν ἀεὶ τὸ ζῆν.

25 Πορφυρίου ἐκ τοῦ περὶ Ἀγαλμάτων.

Ζεὺς οὖν ὁ πᾶς κόσμος, ζῶον ἐκ ζώων, καὶ θεὸς ἐκ θεῶν. p. 1.
Ζεὺς δὲ καὶ καθὸ νοῦς, ἀφ' οὗ προφέρει πάντα, ὅτι δημιουργεῖ τοῖς νοήμασιν.

26 Χρυσίππου.

[48] Ζεὺς μὲν οὖν φαίνεται ὠνομάσθαι, ἀπὸ τοῦ πᾶσι δεδωκέναι τὸ ζῆν. [a]Δία δὲ αὐτὸν λέγουσιν, ὅτι πάντων ἐστὶν αἴτιος, καὶ δι' αὐτὸν [b]πάντα.

27 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κρατύλου. [p. 396.]

Οἱ μὲν γὰρ Ζῆνα, οἱ δὲ Δία καλοῦσι. [c]Συντιθέμενα δὲ εἰς ἓν δηλοῖ τὴν φύσιν τοῦ θεοῦ, ὃ δὴ προσήκειν φαμὲν [d]ὀνόματι οἵῳ τε εἶναι ἀπεργάζεσθαι. οὐ γάρ ἐστιν ἡμῖν καὶ τοῖς ἄλλοις πᾶσιν, ὅστις ἐστὶν αἴτιος μᾶλλον τοῦ ζῆν ἢ ὁ ἄρχων τε καὶ [e]βασιλεὺς τῶν πάντων.

28

[50] [a]Φημὶ κατ' ἀμφοτέρων λέγεσθαι τῶν θεῶν τὸ ὄνομα [b]τοῦ τε δημιουργοῦ καὶ τοῦ κόσμου, [c]τὸ Διός. Καί μοι δοκῶ πρῶτα κατὰ νόμους τοὺς ἐμαυτοῦ Πλάτωνι [d]χρήσε-

24.

[a] Τί πότ'] Hæc conjunguntur præcedentibus in A.

[b] τοῦτον] τοῦτο A. qui om. τὸ ante ζῆν.

25.

[a] Euseb. Præp. III. 9. p. 101 C.

26.

[a] Δία] δέα A.

[b] τὰ πάντα] τὰ om. V. A.

27.

[c] Explicat Platonis sententiam Arist. de Mundo c. VII. Καλοῦσι δὲ αὐτὸν Ζῆνα καὶ Δία, παραλλήλως χρώμενοι τοῖς ὀνόμασιν, ὡς κἂν εἰ λέγοιμεν, δι' ὃν ζῶμεν. cum quo cf. maxime Procl. de Theol. Plat. V. c. 22. HEEREN.

[d] ὀνόματι] ὄνομα τῷ A. Canter.

[e] βασιλεύων] βασιλεὺς V. A.

28.

[a] Φημὶ] Hoc fragmentum ex opere quodam Porphyrii deperdito sumptum existimat Heerenius.

[b] τοῦτο] τοῦ τε A. E.

[c] Ante Διὸς inserui τό. Suspicor tamen Διὸς ex margine in contextum venisse, eoque excluso legendum esse: φημὶ κατ' ἀμφοτέρων λέγεσθαι τοῦ θεοῦ τὸ ὄνομα, τοῦτε δ. κ. τ. κόσμου· ut τοῦ θεοῦ ad Jovem referatur. HEEREN.

[d] χρῆσθαι] χρήσεσθαι V. A.

σθαι μάρτυρι τῆς τοιαύτης δόξης. Πλάτων γάρ τοι καὶ αὐτὸς Δία μὲν καλεῖ τὸν δημιουργὸν τῶν ἁπάντων, Δία δὲ καὶ τόνδε τὸν κόσμον. [e]Τὸν μὲν δημιουργὸν [f]τρόπῳ τοιῷδε· ἐπειδὰν ἐν Φαίδρῳ περὶ τῆς τοῦ παντὸς φορᾶς [g]διαλέγηται, τάδε φησὶ περὶ τοῦ μεγάλου Διός· “[h]Ὁ δὴ μέγας ἡγε-“μὼν ἐν οὐρανῷ Ζεὺς, ἐλαύνων [i]πτηνὸν ἅρμα, πρῶτος “πορεύεται, διακοσμῶν πάντα, καὶ ἐπιμελούμενος.” Οἶμαι σαφὴς ἐν τούτοις ὑπάρχει μνημονεύσας τοῦ ποιητοῦ [k]τῶν ἁπάντων· καὶ γὰρ ἀνέθηκεν αὐτῷ τὴν ἀκολουθίαν τῶν πρὸ τοῦ κόσμου θεῶν· ἔφη γοῦν ἕπεσθαι τῇ ἐκείνου προνοίᾳ τοὺς στρατιώτας θεούς· στρατιώτας δὲ ἐκάλεσε τοὺς τῇδε θεοὺς, οἳ τοῦδε τοῦ πολέμου τῆς γενέσεως στρατηγοῦσιν. [l]Ὁμοίως Ὀνάτας ὁ Πυθαγόρειος ἐπεμνήσθη τοῦ τε δημιουργοῦ καὶ τῶν ἑπομένων τούτῳ θεῶν, λέγων οὕτως· “τοὶ δ’ “ἄλλοι θεοὶ ποτὶ τὸν πρᾶτον [m]θεὸν καὶ νοατὸν οὕτως “ἔχοντι, [n]ὥσπερ χορευταὶ ποτὶ κορυφαῖον, καὶ στρατιῶται “ποτὶ στραταγόν.” Κατὰ ταῦτα, [o]ὁ δὲ Πλάτων ἀμφο-
[52] τέρων ἐπεμνήσθη ἐν τῇ πρὸς Ἑρμείαν καὶ Κορίσκον [p]ἐπιστολῇ· τὸν γὰρ δημιουργὸν ἡγεμόνα πάντων τῶν θεῶν εἶπε, [q]τῶν τε ὄντων καὶ τῶν μελλόντων. Μέλλοντας δὲ

[e] Τὸν δὲ] τὸν μὲν V. A.

[f] τρόπῳ τῷδε] τρόπῳ τοιῷδε V. A.

[g] διαλέγεται] διαλέγηται A.

Ib. Locus Platonis exstat in Phædro Op. III. p. 246. ubi pro ὁ δὲ l. ὁ μὲν δὴ, et mox πτηνὸν ἅρμα ἐλαύνων. HEEREN.

[h] Ὁ δὲ] ὁ δὴ A.

[i] πτανὸν] πτηνὸν V. A. E.

[k] τοῦ τῶν] τοῦ om. V. A.

[l] Ὁμοίως οὖν] ὁμοίως οὖν ἅτας A.V. E. Canterus in marg. “Ὀνᾶτος lego pro οὖν.” Vide infra p. 4, 45. ed. Canter.

[m] θεὸν] θεῶν λέγων οὕτως καὶ νόα τὸν A. ubi tamen punctulis suppositis verba λέγων οὕτως delenda esse monuit librarius.

[n] ὥσπερ χορευτὰ ποτὶ χορυφὴν καὶ στρατιῶτα ποτὶ σ.] ὥσπερ χορευταὶ ποτὶ κορυφαῖον, καὶ στρατιῶται ποτὶ στρατηγόν V. A. E.

[o] οὐδὲ] ἠδὲ ed. Heeren. tanquam ex Canteri emendatione; atqui ille non ἠδὲ sed ὁ δὲ in marg. posuerat.

[p] ἐπιστολῇ] p. 323. ἐπομνύντας— τὸν τῶν πάντων θεὸν ἡγεμόνα, τῶν τε ὄντων καὶ τῶν μελλόντων, quæ si cum n. l. conferantur, patet, scriptorem nostrum ap. Plat. pro θεὸν legisse θεῶν, ad quod τῶν ὄντων et τῶν μελλόντων referatur. HEEREN.

[q] τῶν τε] τῶν δὲ V.

[r]ἴσμεν θεοὺς τοὺς ἀειγενεῖς, τουτέστι συναπτομένους ποτὲ [s]σώμασι. Ἐν δὲ τῷ Τιμαίῳ χωρίσας τοῦ πλήθους τοὺς θεοὺς, ἑνικῶς διὰ τοῦ [t]οἰκητῆρος τοῦ κόσμου τοὺς πάντας ὠνόμασεν· "[u]οὗτος γὰρ," ἔφη, "[x]ὄντως αἰεὶ λογισμὸς "θεοῦ περὶ τόν ποτε ἐσόμενον θεόν·" δῆλος γὰρ ὁ μὲν λογιζόμενος θεὸς ὁ δημιουργὸς ὢν, ὁ δὲ ἐσόμενος καὶ γιγνόμενος αἰεὶ, ὁ [y]κόσμος λεγόμενος. Ὡσαύτως δὲ καὶ [z]Ὅμηρος·

Ζεὺς γὰρ ἐπ' ὠκεανὸν μετ' ἀμύμονας [a]Αἰθιοπῆας
χθιζὸς ἔβη μετὰ δαῖτα, θεοὶ δ' [b]ἅμα πάντες ἕποντο.
δωδεκάτῃ δέ τοι αὖθις ἐλεύσεται [d]οὔλυμπόνδε.

Περὶ τοῦ κατὰ τὸν κόσμον Διὸς [e]ταυτὶ λέλεκται, οἵ τε γὰρ θεοὶ ἅμα πάντες [f]εἵποντο. Τὸ δὲ πλῆθος τῶν θεῶν ἔργον [g]ἐστὶ τοῦ δημιουργοῦ, ἅμα τῷ κόσμῳ γενόμενον. Ὁπόταν δὲ εἰς τὸν Ὄλυμπον [h]ἀφίκωνται, δηλοῦσι κατὰ p. 2.
[54] τὴν διαφορὰν ἑτέρου [i]λεγομένου Διὸς, τοῦ κεχωρισμένου τῶν θεῶν. Ἡ γοῦν Θέτις [k]εἰς μὲν τὸν Ὄλυμπον ἧκεν, [l]χρὴ γὰρ τὴν ποίησιν ἐκτελεῖν τὸ μύθευμα,

Εὗρε δὲ εὐρύοπα Κρονίδην ἄτερ ἥμενον ἄλλων
ἀκροτάτῃ κορυφῇ πολυδειράδος οὐλύμποιο.

Τὴν μέντοι δωδεκάτην ἀκουστέον [m]τῶν θεῶν τῆς ἐπανόδου,

[r] ἰσμεθαοὺς] ἴσμεν θεοὺς V. A. E.
[s] σώμασι] σώματι A.
[t] οἰκητέρου] οἰκητόρου V. A. οἰκητῆρος tacite Heeren. Debuerat, ni fallor, reposuisse οἰκιστῆρος.
[u] Leg. ap. Cant. [et A.] οὕτως γὰρ ἔφη· ὄντων ἀεὶ etc. Sed restituendus est locus ex ipso Plat. in Tim. Op. T. III. p. 34. οὗτος δὴ πᾶς ὄντως λογισμὸς θεοῦ περὶ τόν ποτε ἐσόμενον θεὸν λογισθεὶς etc. unde patet pro οὕτως γὰρ legendum esse οὗτος γάρ, eaque jam verba ipsius Platonis esse. HEEREN.
[x] ὄντων] ὄντως V. A.
[y] κόσμος] κόσμος λεγόμενος V. A.
[z] Il. α'. 423–425. Pro ἐπ' ὠκ. Cant. A. ἐς ὠκ.
[a] Αἰθιοπῆας] αἰθιοπίας A. Infra ἕπηντο V. ἥποντο A. et ὀλυμπόνδε.
[b] ἅμα πάντες] ἅπαντες A.
[d] Ὀλυμπόνδε A.
[e] ταυτὶ] ταυτῇ A.
[f] ἕποντο] εἵποντο V. ἥποντο A.
[g] ἐστὶ] ἐπὶ A. et mox ἅμα τὸ.
[h] ἀφίκωνται—Ὄλυμπον om. V.
[i] λεγόμενον dedit Heerenius pro λεγομένου.
[k] εἰς μὲν] μὲν delevit Heerenius, tacite.
[l] ἔχρην] χρῆν V. χρὴ A.
[m] τῆς ἐπανόδου τῶν θεῶν] τῶν θεῶν τῆς ἐπανόδου A.

ὁπόταν ὑπερβάντες τὰ δώδεκα ζώδια, [n]ἐπὶ τῷ νώτῳ γένωνται τοῦ οὐρανοῦ· [o]στάντας δὲ αὐτοὺς ἐκεῖσε περιάγει ἡ περιφορά, [p]λόγος γὰρ ὁ αὐτὸς ψυχῶν καὶ θεῶν.

29

ΘΑΛΗΣ ἐρωτηθεὶς τί [a]πρεσβύτατον τῶν ὄντων; ἀπεκρίνατο, Θεός, [b]ἀγέννητον γάρ.

ΣΩΚΡΑΤΗΣ ἐρωτηθεὶς τί θεός; εἶπε, τὸ ἀθάνατον καὶ [c]ἀΐδιον.

ἙΡΜΗΣ ἐρωτηθεὶς, τί θεός; εἶπεν, ὁ τῶν ὅλων δημιουργὸς, σοφώτατος νοῦς καὶ ἀΐδιος.

[56] [d]ΘΑΛΗΣ νοῦν τοῦ κόσμου τὸν θεὸν, τὸ δὲ πᾶν ἔμψυχον ἅμα καὶ δαιμόνων πλῆρες· διήκειν δὲ καὶ διὰ τοῦ στοιχειώδους ὑγροῦ δύναμιν θείαν κινητικὴν αὐτοῦ.

[e]ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ ἀπεφήνατο τοὺς ἀπείρους οὐρανοὺς θεούς.

[n] ἐπὶ τῷ νώτῳ] Ex Platonis Phædr. p. 247 C.

[o] στάντας] στάντες A.

[p] λόγος] λόγους A.

29.

28. Sequuntur hic breves philosophorum excerptæ sententiæ, quæ partim leguntur ap. Plut. de plac. Phil. I. 7. et qui eum exscripserunt Euseb. Præp. Ev. p. 747, etc. et Pseudo-Galen. Hist. phil. cap. 5. partim in solo nostro Stobæo supersunt. HEEREN.

[a] πρεσβύτατον] πρεσβύτερον V.

[b] Legitur idem hoc responsum Thaletis ap. Plut. in Conviv. Sap. Op. T. II. p. 153. Τί πρεσβύτατον; Θεὸς ἔφη, ἀγέννητον γάρ ἐστι. HEEREN.

[c] Respicit forte ad Socratis verba ap. Plat. in Phædone c. 56: Ὁ δέ γε θεὸς ἔφη οἶμαι ὁ Σωκράτης, καὶ αὐτὸ τὸ τῆς ζωῆς εἶδος, καὶ εἴτι ἄλλο ἀθάνατόν ἐστι, παρὰ πάντων ἂν ὁμολογηθείη μηδέποτε ἀπόλλυσθαι.—HEEREN.

[d] Plut. de Plac. Ph. I. 7. Θαλῆς νοῦν τὸν τοῦ κόσμου θεόν. Reliqua desiderantur. Eadem vero tradunt Diog. Laert. I. 27. Ἀρχὴν δὲ τῶν πάντων τὸ ὕδωρ ὑπεστήσατο, καὶ δαιμόνων πλήρη· et Arist. de An. I. 8. Καὶ ἐν τῷ ὅλῳ δέ τινες ψυχὴν μεμίχθαι φασὶν, ὅθεν ἴσως καὶ Θαλῆς πάντα πλήρη θεῶν εἶναι ᾠήθη. Explicat autem hanc Thaletis de dæmonibus sententiam Plut. de Pl. Ph. I. 8. Θαλῆς δαίμονας ὑπάρχειν οὐσίας ψυχικὰς, εἶναι δὲ καὶ ἥρωας, τὰς κεχωρισμένας ψυχὰς τῶν σωμάτων. HEEREN.

[e] Apud Plut. l. c. Ἀναξίμανδρος τοὺς ἀστέρας οὐρανίους θεοὺς, quam lectionem non deerunt, qui ap. Stob. quoque admittendam ducant. Attamen sine Codd. auc-

[f]'ΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ τὸν ἀέρα. [g]Χρὴ δὲ ὑπακούειν ἐπὶ τῶν οὕτως λεγομένων τὰς [h]ἐνδιοικούσας τοῖς στοιχείοις ἢ τοῖς σώμασι δυνάμεις.

'ΑΡΧΕΛΑΟΣ ἀέρα καὶ νοῦν τὸν θεὸν, οὐ μέντοι κοσμοποιὸν τὸν νοῦν.

'ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ νοῦν [i] κοσμοποιὸν τὸν θεόν.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ νοῦν τὸν θεὸν ἐν πυρὶ [k]σφαιροειδεῖ.

[58] ΔΙΟΓΕΝΗΣ καὶ Κλεάνθης καὶ Οἰνοπίδης τὴν τοῦ κόσμου ψυχήν.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ τῶν ἀρχῶν τὴν μὲν μονάδα θεὸν καὶ [l]τἀγαθὸν, ἥτις ἐστὶν ἡ [m]τοῦ νοὸς φύσις, αὐτὸς ὁ νοῦς, καὶ τὴν [n]ἀόριστον δυάδα δαίμονα, καὶ τὸ κακὸν, περὶ ἣν ἐστι τὸ ὑλικὸν πλῆθος.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ πνεῦμα νοερὸν καὶ πυρῶδες, οὐκ [o]ἔχον μὲν μορφὴν, μεταβάλλον δὲ εἰς ὃ βούλεται, καὶ [p]συνεξομοιούμενον πᾶσιν.

[q]ΣΠΕΥΣΙΠΠΟΣ τὸν νοῦν οὔτε τῷ ἑνὶ οὔτε τῷ ἀγαθῷ [r]τὸν αὐτὸν, ἰδιοφυῆ δέ.

toritate nil hic mutandum censeo, maxime cum lectioni nostræ aliunde quoque præsidium parari possit. Primo enim eandem lectionem habuisse videtur Pseudo-Galenus l. c. 'Αναξ. δὲ τοὺς ἀπείρους νοῦς θεοὺς εἶναι· ubi νοῦς ex οὐρανοὺς compendio lectionis scripto ortum esse, nemo facile dubitabit. Tum vero eandem lectionem tueri videtur Cic. de N. D. I. 10. Is enim : *Anaximandri enim opinio est, nativos esse Deos, longis intervallis orientes occidentesque, eosque innumerabiles esse mundos.* Anaxagoram nempe in ea opinione fuisse, plures mundos sese invicem excipere, eosque pro diis habendos esse. Unde ap. Stob. pro οὐρανοὺς non male κόσμους legeretur, etsi sensus ad idem rediret. HEEREN.

f 'ΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ] 'Αναξιμήδης V.

g δεῖ] χρὴ V. A.

h ἐνδιηκούσας] ἐνδιοικούσας V. A.

i κόσμον ποιὸν] κοσμοποιὸν V. A.

k σφαιροειδεῖ] σφαιροειδῆ V. A.

l τἀγαθὸν] ἀγαθὸν V. A. ὁ ante αὐτὸς deest V. A. καὶ τὴν A. pro τὴν δὲ et om. δαίμονα quod addit Plutarch.

m Pro τοῦ νοὸς ap. Plut. et Gal. leg. τοῦ ἑνός. HEEREN.

n ἄριστον] ἀόριστον V. A.

o ἔχον μὲν] ἔχομεν A.

p συνεξομοιούμενος] —μενον V. A.

q ΣΠΕΥΣΙΠΠΟΣ] Πεύσιππος V. A.

r τὸν αὐτὸν] τὸν θεόν A.

ΚΡΙΤΟΛΑΟΣ καὶ ΔΙΟΔΩΡΟΣ ὁ Τύριος νοῦν ἀπ' αἰθέρος ἀπαθοῦς.

[60] [s]ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ τὸ περιοδικὸν πῦρ ἀΐδιον, εἱμαρμένην δὲ, λόγον ἐκ τῆς ἐναντιοδρομίας δημιουργὸν τῶν ὄντων.

ΖΗΝΩΝ ὁ Στωϊκὸς, νοῦν κόσμον πύρινον.

ΜΝΗΣΑΡΧΟΣ τὸν κόσμον, τὴν πρώτην οὐσίαν ἔχοντα ἐπὶ πνεύματος.

ΒΟΗΘΟΣ τὸν αἰθέρα [t] θεὸν ἀπεφήνατο.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ τὸ ἀκίνητον καὶ πεπερασμένον σφαιροειδές.

ΜΕΛΙΣΣΟΣ καὶ ΖΗΝΩΝ τὸ ἓν καὶ πᾶν, καὶ μόνον ἀΐδιον καὶ ἄπειρον τὸ ἕν, [u] καὶ τὸ μὲν ἓν τὴν ἀνάγκην, ὕλην p. 5.
δὲ [x] αὐτῆς τὰ τέσσερα στοιχεῖα, εἴδη δὲ τὸ νεῖκος καὶ τὴν [y] φιλίαν. Λέγει δὲ καὶ τὰ στοιχεῖα [z] θεοὺς, καὶ τὸ μίγμα τούτων τὸν κόσμον· καὶ [a] πρὸς ταῦτα ἀναλυθήσεται τὸ

[s] ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ] Ἡράκλητος V. A.

[t] τὸν ante θεὸν deest V. A.

[u] Post verba καὶ τὸ μὲν ἓν in Cant. ed. manca est oratio, et lacunæ signo addito sequitur, quem nos supra dedimus, Aristoxeni locus περὶ ἀριθμῶν. Turbas autem has movit librariorum socordia, qui transpositione paginarum facta, quæ hic sequi debebant, infra dederunt p. 5. l. 2. ed. Cant. inde a verbis τὴν ἀνάγκην etc. Ea autem hic sedem suam habere testantur codd. V. A. E. F. quorum auctoritatem secuti loco suo ea reddidimus. HEEREN.

[x] Legebatur αὐτῆς, quod corruptum puto, quid enim sit ὕλη τῆς ἀνάγκης non assequor. Rescripsi αὐτὰ; Zenonem materiam ex ipsis quatuor elementis constare docuisse testem habemus Aristotel. de Zenone et Gorgia Op. T. I. p. 942. τῶν ὄντων τὰ μὲν ἀΐδια εἶναί φησι, πῦρ καὶ ὕδωρ, καὶ γῆν, καὶ ἀέρα· τὰ δ' ἄλλα γίνεσθαι καὶ γεγονέναι ἐκ τούτων. Proxima Empedoclea potius esse videntur, ita ut ipse quoque in suspicionem inciderim, in verbis ὕλην δὲ αὐτῆς latere nomen Ἐμπεδοκλῆς. Attamen Zenonem cum Empedocle et in multis aliis convenisse, et in eo quoque ut conjunctione et dissolutione omnia ex elementis fieri et interire doceret, tradit idem Aristot. l. c. unde Empedocleo illo de amicitia et inimicitia recte usus fuerit. Voci φιλίαν ap. Cant. male adhæsit νεικι, ex superiori ut videtur repetitum; Codd. inde φιλονεικίαν nullo sensu. HEER.

[y] φιλίαν νεικί] φιλονεικίαν V. A.

[z] ἄθεους] θεοὺς V. A.

[a] πρὸς ταυλυθήσεται] πρὸς ταῦτα ἀναλυθήσεται Cod. V. pro προσταυλυθήσεται ap. Cant. *in prima hæc elementa omnia resolvi.* Etsi vel sic locus mihi suspectus est.

[62] μονοειδές· καὶ θείας μὲν οἴεται τὰς ψυχάς. [b] θείους δὲ καὶ τοὺς μετέχοντας αὐτῶν καθαροὺς καθαρῶς.

ΠΟΛΕΜΩΝ τὸν κόσμον θεὸν ἀπεφήνατο.

ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ, Ἀγαθήνορος, [bb] Καλχηδόνιος, τὴν μονάδα καὶ τὴν δυάδα θεούς, τὴν μὲν ὡς ἄρρενα πατρὸς ἔχουσαν τάξιν, ἐν οὐρανῷ βασιλεύουσαν, ἥντινα προσαγορεύει καὶ Ζῆνα, καὶ περιττὸν, καὶ νοῦν, ὅστις ἐστὶν αὐτῷ πρῶτος θεός· τὴν δὲ ὡς θήλειαν, μητρὸς θεῶν δίκην, τῆς ὑπὸ [c] τὸν οὐρανὸν [d] λήξεως [e] ἡγουμένην· ἥτις ἐστὶν αὐτῷ ψυχὴ τοῦ παντός. [f] Θεὸν δὲ εἶναι καὶ τὸν οὐρανὸν, καὶ τοὺς ἀστέρας πυρώδεις ὀλυμπίους θεοὺς, καὶ ἑτέρους ὑποσελήνους, δαίμονας [g] ἀοράτους. Ἀρέσκεται δὲ καὶ [h] αὐτὸς . . . καὶ [i] ἐνδιοικεῖν τοῖς ὑλικοῖς στοιχείοις. Τούτων δὲ [k] τὴν μὲν [δι' ἀέρος Ἥρην] προσαγορεύει, τὴν δὲ διὰ τοῦ ὑγροῦ Ποσειδῶνα, τὴν δὲ διὰ τῆς γῆς φυτοσπόρον Δήμητραν. Ταῦτα δὲ χορηγήσας τοῖς Στωϊκοῖς, τὰ πρότερα παρὰ τοῦ Πλάτωνος [l] μεταπέφρακεν.

Dicitur alias ἀναλύεσθαι εἴς τι, alterum πρὸς ei jungi dubito. Tum vero obscurum est quid sit τὸ μονοειδές; et quomodo hoc resolvi possit? Quare judicent alii num forte legendum sit, καὶ εἰς ταῦτα ἀναλυθήσεται τὸ πολυειδές. *varias formas rerum in prima hæc elementa resolvi?* Convenit hoc cum iis quae tradit Arist. l. c. HEEREN. πρός τηναλυθήσεται A.

[b] θείους καί] θείους δὲ καὶ V. A.

[bb] ἀλχηδόνιος A.

[c] τὸν οὐρανὸν] τῶν οὐρανῶν V. τῶν ὀυνὸν A.

[d] λήξεως] λέξεως V.

[e] ἡγουμένην] ἡγουμένης V. A.

[f] Θεῖον] θεὸν V. A.

[g] ὁρατούς] ἀοράτους V. A.

Ib. Clarius obscuram hanc Xenocratis sententiam explicat Plut. de Is. et Osir. Op. T. II. p. 261. Contendisse enim Xenocratem, εἶναι φύσεις ἐν τῷ περιέχοντι μεγάλας μὲν καὶ ἰσχυρὰς, δυστρόπους δὲ καὶ σκυθρωπὰς, αἳ χαίρουσαι τοῖς τοιούτοις (festis nempe et sacrificiis) καὶ τυγχάνουσαι, πρὸς οὐθὲν ἄλλο χεῖρον τρέπονται. HEER.

[h] Post αὐτὸς spatium V. A.

[i] ἐνδιήκειν] ἐνδιοικεῖν A.

[k] Post τὴν μὲν spatium V. A.

Ib. Habet Cant. τὴν μὲν ἀειδῆ προσαγ. Codd. V. A. post μὲν lacunam indicant. Reposui ea quæ et sensus et vestigia lectionis postulant. Junonis enim nomen excidisse manifestum est, cum eam pro aëris inferioris symbolo habitam esse notissimum sit. cf. Cic. de N. D. II. 25. In ἀειδῆ autem lectionis δι' ἀέρος vestigia quisque facile agnoscet. HEER.

[l] Post μεταπέφρακε spatium A.

[64] [m]ΠΛΑΤΩΝ δὲ τὸ ἕν, τὸ [n]μονοφυὲς, τὸ μοναδικὸν, τὸ ὄντως ὂν, τὸ ἀγαθόν. Πάντα δὲ τὰ τοιαῦτα τῶν ὀνομάτων εἰς τὸν νοῦν σπεύδει. Νοῦς οὖν ὁ θεὸς, χωριστὸν εἶδος, τὸ δὲ χωριστὸν ἀκουέσθω τὸ ἀμιγὲς πάσης ὕλης, καὶ μηδενὶ τῶν σωματικῶν [o]συμπεπλεγμένον, μηδὲ [p]τῷ παθητῷ τῆς φύσεως συμπαθές. Τούτου δὲ πατρὸς καὶ ποιητοῦ τὰ ἄλλα θεῖα ἔγγονα νοητὰ μὲν, [q]ὅ τε νοητὸς λεγόμενος κόσμος, [r]παραδείγματα δέ ἐστι τοῦ ὁρατοῦ κόσμου, πρὸς δὲ τούτοις ἐναιθέριοί τινες δυνάμεις, (ἄλογοι δέ εἰσιν καὶ ἀσώματοι,) καὶ ἐναέριοι καὶ ἔνυδροι, αἰσθητὰ δὲ τοῦ πρώτου θεοῦ ἔγγονα, ἥλιος, σελήνη, ἀστέρες, γῆ, καὶ ὁ περιέχων πάντα κόσμος.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ τὸν μὲν ἀνωτάτω θεὸν [s]εἶδος [χωριστὸν], ὁμοίως Πλάτωνι, ἐπιβεβηκότα τῇ σφαίρᾳ τοῦ παντὸς, ἥτις ἐστὶν αἰθέριον σῶμα, τὸ πέμπτον ὑπ' αὐτοῦ καλούμενον.

[m] ΠΛΑΤΩΝ τὸ] Πλάτων δὲ τὸ ἓν μονοφυὲς V. Mox ὄντ' ἀγαθόν A.

[n] Platonis hæc placita leguntur iterum ap. Plutarch. de pl. ph. Euseb. et partim quoque Gal. ll. cc. eaque paulo auctiora: Exstat enim ibi: Σωκράτης καὶ Πλάτων et post μονοφυὲς additur τὸ αὐτοφυές. Mox τὸ ὄντως ὂν, τὸ ἀγαθὸν rescripsi pro τὸ ὄντως οὔτ' ἀγαθὸν ap. Cant. Sic enim ipse Plato passim cf. Op. I. 78. Pro τὰ τοιαῦτα Plut. male ταῦτα. Reliqua sic ap. Plut. Νοῦς οὖν ὁ θεὸς, χωριστὸν εἶδος, τούτεστι τὸ ἀμιγὲς πάσης ὕλης, μηδενὶ παθητῷ συμπεπλεγμένον. Ultimum συμπεπλεγμένον recepi ex Plut. accedente quoque Galeni auctoritate pro συμπεπνιγμένον. HEEREN.

[o] συμπεπνιγμένον] συμπνιγόμενον V.

[p] τὸ] τῷ πάθει τὸ A.

[q] ὅ τε] In priori ed. leg. ὅτι νοητὸς λ. κ. παράδειγμα τὰ δ' ἐστι nullo sensu. Nota est Platonis sententia de mundo intelligibili vel ideali in intellectu divino, nostri mundi archetypo. cf. Tim. Op. III. p. 29. Quæ de dæmonibus adjicit auctor, quoque corrupta erant ap. Cant. Legebatur λόγοι δ' εἰσὶν ἀσώματοι. Rescripsi ἄλογοι, δ. ε. καὶ ἀσ. *ratione simul et corpore destituti*, secutus Procli auctoritatem, qui de dæmonibus hisce ἀλόγοις disputat ad Tim. p. 288. et 290. Εἴπερ καὶ ἄλογοι δαίμονές εἰσι ὥς φασι οἱ θεουργοὶ etc. HEEREN. ὅτι A.

[r] παράδειγμα, τὰ δ' ἐστι] παραδείγματα δὲ ἐστι etc. V.A. Mox λόγοι—ἀσώματι—αἰσθητὸς ὁ τοῦ π. θ. A.

[s] Post εἶδος spatium A.

Ib. Post εἶδος supplevi χωριστὸν ex Plut. l. c. Vocem enim hic deesse, non modo res ipsa docet, sed Cod. A. spatiolo relicto indicat. De ipso hoc Aristotelis placito cf. de Cœlo I. 2. 3. et de Mundo c. 7. HEEREN.

[t] ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ νοερὸν θεὸν ἀποφαίνονται, πῦρ [u] τεχνι-
[66] κὸν, [x] ὁδῷ βαδίζον ἐπὶ γενέσει κόσμου, [y] ἐμπεριειληφὸς p. 5
πάντας τοὺς σπερματικοὺς λόγους, καθ' οὓς ἅπαντα καθ'
εἱμαρμένην γίνεται. Καὶ πνεῦμα [z] ἐνδιῆκον δι' ὅλου τοῦ
κόσμου, τὰς δὲ προσηγορίας μεταλαμβάνον [a] διὰ τὰς τῆς
ὕλης, δι' ἧς κεχώρηκε, παραλλάξεις· θεοὺς δὲ καὶ τὸν
κόσμον, καὶ τοὺς ἀστέρας καὶ τὴν γῆν· ἀνωτάτω δὲ πάν-
των νοῦν ἐναιθέριον εἶναι [b] θεόν.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ ἀνθρωποειδεῖς μὲν τοὺς θεοὺς, λόγῳ δὲ πάντας [c] θεωρητοὺς, διὰ τὴν [d] λεπτομέρειαν τῆς τῶν εἰδώλων φύσεως. Ὁ δ' αὐτὸς ἄλλας τέσσαρας φύσεις κατὰ γένος ἀφθάρτους τάσδε, τὰ ἄτομα, τὸ κενὸν, τὸ ἄπειρον, τὰς ὁμοιότητας· αὗται δὲ λέγονται ὁμοιομέρειαι καὶ στοιχεῖα.

30 [Ἑρμοῦ.]

[a] Τοῦτο γάρ ἐστι τὸ σῶμα ἐκείνου, οὐχ ἁπτὸν, [b] οὐδὲ
[68] ὁρατὸν, οὐδὲ μετρητὸν, οὐδὲ διαστατὸν, οὐδ' ἄλλῳ τινὶ σώμα-
τι ὅμοιον. Οὔτε γὰρ πῦρ ἐστιν, οὔτε ὕδωρ, οὔτ' ἀὴρ, οὔτε
πνεῦμα, ἀλλὰ πάντα ἀπ' αὐτοῦ. Ἀγαθὸς γὰρ ὢν, μόνῳ
[c] ἑαυτῷ τοῦτο [d] ἀναθεῖναι ἠθέλησε, καὶ τὴν γῆν κοσμῆσαι.

t οἱ ante Στωϊκοὶ deest V. Mox κοινότερον Plut. pro νοερόν.

u Explicat h. l. Lips. de Phys. Stoic. I. 6. qui pro γενέσει ex Athenagora de resurrect. p. 13. reponi jubet γενέσεις, quia Stoici post conflagrationem plures mundos, alium post alium gigni, statuebant. Sed nostram lectionem non tuentur modo codd. sed quoque Läert. VII. 156. Præterea, lectione hac recepta, emendandum quoque foret κόσμων pro κόσμου. HEEREN.

x ὁδῷ] ὁδὸν A.

y ἐμπαρειληφὸς] ἐμπεριειληφὸς V. A. Mox ἕκαστα Plut. pro ἅπαντα.

z μὲν ὂν διῆκον] ἐνδιῆκον V. A. μὲν διῆκον Plut.

a διόλης τῆς ὕ. παραλλάξαν] δι' ὅλης τ. ὕ. π. V. A. em. sec. Plut.

b θεός] θεόν V. A.

c διαρήτους] θεωρητοὺς Plut. Mox A. τέτταρας.

d λεπτομερίαν] –ρειαν V. A.

30.

a Τοῦτο] τοιοῦτο Heeren. qui seqq. a præcedentibus sejunxit et Hermeti tribuit cum Cant. (in cujus marg. *Mercurii Cratere*) et Patricio Nov. Univ. Philos. Venet. 1593. p. 26.

b οὐδὲ] οὔτε V. A.

c ἑαυτῷ τ. ἀ. ἠ.] τοῦτο ἑαυτῷ ἀνατέθεικεν, ἠθέλησε δὲ Patricius.

d ἀναθῆναι] ἀναθεῖναι A.

31

[a] Ἡρακλέους [b] κρατεροῦ [c] ὃς γᾶν [d] ἐκάθαρεν ἅπασαν,
[e] πετροβάτα τε θεοῦ, Πανὸς νομίοιο βρυάκτα,
[f] θνατῶν τ' ἰατῆρος, Ἀσκληπιοῦ [g] ὀλβιοδώτα,
[h] πρεσβίστας τε θεοῖς [i] Ὑγιείας [k] μειλιχοδώρου,
ναυσί τ' ἐν ὠκυπόροισι Διοσκούρων [l] ἐπιφάντων,
Κουρήτων θ', οἳ ματρὶ Διὸς Ῥέᾳ ἔντι πάρεδροι,
[70] καὶ Χαρίτων μεμνᾶσθαι [m] ἐν ἔργῳ παντὶ μέγιστον, p. 6
ἠδὲ Χρόνου παίδων [n] Ὡρᾶν, αἳ [o] πάντα φύοντι,
[p] Νυμφᾶν θ' ὠρειᾶν, αἳ νάματα [q] κάλ' ἐφορῶντι,
[r] ὑμνέομες μάκαρας, Μοῦσαι Διὸς ἔκγονοι,
ἀφθίτοις ἀοιδαῖς . . .

32 [Φιλήμονος. n. 2.]
Ὃν οὐδὲ εἷς λέληθεν οὐδὲ [a] ἓν ποιῶν,
οὐδ' ἂν ποιήσων, οὐδὲ πεποιηκὼς πάλαι,
οὔτε θεὸς, οὔτ' ἄνθρωπος, οὗτός εἰμ' ἐγὼ

31.

a Ἡρακλέος] Ἡρακλέους V. Ἡρακλέως A.

Ib. Ἡρακλέους] Sequentia præcedentibus cohærent in MSS. nullius auctoris nomine in marg. addito. Ea sine ulla idonea ratione Orphicis ab Heerenio tribui statuit Lobeck. Aglaoph. p. 600. post Hermannum Opusc. T. II. p. 248.

b τοῦ κραταίου] κρατεροῦ Grotius.

c ὡς γᾶν] ὃς γὰρ A.

d ἐκάθηρεν] ἐκάθαρεν V. A.

e πρόβατα] ἀκροβάτα Cant. marg. πετροβάτα Grotius. Mox νομίοις A.

f θνατῶν] θειατῶν A. θνατῶν Canter. in marg.

g ὁραιοδῶτα] ὀλαιοδότα V. A. E. P.

h πρεσβὺς] πρεσβὶς V. A.

i ὑγίας] ἰγίας V.

k μειλιχοδώρου] μελιχ. V. A. E.

l ἐπιφανέντα] ἐπιφάντα V. A. E. P. ἐπιφάντων Grotius.

m ἐν παντὶ ἔργῳ] ἐν ἔργῳ παντὶ Grotius.

n Ὥραν] Ὡρῶν V. A. E. Ὡρᾶν Grotius.

o ἅπαντα φύονται] αἳ πάντα φύοντι Grotius.

p Νύμφαν τ' ἀρείαν ἃ νάματα κάλ' ἔφερον] Νυμφᾶν δ' ἀφνειᾶν αἳ νάματα καλὰ φέροντι Grotius. Νυμφᾶν τ' ὠρειᾶν Piersonus Veris. I. 11. Mox αἳ νάματα κάλ' ἐφορῶντι Jacobs. καλά γ' ἔφερβον Heeren. Postremum versum ita dedit Hermannus: ὑμμέων τ', ὦ Μοῖσαι, Διὸς ἔκγονοι, ἄφθιτοι ᾠδαῖς vel ἀφθιταοιδοί.

q καλ'] καὶ P.

r ὑμνέομες] ὑμνέωμας V. A. –μες P.

32.

Vid. infra c. 10. p. 25, 39. ed. Canter.

a ἂν ποιῶν] ἓν ποιῶν V. A.

Ἀὴρ, ὃν ἄν τις ὀνομάσειε καὶ Δία.
ἐγὼ δ', ὃ [b] θεοῦ 'στιν ἔργον, εἰμὶ πανταχοῦ,
[c] ἐνταῦθ' ἐν Ἀθήναις, ἐν Πάτραις, ἐν Σικελίᾳ,
ἐν ταῖς πόλεσι πάσαισιν, ἐν ταῖς οἰκίαις
πάσαις, ἐν ὑμῖν [d] πᾶσιν· οὐκ ἔστιν τόπος
[e] οὗ μή 'στιν ἀήρ· [f] ὁ δὲ παρὼν ἁπανταχοῦ
πάντ' ἐξ ἀνάγκης οἶδε, πανταχοῦ παρών.

33 Ἀρριανοῦ Ἐπικτητίου ἐκ τῶν Περὶ Προνοίας.

[I. 6. p. 31. ed. Upton.]

[a] Ἀφ' ἑκάστου τῶν ἐν τῷ κόσμῳ γιγνομένων ῥᾴδιόν ἐστιν [72] ἐγκωμιάσαι τὴν πρόνοιαν, ἐὰν δύο ἔχῃ τις ταῦτα ἐν ἑαυτῷ, δύναμίν τε συνορατικὴν τῶν γεγονότων ἑκάστῳ, καὶ [aa] τὸ εὐχάριστον. Εἰ δὲ μὴ, ὁ μὲν οὐκ ὄψεται τὴν [b] εὐχρηστίαν τῶν γεγονότων, [c] ὁ δ' οὐκ εὐχαριστήσει ἐπ' αὐτοῖς οὐδ' ἂν εἰδῇ. Χρώματα ὁ θεὸς εἰ πεποιήκει, καὶ καθόλου πάντα ὁρατὰ, δύναμιν δὲ [d] θεατικὴν αὐτῶν μὴ πεποιήκει, [e] τί ἂν ἦν ὄφελος; Οὐδοτιοῦν. [f] Οὐδὲ ἀνάπαλιν, εἰ τὴν μὲν δύναμιν πεποιήκει, τὰ ὄντα δὲ μὴ τοιαῦτα οἷα [g] ὑποπίπτειν τῇ δυνάμει τῇ [h] ὁρατικῇ, καὶ οὕτως τί ὄφελος; [i] Οὐδέν. Τί [k] δ' εἰ καὶ ἀμφότερα ταῦτα πεποιήκει, (φῶς δὲ μὴ πεποιήκει;)

[b] θεοῦ 'στιν om. A. spatio relicto.
[c] ἐνταῦθ'] Deest versus Cant. MSS.
[d] πᾶσα] πᾶσιν V. A.
[e] οὐ μήν ἐστι] οὐ μή ἐστιν V. A. E.
[f] ὁδὲ] ὅδε A. V. E. Mox οἶδε pro ὅδε infra A.

33.

[a] Ἐφ' ἑκάστου] Ἀφ' ἑκάστου Arrian. ed.
[aa] τῷ A.
[b] εὐχρηστίαν] Sic Arrian. ἀχρηστίαν A. Cant.
[c] ὁ δὲ οὐκ ἀχαριστήσει ἐπ' αὐτοῖς· οὐδ' ἂν εἰδῇ χ. ὁ θεὸς εἰ πεποιήκει A. et fere Cant. ὁ δ' οὐκ εὐχαριστήσει ἐπ' αὐτοῖς οὐδ' ἂν χρώματα ὁ θεὸς πεποιήκει Arriani MS. Saib. ubi quidem post θεὸς est rasura.
[d] θεατικὴν] θεαστικὴν A. V. E.
[e] τί ἂν—πεποιήκει deest ob homoiotel. V. A. E. Tum οὐδ' ὅτι ἂν οὖν Cant.
[f] οὐδ' ἀνάπαλιν] ἀλλ' ἀνάπαλιν Arrian.
[g] ὑποπίπτειν] –τει V.
[h] ὁρατικὴ] ὁραστικῇ A.
[i] οὐδοτιοῦν Arr. Verba φῶς δὲ μὴ πεποιήκει, quæ ap. Cant. et MSS. exciderant, ex Arr. revocavit Heeren.
[k] δ'] γ' A.

Οὐδ' οὕτως τι ὄφελος. Τίς οὖν ὁ ἁρμόσας τοῦτο πρὸς ἐκεῖνο, κἀκεῖνο πρὸς τοῦτο; τίς δὲ ὁ ἁρμόσας τὴν μάχαιραν πρὸς τὸν [l]κουλεὸν, καὶ τὸν κουλεὸν πρὸς τὴν μάχαιραν; Οὐδείς· καὶ μὴν ἐξ αὐτῆς τῆς κατασκευῆς τῶν ἐπιτετελεσμένων ἀποφαίνεσθαι εἰώθαμεν, [m]ὅτι τεχνίτου τινὸς πάντως τὸ ἔργον, οὐχὶ δὲ εἰκῇ κατεσκευασμένον. Ἆρ' οὖν τούτων μὲν ἕκαστον ἐμφαίνει τὸν τεχνίτην, τὰ δὲ ὁρατὰ καὶ [n]ὅρασις καὶ φῶς οὐκ ἐμφαίνει; Τὸ δ' ἄρρεν καὶ τὸ θῆλυ, καὶ
[74] [o]ἡ προθυμία ἡ ἑκατέρου πρὸς τὴν συνουσίαν, καὶ δύναμις ἡ χρηστικὴ τοῖς [p]μορίοις τοῖς κατεσκευασμένοις, οὐδὲ ταῦτα ἐμφαίνει τὸν τεχνίτην; Ἀλλὰ ταῦτα μὲν [q]οὕτω· ἡ δὲ τοιαύτη τῆς διανοίας κατασκευὴ, καθ' ἣν οὐχ ἁπλῶς ἐπιπίπτοντες τοῖς αἰσθητοῖς τυπούμεθα ὑπ' αὐτῶν, ἀλλὰ καὶ ἐκλαμβάνομέν τι καὶ ἀφαιροῦμεν, καὶ [r]προστίθεμεν καὶ συντίθεμεν τάδε τινὰ δι' αὐτῶν, καὶ νὴ Δία μεταβαίνομεν ἀπ' ἄλλων [s]ἐπ' ἄλλα, οὕτω πως παρακείμενα, οὐδὲ ταῦτα ἱκανὰ κινῆσαί [t]τινας καὶ διατρέψαι πρὸς τὸ μὴ [u]ἀπολείπειν τὸν τεχνίτην; ἢ ἐξηγησάσθωσαν ἡμῖν, τί τὸ ποιοῦν ἐστὶ τούτων ἕκαστον· ἢ πῶς οἷόν τε τὰ οὕτως θαυμαστὰ καὶ τεχνικὰ εἰκῇ καὶ ἀπὸ τοῦ αὐτομάτου γίγνεσθαι;

34 Ὅτι πάντας ἐφορᾷ τὸ Θεῖον. [Ibid. c. 14. p. 80.]

Πυθομένου δέ τινος πῶς ἂν τις [a]πεισθείη, ὅτι ἕκαστον τῶν ὑπ' αὐτοῦ πραττομένων ἐφορᾶται ὑπὸ τοῦ θεοῦ; Οὐ

[l] κολεὸν] κουλεὸν A.
[m] ὅτι] ὁ V. A.
[n] ὅρασις] ὁράσεις Arrian.
[o] προθυμία] ἡ προθυμ. ἑ. V. A.
[p] Post μορίοις add. τοῖς V. A.
[q] οὕτω excidit ap. Arrian.
[r] προστίθεμεν καὶ συντίθεμεν] Sic Arrian. προστιθέαμεν A. Cant.
[s] ἐπ' ἄλλα] εἰς ἄλλα τὰ Arrian. ubi MS. præbet ἐπ'.
[t] τινὰς deest V.
[u] Pro ἀπολείπειν Arr. ἀπολιπεῖν. Pro ἕκαστον τούτων Arr. τουτ. ἑκαστ. inverso ordine. Denique pro οἷόν τε Cant. et A. οἴονται.

34.

[a] πεισθείη] πεισθείς A.

δοκεῖ σοι, ἔφη, ἡνῶσθαι τὰ πάντα; Δοκεῖ, ἔφη. Τί δέ;
[76] συμπαθεῖν τὰ ἐπίγεια τοῖς [b] οὐρανίοις [c] οὐ δοκεῖ σοι; Δοκεῖ μοι, ἔφη. Πόθεν γὰρ οὕτως [d] τεταγμένως, καθάπερ ἐκ προστάγματος τοῦ θεοῦ, ὅτ' ἂν ἐκεῖνος εἴπῃ τοῖς φυτοῖς ἀνθεῖν, ἀνθεῖ, ὅτ' ἂν εἴπῃ βλαστάνειν, βλαστάνει, ὅτ' ἂν p. 7, 1 ἐκφέρειν [e] τὸν καρπὸν, ἐκφέρει, ὅτ' ἂν πεπαίνειν, πεπαίνει, [f] ὅτ' ἂν ἀποβάλλειν, ἀποβάλλει, καὶ φυλλοροεῖν, φυλλοροεῖ, καὶ αὐτὰ εἰς αὐτὰ [g] συνειλούμενα ἐφ' ἡσυχίας μένειν καὶ ἀναπαύεσθαι, μένει καὶ ἀναπαύεται. [h] Πόθεν δὲ πρὸς τὴν αὔξησιν καὶ μείωσιν τῆς σελήνης, [i] καὶ τὴν τοῦ ἡλίου πρόσοδον καὶ ἄφοδον τοσαύτη παραλλαγὴ καὶ ἐπὶ τὰ ἐναντία μεταβολὴ τῶν ἐπιγείων θεωρεῖται; Ἀλλὰ τὰ [k] φυτὰ μὲν καὶ τὰ [l] ἡμέτερα σώματα οὕτως [m] ἐνδέδεται τοῖς ὅλοις καὶ συμπέπονθεν, αἱ ψυχαὶ δὲ αἱ ἡμέτεραι οὐ πολὺ πλέον; Ἀλλ' αἱ ψυχαὶ μὲν οὕτως εἰσὶν ἐνδεδεμέναι καὶ [n] συναφεῖς τῷ θεῷ, ἅτε αὐτοῦ μόρια οὖσαι καὶ [o] ἀποσπάσματα, οὐ παντὸς δὲ αὐτῶν κινήματος, ἅτε οἰκείου καὶ συμφυοῦς, ὁ θεὸς αἰσθάνεται; Ἀλλὰ σὺ μὲν περὶ τῆς θείας διοικήσεως καὶ περὶ ἑκάστου τῶν θείων ὁμοῦ καὶ περὶ τῶν ἀνθρωπίνων
[78] πραγμάτων ἐνθυμεῖσθαι δύνασαι, καὶ ἅμα μὲν αἰσθητικῶς ἀπὸ μυρίων πραγμάτων κινεῖσθαι, ἅμα δὲ διανοητικῶς, ἅμα δὲ [p] τοῖς μὲν συγκαταθετικῶς, τοῖς δὲ [q] ἀνανευστικῶς,

[b] οὐρανοῖς] οὐρανίοις V. A.

[c] Post οὐ δοκεῖ σοι; add. δοκεῖ μοι ἔφη V. A. E. P.

[d] τεταγμένος] –μένως V. A.

[e] καρπὸν] τὸν καρπὸν A. cum Arrian. Tum πεπένειν πεπένει A.

[f] ὅτ' ἂν ἀποβάλλειν etc.] ἀποβάλλειν ἀποβάλλει· καὶ φύλλοροεῖ (λ superscr.). καὶ αὐτὰ εἰς αὐτὰ συνειλούμενα μένειν ἐφ' ἡσυχίας καὶ ἀναπαύεσθαι μένει κ. ἀ. A. ὅταν πάλιν ἀποβάλλειν καὶ φυλλοροεῖν καὶ αὐτὰ Arrian.

[g] συνειλούμενα] Cant. συνειρούμενα.

[h] δὲ post πόθεν deest V. δὲ πρὸς τὴν om. A.

[i] καὶ τοῦ] καὶ τὴν τοῦ V. A.

[k] φυτὰ] φύλλα Arrian.

[l] ἡμέτερα] ἡμέρα V.

[m] ἐνδέδυται] συνδέδυται (ε superscr.) A.

[n] συναφεῖς] συνέφει V. συνεφεῖ A.

[o] ἀποσπάσματα] ἄσματα P.

[p] τοῖς μὲν excidit Arr.

[q] ἀνανευστικῶς] Sic Arrian. ἀναπνευστικῶς A. Cant. ἀναπευστικῶς V.

ἢ ἐφεκτικῶς· τύπους [r] τε τοσούτους ἀφ᾽ [s] οὕτω πολλῶν καὶ ποικίλων πραγμάτων ἐν τῇ [t] σαυτοῦ ψυχῇ φυλάττεις, καὶ ἀπ᾽ αὐτῶν [u] κινούμενος εἰς [x] ἐπινοίας ὁμοειδεῖς ἐμπίπτεις τοῖς πρώτως [y] τετυπωκόσι, τέχνας τε ἄλλας ἐπ᾽ ἄλλαις, καὶ μνήμας ἀπὸ μυρίων πραγμάτων [z] διασώζεις, ὁ δὲ θεὸς οὐχ οἷός τέ ἐστι πάντα ἐφορᾶν, καὶ πᾶσι συμπαρεῖναι, καὶ ἀπὸ πάντων τινὰ [a] ἴσχειν διάδοσιν; Ἀλλὰ [b] φωτίζειν μὲν οἷός τέ ἐστιν ὁ [c] ἥλιος τηλικοῦτον μέρος τοῦ παντὸς, ὀλίγον δὲ τὸ ἀφώτιστον [d] ἀπολείπειν, ὅσον οἷόν τε ἐπέχεσθαι ὑπὸ τῆς σκιᾶς ἣν ἡ γῆ ποιεῖ, ὁ δὲ καὶ τὸν ἥλιον αὐτὸν πεποιηκὼς καὶ περιάγων, [e] μέρος ὄντ᾽ αὐτοῦ μικρὸν ὡς πρὸς [f] τὸ ὅλον, οὗτος δὲ οὐ δύναται [g] πάντων αἰσθάνεσθαι;

35 [a] Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς πρὸς Ποιμένιον Ἐπιστολῆς.

[80] Οἱ θεοὶ τὴν εἱμαρμένην συνέχοντες, διὰ παντὸς [b] ἐπανορθοῦνται· ἡ δ᾽ ἐπανόρθωσις αὐτῶν ποτὲ μὲν ἐλάττωσιν κακῶν, ποτὲ δὲ [c] παραμυθίαν, ἐνιότε δὲ καὶ ἀναίρεσιν [d] ἀπεργάζεται· ἀφ᾽ οὗ δὴ διακοσμεῖται ἡ εἱμαρμένη τοῖς ἀγαθοῖς, διακοσμουμένη δὲ οὐχ ὑποφαίνεται [e] πᾶσα πρὸς τὴν ἄτακτον φύσιν τῆς γενέσεως. Οὐκοῦν ἔτι μᾶλλον σώζεται [f] ἡ πεπρωμένη διὰ τῆς τοιαύτης ἐπανορθώσεως, καὶ τὸ παρα-

[r] τε] δὲ Arrian. Tum τοσούτοις A.

[s] οὕτω] οὗ τῶν A. Cant.

[t] αὐτῇ] σαυτοῦ V. A.

[u] κινούμενος—πρώτως] κρινόμενος—πρώτοις A. Cant.

[x] ἐπινοίας] —νοιαν V.

[y] τετυπωκόσι τέχνας] τετυπηκῶσι τέχναις A.

[z] διασώζεις] διϊσώζεις A.

[a] ἴσχειν διάδοσιν] Sic Arrian. ἴσχυν δίδωσιν Cant. A., nullo sensu.

[b] φωτίζειν] —τίζει A.

[c] ἥλιος etc.] ἥλιος, καὶ τὸ ἀφώτιστον ἀπολείπειν V.

[d] ἀπολείπειν] Arr. ἀπολιπεῖν. Mox ἐπέχεσθαι revocavit Heeren. ex Arr. pro ἀπέχεσθαι.

[e] μέρος ὢν] μέρος ὄντ᾽ Arrian.

[f] τὸν ὅλον] τὸ ὅλον V. A.

[g] πάντων] πάντα A.

35.

[a] Ἰαμβλίχου om. A.

[b] ἐπανορθοῦνται] —θοῦται A.

[c] προμυθίαν] παραμυθίαν A.

[d] ἀπεργάζεται] ἀπεργάζονται Cant. A.

[e] πᾶσαν] πᾶσα V. A.

[f] ἡ πεπρωμένη] ἐπιπεπρωμένη A.

τρέπον αὐτῆς μένει κατὰ τὴν ἄτρεπτον τῶν [h]θεῶν ἀγαθότητα συνεχόμενον, διότι οὐκ ἐᾶται ὑπορρεῖν εἰς τὴν ἄτακτον πλημμέλειαν. Τούτων δὴ οὕτως ἐχόντων, τό τε ἀγαθοειδὲς τῆς προνοίας, τό τε αὐτεξούσιον τῆς ψυχῆς, καὶ πάντα τὰ κάλλιστα διασώζεται, τῇ [i]βουλήσει τῶν θεῶν συνυπάρχοντα.

36 Ἀριστοτέλους ἐκ τῆς πρὸς Ἀλέξανδρον Ἐπιστολῆς.

[Περὶ κόσμου 6, 34.]

Καθόλου δὲ, ὅπερ ἐν νηῒ μὲν κυβερνήτης, ἐν ἅρματι δὲ [82] ἡνίοχος, ἐν χορῷ δὲ κορυφαῖος, ἐν πόλει δὲ νόμος, ἐν στρατοπέδῳ δὲ ἡγεμὼν, τοῦτο θεὸς ἐν κόσμῳ, πλὴν καθόσον τοῖς μὲν καματηρὸν τὸ ἄρχειν πολυκίνητόν [a]τε καὶ πολυμέριμνον, τῷ δὲ ἄλυπον ἄπονόν τε, πάσης [b]κεχωρισμένον σωματικῆς ἀσθενείας. Ἐν ἀκινήτῳ [c]γὰρ ἱδρυμένος δυνάμει πάντα κινεῖ καὶ περιάγει ὅπου βούλεται καὶ ὅπως, ἐν διαφόροις ἰδέαις καὶ φύσεσιν· ὥσπερ ἀμέλει καὶ ὁ τῆς πόλεως νόμος ἀκίνητος ὢν ἐν ταῖς τῶν χρωμένων ψυχαῖς πάντα [d]οἰκονομεῖ τὰ κατὰ τὴν πολιτείαν. Ἐφεπόμενοι γὰρ αὐτῷ δηλονότι ἐξίασιν ἄρχοντες μὲν [e]εἰς τὰ ἀρχεῖα, θεσμοθέται δὲ εἰς τὰ οἰκεῖα δικαστήρια, βουλευταὶ δὲ καὶ ἐκκλησιασταὶ εἰς συνέδρια τὰ προσήκοντα· καὶ ὁ μέν [f]τις εἰς τὸ πρυτανεῖον βαδίζει [g]διαιτησόμενος, [h]ὁ δὲ πρὸς τοὺς δικαστὰς ἀπολογησόμενος, ὁ δὲ εἰς τὸ δεσμωτήριον ἀποθανούμενος. Γίνονται δὲ καὶ [i]δημοθοινίαι νόμιμοι, καὶ πανηγύρεις ἐνιαύσιαι, θεῶν

[h] θεῶν] θεον (with ω over) A.
[i] βουλῇ] βουλήσει V. A.

36.

[a] τε καὶ] Sic A. δὲ καὶ Cant.
[b] κεχωρισμένον] κεχωρισμένῳ A.
[c] γὰρ ἱδρυμένος] ἱδρομένος (υ over ο) A. qui om. γάρ cum Cant. Habet Aristot. qui om. δυνάμει.
[d] οἰκονομεῖται] οἰκονομεῖ τὰ ex Aristot. Seqq. om. Cant.
[e] ἐπὶ τὰ] εἰς τὰ A.
[f] μέν τις] τις om A.
[g] διαιτησόμενος sic A. V. E. σιτησόμενος ed. Aristot.
[h] ὁ δὲ πρὸς—ἀποθανούμενος om A.
[i] δημοθοινίαι νομίμοι κ. πανηγύρεις] δημοθηνίαι νόμοι κ. πανηγύρϊς A.

τε θυσίαι, καὶ ἡρώων θεραπεῖαι, καὶ χοαὶ κεκμηκότων.
[84] Ἄλλα δὲ [k] ἄλλως ἐνεργούμενα κατὰ μίαν πρόσταξιν, ἢ νόμιμον ἐξουσίαν, σώζει τὸ τοῦ ποιήσαντος, [l] ὅτι

[m] πόλις δ' ὁμοῦ μὲν θυμιαμάτων γέμει,
ὁμοῦ δὲ παιάνων τε καὶ στεναγμάτων.

Οὕτως ὑποληπτέον καὶ ἐπὶ τῆς μείζονος πόλεως, λέγω δὲ [n] τοῦ κόσμου. Νόμος μὲν γὰρ ἡμῖν ἰσοκλινὴς ὁ θεὸς, οὐδεμίαν ἐπιδεχόμενος διόρθωσιν ἢ μετάθεσιν, κρείττων δ', οἶμαι, καὶ βεβαιότερος τῶν ἐν ταῖς [o] κύρβεσιν ἀναγεγραμμένων. Ἡγουμένου δὲ [p] ἀκινήτως αὐτοῦ καὶ ἐμμελῶς, ὁ σύμπας [q] οἰκονομεῖται δι' αὐτοῦ διάκοσμος οὐρανοῦ τε καὶ γῆς, μεμερισμένος κατὰ τὰς φύσεις πάσας [r] ὁμοίως διὰ τῶν οἰκείων σπερμάτων εἰς τὰ φυτὰ καὶ ζῶα κατὰ γένη τε καὶ εἴδη. Καὶ γὰρ ἄμπελοι καὶ φοίνικες καὶ περσέαι,

[s] συκέαι τε γλυκεραὶ καὶ ἐλαῖαι,

ὥς φησιν ὁ ποιητὴς, τά τε ἄκαρπα μὲν, ἄλλας δὲ παρεχόμενα χρείας, πλάτανοι καὶ [t] πεῦκαι καὶ πύξοι, κλῶνές τε,

[86] [u] κλήθρη τ' αἴγειρός τε καὶ εὐώδης κυπάρισσος,

[k] ἄλλως] ἄλλοις Aristot.

[l] ὅτι] Aristot. ὄντως, eo sensu quem aperuit Wyttenbach. ad Plutarch. p. 95 C.

[m] πόλις δ'] δὲ om. A. qui mox γέμουσα. Versus sunt Soph. Oed. T. 4. 5.

[n] τοῦ] τοῦδε τοῦ Arist.

[o] κύρβεσιν] κυβερνήσεσιν A.

[p] ἀκινήτως] ἀεικινήτως ed. Aristot.

[q] οἰκονομεῖται δι' αὐτοῦ διάκοσμος] διοικονομεῖται διάκοσμος Aristot. κόσμος non διάκ. A. Mox μεμερισμένων A. et infra πάντας.

[r] ὁμοίως om. Aristot. Mox ibid. εἴς τε τὰ φ. κ. ζ.

[s] Hom. Od. η'. 116. Συκαῖ τε γλυκεραὶ καὶ ἐλαῖαι τηλεθόωσαι.

[t] πεῦκαι] πίτυες Aristot. Mox πύξαι A. Tum κλῶνές τε om. Aristot.

[u] κλήθρη τ' αἴγειρός τε] Sic Aristot. cum Hom. Od. ε'. 64. κληθραὶ ἐσγειρός τε A.

αἵ τε καρπὸν ὀπώρας ἡδὺν, ἄλλως δὲ δυσθησαύριστον φέρουσαι,

[x] ὄχναι καὶ ῥοιαὶ καὶ μηλέαι ἀγλαόκαρποι,

τῶν τε ζώων τά τε ἄγρια καὶ ἥμερα, τά τ' ἐν ἀέρι καὶ ἐπὶ γῆς καὶ [y] ἐν ὕδατι βοσκόμενα, γίνεταί [z] τε καὶ ἀκμάζει καὶ φθείρεται, τῷ τοῦ θεοῦ πειθόμενα θεσμῷ. Πᾶν γὰρ ἑρπετὸν [a] τὴν γῆν νέμεται, ὥς φησιν Ἡράκλειτος.

[b] Εἷς δὲ ὢν πολυώνυμός ἐστι, κατονομαζόμενος τοῖς πάθεσι πᾶσιν, ἅπερ αὐτὸς [c] νεοχμοῖ. Καλοῦμεν γὰρ αὐτὸν καὶ Ζῆνα καὶ Δία, παραλλήλως χρώμενοι τοῖς [d] ὀνόμασιν, ὡς κἂν εἰ λέγοιμεν, δι' ὃν ζῶμεν. [e] Κρόνου δὲ παῖς καὶ Χρόνου λέγεται, [f] διήκων ἐξ αἰῶνος ἀτέρμονος εἰς ἕτερον αἰῶνα, ἀστραπαῖός τε [g] καὶ βρονταῖος, καὶ [h] αἴθριος, καὶ
[88] ἀστέριος, καὶ κεραύνιός τε, καὶ ὑέτιος ἀπὸ τῶν ὑετῶν τε, καὶ κεραυνῶν, καὶ τῶν ἄλλων καλεῖται. Καὶ [i] μὴν κάρπιος μὲν ἀπὸ τῶν καρπῶν, πολιεὺς δὲ ἀπὸ τῶν πόλεων ὀνομάζεται· γενέθλιός τε καὶ [k] ὁμόγνιος καὶ εὐόρκιος τε καὶ πατρῷος, ἀπὸ τῆς πρὸς ταῦτα κοινωνίας, ἑταιρεῖός τε καὶ φίλιος καὶ ξένιος, [l] ἔτι δὲ στράτιός τε καὶ τροπαιοῦχος, καθάρσιός τε καὶ παλαμναῖος, καὶ ἱκέσιος καὶ μειλίχιος,

x Od. η'. 115. ἔχναι—μηλαίαι A.

y ἐν ὕδατι] ἐν om. A.

z τε om. Arist. Mox ibid. τοῖς—θεσμοῖς.

a τὴν γῆν] πληγῇ—Ἡράκλητος A.

b εἰς δέον] εἷς δὲ ὢν Aristot.

c νεοχμοῖ] νεοχμεῖ A. Tum καλοῦμεν δὲ Arist.

d ὀνόμασιν ὡς] ὀνόμασι A. om. ὡς.

e Κρόνου δὲ παῖς καὶ χρόνου] Sic Aristot. Κρόνου αἶσα καὶ χ. A.

f διήκων] διώκων A.

g καὶ βρονταῖος— κεραύνιός τε om. A.

h ἀστέριος] αἰθέριος Aristot. om. mox καί.

i μὴν κάρπιος] μὴν ἐπικάρπιος Arist. Tum ἐπὶ τῶν καρπῶν et τῆς πόλεως A.

k ὁμόγνιος] ἕρκειος καὶ ὁμόγνιος καὶ πάτριος Aristot. et mox ὢν φύσεώς τε καί.

l Pro ἔτι δὲ] καὶ Arist. Mox πολέμιος A. pro παλαμναῖος.

ὥσπερ οἱ ποιηταὶ λέγουσι· σωτήρ τε καὶ ἐλευθέριος [m]ἐτύμως οὕτως εἰπεῖν· ὡς δὲ τὸ πᾶν εἰπεῖν, οὐράνιός τε καὶ χθόνιος, πάσης ἐπώνυμος φύσεως ὢν καὶ τύχης, ἅτε πάντων αὐτὸς αἴτιος ὤν.

37 Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ δ' Ἀπομνημονευμάτων. [c. 3.]

[90] Εἶπέ μοι, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἤδη ποτέ σοι ἐπῆλθεν ἐνθυμηθῆναι, ὡς ἐπιμελῶς οἱ θεοὶ, ὧν οἱ ἄνθρωποι δέονται, [a]κατεσκευάκασι; Καὶ ὅς· Μὰ τὸν Δί', ἔφη, οὐκ ἔμοιγε. Ἀλλ' οἶσθά γ', ἔφη, ὅτι πρῶτον μὲν φωτὸς δεόμεθα, ὃ ἡμῖν οἱ θεοὶ παρέχουσι; Νὴ Δί', ἔφη, ὅ γ' εἰ μὴ εἴχομεν, ὅμοιοι τοῖς τυφλοῖς ἂν ἦμεν, ἕνεκά γε τῶν ἡμετέρων ὀφθαλμῶν. Ἀλλὰ μὴν καὶ ἀναπαύσεώς [b]γε δεομένοις ἡμῖν νύκτα παρέχουσι, κάλλιστον ἀναπαυτήριον. Πάνυ γε, ἔφη, καὶ τοῦτο χάριτος ἄξιον. Οὐκοῦν καὶ ἐπειδὴ ὁ μὲν ἥλιος, φωτεινὸς ὢν, τάς τε ὥρας τῆς ἡμέρας ἡμῖν καὶ τἄλλα πάντα σαφηνίζει, ἡ δὲ νὺξ διὰ τὸ σκοτεινὴ εἶναι [c]ἀσαφεστέρα ἐστὶν, ἄστρα ἐν τῇ νυκτὶ ἀνέφηναν, ἃ ἡμῖν τῆς νυκτὸς τὰς ὥρας ἐμφανίζει, καὶ διὰ τοῦτο πολλὰ ὧν δεόμεθα πράττομεν; Ἔστι ταῦτα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν ἥ γε σελήνη οὐ μόνον τῆς νυκτὸς, ἀλλὰ καὶ τοῦ μηνὸς τὰ μέρη φανερὰ ἡμῖν ποιεῖ, Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τὸ δὲ, ἐπεὶ τροφῆς δεόμεθα, ταύτην ἡμῖν ἐκ τῆς γῆς ἀναδιδόναι, καὶ ὥρας ἁρμοττούσας πρὸς τοῦτο παρέχειν [d]αἳ ἡμῖν οὐ μόνον ὧν δεόμεθα πολλὰ καὶ παντοῖα παρασκευάζουσιν, ἀλλὰ καὶ οἷς εὐφραινόμεθα; Πάνυ, ἔφη, καὶ ταῦτα φιλάνθρωπα. Τὸ δὲ καὶ ὕδωρ [e]παρέχειν ἡμῖν οὕτω πολλοῦ ἄξιον, ὥστε [f]συμφύειν τε καὶ

m ἐτύμως] ἑτοίμως A. οὕτως εἰπεῖν om. Aristot.

37.

a κατεσκευάκασι] κατεσκευάσεσι A.

b γε] τε A.

c ἀσαφεστέρα] ἀσαφέστερα A.

d αἳ ἡμῖν] αἳ om. A. ubi infra παρασκευάζουσα.

e ὕδωρ ἡμῖν οὕτω πολλοῦ παρέχειν πολλοῦ A.

f συμφύειν] Sic A. φυτεύειν vul-

συναύξειν τῇ γῇ καὶ ταῖς ὥραις πάντα τὰ χρήσιμα ἡμῖν,
[92] συντρέφειν [g] δὲ καὶ αὐτοὺς ἡμᾶς, καὶ μιγνύμενον [h] πᾶσι τοῖς τρέφουσιν ἡμᾶς εὐκατεργαστότερά τε καὶ ὠφελιμώτερα καὶ ἡδίω ποιεῖν αὐτά, καὶ ἐπειδὴ πλείστου δεόμεθα τούτου, ἀφθονέστατον αὐτὸ παρέχειν ἡμῖν; Καὶ τοῦτο, ἔφη, προνοητικόν.

38 Πλάτωνος ἐκ τοῦ [a] Σοφιστοῦ. [p. 265.]

Ποιητικῆς δὴ πρῶτον ἔστω δύο μέρη. p. 3, 51

Ποίων;

Τὸ μὲν θεῖον· τὸ δ' ἀνθρώπινον.

Οὔ πω μεμάθηκα.

Ποιητικὸν (εἴπερ μεμνήμεθα τὰ κατ' ἀρχὰς λεχθέντα) πᾶσαν ἔφαμεν εἶναι δύναμιν, ἥτις ἂν αἰτία γίγνηται τοῖς μὴ πρότερον οὖσιν ὕστερον γίγνεσθαι.

Μεμαθήκαμεν.

Ζῷα δὴ πάντα θνητὰ καὶ δὴ φυτά, ὅσα τ' ἐπὶ γῆς ἐκ p. 4.
σπερμάτων καὶ ῥιζῶν φύεται, καὶ ὅσα ἄψυχα ἐν γῇ ξυνίσταται, σώματα τηκτὰ καὶ ἄτηκτα, μῶν ἄλλου τινὸς ἢ θεοῦ δημιουργοῦντος φήσομεν ὕστερον γίγνεσθαι, πρότερον οὐκ ὄντα; ἢ τῶν πολλῶν δόγματι χρώμενοι ποιητῶν, τὴν φύσιν αὐτὰ γεννᾶν ἀπό τινος αἰτίας αὐτομάτης καὶ ἄνευ διανοίας φυούσης, ἢ μετὰ λόγου τε καὶ ἐπιστήμης θείας ἀπὸ θεοῦ γιγνομένης διὰ τὴν ἡλικίαν πολλάκις ἀμφότερα μεταδοξάζω· νῦν μὲν βλέπων εἰς σὲ καὶ ὑπολαμβάνων κατὰ θεὸν αὐτὰ γίγνεσθαι, ταύτῃ καὶ αὐτὸς νενόμικα.

Καλῶς γε, ὦ Θεαίτητε, καὶ εἰ μέν σε ἡγούμεθα τὸν εἰς

go ap. Xenoph. Mox A. συναύξιν τῇ γῇ ταῖς ὥ.

[g] δὲ καὶ] δὲ om. A.

[h] πᾶσι om. A. ubi mox καὶ ἰδιοποιεῖν ταῦτα.

38. [a] σοφιστικοῦ A.

τὸν ἔπειτα χρόνον ἄλλως πως δοξαζόντων εἶναι, νῦν ἂν τῷ λόγῳ μετὰ πειθοῦς ἀναγκαίας [b]ἐπεχειροῦμεν ποιεῖν ὁμολογεῖν· ἐπειδὴ δέ σου καταμανθάνω τὴν φύσιν, ὅτι καὶ ἄνευ τῶν παρ' ἡμῶν λόγων αὐτῇ πρόσεισιν ἐφ' ἃ νῦν ἕλκεσθαι φῄς, ἐάσω· χρόνος γὰρ ἐκ περιττοῦ γίγνοιτ' ἄν· ἀλλὰ θήσω τὰ μὲν φύσει λεγόμενα, ποιεῖσθαι θείᾳ τέχνῃ, τὰ δ' ἐκ τούτων ὑπ' ἀνθρώπων ξυνιστάμενα, ἀνθρωπίνῃ, καὶ κατὰ τοῦτον δὴ τὸν λόγον δύο ποιητικῆς γένη τὸ μὲν ἀνθρώπινον εἶναι τὸ δὲ θεῖον.

Ὀρθῶς.

39 [a]Ὀνάτου ἐκ τοῦ περὶ θεοῦ καὶ θείου.

[b]Ὁ μὲν θεὸς τὰ τῶν ἄλλων ζώων ἐπαΐει, οὔτε ὁρατὸς
[94] ὢν οὔτε ἐπαΐστος, εἰ μή τισι πάγχυ ὀλίγοις τῶν ἀνθρώπων. Αὐτὸς μὲν γὰρ θεός ἐντι νόος καὶ [c]ψυχά, καὶ [d]τὸ ἁγεμονικὸν τῶ [e]σύμπαντος κόσμω· ταὶ δὲ [f]δυνάμιες αὐτῶ αἰσθηταί, τά τ' ἔργα, ὧν οἶμαι νομεὺς, καὶ ταὶ [g]πράξιες, καὶ ταὶ κατὰ τὸν σύμπαντα κόσμον [h]ἐπιστροφάσιες. Ὁ μὲν ὦν θεὸς αὐτὸς οὔτε ὁρατὸς, οὔτε αἰσθητὸς, ἀλλὰ [i]λόγῳ μόνον καὶ νόῳ θεωρατός· τὰ δ' ἔργα αὐτῶ καὶ ταὶ [k]πράξιες [l]ἐναργέες τε καὶ αἰσθηταί ἐντι πάντεσιν ἀνθρώποις. [m]Δοκείη

[b] ἐπιχειροῦμεν A.

39.

[a] Ὀνάτου] ν̄άτου A.

[b] Ὁ μὲν—ἐπιστροφάσιες] Retinui scripturam ed. Heerenianae. Editum est a Cant. cui in plerisque consentit A. Ὁ μὲν θεὸς τὰ τῶν ἄλλων ζώων ἐπαΐει, οὔτε νοητῶς οὔτε ἐπαϊστῶς, εἰ μή τισι πάγχυ (πα̈γχυ A. An πάνυ?) ὀλίγοις τῶν ἀνθρώπων. Καὶ δύναμις (δυνάμιες A.) δ' αὐτῷ ἀλήθεια, ὧν οἶμαι νομεύς τε (εἰ A.), ἐναργέα τε καὶ ἐπαϊστά. αὐτὸς μὲν γὰρ (γὰρ ὁ A.) θεός ἐστι νόος καὶ ψυχῆς (ψυχὰ A.) καὶ τὸ (τῷ A.) ἁγεμονικὸν τῶ σύμπαντος κόσμω. τὰ (τῷ A.) δὲ δυνάμει (δυνάμιες A.) αὐτῷ τ' ἀλήθεια· ὧν οἶμαι νομεὺς (νομεῖς A.) τά τ' ἔργα καὶ (τὰ A.) πράξιες, καὶ τὰ κατὰ τὸν σύμπαντα κόσμον ἐπιστροφώσιες.

[c] ψυχῆς] ψυχὰ V. A.

[d] τὸ] τῷ A.

[e] συμπάντως] συμπάντος V. A.

[f] δυνάμει] δυνάμιες V. A.

[g] πράξιες] τὰ πράξιες V. A.

[h] ἐπιτροφ.] ἐπιτρωφώσιες V.

[i] Post λόγῳ add. μόνον V. A.

[k] Ante πράξεις add. τὰ V. A.

[l] ἐναργέες—αἰσθηταὶ] ἐναργέεν—αἰσθητὰ A.

[m] δοκεῖ] δοκείη V. δοκείει A.

δέ μοι καὶ μὴ εἷς [n]εἶμεν ὁ θεὸς, ἀλλ' εἷς μὲν ὁ μέγιστος καὶ καθυπέρτερος, καὶ ὁ κρατέων τῶ παντὸς, οἱ δ' ἄλλοι πολλοὶ διαφέροντες κατὰ δύναμιν· [o]βασιλεύεν δὲ πάντων
[96] αὐτῶν ὁ καὶ κράτει καὶ μεγέθει καὶ ἀρετᾷ μείζων. Οὗτος δέ [p]κ' εἴη θεὸς ὁ περιέχων τὸν σύμπαντα κόσμον, τοὶ δ' ἄλλοι θεοὶ οἱ θέοντές ἐντι κατ' οὐρανὸν σὺν τᾷ τῶ παντὸς περιαγήσει, κατὰ λόγον ὀπαδέοντες τῷ [q]πράτῳ καὶ νοατῷ. Τοὶ δὲ λέγοντες ἕνα θεὸν εἶμεν, ἀλλὰ μὴ πολλὼς, ἁμαρτάνοντι· τὸ γὰρ μέγιστον ἀξίωμα τᾶς θείας ὑπεροχᾶς οὐ [r]συνθεωρεῦντι. Λέγω δὴ τὸ [s]ἄρχεν καὶ [t]καθαγέεσθαι τῶν ὁμοίων, καὶ κράτιστον καὶ [u]καθυπέρτερον εἶμεν τῶν ἄλλων. Τοὶ δ' ἄλλοι θεοὶ [x]ποτὶ τὸν πρᾶτον θεὸν καὶ [y]νοατὸν οὕτως ἔχοντι, ὥσπερ χορευταὶ ποτὶ κορυφαῖον, καὶ στρατιῶται ποτὶ στραταγὸν, καὶ λοχῖται καὶ ἐντεταγμένοι ποτὶ ταξιάρχαν καὶ [z]λοχαγέταν, [a]ἔχοντες [aa]φύσιν ἕπεσθαι καὶ [b]ἐπακολουθὲν τῷ καλῶς καθαγεομένῳ. [c]ξυνὸν μὲν ὦν αὐτῶν τὸ ἔργον [d]ἐντὶ, καὶ [e]τῶ ἄρχοντος καὶ τῶν ἀρχομένων, ἀλλ' οὐκ ἔτι δύναιντο συντετάχθαι τοὶ ἀρχόμενοι ποτὶ τὸ ἔργον ἀπολειφθέντες ἁγεμόνος, ὥσπερ [f]οὐδὲ ἀοιδοὶ ποτὶ [g]συναοιδίαν, [h]οὐδὲ στρα-

[n] εἰ μὲν] εἶμεν V. A.

[o] βασιλεύει] βασιλεύειν (sic) A.

[p] κ' εἴη] καὶ εἴη A. qui mox εἰσὶ, non ἐντι, et σύν τε τῷ.

[q] πράτω καὶ νοατῷ] παρὰ τῷ νοατῷ V. Mox ὑπεροχῆς A.

[r] συνθεωροῦντι] συνθεωρεῦντι A.V.

[s] ἄρχεν] ἄρχειν A.

[t] καθηγ.] καθαγέεσθαι V. A.

[u] καθ' ὑπερτέρων] καθυπέρτερον V. A.

[x] Post θεοὶ ποτὶ ap. Cant. exciderant verba τὸν πρᾶτον θεὸν καὶ νοατὸν οὕτως ἔχοντι, ὥσπερ χορευταὶ ποτὶ ob homoioteleuton: suppeditant ea Codd. V. A. E. Vide supra s. 28. p. 19.

[y] νοατὸν] νοητὸν A. qui infra καθηγεομένῳ.

[z] λογαρχέταν] λοχαγέταν V. A.

[a] ἔχον τε] ἔχοντες V. A.

[aa] Pro φύσιν mallet Heerenius τάξιν.

[b] ἐπακολουθεῖν] ἀκολουθὲν V. ἐπακολουθὲν A. diserte.

[c] κοινὸν μὲν τῶν αὐτῶν] ξοινὸν μὲν ὦν αὐτῶν etc. V. A. In ξοινὸν latet ξυνόν.

[d] ἐντὶ] ἐστὶν A. qui mox δύναντο.

[e] τῷ ἄρχοντι] τῷ ἄρχοντος V. A.

[f] οὐδὲ post ὥσπερ deest A.V. Mox ἀοιδοὶ V. teste Heerenio, ubi χορευταὶ A. Cant.

[g] συναιδίαν] συναοιδίαν V.

τιῶται ποτὶ [i]στραταγίαν, ἀπολειφθέντες τοὶ μὲν [ii]στραταγῷ, τοὶ δὲ κορυφαίῳ.

[98] [j]Τοιαύτα δὲ φύσις οὐδενὸς προσδεῖται, οὔτε [k]συγγενέος οὔτε ἔξωθεν· διόπερ οὔτε ἐκ [l]δύο συνάρμοσται, [m]ψυχᾶς καὶ σώματος, [n]ἁ γὰρ διόλω ἐντὶ ψυχά, οὔτ' [o]ἐναντίων τινῶν, τὰ γὰρ ἐναντία καὶ [p]κρατὲν καὶ κρατεῖσθαι πέφυκεν. Ἁ δέ γε [q]τῶ σώματος κρᾶσις μιαίνει τὸ καθαρὸν τᾶς ψυχᾶς, ἁ μὲν γὰρ ἀκήρατος καὶ [r]θεῖός ἐντι, τὸ δὲ θνατὸν καὶ [s]θολομιγές· [t]οὕτω δὲ μιαίνει καὶ μόλιβδος p. 5.
χρυσὸν, καὶ πᾶν [u]τό γε φύσει γνήσιον, τὸ νόθον. Ὅλως p. 7, ult.
δὲ τὸ σῶμα τοῖς θνατοῖς δέδωκεν ὁ θεὸς ζώοις, [x]δι' ἀϊδίαν p. 8.
ἀνάγκαν καὶ ἄφυκτον. Φύσει γὰρ ἄπορον καὶ πτωχὸν πᾶν τὸ [y]γενέσιος κεκοινωνηκός.

Θεὸς μὲν ὢν [z]ἐντι, καθάπερ ἐν ἀρχᾷ τῶ λόγω εἶπον,
[100] [zz]αὐτὸς γὰρ ἀρχὰ καὶ πρῶτον· θεῖος δὲ ὁ κόσμος, καὶ τὰ ἐν αὐτῷ [a]δινεύμενα πάντα· ὡς ὁμοίως [b]τε καὶ δαίμων ἐντὶ ἁ ψυχὰ, αὐτὰ γὰρ ἄρχει καὶ κινεῖ [c]τὸ διόλω ζῶον.

h οἱ δὲ] οὐδὲ V. A.

i στραταγίαν] Sic Canterus in marg. στρατηγὸν A. qui mox ἀποληφθέντες ἁγεμόνες τοὶ μέν.

ii Post στραταγῷ add. τοὶ δὲ V. A.

j Τοιαῦτα] Nova hic paragraphus incipit, nullo tamen auctoris nomine in margine addito, A. V.

k συγγενέως] συγγένεος V. συγγενέες A.

l δύω συνήρμοσται] δύο συνάρμοσται A. Cant.

m ψυχᾶς] ψυχᾷ A. V.

n οἱ γὰρ δι' ὅλων] Sic A. Cant. ἁ γὰρ διόλω Heeren. qui ἐντὶ pro ἐστί.

o ἐναντίον] ἐναντίων A. V.

p κρατεῖν] κρατὲν V. A.

q τῶ] τοῦ A. Cant.

r θεῖος] θεῖόν ἐστι A. Cant.

s θεμολογὲς] θομολογὲς V. θολομογὲς A. unde θολομιγὲς refinxit Heerenius.

t οὕτω δὲ μιαίνει καὶ μόλιβδος] οὔτε δὲ μιαίνειν καὶ μόλυβδος A.

u τό γε] τό τε A.

x δι' ἀϊδίαν etc.] δι' ἀδείαν ἀνάγκης V. δι' ἀδίαν ἀνάγκαν A.

y γενέσιος] γενέσεως A. Cant.

z ἐντι] ἐστι A. Cant.

zz αὐτὸς] αὐτὸς γὰρ A.

a δινούμενα] δινεύμενα Heeren. qui et ἅπαντα pro πάντα.

b δὲ καὶ] τε καὶ Heeren. qui ἐντὶ pro ἐστιν. Mox αὗτα A.

c διόλω] δι' ὅλω V.

Δαιμόνιον δὲ τὸ σῶμα καὶ τὰ [d]τούτω γε πάντα, δι' ὧν οὕτω διαιρὲν, θεὸν καὶ θεῖον, καὶ δαίμονα καὶ δαιμόνιον.

40 Ἀρριανοῦ Ἐπικτητίου ἐκ τοῦ περὶ Εὐαρεστήσεως. [Diss. I. 12.]

Περὶ θεῶν οἱ μὲν τινές εἰσιν οἱ λέγοντες, [a]μηδὲν εἶναι τὸ θεῖον· οἱ δὲ εἶναι μὲν, ἀργὸν δὲ καὶ ἀμελὲς καὶ μὴ προνοεῖν μηδενός· τρίτον δὲ, [b]οἱ καὶ εἶναι καὶ προνοεῖν, ἀλλὰ τῶν μεγάλων καὶ οὐρανίων, τῶν δὲ ἐπὶ γῆς μηδενός· τέταρτον, οἱ καὶ τῶν ἐπὶ γῆς καὶ τῶν [c]οὐρανίων, εἰς κοινὸν δὲ μόνον, καὶ οὐχὶ καὶ κατ' ἰδίαν ἑκάστου· πέμπτοι δὲ, ὧν ἦν καὶ Ὀδυσσεὺς καὶ Σωκράτης, οἱ λέγοντες ὅτι,

[d]οὐδέ σε λήθω
[e]κινύμενος.

[102] [f]Εἴπερ οὖν ὑγιῶς λέγεται τέλος εἶναι τὸ ἕπεσθαι θεῷ, ἀναγκαῖον περὶ ἑκάστου τούτων ἐπεσκέφθαι. Εἰ γὰρ μή εἰσι θεοὶ, πῶς ἐστι τέλος ἕπεσθαι θεοῖς; Εἰ δέ εἰσι μὲν μηδενὸς δὲ ἐπιμελούμενοι, καὶ οὕτω πῶς [g]ὑγιῶς ἔσται; Ἀλλὰ δὴ καὶ ὄντων καὶ ἐπιμελουμένων, εἰ μηδεμία διάδοσις εἰς ἀνθρώπους ἐστὶν ἐξ αὐτῶν, καὶ νὴ Δία γε καὶ εἰς ἐμὲ, πῶς ἔτι καὶ οὕτως ὑγιές ἐστιν; Πάντα οὖν ταῦτα ὁ [h]καλὸς καὶ ἀγαθὸς ἐπεσκεμμένος, τὴν αὑτοῦ γνώμην ὑποτέταχε τῷ

[d] τούτω δὲ] τούτω γε Heeren. qui διαιρὲν pro διαιρεῖν.

40.

[a] μηδὲν] μηδὲ Arrian. Pro τρίτον—τέταρτον Arr. τρίτοι—τέταρτοι.

[b] οἱ καὶ εἶναι καὶ] εἰ (οἱ) καὶ εἶναι μὴ A.

[c] ἀνθρωπίνων] οὐρανίων A.

[d] οὐδὲ] οὐδὲν A. Cant.

[e] κινύμενος] κινούμενος V. κινάμενος A. Vid. Il. κ'. 279.

[f] Pro his in Arriani editis leg. Πολὺ πρότερον οὖν ἀναγκαῖόν ἐστι, περὶ ἑκάστου τούτων ἐπεσκέφθαι, πότερα ὑγιῶς ἢ οὐχ ὑγιῶς λεγόμενόν ἐστιν. Εἰ δὲ (γὰρ ms.) μή εἰσι θεοὶ etc. Mox ἐπισκέφθαι A.

[g] ὑγιῶς] ὑγιὲς Arrian.

[h] καλὸς καὶ ἀγαθὸς] καλῶς κ. ἀγαθῶς V. καλ(ῶ)ς—ἀγαθ(ῶ)ς A.

διοικοῦντι [i] τὰ πάντα, καθάπερ οἱ ἀγαθοὶ πολῖται τῷ νόμῳ τῆς πόλεως.

Κεφ. γʹ.

[104] ΠΕΡΙ ΔΙΚΗΣ ΠΑΡΑ ΤΟΥ ΘΕΟΥ ΤΕΤΑΓΜΕΝΗΣ ΕΠΟΠΤΕΥΕΙΝ ΤΑ ΕΠΙ ΓΗΣ ΓΙΓΝΟΜΕΝΑ ὙΠΟ ΤΩΝ ΑΝΘΡΩΠΩΝ, ΤΙΜΩΡΟΝ ΟΥΣΑΝ ΤΩΝ ὉΜΑΡΤΑΝΟΝΤΩΝ.

1 Ἡσιόδου Ἔργων [274.]

Τόνδε γὰρ ἀνθρώποισι νόμον διέταξε Κρονίων,
ἰχθύσι μὲν καὶ θηρσὶ καὶ οἰωνοῖς πετεεινοῖς
ἔσθειν ἀλλήλους, ἐπεὶ οὐ δίκη ἐστὶν ἐν αὐτοῖς.
Ἀνθρώποισι δ᾽ ἔδωκε δίκην, ἣ πολλὸν ἀρίστη.

2 Σοφοκλῆς [Œd. Tyr. 551.]

[a] Εἶτ᾽ οὖν νομίζεις, ἄνδρα συγγενῆ κακῶς
δρῶν, οὐχ ὑφέξειν τὴν δίκην, οὐκ εὖ φρονεῖς.

3 [a] Εὐριπίδης Οἰδίποδι [Fr. 16.]

Ὁρῶ γὰρ [b] ἐν χρόνῳ
δίκην ἅπαντ᾽ ἄγουσαν εἰς φάος βροτοῖς.

4

[106] Φθείρει γὰρ ἡ πρόνοια τὴν ἀβουλίαν.

5 [Εὐριπίδου Ion. 440.]

Ἀρετὰς δίωκε· καὶ γὰρ ὅστις ἂν βροτῶν

i τὰ πάντα] τὰ ὅλα Arrian.

2.

a εἶτ᾽ οὖν] εἰτ᾽ οὐ A. et om. ἄνδρα. qui v. seq. δρῶντ᾽ οὐχ ὑφέξεις.

3.

a Εὐριπίδης] Hoc lemma dedit Heeren. tanquam ex V. A. quod in A. certe non legitur, ubi fragmentum cum seqq. 4—13. ἀδέσποτον profertur.

b ἐν χρόνῳ] ἐν addidit Grotius, qui v. seq. δίκην ἅπαντ᾽ ubi δίκαν πάντ᾽ A.

κακὸς [a]πεφύκῃ, ζημιοῦσιν οἱ θεοί.

6

Οὐ δῆκταί [a]γ᾽ ὅπως κύνες οἱ θεοὶ,
ἀλλ᾽ ἡ δίκη γὰρ καὶ κατὰ σκότους βλέπει.

7 [Sophocl. Fr. 656.]

Θεοῦ δὲ πληγὴν οὐχ ὑπερπηδᾷ βροτός.

8 [Εὐριπίδου.]

[a]Εἱμαρμένον δὲ τῶν κακῶν βουλευμάτων
κακὰς ἀμοιβάς ἐστι καρποῦσθαι βροτούς.

9

Οὐχ εὕσει Διὸς
ὀφθαλμὸς, ἐγγὺς δ᾽ ἐστὶ, [a]καίπερ ὢν πόρρω.

10

[108] Οὐ γάρ τις, οὔτε χρημάτων [a]ὑπεργεγὼς,
νόμον μιαίνων ἀσφαλῶς γηράσκεται·
ἀλλ᾽ ἡμέρας ἢ νυκτὸς ἡ δίκη ποτὲ
τῷ δυσσεβοῦντι, σῖγ᾽ ἔχουσ᾽, ἐνήλατο.

11

Τὸ μὴ δίκαιον ἔργον οὐ λήθει θεούς.

12

Δαίμων βροτοῖσι πόλλ᾽ ἀνευρίσκει κακά.

13 [Ἡσιόδου Ἔργ. 704.]

Εὖ δ᾽ ὄπιν ἀθανάτων μακάρων πεφυλαγμένος εἶναι.

14 Εὐριπίδης Μεναλίππῃ [Fr. 12.]

Δοκεῖτε πηδᾶν τἀδικήματ᾽ εἰς θεοὺς
πτεροῖσι, κἄπειτ᾽ ἐν Διὸς δέλτου πτυχαῖς

5.

[a] πεφύκῃ rescripsi ex Euripide pro πέφυκε. HEER.

6.

[a] γ᾽ ὅπως] Sic Grotius. πῶς A. qui v. seq. κατασκόπους βλέπει.

8.

[a] Fr. 8. Vid. not. ad Floril. V. 8.

9.

[a] καίπερ ὢν πόρρω] Forte καὶ πόρρω περ ὢν, vel cum Husckio καίπερ ὢν πρόσω.

10.

[a] ὑπεργεγὼς] Nescio quis ὑπεργέμων.

[110] γράφειν τιν' αὐτὰ, Ζῆνα δ' εἰσορῶντά νιν
θνητοῖς δικάζειν; Οὐδ' [a]ὁ πᾶς ἂν οὐρανὸς
Διὸς γράφοντος τὰς βροτῶν ἁμαρτίας
ἐξαρκέσειεν, οὐδ' ἐκεῖνος ἂν σκοπῶν
πέμπειν ἑκάστῳ ζημίαν· ἀλλ' ἡ δίκη
ἐνταῦθα πού 'στιν ἐγγὺς, εἰ βούλεσθ' ὁρᾶν.
[b]Ταύτας μὲν ἀνθρώποισιν, ὦ γύναι, θεοὶ
[c]τίσεις διδοῦσιν, οὓς ἂν ἐχθαίρωσ', ἐπεὶ
οὔ σφιν πονηρόν ἐστιν.

15 Εὐριπίδης [a]Φρίξῳ [Fr. 8.]

[b]Ὅστις δὲ θνητῶν [c]οἴεται τοὐφ' ἡμέραν
κακόν τι πράσσων τοὺς θεοὺς λεληθέναι,
[112] δοκεῖ πονηρὰ, [d]καὶ δοκῶν ἁλίσκεται
ὅτ' ἂν σχόλην ἄγουσα [e]τυγχάνῃ Δίκη,
τιμωρίαν ἔτισεν ὧν ἦρξεν κακῶν.

16

[a]Ὀξὺς θεῶν ὀφθαλμὸς [b]εἰς τὰ πάντ' ἰδεῖν.

17

Ἔσθ', ὡς ἔοικεν, ἔστιν οὐχ [a]ὁρώμενον
τοῖς ζῶσιν ἡμῖν οὐδὲ προσδοκώμενον
[b]δαιμόνιον, ᾧ μέλει τὶ τοῦ θνητοῦ βίου.

18 [Εὐριπίδου Elect. 953.]

Δίκην δέδωκας· [a]ὧδέ τις κακοῦργος ὢν

14.

[a] ὁπωσοῦν] ὁποσοῦν A. ὁ πᾶς οὖν Canteri marg. ὁ πᾶς ἂν Grotius.

[b] ταύτας] αὔτας V. A.

[c] τίσεις] Sic em. Grotius. τοῖσι A. Cant.

15.

[a] φρίζω A.

[b] Ὅτι δὲ βροτῶν] Ὅστις δὲ θνητῶν V. A.

[c] οἴεται] οἴετε A.

[d] καὶ δοκῶν] Sic Grotius. κἀδικῶν A. κ' ἀδίκων Cant.

[e] τυγχάνῃ] τυγχάνει A. Cant.

16.

[a] Ὀξὺς] Εὐθὺς V.

[b] ἐς] εἰς A. Cant. fr. seq. ἑστὼς A. ἑστὼς Cant.

17.

[a] ὁρώμενον] ὁρώμενος et mox προσδοκώμενος V. add. δαιμόνιον—βίου· δίκην δέδωκας V. A.

[b] δαιμόνιον] vs. accessit ex V. A. E. μέλλει τί A. pro μέλει τὰ quod ed. Heeren.

18.

[a] ὧδε τίς κακοῦργος ὢν] Sic Eurip.

μή μοι, τὸ πρῶτον [b]βῆμ' ἐὰν δράμῃ [c]καλῶς,
[114] νικᾶν δοκείτω τὴν δίκην, πρὶν ἂν [d]πέλας
γραμμῆς [e]ἵκηται, καὶ τέλος κάμψῃ βίου.

19 [a]Διονυσίου.

Ὁ τῆς Δίκης ὀφθαλμὸς, ὡς δι' ἡσύχου p. 9.
λεύσσων προσώπου, πάνθ' [b]ὅμως ἀεὶ βλέπει.

20 Σοφοκλῆς [a]Αἴαντι [758.]

Τὰ γὰρ περισσὰ [b]κἀνόνητα σώματα
[c]πίπτειν βαρείαις πρὸς θεῶν δυσπραξίαις
ἔφασχ' ὁ μάντις, ὅστις ἀνθρώπου φύσει
βλαστὼν, ἔπειτα μὴ κατ' ἄνθρωπον φρονῇ.

21 Εὐριπίδου [Fr. 2.]

[a]Οὔτοι προσελθοῦσ' ἡ Δίκη σε πώποτε
παίσει πρὸς ἧπαρ, οὐδὲ τῶν ἄλλων βροτῶν
[116] τὸν ἄδικον, ἀλλὰ [b]σῖγα καὶ [c]βραδεῖ ποδὶ
[d]στείχουσα, μάρπτει τοὺς κακοὺς ἀεὶ βροτῶν.

22 Θεοδέκτου.

Ὅστις δὲ θνητῶν μέμφεται τὰ θεῖ', ὅτι
οὐκ εὐθὺς, ἀλλὰ τῷ χρόνῳ μετέρχεται
τοὺς μὴ δικαίους, πρόφασιν εἰσακουσάτω·
εἰ μὲν [a]γὰρ αὐτίκ' ἦσαν αἱ τιμωρίαι,

ὥστε τῆς ἐπικουρίας Cant. ὥστε τῆς ἐπιρουρίας A.

[b] βῆμα ἂν] βῆμ' ἐὰν V. A.

[c] καλῶς] κακῶς A.

[d] πέλας] Sic Eurip. τέλος A. Cant.

[e] ἵκηται] ἵκοιτε V. A.

19.

[a] Διονυσίου] Sic V. apud Heeren. Deest titulus A. Cant. Mox νεύσσων et ὁμοίως A.

[b] ὅμως] ὁμοίως A.

20.

[a] Αἴαντι] Βίαντι A.

[b] κ' ἀνόνητα σώματα] κᾳνώνητα σώματος V.

[c] πίπτειν] πίπτεν V. Tum βαρείαι A. Mox φύσιν Soph.

21.

[a] οὔτοι] Sic Grotius. οὔτι A.

[b] σῖγα] Sic Grotius. σιγῇ A.

[c] βραδεῖ ποδὶ] βραδύποδι V.

[d] στείχουσ' ἁμάρτει] στείχουσα μάρπει V. A.

22.

[a] γὰρ αὐτίκ'] γὰρ παρ' αὐτίκ' A. Cant. γὰρ αὐτίκ' V.

πολλοὶ διὰ φόβον, [b]κοὐ δι᾽ εὐσεβῆ τρόπον
[118] θεοὺς ἂν [c]ηὔξαντο· νῦν δὲ τῆς τιμωρίας
[d]ἄπωθεν οὔσης, τῇ φύσει χρῶνται βροτοί.
ὅταν δὲ [e]φωραθῶσιν, ὀφθέντες κακοὶ,
τίνουσι ποινὰς ὑστέροισιν [f]ἐν χρόνοις.

23 [a]Εὐριπίδου [Ἀνδρομέδας 29.]

Τήν τοι Δίκην λέγουσι παῖδ᾽ εἶναι Διὸς,
ἐγγύς τε ναίειν τῆς βροτῶν τιμωρίας.

24 Αἰσχύλου [Fr. 267.]

Δράσαντι γὰρ [a]τοι καὶ παθεῖν ὀφείλεται.

25 [a]Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ [15.]

[b]Δίκα τοι δίκα χρόνιος, ἀλλ᾽ ὅμως
ὑποπεσοῦσ᾽ ἔλαθεν, ὅταν ἔχῃ
τιν᾽ ἀσεβῆ βροτῶν.

26 [a]Αἰσχύλου [Fr. 268.]

[b]Τό τοι κακὸν ποδῶκες ἔρχεται βροτοῖς.

27

[120] [a]Καὶ τἀμπλάκημα τῷ περῶντι τὴν θέμιν.

28

Ὁρᾷς Δίκην ἄναυδον, οὐχ ὁρωμένην

---

b καὶ οὐ δι᾽] καὶ οὐκ εὐσεβῆ V.

c ἂν ηὔξατο] ἂν ηὔξαντο V. A. ἂν ηὖξον Welckerus in Bergkii Diar. 1844. p. 13. σέβοιντ᾽ ἂν ed. Heeren.

d ἄπωθεν] ἄποθεν V. A.

e φωρασθῶσιν] φωραθῶσιν A. Cant.

f ἂν] ἐν V. A.

23.

a Εὐριπίδου] Euripidi sine fabulæ nomine tribuere videtur A. ubi ad latus vers. seq. apponitur ἀνδρομάχ. In eodem codice n. 24. cum n. 23. arcte jungitur.

24.

a τοι] τι A.

25.

a Εὐριπίδου] Αἰσχύλου A.

b Δίκα τοι δίκα] νικᾷ τοι δίκα etc. V.

26.

a Αἰσχύλου] Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ A. Æschylo assignat Theophilus ad Antolyc. II. p. 257. ed. Wolf. Ceterum fr. 26—30. conjuncta exhibentur in A. et Theophilo.

b τὸ] τῷ V. A.

27.

a καὶ τ᾽] κεῖτ᾽ Heerenius cum Grotio.

εὕδοντι καὶ στείχοντι καὶ καθημένῳ·
ἑξῆς δ' [a]ὁπηδεῖ δόχμιον, ἄλλοθ' ὕστερον.

29

[a]Οὐδὲν καλύπτει τῶν κακῶς εἰργασμενων,
ὅ τι δ' ἂν ποιῇς ἀεὶ νόμιζ' ὁρᾶν τινάς.

30

[122] Ἐχθρὸς μὲν ἀνὴρ, ἀλλὰ τὴν δίκην σέβω.

31 Ὁμήρου [Od. ξ'. 83.]

Οὐ γὰρ σχέτλια ἔργα θεοὶ μάκαρες φιλέουσιν,
ἀλλὰ δίκην [a]τίνουσι, καὶ ἴσασιν ἔργ' ἀνθρώπων.

32 [Sophocl. Fr. 763.]

Ἀεὶ γὰρ εὖ πίπτουσιν οἱ Διὸς κύβοι.

33 Εὐριπίδου [a]Ἀντιόπῃ [Fr. 16.]

[b]Τήν τοι Δίκην λέγουσι παῖδ' εἶναι Χρόνου,
δείκνυσι δ' ἡμῶν ὅστις [c]ἐστὶ μὴ κακός.

34 [[a]Ἀρχιλόχου.]

Ὦ Ζεῦ, πάτερ [b]Ζεῦ, σὸν μὲν οὐρανοῦ κράτος,
σὺ δ' ἔργ' ἐπ' ἀνθρώπων ὁρᾷς
[124] [c]λεωργὰ κἀθέμιστα, σοὶ δὲ θηρίων
ὕβρις τε καὶ δίκη μέλει.

35 Εὐριπίδης Ἀρχελάῳ [Fr. 25.]

[a]Τὰ γὰρ οὐκ ὀρθῶς πρασσόμεν' ὀρθῶς

28.

a ὀπηδεῖ—ἄλλοθ'] ὀπηδεῖ—ἄλλο δ' A. ὀπάζει—ἄλλο δὲ mss. Theophili ap. Wolf.

29.

a οὐδὲν] Mss. Theophili ap. Wolf. οὐδ' ἐγκαλύπτει νὺξ κακῶς εἰργασμένων, Ὅ τι ἂν ποιῇς δεινὸν, νόμιζε ὁρᾶν τινα.

31.

a τίνουσι] τίουσι A. Mox reponendum ex Hom. αἴσιμα pro ἴσασιν.

33.

a Ἀντιόπῃ] ἀντιόπ^ο A.

b τὴν δίκην] τήν τοι δίκην V. A.

c ἔστι κακ.] ἔστι μὴ κακὸς V. A. ἔστ' ἢ μὴ Dindorf.

34.

a Ἀρχιλόχου] Αἰσχύλου A. et sic Farn. cod. apud Canter, addito μή. Archilochi esse docet Clemens Alex. Strom. V. p. 609.

b Ζεῦ σὸν μὲν] Sic Grot. Ζεῦ μὲν A. ζεὺς μὲν Cant. Mox σὺ δέ γ' ἐπ' A.

c λεωργὰ καθέμιστα] λέοργα καθέμιστᾶς οἱ A. λεοργὰ κ' ἀθέμιτας Cant. In fine μέλλει A.

35.

a τὰ γὰρ] Ad latus hujus fr.

τοῖς πράσσουσιν κακὸν ἦλθε.

36 [Σοφοκλῆς Electr. 696.]

Καὶ ταῦτα μὲν τοιαῦθ', ὅταν δέ τις θεῶν
[a]βλάπτῃ, δύναιτ' ἂν οὐδ' ἂν ἰσχύων φυγεῖν.

37 Σοφοκλῆς Αἴαντι [Fr. 11.]

Τὸ χρύσεον δὲ [a]τῆς Δίκης
δέδορκεν ὄμμα, τὸν δ' ἄδικον ἀμείβεται.

38 Ἡσιόδου Θεογονίας [217.]

Καὶ Μοίρας καὶ Κῆρας ἐγείνατο [a]νηλεοποίνους,
αἵ τ' ἀνδρῶν τε [b]θεῶν τε παραιβασίας ἐφέπουσαι
[126] οὐδέποτε [c]λήγουσι θεαὶ δεινοῖο χόλοιο,
[d]πρίν γ' [e]ἀπὸ τῷ δώωσι κακὴν ὄπιν ὅστις ἁμάρτῃ.

39 [a]Εὐριπίδης Πολυείδῳ.

Οὐδεὶς παρανομῶν πρὸς θεοὺς ἐχέγγυος.

40 [Εὐριπίδου Fr. 3.]

Συγγνώμονάς τοι τοὺς θεοὺς εἶναι [a]δοκεῖς
ὅταν τις [b]ὅρκῳ θάνατον ἐκφυγεῖν θέλῃ,
ἢ δεσμὸν ἢ βίαια πολεμίων κακά,
ἢ παισὶν αὐθένταισι κοινωνῇ δόμων;
ἦ τἄρα θνητῶν εἰσιν ἀσυνετώτεροι,
[c]εἰ τἀπιεικῆ πρόσθεν ἡγοῦνται δίκης.

41
[128] [a]Μόνη 'στιν ἀπαραίτητος ἀνθρώποις δίκη.

'Αντιλόχου ponit A. quod ex 'Αρχιλόχου corruptum existimo, et ad præcedens fr. pertinere.

36.

a βλάπτῃ—φυγεῖν] βλάπτειν—φύγοι A. Cant.

37.

a τῆς δίκης] τὰς δίκας A. Cant.

38.

a ἠλεοποίνους] κλεοποίνους A. V.

b θεῶν τε] τε om. A. qui mox ἐφέπουσ' ἀεὶ, ubi ἐφέπουσαι Cant.

c λήγουσι] λήγουσαι A. V.

d πρίν γ'] πρὶν ἂν V. A.

e ἀπὸ τῷ δώωσι] ἀποδώωσι A.

39.

a εὐριπ$\overset{\rho}{\text{ό}}$ πηλυ$\overset{\delta}{\text{ε}}$ί A.

40.

a δοκεῖ] δοκεῖς Valckenær.

b ὅρκῳ] ὅρκον A.

c εἰ] ἢ A.

41.

a μόνη ἐστιν] μόνοις τϊν' A. qui

42

[a] Μὴ μουσοποίει πρὸς τὸ νηπιώτερον·
πόρρω γὰρ ἑστὼς ὁ θεὸς ἐγγύθεν κλύει.

43

Ὅστις λέγει [a] κακὰ φρονῶν, σιγῇ στένει.

44

Ἄγει τὸ θεῖον τοὺς κακοὺς πρὸς τὴν δίκην.

45

Τὸ δὲ θεῶν κράτος μέγα κατ' ἀνθρώπους,
[a] ἄφρονες δ' ὁπόσοι τὸ δίκαιον ἄγουσ'
ὑπὸ [b] τᾶς ἀδίκου βιοτᾶς,
[c] μέγα γὰρ ὄμμα δαιμόνων, οἷς
τίνουσ' ἀμοιβὰς κακῶν.

46 Ὁμήρου [Il. π'. 386.]

[130] Καὶ [a] Ζεὺς τ' ἄνδρεσσι κοτεσσάμενος χαλεπήνῃ
οἳ βίῃ εἰν ἀγορῇ σκολιὰς κρίνωσι θέμιστας.

47

Δοκεῖς τὰ θεῶν [a] σὺ ξυνετὰ νικήσειν ποτε,
καὶ τὴν δίκην που [b] μάκρ' ἀπῳκίσθαι βροτῶν;
ἡ δ' ἐγγύς ἐστιν· οὐχ ὁρωμένη δ' ὁρᾷ,
ὃν χρὴ κολάζειν τ' οἶδεν, ἀλλ' οὐκ οἶσθα σὺ
ὁπόταν [c] ἄφνω μολοῦσα διολέσῃ κακούς.

mox ἀνθρώποις ubi Heeren. ed. θνητοῖς.

42.

[a] μὴ μουσοποίει] μηδὲν σὺ ποίει Grotius, μήπου σὺ ποίει Heeren.

43.

[a] κακὰ] κακᾶν A. An leg. κάκ' ἀφρονῶν?

45.

[a] Ἄφρονες] Novi fr. initium in A. V. E.

[b] τᾶς ἀδίκου βιοτᾶς] τὰς ἀ. βιωτὰς A. qui om. ἀφανὲς post βιωτάς.

[c] μέγα καὶ] μέγα γὰρ A.

46.

[a] Ζεὺς τοῖς] Ζεὺς τ' A. qui in fin. χαλεπήνῃ non χαλεπαίνει. Idem mox ἐν ἀγορῇ.

47.

[a] σὺ ξ. νικῆσαι] σὺ om. A. qui deinde νικήσειν.

[b] μακρ' ἀποικεῖσθαι] μακρὰν ἀποικεῖσθαι A.

[c] ἀμφωμολοῦσα] Sic V. A. E. ἄφνω μολοῦσα Grotius.

48 [a]Σοφοκλῆς Αἴαντι [Fr. 11.] 42

Εἰ δείν' ἔδρασας δεινὰ καὶ παθεῖν σε δεῖ.
Δίκας δ' ἐξέλαμψεν ὅσιον φάος.

49 Δημοσθένους [p. 20, 27.]

[a]Οὐ γάρ ἐστιν, [οὐκ ἔστιν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι,] ἀδι-
[132] κοῦντα, καὶ ἐπιορκοῦντα, καὶ ψευδόμενον δύναμιν βεβαίαν 45
κτήσασθαι. [b]Ἀλλὰ τὰ τοιαῦτα εἰς μὲν ἅπαξ καὶ βραχὺν χρόνον ἀντέχει· καὶ σφόδρα γε ἤνθησεν ἐπὶ ταῖς ἐλπίσιν, ἂν τύχῃ· τῷ χρόνῳ δὲ φωρᾶται, καὶ περὶ αὑτὰ καταρρεῖ.

50 Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου Ἀπομνημονευμάτων.

Ἀλλ' ὁρῶ, φησί [a]τις, τοὺς καλοὺς καὶ ἀγαθοὺς καὶ λιμῷ καὶ ῥίγει ἀπολλυμένους· τοὺς δὲ μὴ καλοὺς καὶ μὴ ἀγαθοὺς οὐχ ὁρᾷς τρυφῇ καὶ ἀλαζονείᾳ καὶ ἀπειροκαλίᾳ ἀπολλυμένους; Ἀλλ' αἰσχρὸν τὸ παρ' ἄλλου τρέφεσθαι; [b]Καὶ τίς, ὦ κακόδαιμον, αὐτὸς ἐξ ἑαυτοῦ τρέφεται ἄλλος γε ἢ ὁ κόσμος; Ὅστις γοῦν ἐγκαλεῖ [c]τῇ προνοίᾳ ὅτι οἱ πονηροὶ οὐ διδόασι δίκην, ὅτι ἰσχυροί εἰσι καὶ πλούσιοι, ὅμοιόν τι δρᾷ ὥσπερ εἰ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀπολωλεκότων αὐτῶν ἔλεγε μὴ δεδωκέναι δίκην αὐτούς, ὅτι οἱ ὄνυχες ὑγιεῖς εἶεν. Ἐγὼ μὲν γάρ φημι [d]πολὺ ἂν διαφέρειν μᾶλλον ἀρετὴν κακίας, ἢ ὀφθαλμοὶ ὀνύχων διαφέρουσιν.

51 [Ἡροδότου V. 56.]

[134] Ἐν τῇ προτέρῃ νυκτὶ τῶν Παναθηναίων [a]ἐδόκεε ὁ Ἵππαρ-

48.

[a] Σοφοκλῆς Αἴαντι] Deest tit. A. Αἴαντι tantum Canterus.

49.

[a] Οὐ γάρ—Ἀθηναῖοι] ἀλλὰ γάρ ἐστιν A. οὐ γάρ ἐστιν Cant. καὶ ψ. in A. post κτήσασθαι.

[b] Ἀλλὰ om. A. qui mox ἤλπισεν pro ἤνθησεν et ἐὰν pro ἄν.

50.

[a] τις] τοὺς A.

[b] Καὶ τίς—τρέφεται om. A.

[c] τῇ] καὶ τῇ A. qui infra ὥσπερ εἰ.

[d] πολὺ ἂν] Omnes codd. πολὺ αἴ, quod vel ex πολὺ ἂν vel ex πολὺ δὴ ortum est. HEEREN. An πολὺ νὴ Δία?

51.

[a] ἐδόκεε ὁ Ἵππαρχος] ἐδώκεεν ὁ ὕπαρχος A. et mox αἰνίττεσθαι et λέγων ἄ. παθῶν—ἀδικέων δίκην.

χος ἄνδρα οἱ ἐπιστάντα μέγαν καὶ εὐειδέα αἰνίσσεσθαι τάδε τὰ ἔπεα·

Τλῆθι λέων ἄτλητα παθὼν τετληότι θυμῷ·
οὐδεὶς ἀνθρώπων ἀδικῶν τίσιν οὐκ ἀποτίσει.

52 Ἑρμοῦ.

Δαίμων γάρ τις μεγίστη τέτακται, ὦ τέκνον, ἐν μέσῳ τοῦ παντὸς εἱλουμένη, πάντα περ ὁρῶσα τὰ ἐπὶ γῆς γινόμενα ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων. [a] Καθάπερ οὖν ἐπὶ τῆς θείας τάξεως ἡ πρόνοια καὶ ἀνάγκη τέτακται, τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ ἐπὶ τῶν ἀνθρώπων τέτακται ἡ δίκη, ταυτὰ ἐκείνοις ἐνεργοῦσα. [b] Ἐκείνη μὲν γὰρ κρατεῖ τὴν τάξιν τῶν ὄντων ὡς θείων, καὶ ἁμαρτεῖν μὴ θελόντων μηδὲ δυναμένων. Ἀδύνατον γὰρ τὸ θεῖον πλανηθῆναι, ἐξ οὗ καὶ τὸ ἀναμαρτεῖν
[136] συμβαίνει. Ἡ δὲ δίκη τέτακται τιμωρὸς τῶν ἐπὶ γῆς ἁμαρτανόντων ἀνθρώπων. Γένος γὰρ ἅτε θνητὸν ὂν καὶ ἐκ κακῆς ὕλης [c] συνεστὸς, καὶ μάλιστα ἐκείνοις συμβαίνει τὸ ὀλισθαίνειν, οἷς θεοπτικὴ δύναμις οὐ πρόσεστι. Τούτων δὲ καὶ μάλιστα ἐπικρατεῖ δίκη. Καὶ τῇ εἱμαρμένῃ [d] ὑπό- 46
κεινται διὰ τὰς τῆς γενέσεως ἐνεργείας, τῇ δὲ δίκῃ διὰ τὰς ἐν τῷ βίῳ ἁμαρτίας.

53 Ἱεροκλέους ἐκ τοῦ Τίνα τρόπον θεοῖς χρηστέον.

Ἔτι προσδιαληπτέον καὶ [a] ταῦθ' ὑπὲρ τῶν θεῶν, ὡς εἰσὶν ἄτρεπτοι καὶ ἀραρότες τοῖς κρίμασιν, ὥστε τοῦ δόξαντος μηδέποτε ἀπ' ἀρχῆς ἐξίστασθαι. Μία γάρ τις ἦν τῶν 50
ἀρετῶν καὶ ἡ [b] ἀμεταπτωσία καὶ [c] ἡ βεβαιότης, ἣν εἰκὸς οὐχ ἥκιστα κἂν θεοῖς εἶναι παρέχουσαν τὸ ἱδρυμένον καὶ ἔμπεδον τῶν ἅπαξ αὐτοῖς δοξάντων. Ἐξ οὗ [d] δῆλον, ὡς

52.

[a] Καθάπερ οὖν] οὖν om. A. item ἡ ante πρόνοια.
[b] Ἐκείνη] ἐκεῖνα A.
[c] συνεστὸς] συνεστὼς A.
[d] ὑπόκεινται] Sic A. ὑπόκειται Cant.

53.

[a] ταῦτα περὶ] ταῦθ' ὑπὲρ V. A.
[b] ἀμεταπτ.] μεταπτωσία A.
[c] ἡ βεβ.] ἡ om. A. qui mox ἔμποδον.
[d] δῆλον] δηλὸς V.

οὐδὲ τὰς κολάσεις, ἃς ἔκρινέ τισιν [c]ἐπιθεῖναι τὸ δαιμόνιον, 55
πιθανὸν παρίεσθαι. Καὶ γὰρ [f]αὖ λογίσασθαι ῥᾴδιον, ὡς εἰ μεταβάλλουσιν οἱ θεοὶ τὰς αὐτῶν κρίσεις, [g]καὶ ὃν ἔγνωσαν κολάσαι παρίασιν ἀκόλαστον, οὔτε [h]καλῶς καὶ
[138] δικαίως [i]διοικοῖεν τὰ κατὰ τὸν κόσμον, οὔτε ἀπολογισμὸν εἰκότα φέρειν ἂν [k]δύναιντο μετανοίας. Καὶ τὰ p. 10
τοιαῦτα ἔοικεν αὐτοσχεδίως καὶ μετ' οὐδενὸς λέγειν ἡ ποιητική·

> [l]Καὶ θυσίαισι καὶ εὐχωλῇς ἀγανῇσι,
> λοιβῇ τε κνίσσῃ τε παρατρωπῶσ' ἄνθρωποι
> λισσόμενοι, ὅτε [m]κέν τις ὑπερβαίῃ καὶ ἁμάρτῃ.

Καὶ τὸ,

> στρεπτοὶ δέ τε καὶ θεοὶ αὐτοί.

Συνόλως τε πᾶν εἴ τι τούτοις εἴρηται παραπλησίως.

54 Ἐν ταὐτῷ.

Ἀλλ' οὐ μὲν οὐδὲ ἐκεῖνο παρετέον, ὡς, εἰ καὶ μὴ κακῶν [a]τυγχάνουσιν οἱ θεοὶ αἴτιοι, τῶν γε τοιούτων ἔνια προσάπτουσί τισι, καὶ περιβάλλουσιν ἀξίους σωματικαῖς τε [b]ἐλαττώσεσι καὶ ταῖς τῶν ἐκτὸς, [c]οὐ κακοηθείᾳ χρώμενοι, κἀξεπίτηδες δυσχρηστίαις ἄνθρωπον οἰόμενοι δεῖν, ἀλλ' ἐν τρόπῳ κολάσεως. Καθάπερ γὰρ λοιμοὶ καὶ αὐχμοὶ, ἔτι δὲ [d]ἐπομβρίαι καὶ σεισμοὶ, καὶ πᾶν τὸ τοιόνδε, τὰ μὲν πολλὰ [e]γίγνεται δι' αἰτίας ἑτέρας τινὰς φυσικωτέρας, ἔστι δ' ὅτε καὶ ὑπὸ θεῶν, ἐπειδ' ἂν καιρὸς ᾖ δημοσίᾳ καὶ [f]κοινῇ τὰ πολλῶν ἀμπλακήματα κολασθῆναι, τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ

c ἐπιθεῖναι] ἐπιθῆναι V.
f ἂν] αὖ V. A.
g καὶ ὧν] καὶ ὃν V. A.
h καὶ post καλῶς deest V.
i διοικοῖεν] διοικῶεν A.
k δύναιτο] δύναιντο V. A.
l Loca Homeri exstant alter Il. ι'. 495—497. ubi καὶ τοὺς μὲν θυέεσσι. alter ibid. v. 493.
m κεν] μέν A.

54.
a αἴτιοι τ. οἱ θεοὶ] τ. οἱ θεοὶ αἴτιοι A.
b ἐλάττωσι] ἐλαττώσεσι V. A.
c οὐ om. A.
d ἐπομβρίαι] ἐπϊβρίαι A.
e γίνεται δι' ἑτέρας αἰτίας A.
f κοινῶν] κοινῇ V. A.

[140] πρὸς ἕνα χρῶνταί ποτε θεοὶ σωματικοῖς ἐλαττώμασι καὶ τοῖς ἐκτὸς, αὐτοῦ μέντοι κόλασιν, [g]ἐπιστροφὴν δὲ καὶ προαίρεσιν ἀμείνω τῶν ἄλλων.

55 Πλάτωνος Νόμων [p. 716.]

Ὁ θεὸς μὲν δὴ (ὥσπερ καὶ ὁ παλαιὸς λόγος) ἀρχήν τε καὶ τελευτὴν καὶ μέσα τῶν ὄντων ἁπάντων ἔχων, εὐθέα περαίνει κατὰ φύσιν περιπορευόμενος, τῷ δ' ἀεὶ ξυνέπεται δίκη τῶν ἀπολειπομένων τοῦ θείου νόμου τιμωρός· ἧς, ὁ μὲν εὐδαιμονήσειν μέλλων, ἐχόμενος, ξυνέπεται ταπεινὸς καὶ κεκοσμημένος· ὁ δέ τις ἐξαρθεὶς ὑπὸ μεγαλαυχίας, ἢ χρήμασιν ἐπαιρόμενος, ἢ τιμαῖς, ἢ καὶ σώματος εὐμορφίᾳ, ἅμα νεότητι καὶ ἀνοίᾳ, φλέγεται τὴν ψυχὴν μεθ' ὕβρεως, ὡς οὔτ' ἄρχοντος, οὔτε τινὸς ἡγεμόνος δεόμενος, ἀλλὰ καὶ ἄλλοις ἱκανὸς ὢν ἡγεῖσθαι, καταλείπεται ἔρημος θεοῦ· καταλειφθεὶς δὲ, καὶ ἔτι ἄλλους τοιούτους προσλαβὼν, σκιρτᾷ ταράττων πάνθ' ἅμα· καὶ πολλοῖς τισὶν ἔδοξεν εἶναί τις, μετὰ δὲ χρόνον οὐ πολὺν ὑποσχὼν τιμωρίαν οὐ μεμπτὴν τῇ δίκῃ, ἑαυτόν τε καὶ οἶκον καὶ πόλιν ἄρδην ἀνάστατον ἐποίησεν.

Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ί. [p. 905.]

[a]Ὅτι μὲν γὰρ θεοί τε εἰσὶ καὶ ἀνθρώπων ἐπιμέλονται, ἔγωγε οὐ παντάπασι φαύλως ἂν ἡμῖν φαίην ἀποδεδεῖχθαι· τὸ δὲ παραιτητοὺς αὐτοὺς εἶναι τοῖς ἀδικοῦσι, δεχομένους δῶρα, οὔτε τινὶ συγχωρητέον, παντὶ δ' αὖ κατὰ δύναμιν τρόπῳ ἐλεγκτέον. Κάλλιστ' εἶπες· ποιῶμέν τε ὡς λέγεις. Φέρε καὶ πρὸς θεῶν αὐτῶν, τίνα τρόπον παραιτητοὶ γίγνοιντ' ἂν ἡμῖν, εἰ γίγνοιντο αὖ; καὶ τίνες ἢ ποῖοί τινες ὄντες; ἄρχοντας μὲν ἀναγκαῖόν που γίγνεσθαι τούς [b]γε διοικήσαντας τὸν ἅπαντα ἐνδελεχῶς οὐρανόν. Οὕτως.

[g] Post ἐπιστροφὴν δὲ καὶ add. προαίρεσιν ἀμείνω τῶν ἄλλων V. A.

[a] ὅτι] ἔτι A.

[b] γε] τε A.

Ἀλλ' ἆρα τίσι προσφερεῖς τῶν ἀρχόντων; ἤ τινες [a]τούτοις, ὧν δυνατὸν ἡμῖν ἀπεικάζουσι τυγχάνειν μείζοσιν ἐλάττονας; πότερον ἡνίοχοι τινὲς ἂν εἶεν τοιοῦτοι ζευγῶν ἁμιλλωμένων, ἢ πλοίων κυβερνῆται; τάχα δὲ κἂν ἀπεικασθεῖεν στρατοπέδων ἄρχουσί τισιν. Εἴη δ' ἂν καὶ [b]νόσων πόλεμον εὐλαβουμένοις ἰατροῖς ἐοικέναι περὶ σώματα, ἢ γεωργοῖς περὶ φυτῶν γένεσιν, εἰωθυίας ὥρας χαλεπὰς διὰ φόβον προσδεχομένοις· ἢ καὶ ποιμνίων ἐπιστάταις. Ἐπειδὴ γὰρ ξυγκεχωρήκαμεν ἡμῖν αὐτοῖς εἶναι τὸν οὐρανὸν μεστὸν μὲν πολλῶν ἀγαθῶν, πολλῶν δὲ καὶ τῶν ἐναντίων, πλειόνων δὲ τῶν μή, μάχη δή, φαμέν, ἀθάνατός ἐστιν ἡ τοιαύτη, καὶ φυλακῆς θαυμαστῆς δεομένη. Ξύμμαχοι δὲ ἡμῖν θεοί τε ἅμα καὶ δαίμονες· ἡμεῖς δ' αὖ κτήματα θεῶν καὶ δαιμόνων· φθείρει δὲ ἡμᾶς ἀδικία καὶ ὕβρις μετὰ ἀφροσύνης, [σώζει δὲ δικαιοσύνη καὶ σωφροσύνη μετὰ φρονήσεως,] ἐν [c]ταῖς τῶν θεῶν ἐμψύχοις οἰκοῦσαι δυνάμεσιν.

Ἐν ταυτῷ [p. 906 E.]

Τίσιν οὖν δὴ τῶν προρρηθέντων ἀπεικάζων ὁμοίους εἶναι φύλακας θεούς, οὐκ ἂν καταγέλαστος γίγνοιτο ἀνθρώπων ὅστις οὖν; πότερον κυβερνήταις, λοιβῇ τε οἴνου κνίσσῃ τε παρατρεπομένοις αὐτοῖς, ἀνατρέπουσί [d]δὲ ναῦς τε καὶ ναύτας; Μηδαμῶς. Ἀλλ' οὐ μὴν ἡνιόχοις ἐν ἁμίλλῃ ξυντεταγμένοις, πεισθεῖσιν ὑπὸ δωρεᾶς τὴν νίκην ἑτέροις ζεύγεσι προδοῦναι. Δεινὴν γὰρ εἰκόνα λέγοις ἄν, λέγων τούτων τὸν λόγον. Οὐ μὴν οὐδὲ στρατηγοῖς [e]γε, οὐδ' ἰατροῖς οὐδὲ γεωργοῖς· οὐδὲ νομεῦσι μήν, οὐδὲ τισὶ κυσὶ κεκλημένοις ὑπὸ λύκων. Εὐφήμει. Πῶς γὰρ ἄν; Ἀλλ' οὐ πάντων φυλάκων εἰσὶ μέγιστοι καὶ περὶ τὰ μέγιστα ἡμῖν οἱ πάντες θεοί; Πολύ γε.

[a] τούτοις om. A. ubi mox δυνατὸς et om. ἂν.

[b] νόσον—εὐλαβουμένης A.

[c] ταῖς—ἐνψύχοις A.

[d] δὲ ναύτας καὶ A.

[e] τε A.

[d]Τοὺς δὴ κάλλιστά τε πράγματα φυλάττοντας, διαφέροντάς τε αὐτοὺς φυλακῇ πρὸς ἀρετὴν, κυνῶν χείρους καὶ ἀνθρώπων μέσον εἶναι φήσομεν, οἳ τὸ δίκαιον οὐκ ἄν ποτε προδοῖεν ἕνεκα δώρων παρὰ ἀδίκων ἀνδρῶν ἀνοσίως διδομένων; Οὐδαμῶς· οὔτε ἀνεκτὸς [e]λόγος. τῶν τε περὶ πᾶσαν ἀσέβειαν ὄντων κινδυνεύει πᾶς ὁ ταύτης τῆς δόξης ἀντεχόμενος πάντων ἂν τῶν ἀσεβῶν κεκρίσθαι δικαιότατα κάκιστός τε καὶ ἀσεβέστατος εἶναι.

56 [a]Πορφυρίου ἐκ τοῦ περὶ Στυγός.

[aa]Ἰνδοὶ οἱ ἐπὶ τῆς βασιλείας [b]τῆς Ἀντωνίνου, τοῦ ἐξ [c]Ἐμισῶν, εἰς τὴν Συρίαν [[d]ἀφικομένου] Βαρδισάνῃ τῷ ἐκ τῆς Μεσοποταμίας εἰς λόγους ἀφικόμενοι, ἐξηγήσαντο, ὡς
[142] ὁ Βαρδισάνης ἀνέγραψεν, εἶναί τινα λίμνην ἔτι καὶ νῦν παρ' Ἰνδοῖς [e]δοκιμαστηρίου λεγομένην, εἰς ἣν, ἄν τις τῶν Ἰνδῶν αἰτίαν ἔχων τινὸς ἁμαρτίας ἀρνῆται [f]. . . Τῶν δὲ Βραχμάνων τινὲς δοκιμάζουσιν [g]αὐτὸν τοῦτον τὸν τρόπον. Πυνθάνονται τοῦ ἀνθρώπου εἰ θέλει διὰ τοῦ ὕδατος γενέσθαι τὴν

d τοὶ A.

e ὁ λ.] ὁ om. A.

56.

a Hunc locum ediderunt Schottus Obs. Human. p. 229. ex ms. Ant. Augustini et Holstenius inter Opusc. Porphyrii Rom. 1630. p. 148. ex ms. Vat.

aa Ἰνδοὶ] Sic ed. Heeren. secundum marg. ms. Paris. Libri omnes ἰδού.

b τῆς Ἀντ.] τοῦ Ἀντ. Heeren. τῆς ceteri. Ἀντωνίου Cant.

c Antoninus ille est Heliogabalus, qui ex Emesa urbe ortus, cum imperium adeptus esset, ab Antonino imperatore nil praeter nomen assumsit. Ἐμεσῶν legunt codd. V. E. Vulgare urbis nomen Ἔμισα vel Ἔμεσα. cf. Steph. Byz. h. v. et Cellar. Notit. orb. ant. vol. II. p. 255. HEEREN. ἐμισῶν A.

d Vocem ἀφικουμένου uncinis inclusi, quod eam ex contextu ejiciendam puto. Bis scilicet scripta est vitio librarii, statim enim iterum sequitur ἀφικόμενοι. Legebatur in codd. τοῦ ἐκ Ἐμισ. ε. τ. Συρίαν ἀφικόμενου, quod jam per se ridiculum est, cum Emesa urbs in ipsa Syria sita esset. HEEREN.

e δοκιμαστηρίου] δοκιμαστηρίον A. qui infra τινὲς pro τινός.

f Desideratur hic verbum ad quod priora referri possint, etsi in codd. nullum lacunae signum additum sit. Supplendum est καταβαίνῃ δοκιμασθησόμενος, vel simile quid. HEEREN.

g αὐτὸν] αὐτὸ A.

ἐξέτασιν, καὶ μὴ [h] θέλοντα μὲν ὡς ὑπεύθυνον ἀποπέμπουσι, τὴν δίκην ἀποτίσοντα· [i] παραδεχόμενον δὲ τὴν βάσανον
[144] εἰσάγουσι μετὰ τῶν κατηγόρων· καταβαίνουσι γὰρ καὶ οὗτοι εἰς τὸ ὕδωρ, δοκιμασθησόμενοι μὴ συκοφαντῶσιν. Διέρχονται τοίνυν οἱ ἐπιβαίνοντες τοῦ ὕδατος εἰς ἕτερον μέρος τῆς λίμνης· τὸ βάθος δ' [k] ἐστὶν ἄχρι τῶν γονάτων παντὸς [l] ὁτουοῦν εἰς αὐτὴν [m] ἐπιβαίνοντος. Ὅταν δὲ κατηγορούμενος ἐπιβῇ, ἀναμάρτητος μὲν ὢν, ἀδέως διέρχεται ἄχρι τῶν γονάτων ἔχων τὸ ὕδωρ· ἁμαρτῶν δὲ, ὀλίγον προβὰς, βαπτίζεται μέχρι κεφαλῆς. Οἱ δὲ Βραχμᾶνες ἀνασπῶντες αὐτὸν ἐκ τοῦ ὕδατος παραδιδόασι τοῖς [n] ἐνάγουσι ζῶντα, καὶ ἀξιοῦσι παιδευθῆναι χώρις θανατικῆς καταδίκης. Γίγνεσθαι δὲ τοῦτο σπανίως, [nn] τῷ μηδένα τολμᾶν ἀρνεῖσθαι τὸ ἁμάρτημα διὰ τὸν ἐκ τοῦ ὕδατος ἔλεγχον [o] γενόμενον. Ἑκουσίων τοίνυν ἁμαρτημάτων δοκιμαστήριον Ἰνδοὺς τοῦτ' ἔχειν τὸ ὕδωρ· ἀκουσίων δὲ [p] ὁμοῦ καὶ ἑκουσίων, καὶ ὅλως ὀρθοῦ βίου, ἕτερον εἶναι, περὶ οὗ ὁ Βαρδισάνης τάδε γράφει· θήσω γὰρ [q] τἀκείνου κατὰ λέξιν· Ἔλεγον δὲ καὶ σπήλαιον εἶναι αὐτόματον, μέγα, ἐν ὄρει [r] ὑψηλοτάτῳ σχεδὸν κατὰ μέσον τῆς γῆς, ἐν ᾧ σπηλαίῳ ἐστὶν ἀνδριὰς, ὃν εἰκάζουσι πηχῶν
[146] δέκα ἢ δώδεκα, ἑστὼς ὀρθὸς, ἔχων τὰς χεῖρας ἡπλωμένας ἐν τύπῳ σταυροῦ· καὶ τὸ μὲν δεξιὸν τῆς ὄψεως αὐτοῦ ἐστιν ἀνδρικὸν, τὸ δ' εὐώνυμον θηλυκόν· ὁμοίως δὲ καὶ ὁ βραχίων ὁ δεξιὸς, καὶ ὁ δεξιὸς ποῦς, καὶ ὅλον τὸ μέρος ἀρσενικὸν,

[h] θέλοντα recte dedit Holsten. pro θέλοντος. HEEREN. θέλον^τ i. e. θέλοντα A.

[i] παραδεχόμενον] περιδεχόμενον A.

[k] ἐστὶ μέχρι] ἐστὶν ἄχρι A. V.

[l] ὁτουοῦν] Sic A. οὕτως V.

[m] καταβαίνοντος] ἐπιβαίνοντος A.

[n] ἐνάγουσι, *accusantibus, deferentibus*, sic bene dedit Schottus pro ἀνάγουσι quod habent mss. HEEREN.

[nn] τῷ sic A. τὸ al.

[o] γενόμενον ἔλεγχον] ἔλεγχον γιγνόμενον A.

[p] ὁμοῦ bene addit cod. Par. in reliquis desideratur. HEEREN. Immo diserte habet A.

[q] τἀκείνου] τοὐκείνου A.

[r] ὑψηλοτάτῳ] ὑψηλωτάτω A.

καὶ τὸ εὐώνυμον θηλυκὸν, ὡς ἰδόντα τινὰ ἐκπλαγῆναι τὴν [s]σύγκρασιν, πῶς ἀδιαιρέτως ἐστὶν ἰδεῖν τὴν ἀνομοιότητα τῶν δύο πλευρῶν ἐν ἑνὶ σώματι. Ἐν τούτῳ τῷ ἀνδριάντι λέγουσι γεγλύφθαι περὶ τὸν [t]μαζὸν τὸν δεξιὸν ἥλιον, καὶ περὶ τὸν ἀριστερὸν σελήνην, καὶ [u]κατὰ τῶν δύο [x]βραχιόνων τέχνῃ γεγλύφθαι ἀγγέλων ἀριθμὸν, [y]καὶ ὅσα ἐστὶν ἐν τῷ κόσμῳ, [z]τουτέστιν οὐρανὸν καὶ ὄρη καὶ θάλασσαν, καὶ ποταμὸν [a]καὶ ὠκεανὸν, καὶ φυτὰ καὶ ζῶα, καὶ ἁπλῶς ὅσα ἐστί. Τοῦτον τὸν ἀνδριάντα φασὶ δεδωκέναι τὸν θεὸν
[148] τῷ υἱῷ, ὁπηνίκα τὸν κόσμον ἔκτιζεν, ἵνα [b]θεατὸν ἔχῃ παράδειγμα. [c]Ἐζήτησα δὲ, φησὶ, ποίας ἐστὶν ὕλης, καὶ διεβεβαιοῦτο ὁ Σανδάλης, ἐμαρτύρουν δὲ αὐτῷ καὶ οἱ ἄλλοι, μηδένα εἰδέναι ποίας ὕλης ἐστὶν ὁ ἀνδριὰς [d]ἐκεῖνος· οὔτε γὰρ χρυσεός ἐστιν, οὔτε ἀργύριος, οὔτε χάλκεος, οὔτε λίθινος, οὔτε ἄλλης ὕλης· ἀλλὰ μᾶλλον παραπλήσιός ἐστι ξύλῳ [e]στερροτάτῳ καὶ ἀσηπτοτάτῳ, μὴ εἶναι δὲ ξύλον. Προσετίθεσαν δὲ λέγοντες, ὅτι τῶν βασιλέων τις ἠθέλησεν ἀφελέσθαι τρίχα ἐκ τῶν περὶ τὸν τράχηλον αὐτοῦ, καὶ αἷμα ῥεῦσαι, καὶ φοβηθῆναι τὸν βασιλέα ἐκεῖνον, ὡς μόλις εὐξαμένων τῶν Βραχμάνων ἀνακτήσασθαι ἑαυτόν. Ἐπὶ δὲ τῇ

[s] Post σύγκρασιν est spatiolum in A. quatuor circiter litterarum.

[t] μαστὸν] μαζὸν A.

[u] κατὰ τῶν] κατὰ τὸν A.

[x] Inter βραχιόνων et τέχνῃ in codd. A. Vat. Esc. Par. spatiolum relinquitur. Excidit forte θαυμαστῇ vel simile epitheton. HEEREN.

[y] Verba καὶ ὅσα ἐστὶν ἐν τῷ κόσμῳ, τούτεστιν καὶ οὐρανὸν desiderantur apud Holstenium; solo, ut puto, typographi errore, in quem ob repetitum καὶ facile incidere potuit. HEEREN.

[z] τουτέστι καὶ] τουτέστιν A.

[a] καὶ ὠκεανὸν] τὸν ὠκεανὸν Heerenius.

[b] θεατὸν παράδειγμα, *visibile exemplar*, rescripsi pro θυτὸν quod codd. omnes exhibent. Schottus conjicit κτισθέντων, quod nemo facile admittet. Holstenius vertit: *ut exemplar sibi propositum haberet*, adeoque legisse videtur θετόν. HEEREN.

[c] Ἐζήτησα] ἐξήτασα A.

[d] ἐκεῖνος in A. legitur post οὔτε γάρ. ubi mox χάλκιος.

[e] στερροτάτῳ] στερρωτάτῳ A.

[f] κεφαλῇ τούτου λέγουσι θεοῦ ἄγαλμα εἶναι, ὡς ἐπὶ θρόνου τινὸς καθημένου. Λέγουσιν δὲ καὶ ἐν τοῖς καύμασιν ἱδροῦν ὅλον τὸν ἀνδριάντα τοῦτον, καὶ ῥιπίζεσθαι ὑπὸ τῶν Βραχμάνων καὶ [g] παύεσθαι τοὺς ἱδρῶτας· καὶ εἰ μὴ ῥιπίζοιεν πολὺν φέρειν ἱδρῶτα, ὡς βρέχεσθαι τὴν περὶ αὐτὸν γῆν. [h] Ἐνδότερον δὲ αὐτοῦ ἐν τῷ σπηλαίῳ μετὰ πολὺ διάστημα εἶναι σκότος, ἔνθα μετὰ λαμπάδων εἰσέρχονται οἱ βουλό-
[150] μενοι, καὶ εὑρίσκουσι θύραν τινά, ἐξ ἧς προέρχεται ὕδωρ, καὶ λιμνάζει περὶ τὰ τελευταῖα τοῦ σπηλαίου· καὶ ὡς δοκιμάζοντες ἑαυτοὺς εἰσέρχονται διὰ τῆς θύρας ἐκείνης. Καὶ ὅσοι εἰσὶ καθαροὶ ἀπὸ τῆς φαυλότητος τοῦ βίου εἰσέρχονται ἀνεμποδίστως, εὐρυνομένης τῆς θύρας, καὶ εὑρίσκουσι πηγὴν μεγίστην ὕδατος πάνυ διαυγεστάτου καὶ ποτιμωτάτου, ἐξ ἧς τὸ ὕδωρ ἐκεῖνο προέρχεται· οἱ δὲ ἐν καταγνώσει ὄντες πολὺ θλίβουσιν εἰσελθεῖν διὰ τῆς θύρας ἐκείνης, καὶ οὐ δύνανται στενουμένης [i] αὐτοῖς, οἵτινες βιαζόμενοι ἐξομολογοῦνται ἐπὶ τῶν ἑτέρων εἴ τι ἥμαρτον, [k] καὶ δέησιν ποιοῦνται ἵνα οἱ λοιποὶ εὔξωνται περὶ αὐτῶν, καὶ [l] νηστεύουσι χρόνον τινὰ ἱκανόν. Ἐκεῖ [m] φασὶν εἰρηκέναι [n] τοὺς περὶ τὸν Σανδάλην συνάγεσθαι τοὺς Βραχμᾶνας, ἡμέρᾳ μέντοι τεταγμένῃ. Ἀλλὰ εἶναι μέν τινας ἐκεῖ ἔχοντας τὴν διατριβήν, τοὺς δὲ ἀλλαχόθεν συνιέναι θέρους ὥρᾳ καὶ περὶ τὸ φθινόπωρον, πλεοναζούσης τῆς ὀπώρας, ἐπί τε τὴν θέαν τοῦ ἀνδριάντος, καὶ ἐπὶ τὸ ἀλλήλοις συμμίξαι, καὶ εἰς τὸ

[f] κεφαλῇ] κεφαλῇ τούτου A. ubi mox καθήμενον.

[g] Melius forte legeretur παύεσθαι τοῦ ἱδρῶτος. HEEREN.

[h] Ἐνδοτέρω] ἐνδότερον A. ubi mox πολύν.

[i] αὐτῆς] αὐτοῖς A. V.

[k] καὶ recte supplevit Holstenius; in codd. post ἥμαρτον spatiolum relinquitur. HEEREN.

[l] νηστεύουσι] νηστεύσωσι A.

[m] φησὶ] φασὶν A.

[n] τοὺς περὶ τ. Σ. i. e. Sandalem ipsum. τοὺς quod exciderat in codd. V. E. P. qui tamen spatiolo relicto lacunam indicant, de meo addidi. HEEREN. Et sic A.

[o] πεῖραν ἑαυτῶν λαβεῖν, εἰ δύνανται εἰσελθεῖν διὰ τῆς εἰρημένης θύρας. Γίγνεσθαι δὲ ἐκεῖ ζητήσεις λέγουσι περὶ τῆς ἐν τῷ σώματι ἐκείνῳ γλυφῆς. Οὐδὲ γάρ ἐστι ῥᾳδίως πάσῃ τῇ ἀνατυπώσει ἐπιστῆσαι, διά τε τὸ πολλὰ εἶναι, καὶ διὰ τὸ μὴ πάντα τὰ ζῶα καὶ φυτὰ ἐν πάσῃ χώρᾳ ὑπάρχειν. Ἃ μὲν οὖν Ἰνδοὶ ἱστοροῦσι περὶ τοῦ παρ' αὐτοῖς δοκιμαστηρίου ὕδατος, ἔστι ταῦτα. Οἶμαι δὲ τούτου καὶ [p] Ἀπολλώνιον τὸν Τυανέα [q] μεμνῆσθαι τοῦ ὕδατος, τοῦ [r] ἐν τῷ σπηλαίῳ [s] λέγω. Γράφων γὰρ τοῖς Βραχμᾶσιν ὅρκον
[152] τινὰ ὀμνύει· "οὐ μὰ τὸ Ταντάλιον ὕδωρ, οὗ με ἐμυήσατε." Οἶμαι γὰρ [t] Ταντάλιον λέγειν τοῦτο, [u] διὰ τὸ ἀεὶ τῇ προσδοκίᾳ κολάζειν τοὺς ὑπὸ τοῦτο ἐλθεῖν ἐσπουδακότας, κἀκ τούτου ποτὸν ἀρύσασθαι.

Κεφ. δ'.

ΠΕΡΙ ΑΝΑΓΚΗΣ, ΚΑΘ' ΗΝ ΑΠΑΡΑΙΤΗΤΩΣ ΤΑ ΚΑΤΑ ΤΗΝ ΤΟΥ ΘΕΟΥ [a] ΓΙΝΕΤΑΙ ΒΟΥΛΗΣΙΝ.

Μοσχίωνος Τηλέφου.

Ὦ καὶ θεῶν κρατοῦσα καὶ [b] θνητῶν μόνη,
[c] Μοῖρ', ὦ λιταῖς ἄτρωτε δυστήνων βροτῶν,
[154] [d] πάντολμ' Ἀνάγκη, στυγνὸν ἣ κατ' αὐχένων
[e] ἡμῶν ἐρείδεις [f] τῆσδε λατρείας [g] ζυγόν.

[o] πεῖραν ἑαυτῶν] Sic V. πέραν ἑαυτῷ A.
[p] Ἀπολλώνιον] Vid. Olear. ad Philostrati Vit. Apollon. III. 32. p. 123.
[q] μεμνῆσθαι] μεμνεῖσθαι A.
[r] ἐν τῷ] τοῦ ἐν τῷ A.
[s] λέγω] Sic P. λέγων V. A.
[t] Ταντάλιον] Τάνταλον A. V.
[u] διὰ τὸ] διὰ τί A.

1.

[a] γίνεται] γίνεσθαι A.
[b] θνητῶν] θνητὸν A. qui in titulo Μοσχίονος.
[c] μοῖρ' ὦ] Sic Grotius. μοῖρα mss.
[d] πᾶν τὸ λῆμ' ἀνάγκης] πάντολμ' ἀνάγκη Porson. Eurip. Phoen. 1622.
[e] ἡμερῶν ἐρείδης] ἡμῶν ἐρείδεις V. A.
[f] τῆς τε] τῆσδε citat Ruhnkenius H. Cer. 207.
[g] ζυγὸν] ζυγῶν V. ζυγῶν A.

2 Χαιρήμονος.
Χρεία δ' Ἀνάγκης οὐκ ἀπῴκισται πολύ.
Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.
2 b. Πρὸς τὴν ἀνάγκην πάντα τἆλλ' ἔστ' ἀσθενῆ.
2 c. [[a] Σιμωνίδου.]
[b] Ἀνάγκᾳ δ' οὐδὲ θεοὶ μάχονται.
2 d. ὁσία δ' ἀνάγκη [c] πολεμιωτάτη θεός.
2 e. οὐδεὶς ἀνάγκης μεῖζον ἰσχύει νόμος.
3 Εὐριπίδου [Alcest. 962.]
[156] Ἐγὼ καὶ [a] διὰ Μούσας
καὶ [b] μεταρσίων [c] ἧξα,
καὶ πλείστων [d] ἀρξάμενος λόγων
κρεῖσσον οὐδὲν ἀνάγκας
[e] εὗρον, οὐδέ τι φάρμακον.
4 Φιλήτα Ἑρμοῦ.
Ἰσχυρὰ γὰρ ἐπικρατεῖ ἀνδρὸς ἀνάγκη,
ἥ ῥ' οὐδ' ἀθανάτους [a] ὑποδείδιεν, οἵ τ' ἐν Ὀλύμπῳ
ἔκτοσθεν χαλεπῶν ἀχέων οἴκους ἐκάμοντο.
5 Σοφοκλῆς Θυέστῃ [Fr. 234.]
Πρὸς τὴν ἀνάγκην οὐδ' Ἄρης ἀνθίσταται.
Εὐριπίδης Διδύμῳ [Λικυμνίῳ. 5.]
6 Τὸ τῆς ἀνάγκης οὐ λέγειν ὅσον [a] ζυγόν.

2.

[a] Σιμωνίδου] Deest lemma mss. Vid. Heindorf. ad Platonis Protag. p. 345. Steph.

[b] ἀνάγκῃ δ' οὐδὲ] ἀνάγκᾳ δ' οὐ V. A. E.

[c] πολεμικωτάτη] πολεμιωτάτη V. A.

3.

[a] διὰ] μετὰ A.

[b] μεταρσίων] μετάρσιος Eurip.

[c] ἧξα] ἦρξα A. Cant.

[d] ἀψάμενος] ἀρξάμενος V. A.

[e] εὗρον] οὗρον A. qui mox cum Cant. οὐδέ τε.

4.

[a] ὑποδείδιεν] ὑποδείδειεν A.

6.

[a] ζυγόν] Post ζυγὸν pro lemmate litteris rubris haec inserit A.: περὶ ἀνάγκης καθ' ἣν ἀπαραιτήτως. θάλητος. σοφοκλῆς θυέστῃ. εὐριπίδης διδύμῳ. ἑρμοῦ. ἐκ τῶν πλάτωνος. ἄμωνα πυθαγορείου.

7

[158] [a] ΘΑΛΗΣ ἐρωτηθεὶς τί ἰσχυρότατον; εἶπεν, ἀνάγκη, [b] κρατεῖ γὰρ πάντων. [c] . . . ἀνάγκη ἐστὶ κρίσις βεβαία καὶ ἀμετάτρεπτος δύναμις προνοίας.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ ἀνάγκην ἔφη περικεῖσθαι τῷ κόσμῳ.

[d] ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ καὶ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ· οὗτοι πάντα κατ' ἀνάγκην· τὴν δ' αὐτὴν εἶναι εἱμαρμένην, καὶ [e] δίνην,
[160] καὶ πρόνοιαν καὶ κοσμοποιόν.

ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ πάντα κατ' ἀνάγκην, τὴν δ' αὐτὴν ὑπάρχειν εἱμαρμένην· λέγει γὰρ ἐν τῷ Περὶ Νοῦ· οὐδὲν χρῆμα μάτην γίγνεται, ἀλλὰ πάντα ἐκ λόγου τε καὶ ὑπ' ἀνάγκης.

ΠΛΑΤΩΝ ὁτὲ μὲν τὴν ὕλην, ὁτὲ δὲ τὴν τοῦ ποιοῦντος πρὸς τὴν ὕλην σχέσιν. Καὶ τὰ μὲν [f] εἰς πρόνοιαν [g] ἀνάγει, p. 11.
τὰ δὲ εἰς [h] ἀνάγκην. Λέγει γοῦν ἐν τῷ [i] Τιμαίῳ· [k] Μεμιγμένη γὰρ οὖν ἡ τοῦδε τοῦ κόσμου γένεσις, ἐξ ἀνάγκης

7.

[a] Quae hic sequuntur partim leguntur ap. Plut. de plac. Phil. I. 25. [p. 884 E.] et Galeni Hist. Phil. c. X. etc. [T. XIX. p. 261. ed. Kuhn.] reliqua vero ex eodem Plutarchi opere, etsi non amplius in eo leguntur, a Stobæo olim hausta esse nemo facile dubitaverit. HEEREN.

[b] κρατεῖ γὰρ] Sic Plutarch. et sic em. Canter. in marg. κρατεῖν γὰρ Galen. quod melius. τί γὰρ A. Cant. Mox τοῦ παντὸς pro πάντων Plut. Gal.

[c] Proxima usque ad προνοίας desunt in Plut. et Gal. In Stobæo autem junguntur prioribus, adeoque male ad Thaletem referuntur. Excidit scilicet nomen philosophi post πάντων, cui necessitatis descriptio hæc tribuenda sit. HEEREN.

[d] Παρμενίδης καὶ Δημόκριτος habet A. rubris litteris in marg.

[e] δίνην] Sic recte jam emendavit cl. Beck. ad Plut. pro δίκην, quod et apud hunc [et Gal.] et ap. Stob. legitur. Testis est Diog. Laert. IX. s. 45. Πάντα τε κατ' ἀνάγκην γίνεσθαι, τῆς ΔΙΝΗΣ αἰτίας οὔσης τῆς γενέσεως πάντων. HEEREN.

[f] εἰς πρόνοιαν etc.] εἰς πρόνοιαν ἀνάγει, τὰ δὲ εἰς ἀνάγκην αἰτίαν χρηστικὴν etc. V. A.

[g] ἀνάγει] ἀνάγω A.

[h] ἀνάγκην] Post h. v. delevi αἰτίαν χρηστικὴν τ. ἀ. κ. τ. σ. quae suo loco leguntur paullo infra.

[i] Τιμαίῳ] Sc. p. 48 A. Mox οὐκ ἐξ ἀνάγκης A.

[k] Μεμιγμένη] μεμνημένη A.

τε καὶ νοῦ συστάσεως [1]ἐγεννήθη, νοῦ δὲ ἀνάγκης ἄρχοντος.

ΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ αἰτίαν χρηστικὴν τῶν ἀρχῶν καὶ τῶν στοιχείων.

8 Ἑρμοῦ πρὸς τὸν υἱόν [Patrit. p. 38.]

Ὀρθῶς μοι πάντα εἶπας, ὦ πάτερ, ἀλλ' ἔτι με ἀνά-
[162] μνησον, τίνα ἐστὶ τὰ κατὰ πρόνοιαν, καὶ τίνα κατ' ἀνάγκην, ὁμοίως καὶ καθ' εἱμαρμένην;

Ἔφην εἶναι ἐν [a]ἡμῖν, ὦ Τάτ, τρία [b]εἴδη ἀσωμάτων, καὶ τὸ [c]μέν τι ἐστὶ νοητὸν, [d]τοῦτο μὲν οὖν ἀχρώματον, ἀσχημάτιστον, ἀσώματον, ἐξ αὐτῆς τῆς πρώτης καὶ νοητῆς οὐσίας. Εἰσὶ δὲ καὶ ἐν ἡμῖν τούτῳ ἐναντίαι σχηματότητες, [dd]ἃς τοῦτο ὑποδέχεται. Τὸ γοῦν κινούμενον ὑπὸ τῆς νοητῆς [e]οὐσίας πρός τινα λόγον καὶ ὑποδεχθὲν, εὐθέως μεταβάλλεται εἰς ἕτερον εἶδος κινήσεως, τοῦτο δὲ εἴδωλόν ἐστι τοῦ νοήματος τοῦ δημιουργοῦ [f]. . . . Τρίτον δέ ἐστιν εἶδος [g]ἀσωμάτων, ὃ περὶ τὰ σώματά ἐστι συμβεβηκὸς, τόπος, χρόνος, κίνησις, σχῆμα, ἐπιφάνεια, μέγεθος, εἶδος· καὶ τούτων εἰσὶ [h]διάφορα δύο. Ἃ μὲν γάρ ἐστιν αὐτῶν ἰδίως ποιὰ, ἃ δὲ τοῦ σώματος. Τὰ μὲν ἰδίως ποιὰ, τὸ σχῆμα, ἡ χρόα, τὸ εἶδος, ὁ τόπος, ὁ χρόνος, ἡ κίνησις· τὰ δὲ τοῦ

[1] ἐγεννήθη, νοῦ δὲ] ἐγενήθη, νοῦ καὶ A.

8.

[a] ἦμιν] ἡμῖν ὦ τα A. i. e. ὦ Τάτ.

[b] ἤδη] εἴδη V. A.

[c] μέντοι] μὲν τὶ V. A.

[d] τοῦτον] τοῦτο V. A.

[dd] ἃς τοῦτο] ἃς addidit Heeren. Pro ὑποδέχεται Patritius dedit ὑποδεχόμεναι.

[e] Post οὐσίας add. πρὸς τινὰ λόγον V. A.

[f] Post δημιουργοῦ absque dubio nonnulla exciderunt, etsi neque Cant. editio neque mss. lacunam indicant. Desideratur autem *alterum* genus rerum incorporearum, nam cum primum modo indicasset, subito sequitur tertium. Suppletur hoc, saltem quoad nomen, ex iis quae infra sequuntur, in quibus τὸ ἄλογον, nulla tamen ampliori explicatione addita, pro altero incorporeorum genere ponitur. Brutorum tamen animas eo innui, verisimile est. HEEREN.

[g] ἀσωμάτων] ἀσωμάτῶς A. ἀσώματον Patrit.

[h] διάφορα] διαφοραὶ Patrit. ubi mox ἡ μὲν—ἡ δὲ.

σώματος ἴδιά ἐστι τὸ ἐσχηματισμένον σχῆμα, καὶ τὸ [h]κεχρωσμένον χρῶμα· ἔστι δὲ καὶ ἡ μεμορφωμένη μορφὴ,
[164] καὶ ἡ ἐπιφάνεια καὶ τὸ μέγεθος· ταῦτά ἐστι [i]τούτων ἀμέτοχα. Ἡ μὲν οὖν νοητὴ οὐσία, πρὸς τῷ θεῷ γενομένη, ἑαυτῆς [k]ἐξουσίαν ἔχει, καὶ τοῦ σώζειν ἕτερον, αὐτὴν σώζουσα, [l]ἔπειτ' αὐτὴ ἡ οὐσία ὑπ' ἀνάγκην οὐκ ἔστιν· [m]ὑπολειφθεῖσα δὲ ὑπὸ τοῦ θεοῦ [n]αἵρεται τὴν σωματικὴν φύσιν, καὶ ἡ αἵρεσις αὐτῆς κατὰ πρόνοιαν [[o]τοῦτο δὲ τοῦ κόσμου] γίνεται· τὸ δὲ ἄλογον πᾶν κινεῖται πρός τινα λόγον· καὶ ὁ μὲν λόγος κατὰ πρόνοιαν, τὸ δὲ ἄλογον κατ' [p]ἀνάγκην, τὰ δὲ περὶ [q]τὸ σῶμα συμβεβηκότα καθ' εἱμαρμένην. Καὶ οὗτός ἐστιν ὁ λόγος τῶν κατὰ πρόνοιαν, καὶ ἀνάγκην, καὶ καθ' εἱμαρμένην.

Κεφ. ε'.

ΠΕΡΙ ΕΙΜΑΡΜΕΝΗΣ, ΚΑΙ ΤΗΣ ΤΩΝ ΓΙΝΟΜΕΝΩΝ ΕΥΤΑΞΙΑΣ.

1 Ὁμήρου Ἰλιάδος [ζ'. 488.]

Μοῖραν δ' οὔτινά φημι [a]πεφυγμένον ἔμμεναι ἀνδρῶν,
οὐ κακὸν, οὐδὲ μὲν ἐσθλὸν, ἐπὴν τὰ πρῶτα [b]γένηται.

2 Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας [13.]

Τὸ [a]δαιμόνιον οὐχ ὁρᾷς

h κεχωρισμένον] κεχρωμένον V. κεχρωμένον A.

i τούτων] τούτω V. A.

ib. τούτων vix habet ad quod referatur. Nescio an legendum sit σωμάτων, *haec per se incorporea esse?* HEEREN.

k ἐξουσίας] ἐξουσίαν V. A. Mox σώζουσαν A. Cant. Patrit.

l ἔπειτ' αὐτὴ ἡ οὐσία] ἔπειθ' αὐτὴ ἡ οὖσα A. οὐσία dedit Patrit.

m ὑπολειφθ.] ὑποληφθεῖσα V.

n αἵρεται] αἵρεται V.

o Uncis inclusit, ut corrupta, Heeren.

p τὴν ante ἀνάγκην deest V. A.

q τὰ σώματα] τὸ σῶμα V. A.

1.

a Post πεφύγμενον add. ἔμμεναι V. A.

b γένηται] γένεται A.

2.

a δαιμόνιον] δαιμόνιος A.

ὅπῃ [b] μοίρας διεξέρχεται·
[c] στρέφεις δ' ἄλλους
ἄλλως εἰς ἀμέραν.

3 Βακχυλίδου [34 Bergk.]

Θνητοῖς [a] δ' οὐκ αὐθαίρετοι
οὔτ' [b] ὄλβος, οὔτ' ἄκαμπτος [c] Ἄρης,
οὔτε [d] πάμφθερσις στάσις·
[168] ἀλλ' [e] ἐπιχρίμπτει νέφος
ἄλλοτ' [f] ἐπ' ἄλλαν γᾶν
ἁ πάνδωρος [g] αἶσα.

4 Μενάνδρου [534.]

[a] Ἅπαντι δαίμων ἀνδρὶ συμπαρίσταται
εὐθὺς γενομένῳ, μυσταγωγὸς τοῦ βίου.

5 Ἡσιόδου Θεογονίας [217.]

Καὶ Μοίρας καὶ Κῆρας ἐγείνατο [a] νηλεοποίνους,
Κλωθώ τε [b] Λάχεσίν τε καὶ Ἄτροπον, αἵτε βροτοῖσι
γεινομένοισι διδοῦσιν ἔχειν ἀγαθόν τε κακόν τε.

6 Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν [608.]

Οὔτινά φημι θεῶν [a] ἄτερ ὄλβιον
[b] οὐ βαρύποτμον ἄνδρα γενέσθαι.

. . . .

[b] μοίρας] μοίρα V. A. μοίρας Grotius.

[c] στρέφει] στρέφεις A. Cant.

3.

[a] οὐκ] δ' οὐκ A. V.

[b] ὄλβον τ'] ὄλβος V. ὄλβιος A.

[c] Post Ἄρης plene interpungit A. sic:—deinde exhibet litteris rubris pro lemmate εὐριπίδ' ἀνδρομδ'. βακχυλίδ. μένανδρος. ἡσιόδ' θεογόν. Tum tanquam novus articulus Οὔτε π.

[d] πάνφερσις] πάμφθερσις A. V. πανφθέρσις E.

[e] ἐπιχρίμπτει] ἐπιχρίμπτει A.

[f] ἐπ' ἄλλαν] ἔπαλαν A.

[g] Αἶσα] Sic Pharnesii codex in Canteri marg. δεῖσα A. Cant.

4.

[a] Ἅπαντι] Sic Grotius. ἅπαντα ὁ Cant. ἅπαντ' ὁ A.

5.

[a] νηλεοποίνους] νηλεοποίνη V. A.

[b] Λάχεσιν] Λάχεσι A. ubi mox γινομένοισι.

6.

[a] ἅτε τὸν] ἄτερ V. A. E.

[b] οὔτε] οὐ V. A. E.

[170] [c]μόρσιμα δ' [d]οὔτι φυγεῖν θέμις· οὐ σοφίᾳ τις ἀπώσεται·
ἀλλὰ μάταν [e]ὁ πρόθυμος ἀεὶ πόνον ἕξει.

7 Εἰς Ὑάκινθον ἐκ τῶν Βίωνος [a]Βουκολικῶν [7.]

Ἀμφασία τὸν [b]Φοῖβον ἕλεν τόσον ἄλγος ἔχοντα,
δίζετο φάρμακα πάντα, σοφὰν δ' [c]ἐπεβώετο τέχναν,
[d]χρῖεν δ' ἀμβροσίῃ καὶ νέκταρι, χρῖεν ἅπασαν
ὠτειλάν· Μοιραῖσι δ' [e]ἀναλθέα φάρμακα πάντα.

8 p. 12.

Μόνη γὰρ ἐν θεοῖσιν οὐ δεσπόζεται
Μοῖρ' οὐδ' ἐν ἀνθρώποισιν, ἀλλ' αὐτῆς κρατεῖ.

9

Ὦ Μοῖρα κεδνῶν καὶ κακῶν κυνηγέτι.

10 Εὐριπίδου Πηλεῖ [2.]

Κλύτε [a]Μοῖραι, Διὸς αἵτε παρὰ θρόνον
[b]ἀγχοτάτω θεῶν ἑζόμεναι.

11 Σοφοκλέους ἐκ Φαίδρας [604.]

[172] [a]Περιῶσί τ' ἄφυκτά τε μήδεα
[b]παντοδαπᾶν βουλᾶν ἀδαμαντίναις
ὑφαίνεται κερκίσιν αἶσα.

12

Κλωθὼ Λάχεσίς τ', εὐώλενοι κοῦραι
Νυκτός, εὐχομένων [a]ἐπακούσατε
οὐράνιαι χθόνιαί τε δαίμονες,

c μόρσιμα] ὅρσιμα V. A. E.
d οὔτι] οὔτε A. qui mox οὔτε σοφία.
e ὁ πρόθυμος] ὁ om. A.

7.

a Βουκολικῶν] βουκολίων A. Cant.
b Φοῖβον ἕλεν] βίον ἕλεν V. A.
c ἐπεβώετο] δ' ἐθέρεντο V. ἐπεβεύετο E. ἐπεβἑνετο A.
d χρῖεν] χρεῖεν bis A. Cant. Mox ἀμβροσίαν A. et infra μοίρασι.
e ἀναλθέα] ἀναλθία V. A.

10.

a μοίραι] μοίρα V.
b ἀγχόταται] –τατω V. A.

11.

a περιῶσι'] περὶ ὅσια φυκτά A.
b παντοδαπᾶν] Tanquam alterius fr. initium in A. ubi παντοδαπὰν βουλάν.

12.

a ἐπακούσετε] ἐπακούσατε οὐρανίαι V. A.

[174] ὦ πανδείμαντοι, πέμπετ' [b]ἄμμιν
ῥοδόκολπον Εὐνομίαν,
λιπαροθρόνους τ' [c]ἀδελφὰς, Δίκαν,
καὶ στεφανηφόρον Εἰράναν·
πόλιν τε τάνδε βαρυφρόνων
[d]λελάθοιτε συντυχιᾶν.

13 [a][Σοφοκλῆς Φαίδρᾳ. 603.]

Ἔζης ἄρ', οὐδὲ γῆς ἔνερθ' ᾤχου θανών;
Οὐ γὰρ πρὸ μοίρας ἡ τύχη βιάζεται.

14 [a]Ἑρμοῦ.

[b]Ἑπτὰ πολυπλανέες κατ' Ὀλύμπιον ἀστέρες οὐδὸν
εἰλεῦνται, [c]μετὰ τοῖσιν ἀεὶ δ' ἐπινήσεται αἰών·
[176] [d]νυκτιφανὴς Μήνη, [e]στυγνὸς Κρόνος, Ἥλιος ἡδὺς,
παστοφόρος Παφίη, θρασὺς Ἄρης, [f]εὔπτερος Ἑρμῆς,
καὶ Ζεὺς ἀρχιγένεθλος, ἀφ' οὗ φύσις ἐβλάστησεν.
Οἱ δ' αὐτοὶ μερόπων ἔλαχον γένος, ἔστι δ' ἐν ἡμῖν
Μήνη, Ζεὺς, Ἄρης, Παφίη, Κρόνος, Ἥλιος, Ἑρμῆς·
τοὔνεκ' ἀπ' αἰθερίου μεμερίσμεθα πνεύματος ἕλκειν

[b] ἁμῖν ῥοδόκολπον] ἀμμῖν ῥοδόκολην V. ἄμμιν ῥοδόκολπῆν A.

[c] ἀδελφὰς] ἀδελφεὰς L. Dindorf. T. L. G. Vol. 5. p. 317 C.

[d] λελάθοιτε] ἐκλύθητε Grotius, qui et συντυχιᾶν pro vulg. συντυχίαν.

13.

[a] Cant. et Grot. ut et codd. A. E. locum ἀδέσποτον relinquunt; cod. V. vero in marg. habet Σοφοκλ. Φαιδρ. HEEREN.

14.

[a] Ἑρμοῦ] Sic A. non ut ex eo codice enotavit Heerenius περὶ εἱμαρμένης Ἑρμοῦ. Ita vero Canteri margo. Versus qui sequuntur leguntur etiam in Append. ad Anthol. Pal. p. 768. n. 40. Videatur Jacobsii annotatio p. 898.

[b] ἑπτὰ] ἐπὰ Cant. σπὰ A.

[c] μετὰ τοῖσιν ἀεὶ δ' ἐπινήσεται] καὶ τοῖσιν ἀεὶ κανονίζεται Anthol. μετὰ τοῖσι δ' ἀεὶ περινίσσεται conj. Jacobs.

[d] νυκτὶ φανεὶς etc.] νυκτιφανὲς μήνην νυκτὸς ἥλιος ἡδύς. παστοφόρος Παφίῃ θρασὺς Ἄρης, εὔσπορος Ἑρμῆς V. νυκτηφανὴς μήνη A. E.

[e] στυγνὸς Κρόνος] νυκτὸς A.

[f] εὔσπορος] εὔσπερος A. Cant. In qua lectione latere videtur, quod Anthologia præbet, εὔπτερος, non quod ex Grotii conj. ed. Heeren. εὔσπορος.

δάκρυ, γέλωτα, [g] χόλον, γένεσιν, λόγον, ὕπνον, ὄρεξιν.
Δάκρυ μέν ἐστι Κρόνος, Ζεὺς ἡ γένεσις, λόγος Ἑρμῆς,
θυμὸς Ἄρης, Μήνη δ' ἄρ' ὕπνος, [h] Κυθέρεια δ' ὄρεξις,
Ἠέλιός τε γέλως· τούτῳ γὰρ ἅπασα δικαίως
καὶ θνητὴ διάνοια γελᾷ, καὶ [i] κόσμος ἀπείρων.

15

[a] [Οἱ Στωικοὶ] μὴ διαφέρειν τοῦ εἱμαρμένου τὸ κατηναγκασμένον, κατ' ἐπιπλοκὴν μερῶν συνηρτημένην.

[178] ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ οὐσίαν εἱμαρμένης [b] ἀπεφήνατο λόγον, τὸν [c] διὰ [d] οὐσίας τοῦ παντὸς διήκοντα. Αὕτη δ' ἐστὶ τὸ αἰθέριον σῶμα, σπέρμα τῆς τοῦ παντὸς γενέσεως, καὶ περιόδου μέτρον τεταγμένης. Πάντα δὲ καθ' εἱμαρμένην, τὴν δ' αὐτὴν ὑπάρχειν ἀνάγκην· γράφει γοῦν· ἔστι γὰρ [e] εἱμαρμένη πάντως . . .

ΠΛΑΤΩΝ λόγον ἀΐδιον τὴν οὐσίαν τῆς εἱμαρμένης, καὶ νόμον ἀΐδιον τῆς τοῦ παντὸς φύσεως.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ τρίτην ἀπὸ Διός. Πρῶτον μὲν γὰρ εἶναι τὸν Δία, δεύτερον δὲ τὴν φύσιν, τρίτην δὲ τὴν εἱμαρμένην.

ΖΗΝΩΝ ὁ Στωϊκὸς ἐν τῷ περὶ φύσεως, δύναμιν κινητι-

---

[g] χολὴν] χόλον V. A.

[h] Κυθέρεια] Κυθαίρια A. Mox ἠέλιος δὲ Anthol.

[i] κόσμος ἀπείρων] κόσμὸς. ἀπείρων μὴ διαφ. A.

15.

[a] Philosophorum decreta, quæ hic sequuntur, partim quoque exstant apud Plutarchum de Pl. Ph. L. I. c. 27. 28. et Galen. Hist. Phil. cap. X. multo tamen auctiora apud Stobæum. Prima statim verba apud Plut. et Gal. desiderantur; excidit autem ante μὴ nomen philosophi, cui proximum placitum tribuendum est. Supplendum autem duco οἱ Στωϊκοί. Iisdem fere verbis eadem haec sententia tribuitur Stoicis a Plut. de Pl. Ph. I. 27. Οἱ Στωϊκοὶ τὴν εἱμαρμένην συμπλοκὴν αἰτιῶν τεταγμένην. Nam quæ ibi vocantur αἰτίαι apud nostrum sunt μέρη, *partes*, nempe universi, arctissimo vinculo inter se conjunctæ. HEEREN.

[b] ἀποφαίνετο λόγον] ἀπεφήνατο λέγων A.

[c] διὰ] δίαν A. in quo om. διήκοντα —παντός.

[d] οὐσίας] οὐσίαν V. A.

[e] εἱμαρμένη] εἱμαρμένα A.

κὴν τῆς ὕλης κατὰ ταυτὰ καὶ ὡσαύτως, ἥντινα μὴ [f]διαφέρειν πρόνοιαν καὶ φύσιν καλεῖν.

[180] [g]ἈΝΤΙΠΑΤΡΟΣ, ὁ Στωϊκὸς, θεὸν [h]ἀπεφήνατο τὴν εἱμαρμένην.

[i]ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ δύναμιν πνευματικὴν [k]τὴν οὐσίαν τῆς εἱμαρμένης, τάξει τοῦ παντὸς διοικητικήν. Τοῦτο μὲν οὖν ἐν τῷ δευτέρῳ Περὶ Κόσμου, ἐν [l]τῷ δευτέρῳ δὲ Περὶ [m]Ὅρων, καὶ ἐν τοῖς Περὶ τῆς Εἱμαρμένης, καὶ ἐν ἄλλοις σποράδην πολυτρόπως ἀποφαίνεται, λέγων· εἱμαρμένη ἐστὶν ὁ τοῦ κόσμου λόγος, ἢ λόγος τῶν ἐν τῷ κόσμῳ προνοίᾳ διοικουμένων· [n]ἢ λόγος, καθ' ὃν τὰ μὲν γεγονότα γέγονε, τὰ δὲ γιγνόμενα γίγνεται, τὰ δὲ [o]γενησόμενα γενήσεται. Μεταλαμβάνει δὲ ἀντὶ τοῦ λόγου τὴν ἀλήθειαν, τὴν αἰτίαν, τὴν φύσιν, τὴν ἀνάγκην, προστιθεὶς καὶ ἑτέρας ὀνομασίας, ὡς ἐπὶ τῆς αὐτῆς οὐσίας τασσομένας καθ' ἑτέρας καὶ ἑτέρας [p]ἐπιβολάς. Μοίρας δὲ καλεῖσθαι ἀπὸ τοῦ κατ' αὐτὰς διαμερισμοῦ, [q]Κλωθὼ, καὶ Λάχεσιν, καὶ Ἄτροπον. Λάχεσιν μὲν, [r]ὅτι οἷα κλήρῳ λελόγχασιν ἕκαστοι κατὰ τὸ δίκαιον ἀπονέμεται· [s]Ἄτροπον δὲ, ὅτι [t]ἀμετάθετος καὶ ἀμετάβλητός ἐστιν ὁ καθ' ἕκαστα διορισμὸς ἐξ ἀϊδίων χρόνων· Κλωθὼ δὲ, ὅτι ἡ κατὰ τὴν εἱμαρμένην διανέμησις, καὶ τὰ [u]γεννώμενα, τοῖς κλωθωμένοις [x]παραπλησίως διεξά- p. 13.

f διάφορον] διαφέρειν V. διαφέ[ον]ρειν (sic) A.

g Ἐντίπατος] Ἀντίπατρος V. A. E.

h ἀπεφαίνετο] ἀπεφήνατο A.

i Χρύσιππος] Ἐρύσιππος sic quoque in marg. V. Εὔριππος A. in textu et in marg. Σύριππος E.

k τὴν οὐσίαν τῆς εἱμαρμένης] τῆς οὐσίας τῆς ἡμαρμένης A.

l δὲ τῷ δευτέρῳ] τῷ δευτέρῳ δὲ A.

m Post περὶ add. ὡρῶν V. A. E. ἐν τοῖς Ὅροις Plutarch.

n Verba ἢ λόγος desunt V.

o γενησόμενα] γεγεννημένα V.

p ἐπιβολάς] Sic V. ἐπιβουλὰς A. Cant.

q Κλωθὼ] Κλυθὼ A.

r ὅτι οἷα] Sic ed. Heeren. Libri omnes οἷον sine ὅτι. Mox λελόχασιν A. Tum ἕκαστοι Heeren. pro ἕκαστα.

s Ἄτροπον] Ἄτροπος V. A.

t μετάθετος] ἀμετάθετος V. A.

u γεννώμενα] γενόμενα A.

x παραπλησίως] Sic libri omnes. Quare Heerenius dederit ὁμοίως nescio.

[182] γεται, κατὰ τὴν [y]ἐτυμολογικὴν ἐξήγησιν, τῶν ὀνομάτων ἅμα καὶ τῶν πραγμάτων συμπαρισταμένων [z]ἀχρήστως.

16 Περὶ τῆς ὅλης οἰκονομίας. Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἀμοῦν. [Patrit. p. 38.]

Καὶ ἡ μὲν διακρατοῦσα τὸν ὅλον κόσμον πρόνοιά ἐστιν, ἡ δὲ συνέχουσα καὶ περιέχουσα, ἀνάγκη ἐστὶν, εἱμαρμένη δὲ ἄγει καὶ περιάγει, πάντα καταναγκάζουσα, (φύσις γὰρ αὐτῆς τὸ [a]ἀναγκάζειν,) αἰτία γενέσεως καὶ φθορᾶς βίου. Ὁ μὲν οὖν κόσμος πρῶτος ἔχει τὴν πρόνοιαν, ([b]πρῶτος γὰρ αὐτῆς τυγχάνει,) ἡ δὲ πρόνοια ἐξήπλωται [c]ἐν τῷ οὐρανῷ· διότι καὶ θεοὶ περὶ αὐτὸν στρέφονται καὶ κινοῦνται, ἀκάματον καὶ ἄπαυστον κίνησιν ἔχοντες, [d]εἱμαρμένη δὲ, διότι καὶ ἀνάγκη. Καὶ ἡ μὲν πρόνοια προνοεῖ, εἱμαρμένη δὲ αἰτία ἐστὶ τῆς τῶν ἄστρων διαθέσεως. Οὗτος νόμος ἄφυκτος, καθ' ὃν πάντα τέτακται.

17 Ἐκ τῆς Ἰαμβλίχου πρὸς Μακεδόνιον ἐπιστολῆς.

[184] Πάντα [a]μὲν τὰ ὄντα τῷ ἑνί ἐστιν ὄντα, καὶ γὰρ [b]αὐτὸ τὸ πρῶτον ὂν ἀπὸ τοῦ ἑνὸς ἐξ ἀρχῆς παράγεται, πολὺ [c]δὲ διαφερόντως [d]τὰ ὅλα αἴτια τῷ ἑνὶ [e]τὸ δύνασθαι ποιεῖν παραδέχεται, καὶ κατὰ μίαν συμπλοκὴν συνέχεται καὶ [f]συναναφέρεται, τῇ τῶν πολλῶν ἀρχῇ προϋπάρχοντι. Κατὰ

y τιμολογ.] ἐτυμολογικὴν V. ἐτοιμολογικὴν A.

z ἀχρήστως, *inusitate* adeoque *raro*; nisi quis malit εὐχρήστως, *commode*. HEEREN.

16.

a ἀναγκάζειν] Sic libri: καταναγκάζειν tacite Heeren.

b πρώτως γὰρ αὕτη τυγχάνει, *primum locum obtinet providentia*, edidit Heeren.

c οὐρανῷ] ἐν τῷ οὐρανῷ V. A.

d Crediderim locum esse mutilatum, ac post εἱμαρμένη δὲ excidisse μετὰ τοῦτο, vel simile quid, *fatum nempe, adeoque quoque necessitatem, locum habere post providentiam;* ita ut hæc opposita sint prioribus, πρῶτα γάρ ἐστι ἡ πρόνοια.—Mox post προνοεῖ *necessitati* quoque locus suus addicendus videtur, adeoque supplendum, ἡ δὲ ἀνάγκη συνέχει, vel simile quid. HEEREN.

17.

a μὲν ὄντα] μὲν τὰ ὄντα V. A.

b αὐτὸ τὸ πρῶτον] αὐτὸς τὸ πρώτως V. A.

c δὲ deest A.

d Verba τὰ ὅλα desunt V. τὰ ὄντα A.

e τὸ δύνασθ.] τὶ δυν. A.

f συναφέρεται Cant. συναναφέρεται A. συμφέρεται Heeren.

δὴ τοῦτον τὸν λόγον καὶ τῶν περὶ τὴν φύσιν αἰτιῶν, πολυειδῶν ὄντων καὶ πολυμερίστων, ἠρτημένων τε ἀπὸ πλειόνων ἀρχῶν, ἀπὸ μιᾶς ὅλης αἰτίας τὸ πλῆθος [g]ἐκκρέμαται, κατὰ μίαν δὲ σύνδεσιν πάντα πρὸς ἄλληλα συμπλέκεται, καὶ εἰς ἓν ἀνήκει τὸ περιεκτικώτατον [h]τῆς αἰτίας κράτος ὁ σύνδεσμος τῶν πλειόνων αἰτιῶν. Οὗτος τοίνυν εἷς εἱργμὸς [i]συμπεφορημένος ἐστὶν ἀπὸ τοῦ πλήθους, οὐδ' ἐπισυνισταμένην ἀπὸ τῆς συμπλοκῆς ποιεῖται τὴν ἕνωσιν, οὐδὲ διαπεφόρηται ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα· κατὰ δὲ τὴν [k]προηγουμένην καὶ προτεταγμένην αὐτῷ τῶν αἰτιῶν μίαν συμπλοκὴν [l]ἐπι-
[186] τελεῖ πάντα καὶ συνδεῖ ἐν [m]ἑαυτῷ, καὶ [n]πρὸς αὐτὸν [o]μονοειδῶς ἀνάγει. Μίαν οὖν τάξιν, πάσας [p]τάξεις ὁμοῦ περιλαβοῦσαν ἐν αὐτῇ, τὴν εἱμαρμένην ἀφοριστέον.

18 Ἐκ τῆς Ἰαμβλίχου πρὸς Σώπατρον ἐπιστολῆς.

Τῆς δ' εἱμαρμένης ἡ οὐσία σύμπασά ἐστιν ἐν τῇ φύσει· [a]φύσιν δὲ λέγω τὴν ἀχώριστον αἰτίαν τοῦ κόσμου, καὶ ἀχωρίστως περιέχουσαν τὰς ὅλας αἰτίας τῆς γενέσεως [b]ὅσα χωριστῶς αἱ κρείττονες οὐσίαι καὶ διακοσμήσεις συνειλήφασιν ἐν ἑαυταῖς. Ζωή τε οὖν σωματοειδής, καὶ λόγος γενεσιουργός, τά τε ἔνυλα εἴδη, καὶ αὐτὴ ἡ ὕλη, ἥ τε συντεθειμένη γένεσις ἀπὸ τούτων, κίνησίς τε ἡ τὰ πάντα μεταβάλλουσα, καὶ φύσις ἡ τεταγμένως διοικοῦσα τὰ γιγνόμενα, ἀρχαί τε αἱ τῆς φύσεως, καὶ τέλη, καὶ [c]ποιήσεις, καὶ αἱ τούτων συνδέσεις πρὸς ἄλληλα, ἀπ' ἀρχῆς τε ἄχρι τοῦ τέλους διέξοδοι, συμπληροῦσι τὴν εἱμαρμένην.

[g] ἐκκρέμαται] ἐκκρέμμαται A.
[h] τῆς αἰτίας] τῆς σοφίας V. A.
[i] συμπεφορημένος] Heerenius tacite συμπεφυρμένος.
[k] Post προηγουμένην add. καὶ προτεταγμένην αὐτῷ (αὐτῶν A.) τῆς αἰτίας V. A. Heeren. dedit αὐτῷ τῶν αἰτιῶν.
[l] ἐπιτελεῖ π. κ. συνδεῖ] ἐπιτελεῖν (ἐπιτελεῖ A.) π. κ. συνδεῖν V. A.
[m] ἑαυτῷ] αὐτῷ V.
[n] πρὸ αὐτὸν] πρὸς αὐτὸν V. A.
[o] μονοδῶς] μονοειδῶς A.
[p] τάξεις] τάξεως A.

18.

[a] φύσει δὲ] φύσιν δὲ V. A.
[b] ὅσος] ὅσα V. A. E.
[c] ποιήσεις] ποίησϊς A.

19 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ Εἰ ἡ τῶν μελλόντων πρόγνωσις ὠφέλιμος [T. V. p. 548 = 824.]

Τὸ γὰρ εἱμαρμένον ἄτρεπτον καὶ ἀπαράβατον, χ' [a]ᾧπερ μόνον ὀφρύσι νεύσει, καρτερὰ [b]τούτῳ κέκλωτ' ἀνάγκα καὶ
[188] [c]πεπρωμένη. [d]Διὰ τοῦτο τὴν εἱμαρμένην καὶ ἀδράστειαν καλοῦσιν, ὅτι πέρας ταῖς αἰτίαις ἠναγκασμένον ἐπιτίθησιν, [e]ἀνέκφευκτος οὖσα καὶ ἀναπόδραστος.

20 [a]Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἄμμωνα [Patrit. p. 38.]

Πάντα δὲ γίγνεται φύσει καὶ εἱμαρμένῃ, καὶ οὐκ ἔστι τόπος ἔρημος προνοίας. Πρόνοια δ' ἐστὶν αὐτοτελὴς λόγος τοῦ ἐπουρανίου θεοῦ. Δύο δὲ τούτου αὐτοφυεῖς δυνάμεις, ἀνάγκη καὶ εἱμαρμένη. Ἡ δὲ εἱμαρμένη ὑπηρετεῖ προνοίᾳ καὶ ἀνάγκῃ, τῇ δὲ εἱμαρμένῃ ὑπηρετοῦσιν οἱ ἀστέρες. Οὔτε γὰρ εἱμαρμένην φυγεῖν τις δύναται, οὔτε φυλάξαι ἑαυτὸν ἀπὸ τῆς τούτων δεινότητος. Ὅπλον γὰρ εἱμαρμένης οἱ ἀστέρες, κατὰ γὰρ ταύτην πάντα ἀποτελοῦσι τῇ φύσει καὶ τοῖς ἀνθρώποις.

21 Πλάτωνος Πολιτείας [p. 620.]

Ἐπειδὴ δ' οὖν πάσας τὰς ψυχὰς [a]τοὺς βίους ᾑρῆσθαι, p. 14.
ὥσπερ ἔλαχον, ἐν τάξει προσιέναι πρὸς τὴν Λάχεσιν· ἐκείνην δὲ ἑκάστῳ ὃν εἵλετο δαίμονα, τοῦτον φύλακα [b]ξυμπέμπειν τοῦ βίου, καὶ ἀποπληρωτὴν τῶν αἱρεθέντων. ὃν πρῶτον μὲν ἄγειν αὐτὴν πρὸς τὴν Κλωθὼ, ὑπὸ τὴν ἐκείνης χεῖρά τε

19.

[a] ὅσπερ] ὧπερ V. A. ὥσπερ E.

[b] τούτω] τοῦτο V. τοῦτοι κέκλῦτ' A.

[c] πεπρωμένη] πεπραμένη A.

[d] Subintelligendum esse videtur Stoici; ex libro de Stoic. repugn. Op. II. p. 1056. qui locus omnino cum nostro convenit: Τὴν δ' εἱμαρμένην (ὁ Χρύσιππος) αἰτίαν ἀνίκητον καὶ ἀκώλυτον καὶ ἄτρεπτον ἀποφαίνων, αὐτὸς ἄτροπον καλεῖ, καὶ ἀδράστειαν, καὶ ἀνάγκην, καὶ πεπρωμένην, ὡς πέρας ἅπασιν ἐπιτιθεῖσαν. HEEREN.

[e] ἀνέκφευκτος] ἀνέφευκτος A.

20.

[a] Ἑρμοῦ] Excitat h. l. et illustrat Lipsius de Constant. T. IV. p. 390. HEEREN.

21.

[a] τοῦ βίου A.

[b] ξυμπίπτειν A.

καὶ ἐπιστροφὴν τῆς τοῦ ἀτράκτου δίνης, κυροῦντα ἣν λαχὼν εἵλετο μοῖραν. ταύτης δ' [c] ἐφαψάμενον, αὖθις ἐπὶ [d] τὴν τῆς Ἀτρόπου ἄγειν νῆσιν, ἀμετάστροφα τὰ ἐπικλωσθέντα [e] ποιοῦντα. ἐντεῦθεν δὲ δὴ ἀμεταστρεπτὶ ὑπὸ τὸν τῆς Ἀνάγκης ἰέναι θρόνον· καὶ δι' ἐκείνου διεξελθόντα, ἐπειδὴ καὶ οἱ ἄλλοι διῆλθον, πορεύεσθαι ἅπαντας εἰς τὸ τῆς Λήθης πεδίον.

22 Ἐκ τῆς Ἀριστοτέλους πρὸς Ἀλέξανδρον ἐπιστολῆς. [Περὶ Κόσμου c. 7, 5.]

Οἶμαι δὲ καὶ τὴν ἀνάγκην οὐκ ἄλλο τι λέγεσθαι πλὴν
[190] [a] τοῦτον, οἱονεὶ ἀνίκητον ὄντα, εἱμαρμένην δὲ, διὰ τὸ [b] εἴρεσθαί τε καὶ χωρεῖν ἀκωλύτως· πεπρωμένην δὲ, διὰ τὸ πεπερατῶσθαι πάντα, καὶ μηθὲν ἐν τοῖς οὖσιν ἄπειρον εἶναι, καὶ μοῖραν μὲν ἀπὸ τοῦ [c] μεμερίσθαι, νέμεσιν δὲ ἀπὸ τῆς ἑκάστῳ διανεμήσεως, ἀδράστειαν δὲ, [d] ἀναπόδραστον αἰτίαν οὖσαν κατὰ φύσιν, αἶσαν δὲ, ἀεὶ οὖσαν. Τά τε περὶ τὰς μοίρας καὶ τὸν [e] ἄτρακτον [f] εἰς ταυτὰ πῶς νεύει. Τρεῖς μὲν αἱ μοῖραι κατὰ τοὺς χρόνους μεμερισμέναι· νῆμα δὲ ἀτράκτου τὸ μὲν [g] ἐξειργασμένον ἤδη, τὸ δὲ μέλλον, τὸ δὲ περιστρεφόμενον. Τέτακται δὲ κατὰ μὲν τὸ [gg] γεγονὸς μία τῶν μοιρῶν[h], [i] Ἄτροπος, ἐπεὶ τὰ παρελθόντα πάντα ἄτρεπτά ἐστι· κατὰ δὲ τὸ μέλλον [k] Λάχεσις, εἰς πάντα γὰρ ἡ κατὰ φύσιν μένει λῆξις· κατὰ δὲ τὸ [l] ἐνεστὸς Κλωθὼ, συμπεραίνουσα

c ἐφαψάμενος A.

d τὴν om. A.

e ποιοῦντα om. A.

22.

a τοῦτον, οἱονεὶ] τοῦτο οἷον ἀοίκητον οἰκίαν A. Cant. τοῦτον οἱονεὶ ἀνίκητον (unus ms. ἀκίνητον) οὐσίαν ὄντα (unus ms. om. ὄντα) Aristot.

b Pro εἴρεσθαι Aristot. ed. εἴρειν.

c μεμερεῖσθαι] μεμερίσθαι A. V.

d ἀπόδραστον] ἀναπόδραστον V. A.

e ἄτρακτον] ἄτρακτα V. τὴν ἄτρακτον A.

f εἰς ταυτὰ] Arist. εἰς τοῦτο, Cant. A. εἰς ἑαυτὰ, unde veram, ut puto, lectionem refinxi. HEEREN.

g ἐξειργασμένον] ἐξηργασμένον A. qui mox τὸ δὲ μᾶλλον.

gg γεγονὸς Arist. γένος Cant. A.

h Cant. et A. addunt hic κατὰ τὸ παρῳχηκός. Desunt Arist.

i Ἄτροπος] ἄτρεπτος V.

k Λάχεσιν] Λάχεσις V. A.

l ἐνεστὸς] ἐνεστὼς A.

καὶ κλώθουσα ἑκάστῳ τὰ οἰκεῖα, [m]ὅπερ αἰνίττεται καὶ ὁ μῦθος. Πάντα δὲ ταῦτά ἐστιν οὐκ ἄλλο τι πλὴν ὁ θεὸς, καθάπερ καὶ ὁ γενναῖός φησι [n]Πλάτων. "Ὁ μὲν δὴ θεὸς,
[192] " ὥσπερ καὶ ὁ παλαιὸς λόγος, ἀρχήν τε καὶ τελευτὴν καὶ " [o]μέσα τῶν ὄντων ἔχων, [p]εὐθέα περαίνει, κατὰ φύσιν " περιπορευόμενος."

Κεφ. ϛ'.

ΠΕΡΙ ΤΥΧΗΣ Η ΤΑΥΤΟΜΑΤΟΥ.

I Μενάνδρου Ὑποβολιμαῖος [471.]

Παύσασθε νοῦν ἔχοντες, οὐδὲν γὰρ πλέον
ἀνθρώπινος νοῦς ἐστιν ἄλλο τῆς τύχης,
εἴτ' ἐστὶ τοῦτο πνεῦμα θεῖον, εἴτε νοῦς.
[a]τοῦτ' ἔστι τὸ κυβερνῶν [ἅπαντα] καὶ στρέφον,
[194] καὶ σῶζον· ἡ πρόνοια δ' ἡ θνητὴ, καπνὸς
καὶ φλήναφος· πείσθητε, κοὐ μέμψεσθέ με.
[b]πάνθ' ὅσα νοοῦμεν, ἢ λέγομεν, ἢ πράττομεν,
[c]τύχη 'στιν, ἡμεῖς δ' ἐσμὲν ἐπιγεγραμμένοι.

[m] ὅπερ αἰνίττεται καὶ ὁ μῦθος] Arist. περαίνεται δὲ καὶ ὁ μῦθος οὐκ ἀτάκτως.

[n] Respicit ad verba Plat. de Leg. IV. Op. II. p. 715. HEER.

[o] μέσην] μέσα V. A.

[p] εὐθέως] εὐθέα A. V.

I.

[a] τουτέστι etc.] τουτέστι τὸ κυβερνὸν καὶ στρέφον κ. σῶζον V. A. στρέφων—ζώων Cant. Supra ἀλλ' ὁ τῆς A. Cant.

[b] ἅπανθ' ὅσα ποιοῦμεν ἢ γέγονεν] νοοῦμεν ἢ λέγομεν em. Canterus in marg.

ib. Legitur h. v. corrupte apud Cant. et in codd. Ἅπαντ' ὅσα ποιοῦμεν ἢ γέγονεν ἢ πράττομεν, quae variis modis emendare tentarunt viri docti. Grotius, satis accurate verborum vestigia sequens, ποιοῦμεν ἤγουν πράττομεν, quæ tamen lectio languere videtur cum ποιοῦμεν et πράττομεν ad idem redeat. Melius meo judicio Cant. ad marg. νοοῦμεν, λέγομεν ἢ πράττομεν, quod cum et antiquæ lectioni satis respondeat, elegantissimum simul sententiarum ordinem exhibet; modo pro ὅσα rescribas ἅ.—Longissime a lectione vulgata recedit Salmasius, qui ap. Grot. legere jubet: Πάνθ' ὅσα ποιοῦμεν ἢ λέγομεν, ἔστιν τύχης, Ἡμεῖς δὲ μόνον ἐσμὲν ἐπιγεγραμμένοι. HEEREN.

[c] τύχης ἐστιν] τύχη 'στιν Grotius.

ib. Cant. τύχης ἐστὶν, pro quo Grot. et Cler. τύχη 'στιν. Præfero τύχῃ 'στιν, casu tertio: *for-*

1 b. [d]Τύχη κυβερνᾷ πάντα, ταύτην καὶ φρένας
δεῖ καὶ πρόνοιαν τὴν θεὸν καλεῖν μόνην,
[e]εἰ μή τις ἄλλως ὀνόμασιν χαίρει κενοῖς.

2

Ἅπανθ' ὁρῶ
ἅμα τῇ τύχῃ ῥέοντα, [a]μεταπίπτοντά τε.

3 [[a]Ἀρχιλόχου.]

Πάντα τύχη καὶ [b]μοῖρα, Περίκλεες, ἀνδρὶ δίδωσιν.

4

Ἀλλ' ἐστὶν [a]εὔστοχόν τι βουλευτήριον
ταὐτόματον.

5

[a]Ἐπηρεαστικόν γέ τι
ταὐτόματόν ἐστι τῷ βίῳ.

6

[196] Ἡ τὰ θνητῶν καὶ τὰ θεῖα πάντ' [a]ἐπισκοποῦσα [μὲν,]
καὶ νέμουσ' ἡμῶν ἑκάστῳ τὴν κατ' ἀξίαν τύχη
μερίδα.

7 Χαιρήμονος ἐξ Ἀχιλλέως Θερσιτοκτόνου.

[a]Τύχη τὰ θνητῶν [b]πράγματ', οὐκ εὐβουλία.

tuna fiunt.—ἐπιγεγραμμένοι sunt *milites conscripti, præfectorum jussis cæciter obedientes,* qui alias vocantur ἐγγεγραμμένοι, cf. Demosth. Op. II. p. 997. HEEREN.

[d] Novi fr. initium esse monuit Meineke. Et sane a prioribus separat A.

[e] εἰ μὴ etc.] εἰ μή τις ἄλλος ἄλλως ὀνόμασι χαίρειν κενοῖς A.

2.

[a] μεταπίπτοντά γε V. A. E.

3.

[a] Hoc fragmentum Archilochi esse vidit Liebelius.

[b] μοῖρα] ῥοῖρα (sic) A.

4.

[a] εὐστόν τι] εὔστοχόν τι V. A.

5.

[a] Ἐπηρεατικὸν] Ἐπηρεαστικὸν A. V. E.

6.

[a] ἐπίκοα] ἐπισκοποῦσα V. ἐπισκοπεῖ A. E. μὲν addidit Heeren. ut versum expleret. Grotius dedi πάντ' ἔχουσ' ἐπήκοα. An ἐπισκοποῦσ' ἀεί?

7.

[a] Τύχη] Vid. Wyttenbach. ad Plut. p. 97 C. Davis. Cic. Tusc. V. 9.

[b] πράγματ' deest V. A.

8 Φιλήμονος [198.]

Ἄλλος κατ᾽ ἄλλην δαιμονίζεται τύχην.

9 Μενάνδρου Ἀκηδεία [Κνιδία 284.]

[a] Ταὐτόματόν ἐστιν ὡς ἔοικέ που θεὸς,
σώζει τε [b] πολλὰ τῶν ἀοράτων πραγμάτων.

10 Μενάνδρου Ὑποβολιμαίῳ [475.]

Οὐ παντὸς ἀγαθοῦ τὴν πρόνοιαν αἰτίαν
[198] κρίνων ἂν ὀρθῶς ὑπολαβεῖν τίς μοι δοκεῖ, p. 15
ἀλλ᾽ ἐστὶ καὶ ταὐτόματον [a] ἔνια χρήσιμον.

11 Φιλήμονος Ἀποκαρτεροῦντι [10.]

Νῦν δ᾽ οἶδ᾽ ἀκριβῶς τὴν τύχην, ὡς οὐ μία,
[a] οὐδ᾽ ἔστι [b] πρώτη, ἀλλὰ μετὰ τῶν σωμάτων
ἡμῶν, ὅταν [c] γινώμεθ᾽, εὐθὺς χἠ τύχη
[d] προσγίνεθ᾽ ἡμῖν συγγενὴς τῷ σώματι·
[e] κοὐκ ἔστιν ἕτερον παρ᾽ ἑτέρου λαβεῖν τύχην.

12

Τὸν [a] εὐτυχοῦντα καὶ φρονεῖν νομίζομεν.

13 [a] Αἰσχύλου.

[b] Τύχα μερόπων ἀρχὰ καὶ [c] τέρμα,
τὺ καὶ σοφίας ἄκος δρᾷς, καὶ τιμὰν
[200] βροτέοις ἐπέθηκας ἔργοις,

9.

a Ταυτόμ.] Αὐτόματον V. A. E.

b πολλὰ] πολλοὺς A.

10.

a ἐνίοτε] ἔνια V. A.

11.

a οὐδ᾽] οὐκ V.

b πρώτη] πρώην Bentleius.

c γίνωντ᾽] γινώμεθ᾽ Bentleius, γίγνωντ᾽ ἂν Grotius, qui et ἡ ante τύχη delevit.

d προσγίνεθ᾽] προσγίνεσθ᾽ V. A. E.

e οὐκ ἔστιν etc.] Κ᾽ οὐκ ἔστιν ἕτερον παρ᾽ ἕτερον λαβεῖν τύχην V. A.

12.

a εὐτυχοῦντα] ἐντυχοῦντα A.

13.

a Αἰσχύλου] Mihi locus certe non videtur Æschyleus, et posteriora ex Pindaro aperte expressa sunt Olymp. V. 32. BUTLER. in Fragmenta Æschyli p. 226. Omisit Dindorf.

b Τύχα] Τύχαν A.

c τέρμα καὶ σοφίας καὶ τίμαν βροτέοις] τέρματι καὶ σοφίας ἄκος δρᾷς καὶ τιμὰν βροτέοις A. τέρμα τὶ Grotius.

καὶ τὸ καλὸν πλέον ἢ [d]κακὸν ἐκ σέθεν,
ἅ τε χάρις λάμπει
[e]περὶ σὰν πτέρυγα [f]χρυσέαν·
καὶ τὸ τεᾷ πλάστιγγι δοθὲν
μακαριστότατον τελέθει.
τὺ δ' ἀμαχανίας πόρον εἶδες ἐν ἄλγεσι,
καὶ λαμπρὸν φάος [g]ἄγαγες ἐν σκότῳ,
[h]προφερέστατα θεῶν.

14 Μενάνδρου [268.]

Ταὐτόματον ἡμῖν, ἀφανὲς ὄν, συλλαμβάνει.

[Τοῦ αὐτοῦ. 449.]

[a]Αὐτόματα γὰρ τὰ πράγματ' ἐπὶ τὸ συμφέρον
ῥεῖ [b]κἂν καθεύδῃς, ἢ πάλιν τοὐναντίον.

15 [a]Χαιρήμονος.

[202] Ἅπαντα νικᾷ καὶ [b]μεταστρέφει τύχη,
οὐδεὶς δὲ νικᾷ μὴ θελούσης τῆς τύχης.

16

Πάντων τύραννος ἡ τύχη 'στι τῶν θεῶν,
τὰ δ' ἄλλ' ὀνόματα ταῦτα πρόσκειται μάτην,
μόνη [a]διοικεῖν οὖν ἅπαντα βούλεται.

17

[a]'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ [b]διαφέρειν τῆς τύχης τὸ αὐτόματον·

[d] κακὸν] καλὸν V. A. E.
[e] περὶ σὰν] περισσὰν A.
[f] χρύσεον] χρυσέαν V. A. E.
[g] ἄγαγες] ἤγαγες A. E.
[h] προφερκέστατον] προφερέστατα V. προφανέστατα A. προφανέστατον E.

14.

[a] Αὐτόματι] –ματα V. A. Sejunxi a præcedente. Vid. Floril. XXII. 9.
[b] καὶ καθευδ.] κἂν καθευδήσῃ V. A.

15.

[a] Χαιρήμονος] Sic A. Vid. Meinek. Fr. Philemon. n. 96. 97.
[b] μεταστρέφει] μετατρέφει A. E.

16.

[a] Post διοικεῖν add. οὖν V. A.

17.

Excerpta quae hic sequuntur partim quoque leguntur ap. Plut. de pl. Ph. I. 29. partim ap. Galen. X. 12. ita tamen ut ap. Stobæum longe pleniora sint. HEEREN.
[a] 'Αριστοτέλης] 'Αριστοτέλους Cant. et sic A. ubi non in contextu sed

τὸ μὲν γὰρ ἀπὸ τύχης καὶ τοῦ αὐτομάτου εἶναι ἐν τοῖς [204] πρακτικοῖς πάντως· τὸ δ' αὐτόματον οὐκ ἀπὸ τύχης, [c]ἐν γὰρ τοῖς ἔξω πράξεως· καὶ τὴν μὲν τύχην τῶν λογικῶν, τὸ δ' αὐτόματον [d]καὶ τῶν λογικῶν καὶ τῶν ἀλόγων καὶ ἀψύχων· καὶ τὴν μὲν τύχην προαιρέτως συμβαίνειν, τὸ δ' αὐτόματον ἀπροαιρέτως· καὶ τὴν μέν τινος ὑπάρχοντος γίγνεσθαι, τὸ δὲ ἀλόγως, μηδενὸς ἔξω βουλευθέντος.

[e]ΠΛΑΤΩΝ τὴν τύχην ἀπεφαίνετο αἰτίαν [f]ἐν ἀπροαιρέτοις κατὰ συμβεβηκὸς, καὶ παρακολούθημα καὶ σύμπτωμα, καὶ προαιρέσεως κατὰ τὴν πρὸς τὸ τέλος [g]πρόθεσιν ἐναλλακτικὴν σχέσιν.

[h]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ, αἰτίαν κατὰ [i]συμβεβηκὸς, καὶ παρακολούθημα ἐν τοῖς καθ' ὁρμὴν ἕνεκά τινος γιγνομένοις ἄστατον καὶ ἄδηλον. Καὶ ὑποθέσεις μὲν δύο ταῖς ἀρχαῖς ἐνυπάρχειν, τάξιν τε καὶ ἀταξίαν, αἰτίας δὲ τέτταρας ἐν τοῖς ὅλοις, καθ' ἃς ἅπαντα συνίσταται, νοῦν, φύσιν, ἀνάγκην, τύχην· καὶ τούτων [k]διπλῆν ἑκάστην, τὴν μὲν ἐν τοῖς ἀνθρωπίνοις πράγμασι, [206] τὴν δὲ ἐν ἄλλοις· [l]τελεῖσθαι δὲ τὰ μὲν πάντως, τὰ δὲ κατὰ

in marg. pro lemmate legitur. Plut. et Galen. plenius Ἀριστοτέλης αἰτίαν κατὰ συμβεβηκὸς ἐν τοῖς καθ' ὁρμὴν ἕνεκά τινος γινομένοις, ἄδηλον καὶ ἄστατον· διαφέρειν δὲ etc. Vide paullo infra.

ib. Petita sunt haec Aristotelis placita ex Phys. II. cap. 6. HEEREN.

b Post διαφέρειν add. τῆς τύχης V. A.

c ἐν τοῖς ἔξω πράξεως, i. e. *casus tantum tribuitur iis, quae non habent* πρᾶξιν, i. e. *actionem liberam, conjunctam cum* προαιρέσει. Id enim vocat Aristotel. πρᾶξιν. cf. Phys. l. c. HEEREN.

d ἐκ τῶν λογικῶν ἀναλόγων καὶ ἀ.] καὶ τῶν λογικῶν καὶ τῶν ἀλόγων καὶ ἀψύχων V. A.

e Πλάτων] Copiosius et de hac Platonis explicatione, et de omni hoc loco disputat Plutarch. de Fato Op. vol. II. p. 572. HEEREN.

f ἐν deest A.

g πρόθεσιν] προύθεσιν A.

h Hausta haec sunt ex Aristot. Phys. l. c. 5. 6. ita tamen ut verba philosophi subinde paulum immutata, et quae ipse fusius disputat, arctius contracta sint. HEEREN.

i Post συμβέβηκ. add. καὶ παρακολούθημα A.

k πλὴν] διπλῆν V. A.

l τελεῖσθαι δὲ rescripsi pro τελεῖσθαι γάρ. HEEREN.

τὸ πλεῖστον, τὰ δ' ἄλλοτε ἄλλως. Τὴν δ' εἱμαρμένην οὐκ αἰτίαν μὲν, τρόπον δέ τινα αἰτίας, συμβεβηκότα πως τοῖς τῆς ἀνάγκης τεταγμένοις.

Πλάτωνος Νόμων δ'. [p. 709 A.]

Ὡς οὐδείς ποτε ἀνθρώπων οὐδὲν νομοθετεῖ, τύχαι δὲ καὶ ξυμφοραὶ παντοῖαι πίπτουσαι παντοίως νομοθετοῦσι ἅπαντα ἡμῖν. ἢ γὰρ πόλεμός τις βιασάμενος ἀνέτρεψε πολιτείας καὶ μετέβαλε νόμους, ἢ πενίας χαλεπῆς ἀπορία· πολλὰ δὲ καὶ νόσοι ἀναγκάζουσι καινοτομεῖν, λοιμῶν τε ἐμπιπτόντων, καὶ χρόνον ἐπὶ πολὺν ἐνιαυτῶν πολλῶν πολλάκις [m] ἀκαιρία. ταῦτα δὴ πάντα προϊδών τις ἄρξειεν ἂν εἰπεῖν ὅπερ ἐγὼ νῦν δὴ, θνητὸν μὲν μηδένα νομοθετεῖν μηδὲν, τύχας δ' εἶναι σχεδὸν ἅπαντα τὰ ἀνθρώπινα πράγματα. τὸ δ' ἔστι περὶ ναυτιλίαν καὶ κυβερνητικὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ στρατηγικὴν πάντα ταῦτ' εἰπόντα δοκεῖν εὖ λέγειν· ἀλλὰ γὰρ ὅμως αὖ καὶ τόδε ἐστὶν εὖ λέγοντα λέγειν ἐν τοῖς αὐτοῖς τούτοις. Τὸ ποῖον; Ὡς θεὸς μὲν πάντα καὶ μετὰ θεοῦ τύχη καὶ καιρὸς τἀνθρώπινα διακυβερνῶσι ξύμπαντα. ἡμερώτερον μὲν τρίτον ξυγχωρῆσαι τούτοις [n] δεῖν ἕπεσθαι τέχνην· [o] καιρῷ γὰρ χειμῶνος ξυλλαβέσθαι κυβερνητικὴν ἢ [p] μὴ, μέγα πλεονέκτημα ἔγωγ' ἂν θείην. ἢ πῶς; Οὕτως. Οὐκοῦν καὶ τοῖς ἄλλοις ὡσαύτως κατὰ τὸν αὐτὸν ἂν [pp] ἔχοι λόγον;

ΘΕΟΦΡΑΣΤΟΣ [q] προσδιαρθροῖ ταῖς αἰτίαις τὴν κατὰ προαίρεσιν· φέρεται δέ πως εἰς τὸ εἱμαρμένην εἶναι τὴν ἑκάστου φύσιν· ἐν ᾗ [r] τόπον τεττάρων αἰτιῶν ποικίλων, προαιρέσεως [s] . . . τύχης καὶ ἀνάγκης.

[m] ἀκαιρία] σκεωρίαι A.

[n] δῆν A.

[o] καιρὸν A. et mox κυβερνητικὸν.

[p] μὴ om. A.

[pp] ἔχοιεν A.

[q] προσδιαρθεῖ] προσδιαρθρεῖ V. A. E. προσδιαρθροῖ Heeren.

[r] τόπον] τόπων A.

[s] Patet hic unam ex causis excidisse, cum quatuor adduxisse

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ κατ' ἀνάγκην, κατὰ προαίρεσιν, κατὰ
τύχην.

18 Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου[ς] Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.

Περὶ δὲ τύχης τάδ' ἔφασκον, εἶναι μέντοι καὶ δαιμόνιον
[208] μέρος αὐτῆς, [a]γενέσθαι γὰρ ἐπίπνοιάν τινα παρὰ τοῦ δαι-
μονίου τῶν ἀνθρώπων ἐνίοις ἐπὶ τὸ βέλτιον ἢ ἐπὶ τὸ χεῖρον,
καὶ εἶναι φανερῶς [b]κατ' αὐτὸ τοῦτο τοὺς μὲν [[c]εὐτυχεῖς,
τοὺς δὲ ἀτυχεῖς. Καταφανέστατον δὲ εἶναι τοῦτο, τοὺς μὲν]
ἀπροβουλεύτως καὶ εἰκῇ τι πράττοντας πολλάκις [d]κατα-
τυγχάνειν, τοὺς δὲ προβουλευομένους καὶ προνοουμένους p. 16.
ὀρθῶς τι [e]πράττειν ἀποτυγχάνειν. Εἶναι δὲ καὶ ἕτερον
τύχης εἶδος, καθ' ὃ οἱ μὲν εὐφυεῖς καὶ εὔστοχοι, οἱ δὲ
[f]ἀφυεῖς τε καὶ ἐναντίαν ἔχοντες φύσιν [g]βλάπτοιεν, ὧν οἱ
μὲν [h]εὐθυβόλοι εἶεν ἐφ' ὅ τι ἂν ἐπιβάλλωνται, οἱ δὲ ἀπο-
πίπτοιεν τοῦ σκοποῦ, μηδέποτε τῆς διανοίας αὐτῶν εὐστόχως
[i]φερομένης, ἀλλὰ καὶ ταρασσομένης. Ταύτην δὲ τὴν [k]ἀτυ-
χίαν σύμφυτον εἶναι καὶ οὐκ [l]ἐπείσακτον.

19 Εὐρύσω περὶ τύχας.

[210] [a]Δοκεῖ δέ μοι [b]τύχα, καὶ τὸ ἀπὸ τᾶς τύχας γινόμενον

dicatur Theophrastus. Supplendum duco φύσεως, quam inter causas rerum ac eventuum Aristotelem posuisse modo vidimus. Confirmat hanc sententiam ipse Theophrastus, qui in Fragmento de Metaphysica ed. Oporin. p. 267. naturam inter causas motus recenset. Ἡ δὲ φύσις—δῆλον ὡς αἰτίαν θετέον ταύτην τῆς κινήσεως. HEEREN.

18.

[a] γενέσθαι δὲ] γενέσθαι γὰρ V. A.

[b] κατὰ ταυτὸ] κατ' αὐτὸ V. A. Verba τοὺς μὲν—τοῦτο desunt ob homoiotel. V. A.

[c] εὐτυχεῖς—τοὺς μὲν om. A.

[d] κατατυχεῖν] κατατυγχάνειν V. A.

[e] πράττειν] πράττων A.

[f] Post ἀφυεῖς add. τε V. ἀφιεῖς τε A.

[g] βλάπτοιεν] βάπτοιεν A. βλάστοιεν conj. L. Dindorf. T. L. G. T. III. p. 2275 D.

[h] εὐθύβουλοι] Leg. εὐθυβόλοι cum Schneidero, nisi malis εὐθυβολοῖεν, εἶεν deleto, cum L. Dindorfio. εἶεν præbet A. ubi εἶναι Canter.

[i] τε recepi ex cod. A. HEEREN. Atqui τε deest A.

[k] ἀτυχίαν] εὐτυχίαν V. A.

[l] ἐπίσακτον] ἐπείσακτο A.

20.

[a] Δοκεῖ] Οὐδεῖ V. Ὁ δεῖ A. E.

[b] τάχα] τύχα Heeren.

πᾶν, οὐχ ὡς ὑπό τινος αἰτίας ἀφωρισμένας καὶ ὡς ὑποκειμένας γίνεσθαι, ἀλλ' ὡς ἐπισυμβαῖνον καὶ ἐπισυνιστάμενον [c] ἑτέραις τισὶν [d] αἰτίαις. [e] Ἁ τύχα [f] ὦν, καὶ [g] τὸ ἀπὸ τύχας γινόμενον, οὔθ' ὡς φύσις [h] ἔντιν, ὑπὸ φύσιος τε γινόμενον, οὔθ' ὡς τέχνα καὶ φρόνασίς τις [i] ἀνθρωπίνα καὶ θεία, ἀλλὰ [k] τὸ ἐπισυμβαῖνον [l] παραλόγως τε καὶ [m] ἀπροαισθήτως τούτοις. Ἐπεὶ γὰρ δύο φύσιες ἐν τῷ ὅλῳ [n] τῷδε καὶ τῷ παντὶ ἐνυπάρχοντι ἐναντίαι ἀλλάλαις, καὶ τούτων ἃ
[212] μέν ἐντι ῥητὰ καὶ τεταγμένα, καὶ λόγον [o] ἔχοντι [p] ποτὶ πάντα, ἃ δ' ἄρρητος καὶ ἄτακτος [q] καὶ ἄλογος, καὶ οὐδεμίαν σύνταξιν ἔχουσα αὐτὰ, αὐτόθεν φανερὸν, ὅτι τὸ μὲν ἀπὸ τύχας καὶ τῶ αὐτομάτω γινόμενον γίνεται ἐμπεσούσας τᾶς ἀλόγω καὶ ἀτάκτω φύσιος ἐς τὰ πράγματα. Πάντα δὲ τὰ σύστοιχα ταῖς καθόλω φύσεσιν ἀεὶ κατὰ τὸ βέλτιον καὶ τὸ χεῖρον ἀντιδιαιρέονται τὰ πράγματα· τὰ μὲν ὡς ἀγαθοποιῶ τινος φύσιος καὶ βασιλικᾶς [r] ἐπικρατευσάσας, τὰ δ' ὡς κακοποιῶ καὶ τυραννικᾶς.

Κεφ. ζ΄.

ΟΤΙ ΑΛΟΓΙΣΤΟΣ Η ΦΟΡΑ ΤΗΣ ΤΥΧΗΣ.

1 Μενάνδρου Κιθαριστοῦ [281.]

Ὡς ποικίλον πρᾶγμ' ἐστι καὶ [a] πλάνον τύχη.

[c] ἑτέραις] ἁτέραις V.
[d] αἰτίας] αἰτίαις A.
[e] ἀτυχὰ] ἁ τύχα V. ἀτύχα A.
[f] ὦν ἡ] ὦν καὶ V. A.
[g] τὸ—γινόμενον] τῶν—γινομένων A. ubi mox φύσιν et infra φύσεως.
[h] ἐν τινα] ἔντιν' V. A. Vid. Floril. T. I. p. 37. n. [h].
[i] ἀνθρώπινα] ἀνθρωπίνα A. ἀνθρώπια V.
[k] τὸ ἐπισυμβαῖνον] ἐπὶ τὸ συμβαῖνον A. Cant.
[l] παραλόγως] παραλόγως τε καὶ ἀπροαιρέτως τούτοις V.
[m] ἀπροαιρέτως] ἀπροαισθήτως A. cum Cant. Non vere Heerenius in eo codice reperiri ait ἀπροαιρέτως.
[n] τῷδε] Sic A. Cant. Nescio unde Heeren. τούτῳ.
[o] ἔχοντα] ἔχοντι A.
[p] παντὶ πάντα] ποτὶ πάντα V. A.
[q] καὶ ἄλλος] ἄλογος V. A.
[r] ἐπικρατευσάσας] Sic Heeren. ἐπικρατεύσασα A. Cant.

1.

[a] πλάνον] πλάνου A.

2 Χαιρήμονος.

Τὸ τῆς τύχης τοι μεταβολὰς πολλὰς ἔχει.

3 Μενάνδρου Προγάμων [406.]

Τυφλόν γε καὶ δύστηνόν ἐστιν ἡ τύχη.

4 Σοφοκλέους Οἰδίποδι [Tyr. 977.]

[214] Τί δ' ἂν [a]φοβοῖτ' ἄνθρωπος ᾧ τὰ τῆς τύχης
κρατεῖ, πρόνοια δ' ἐστὶν οὐδενὸς σαφής;

5 Μενάνδρου [771.]

Οὐδὲν κατὰ λόγον [a]γίνεθ' ὧν ποιεῖ τύχη.

6 Εὐριπίδου [a]Ἑλένης [717 = 712.]

Σκέψαι γὰρ, ὁ θεὸς [b]ὡς ἔχει τι ποικίλον
καὶ δυστέκμαρτον, εὖ δέ πως ἀναστρέφει
ἐκεῖσε κἀκεῖσ' ἀναφέρων· ὁ μὲν πονεῖ,
ὁ δ' οὐ [c]πονήσας αὖθις [d]ὄλλυται κακῶς,
βέβαιον οὐδὲν τῆς ἀεὶ τύχης ἔχων.

7 Μενάνδρου Ξενολόγῳ [344.]

Οὕτως ἀσυλλόγιστον [a]ἡ τύχη ποιεῖ
τὸ συμφέρον, τί πότ' ἐστιν, ἀνθρώπου βίῳ·
[216] [[b]οὐ χρῆται νόμοις καθ' οὓς κρίνει πράγματα,]
οὐδ' ἔστιν εἰπεῖν ζῶντα, ταῦτ' οὐ πείσομαι.

[c]Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ [701.]

Πρὸς τὰς τύχας γὰρ τὰς φρένας κεκτήμεθα.

8 [a]Εὐριπίδου Δανάης [4.]

Ἐς ταυτὸν ἥκειν φημὶ τὰς [b]βροτῶν τύχας,

4.

[a] φοβεῖτ'] φοβῶτ' A. V. φοβῷ τε E.

5.

[a] γίνεθ'] γίνεσθαι A.

6.

[a] Ἑλένης] ἐλενίου A.
[b] ὡς] ὅς V. A.
[c] πονήσας] πονέσας A.
[d] ὀλλεῖται] ὄλλυται V. A.

7.

[a] τύχη] ἡ τύχη A.
[b] οὐ χρῆται] Hunc versum utpote aliunde illatum uncis inclusit Meineke.
[c] Εὐριπίδου] Lemma deest A. *Eurip. Hippol.* Canteri marg.

8.

[a] Εὐριπίδου Δανάης] Hoc lemma ad latus versus 6. οὕτω δὲ in A. legitur; qui a præcedentibus ibidem sejungitur.

τόνδ' ὃν καλοῦσιν αἰθέρ', ᾧ τάδ' ἐστὶ δή.
[218] οὗτος θέρους τε λαμπρὸν ἐκλάμπει σέλας,
χειμῶνά τ' αὔξει, συντιθεὶς πυκνὸν νέφος·
θάλλειν τε καὶ μὴ, ζῆν τε καὶ φθίνειν ποιεῖ·
οὕτω [c]δὲ θνητῶν σπέρμα, τῶν μὲν εὐτυχεῖ
λαμπρᾷ γαλήνῃ, [d]τῶν δὲ συννεφεῖ πάλιν,
ζῶσίν τε σὺν κακοῖσιν, [e]οἱ δ' ὄλβου μέτα
[f]φθίνουσ', ἐτείοις προσφερεῖς μεταλλαγαῖς.

9

[a]'ΕΠΙΚΟΥΡΟΣ [aa]ἄστατον [b]αἰτίαν προσώποις, χρόνοις, τρόποις.

'ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ καὶ 'ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ [c]ἄδηλον αἰτίαν ἀνθρωπίνῳ λογισμῷ· ἃ μὲν γὰρ εἶναι κατ' ἀνάγκην, [d]ἃ δὲ καθ' εἱμαρμένην, ἃ δὲ κατὰ προαίρεσιν, ἃ δὲ [e]κατὰ τύχην, ἃ δὲ κατὰ τὸ αὐτόματον. Τύχη ἀτάκτου [f]ἐνεργείας ἐστὶ προσηγορία.

10 [a]Διωτογενέος Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ 'Οσιότητος.

[220] [b]'Επεὶ γὰρ [c]τέτταρες αἰτίαι τὰ σύμπαντα περαίνοντι καὶ ἐπὶ [d]τέλος ἐπιτίθεντι, φύσις καὶ νόμος καὶ τύχα καὶ τέχνα, καὶ [e]τῶν μὲν [f]ἐξ ἄθεος ποτὶ ξυμφωνίαν [g]πολιτικὰν p. 17.

[b] βροτῶν] τῶν βροτῶν A. θνητῶν Heeren. nescio unde.
[c] δὲ—σπέρμα τῶν] δὴ—σπερμάτων A. Cant.
[d] τῶν] τὸν A. et mox συννέφει.
[e] οἱ] ὁ A.
[f] φθίνουσ', ἐτείοις προσφερεῖς] φθίνου δ' αἰτίοις προσφέροις A. et fere Cant. Correxit Valckenærius.

9.

[a] 'Επίκουρος A. in marg. pro lemmate, om. in contextu: et sic mox 'Αναξαγόρας κ. οἱ Σ.
[aa] ἄστατον] Plut. de pl. Ph. I. 29. et Galen. c. 10. pro ἄστατον legunt ἀσύστατον.
[b] αἰτίας] αἰτίαν V. A. E.
[c] ἄδηλον] ἄδειλον V. δειλον A. sine acc.
[d] ἃ δὲ καθ' εἱμαρμ.] ἃ καὶ καθ' εἱμ. V.
[e] κατὰ ψυχὴν] κατὰ τύχην V. A.
[f] ἐνίως] ἐνεργείας V. A.

10.

[a] Διοτογενέος] Διοτογενέους A.
[b] 'Επεὶ γὰρ] 'Επὶ γὰρ V. A. E.
[c] τέττορες] τέτταρες A. Cant. τέτορες Florileg. XLIII. 130.
[d] τέλος] ἐπὶ τέλος A. cum Flor. ἐπὶ delet Heeren. Supra περαίνουσι A. Cant.
[e] τῶν] τοῦ A.
[f] ἐξ ἄθεος] ἐξάθεος V. A.
[g] πολιτικῶν] Sic A. Cant. necnon ed. Trinc. et mss. in Floril.

φερόντων νόμος [h] ἐπιστάτης καὶ δημιουργὸς, τῶν δὲ διὰ [i] φρονάσιος ἀνθρωπίνας [k] τελεωθέντων τέχνα λέγοιτο [l] μάτηρ τε καὶ ἁγεμὼν ἦμεν, τῶν δὲ εἰκᾶ τε καὶ ὡς ἔτυχεν ἀπὸ [m] τοῦ αὐτομάτου ὁμοίως ποτιπιπτόντων τοῖς χρηστοῖς τε καὶ [222] πονηροῖς, τύχαν τῶν τοιούτων αἰτίαν [n] φασοῦμες· [o] ταύταν δὲ οὔτ' ἐν μέτρῳ οὔτ' ἐν ὅρῳ [p] τεταγμέναν καὶ πεφρονημένως ἕκαστα [q] ποιέν· † γεννηθεῖσα δὲ ἡ ἐξ αὐτῶν τῷ [r] γένεος ἄμφω κινεῖται.

Κεφ. η'.

ΠΕΡΙ ΧΡΟΝΟΥ ΟΥΣΙΑΣ ΚΑΙ ΜΕΡΩΝ ΚΑΙ ΠΟΣΩΝ ΕΙΗ ΑΙΤΙΟΣ.

1 Σοφοκλέους [657.]

Πάντ' ἐκκαλύπτων ὁ χρόνος εἰς [a] τὸ φῶς ἄγει.

2 Ξενοφάνους.

[224] Οὔ τοι ἀπ' ἀρχῆς πάντα θεοὶ θνητοῖς [a] παρέδειξαν,
ἀλλὰ [b] χρόνῳ ζητοῦντες [c] ἐφευρίσκουσιν ἄμεινον.

3 Φιλήμονος [152.]

Ὦ Πάμφιλ', ὁ χρόνος οὐ μόνον τὰ σώματα
αὔξει βαδίζων, ἀλλὰ καὶ τὰ πράγματα.

h ἐπιστάτης] ἐπίστατος A.

i φρονασίας ἀνθρωπίνας] φρονασίας ἀνθρωπείας A. διαφρονάσιας ἀνθρωπίνας ms. Par. in Floril.

k τελεωθέντων] Sic Heeren. τελεωθάντων Canter. τελεθέντων V. A. τέλεθόντων Floril. ubi Gesn. τελεσθέντων.

l Post μάτηρ (μάταρ A.) add. τε A. V.

m τῶ αὐτομάτω] τοῦ αὐτομάτου A. Floril.

n φασοῦμεν] φασοῦμες V. φατοῦρμες A.

o ταύταν bene exhibet Floril. pro ταῦτα, referendum enim est ad τύχαν. HEEREN.

p τεταγμένως] τεταγμένα καὶ πεπρωνημένως V. τεταγμέναν κ. πεπρονημ[s] A.

q ποιέν] ποῖεν A.

r γένος] γενέως A. γένεος Floril.

1.

a τὸ φῶς] τὸ addidit Grotius.

2.

a παρέδειξαν] ἔδειξα[αν] A. ὑπέδειξαν Floril. XXIX. 41.

b χρόνῳ] χρόνον A.

c ἐφευρίσκουσιν] Sic Flor. Libri h. l. ἐφεύρισκον.

4 [[a]]

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν τῶν [b]ἐν ἀνθρώποις ὅ τι
οὐκ ἐν χρόνῳ ζητοῦσιν ἐξευρίσκεται.

5 [a]Ἀντιφάνους [304.]

Μάλιστα δ' [b]ἐκπλήττει με τῶν συνειδότων
ὁ χρόνος, ὃν ἀεὶ λανθάνειν [c]ἀμηχανῶ.

6 Θεοδέκτου.

[226] Ἀλλ' ὦ τάλαν Θυέστα, καρτέρει [a]δάκνων
ὀργῆς χαλινὸν (παρακελεύομαι δέ σοι)
[b]τεθηγμένον, ἐν μυρίοις ἄλλοις χρόνοις
τὰ πάντ' ἀμαυροῖ, καὶ ὑπὸ χεῖρα λαμβάνει.

7 Ἀγάθωνος.

[a]Οὐπώποτ' ἠξίωσα χρήσασθαι τρόποις.

8 Μενάνδρου [803.]

Πᾶν τοὔργον ὀρθῶς ἐκμαθεῖν χρόνου μέτα.

9 Τοῦ αὐτοῦ [689.]

Ὦ δέσποτ', [a]ὦ 'ναξ, ἐστὶ τοῖς σοφοῖς βροτῶν
χρόνῳ σκοπεῖσθαι τῆς ἀληθείας πέρι.

10 [a]Κριτία.

[228] Ὁ χρόνος ἁπάσης [b]ἐστὶν ὀργῆς φάρμακον.

4.

a Hoc fragm. Chæremoni tribuit Canter. ἀδέσποτον relinquit V. et sic, opinor, A.

b ἐν ante ἀνθρώποις deest V.

5.

a Ἀντιφάνους] Sic A. ut videtur.

b Post ἐκπλήττει add. με V. A. E.

c ἀμηχανῶ] ἀμηχανῶν V.

6.

a δανθανὼν] δαθανών V. δαθανὸν A. δάκνων Grotius.

b τεθηγμένον· ἐν ἄλλοις μυρίοις χρόνοις] Sic Cant. et A. nisi quod habet τεθειγμένον. Grotius, τιθέμενος εἰν ἄλλοισι μυρίοις, χρόνος. Ruhnkenius, probante Valckenærio ad Eurip. Hippol. 689. δεδηγμένον ἐν ἄλλοισι μυρίοις, χρόνος. Ms. Vat. teste Heerenio σὺν ἄλλοις μυρίοις. In re incerta Canterum secutus sum.

7.

a Οὐ πώποτ'] Sic A. οὐπώτ' Canter.

9.

a ὦ 'ναξ] Sic Heeren. ἄναξ A. Cant.

10.

a Κριτία] Sic A. Κριτίου Cant.

b ἐστὶν ὀργῆς φαρμάκων] ἐ. ὀ. φάρμακον A. ὀργῆς ἐστι φάρμακον V.

11

Μετὰ τὴν σκιὰν τάχιστα γηράσκει χρόνος.

12 [a][Νικοστράτου 29.]

Πάλιν χρόνῳ τἀρχαῖα καινὰ γίγνεται.

13 Νικοστράτου [30.]

Οὐκ ἔστι [a]δυσαρεστότερον οὐδὲ ἓν χρόνου,
οὐδέποτ᾽ ἀρέσκει ταυτὰ τούτῳ τῷ θεῷ.

14 [a]Λακώνων.

[230] Σοφὸν λέγουσι τὸν χρόνον πεφυκέναι.

15

[a]Οὐκ ἔστιν μείζων βάσανος χρόνου [b]οὐδενὸς ἔργου,
ὃς καὶ ὑπὸ στέρνοις ἀνδρὸς ἔδειξε νόον.

16 [a]᾽Αγάθωνος.

[b]῎Ωφελεν ὡς ἀφανὴς οὕτω φανερώτατος εἶναι
καιρὸς, ὃς αὔξάνεται πλεῖστον ἀπ᾽ [c]εὐλαβίης.

17 [Σοφοκλέους 284.]

Πρὸς ταῦτα [a]κρύπτε μηδὲν, ὡς [b]ὁ πάνθ᾽ ὁρῶν
καὶ πάντ᾽ ἀκούων πάντ᾽ ἀναπτύσσει χρόνος.

12.

a Nicostrato v. h. tribuit Cant cum Grot. In codd. V. A. E. Nicostrati nomen ad proximum trahitur. Legitur autem is in codd. continuo cum nostro, unde probabile est, utrumque locum Nicostrati esse. HEEREN.

13.

a δυσάρεστον] δυσαρεστότατον V. δυσαρεσκότατον A. E. δυσαρεστώτερον Heeren. οὐδὲ ἓν Grotius pro οὐδὲν.

14.

a Λακώνων] Λακόνων A. An Cratini? An Eupolidis? Incerto tribuit Grotius.

15.

a Οὐκ ἔστιν] Citat Simonidis hos versus ἐκ τῶν ἐπιγραμμάτων Joannes Stobæus in libro ἐκλογῶν φυσικῶν γνωμῶν. URSINUS. Carm. Nov. ill. fem. p. 335. Grotius in marg. *Incertus Caco.* Nihil A. in marg. Simonidi tribuitur in Anthol. Pal. Append. n. 84.

b οὐδὲν] οὐδενὸς V. A. E.

16.

a ᾽Αγάθωνος] ᾽Αγάθονος A. ᾽Αγάθων. μόν. Cant.

b ῎Ωφελεν] ὤφελον A. Cant.

c εὐλαβίης] εὐλαβείης V. A.

17.

a κρύπτε] κρύπτεται A. Cant. Fragmentum ἀδέσποτον est in A. Cant.

b ἅπανθ᾽] ὁ πάνθ᾽ V. A. E.

18 Σοφοκλέους [658.]
[a] Χρόνος αὖ, χρόνος, ἅμα κραταιᾷ
τερμοσύνᾳ βίου
πόλλ' ἀνευρίσκει σοφὰ μαιομένοις.

19 [a] Εὐριπίδου Πηνελόπ. [Melanipp. 13.]
[232] Οὐκ ἔστι πράττοντάς τι μοχθηρὸν λαθεῖν,
ὀξὺ βλέπει γὰρ ὁ χρόνος, ὃς τὰ πάνθ' ὁρᾷ.

20 [a] Εὐριπίδης Αἰόλῳ [26.]
Ὁ χρόνος ἅπαντα τοῖσιν ὕστερον φράσει,
[b] λάλος ἐστὶν οὗτος, οὐκ ἐρωτῶσιν λέγει.

21 Σοφοκλέους Οἰδίποδι [Tyr. 614.]
Χρόνος δίκαιον ἄνδρα δείκνυσι μόνος,
κακὸν δὲ κἂν ἐν ἡμέρᾳ γνοίης μιᾷ.

22 Σιμωνίδου Ἐπιγραμμάτων.
[a] Ὅτι χρόνος ὀξὺς ὀδόντας
καὶ πάντα ψήχει καὶ τὰ βιαιότατα.

23 [a] Σοφοκλέους Αἴαντι [646.]
[234] Ἅπανθ' ὁ μακρὸς κἀναρίθμητος χρόνος
ποιεῖ τ' ἄδηλα, καὶ φανέντα κρύπτεται.
[b] Κοὐκ ἔστ' ἄελπτον οὐδὲν, ἀλλ' ἁλίσκεται
χ' ὡ δεινὸς ὅρκος, [c] χ' αἱ περισκελεῖς φρένες.

18.

[a] Χρόνος αὖ χρόνος ἅμα κραταιᾷ τερμοσύνα· βίου πολλ' ἀνευρίσκει σοφὰ μαιομένοις V. E. A.

19.

[a] Εὐριπίδου] Sic Cant. deest lemma A.

20.

[a] Εὐριπίδης] Sic A. Deest lemma Cant.

[b] λάλος] Sic Canter. emend. Libri ἄλλος.

22.

[a] Ὅτι] Sic A. οὔτοι Canter. ὅ τοι f. l. Bergkius n. 90. qui v. seq. edidit πάντα καταψήχει, ubi καὶ πάντα ψύχη Cant. κ. π. ψύχει A. V. κ. π. σμύχει Grotius.

23.

[a] Σοφοκλέους] Φιλήμονος A.

[b] κοὐκ] Sic Heeren. cum Sophocl. οὐκ libri. Separat a præc. A. qui add. in marg. Σοφοκλέους αἴαντι.

[c] χ' αἱ] καὶ A.

24 [Τοῦ αὐτοῦ 714.]

Πάνθ' ὁ χρόνος
ὁ μέγας μαραίνει.

25 Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ [Καλυπτ. 15.]

Χρόνος διέρπων πάντ' ἀληθεύειν φιλεῖ.

26 Φιλήμονος [197.]

Χρόνος τὰ κρυπτὰ πάντα εἰς φάος ἄγει.

27

[236] Ἀλλὰ ταῦτα μὲν χρόνος
δείξει· μόνος γάρ ἐστιν ἀνθρώπων [a]κριτής.

28 [a]Χαιρήμονος [196.]

Χρόνος δίκαιον ἄνδρα μηνύει ποτέ.

29

[a]Χρόνῳ τὰ πάντα γίγνεται καὶ κρίνεται. p. 18.

30

[a]Σχολῇ βαδίζων ὁ χρόνος [b]ἀφικνοῖτ' ἄν.

31 Μενάνδρου [560.]

Οὐκ ἔστ' ἄπιστον οὐδὲν ἐν θνητῷ βίῳ,
[a]οὐδ' ἂν γένοιτο· πολλὰ ποικίλλει χρόνος
παράδοξα καὶ θαυμαστά, καὶ [b]ζώντων τρόποι.

32

[a]Οὐκ ἔστιν οὐδὲν τῶν ἐν ἀνθρώποις, ὅ τι
οὐκ ἐν [b]χρόνῳ ζητοῦσιν [c]ἐξευρίσκεται.

27.

[a] κριτής] κριταὶ V.

28.

[a] Χαιρήμονος] Sic A. Philemoni tanquam ex eo codice et V. E. tribuit Heeren. Vid. Soph. O. T. 614.

29.

[a] Χρόνῳ] Chæremoni tribuit Cant. Deest lemma A.

30.

[a] Σχολῇ] Deest lemma A.

[b] ἀφικνεῖται τὰν] Sic Cant. ἀφικνεῖται τ̈ὰν A. ἀφικνεῖται τὸ πᾶν Grotius, ἀφικνοῖτο ἂν Heeren.

31.

[a] οὐδ' ἂν] οὐδὲν V.

[b] ζόντων] ζώντων V. A.

32.

[a] Οὐκ ἔστιν] Cum præc. copulat A. sine lemmate.

[b] Post χρόνῳ add. γε V. A. E.

[c] ἐξευρίσκεται] ἐξεύριται A.

33 [a] Φιλήμονος.

[238] Χρόνος μαλάσσει πάντα κἀξεργάζεται.

34 [Φιλήμονος 153.]

Ὅσαι τέχναι γεγόνασι, ταύτας, ὦ [a] Λάχης,
πάσας [b] ἐδίδαξεν ὁ χρόνος, οὐχ ὁ διδάσκαλος.

35

[a] Ὁ πολὺς χρόνος πάντ' ἐξελέγχει Νικοφῶν.

36 [Ἑρμίππου 1.]

[a] Ἐκεῖνός ἐστιν [b] στρογγύλος τὴν ὄψιν, ὦ πονηρὲ,
ἐντὸς δ' ἔχων περιέρχεται κυκλῷ [c] τὰ περὶ ἑαυτοῦ·
ἡμᾶς δὲ τίκτει περιτρέχων τὴν γῆν [d] ἁπαξάπασαν.
Ὀνομάζεται δ' ἐνιαυτὸς, ὢν δὲ περιφερὴς, τελευτὴν
οὐδεμίαν οὐδ' [e] ἀρχὴν ἔχει· κυκλῶν δ' ἀεὶ τὸ σῶμα
οὐ παύσεται [f] δι' ἡμέρας ὁσημέραι τροχάζων.

37 Κλεοβούλου σοφοῦ τῶν αἰνιγμάτων.

[240] Εἷς ὁ πατὴρ, παῖδες [a] δὲ δυώδεκα· τῶν [b] δὲ ἑκάστῳ
[c] κοῦραι ἑξήκοντα, [d] διάνδιχα εἶδος ἔχουσαι.
Αἱ μὲν λευκαὶ ἔασιν ἰδεῖν, αἱ δ' [e] αὖτε μέλαιναι·

33.

[a] Φιλήμονος] Sic A. ἀδέσποτον est in Cant. Chæremoni tribuit Grotius. Mox μαλάσσειν Cant.

34.

[a] Λάγης] Λάτης V. λάτῑς A. E. Λάχης Grotius.

[b] ἐδείδαξεν] ἐδίδαξεν A. E.

35.

[a] Ὁ πολὺς] ὀπ̈όπολὺς A. ubi in marg. pro lemmate ἀναγενέους.

36.

[a] Ἐκεῖνος] Falsum est quod ait Heerenius cod. A. in marg. habere ἀναγενέως Ἑρμίππου, in quo hoc fragmentum præcedenti jungitur. Quod si ita legatur in V. non male eum conjecisse arbitror Ἀθηνᾶς γοναῖς pro ἀναγενέως. Et Heerenium secutus est Meineke Fr. Com. II. p. 380.

[b] τὴν ὄ. σ.] στρογγύλος τὴν ὄψιν Meinek.

[c] τὰ περὶ ἑαυτοῦ] τὰ πάντ' ἐν αὑτῷ Meinek. τὰ παρ' ἑαυτῷ V. τὰ παρ' ἐν αὑτῷ A. τὰ περὶ ἐν αὑτῷ Cant.

[d] ἅπαξ πᾶσαν] ἁπαξάπασαν Grotius.

[e] ἄρχην ἔχει] ἔχει libris deest. Addidit Grotius.

[f] δ' ἡμέρας] δι' ἡμέρας V. A. Mox τροχάζω V.

37.

[a] δὲ deest V. A.

[b] δὲ ἑκάστῳ] δέ θ' ἑκάστῳ Anthol. Pal. XIV. 101.

[c] κοῦραι] κύρα A. Cant. κοῦραι em. Canter. in marg. παῖδες τριήκοντα Anthol. παῖδες ἔασι τριήκοντ' ἄνδιχα Diog. Laert. I. 91.

[d] διανδιχῆ] διανδιη sic V.

[e] αὖτε] αὖται V. A.

ἀθάναται [f] δέ τε οὖσαι, ἀποφθινύθουσιν ἅπασαι.

38 Μοσχίωνος.

Πρῶτον δ' ἄνειμι καὶ διαπτύξω λόγῳ
ἀρχὴν [a] βροτείου καὶ κατάστασιν βίου·
ἦν γάρ ποτ' αἰὼν κεῖνος, ἦν, ὁπηνίκα
θηρσὶν [b] διαίτας εἶχον ἐμφερεῖς βροτοὶ,
ὀρειγενῆ σπήλαια καὶ δυσηλίους
φάραγγας ἐνναίοντες· οὐδέπω γὰρ ἦν
οὔτε στεγήρης οἶκος, οὔτε [c] λαΐνοις
[d] εὐρεῖα πύργοις [e] ὠχυρωμένη [f] πόλις·
[g] οὐ μὴν ἀρότροις ἀγκύλοις ἐτέμνετο
μέλαινα [h] καρποῦ βῶλος [i] ὀμπνίου τροφὸς,
οὐδ' ἐργάτης σίδηρος [k] εὐϊώτιδος
θάλλοντας οἴνης [l] ὀρχάτους ἐτημέλει,
ἀλλ' ἦν ἀκύμων [m] κοὐδὲν ἐκφύουσα γῆ·
βοραὶ δὲ σαρκοβρῶτες [n] ἀλληλοκτόνους
παρεῖχον αὐτοῖς δαῖτας, [o] ἦν δ' ὁ μὲν νόμος
ταπεινὸς, ἡ βία δὲ σύνθρονος [p] Διΐ,
ὁ δ' ἀσθενὴς ἦν τῶν ἀμεινόνων βορά.
[242] Ἐπεὶ δ' ὁ τίκτων πάντα καὶ τρέφων χρόνος
τὸν θνητὸν [q] ἠλλοίωσεν ἔμπαλιν βίον,

[f] δέ τε] τε om. A.

38.

[a] βροτίου] βροτείου V. A.
[b] διαίτας] διαίρας A.
[c] λαγίνοις] λαγγήνοις V. A. E. λαΐνοις em. Canter.
[d] εὐρία] εὐρεῖα A. V.
[e] ὠχυρωμένη] ὠχυρωμένους V. A.
[f] πόλις] Sic A. πόλει Canter.
[g] Οὐ μὴν ἀρότροις] Sic A. Cant. οὐ μὲν ἀρότροισιν Heeren.
[h] καρπὸν] καρποῦ V. A.
[i] ὀμπίου] ὀμπνίου V. A. E.
[k] εὐϊώτιδος] Sic Grotius. εὐγώτιδος A. Cant.
[l] ὀρχάτους μένει] ὀρχάτουσε τη μέλλει V. ὀρχάτουσε τημέλεῖ A. ἐτημέλει Salmasius.
[m] κοὐδὲν ἐκφύουσα] Sic Grotius. κωφεύουσα ῥέουσα γῆ libri, in quibus verbis quid lateat non perspicio. Heerenius edidit κωφά τ' ἐκφύουσα.
[n] ἀλληλοκτόνους] ἀλληλαυτόνους A.
[o] δ' ὁ μὲν] ἦν δ' ὁ μὲν V. A.
[p] νηδία] νηΐ V. A. E. Διΐ Grotius. δίκῃ conj. Canter.
[q] ἀλλοίωσεν] ἠλλοίωσεν V. A.

εἴτ' οὖν μέριμναν τὴν [r] Προμηθέως σπάσας,
εἴτ' οὖν ἀνάγκην, εἴτε τῇ μακρᾷ τριβῇ
αὐτὴν παρασχὼν τὴν φύσιν διδάσκαλον·
τόθ' εὑρέθη μὲν καρπὸς ἡμέρου τροφῆς
Δήμητρος ἁγνῆς, εὑρέθη δὲ Βακχίου
[s] γλυκεῖα πηγή· γαῖα [t] δ' ἡ πρὶν ἄσπορος
ἤδη ζυγουλκοῖς βουσὶν ἠροτρεύετο.
[u] αὔτη δ' ἐπυργώσαντο, καὶ περισκεπεῖς
ἔτευξαν οἴκους· καὶ τὸν ἠγριωμένον
εἰς ἥμερον δίαιταν ἤγαγον βίον·
κἀκ τοῦδε τοὺς θανόντας ὥρισεν νόμος
τύμβοις καλύπτειν, κἀπιμοιρᾶσθαι κόνιν,
[x] νέκρους τ' ἀθάπτους μηδ' ἐν ὀφθαλμοῖς ἐᾶν,
τῆς [y] πρόσθε θοίνης μνημόνευμα [z] δυσσεβές.

39 Ἐκ τῶν Βίωνος [a] Βουκολικῶν.

[246] Εἴαρος, [b] ὦ Μύρσων, ἢ χείματος, ἢ [c] φθινοπώρου,
ἢ θέρεος, τί [d] τοι ἁδύ; Τί δὲ πλέον εὔχεαι ἐλθεῖν;
ἢ θέρος, ἀνίκα πάντα τελείεται ἅσσα μογεῦμες,
ἢ γλυκερὸν φθινόπωρον, [e] ὅτ' ἀνδράσι λιμὸς [f] ἐλαφρά,
ἢ καὶ χεῖμα δύσεργον; ἐπεὶ καὶ χείματι πολλοὶ
θαλπόμενοι [g] θέλγονται ἀεργείῃ τε καὶ ὄκνῳ. p. 19.
[h] Ἦ τοι καλὸν ἔαρ πλέον εὔαδεν; εἶπε τί τοι φρὴν

[r] Προμηθέως σπάσας] Προμηθέως πᾶσαν V. A. E. Mox τόδ' εὑρέθη A.

[s] γλυκία] γλυκεῖα V. A.

[t] δ' ἡ πρὶν] δ' ἦν A.

[u] αὔτη δ' ἐπυργώσαντο] ἄστη δ' ἐπύργωσάν τε Piersonus et Valckenærius.

[x] νέκρους τ'] τε om. A. Cant. νέκρους δ' Valckenærius.

[y] πρόσθε] πρώτης V. πρόσθεν A. E.

[z] δυσσεβές] δυσσεβοῦς Valckenær.

39.

[a] Βουκολικῶν] βουκολίων A. Cant.

[b] ὦ Μύρσων] ὁ Μύρσων A.

[c] φθινοπώρω] φθινοπώρου A. Cant. qui v. seq. ἐλθεῖν non ἔνθην.

[d] τοι] σοι A.

[e] ὅκ'] ὅτ' A. Cant.

[f] ἔλαφρος] ἐλαφρὰ V. A.

[g] θάλποντας] θέλγονται Ursinus. τέρπονται corr. Grotius.

[h] ἦ τοι etc.] ἦτοι καλὸν ἐὰρ πλέον εὖαδ' ἐνεῖπέ τοι τιφρὸν V. A. E.

[i] αἱρεῖται; [j] λαλέεν γὰρ ἐπέτραπεν [k] ἁ σχολὰ ἁμῖν.
Κρίνειν οὐκ ἐπέοικε θεήϊα ἔργα βροτοῖσι,
πάντα γὰρ ἱερὰ ταῦτα καὶ [l] ἁδέα, σεῦ δὲ ἕκατι
ἐξερέω, Κλεόδαμε, τό μοι [m] πέλεν ἅδιον ἄλλων.
οὐκ ἐθέλω θέρος ἦμεν, ἐπεὶ τόκα μ' ἅλιος ὀπτῇ·
οὐκ ἐθέλω φθινόπωρον, ἐπεὶ νόσον ὥρια τίκτει·
[248] οὖλον χεῖμα φέρειν [n] νιφετὸν [o] κρυμούς τε φοβεῦμαι.
εἶαρ ἐμοὶ τριπόθατον ὅλῳ λυκάβαντι παρείη,
ἁνίκα μήτε κρύος, [p] μήθ' ἅλιος ἄμμε βαρύνει·
εἴαρι πάντα κύει, πάντ' εἴαρος ἁδέα βλάστη,
χὰ νὺξ ἀνθρώποισιν ἴσα καὶ ὁμοίϊος ἀώς.

40

[a] ΘΑΛΗΣ ἐρωτηθεὶς, τί [b] σοφώτατον; ἔφη, [c] χρόνος· ἀνευρίσκει γὰρ τὰ πάντα.

ΠΕΡΙΑΝΔΡΟΣ ἐρωτηθεὶς, τί πάντων αἴτιον; ἔφη, χρόνος.

[d] ΘΑΛΗΣ ἔφησεν, ὅτι σαφέστατος ἔλεγχος πραγμάτων

[i] αἱρεῖται] αἱρεῖ A. Verba λαλέον—ἡμῖν desunt A.

[j] λαλέον] λαλέεν V.

[k] ἀσχολὰν] ἄσχολα V. E.

[l] ἀδέας εὐδ' ἑκάτι] ἁδέα σεῦ δὲ ἕκατι V. A. Mox ἐξελέω A.

[m] πελανάδιον] πέλεν ἅδιον V. A. E.

[n] νιφετὸν κρυμούς τε] Sic Ursinus. νιφετὸν κρυμνόν τε Canter. νίφετον κριμός τε A. non ν. κρύος τε ut affirmat Heerenius in annotatione textui subjecta. κρυπνὸν Grotius errore typothetæ.

[o] κρυμνὸν] κρύος V.

[p] μηθ'—ἄμμε] μήτ'— ἄμμϊ A.

40.

Ex brevibus hisce philosophorum sententiis perpaucæ tantum leguntur ap. Plut. de Plac. I. 21. 22. et ap. Galen. X. 5. reliqua Stobæus solus sibi vindicat. HEEREN.

[a] Primum hoc Thaletis placitum servavit quoque Diog. Laert. I. 35. Σοφώτατον χρόνος, ἀνευρίσκει γὰρ ἅπαντα. Paulo tamen aliter Plutarch. in Conviv. Sept. Sap. Op. vol. II. p. 153. apud quem Thales ad quæstionem τί σοφώτατον; Χρόνος, inquit, τὰ μὲν γὰρ ἐξηύρηκε ἤδη, τὰ δὲ ἐξευρήσει. Ad quod Thaletis responsum respicit quoque Aristot. Phys. IV. 13. ἐν δὲ τῷ χρόνῳ πάντα γίνεται καὶ φθείρεται, διὸ καὶ οἱ μὲν σοφώτατον ἔλεγον. HEEREN.

[b] σοφώτερον] σοφώτατον V. A.

[c] ἔφη ante χρόνος inserit A.

[d] Θαλῆς] Præter Thaletem eadem haec sententia tribuitur Simonidi ap. Simplic. ad Phys. Ari-

ἁπάντων ἐστὶν ὁ χρόνος, [e]οὗτος γὰρ τὴν ἀλήθειαν ἐμφανίζει.

[[f]Εὐριφῶν, ὁ ἰατρὸς, ἐρωτηθεὶς τὸν διδάσκαλον παρ' ᾧ ἐπαιδεύθη; παρὰ τῷ χρόνῳ, ἔφη.]

[250] ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ τὴν σφαῖραν τοῦ [g]περιέχοντος.

ἘΡΑΤΟΣΘΕΝΗΣ, τὴν τοῦ ἡλίου [h]πορείαν.

[i]ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ, χρόνου [k]οὐσίαν αὐτὴν τὴν κίνησιν, οἱ πλείους ἀγέννητον τὸν χρόνον.

ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ, μέτρον τῶν γεννητῶν καὶ κίνησιν ἀΐδιον.

Μέτρον [l]βραδύτητος [m]ἢ τάχους, εἶπε ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ.

ἙΣΤΙΑΙΟΣ ὁ Περίνθιος, φυσικὸς, [n]φορὰν ἄστρων πρὸς ἄλληλα.

[o]ΣΤΡΑΤΩΝ, [p]τῶν ἐν κινήσει καὶ ἠρεμίᾳ ποσόν.

[252] ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ [q]σύμπτωμα [συμπτωμάτων], τοῦτο δ' ἐστὶ παρακολούθημα κινήσεων.

stot. p. 179. Unde Thaletis nomen male ex superioribus repetitum, et vel cum Simonidis vel cum alio nomine permutatum esse, suspicari licet. HEEREN.

[e] Post οὗτος add. γὰρ A. E.

[f] Verba Εὐριφῶν—ἔφη desunt V. A. E.

[g] περιέχοντος] Obscuram Pythagoræ de tempore sententiam, quam habet quoque Plut. optime illustrat Simplic. ad Phys. p. 165. Οἱ μὲν τὴν τοῦ ὅλου κίνησιν εἶναι τὸν χρόνον φασίν——οἱ δὲ τὴν σφαῖραν αὐτὴν τοῦ οὐρανοῦ, ὡς τοὺς Πυθαγορικοὺς ἱστοροῦσι λέγειν, οἱ παρακούσαντες ἴσως τοῦ Ἀρχύτου, λέγοντος καθόλου τὸν χρόνον διάστημα τῆς τοῦ παντὸς φύσεως. Patet itaque, τοῦ περιέχοντος dictum esse pro τοῦ οὐρανοῦ. Ap. Galen. legitur τοῦ περιέχοντος ἡμᾶς οὐρανοῦ. HEEREN.

[h] πορείας] πορείαν A. E.

[i] Οἱ Στωϊκοὶ] Stoicorum placitum aliter affertur a Plutarcho, aliter a Galeno. Plutarch. Οἱ πλείους τῶν Στωϊκῶν αὐτὴν τὴν κίνησιν, καὶ οἱ μὲν πλείους ἀγέννητον τὸν χρόνον.——Galen. Τοῦ δὲ χρόνου οὐσίαν οἱ Στωϊκοὶ τὴν τοῦ ἡλίου κίνησιν νομίζουσι. HEEREN.

[k] οὐσίας] οὐσίαν V. A. E.

[l] βαρύτητος] βραδύτητος V. A.

[m] ἢ τάχους] Heerenius dedit καὶ ταχύτητος.

[n] φόρων] φορὰν V. A.

[o] Στράτων] Sext. Pyrrh. Hyp. III. 137. et adv. Phys. II. 177. Στράτων, ὁ φυσικὸς, ἔλεγεν χρόνον ὑπάρχειν μέτρον πάσης κινήσεως καὶ διαμονῆς. Quod enim ibi μέτρον, id n. l. est τὸ ποσόν. Copiosius tamen hanc sententiam explicat, præter Sext. l. c. Simplic. ad Aristot. Phys. p. 168 B. HEEREN.

[p] τῶν] τὸν V. A.

[q] σύμπτωμα συμπτωμάτων] In Sext. adv. Phys. II. s. 238. dicitur

'ΑΝΤΙΦΑΝΗΣ καὶ ΚΡΙΤΟΛΑΟΣ, νόημα [r] ἢ μέτρον τὸν χρόνον, [s] οὐχ ὑπόστασιν.

[[t] 'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ] [u] τὸν δὲ χρόνον ἀριθμὸν εἶναι κινήσεως [x] κατὰ τὸ πρότερον, καὶ τὸ ὕστερον, οὔτ' ἀρχὴν ἔχοντα οὔτε τελευτὴν, ἀλλ' ἀεὶ ὄντα, καὶ ἀεὶ γιγνόμενον, [y] εἶναι δὲ συνεχῆ καὶ διαιρετὸν, λαμβάνεσθαι [z] γὰρ αὐτοῦ τὸ μὲν πρότερον τὸ δ' ὕστερον, ὅρον δ' ὑπάρχειν ἑκατέρων τὸ νῦν, τοῦτο γὰρ νοεῖσθαι τοῦ μὲν προτέρου [a] πέρας, τοῦ δὲ μέλλοντος ἀρχήν.

Οἱ 'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΙΚΟΙ, τὸν χρόνον ἀριθμὸν [b] τῶν κατὰ [c] τὸ νῦν ἀφοριζομένων κινήσεων, τὸ δὲ νῦν εἶναι μονάδα στάσεως ἐν κινήσει, κίνησιν δ' οὐκ εἶναι τὸν χρόνον, οὐ μὴν
[254] [d] ἄνευ κινήσεως· λέγεσθαι γὰρ κίνησιν [e] βραδεῖαν καὶ ταχεῖαν, οὐκ ἔτι δὲ χρόνον, ἀλλὰ πολὺν καὶ ὀλίγον. Ἔτι τὸ p. 20.
μὲν πλεῖον καὶ τοὔλαττον ἀριθμῷ κρίνεσθαι, [f] χρόνῳ δὲ τὴν πλείω καὶ ἐλάττω κίνησιν. Οὐκ ἄρα κίνησις ὁ χρόνος, οὐ μὴν κινήσεως κεχωρισμένος, ἀριθμὸν γὰρ εἶναι κινήσεως συνεχῆ κατὰ τὸ πρότερον καὶ ὕστερον.

ΖΗΝΩΝ ἔφησε, χρόνον εἶναι [g] κινήσεως διάστημα, τοῦτο

Epicurus tempus explicasse per σύμπτωμα συμπτωμάτων, unde haud levis oritur suspicio, apud Stob. quoque συμπτωμάτων ex contextu excidisse. HEEREN.

[r] ἢ μέτρον] ἡμέτερον A.

[s] οὐδ'] οὐχ A.

[t] 'Αριστοτέλης A. in marg. pro lemmate. Petita hæc esse ex Aristot. Phys. IV. c. 11. 13. docet Heeren.

[u] τὰ δὲ] τὸν δὲ V. A. E.

[x] κατὰ τὸ πρότερον] κατὰ τὸ πρότερον καὶ τὸ ὕστερον οὔτ' ἀρχὴν ἔχοντα etc. V. A.

[y] εἶναι δὲ] εἶναι δὴ A. Cant.

[z] γὰρ αὐτοῦ sensu flagitante rescripsi pro παρ' αὐτοῦ. HEEREN.

[a] πέρας] τέρας A.

[b] Ante κατὰ add. τῶν V. A.

[c] τὸ νῦν] τὰ νῦν A. Cant. mutavit Heeren.

[d] ἄνευ, quod ap. Cant. [et mss.] exciderat, meo periculo addidi. Hausta enim hæc sunt ex Arist. Phys. IV. c. 10. s. f. et 11. init. Ὅτι μὲν τοίνυν οὐκ ἔστι κίνησις, (nempe ὁ χρόνος), φανερόν. Μηδὲν δὲ διαφερέτω λέγειν ἡμῖν ἐν τῷ παρόντι κίνησιν, ἢ μεταβολήν. 'Αλλὰ μὴν οὐδ' ἄνευ γε μεταβολῆς· ὅταν γὰρ etc. HEEREN.

[e] βραδείας κ. ταχείας] βραδεῖαν κ. ταχεῖαν V. A.

[f] χρόνῳ edidi pro χρόνος, pendet enim a κρίνεσθαι. HEEREN.

[g] κινήσεως] Diog. VIII. 141. χρόνον εἶναι διάστημα τῆς τοῦ κόσμου κινήσεως. Vide mox s. 42.

δὲ καὶ μέτρον καὶ κριτήριον τάχους τε καὶ βραδύτητος, [h]ὅπως ἔχει. Κατὰ τοῦτον δὲ γίνεσθαι τὰ γινόμενα, [i]καὶ τὰ περαινόμενα ἅπαντα καὶ τὰ ὄντα εἶναι.

41 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τατ. [Patrit. p. 38 b.]

Ὡς καὶ [a]περὶ τῶν τριῶν χρόνων εὑρεῖν, οὔτε γὰρ καθ' ἑαυτούς εἰσιν, οὔτε συνήνωνται· καὶ πάλιν συνήνωνται, καὶ καθ' ἑαυτούς εἰσιν. Ἐὰν [b]γὰρ χωρὶς εἶναι τοῦ παρεληλυ-
[256] θότος τὸν ἐνεστῶτα ὑπολάβῃς, ἀδύνατόν ἐστι [d]ἐνεστάναι, εἰ μὴ καὶ [e]παρεληλυθὼς γένηται· ἐκ γὰρ τοῦ ἀποιχομένου τὸ ἐνεστὸς γίνεται, καὶ ἐκ τοῦ ἐνεστῶτος τὸ μέλλον ἔρχεται. Εἰ δὲ δεῖ καὶ ἐπὶ πλέον βασανίσαι, οὕτω λογισώμεθα, τὸν μὲν παρεληλυθότα χρόνον [f]οἴχεσθαι εἰς τὸ μηκέτι εἶναι τοῦτον, τὸν δὲ μέλλοντα μὴ [ff]ὑπάρχειν ἐν τῷ μηδέπω παρεῖναι, ἀλλὰ μηδὲ τὸν ἐνεστῶτα συμπαρεῖναι ἐν τῷ μένειν. Ὃς γὰρ οὐχ ἕστηκε, ῥοπὴν ἔχων, οὐδὲ κέντρου μονὴν [g]χρόνος, πῶς ἐνεστὼς εἶναι λέγεται, ὁ μηδὲ ἑστάναι δυνάμενος; καὶ πάλιν ὁ παρεληλυθὼς συνάπτων τῷ ἐνεστῶτι, καὶ ὁ ἐνεστὼς τῷ μέλλοντι, [h]εἷς γίνεται, οὐ γὰρ χωρὶς αὐτῶν εἰσι τῇ ταυτότητι, καὶ τῇ ἑνότητι, καὶ [i]τῇ συνεχείᾳ. Οὕτω καὶ [k]συνεχὴς καὶ διεστὼς γίνεται, [l]εἷς ὢν καὶ ὁ αὐτὸς, χρόνος.

42 [a]ἈΠΟΛΛΟΔΩΡΟΣ δὲ ἐν τῇ φυσικῇ τέχνῃ οὕτως ὁρίζεται

[h] ὅπερ] ὅπως V. A.

[i] καὶ περαιν. πάντα] καὶ τὰ περ. ἅπαντα V. A.

41.

[a] περὶ] παρὰ V. A. ὥστε καὶ περὶ Patrit.

[b] γὰρ addidi de meo ut nexus constaret. In proximis ἐνεστᾶναι et ἐνεστὸς, sensu flagitante, rescripsi pro συνιστάναι et συνιστός. HEEREN.

[d] συνεστάναι—συνεστὸς] ἐνεστᾶναι—ἐνεστὸς Heeren.

[e] παρεληλυθὼς] –θος V.

[f] Post οἴχεσθαι add. εἰς τὸ μηκέτι οἴχεσθαι, εἰς τὸ μηκέτι εἶναι etc. V.

[ff] ὑπάρ A.

[g] χρόνος] Sic Heeren. χρόνου A. Cant.

[h] γίγνεται] εἷς γίνεται V. A. P.

[i] καὶ συνεχείᾳ] καὶ τῇ συνεχείᾳ A. V.

[k] συνεχῶς] συνεχὴς A.

[l] εἷς] ὡς A.

42.

Nova hic incipit paragraphus, etsi

τὸν χρόνον· Χρόνος δ' ἐστὶ τῆς τοῦ κόσμου κινήσεως διάστημα, [b]οὕτω δ' ἐστὶν ἄπειρος, ὡς ὁ πᾶς ἀριθμὸς ἄπειρος [258] λέγεται εἶναι· τὸ μὲν γάρ ἐστιν αὐτοῦ παρεληλυθὸς, τὸ δὲ ἐνεστηκὸς, τὸ δὲ μέλλον. [c]Ἐνεστάναι δὲ τὸν πάντα χρόνον, ὡς τὸν ἐνιαυτὸν ἐνεστηκέναι λέγομεν, κατὰ μείζονα περιγραφὴν, καὶ ὑπάρχειν ὁ πᾶς χρόνος λέγεται, οὐδενὸς αὐτοῦ τῶν μερῶν ὑπάρχοντος [d]ἀπαρτιζόντως.

[e]ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ τὰ μέν ἐστι κατὰ πᾶν ἄπειρα, ὡς ὁ σύμπας χρόνος· τὰ δὲ κατά τι, ὡς ὁ παρεληλυθὼς χρόνος καὶ ὁ μέλλων· κατὰ γὰρ τὸν παρόντα μόνον ἑκατέροις πεπέρασται. Τὸν δὲ χρόνον οὕτως ὁρίζεται, διάστημα κινήσεως, ἢ μέτρον τάχους τε καὶ βραδύτητος· [f]καὶ πῶς ἔχει τὸ ἐπινοούμενον κατὰ τὸ πότε τοῦ χρόνου· τὸν μὲν εἶναι παρεληλυθότα, τὸν δὲ μέλλοντα, τὸν δὲ παρόντα, [g]ὃς ἔκ τινος μέρους τοῦ παρεληλυθότος καὶ τοῦ μέλλοντος περὶ τὸν διορισμὸν αὐτὸν συνέστηκε· [h]τὸν δὲ διορισμὸν σημειώδη εἶναι. Τὸ δὲ νῦν καὶ τὰ ὅμοια ἐν πλάτει [[i]χρόνου], καὶ οὐχὶ κατ'

in Cant. ed. male sequentia prioribus junguntur. HEEREN.

[a] Post Ἀπολλωδ. add. δὲ A.

ib. Apollodorus hic commemoratus, est Atheniensis Stoicus, a Grammatico diversus. Scripta ejus passim laudat Diogenes, et inter ea quoque *artem physicam* ex qua hæc desumta sunt. cf. Diog. Laert. VII. s. 125. 135. 143. Temporis quoque definitio, quam hic exhibet Apollodorus, ex Stoicorum disciplina petita est, et supra iisdem verbis Zenoni tribuitur.—Ceterum ipse locus nihil continet, quod vel emendatione vel explicatione egeat. Leve mendum latebat in ultima voce, ubi Cant. et codd. mnscpti male exhibent ἀπαρτίζοντος pro ἀπαρτιζόντως, *accurate, proprie,* quod restituimus. HEEREN.

[b] οὕτως] οὕτω V. A. E.

[c] Ἐνεστάναι δὲ] ἑστάναι καὶ V.

[d] ἀπαρτιζόντως] Sic Heeren. ἀπαρτίζοντος A. Cant.

[e] Ποσειδώνιος] Diog. Laert. VII. 141. Ποσειδώνιος ἐν δευτέρῳ τοῦ φυσικοῦ λόγου—ἔτι δὲ καὶ τὸν χρόνον ἀσώματον, διάστημα ὄντα τῆς τοῦ κόσμου κινήσεως. Τούτου δὲ τὸν μὲν παρωχηκότα καὶ τὸν μέλλοντα ἀπείρους, τὸν δὲ ἐνεστῶτα πεπερασμένον.

[f] καὶ πῶς ἔχει τὸν] Heerenius dedit ὅπως ἔχει τὸ et mox κατὰ δὲ.

[g] ὃς] ὡς A.

[h] τὸν διορισμὸν] τὸν δὲ διορισμὸν V. A.

[i] χρόνου delendum videtur. HEEREN.

ἀπαρτισμὸν, νοεῖσθαι. Λέγεσθαι δὲ [k] τὸ νῦν καὶ κατὰ τὸν ἐλάχιστον πρὸς αἴσθησιν χρόνον, περὶ τὸν διορισμὸν τοῦ μέλλοντος καὶ παρεληλυθότος συνιστάμενον.

[260] Ὁ δὲ ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ, χρόνον εἶναι κινήσεως διάστημα, [l] καθ' ὅ ποτε λέγεται μέτρον τάχους τε καὶ βραδύτητος· ἢ τὸ παρακολουθοῦν διάστημα τῇ τοῦ κόσμου κινήσει, καὶ κατὰ μὲν τὸν χρόνον κινεῖσθαί τε [m] ἕκαστα καὶ εἶναι, εἰ μὴ ἄρα διττὸς λέγεται ὁ χρόνος, καθάπερ ἥ τε γῆ, καὶ ἡ [n] θάλασσα, καὶ τὸ κενὸν, τά τε ὅλα καὶ τὰ μέρη τὰ αὐτῶν. Ὥσπερ δὲ τὸ κενὸν [o] πᾶν ἄπειρον [p] εἶναι πάντῃ, καὶ τὸν χρόνον πάντα ἄπειρον εἶναι ἐφ' ἑκάτερα· καὶ γὰρ τὸν παρεληλυθότα καὶ τὸν μέλλοντα ἄπειρον εἶναι. [q] Ἐκφανέστατα δὲ τοῦτο λέγει, ὅτι [r] οὐθ' εἷς [s] ὅλως ἐνίσταται χρόνος. Ἐπεὶ γὰρ εἰς ἄπειρον ἡ τομὴ τῶν συνεχόντων ἐστὶ, κατὰ τὴν διαίρεσιν ταύτην καὶ πᾶς χρόνος εἰς ἄπειρον ἔχει τὴν τομήν· ὥστε [t] μήθ' ἕνα κατ' ἀπαρτισμὸν ἐνεστάναι χρόνον, ἀλλὰ κατὰ πλάτος λέγεσθαι. Μόνον δὲ ὑπάρχειν [u] φησὶ τὸν p. 21.
ἐνεστῶτα, τὸν δὲ παρῳχημένον καὶ τὸν μέλλοντα [x] ἐφεστάναι μὲν, ὑπάρχειν δὲ οὐδαμῶς, [xx] εἰ μὴ ὡς [y] καὶ κατηγορήματα ὑπάρχειν λέγεται μόνα τὰ συμβεβηκότα, οἷον τὸ περιπατεῖν ὑπάρχει μοι [z] ὅτε περιπατῶ, [a] ὅτε δὲ κατακέκλισμαι ἢ

[k] τὸν νῦν] τὸ νῦν V. A.
[l] καθ' ὃν] καθ' ὃ Heeren.
[m] ἕκαστα] ἕκαστος A.
[n] θάλασσα] θάλαττα A. Mox τὰ ante αὐτῶν omisit Heeren.
[o] πᾶν] πᾶς V.
[p] εἶναι] ἐστι Heeren.
[q] ἐκφανέστατα] ἐμφανέστατα A.
[r] οὐκ εἷς] οὐθ' εἷς V. οὐδεὶς A.
[s] ὅλος] ὅλως A.
[t] μήθ' ἕνα] μηδ' ἕνα A.
[u] φησὶ] φασὶ A. V.
[x] ἐφεστάναι] ὑφεστάναι V. ὑεστάναι A.
[xx] εἴσιν] εἰ μὴ recte Cant. jam in marg. emendaverat pro εἰσίν. Sensus enim est: *Tempus futurum et præteritum latiori tantum sensu dici* ὑπάρχειν, *exsistere; ut ea quoque attributa, quæ non ad naturam hominis pertinent, sed casu tantum interdum ei competunt, ut decumbere, ambulare, rel. exsistere dicuntur.* HEEREN. Nihil hujusmodi in Canteri marg.
[y] καὶ del. A.
[z] ὅτε] ἔτι V. A.
[a] ὅτε] ὅτι A. qui mox κατακεκλῖσμαι.

κάθημαι οὐχ ὑπάρχει. Ἔαρ δὲ ἔτους ὥραν [b] κεκραμένην ἐκ [262] *χειμῶνος ἀπολήγοντος καὶ θέρους [c] ἀρχομένου· ἢ τὴν μετὰ χειμῶνα ὥραν πρὸ θέρους. Θέρος δὲ, ὥραν ἔτους τὴν μάλιστ' ἀφ' ἡλίου [d] διακεκαυμένην. Μετόπωρον δὲ, ὥραν ἔτους τὴν μετὰ θέρος μὲν, πρὸ χειμῶνος δὲ, [e] κεκραμένην. Χειμῶνα δὲ, ὥραν ἔτους τὴν μάλιστα κατεψυγμένην, ἢ τὴν [f] τῷ περὶ γῆν ἀέρι κατεψυγμένην. Γίνεσθαι δὲ ἰσημερίας δύο καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν, [g] καὶ τροπὰς δύο· ἰσημερίας μὲν, ὅταν ἡ νὺξ [h] καὶ ἡ ἡμέρα ἶσαι ὦσι· τούτων δὲ τὴν μὲν ἔαρι γίνεσθαι, τὴν δὲ μετοπώρῳ· τῶν δὲ τροπῶν τὰς μὲν θέρους, τὰς δὲ χειμῶνος.*

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ *καὶ οἱ* ΣΤΩΙΚΟΙ, *χειμῶνα [i] μὲν γίνεσθαι τοῦ [k] ἀέρος ἐπικρατοῦντος, τῇ πυκνώσει εἰς τὸ [l] ἀνώτερον βιαζομένου· θερείαν δὲ τοῦ πυρὸς, ὅταν εἰς τὸ κατώτερον [m] βιάζηται.*

[n] *Ἐνιαυτός ἐστι,* [o] *Κρόνου μὲν, ἐνιαυτῶν* [p] *περίοδος τριά-* [264] *κοντα, Διὸς δώδεκα, Ἄρεος δυοῖν, Ἡλίου δώδεκα μῆνες· οἱ δ' αὐτοὶ Ἑρμοῦ καὶ Ἀφροδίτης, ἰσόδρομοι γάρ· σελήνης ἡμέραι τριάκοντα. Οὗτος γὰρ ὁ τέλειος μὴν, ἀπὸ φάσεως εἰς σύνοδον.*

Γίνεσθαι δὲ τὸν λεγόμενον μέγαν ἐνιαυτὸν, ὅταν ἐπὶ τοὺς [q] αὐτοὺς, ἀφ' ὧν ἤρξαντο τῆς κινήσεως, [r] ἀφίκωνται τόπους. Τὸν [s] δέ γε μέγαν ἐνιαυτὸν οἱ μὲν ἐν τῇ ὀκταετηρίδι τίθενται,

[b] *κεκραμένην*] *κεκραμμένην* A. V.
[c] *ἐρχομένου*] *ἀρχομένου* A.
[d] *διακεκαυμ.*] *κεκαυμεν.* A.
[e] *κεκραμένην*] *κεκραμμένην* A.
[f] *τὴν περὶ γῆν ἀέρα*] *τῷ περὶ γῆν ἀέρι* Heeren.
[g] *καὶ τροπὰς*] *ἢ τροπὰς* V. A.
[h] Ante *ἡμέρα* add. *καὶ ἡ* V. A.
[i] *δὲ*] *μὲν* V. A.
[k] *ἄερος*] *ἔαρος* A.
[l] *ἀνώτερον*] *ἀνωτέρῳ* V. A.
[m] *βιάζεται*] *βιάζηται* V. A.
[n] Leguntur hæc minus plene ap. Plut. de Plac. Phil. II. 32. Galen. l. XVI. et Euseb. Præp. Evang. c. LIV. HEEREN.
[o] *Κρόνου*] *Χρόνου* A.
[p] *περίοδος*] *περιόδους* A.
[q] *αὐτοὺς* deest V. A. P.
[r] *ἀφίκονται*] *ἀφίκωνται* V. A.
[s] Post *δὲ* add. *γε* A.

οἱ δὲ ἐν τῇ ἐννέα [t] καὶ δεκαετηρίδι, οἱ δ' [u] ἐν τοῖς [x] τετραπλασίοις ἔτεσιν, [y] οἱ δ' ἐν τοῖς [z] ἑξήκοντα, ἐν οἷς [a] Οἰνοπίδης καὶ Πυθαγόρας· οἱ δ' ἐν τῇ λεγομένῃ κεφαλῇ τοῦ Κρόνου, αὕτη δ' ἐστὶ τῶν ἕπτα πλανητῶν [b] ἐπὶ ταυτῇ ἡμέρᾳ τῆς ἐξ ἄρκτου φορᾶς ἐπάνοδος.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ, ἐκ μυρίων ὀκτακισχιλίων ἐνιαυτῶν ἡλιακῶν.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ ὁ Στωϊκὸς, ἐκ πέντε καὶ ἑξήκοντα καὶ τριακοσίων ἐνιαυτῶν [c] τοσούτων, ὅσος ἦν ὁ καθ' [d] Ἡράκλειτον ἐνιαυτός.

43 Ἐκ τοῦ Σκυθίνου περὶ Φύσεως.

Χρόνος ἐστὶν ὕστατον καὶ πρῶτον πάντων, καὶ ἔχει ἐν
[266] ἑαυτῷ πάντα, καὶ ἔστιν [a] εἷς ἀεὶ, καὶ οὐκ ἔστιν ὁ παροιχόμενος ἐκ τοῦ [b] ἐόντος αὐτῷ [c] ἐναντίην ὁδὸν [d] παρ' ἐνιαυτῶν. Τὸ γὰρ αὔριον [e] ἡμῖν τῷ ἔργῳ χθές ἐστιν, τὸ δ' ἐχθὲς αὔριον.

44 Ἐκ τοῦ Πλουτάρχου Παραλλήλων Νουμᾶ καὶ Λουκούργου [T. I. p. 72 A.]

Πολλοί εἰσιν, οἱ [a] προστεθῆναι τὸν Ἰανουάριον καὶ Φεβρου-

[t] καὶ post ἔννεα deest A.
[u] ἐν τοῖς] ἐκ τῆς A.
[x] τετραπλασίοις] –γίοις V. A.
[y] οἱ δ'] ο δ' A.
[z] Post ἑξήκοντα vel librariorum, vel ipsius forte Stobæi errore, excidisse videtur ἑνὸς δέοντος. Docet hoc Ælian. Var. Hist. l. X. c. 17. Οἰνοπίδης, ὁ Χῖος ἀστρόλογος, ἀνέθηκε ἐν Ὀλυμπίοις τὸ χαλκοῦν γραμματεῖον, ἐγγράψας ἐν αὐτῷ τὴν ἀστρολογίαν τῶν ἑνὸς δεόντων ἑξήκοντα ἐτῶν, φήσας τὸν μέγαν ἐνιαυτὸν εἶναι τοῦτον. HEEREN.
[a] Οἰνοπόδης] Οἰνοπίδης V. A. E. P.
[b] ἐπὶ ταυτῇ ἡμέρᾳ *uno eodemque die*, edidi pro ἐπὶ ταύτας ἡ μία ap. Cant. [et A.] Eandem anni magni explicationem habet Cic. de N. D. II. 18. Desunt hæc omnia ap. Plut. l. c. HEEREN.
[c] τοσούτων] τοσοῦτον A. V.
[d] Ἡράκλειτον] Ἡράκλειτος A.

43.

[a] εἷς ἀεὶ] Recte codd. V. F. pro εἰς ἀεί. HEEREN. Sic A.
[b] ἐόντος] ἐνόντος A.
[c] ἐναντίην] Sic A. ut Cant. non ἐναντίαν ut Heeren.
[d] παρεωνιατῶν] παρ' ἐνιαυτῶν V. παρεωνὶ αὐτῶν A.
[e] ἣ ἐν μὲν τῷ ἔργῳ] ἡ μὲν, τὸ ἔργον, ἐχθές ἐστι V. ὁ μὲν τ. ἔ. ἐχθὲς ἐ. A.

44.

[a] προστεθεῖναι] Sic V. A. προστεθεῖνται Cant.

άριον ὑπὸ Νουμᾶ τοὺς μῆνας λέγουσιν, ἐξ ἀρχῆς δὲ χρῆσθαι [b]Ῥωμαίους δέκα μόνοις εἰς τὸν ἐνιαυτὸν, ὡς ἔνιοι τῶν βαρβάρων τρισὶ, καὶ τῶν Ἑλλήνων, Ἀρκάδες μὲν τέτρασιν, ἒξ δὲ Ἀκαρνᾶνες, [c]Αἰγυπτίοις δὲ μηνιαῖος ἦν ὁ ἐνιαυτὸς, εἶτα τετράμηνος, ὥς φασι· [d]δι' ὃ καὶ [e]οἱ ταύτην τὴν χώραν οἰ-
[268] κοῦντες ἀρχαιότατοι δοκοῦσιν εἶναι, καὶ πλῆθος [f]ἀμήχανον ἐτῶν ἐπὶ ταῖς γενεαλογίαις καταφέρουσιν, [g]ἅτε δὴ τοὺς μῆνας εἰς ἐτῶν [h]ἀριθμὸν τιθέμενοι.

45 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 37.]

Πλάτων αἰῶνος εἰκόνα κινητὴν, ἢ διάστημα τῆς τοῦ κόσμου κινήσεως· γενητὸν δὲ κατ' ἐπίνοιαν, οὐσίαν δὲ χρόνου τὴν οὐρανοῦ κίνησιν· λέγει γὰρ ἐν τῷ Τιμαίῳ οὕτως· Ὡς δὲ κινηθὲν αὐτὸ καὶ ζῶν ἐποίησε τῶν ἀϊδίων θεῶν ἄγαλμα ὁ γεννήσας πατὴρ, ἠγάσθη τε, καὶ εὐφρανθεὶς, ἔτι δὴ μᾶλλον ὅμοιον πρὸς τὸ παράδειγμα ἐπενόησεν ἀπεργάσασθαι. Καθάπερ οὖν αὐτὸ τυγχάνει ζῶον ἀΐδιον, καὶ τόδε τὸ πᾶν οὕτως εἰς δύναμιν ἐπεχείρησε τοιοῦτον ἐπιτελεῖν. Ἡ μὲν οὖν τοῦ ζώου φύσις ἐτύγχανεν οὖσα αἰώνιος· καὶ τοῦτο μὲν δὴ παντελῶς τῷ γεννητῷ προσάπτειν οὐκ ἦν δυνατόν· εἰκόνα δ' ἐπένοει κινητήν τινα αἰῶνος ποιῆσαι, καὶ διακοσμῶν οὐρανῷ ἅμα ποιεῖ μένοντος αἰῶνος ἐν ἑνὶ κατ' ἀριθμὸν ἰοῦσαν αἰώνιον εἰκόνα, τοῦτον ὃν δὴ χρόνον ὠνομάκαμεν. ἡμέρας δὲ καὶ νύκτας καὶ μῆνας καὶ ἐνιαυτοὺς, οὐκ ὄντας πρὶν οὐρανὸν γενέσθαι, τότε ἅμα ἐκείνῳ ξυνισταμένῳ τὴν γένεσιν αὐτῶν μηχανᾶται. Ταῦτα δὲ πάντα μέρη χρόνου, καὶ τό τ' ἦν, καὶ ἔσται, χρόνου γεγονότα εἴδη, ἃ δὴ φέροντες

b Ῥωμαίους] Ῥωμαίοις A. V. om. Plutarch.

c Αἰγύπτιοι δὲ] Αἰγυπτίοις δὲ, μηνιαίοις (sic) ἦν ὁ ἐνιαυτὸς V. A.

d δι' ὧν] διὸ καὶ οἱ ταύτην τὴν χώραν etc. V. δι' ὧν A.

e Pro οἱ ταύτην ap. Plut. legitur νεωτάτην. HEEREN.

f ἀμήχανον] ἀμηχᾶν A.

g εἶτε] ἅτε V. A.

h ἀριθμὸν] ἀριθμῶν A.

λανθάνομεν ἐπὶ τὴν ἀΐδιον (οὐσίαν) οὐκ ὀρθῶς. Λέγομεν γὰρ δὴ ὡς ἦν ἔστι τε καὶ ἔσται, τῇ δὲ τὸ ἔστι μόνον κατὰ τὸν ἀληθῆ λόγον προσήκει τὸ δὲ ἦν τό τ᾽ ἔσται περὶ τὴν ἐν χρόνῳ γένεσιν ἰοῦσαν πρέπει λέγεσθαι· κίνησις γάρ ἐστί. Τὸ δ᾽ ἀεὶ κατὰ ταὐτὰ ἔχον ἀκινήτως οὔτε πρεσβύτερον οὔτε νεώτερον προσήκει γίγνεσθαι διὰ χρόνον, οὔτε γενέσθαι ποτὲ, οὐδὲ γεγονέναι νῦν, οὐδ᾽ εἰσαῦθις ἔσεσθαι, τὸ παράπαν τε οὐδὲν ὅσα γένεσις τοῖς ἐν αἰσθήσει φερομένοις προσῆψεν, ἀλλὰ χρόνου ταῦτα αἰῶνα μιμουμένου καὶ κατ᾽ ἀριθμὸν κυκλουμένου γέγονεν εἴδη. Καὶ πρὸς τούτοις ἔτι τὰ τοιάδε, τό τε γεγονὸς, εἶναι γεγονὸς, καὶ τὸ γιγνόμενον, εἶναι γιγνόμενον, ἔτι τε τὸ γενησόμενον, (εἶναι γενησόμενον,) καὶ τὸ μὴ ὂν, μὴ ὂν εἶναι, ὧν οὐδὲν ἀκριβὲς λέγομεν. Περὶ μὲν οὖν τούτων ταχ᾽ ἂν οὐκ ἂν εἴη καιρὸς πρέπων ἐν τῷ παρόντι διακριβολογεῖσθαι· χρόνος δ᾽ οὖν μετ᾽ [a] οὐρανοῦ γέγονεν, ἵνα ἅμα γεννηθέντες ἅμα καὶ λυθῶσιν, ἄν ποτε λύσις τὶς αὐτῶν γίγνηται, καὶ κατὰ τὸ παράδειγμα τῆς αἰωνίας φύσεως, ἵν᾽ ὡς ὁμοιότατος αὐτῷ κατὰ δύναμιν ᾖ. Τὸ μὲν γὰρ δὴ παράδειγμα πάντα αἰῶνα ἐστὶν ὄν· ὁ δ᾽ αὖ διὰ τέλους τὸν ἅπαντα χρόνον γεγονώς τε καὶ ὢν καὶ ἐσόμενος. Ἐξ οὖν λόγου καὶ διανοίας θεοῦ τοιαύτης [b] πρὸς χρόνου γένεσιν, ἵνα γεννηθῇ χρόνος, Ἥλιος καὶ Σελήνη, καὶ πέντε ἄλλα ἔχοντα ἐπίκλην ἄστρα πλανητὰ εἰς διορισμὸν καὶ φυλακὴν [c] ἀριθμῶν χρόνου γέγονε. Σώματα δὲ αὐτῶν ἑκάστων ποιήσας ὁ θεὸς, ἔθηκεν εἰς τὰς περιφορὰς, ἃς ἡ θατέρου περίοδος ᾔειν, ἑπτὰ οὔσας, ὄντα ἑπτά· Σελήνην μὲν εἰς τὸν περὶ γῆν πρῶτον, Ἥλιον δ᾽ εἰς τὸν δεύτερον ὑπὲρ γῆς, Ἑωσφόρον δὲ καὶ τὸν ἱερὸν Ἑρμοῦ λεγόμενον, εἰς τὸν τάχει μὲν ἰσόδρομον Ἡλίῳ κύκλον ἰόντας, τὴν δ᾽ ἐναντίαν εἰληχό-

45.

[a] οὐρανὸν γέ''ἶν' A.

[b] πρὸ A.

[c] ἀριθμῷ A.

τας αὐτῷ δύναμιν· ὅθεν καταλαμβάνουσί τε καὶ καταλαμβάνονται κατὰ ταὐτὰ ὑπ' ἀλλήλων Ἥλιός τε καὶ ὁ τοῦ Ἑρμοῦ καὶ Ἑωσφόρος. Τὰ δ' ἄλλα, [d]οἷ δὴ καὶ δι' ἃς αἰτίας ἱδρύσαντο εἴ τις ἐπεξίοι πάσας, ὁ λόγος [e]πάρεργος ὢν πλέον ἂν ἔργον ὧν ἕνεκα λέγεται παράσχοι.—ἔστι δ' ὅμως οὐδὲν ἧττον κατανοῆσαι δυνατὸν, ὡς ὅ γε τέλειος ἀριθμὸς χρόνον τὸν τέλειον ἐνιαυτὸν πληροῖ τότε, ὅταν ἁπασῶν τῶν ὀκτὼ περιόδων τὰ πρὸς ἄλληλα συμπεραθέντα τύχῃ σχῇ κεφαλὴν τῷ τοῦ ταὐτοῦ καὶ ὁμοίως ἰόντος ἀναμετρηθέντα κύκλῳ.

Κεφ. θʹ.

ΠΕΡΙ ΑΦΡΟΔΙΤΗΣ ΟΥΡΑΝΙΗΣ ΚΑΙ ΕΡΩΤΟΣ.

1 [Εὐριπίδου. inc. 4.]

Τὴν Ἀφροδίτην οὐχ ὁρᾷς ὅση θεός;
ἀλλ' οὐδ' ἂν εἴποις οὐδὲ μετρήσειας ἂν
[270] ὅση πέφυκε, καὶ ἐφ' ὅσον διέρχεται.
Αὕτη τρέφει σὲ, κἀμὲ, καὶ πάντας βροτούς· p. 22.
τεκμήριον δὲ μὴ λόγῳ μόνον μάθῃς,
ἔργῳ δὲ δείξω τὸ σθένος τὸ τῆς θεοῦ·
ἐρᾷ μὲν ὄμβρου γαῖ', ὅτ' ἂν ξηρὸν πέδον
ἄκαρπον αὐχμῷ νοτίδος ἐνδεῶς [a]ἔχῃ·
ἐρᾷ δ' ὁ σεμνὸς οὐρανὸς, πληρούμενος
ὄμβρου, πεσεῖν εἰς γαῖαν, Ἀφροδίτης ὕπο.
ὅταν δὲ συμμιχθῆτον εἰς [b]ταυτὸν δύο,
[c]τίκτουσιν ἡμῖν πάντα, κἀκτρέφουσ' ἅμα,
[d]ὅθεν βρότειον ζῇ τε καὶ [e]θάλλει γένος.

[d] ᾗ A.
[e] πάρεργον ὂν A.

1.

[a] ἔχει] ἔχῃ A.
[b] ταυτὸν] αὐτὸν A.
[c] τίκτουσιν ἡμῖν] τίκτουσι μιν V. A. E.
[d] Post ὅθεν add. καὶ A. V.
[e] θάλλει] θάλει A.

2 Εὐριπίδου Οἰδίποδος [3.]

[a]Ἑνὸς δ' ἔρωτος ὄντος οὐ μί' ἡδονή·
[b]οἱ μὲν κακῶν ἐρῶσιν, οἱ δὲ τῶν καλῶν.
[c]ὁ δ' εἰς τὸ σῶφρον ἐπ' ἀρετήν τ' ἄγων ἔρως,
[d]ζηλωτὸς ἀνθρώποισιν, ὧν [e]εἴην ἐγώ.

3 Ἐκ τῶν [a]Βίωνος Βουκολικῶν.

[b]Μοῖσας Ἔρως καλέοι, Μοῖσαι [c]τὸν Ἔρωτα φέροιεν·
μολπὰν [d]ταὶ Μοῖσαί μοι ἀεὶ ποθέοντι δίδοιεν,
τὰν γλυκερὰν μολπὰν, τᾶς φάρμακον [e]ἅδιον οὐδέν.

4 Εὐριπίδου Δίκτυϊ [8.]

[272] Φίλος γὰρ ἦν μοι, καί μ' Ἔρως ἕλοι ποτε,
οὐκ εἰς τὸ μωρὸν, οὐδέ μ' εἰς Κύπριν τρέπων.
[a]Ἀλλ' ἐστὶ δή τις ἄλλος [b]ἐν βροτοῖς Ἔρως
ψυχῆς δικαίας σώφρονός τε κἀγαθῆς,
[c]καὶ χρῆν δὲ τοῖς βροτοῖσι τόνδ' εἶναι νόμον,
τῶν εὐσεβούντων, [d]οἵτινές γε σώφρονες,
ἐρᾶν, Κύπριν δὲ τὴν Διὸς χαίρειν ἐᾶν.

5 Ἡσιόδου [Theog. 116.]

Ἤτοι μὲν πρώτιστα χάος γένετ', αὐτὰρ ἔπειτα
[[a]γαῖ' εὐρύστερνος, πάντων ἕδος ἀσφαλὲς αἰεὶ
ἀθανάτων, οἱ ἔχουσι κάρη νιφόεντος Ὀλύμπου,
[274] Τάρταρα τ' ἠερόεντα μυχῷ χθονὸς εὐρυοδείης,]

2.

[a] Ἑνὸς δ' ἔρωτος] Sic Grotius. δ' om. Cant. ἓν ἔρωτος et mox μὴ ἡδονὴ A.

[b] οἱ μὲν κακῶν] Sic Grotius. οἱ μὲν τῶν κ. Cant. τῶν κακῶν A.

[c] οὐδ' εἰς] ὁ δ' εἰς A.

[d] ζηλωτὸς] ζηλωτὰ V. A.

[e] εἴην] εἴη A.

3.

[a] Βίωνος] βίτωνος A. qui mox βουκολίων.

[b] Μοῖσαι] Μοίσας V. A.

[c] τε] τὸν V. A. E.

[d] ται] τε V. A. E.

[e] ἁδίον] εὔδη V. A. εὔδιον E.

4.

[a] Ἀλλ' ἐστὶ δή] Sic Grotius. ἀλλ' οὐκ ἐστι δὶ A. qui mox βροντοῖς.

[b] ἐκ] ἐν A.

[c] καὶ χρῆν] Separat hæc A. a præcedentibus et Hesiodo tribuit.

[d] οἵτινες] εἴτινες V.

5.

[a] γαῖ'—εὐρυοδείης om. A. Cant.

ἠδ' [b]Ἔρος, ὃς κάλλιστος ἐν ἀθανάτοισι θεοῖσι.

6 Παρμενίδου.

[a]Πρώτιστα μὲν Ἔρωτα θεῶν [b]μητίσατο πάντων.

7

Οὐχ ἡ ἀνάγκη [a]μοῦνον καὶ τὸ δόγμ' ἀγαθοὺς εἶναι ἐξορμᾳ, ἀλλὰ καὶ, ὅπερ ἐξεργάζεται τὰ μέγιστα τῶν ἀνθρωπίνων, Ἔρως. Οὗτος [b]καὶ τὴν ἀρετὴν τελεσίδρομον εἶναι ποιεῖ.

8 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου [p. 245.]

Ὥστε γε τοῦτο αὐτὸ μὴ φοβώμεθα· μηδέ τις ἡμᾶς λόγος θορυβείτω, δεδιττόμενος ὡς πρὸ τοῦ κεκινημένου τὸν σώφρονα δεῖ προαιρεῖσθαι φίλον· ἀλλὰ τόδε πρὸς ἐκείνῳ δείξας φερέσθω τὰ νικητήρια, ὡς οὐκ ἐπ' ὠφελείᾳ ἔρως τῷ ἐρῶντι καὶ τῷ ἐρωμένῳ ἐκ θεῶν ἐκπέμπεται, ἡμῖν δ' ἀποδεικτέον αὖ τοὐναντίον, ὡς ἐπ' εὐτυχίᾳ παρὰ θεῶν ἡ τοιαύτη μανία δίδοται. ἡ δὲ δὴ ἀπόδειξις ἔσται δεινοῖς μὲν ἄπιστος, [a]σοφοῖς δὲ πιστή.

9 Ἐν ταυτῷ [p. 265.]

Ὃ μέντοι ἐζήτουν, ἔστιν αὐτὸ τοῦτο· μανίαν γάρ τινα ἐφήσαμεν εἶναι τὸν Ἔρωτα. ἦ γάρ; Ναί. Μανίας δὲ εἴδη δύο· τὴν μὲν ὑπὸ νοσημάτων ἀνθρωπίνων, τὴν δὲ ὑπὸ θείας ἐξαλλαγῆς τῶν εἰωθότων νομίμων γιγνομένην. Πάνυ γε. Τῆς δὲ θείας, τεττάρων θεῶν τέτταρα μέρη διελόμενοι, μαντικὴν μὲν ἐπίπνοιαν Ἀπόλλωνος θέντες, Διονύσου δὲ τελεστικὴν, Μουσῶν δ' αὖ ποιητικὴν, τετάρτην δὲ Ἀφρο-

[b] Ἔρος] ἔρως A.

6.

[a] Πρώτιστα] Πρώτιστον Plato Symp. p. 278. ubi tamen 2 mss. πρώτιστα, quomodo unus ms. Sexti Emp. adv. Phys. I. 9.

[b] μητίσατο in M. ἴσως τιμήσατο.

7.

[a] μοῦνον] Sic A. Cant. Mox ποιεῖ ed. Heeren. ubi A. Cant. ἐξορμᾷ.

[b] καὶ τὴν ἀρετὴν] τὴν τῆς ἀρετῆς V. τὴν τῆς ἀρετῆν πελεσίδομον A.

8.

[a] σοφοῖς] σοφοῦ A.

δίτης καὶ Ἔρωτος, ἐρωτικὴν μανίαν ἐφήσαμεν ἀρίστην εἶναι.

10 Ἐν ταυτῷ [p. 249.]

Ἔστι δὴ οὖν δεῦρο ὁ πᾶς ἥκων λόγος περὶ τῆς τετάρτης μανίας, ἣν ὅταν [a]τὸ τῇδέ τις ὁρῶν κάλλος, τοῦ ἀληθοῦς ἀναμιμνησκόμενος, πτεροῦταί τε καὶ ἀναπτερούμενος προθυμούμενος [b]ἀναπτέσθαι· ἀδυνατῶν δὲ, ὄρνιθος δίκην βλέπων ἄνω, τῶν κάτω δὲ ἀμελῶν, αἰτίαν [c]ἔχει ὡς μανικῶς διακείμενος. ὡς ἄρα αὕτη πασῶν τῶν ἐνθουσιάσεων ἀρίστη τε καὶ ἐξ ἀρίστων τῷ τε ἔχοντι καὶ τῷ κοινωνοῦντι αὐτῆς γίγνεται· καὶ ὅτι ταύτης μετέχων τῆς μανίας ἐρῶν τῶν καλῶν, ἐραστὴς γίνεται.

11 Ἐν ταυτῷ [p. 252.] p. 23.

[276] Τοῦτο δὲ τὸ πάθος, ὦ παῖ καλὲ, πρὸς ὃν δέ μοι ὁ λόγος, ἄνθρωποι μὲν ἔρωτα ὀνομάζουσι, θεοὶ δὲ ὃ καλοῦσιν ἀκούσας εἰκότως δὲ διὰ νεότητα γελάσεις· λέγουσι δὲ οἶμαι τινὲς Ὁμηριδῶν ἐκ τῶν ἀποθετῶν ἐπῶν δύο ἔπη εἰς τὸν ἔρωτα, ὧν τὸ ἕτερον πάνυ ὑβριστικὸν καὶ οὐ σφόδρα [a]τι ἔμμετρον, ὑμνοῦσι δὲ ὧδε·

τὸν δή τοι θνητοὶ μὲν ἔρωτα καλοῦσι ποτηνὸν,
ἀθάνατοι δὲ πτέρωτα διὰ πτεροφύτορ' ἀνάγκην.

12 Τοῦ αὐτοῦ [Sympos. p. 178.]

Ἔφη Φαῖδρον ἀρξάμενον ἔνθενδέ ποθεν λέγειν, ὅτι μέγας θεὸς, ἔφη, ὁ Ἔρως καὶ θαυμαστὸς ἐν ἀνθρώποις τε καὶ θεοῖς, πολλαχῇ μὲν καὶ [a]ἄλλῃ, οὐχ ἥκιστα δὲ κατὰ τὴν γένεσιν. Τὸ γὰρ ἐν τοῖς πρεσβύτατον εἶναι τῶν θεῶν τίμιον, [b]ἦ δ' ὅς· τεκμήριον δὲ τούτου· γοναὶ [c]γὰρ ἔρωτος οὔτ' εἰσιν οὔτε λέγον-

10.
[a] τόδ' ἤδη A.
[b] ἀναπτέσθω ἀδύνατον A.
[c] ἔχειν A.

11.
[a] τις ἔμετρον A. Mox θνητὸν ἔρωτα A.

12.
[a] ἄλλοι A.
[b] εἶδος Cant. ἦδος A.
[c] γὰρ A. δὲ Cant.

ται ὑπ' οὐδενὸς, οὔτε ἰδιώτου οὔτε ποιητοῦ, ἀλλ' Ἡσίοδος πρῶτον μὲν χάος φησὶ γίγνεσθαι, μετὰ τὸ χάος δύο τούτω γενέσθαι, Γῆν τε καὶ Ἔρωτα. Ἡσιόδῳ δὲ καὶ [d]Ἀκουσίλαος σύμφησιν ἐν τοῖς πρεσβυτάτοις εἶναι, πρεσβύτατός τε ὢν μεγίστων ἀγαθῶν αἴτιος ἡμῖν ἐστιν.

13 Ἐν ταυτῷ [p. 180.]

Πάντες γὰρ ἴσμεν ὅτι οὐκ ἔστιν ἄνευ Ἔρωτος Ἀφροδίτη. Μιᾶς μὲν οὔσης εἷς ἂν ἦν Ἔρως· ἐπεὶ δὲ δύο ἔστον, δύο ἀνάγκη καὶ ἔρωτας εἶναι. Πῶς δὲ οὐ δύο τὰ θεά; ἡ μέν γε που [a]πρεσβυτέρα καὶ ἀμήτωρ Οὐρανοῦ θυγάτηρ, ἣν δὴ καὶ οὐρανίαν ἐπονομάζομεν, ἡ δὲ νεωτέρα Διὸς καὶ Διώνης, ἣν δὴ πάνδημον καλοῦμεν. ἀναγκαῖον δὴ καὶ Ἔρωτα, τὸν μὲν τῇ ἑτέρᾳ ξυνεργὸν, πάνδημον ὀρθῶς καλεῖσθαι, τὸν δὲ οὐράνιον.

14 Ἐν ταυτῷ [p. 185.]

Οὕτω πᾶν πάντως γε καλὸν ἕνεκα ἀρετῆς χαρίζεσθαι. οὗτός ἐστιν ὁ τῆς οὐρανίας θεοῦ ἔρως καὶ οὐράνιος, καὶ πολλοῦ ἄξιος καὶ πόλει καὶ ἰδιώταις, πολλὴν ἐπιμέλειαν ἀναγκάζων ποιεῖσθαι πρὸς ἀρετὴν τόν τε ἐρῶντα αὐτὸν αὑτοῦ, καὶ τὸν ἐρώμενον· οἱ δ' ἕτεροι πάντες τῆς ἑτέρας, τῆς πανδήμου.

15 Ἐν ταυτῷ [p. 186.]

Τὸ μὲν γὰρ διπλοῦν εἶναι τὸν ἔρωτα δοκεῖ μοι [a]καλῶς διελέσθαι· ὅτι δὲ οὐ μόνον ἐστὶν ἐπὶ ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνθρώπων πρὸς τοὺς καλοὺς, ἀλλὰ καὶ πρὸς ἄλλα πολλὰ, καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις τοῖς τε σώμασι τῶν πάντων ζώων καὶ τοῖς ἐν τῇ γῇ φυομένοις, καὶ ὡς ἔπος εἰπεῖν ἐν πᾶσι τοῖς οὖσι, καθεωρακέναι μοι [b]δοκῶ ἐκ τῆς ἰατρικῆς τῆς ἡμετέρας

[d] ἀκουσίλαοσ (ω supra) A.

13.

[a] Sic A. πρεσβύτωρ Cant.

15.

[a] καὶ ὡς A.

[b] Sic A. ubi ἐν τῆς. δοκεῖ Cant.

τέχνης, ὡς μέγας καὶ θαυμαστὸς καὶ ἐπὶ πᾶν ὁ θεὸς [b]τείνει, καὶ κατὰ τἀνθρώπινα καὶ κατὰ τὰ θεῖα πράγματα· ἄρξομαι δὲ ἀπὸ τῆς ἰατρικῆς λέγων, ἵνα πρεσβεύωμεν τὴν τέχνην. Ἡ γὰρ φύσις τῶν σωμάτων τὸν διπλοῦν ἔρωτα τοῦτον ἔχει· τὸ γὰρ ὑγιὲς τοῦ σώματος καὶ τὸ νοσοῦν ὁμολογοῦμεν ὡς ἕτερόν [c]τι καὶ ἀνόμοιόν ἐστι· τὸ δὲ ἀνόμοιον ἀνομοίων ἐπιθυμεῖ καὶ ἐρᾷ. Ἄλλος μὲν οὖν ὁ ἐπὶ τῷ ὑγι- p. 24.
εινῷ ἔρως, ἄλλος δὲ ὁ ἐπὶ τῷ νοσώδει.

16 Ἐν ταυτῷ [p. 188.]

Ἐπεὶ καὶ ἡ τῶν ὡρῶν τοῦ ἐνιαυτοῦ ξύστασις [a]μεστὴ ἐστὶν ἀμφοτέρων τούτων, καὶ ἐπειδὰν μὲν πρὸς ἄλληλα τοῦ [b]κοσμίου τύχῃ ἔρωτος ἃ νῦν δὴ λέγω, τά τε θερμὰ καὶ [c]τὰ ψυχρὰ, καὶ τὰ ξηρὰ καὶ ὑγρὰ καὶ ἁρμονίαν καὶ κρᾶσιν λάβῃ σώφρονα, ἥκει φέροντα εὐετηρίαν τε καὶ ὑγίειαν ἀνθρώποις καὶ τοῖς ἄλλοις ζώοις τε καὶ φυτοῖς, καὶ οὐδὲν ἠδίκησεν· ὅταν δὲ ὁ μετὰ τῆς ὕβρεως ἔρως ἐγκρατέστερος, καὶ περὶ τὰς τοῦ ἐνιαυτοῦ ὥρας γένηται, [d]διέφθειρέ τε πολλὰ καὶ ἠδίκησεν. Οἵ τε γὰρ λοιμοὶ φιλοῦσι γίγνεσθαι ἐκ τῶν τοιούτων, καὶ ἄλλα ἀνόμοια, καὶ πολλὰ νοσήματα, καὶ τοῖς θηρίοις καὶ τοῖς φυτοῖς. Καὶ γὰρ πάχναι καὶ χάλαζαι καὶ [e]ἐρυσίβαι ἐκ πλεονεξίας καὶ ἀκοσμίας περὶ ἄλληλα τῶν τοιούτων [f]γίγνεται ἐρωτικῶν, ὧν ἐπιστήμη περὶ ἄστρων τε φορὰς καὶ ἐνιαυτῶν ὥρας ἀστρονομία καλεῖται. Ἔτι τοίνυν καὶ αἱ θυσίαι πᾶσαι, καὶ οἷς μαντικὴ ἐπιστατεῖ τέχνη, ταῦτα δ' ἐστιν ἡ περὶ θεούς [g]τε καὶ ἀνθρώπους πρὸς ἀλλήλους κοινωνία, οὐ περὶ ἄλλο τί ἐστιν ἢ περὶ

[b] τίνει A.

[c] Sic A. τε Cant. Mox ἀνόμιον et ἐπιθυμειῶν Cant.

16.

[a] μέση A.

[b] Sic A. κόσμου Cant.

[c] Sic A. τὰ om. Cant.

[d] Sic A. διεφθείρεται et mox ἀδικεῖ Cant.

[e] ἐρισύβαι A. Cant.

[f] Sic A. γίγνονται Cant.

[g] Sic A. om. Cant.

ἔρωτος φυλακήν τε καὶ ἴασιν. Πᾶσα γὰρ ἀσέβεια φιλεῖ γίγνεσθαι, ἐὰν μήτε ἐν τῷ κοσμίῳ ἔρωτι [h]χαρίζηται, μηδὲ τιμᾷ τε αὐτὸν καὶ πρεσβεύῃ ἐν παντὶ ἔργῳ, ἀλλὰ τὸν ἕτερον, καὶ περὶ γονέας καὶ ζῶντας καὶ τελευτηκότας, καὶ περὶ θεούς· ἃ δὴ προτέτακται τῇ μαντικῇ ἐπισκοπεῖν τοὺς [i]ἔρωτας καὶ ἰατρεύειν· καὶ ἔστιν αὖ ἡ μαντικὴ φιλίας θεῶν καὶ ἀνθρώπων δημιουργὸς, τῷ ἐπίστασθαι τὰ κατ' ἀνθρώπους ἐρωτικὰ, ὅσα [k]τείνει πρὸς θέμιν καὶ εὐσέβειαν. Οὕτω πολλὴν καὶ μεγάλην, μᾶλλον δὲ πᾶσαν δύναμιν ἔχει ξυλλήβδην μὲν ὁ πᾶς ἔρως· ὁ δὲ περὶ τἀγαθὰ μετὰ σωφροσύνης καὶ δικαιοσύνης ἀποτελούμενος καὶ παρ' ἡμῖν καὶ παρὰ θεοῖς, [l]οὗτος τὴν μεγίστην δύναμιν ἔχει, καὶ πᾶσαν ἡμῖν εὐδαιμονίαν παρασκευάζει, καὶ ἀλλήλοις δυναμένοις ὁμιλεῖν καὶ φίλοις εἶναι, καὶ τοῖς κρείττοσιν ἡμῶν θεοῖς.

17 Ἐν ταυτῷ [p. 202.]

Εὐδαίμονας λέγεις οὐ τοὺς [a]τἀγαθὰ καὶ καλὰ κεκτημένοις; Πάνυ γε. Ἀλλὰ μὴν ἔρωτά γε [b]ὡμολόγηκας δι' ἔνδειαν τῶν καλῶν καὶ τῶν ἀγαθῶν, ἐπιθυμεῖν αὐτῶν τούτων ὧν ἐνδεής ἐστι; Ὡμολόγηκα γάρ. Πῶς ἂν οὖν [c]θεὸς εἴη ὅ γε τῶν καλῶν καὶ ἀγαθῶν ἄμοιρος; Οὐδαμῶς, [d]ὥς γ' ἔοικεν. Ὁρᾷς οὖν, ἔφη, ὅτι καὶ σὺ [e]Ἔρωτα οὐ θεὸν νομίζεις; Τί οὖν ἂν, ἔφην, ὁ Ἔρως εἴη, θνητός; Ἥκιστά γε. Ἀλλά τι μήν; Ὥσπερ τὰ πρότερα ἔφην μεταξὺ θνητοῦ καὶ ἀθανάτου. Τί οὖν, ὦ Διοτίμα; Δαίμων μέγας, ὦ Σώκρατες· καὶ γὰρ πᾶν [f]τὸ δαιμόνιον μεταξύ ἐστι θεοῦ καὶ

[h] χαρίζεται et mox πρεσβεύει A.
[i] Sic A. ἐρῶντας Cant.
[k] τίνϊ προσθέμöν A.
[l] Sic A. οὕτως Cant.

17.

[a] Sic A. ἀγαθὰ Cant.
[b] ὡμολόγη καὶ A. et sic infra.
[c] Sic A. ὁ θεὸς Cant.
[d] ὥς τ' A. τ' om. Cant.
[e] Sic A. ἔρωτι Cant.
[f] τὸ δαιμ.–ἐγὼ addit A. Mox ἔχων etc. Cant.

θνητοῦ. Τίνα δ', ἦν δ' ἐγὼ, δύναμιν ἔχον; Ἑρμηνεῦον καὶ διαπορθμεῦον θεοῖς τε τὰ παρ' ἀνθρώπων, καὶ ἀνθρώποις τὰ παρὰ θεῶν, τῶν μὲν τὰς δεήσεις καὶ θυσίας, τῶν δὲ τὰς ἐπιτάξεις τε καὶ ἀμοιβὰς τῶν θυσιῶν· ἐν μέσῳ δὲ ὂν ἀμφοτέρων συμπληροῖ, ὥστε τὸ πᾶν [g] αὐτῷ συνδεδέσθαι. Διὰ [h] τούτου καὶ ἡ μαντικὴ πᾶσα χωρεῖ καὶ ἡ τῶν ἱερῶν τέχνη τῶν τε περὶ τὰς θυσίας καὶ τὰς τελέτας, καὶ τὰς ἐπῳδὰς καὶ τὴν μαντείαν πᾶσαν καὶ γοητείαν. Θεὸς δὲ [i] ἀνθρώπῳ οὐ μίγνυται· ἀλλὰ διὰ τούτου πᾶσά ἐστιν ἡ ὁμιλία καὶ ἡ p. 25. [k] διάλεκτος θεοῖς πρὸς [l] ἀνθρώπους καὶ ἐγρηγορόσι καὶ καθεύδουσι. Καὶ ὁ μὲν περὶ τὰ τοιαῦτα σφοδρὸς δαιμόνιος ἀνὴρ, ὁ δ' ἄλλο τι σοφὸς [m] ἢ περὶ τέχνας ἢ περὶ [n] χειρουργίας, βάναυσος. Οὗτοι δὴ οἱ δαίμονες πολλοί τε καὶ παντοδαποί εἰσιν, εἷς δὲ τούτων καὶ ὁ Ἔρως.

[278] Κεφ. ί.

ΠΕΡΙ ΑΡΧΩΝ ΚΑΙ ΣΤΟΙΧΕΙΩΝ ΚΑΙ ΤΟΥ ΠΑΝΤΟΣ.

1 Ἡσιόδου Θεογονίας [116.]

Ἤτοι μὲν πρώτιστα χάος γένετ', αὐτὰρ ἔπειτα
Γαῖ' [a] εὐρύστερνος, πάντων ἕδος ἀσφαλὲς αἰεὶ
ἀθανάτων, οἳ ἔχουσι κάρη νιφόεντος Ὀλύμπου,
Τάρταρα τ' ἠερόεντα, μυχῷ χθονὸς εὐρυοδείης.

2 [Ὁμήρου Il. ξ'. 246.]

Ὠκεανός [a] θ' ὅσπερ γένεσις πάντεσσι τέτυκται.

g αὐτὸ αὐτῷ Cant.
h τοῦτο A.
i Sic A. ἀνθρώπου καὶ Cant.
k διάλεκτοι A.
l Sic A. ἀνθρώπους Cant.
m ἢ περὶ τέχνας om. A.
n χειρουργείας τινὰς A.

1.

a εὐρύστερνος] εὐρίστερνος A. qui supra ἤτϊ et mox ἀεὶ—κάρηνι φθέντος —Τάρταρ' ἠρόεντα μύχον χ. εὐρυοδίης.

2.

a θ' ὅσπερ] ὥσπερ A. qui mox τέτακται.

3 [[a]Ὀρφέως.]

[b]Ἓν δὲ δέμας βασίλειον, ἐν ᾧ [c]τάδε πάντα κυκλεῖται,
πῦρ (καὶ) ὕδωρ καὶ γαῖα, καὶ αἰθὴρ, νύξ τε καὶ ἦμαρ.

4 [Ὁμήρου Il. ξ'. 201.]

Ὠκεανόν τε θεῶν γένεσιν καὶ μητέρα Τηθύν.

5 Λίνου ἐκ τῶν περὶ Φύσεως κόσμου.

Ὡς κατ' [a]ἔριν συνάπαντα κυβερνᾶται διὰ παντός·
ἐκ παντὸς δὲ τὰ πάντα, καὶ ἐκ πάντων [b]πᾶν ἐστι.
[280] Πάντα δ' ἕν ἐστιν, ἕκαστον [c]ἑνὸς μέρος, εἰν ἓν ἅπαντα,
ἐκ γὰρ ἑνός ποτε ὄντος ὅλου [d]τάδε πάντ' ἐγένοντο·
ἐκ πάντων δέ ποτ' αὖθις ἓν ἔσσεται [e]ἐν χρόνου αἴσῃ,
[f]αἰὲν ἓν ὂν καὶ οὐ πολλὰ, [g]καὶ οὐ κατὰ ταυτὸν ἀθρῆσαι.
[h]Πολλάκι δ' ἔσται ταῦτα, καὶ οὔποτε πεῖρας ἔπεισιν

3.

[a] Ὀρφέως] Sic Cant. Deest lemma A. Vid. supra p. 16.

[b] Ἓν δὲ δέμας] Sic Grotius. ἐν δέμας A. ἓν δαίμας Cant.

[c] τάδε πάντα] πάντα τάδε V. A.

4.

[a] ἔριν] ἔρις V. A.

[b] πᾶν] τὸ πᾶν A. Cant. τὸ delevit Grotius.

[c] ἑνὸς μέρος εἰν ἕν'] Sic Grotius. οὖν μέρος εἶναι A. Cant.

[d] τάδε πάντ'] πάντα τάδ' V. A.

[e] καὶ χρόνου αἴσῃ] ἐν χρόνου ἔσσῃ V. E. ἐν χ. αἴσσῃ A.

[f] αἰὲν] v. 6. 7. Mutilati sunt hi vv. apud Cant. Exstat ibi: ἀεὶ ἓν ὂν καὶ πολλὰ καὶ οὐ κατὰ ταῦτα, καὶ οὔποτε πεῖρας ἔπεισι.—Edidit Grot. αἰὲν ἓν ὂν καὶ πολλά· καὶ οὔποτε πεῖρας ἔπεισι· ejectis verbis καὶ οὐ κατὰ ταῦτα, "cum ex interpretamento sint, et versui obstent." Meliora suppeditant codd. V. A. E. F. ex quibus integri ea versus reliquias esse constat. Legitur ibi: Ἀεὶ ἓν ὂν κ' οὐ πολλὰ, καὶ οὐ κατὰ ταυτὸν ἀθροῖσαι. Πολλάκις δ' ἔσται ταῦτα καὶ οὔποτε πεῖρας ἔπεισι. In quibus v. 6. αἰεὶ pro ἀεὶ flagitat metrum; an vero præferendum sit κ' οὐ πολλὰ vel καὶ πολλὰ haud facile dixeris. Prior lectio melius convenire videtur iis quæ præcesserunt; attamen recte quoque dici potest, *unum esse, et simul esse multa*, quatenus omnia nempe partes unius sunt. Præferendam duxi hanc lectionem, quod et doctior sit, et eam confirmare videantur sequentia: καὶ οὐ κατὰ ταυτὸν ἀθρῆσαι, *unum quidem esse, attamen unum hoc non semper idem nobis apparere, sed alias alio modo existere.* ἀθρῆσαι enim, *conspicere, intueri*, rescribendum duxi pro ἀθροῖσαι in codd., quod nullum sensum fundit. HEEREN.

[g] Post καὶ οὐ κατὰ add. ταυτὸν ἀθροῖσαι. Πολλάκις δ' ἔσται ταῦτα καὶ οὔποτε etc. V. A. E.

[h] Πολλάκι, metro postulante dedi pro πολλάκις. HEEREN.

αἰεὶ πεῖρατ' [i]ἔχον· ποῖον γένος ἔλλαχε, τοῦτ' ὄν·
[k]ὧδε γὰρ ἀθάνατος θάνατος περὶ πάντα καλύπτει
[282] θνητὸς ἐὼν, καὶ πᾶν θνήσκει φθαρτὸν, τὸ δ' ὑπάρχον
[l]φαντασίαις ἀλληλοτρόποις καὶ [m]σχήμασι μορφῆς
[n]ἀλλάσσει, [o]τρόπον [p]ὡς ἀποκρύπτεμεν ὄψιν ἁπάντων·
ἄφθορον [q]ἔσται, ἐόν τ' αἰεὶ καθὸ τῆδε τέτυκται.

6 Ὁμήρου [Il. η'. 99.]

Ὅμηρος δὲ σημαίνει τὴν ἀνάλυσιν εἰς τὰ γεννητικὰ στοιχεῖα τοῦ παντὸς, λέγων·

Ἀλλ' ὑμεῖς μὲν [a]πάντες ὕδωρ καὶ γαῖα [b]γένοισθε.

7 Ἡρακλείτου.

[a]Ἐκ πυρὸς γὰρ [b]τὰ πάντα καὶ εἰς πῦρ πάντα τελευτᾷ.

8 Ὀρφεύς. [Plato Crat. p. 402.]

[284] Ὠκεανὸς [a]πρῶτος καλλίρρους ἦρξε [b]γάμοιο,
ὅς ῥα κασιγνήτην [c]ὁμομήτορα Τηθὺν ὄπυιεν.

9 Ἡσιόδου Θεογονίας [126.]

Γαῖα δέ τοι πρῶτον μὲν ἐγείνατο ἶσον ἑαυτῇ

[i] ἔχον dedi pro ἔχων, pendet enim ab ἕν. ποῖον autem pro inaudito πήϊον ap. Cant. [et A.] edidit jam Grotius. τοῦτ' ὂν dedi pro τοῦτ' ὢν ap. Grot. A. Cant. τούτων. HEEREN.

[k] ὧδὶ] ᾧδε V. A.

[l] φαντασίαις θ'] φθαρτάσ' ἴθ' ἀλλοτρόποις A. ἀλλοτρόποις V. ἀλληλοτρόποις em. Canterus.

[m] σχήμασι] σχήματι A. Cant. Mutavit Grotius.

[n] ἀλλάσσει] Sic Grotius. ἀλλάξει A. Cant.

[o] τρόπον] τρόπων V. A. τρόπῳ E.

[p] ὡς ἀποκρύπτεμεν] Sic Grotius. ἀποκρυπτόμενα A. Cant.

[q] ἐσθείοντ'] ἐσσείοντ' V. ἐς σείοντ' A. E. ἐστιν ἐόντ' Grotius.

6.

[a] πάντες] πάντως V. A. E.

[b] γένεισθε] γένοισθε V. A. E.

7.

[a] Ἐκ πυρὸς] Plut. de Pl. I. 3. Ἡράκλειτος καὶ Ἵππασος ἀρχὴν τῶν ὅλων τὸ πῦρ. ἐκ πυρὸς γὰρ τὰ πάντα γίνεσθαι, καὶ εἰς πῦρ πάντα τελευτᾷν λέγουσι.

[b] Post τὰ πάντα add. καὶ εἰς πῦρ πάντα V. A.

8.

[a] πρώτιστα καλίρροος] πρῶτος καλλίρους A. πρῶτος καλλίρροος nunc editum in Platone Crat. p. 402. Ver. seq. ὅς ῥα om. Cant.

[b] γαμοῖο] σαμοῖο A. V. E.

[c] ὁμομήτορα] ὁμομητέρα A.

οὐρανὸν ἀστερόενθ᾽, ἵνα μιν περὶ πάντα [a]καλύπτοι,
[b]ὄφρ᾽ εἴη μακάρεσσι θεοῖς ἕδος ἀσφαλὲς [c]αἰεί.

10 Φιλήμονος [84.]

[a]Ὃν οὐδὲ εἷς λέληθεν οὐδὲ ἓν ποιῶν,
οὐδ᾽ ἂν ποιήσων, οὐδὲ πεποιηκὼς πάλαι,
οὔτε θεὸς οὔτ᾽ ἄνθρωπος, οὗτος εἶμ᾽ ἐγὼ
Ἀὴρ, ὃν ἄν τις ὀνομάσειε καὶ Δία.
Ἐγὼ δ᾽, [b]ὃ θεοῦ ᾽στιν ἔργον, εἰμὶ πανταχοῦ,
[c]ἐνταῦθ᾽ ἐν Ἀθήναις, ἐν Πάτραις, ἐν Σικελίᾳ,
ἐν ταῖς πόλεσι πάσαισιν, ἐν ταῖς [d]οἰκίαις
[286] πάσαις, ἐν ὑμῖν πᾶσιν οὐκ ἔστιν τόπος
[e]οὗ μή ᾽στιν ἀήρ· ὁ δὲ παρὼν ἁπανταχοῦ
πάντ᾽ ἐξ ἀνάγκης οἶδε, πανταχοῦ παρών.

11 [a]Ἐμπεδοκλέους.

Τέσσαρα τῶν πάντων ῥιζώματα πρῶτον ἄκουε·
Ζεὺς ἀργὴς, Ἥρη τε φερέσβιος, ἠδ᾽ Ἀϊδωνεὺς,
νῆστις [b]θ᾽, ἣ δακρύοις τέγγει κρούνωμα βρότειον·
τῶν δὲ συνερχομένων ἐξ ἔσχατον ἵστατο νεῖκος.

[288] [c]ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ ΔΙΑ μὲν λέγει τὴν ζέσιν [d]καὶ τὸν αἰθέρα, [e]ἭΡΗΝ δὲ ΦΕΡΕΣΒΙΟΝ τὴν γῆν· ἀέρα δὲ τὸν ἈΙΔΩΝΕΑ, ἐπειδὴ φῶς οἰκεῖον οὐκ ἔχει, ἀλλ᾽ ὑπὸ ἡλίου καὶ σελήνης καὶ ἄστρων [f]καταλάμπεται. ΝΗΣΤΙΝ δὲ

9.

a καλύπτοι] καλύπτῃ V. A.
b ὅς ῥ᾽ εἴη] ὄφρ᾽ εἴη V. A.
c ἀεὶ] αἰεί A. V. Supra θεὸς A.

10.

a Ὃν om. A. qui mox ποῶν.
b οὗ θεοῦ ἐστὶν] ὁ θεοῦ ᾽στιν V. A.
c ἐνταῦθ᾽] εἶ ταῦθ᾽ V. A.
d οἰκείαις] οἰκίαις V. A.
e οὗ] οἷς V. A.

11.

a Ἐμπεδοκλέους] Deest lemma A.
b θ᾽ ἣ] τ᾽ ἣν A. Cant. Correxit Grotius ex Plutarcho et al.
c Ἐμπεδοκλῆς addit A.
d καὶ ante αἰθέρα addidi ex Plut. HEEREN.
e Ἥρην] Ἥραν A. Cant.
f καταλάμπεται conjecerat jam Cant. in marg. pro καταλαμβάνεται, idque sensu postulante in contextum recepi. Posset tamen quoque rescribi καταλαμβάνει, nempe τὸ φῶς, *lumen suum accipit*. HEEREN.

καὶ ΚΡΟΥΝΩΜΑ ΒΡΟΤΕΙΟΝ, τὸ σπέρμα καὶ τὸ ὕδωρ. Ἐκ τεσσάρων [g] οὖν στοιχείων τὸ πᾶν, τῆς [h] τούτων φύσεως p. 26. ἐξ ἐναντίων [i] συνεστώσης, [k] ξηρότητός τε καὶ ὑγρότητος, καὶ θερμότητος καὶ ψυχρότητος, ὑπὸ τῆς πρὸς ἄλληλα ἀναλογίας καὶ κράσεως ἐναπεργαζομένης τὸ πᾶν, καὶ μεταβολὰς μερικὰς μὲν ὑπομενούσης, τοῦ δὲ παντὸς λύσιν μὴ ἐπιδεχομένου. [kk] Λέγει γὰρ οὕτως·

[290] Ἄλλοτε μὲν φιλότητι [l] συνερχόμενα τάδε πάντα,
ἄλλοτε δ' [m] αὖτε ἕκαστα φρουρούμενα νείκεος ἔχθει.

Ὅμηρος δὲ τὴν φιλίαν καὶ τὸ νεῖκος [n] τῶν τοῦ παντὸς μερῶν ἐν τούτοις [o] αἰνίττεται, ἐν οἷς φησιν ἡ Ἥρα·

[p] Εἶμι γὰρ ὀψομένη πολυφόρβου πείρατα γαίης,
ὠκεανόν τε θεῶν γένεσιν καὶ μητέρα Τηθύν·
[q] τοὺς εἶμ' ὀψομένη, καί σφ' ἄκριτα νείκεα λύσω.

12

[a] ΘΑΛΗΣ, ὁ Μιλήσιος, ἀρχὴν τῶν ὄντων ἀπεφήνατο τὸ ὕδωρ, ἐξ ὕδατος γάρ φησι πάντα εἶναι, καὶ εἰς ὕδωρ πάντα ἀναλύεσθαι. Στοχάζεται δ' [b] ἀεὶ ἐκ τούτου, ὅτι πάντων τῶν ζώων ἡ γονὴ [c] ἀρχή ἐστιν, ὑγρὰ [d] οὐσία. Οὕτως εἰκὸς

g αὖ] οὖν V. A.

h τούτου] τούτων V. A. E.

i συνεστώσης] -εστάσης A.

k Post ξηρότητός τε add. καὶ ὑγρότητος V. A.

kk Leguntur quoque hi versus ap. Diog. Laert. VIII. 76. non tamen sine lect. varietate: et Simpl. ad Phys. p. 310. HEEREN.

l συνερχόμενα τάδε] Leg. συνερχόμεν' εἰς ἕν' ex Simplicio.

m αὖτε ἕκαστα φρουρούμενα] αὖτε om. A. leg. δίχ' ἕκαστα φορεύμενα cum Simplicio.

n τὴν τοῦ] τῶν τοῦ V. A.

o αἰνίττεται] αἰνίσσεται A. qui v. seq. om. γάρ.

p Versus Homeri exstant Il. ξ'. 201—203. Versu ultimo τοὺς rescripsi pro τοῖς. HEEREN.

q τοῖς] οὓς V. A. E.

12.

a Θαλῆς] Quæ sequuntur partim exstant ap. Plut. de Pl. Ph. I. 3. Gal. c. V. et Euseb. XIV. 14. HEEREN.

b ἀεὶ deest ap. Plut. et Euseb. qui habent στοχάζεται δ' ἐκ τούτου πρῶτον. HEEREN. στοχάζετε A. in ἀεὶ Jacobs. putat πρῶτον latere.

c ἀρχὴ] ἀρχής A.

d οὐσία] Sic etiam Eusebii mss. p. 748 A. οὖσα Plutarch.

[292] [e]καὶ τὰ πάντα ἐξ ὑγροῦ τὴν ἀρχὴν [f]ἔχειν. Δεύτερον, [g]ὅτι πάντα φυτὰ ὑγρῷ τρέφεται καὶ καρποφορεῖ, ἀμοιροῦντα δὲ ξηραίνεται. [h]Τρίτον, ὅτι καὶ αὐτὸ τὸ πῦρ τὸ τοῦ ἡλίου καὶ τῶν ἄστρων ταῖς τῶν [i]ὑδάτων ἀναθυμιάσεσι τρέφεται, καὶ αὐτὸς ὁ κόσμος.

ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ δὲ, [k]Πραξιάδου, Μιλήσιος, φησὶ [l]τὴν τῶν ὄντων ἀρχὴν εἶναι τὸ ἄπειρον· ἐκ γὰρ τούτου [m]πάντα γίγνεσθαι, καὶ εἰς τοῦτο πάντα φθείρεσθαι. Διὸ καὶ γεννᾶσθαι ἀπείρους κόσμους, καὶ πάλιν φθείρεσθαι εἰς τὸ ἐξ οὗ [n]γίνεται. Λέγει οὖν [o]διότι [p]ἀπέραντόν ἐστιν, ἵνα μηδὲν [q]ἐλλείπῃ ἡ γένεσις ἡ ὑφισταμένη. Ἁμαρτάνει δὲ μὴ [294] λέγων τί ἐστι τὸ ἄπειρον[r]. Τὸ δ' ἄπειρον οὐδὲν ἄλλο ἢ ὕλη ἐστίν· οὐ δύναται δὲ ἡ ὕλη εἶναι ἐνέργεια, ἐὰν μὴ τὸ ποιοῦν [s]ὑπόκειται.

[t]ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ, συνεστάναι τὸ πᾶν ἐκ τοῦ ἑνὸς καὶ τοῦ ἀεννάου, ἀέναον τὴν ὕλην αἰνιττόμενος διὰ τοῦ [v]πλήθους.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ ἀρχὴν τῶν πάντων εἶναι τὴν γῆν. Γράφει γὰρ ἐν τῷ περὶ φύσεως·

[u]Ἐκ γῆς γὰρ τὰ πάντα, καὶ εἰς γῆν τὰ πάντα [x]τελευτᾷ.

e καὶ πάντα] καὶ τὰ πάντα V. A. E.

f ἔχει] ἔχειν A. E.

g ὅτι addidi ex Plut. HEEREN.

h Τρίτον καὶ] τρίτον ὅτι καὶ V. A. P.

i ὑδάτων ἀναθυμιαμ.] θυμιαμάτων ἀναθυμιάσεσι V. A. E.

k Προυξιάδου] Πραξιάδου Heeren.

l τὴν, quod deest in Stob. revocavi ex Plut. HEEREN.

m τὰ ante πάντα supplent codd. V. A. E. HEEREN. τὰ diserte om. A.

n γίνεται] γίγνονται Heeren.

o ὅτι] διότι V. A.

p ἀπείρατον] ἀπέραντον omnes Eusebii mss. p. 748 D.

q ἐλλίπῃ] ἐλλείπῃ V. ἐλλείπει A.

r Additur hic ap. Plut. Πότερον ἀήρ ἐστιν ἢ ὕδωρ, ἢ γῆ, ἢ ἄλλα τινὰ σώματα· Ἁμαρτάνει οὖν, τὴν μὲν ὕλην ἀποφαινόμενος, τὸ δὲ ποιοῦν αἴτιον ἀναιρῶν. Τὸ γὰρ ἄπειρον etc. Aberravit ab his forte Stobæi oculus ob similes vocum terminationes. HEEREN.

s ὑπόκειται] ὑπόθηται Euseb. ὑποκέηται Plut.

t Ξενοφάνης] Ξενοκράτης V. A. E.

v Post πλήθους add. Ξενοφάνης —τελευτᾶ ex A. V. E.

u ἐκ γῆς γὰρ τὰ A. V. E. ἐκ γαίης γὰρ π. Sext. Empir. Adv. Math. X. 313. p. 539. ed. Bekker.

[296] ᾿ΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ, [y] Εὐρυστράτου Μιλήσιος, ἀρχὴν τῶν ὄντων ἀέρα ἀπεφήνατο, ἐκ γὰρ τούτου πάντα γίγνεσθαι, καὶ εἰς αὐτὸν πάλιν ἀναλύεσθαι. Οἷον ἡ ψυχὴ, φησὶν, ἡ ἡμετέρα, ἀὴρ οὖσα, συγκρατεῖ ἡμᾶς, καὶ ὅλον τὸν κόσμον πνεῦμα καὶ ἀὴρ περιέχει. Λέγεται δὲ συνωνύμως ἀὴρ καὶ πνεῦμα. Ἁμαρτάνει [z] δὲ, ἐξ ἁπλοῦ καὶ μονοειδοῦς ἀέρος καὶ πνεύματος δοκῶν συνεστάναι τὰ ζῶα· ἀδύνατον γὰρ ἀρχὴν μίαν [a] τὴν ὕλην [b] τῶν ὄντων ὑποστῆναι, ἀλλὰ καὶ τὸ ποιοῦν αἴτιον χρὴ ὑποτιθέναι· οἷον ἄργυρος οὐκ ἀρκεῖ πρὸς τὸ ἔκπωμα [c] γενέσθαι, ἐὰν μὴ τὸ ποιοῦν ᾖ, τουτέστιν ὁ [d] ἀργυροκόπος.

᾿ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ, Ἡγησιβούλου, ὁ Κλαζομένιος, ἀρχὰς τῶν ὄντων τὰς [e] ὁμοιομερείας ἀπεφήνατο. Τροφὴν γοῦν προσφερόμεθα μονοειδῆ ἄρτον καὶ ὕδωρ· καὶ ἐκ ταύτης τρέφεται φλὲψ, ἀρτηρία, σὰρξ, [f] νεῦρα, ὀστᾶ, καὶ τὰ λοιπὰ μόρια.
[298] Τούτων οὖν γιγνομένων, ὁμολογητέον, ὅτι ἐν τῇ τροφῇ τῇ [g] προσφερομένῃ πάντα ἐστὶ τὰ ὄντα, καὶ ἐκ τῶν ὄντων πάντα [h] αὔξεται. . . . ἐν τούτῳ οὖν ἐστι λόγῳ θεωρητὰ [i] μόρια . . . τὰ μέρη εἶναι ἐν τῇ τροφῇ τοῖς [k] γεννωμένοις, ὁμοιομερείας

[x] τελευτᾷ] Versus Xenophanis adumbratus videtur ex Heracliti illo, supra laudato; ἐκ πυρὸς τὰ πάντα, καὶ εἰς πῦρ πάντα τελευτᾷ. HEEREN.

[y] Εὐρυστάτου] Εὐρυστράτου Heeren. cum Diog. Laërt. II. 3.

[z] καὶ ἐξ] δὲ ἐξ V. A.

[a] ἢ τὴν] ἢ cum Plutarcho om. Heeren.

[b] ὄντων] τῶν ὅλων V. A. P.

[c] γενέσθαι] γίνεσθαι V.

[d] ἀργυροκόπος] ἀργυροκότος A.

[e] ὁμοιομερείας] –ρίας V. A. E.

[f] νεῦρον] νεῦρα A.

[g] προφερομένη πάντες] ποσσφερομένη πάντα V. A.

[h] Post αὔξεται supplentur nonnulla a Plut. quæ Stob. omisit. καὶ ἐν ἐκείνῃ ἔτι τῇ τροφῇ μόρια αἵματος γεννητικὰ, καὶ νεύρων καὶ ὀστέων, καὶ τῶν ἄλλων, ἃ ἦν λόγῳ θεωρητὰ μόρια. Οὐ γὰρ δεῖ πάντα ἐπὶ τὴν αἴσθησιν ἀνάγειν, ὅτι ἄρτος καὶ τὸ ὕδωρ ταῦτα κατασκευάζει, ἀλλ' ἐν τούτοις ἐστὶ θεωρητὰ μόρια. Ἀπὸ τοῦ οὖν ὅμοια τὰ μέρη εἶναι ἐν τῇ τροφῇ etc. Patet in Stob. librariorum negligentia lacinias tantum antiquæ et plenæ lectionis superesse, omnemque adeo h. l. ex Plut. supplendum esse. HEEREN.

[i] Post μόρια add. τὰ μέρη V. A. E.

[k] γενομένοις] γεννωμένοις A. qui statim ὁμοιομερίας αὐτά.

αὐτὰς ἐκάλεσε, καὶ ἀρχὰς τῶν ὄντων. Καὶ τὰς μὲν ὁμοιομερείας ὕλην, τὸ δὲ ποιοῦν αἴτιον, νοῦν, τὸν πάντα διαταξάμενον.

ἈΡΧΕΛΑΟΣ ἀέρα ἄπειρον, καὶ τὴν περὶ αὐτὸν πυκνότητα καὶ [l] μάνωσιν. Τούτων δὲ, τὸ μὲν εἶναι πῦρ, τὸ δὲ ὕδωρ. Οὗτοι μὲν οὖν, ἐφεξῆς ἀλλήλοις ταῖς διαδοχαῖς γενόμενοι, τὴν Ἰωνικὴν ἐκπληροῦσι φιλοσοφίαν, οὕτω προσαγορευθεῖσαν, διότι [m] Μιλήσιος αὐτῆς κατῆρξεν ἀνὴρ, ὁ Θαλῆς, [n] ἀπὸ τῆς τῶν Ἰώνων μητροπόλεως. p. 27.

ΦΙΛΟΛΑΟΣ ὁ Πυθαγόρειος, τὸ πέρας καὶ τὸ ἄπειρον.

[o] ΣΤΡΑΤΩΝ στοιχεῖα τὸ θερμὸν καὶ τὸ ψυχρόν.

[300] ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ, Μνησάρχου, Σάμιος, πρῶτος [p] φιλοσοφίαν τούτῳ τῷ ῥήματι προσαγορεύσας, ἀρχὰς τοὺς ἀριθμοὺς καὶ τὰς συμμετρίας τὰς ἐν τούτοις, ἅς τινας ἁρμονίας καλεῖ· [q] τὰ δ' ἐξ ἀμφοτέρων σύνθετα, στοιχεῖα· πάλιν δὲ τὴν μονάδα, καὶ τὴν ἀόριστον δυάδα ἐν ταῖς ἀρχαῖς. Σπεύδει δὲ αὐτῷ τῶν ἀρχῶν ἡ μὲν ἐπὶ τὸ ποιητικὸν αἴτιον καὶ [r] ἀΐδιον, ὅπερ [s] ἐστὶ νοῦς, ὁ θεός· ἡ δὲ ἐπὶ τὸ παθητικόν τε καὶ [t] ὑλικον, ὅπερ ἐστὶν ὁ ὁρατὸς κόσμος. Εἶναι δὲ τὴν [u] φύσιν [τοῦ ἀριθμοῦ] [x] δεκάδα· μέχρι γὰρ τῶν δέκα πάντες ἀριθμοῦσιν, ἐφ' ἃ ἐλθόντες, πάλιν [y] ἀναποδοῦσιν ἐπὶ τὴν μονάδα. Καὶ τῶν δέκα πάλιν [z] φησὶν ἡ [a] δύναμίς

[l] μάνωσιν] μάνωσι A.

[m] Μιλήσιος] μηλίσιος A.

[n] ἀπὸ τῶν] ἀπὸ τῆς τῶν V. A. E.

[o] Legitur ap. Cant. [et A.] Στράτων στοιχεῖα καὶ ψυχρὸν, nullo sensu. Excidisse τὸ θερμὸν nemo facile dubitabit, idque vidit Fabric. ad Sext. Pyrrh. Hyp. III. 32. HEEREN.

[p] φιλοσοφίας] –φίαν V. A.

[q] δὲ addidi ex Plut. HEEREN.

[r] ἴδιον] εἰδικὸν Plutarch. ἀΐδιον Heeren.

[s] ἔστιν οὐρανὸς] ἐστὶ νοῦς V. A. E. P.

[t] ὕλικον] Sic Plutarch. ἴδιον A. Cant.

[u] φύσιν] τοῦ ἀριθμοῦ addit Plutarch.

[x] Post δεκάδα add. μέχρι γὰρ τῶν δέκα πάντες etc. V. A. E.

[y] ἀναποδοῦσιν] ἀναποδίζουσιν tanquam ex Plutarcho Heerenius, ubi tamen legitur ἀναποδοῦσιν.

[z] φησὶν] φασὶν A.

[a] Post ἡ δύναμις spatiol. A.

ἐστιν ἐν τοῖς τέτταρσιν. Ἐκ γὰρ τῆς τετράδος καὶ τῶν αὐτῆς [b]μερῶν [c]ἀναπληροῦται· ἐὰν δὲ [d]ὑπερβάλῃ τὸν τῆς τετράδος, καὶ [e]τῶν δέκα ὑπερεκπεσεῖται. Διὸ καὶ [f]ἐπεφθέγγοντο οἱ [g]Πυθαγόρειοι, ὡς [h]μεγίστου ὅρκου ὄντος τῆς τετράδος,

[302] Οὐ μὰ τὸν ἁμετέρᾳ κεφαλᾷ [i]παραδόντα τετρακτὺν,
[k]παγὰν ἀεννάου [l]φύσιος ῥίζωμα τ' ἔχουσαν.

13 Θεανοῦς ἐκ τοῦ περὶ Εὐσεβείας.

[a]Καὶ συχνοὺς μὲν Ἑλλήνων [b]πέπεισμαι νομίσαι φάναι Πυθαγόραν ἐξ ἀριθμοῦ πάντα φύεσθαι. Οὗτος δὲ ὁ λόγος [c]ἀπορήσας ἔρχεται, πῶς ἃ μηδέ ἐστιν [d]ἐπινοεῖται καὶ [e]ἃ γέννα δὲ οὐκ ἐξ ἀριθμοῦ, κατὰ δὲ ἀριθμὸν ἔλεγε πάντα
[304] γίγνεσθαι, ὅτι ἐν ἀριθμῷ τάξις πρώτη, ἧς μετουσίᾳ [f]καὶ ἐν τοῖς ἀριθμητοῖς [g]πρῶτόν τι καὶ δεύτερον, καὶ τ' ἄλλα ἑπομένως τέτακται.

14

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ καὶ [a]ἽΠΠΑΣΟΣ ἀρχὴν τῶν ἁπάντων τὸ πῦρ. Πρῶτον μὲν γὰρ τὸ [b]παχυμερέστερον αὐτοῦ εἰς

b μέτρων] μερῶν V. A. E.

c ἀναπληροῦνται] –ροῦται A.

d ὑπερβάλη] ὑπερβάλλῃ A. Mox τὴν τῆς A. Cant. τις τῆς Heeren. ὑπερβάληται τὸν τῆς Plutarch.

e τῶν δ. ὑπερεκπεσεῖται] τοῖς δέκα ὑπερεμπεσεῖται V.

f ἐπιφθ.] ἐπεφθέγγοντο V. A.

g Πυθαγόρειοι] Πυθαγόριοι A.

h μεγίστου] μεγίστου [ης] ὄντος τῆς A. ὅρκου ex Plutarch. addidit Heeren.

i παδόντα] Ita Cant. pro παραδόντα. ἐπιθέντα A. V.

k παγὰν] πᾶσαν A. V.

l φύσιος] σοφίαν ῥιζώματα A. V.

13.

a Καὶ συχνοὺς] λέγεν καὶ συχνοὺς Cant.

b Post πέπεισμαι add. νομίσαι V. A. E. Mox οὗτος pro αὐτὸς ed. Heeren.

c ἀπορήσας ἔρχεται] ἀπορίαν παρέχεται edidit Heeren. Melius forte, ἀπορίας ἔχεται. Seqq. ita exhibuit Heeren. πῶς ἃ μηδέ ἐστιν ἐπινοεῖται γεννᾶν; ὁ δὲ οὐκ ἐξ. Mendosa reliqui.

d ἐπινοῆσαι] ἐπινοεῖται V. A.

e ἀγέννα] ἅ γέννα A.

f κ' ἂν τοῖς] κὰν τοῦ A.

g πρῶτόν τε] πρῶτόν τι V. A.

14.

a Ἱππάλους Cant. in textu. *Hippasus* in versione secundum Plutarchum. Ἵππαλος A.

b Post παχυμερέστερον add. αὐτοῦ V. A. P.

αὐτὸ συστελλόμενον [c]γίγνεται γῆ, ἔπειτα ἀναχαλωμένην [d]τὴν γῆν ὑπὸ τοῦ πυρὸς φύσει ὕδωρ ἀποτελεῖσθαι, [e]ἀναθυμιώμενον δὲ ἀέρα γίγνεσθαι. Πάλιν δὲ τὸν κόσμον καὶ τὰ σώματα πάντα ὑπὸ τοῦ πυρὸς ἀναλοῦσθαι ἐν τῇ ἐκπυρώσει.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ, Θεοκρίτου, Χῖος, τὰ ἀδιαίρετα καὶ τὸ κενόν.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ δὲ, ὁ [f]Ἀπολλωνιάτης, ἀέρα ἄπειρον.

[306] ΖΗΝΩΝ Μνασαίου [g]Κιτιεὺς, ἀρχὰς τὸν θεὸν καὶ τὴν ὕλην, στοιχεῖα δὲ τέσσαρα.

ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ, Μιλήσιος, [h]ἀρχὰς καὶ στοιχεῖα τὸ πλῆρες καὶ τὸ κενόν.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ τὰ ναστὰ καὶ κενά.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ ἀρχὰς εἶναι τῶν ὄντων σώματα, λόγῳ θεωρητὰ, ἀμέτοχα κενοῦ, ἀγέννητα, [i]ἀδιάφθαρτα, [τὰ] οὔτε [k]τρωθῆναι δυνάμενα, οὔτε ἀλλοιωθῆναι. Εἴρηται δὲ ἄτομος, οὐχ ὅτι ἐστὶν ἐλαχίστη, ἀλλ' ὅτι οὐ δύναται [l]τμηθῆναι, [m]ἀπαθὴς οὖσα, καὶ ἀμέτοχος κενοῦ.

15 Ἑρμοῦ. [p. 27. Patrit.]

Ἡ γὰρ μονὰς, οὖσα πάντων ἀρχὴ καὶ ῥίζα, ἐν πᾶσίν ἐστιν, ὡς ἂν ῥίζα [a]καὶ ἀρχὴ, ἄνευ δὲ ἀρχῆς οὐδέν· ἀρχὴ δὲ ἐξ οὐδενὸς, [b]ἀλλ' ἐξ αὐτῆς, εἴ γε ἀρχή ἐστι τῶν ἑτέρων. Μονὰς οὖσα οὖν ἀρχὴ, πάντα ἀριθμὸν ἐμπεριέχει, ὑπὸ

[c] γίγνεται γὰρ] γὰρ om. A. γῆν γίγνεσθαι Plutarch.

[d] Post τὴν add. γῆν V. A. E.

[e] ἀναθυμιώμενον—γίγνεσθαι exciderunt ex ed. Heeren.

[f] Ἀπολλωνάτης] -νιάτης V. A.

[g] Κιτιεὺς] Κητιεὺς A. Cant.

[h] ἀρχὰς καὶ στοιχεῖα] ἀρχῆς δὲ στοιχεῖα V.

[i] ἀδιάφθαρτα] διάφθαρτα A. ἀΐδια ἄφθαρτα Plutarch.

[k] τρωθῆναι] στρωθῆναι A. V. θραυσθῆναι Plutarch.

[l] τμηθῆναι] τιμηθῆναι A.

[m] ἀπαθεῖς οὖσα καὶ ἀμέτοχος κενοῦ] ἀπαθεῖς οὖσαι καὶ ἀμέτοχοι κενοῦ V. A.

15.

[a] Post καὶ ἀρχὴ additur in Patric. ed. p. 27. οὖσα. Mox pro εἴγε leg. ἐπεί γε.—Denique post ἑτέρων add. Αὐτὴ γάρ ἐστιν, ἐπεὶ μὴ ἄλλης ἀρχῆς ἔτυχεν οὖσα. HEEREN.

[b] ἀλλ'] ἢ Patrit. qui mox ἐπεὶ ἀρχή.

μηδενὸς ἐμπεριεχομένη· καὶ πάντα ἀριθμὸν γεννᾷ, ὑπὸ μηδενὸς γεννωμένη ἑτέρου ἀριθμοῦ. Πᾶν δὲ τὸ γεννώμενον ἀτελὲς, καὶ διαιρετὸν, καὶ αὐξητὸν, καὶ μειωτόν· τῷ δὲ [308] τελείῳ οὐδὲν τούτων γίγνεται. Αὕτη οὖν, ὦ Τάτ, κατὰ τὸ δυνατόν σοι ὑπογέγραπται τοῦ θεοῦ εἰκών.

16

ἜΚΦΑΝΤΟΣ, Συρακούσιος, [a] εἷς τῶν [b] Πυθαγορείων, [c] πάντων [ἀρχὰς] τὰ ἀδιαίρετα σώματα, καὶ τὸ κενόν. Τὰς γὰρ Πυθαγορικὰς μονάδας οὗτος πρῶτος ἀπεφήνατο σωματικάς.

ΠΛΑΤΩΝ, Ἀρίστωνος, τρεῖς ἀρχὰς, τὸν θεὸν, τὴν ὕλην, p. 28. τὴν ἰδέαν· ὑφ᾽ οὗ, ἐξ οὗ, πρὸς ὅ. [e] Ὁ δὲ θεὸς νοῦς [f] ἐστι [τοῦ κόσμου], ἡ δὲ ὕλη τὸ ὑποκείμενον γενέσει καὶ φθορᾷ, ἰδέα δὲ, οὐσία ἀσώματος ἐν τοῖς νοήμασι καὶ ταῖς φαντασίαις τοῦ θεοῦ.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ, [g] Νικομάχου Σταγειρίτης, ἀρχὰς μὲν, εἶδος, ὕλην, στέρησιν· στοιχεῖα δὲ τέσσαρα, πέμπτον δέ τι σῶμα [h] αἰθέριον, [i] ἀμετάβλητον· στοιχεῖα δὲ τῶν γεννητῶν, κατὰ μὲν τὰς δυνάμεις, θερμὸν, ψυχρὸν, ὑγρὸν, ξηρὸν, κατὰ δὲ τὰς οὐσίας, ἐν αἷς καὶ περὶ ἃς ὑπάρχουσιν αὗται, [k] τὰ τέσσαρα.

[310] [l] ΔΙΟΔΩΡΟΣ, ἐπίκλην Κρόνος, τὰ ἀμερῆ σώματα

16.

[a] εἶτα] εἷς τῶν V. εἰς τῶν A.

[b] Πυθαγορείων] Πυθαγορίων A.

[c] πάντων τὰ ἀδείερα σώματα κ. τ. κ.] πάντων τῶν τὰ ἀδιαίρετα σώματα καὶ τὸ κενὸν V. A. ἀδιαίρετα quoque E. Origen. Philos. T. I. p. 894. c. 15. τέσσαρα conj. Canter.

ib. Post πάντων sensu flagitante addidi ἀρχάς. HEEREN.

[e] Ὁ δὲ] ὁ μὲν Heerenius.

[f] ἐστι τοῦ κόσμου] τοῦ κόσμου om. Plutarch.

[g] Νεικομάχου] εἰκομάχου A.

[h] τὸ αἰθέριον] τὸ om. Plutarch.

[i] Copiose Aristoteles sententiam hanc proponit in Phys. I. 6. 7. De elementis autem disputat in libr. de Cœlo II. 4. 5. et et de corrupt. et gen. I. 3. HEER.

[k] τὰ τέσσαρα, nempe aërem, ignem, aquam et terram. Ap. Cant. male editum erat τὸ ante αἰθέριον. HEEREN.

[l] Sext. adv. Math. IX. 363. Διόδωρος δὲ ὁ ἐπικληθεὶς Κρόνος ἀμερῆ καὶ ἐλάχιστα σώματα.

ἄπειρα, τὰ [m] δ' αὐτὰ λεγόμενα καὶ ἐλάχιστα· ἄπειρα μὲν [n] κατὰ τὸν ἀριθμὸν, ὡρισμένα δὲ [o] κατὰ τὸ μέγεθος.

[p] Οἱ μὲν οὖν περὶ ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΝ καὶ ΠΛΑΤΩΝΑ διαφέρειν ἡγοῦνται ἀρχὴν καὶ στοιχεῖα. Θαλῆς δ' ὁ Μιλήσιος [q] ταυτὸ νομίζει ἀρχὴν καὶ [r] στοιχεῖα. [Πλεῖστον δὲ ὅσον διαφέρει ἀλλήλων. Τὰ μὲν γὰρ στοιχεῖα] ἐστι σύνθετα, τὰς δὲ ἀρχάς φαμεν εἶναι οὔτε συνθέτους οὔτ' ἀποτελέσματα· οἷον στοιχεῖα μὲν καλοῦμεν γῆν, ὕδωρ, [s] ἀέρα, πῦρ· ἀρχὰς δὲ λέγομεν διὰ τὸ οὐδὲν ἔχειν πρότερον ἐξ οὗ γεννᾶται, ἐπεὶ οὐκ ἔσται [t] τοῦτο ἀρχὴ, ἀλλ' ἐκεῖνο ἐξ οὗ γεννᾶται. Τῆς δὲ γῆς καὶ τοῦ ὕδατός ἐστί τινα πρότερον ἐξ ὧν γέγονεν, ὕλη ἄμορφος καὶ ἀνείδεος. Λέγει γοῦν ἐν [u] Τιμαίῳ· "βουληθεὶς γὰρ ὁ θεὸς ἀγαθὰ μὲν πάντα, [x] φαῦ-
" λον δὲ μηδὲν εἶναι κατὰ δύναμιν, οὕτω δὴ πᾶν ὅσον ἦν
" ὁρατὸν παραλαβὼν οὐχ ἡσυχίαν ἄγον, ἀλλὰ κινούμενον
[312] " πλημμελῶς καὶ ἀτάκτως, εἰς τάξιν αὐτὸ ἤγαγεν ἐκ τῆς
" ἀταξίας."

[y] ΧΡΥΣΙΠΠΟΥ. Περὶ δὲ τῶν ἐκ τῆς οὐσίας στοιχείων τοιαῦτά τινα ἀποφαίνεται, τῷ τῆς αἱρέσεως ἡγεμόνι Ζήνωνι κατακολουθῶν, τέτταρα λέγων εἶναι [z] στοιχεῖα καὶ φυτὰ καὶ τὸν ὅλον κόσμον, καὶ τὰ ἐν αὐτῷ περιεχόμενα, καὶ εἰς

[m] δ' αὐτὰ] δ' αὖ V.

[n] κατ' ἀριθμ.] κατὰ τὸν ἀριθμὸν A.

[o] κατὰ τὸ μέγεθος] κατὰ μέθοδον V. A.

[p] Ὁ μὲν] Οἱ μὲν οὖν περὶ etc. V. A.

[q] ταυτὸ] ταυτὸν A.

[r] Post στοιχεῖα addidimus hic ex Plutarch. [p. 875 C.] verba, πλεῖστον δὲ ὅσον διαφέρει ἀλλήλων. Τὰ μὲν γὰρ στοιχεῖα etc. Flagitat ea sensus, eaque ob homoioteleuton librariorum negligentia omissa esse, apparet. HEEREN.

[s] πῦρ ἀέρα] ἀέρα πῦρ V. A.

[t] τοῦτο supplevi ex Plut. HEEREN.

[u] Τιμαίῳ] Sc. p. 30.

[x] φαῦλον] φ̈αῦλον A. cum φρ̈αῦλον in marg. φλαῦρον Plato.

[y] Χρυσίππου] Sic A. Deest nomen Cant. Heerenius e conj. edidit Χρύσιππος ἐν τῷ περὶ τῆς οὐσίας τῶν στοιχείων.

[z] Post στοιχεῖα manca esse videtur oratio, ac supplendum: καὶ ἐκ τούτων συνίστασθαι καὶ φυτὰ etc. HEEREN.

ταῦτα διαλύεσθαι. Τὸ δὲ [[a]πῦρ] κατ' ἐξοχὴν στοιχεῖον λέγεσθαι, [b]διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ πρώτου τὰ λοιπὰ συνίστασθαι κατὰ μεταβολὴν, καὶ εἰς αὐτὸ ἔσχατον πάντα χεόμενα διαλύεσθαι. Τοῦτο δὲ μὴ ἐπιδέχεσθαι τὴν εἰς [bb]ἄλλο χύσιν ἢ ἀνάλυσιν. Συνίστασθαι δὲ ἐξ αὐτοῦ τὰ λοιπὰ, καὶ χεόμενα εἰς τοῦτο ἔσχατον τελευτᾶν, παρ' ὃ καὶ στοιχεῖον λέγεσθαι, ὃ πρῶτον ἕστηκεν οὕτως, [c]ὥστε σύστασιν διδόναι ἀπ' αὐτοῦ, καὶ ἀπὸ τῶν λοιπῶν χύσιν καὶ διάλυσιν δέχεσθαι εἰς αὐτό. Κατὰ μὲν τὸν λόγον τοῦτον αὐτοτελῶς
[314] λεγομένου τοῦ πυρὸς [d]στοιχείου, οὐ μετ' ἄλλου γάρ· κατὰ δὲ τὸν πρότερον καὶ μετ' ἄλλων συστατικὸν εἶναι, πρώτης μὲν γιγνομένης τῆς ἐκ πυρὸς κατὰ σύστασιν εἰς ἀέρα μεταβολῆς, δευτέρας δ' ἀπὸ τούτου εἰς ὕδωρ, τρίτης δ' [e]ἔτι μᾶλλον κατὰ τὸ ἀνάλογον συνισταμένου τοῦ ὕδατος εἰς γῆν. Πάλιν δὲ ἀπὸ ταύτης διαλυομένης καὶ [f]διαχεομένης πρώτη μὲν γίγνεται [g]χύσις εἰς ὕδωρ, δεύτερον δὲ ἐξ ὕδατος εἰς ἀέρα, [h]τρίτη δὲ καὶ ἐσχάτη εἰς πῦρ. [i]Λέγεσθαι δὲ πῦρ τὸ πυρῶδες πᾶν, καὶ ἀέρα τὸ ἀερῶδες, καὶ ὁμοίως τὰ λοιπά. Τριχῶς δὲ λεγομένου κατὰ Χρύσιππον τοῦ στοιχείου, [k]καθ' ἕνα μὲν τρόπον τοῦ πυρὸς, διὰ τὸ ἐξ αὐτοῦ τὰ λοιπὰ συνίστασθαι κατὰ μεταβολὴν, καὶ εἰς αὐτὸ λαμβά-

[a] Dubitari nequit supplendum hic esse πῦρ, quod apud Cant. excidit. HEEREN.

[b] καὶ ante διὰ deest V. A.

[bb] ἄλλο χύσιν ἢ] Tacite edidit Heerenius ἄλλα χ. καὶ.

[c] ὥστε] ἔστε A.

[d] στοιχεῖον] στοιχείου V. A.

ib. Editum erat ap. Cant. nullo sensu τοῦ πυρὸς στοιχεῖον κατὰ δὲ τὸν πρότερον οὐ μετ' ἄλλου γὰρ καὶ μετ' ἄλλων συστατικὸν εἶναι.—στοιχείου pro στοιχεῖον exhibent codd. V. A. Reliqua sananda erant verborum transpositione, ita ut ea in contextu exhibuimus. Vult enim auctor altero sensu ignem solum, priori vero (κατὰ τὸν πρότερον n. λόγον) ignem simul cum tribus reliquis, elementum dici. HEEREN.

[e] ἔτι] Sic Heeren. ἐστὶ A. Cant.

[f] διερχομένης] διαχεομένης V. A.

[g] τάχυσις] χύσις V. A. E. P.

[h] τρίτον] τρίτη V. A.

[i] Λέγεσθαι πυρῶδες] λέγεσθαι πῦρ τὸ πυρῶδες etc. V. A. δὲ addidit Heeren.

[k] καθ' ἓν] καθ' ἕνα V. A. P.

νειν τὴν ἀνάλυσιν, καθ' ἕτερον δὲ, καθ' ὃ λέγεται τὰ [l]*τέσσαρα στοιχεῖα, πῦρ, ἀὴρ, ὕδωρ, γῆ· ἐπεὶ διὰ τούτων τινὸς,* [m]*ἢ τινῶν,* [n]*ἢ καὶ πάντων, τὰ λοιπὰ* [o]*συνέστηκε* [p]*διὰ μὲν τῶν τεττάρων, ὡς τὰ ζῶα καὶ τὰ ἐπὶ γῆς πάντα συγκρίματα, διὰ δυοῖν δὲ, ὡς ἡ σελήνη διὰ πυρὸς καὶ ἀέρος συνέστηκε,* [q]*διὰ* [r]*ἑνὸς δὲ, ὡς ὁ ἥλιος, διὰ πυρὸς γὰρ μόνου, ὁ γὰρ ἥλιος πῦρ ἐστιν εἰλικρινές.* [s]Κα*τὰ τρίτον λόγον λέγεται στοιχεῖον* p. 29.
εἶναι ὃ πρῶτον συνέστηκεν οὕτως, ὥστε γένεσιν διδόναι ἀπ' αὐτοῦ [t]*ὁδῷ μέχρι τέλους, καὶ ἐξ ἐκείνου τὴν ἀνάλυσιν δέχεσθαι εἰς ἑαυτὸ τῇ ὁμοίᾳ ὁδῷ.* Γ*εγονέναι δ' ἔφησε καὶ*
[316] *τοιαύτας ἀποδόσεις περὶ στοιχείου, ὥς ἐστι τό τε δι' αὐτοῦ* [u]*εὐκινητότατον, καὶ* [x]*ἡ ἀρχὴ,* [y]*καὶ λόγος,* [z]*καὶ ἡ ἀΐδιος δύναμις, φύσιν ἔχουσα τοιαύτην, ὥστε γῆν τε κινεῖν* [a]*κάτω πρὸς γῆν, τὴν τροφὴν, καὶ ἀπὸ τῆς τροφῆς ἄνω, πάντῃ κύκλῳ εἰς αὐτήν τε πάντα καταναλίσκουσα, καὶ τὸ αὐτῆς πάλιν ἀποκαθιστᾶσα* [b]*τεταγμένως καὶ ὁδῷ.*

Κεφ. *ια'*.

ΠΕΡΙ ΥΛΗΣ.

I

Ὕλη ἐστὶ τὸ ὑποκείμενον πάσῃ γενέσει καὶ φθορᾷ καὶ ταῖς ἄλλαις μεταβολαῖς.

[l] *τέσσαρα*] *τέτταρα* A.

[m] *ἢ τινῶν*] *ἢ καὶ τινῶν* ed. Heeren.

[n] *καὶ πάντ.*] *ἢ καὶ πάντων* V. A.

[o] *σῦνέστηκε* sic A.

[p] *διὰ μὲν—συνέστηκε* exciderunt ex ed. Heereniana.

[q] *διὰ δὲ ἑνὸς*] *δι' ἑνὸς δὲ* V. A.

[r] *ἑνὸς δὲ*] Sic A. *δὲ ἑνὸς* Cant.

[s] Καὶ *τὸ τρίτον*] Κα*τὰ τρίτον* V. A.

[t] *ὁδῷ via*, nempe *præscripta*, i.e. commutatione solita; ut mox infra *τεταγμένως καὶ ὁδῷ*. HEEREN.

[u] *εὐκινήτατον*] *εὐκινητότατον* V. A. P.

[x] *ἀρχὴ*] *ἡ ἀρχὴ* V. A.

[y] *καὶ λόγος*] *καὶ* om. A. Cant.

[z] *καὶ ἀΐδιος*] *καὶ ἡ ἀΐδιος* A.

[a] *κάτω*] *κάτα* A.

[b] *τεταγμένος*] *–μένως* V. A.

I.

Leguntur hæc verba quoque

2 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 51 b.]

Καὶ γέγονεν, ὦ τέκνον, [a] ἡ ὕλη καὶ ἦν, ὕλη γὰρ ἀγγεῖον γενέσεώς ἐστι, [b] γένεσις δὲ ἐνεργείας τρόπος τοῦ ἀγεννήτου [318] καὶ προόντος θεοῦ. Τὸ σπέρμα οὖν τῆς γενέσεως [c] λαμβάνουσα γέγονε, καὶ [d] τρεπτὴ ἐγένετο, καὶ ἰδέας εἶχε [e] μορφοποιουμένη, ἐφέστηκε γὰρ αὐτῇ τρεπομένῃ ἡ τεχνιτεύουσα τὰς τῆς τροπῆς ἰδέας. Ἀγεννησία οὖν τῆς ὕλης ἀμορφία ἦν, ἡ δὲ γένεσις τὸ ἐνεργεῖσθαι.

3

Οἱ ἀπὸ [a] ΘΑΛΗΤΟΣ καὶ ΠΥΘΑΓΟΡΟΥ, λέγω [b] δὲ τοὺς μέχρι τῶν Στωϊκῶν καταβεβηκότας, σὺν Ἡρακλείτῳ, τρεπτὴν, καὶ ἀλλοιωτὴν, καὶ [c] μεταβλητὴν, καὶ ῥευστὴν ὅλην δι' ὅλης τὴν ὕλην ἀπεφήναντο.

Οἱ ἀπὸ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΥ ἀπαθῆ τὰ πρῶτα, τὴν ἄτομον καὶ τὸ κενόν.

ΠΛΑΤΩΝ τὴν ὕλην σωματοειδῆ, ἄμορφον, ἀνείδεον, ἀσχημάτιστον, ἄποιον, ὅσον ἐπὶ τῇ ἰδίᾳ φύσει, δεξαμενὴν δὲ τῶν εἰδῶν, καὶ οἷον τιθήνην καὶ ἐκμαγεῖον καὶ μητέρα γίγνεσθαι. " [d] Ὁ αὐτὸς δὴ λόγος καὶ περὶ τῆς τὰ πάντα " δεχομένης σώματα φύσεως. Ταυτὸν ἀεὶ προσρητέον αὐ" τὴν, ἐκ γὰρ τῆς ἑαυτῆς τὸ παράπαν οὐκ ἐξίσταται δυνά[320] " μεως. Δέχεται γὰρ ἀεὶ τὰ πάντα, καὶ μορφὴν οὐδεμίαν " ποτὲ οὐδὲ ἑνὶ τῶν εἰσιόντων ὁμοίως εἴληφεν οὐδαμῇ οὐδα-

ap. Plut. I. c. 9. et Euseb. Præpar. Ev. XIV. 14. nomine tamen auctoris ibi non addito. Pro πάσῃ legitur ibi πρῶτον; utrumque bene. HEEREN. πάσῃ om. Euseb. p. 845 D.

2.

[a] Post ἡ ὕλη add. καὶ ἦν ὕλη γὰρ A. ἡ ὕλη, καὶ γὰρ ἀγγεῖον Patrit.

[b] γένεσις δὲ ἐνέργεια τόπου τοῦ ἀγεννήτου θεοῦ] γένεσις δὲ ἐνεργείας τόπος τοῦ ἀγεννήτου καὶ προόντος τοῦ θεοῦ V. A. Heerenius dedit τρόπος et προνοοῦντος pro τόπος et προόντος. Patrit. γένεσις δ' ἐνέργεια τοῦ ἀ. θ.

[c] λαμβάνουσι] λαμβάνουσα V. A. P.

[d] τρεπτὴ] τριπτὴ A.

[e] μεμορφωμένη Patrit.

3.

[a] Θάλεω] Θάλεως V. Θάλητος A.

[b] δὲ] δὴ A.

[c] μεταβλητὴν] μεταβολητὴν A.

[d] Ὁ αὐτὸς] Seqq. Platonis sunt in Timæo p. 50.

“ μῶς. Ἐκμαγεῖον γὰρ φύσει παντὶ κεῖται κινούμενόν τε
“ καὶ διασχηματιζόμενον ὑπὸ τῶν εἰσιόντων. Φαίνεται δὲ
“ δι' ἐκεῖνα ἄλλοτε ἀλλοῖον. Τὰ δ' εἰσιόντα καὶ ἐξιόντα
“ τῶν ὄντων ἀεὶ μιμητὰ, τυπωθέντα ὑπ' αὐτῶν τρόπον τινὰ
“ δύσφραστον καὶ θαυμαστὸν, ὃν εἰσαῦθις μέτιμεν. Ἐν δὲ
“ οὖν τῷ παρόντι διανοηθῆναι γένη τριττὰ, τὸ μὲν γιγνόμενον,
“ τὸ δὲ ἐν [e] ᾧ γίγνεται, τὸ δὲ ὅθεν ἀφομοιούμενον φύεται
“ τὸ γιγνόμενον. Καὶ δὴ καὶ [f] προσεικάσαι πρέπον τὸ μὲν
“ δεχόμενον μητρὶ, τὸ δὲ ὅθεν πατρὶ, τὴν δὲ μεταξὺ τούτων
“ φύσιν ἐκγόνῳ.”

4 Ἀριστοτέλους.

Ἐπειδὴ δ' ἡ μὲν φύσις κατ' ἐπίνοιαν ἀρχή τίς ἐστι κινήσεως καὶ στάσεως, οὔτε δὴ [a] κινούμενον ἡ ὕλη κατὰ τὸν ἴδιον λόγον, οὔτε [b] κατὰ τὸ εἶδος. Ἡ μὲν γὰρ [c] ἀνείδεος, τὸ δὲ εἶδος ἀεὶ, καὶ ἡ μὲν οὐ σῶμα, σωματικὴ δὲ,
[322] τὸ δὲ καθάπαξ ἀσώματον. Οὐ [d] σῶμα δὲ τὴν ὕλην φασὶν, οὐχ ὅτι οὐ [e] μόνον ἐστερῆσθαι δοκεῖ τῶν περὶ σῶμα διαστάσεων, ἀλλ' ὅτι καὶ πολλῶν ἄλλων ἀπολείπεται, κατὰ τὸν ἴδιον λόγον, ἃ τοῖς σώμασιν ὑπάρχει, [f] σχήματος, χρώματος, βαρύτητος, κουφότητος, ὅλως πάσης ποιότητος καὶ ποσότητος. Εἰ γὰρ τούτων μετεῖχε, τῶν ποιῶν ἦν καὶ [g] ποσῶν· οὐ μετειληφυῖα [h] δὲ, κατὰ [i] λόγον σῶμα μὲν οὐκ ἂν εἴη, σωματικὴ δὲ, διὰ τὸ πάσαις ὥσπερ [k] ἐκμαγεῖον ὑποκεῖσθαι ταῖς ποιότησιν· ὃν τρόπον γὰρ τὸ εἶδος τῆς ὕλης ἀφαιρεθὲν ἀσώματον εἶναι τυγχάνει, οὕτως καὶ τὴν ὕλην

[e] ᾧ] νῷ A.
[f] προσεικάσαι] προσείκασε A. qui mox τῇ μητρί.

4.
[a] καὶ ante κιν. deest V. A.
[b] κατὰ ante τὸ εἶδος deest V. A. P.
[c] ἀνείδεος] ἀνειδέως V.
[d] σώματα] σῶμα V. A.
[e] μόνον] μόνην V. A.
[f] σχηματισμοῦ] σχήματος V. A.
[g] ποσῶν] πῶς V.
[h] δὲ] δὴ A.
[i] τὸν ante λόγον deest V. A.
[k] καὶ ante ἐκμαγ. deest V. A.

τοῦ εἴδους χαρισθέντος οὐ [1] σῶμα. Δεῖν γὰρ ἀμφοῖν τῆς συνόδου πρὸς τὴν τοῦ σώματος ὑπόστασιν.

5

[a] ΖΗΝΩΝΟΣ. Οὐσίαν δὲ εἶναι τὴν τῶν [b] ὄντων πάντων πρώτην ὕλην, ταύτην δὲ πᾶσαν ἀΐδιον, καὶ οὔτε πλείω γιγνομένην, οὔτε ἐλάττω· τὰ δὲ μέρη ταύτης οὐκ ἀεὶ ταυτὰ διαμένειν, ἀλλὰ διαιρεῖσθαι καὶ συγχεῖσθαι. Διὰ ταύτης δὲ διαθεῖν τὸν τοῦ παντὸς λόγον, ὃν ἔνιοι εἱμαρμένην καλοῦσιν, οἷόν περ ἐν τῇ γονῇ τὸ σπέρμα.

[324] [c] ΧΡΥΣΙΠΠΟΥ ΣΤΩΙΚΟΥ. Τῶν κατὰ ποιότητα ὑφισταμένων πρώτην ὕλην· ταύτην [d] δὲ ἀΐδιον, οὔτε αὔξησιν οὔτε μείωσιν [e] ὑπομένουσαν, διαίρεσιν δὲ καὶ σύγχυσιν [f] ἐπιδεχομένην κατὰ μέρη, ὥστε φθορὰς γίνεσθαι ἐκ τῶν μερῶν εἴς τινα, οὐ κατὰ διαίρεσιν, ἀλλὰ κατ᾽ ἀναλογίαν, τῇ συγχύσει τινῶν γινομένων ἔκ τινος.

Οἱ δὲ ὕδωρ λέγοντες, ἢ πῦρ, ἢ ἀέρα, [g] ἢ γῆν τὴν ὕλην, οὐκέτι ἄμορφον αὐτὴν λέγουσιν, ἀλλὰ σῶμα· [h] οἱ δὲ τ᾽ p. 30.
ἀμερῆ καὶ τὰς ἀτόμους, ἄμορφον.

Οἱ ΣΤΩΙΚΟΙ σῶμα τὴν ὕλην ἀποφαίνονται.

Ἔφησε δὲ ὁ ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ τὴν τῶν ὅλων οὐσίαν καὶ ὕλην ἄποιον καὶ ἄμορφον εἶναι, καθ᾽ ὅσον οὐδὲν ἀποτεταγμένον ἴδιον ἔχει σχῆμα οὐδὲ ποιότητα κατ᾽ αὐτήν· ἀεὶ δ᾽ ἔν τινι σχήματι καὶ ποιότητι εἶναι. Διαφέρειν δὲ τὴν οὐσίαν τῆς ὕλης, τὴν οὖσαν κατὰ τὴν [i] ὑπόστασιν, ἐπινοίᾳ μόνον.

[1] σῶμα] δῶμα A. qui supra οὕτω.

5.

[a] ΖΗΝΩΝΟΣ. Οὐσίαν δὲ] Ζήνων δὲ οὐσίαν Heeren.

[b] ὄντων πάντων] πρώτων πάντων V. A. E.

[c] ΧΡΥΣΙΠΠΟΥ ΣΤΩΙΚΟΥ. Τῶν] Χρύσιππος τῶν Heeren.

[d] δὲ ἀΐδιον] καὶ ἀΐδιον V. A.

[e] ὑπομένουσαν] –σιν V.

[f] ἐπιδεχομένην] –μένη V.

[g] καὶ γῆν] ἢ γῆν V. A.

[h] οὐδὲ οἱ τὰ μέρη] οἱ δὲ τὰ ἀμερῆ Plutarch. p. 882. Euseb. p. 846.

[i] ὑπόστασιν] ὑπόθεσιν V. ὑπόστασιν A. ut vulg. τὴν οὖσαν uncinis inclusit Heeren.

6 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Παρμενίδου [p. 144.]

Ἐπὶ πάντα ἄρα πολλὰ ὄντα ἡ οὐσία νενέμηται καὶ οὐδενὸς ἀποστατεῖ τῶν ὄντων, οὔτε τοῦ σμικροτάτου, οὔτε τοῦ μεγίστου· ἢ τοῦτο μὲν, καὶ ἄλογον ἔρεσθαι· πῶς γὰρ ἂν ἡ οὐσία γε τῶν ὄντων του ἀποστατοίη; Οὐδαμῶς. Κατακεκερμάτισται ἄρα ὡς οἷόν τε σμικρότατα καὶ μέγιστα καὶ πανταχῶς ὄντα καὶ μέριστα πάντων· μάλιστα δέ ἐστι μέρη ἀπέραντα τῆς οὐσίας. Ἔχει οὕτως.

Κεφ. ιβ'.

ΠΕΡΙ ΙΔΕΑΣ.

[326] [a]Ἰδέα ἐστὶν οὐσία [b]ἀσώματος, αἰτία τῶν οἵα ἐστὶν αὐτὴ, καὶ [c]παράδειγμα [d]τῆς τῶν κατὰ φύσιν ἐχόντων [e]αἰσθητῶν ὑποστάσεως, αὐτὴ μὲν ὑφεστῶσα καθ' ἑαυτὴν, [f]ἐνεικονίζουσα δὲ τὰς ἀμόρφους ὕλας, καὶ αἰτία γιγνομένη τῆς τούτων [g]διατάξεως, πατρὸς [h]ἐπέχουσα τοῖς αἰσθητοῖς τάξιν.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ τὰ λεγόμενα εἴδη καὶ τὰς ἰδέας ἐν τοῖς ἀριθμοῖς καὶ ταῖς ἁρμονίαις αὐτῶν καὶ τοῖς καλουμένοις γεωμετρικοῖς ἐτίθετο ἀχώριστα τῶν σωμάτων.

[328] [i]Ταύτας δὲ τὰς ἀρχὰς ποτὲ μὲν εἶναί φησιν [k]ΑΡΙΣΤΟ-

1.

[a] Ἰδέα] Apud Plutarch. II. p. 882 D. Galen. c. 6. Euseb. p. 846 A. αἰτία—ὑποστάσεως om. Plut. Euseb.

[b] ἀσώματος] Sic A. Cant. σώματος.

[c] παράδειγμα τῶν κατὰ φύσιν ἐχόντων αἰσθητῶν ὑποστάσεων Galen. ubi mox οὐχ ὑφεστῶσα, ubi Plutarch. μὲν μὴ ὑφεστῶσα. Idem infra εἰκονίζουσα. Vid. Davis. Cic. Tusc. I. 24.

[d] τῶν] τῆς τῶν A.

[e] αἰσθητῶς A.

[f] ἕν· εἰκονίζουσα A.

[g] διατάξεως] δείξεως Plut. Euseb. Seqq. non agnoscunt Plut. Euseb. Galen.

[h] ἐπέχουσα] Sic V. A. E. ἐπέχουσιν Cant.

[i] Ταύτας τε] Ταύτας δὲ V. A.

[k] Petita sunt hæc Aristotelis placita ex Phys. libr. I. et II. primis capitibus. HEEREN.

ΤΕΛΗΣ δύο, τήν τε ὕλην, καὶ τὸ εἶδος, ὃ καὶ μορφὴν καλεῖ, καὶ ἐντελέχειαν, καὶ [l] τό τι ἦν εἶναι, καὶ οὐσίαν τὴν κατὰ τὸν λόγον καὶ ἐνέργειαν· οὕτως αὐτῷ πλούσιόν τε καὶ πολυώνυμόν ἐστι τὸ εἶδος. [m] Τοσούτῳ μὲν οὖν [n] διαφέρειν τὸ εἶδος τῆς μορφῆς, ὅτι τὸ μέν ἐστι διῆκον διὰ βάθους, ἡ δ' [o] ἐπιπολαῖος· καὶ ἡ μὲν παραπλήσιος λευκότητι κατὰ τὴν ζωγραφίαν, [p] τὸ δὲ δὴ περὶ τὴν τοῦ [q] γάλακτος οὐσίαν· [r] ταυτὸν δὲ εἶδος λέγεται καθ' ὅσον τὸ μὲν εἰδοποιεῖ, τὸ δὲ διαμορφοῖ [s] τὴν ὕλην. Ἐντελέχειαν [t] δ' αὐτὸ προσεῖπεν, ἤτοι διὰ τὸ ἐντελεχῶς ὑπάρχειν, ἢ ὅτι τῶν μετεχόντων αὐτοῦ ἕκαστον παρέχεται τέλειον· ὁ γὰρ χαλκὸς ἀνδριὰς οὐδέπω, πλὴν ὅτι μὴ δυνάμει, [u] διαπλασθεὶς δὲ, καὶ τὴν πρόσφορον λαβὼν [x] μορφὴν, [y] ἐντελέχεια λέγεται· τότε γὰρ ἀπείληφε τὸ τέλος. Τὸ δέ τι ἦν εἶναι προσηγόρευσε, παρὰ τὸ τῶν ὄντων ἐπιφέρειν ἑκάστῳ τὴν τοῦ εἶναι δύναμιν· οὐσίαν δὲ τὴν κατὰ τὸν λόγον, ὅτι διαλλάττει τῆς κατὰ τὴν ὕλην, ὡς ἀνδριὰς χαλκοῦ, καὶ Θηρίκλειον ἀργυροῦ, καὶ τῶν ἀγαλμάτων ὁτιοῦν λίθου· τὸ γὰρ ὃ περιττεύει ταῦτα τῆς ὕλης, ἐξ ἧς [z] δεδημιουργῆται, τουτέστιν ἡ κατὰ τὸν λόγον οὐσία.
[330] Ἐνέργειαν δὲ ἐκάλεσεν, ὅτι τῶν ὄντων οὐθὲν ἂν ἐνεργεῖν [a] ἠδύνατο μὴ πρότερον εἰδοποιηθέν [b].

[l] τὸ τι ἦν εἶναι, quod scholiastici vertunt *quidditates*. cf. Arist. Metaph. VI. 4. etc. HEEREN.

[m] Τοσούτῳ] τοσοῦτο A. V.

[n] διαφέρειν] διαφέρει V. A.

[o] ἐπιπολαίως] ἐπιπολαῖα V. Mox παραπλησίος Cant. παραπλησίως A.

[p] τὸ δὲ] τὸν δὲ V.

[q] Quod nempe albus color in picturis tantum in superficie est, in lacte vero omne corpus penetrat. HEEREN.

[r] ταυτὸ] ταυτὸν A.

[s] καὶ ante ὕλην om. A.

[t] δ' αὐτὸ] δ' inseruit Heeren.

[u] διαπλασθεὶς] διπλασθεὶς V. A.

[x] μορφὴν] τροφὴν V. A.

[y] ἐντελέχεια] ἐνδελέχεια A.

[z] δημιουργεῖται] δεδημιούργηται V. A.

[a] ἀδύνατο] ἠδύνατο A. δύναιτο Heeren.

[b] Leguntur ap. Cant. [et A.] hic continuo verba quæ infra s. f. cap. iterum repetuntur, τὰ ἐννοήματα etc. usque ad τὰς ἰδέας, librariorum negligentia alieno hic loco inserta. HEEREN.

[[c]Πλάτων] περὶ δὲ τῶν ἰδεῶν ὧδὶ [d]διεξήρχετο, τῶν κατὰ φύσιν αἰσθητῶν κατὰ γένος ὡρισμένα [e]τινὰ παραδείγματα φάμενος εἶναι τὰς ἰδέας, ἀφ' ὧν τὰς ἐπιστήμας γίγνεσθαι καὶ τοὺς ὅρους· παρὰ πάντας γὰρ ἀνθρώπους [f]ἄνθρωπόν τινα νοεῖσθαι, καὶ παρὰ πάντας [g]ἵππους ἵππον, καὶ κοινῶς παρὰ τὰ ζῶα ζῶον ἀγέννητον καὶ ἄφθαρτον· ὃν τρόπον [h]δὲ σφραγῖδος μιᾶς ἐκμαγεῖα [i]γίνεσθαι πολλὰ, καὶ συχνὰς εἰκόνας ἑνὸς ἀνδρὸς, οὕτω καὶ μιᾶς ἑκάστης p. 31.
ἰδέας αἰσθητῶν σωμάτων [k]φύσεις παμπληθεῖς, τῆς μὲν ἀνθρώπων ἀνθρώπους ἅπαντας, καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον ἐπὶ τῶν ἄλλων τῶν κατὰ φύσιν. Εἶναι δὲ τὴν ἰδέαν ἀΐδιον οὐσίαν, [l]αἰτίαν καὶ ἀρχὴν τοῦ ἕκαστον εἶναι τοιοῦτον [ll]οἷα ἐστὶν αὐτή. Καθάπερ οὖν τὰ κατὰ μέρος ὥσπερ ἀρχέτυπα τῶν αἰσθητῶν προηγεῖσθαι συμβέβηκε σωμάτων, οὕτως τὴν [m]πάσας ἐν ἑαυτῇ περιέχουσαν καλλίστην καὶ τελειοτάτην [n]οὐσίαν ὑπάρχειν. Λέγει γοῦν καὶ ἐν τῷ [nn]Παρμενίδῃ·
“ Ἀλλ', ὦ Παρμενίδη, μάλιστα ἐμοίγε καταφαίνεται ὧδε
[332] “ ἔχειν· τὰ μὲν εἴδη ταῦτα ὥσπερ παραδείγματα ἑστάναι
“ ἐν τῇ φύσει, τὰ δ' ἄλλα τούτοις ἐοικέναι καὶ εἶναι
“ ὁμοιώματα· καὶ ἡ μέθεξις αὕτη τοῖς ἄλλοις γίγνεσθαι
“ τῶν εἰδῶν [o]οὐκ ἄλλη τις ἢ εἰκασθῆναι αὐτοῖς.”

ΖΗΝΩΝΟΣ. Τὰ ἐννοήματά [p]φησι μήτε τινὰ εἶναι,

[c] Platonis nomen in codd. Stob. periit; Platonis tamen hæc esse et res ipsa docet, et Parmenides ejus infra laudatus, ex quo hæc quoque maxime desumta sunt. Nomen itaque ejus supplere non dubitavimus. HEEREN.

[d] διεξέρχετο] διεξήρχετο V. A.

[e] τινὰ deest V. A.

[f] Verba ἄνθρωπον—ἀνθρώπους des. A.

[g] ἀνθρώπους] ἵππους lego pro ἀνθρώπους. CANTER.

[h] δὲ] καὶ A.

[i] γίνεσθαι] Sic Heeren. γενέσθαι A. Cant.

[k] φύσις] φύσεις V. A.

[l] αἰτίας] αἰτίαν V. A.

[ll] οἷα] οἷον ed. Heeren.

[m] πάσας] πᾶσαν V. A.

[n] οὖσαν] οὐσίαν A.

[nn] Παρμενίδῃ] Sc. p. 132.

[o] οὐκ ἄλλη] οὐδ' ἄλλη V.

[p] φησὶ] φασὶ V. A.

μήτε ποιά, [q]ὡσανεὶ δέ τινα, καὶ ὡς ἂν εἴποι φαντάσματα ψυχῆς· ταῦτα δὲ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων ἰδέας προσαγορεύεσθαι. Τῶν γὰρ κατὰ τὰ ἐννοήματα ὑποπιπτόντων εἶναι τὰς ἰδέας, οἷον ἀνθρώπων, ἵππων, κοινότερον [r]εἶπε [s]πάντων τῶν ζώων καὶ τῶν ἄλλων ὁπόσων λέγουσιν ἰδέας εἶναι. Ταῦτα δὲ οἱ Στωϊκοὶ φιλόσοφοί φασιν ἀνυπάρκτους εἶναι, καὶ τῶν μὲν ἐννοημάτων μετέχειν ἡμᾶς, τῶν δὲ [t]πτώσεων, ἃς δὴ προσηγορίας καλοῦσι, τυγχάνειν . . . .

Κεφ. ιγ΄.

ΠΕΡΙ ΑΙΤΙΩΝ.

I

[334] Αἴτιόν ἐστι δι' ὃ τὸ ἀποτέλεσμα, ἢ δι' ὃ συμβαίνει τι. Ἀρκεῖ γὰρ ὑπογραφικῶς.

[a]ΠΛΑΤΩΝ τριχῶς τὸ αἴτιον, ὑφ' οὗ, ἐξ οὗ, πρὸς ὅ· κυριώτατον [b]δ' ἡγεῖται τὸ ὑφ' οὗ, τοῦτο δὴ τὸ ποιοῦν. Λέγει γοῦν ἐν [c]Τιμαίῳ· "πᾶν δ' αὖ τὸ γιγνόμενον ὑπ' αἰτίου "τινὸς ἐξ ἀνάγκης γίγνεται· παντὶ γὰρ ἀδύνατον χωρὶς "αἰτίου γένεσιν ἔχειν. Ὅταν οὖν ὁ [d]δημιουργὸς πρὸς τὸ

q ὡσανεὶ δέ τινα, καὶ ὡσανεὶ ποιὰ φαντάσματα Jacobs. ὡσανεὶ δή τις εἴποι Wyttenbach.

r εἶπε Heerenio delendum videtur.

s πάντα] πάντων V. A.

t Pro πτώσεων legendum duco περιπτώσεων. Nam περιπτώσεις sunt Stoicis *notiones de rebus sensibus subjectis,* cf. Sext. Emp. adv. Math. I. 25. quæ adeo recte opponuntur notionibus universalibus, τοῖς ἐννοήμασι. Easdem autem has a Stoicis προσηγορίας vocatas esse, apud neminem alium invenio.—Post τυγχάνειν aliquid excidisse suspicor; orationem saltem mutilam esse, nemo non videt. Cant. vertit: *casuum autem sive appellationum simus expertes,* qui adeo supplevisse videtur μή, nullo tamen commodo sensu. Suspicor addendum esse καὶ τὰς ἀλόγους ψυχάς, hoc sensu: *notiones vniversales hominibus tantum convenire, notiones de rebus sensibus subjectis iis cum brutis communes esse.* HEEREN.

I.

a Πλάτων] Sic Plutarch. Πλάτωνος A. in marg. om. Cant.

b δ' ἡγεῖται] διηγεῖται V. A.

c Τιμαίῳ] Sc. p. 28.

d δημιουργ.] ὁ δημιουργὸς V. A.

" κατὰ ταυτὰ [e]ἔχον βλέπων ἀεὶ, τοιούτῳ τινὶ χρώμενος
" παραδείγματι τὴν ἰδέαν καὶ τὴν δύναμιν [f]ἀπεργάζηται,
[336] " καλὸν ἐξ ἀνάγκης οὕτω ἀποτελεῖσθαι πᾶν· ὅποτ' ἂν δ'
" εἰς [g]τὸ γεγονὸς, γεννητῷ παραδείγματι προσχρώμενος, οὐ
" καλόν."

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ τὰ μὲν πρῶτα αἴτια, ἀσώματα, τὰ δὲ κατὰ μετοχὴν, ἢ κατὰ συμβεβηκὸς, τῆς σωματικῆς [h]ὑποστάσεως εἶναι.

[i]ʼΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἔφησε δηλοῦν ἕκαστον [j]χρώμενον [k]σχήματι τῆς ἑρμηνείας [l]τοιούτῳ· [m]τό τε ἐξ οὗ λέγοντα τὴν ὕλην, καὶ τὸ ὑφ' οὗ, τὸ ποιοῦν· τὸ δὲ καθ' ὃ, τὸ εἶδος· τὸ δὲ δι' ὃ, τὸ τέλος.

Αἴτιον δ' ὁ ΖΗΝΩΝ φησὶν εἶναι, δι' ὅ· [n]οὗ δὲ αἴτιον, συμβεβηκός· καὶ τὸ μὲν αἴτιον σῶμα, οὗ δὲ αἴτιον κατηγόρημα· ἀδύνατον δὲ εἶναι, τὸ μὲν αἴτιον παρεῖναι, οὗ δέ ἐστιν αἴτιον μὴ ὑπάρχειν. Τὸ δὲ λεγόμενον τοιαύτην [o]ἔχει δύναμιν· αἴτιόν ἐστι δι' ὃ [p]γίνεταί τι, οἷον διὰ τὴν φρόνησιν γίνεται τὸ φρονεῖν, καὶ διὰ τὴν ψυχὴν γίνεται τὸ ζῆν, καὶ διὰ τὴν σωφροσύνην γίνεται τὸ σωφρονεῖν. ʼΑδύνατον γὰρ εἶναι, σωφροσύνης περί τινα οὔσης, μὴ σωφρονεῖν, ἢ ψυχῆς, μὴ ζῆν, ἢ φρονήσεως, μὴ φρονεῖν.

[338] ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ αἴτιον εἶναι λέγει δι' ὅ. Καὶ τὸ μὲν αἴτιον, ὂν, καὶ σῶμα, [q]καὶ [αἴτιον] ὅτι· οὗ δέ αἴτιον, διά

e ἔχον βλέπειν] ἔχων βλέπων V. A.
f ἀπεργάζηται] –ζεται A. E.
g τὸ γένος γένηται] τὸ γεγονὸς γένη παραδείγματι etc. V. γεγονὸς γένη, τῷ παραδ. A.
h Post ὑποστάσεως add. εἶναι A. V. P.
i ʼΑριστοτέλης ἔφησε] ʼΑριστοτέλη δέ φασι Heeren. qui monet respici Metaphys. I. 3. V. 2.
j χρώμενον] χρώμενος V.
k χρώματι] σχήματι V. A.
l τοιούτῳ] Sic Heeren. τοιούτοις libri. Mox λέγονται A.
m τὸ, τε ἐξ οὗ etc.] τὸ, ἐξ οὗ λέγονται καὶ τὸ ὑφ' οὗ τὸ ποιοῦν etc. V. A.
n οὗ δὲ] Sic Cant. οὐδ' A. Mox οὐδ' A. οὐδὲ Cant.
o ἔχει] ἔχειν V.
p γίνεται—τὴν ψυχὴν om. Cant. Quæ deerant supplevit A.
q Legebatur corrupte καὶ αἴτιον, ὅτι οὐδὲ αἴτιον. Difficilis omnino est critica in hisce Stoico-

τι. Αἰτίαν δ' εἶναι λόγον αἰτίου, ἢ λόγον [r]τὸν περὶ τοῦ αἰτίου, [s]ὡς αἰτίου.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ δὲ οὕτως· αἴτιον δ' ἐστί τινος, [t]δι' ὃ ἐκεῖνο, ἢ τὸ πρῶτον ποιοῦν, ἢ τὸ ἀρχηγὸν ποιήσεως, καὶ τὸ μὲν αἴτιον, ὄν, καὶ σῶμα, οὗ δὲ αἴτιον οὔτε ὄν, οὔτε σῶμα, ἀλλὰ συμβεβηκὸς καὶ κατηγόρημα.

ΘΑΛΗΣ καὶ οἱ [u]ἐφεξῆς τὸ πρῶτον αἴτιον ἀκίνητον ἀπεφήναντο.

[x]Οἱ ΣΤΩΙΚΟΙ τὸ πρῶτον αἴτιον ὥρισαντο κινητόν.

Οἱ ΠΕΡΙΠΑΤΗΤΙΚΟΙ τῶν αἰτίων εἶναι τὰ μὲν αἰσθητά, p. 32.
τὰ δὲ νοητά.

2 Ὀκέλλου.

[a]Ὄκελλος ἔφησεν εἶναι αἴτιον δι' ὃ γίγνεταί τι. Λέγει γὰρ ἐν τῷ Περὶ Νόμου οὕτως·

[340] Συνέχει γὰρ τὰ μὲν [b]σκάνεα ζωά, ταύτας δ' αἴτιον ψυχά· τὸν δὲ κόσμον ἁρμονία, ταύτας δ' αἴτιος ὁ θεός· [c]τὼς δ' οἴκως καὶ τὰς πόλιας ὁμόνοια, ταύτας δ' αἴτιος νόμος. Τίς οὖν αἰτία καὶ [d]φύσις, τὸν μὲν κόσμον [e]ἁρμόχθαι διὰ παντός, καὶ μηδέποτ' ἐς [f]ἀκοσμίαν ἐκβαίνειν, τὰς

rum argutiis, cum ipsis eorum libris careamus. Si in reliquis sana est lectio, locum sic intelligo. Chrysippum primam causam dixisse τὸ ὄν, quod nempe Stoici æternam eam esse putarent; porro corpus. Sequens αἴτιον redundare videtur, quare illud uncinis inclusi. Dixit eam porro τὸ ὅτι i. e. *rationem quare aliquid existat.* οὗ δὲ αἴτιον i. e. *effectum*, διά τι. Discrimen quod jam ponitur inter *causam* et *causale* ad meras argutias redit, quibus dialecticam Stoicorum, Chrysippi maxime, redundasse constat. HEEREN.

r τὴν] τὸν V.
s αἴτιον] αἰτίου V. A.
t ἐκεῖνο] δι' ὃ ἐκεῖνο V. A.
u ἐφεξῆς] λοιποὶ A.
x Στοϊκοὶ] Οἱ στωϊκοὶ V. A.

2.

a Ὄκελλος] Ἄγγελος V. Ἤκελλος A. E.
b σκάνεα ζῶα] σκάνεα τῶν ζώων V. A. ζωὰ Heeren. *Vita* Canteri versio.
c τὼς] τοὺς A. Cant. Mox ὁμόνια A.
d φύσις] φύσιν A.
e ἁρμόσθαι] ἁρμόχθαι V. A.
f ἀκοσμίαν] ἀκοσμίας A.

δὲ πόλιας καὶ [g]τὼς οἴκως [h]ὀλιγοχρονίως [i]ἦμεν; Ὅσα μὲν ὦν γεννατὰ καὶ θνατὰ τὰν φύσιν, ἐξ ἧς συνέστακεν ὕλας, τὰν αὐτὰν αἰτίαν ἔχει τᾶς διαλύσιος. Συνέστη γὰρ [j]ἐκ μεταβαλλοίσας καὶ ἀειπαθέος. [k]Ἁ γὰρ τῶν [l]γενναμένων ἀπογέννασις, σωτηρία τᾶς γεννάτορος ὕλας. Τὸ δὲ ἀεικίνητον [m]κυβερνεῖ, τὸ δ' ἀειπαθὲς κυβερνεῖται· καὶ τὸ μὲν [n]πρῶτον τᾷ δυνάμει, τὸ δὲ ὕστερον· καὶ τὸ μὲν θεῖον καὶ λόγον ἔχον καὶ ἔμφρον· τὸ δὲ γεννατὸν, καὶ ἄλογον, [o]τὸ μεταβάλλον.

Κεφ. ιδ'.

ΠΕΡΙ ΣΩΜΑΤΩΝ ΚΑΙ ΤΗΣ ΠΕΡΙ ΤΟΥΤΩΝ ΤΟΜΗΣ, ΚΑΙ ΠΕΡΙ 'ΕΛΑΧΙΣΤΟΥ.

1 Σῶμά ἐστι τὸ τριχῇ διαστατὸν, πλάτει, βάθει, μήκει· ἶσον ἀντίτυπον, ὅσον ἐπ' αὐτῷ[a].

[g] τοὺς οἴκους] τὼς οἴκως V. τῶν οἴκως A.

[h] ὀλιγοχρονίους] –νίως V. A.

[i] Post ἦμεν add. ὅσα μὲν V. A.

[j] ἐκ μεταβολίας] ἐκ μεταβαλλοίσας V. μεταβολλοίσας A.

[k] Ἡ γὰρ τῶν γενομένων ἀπογένεσις] ἡ γὰρ τῶν γεννωμένων ἀπογέννεσις et mox γεννέτορος A.

[l] γενομένων] γεννομένων ἀπογέννησις V.

[m] κυβερνεῖ—κυβερνεῖται] Sic libri. Hujus formæ aliud exemplum legisse non memini.

[n] πρᾶτον] πρῶτον A. Cant.

[o] Verba τὸ μεταβάλλον glossema redolent. HEEREN. καὶ τὸ μ. ed. Gale.

1.

[a] Varias corporis definitiones, ab antiquis philosophis exhibitas, recenset Sext. Emp. adv. Math. l. 21. cujus verba n. l. quasi commentario sunt. Εἰ γὰρ σύνοδός ἐστι (sc. τὸ σῶμα) κατὰ ἀθροισμὸν μεγέθους καὶ σχήματος καὶ ἀντιτυπίας, ὥς φησιν Ἐπίκουρος· ἢ τὸ τριχῇ διαστατὸν, τουτέστι τὸ ἐκ μήκους καὶ πλάτους καὶ βάθους, καθάπερ οἱ Μαθηματικοὶ λέγουσιν· ἢ τὸ τριχῇ διαστατὸν ὡς πάλιν ὁ Ἐπίκουρος, ἵνα τούτῳ διορίζῃ τὸ κενόν· ἢ ὄγκος ἀντίτυπος ὡς ἄλλοι, ὅπως δ' ἂν ἔχοι etc. Ex ultimis his verbis simul ex Plut. I. 12. emendandus videtur Stobæus apud quem pro ὄγκος ἀντίτυπος exstat ἶσον ἀντίτυπον, ac ita jam rescribi jussit Fabric. ad Sext. Emp. l. c. Defendi tamen posse videtur lectio in Stob. vulgata, si eam ita intelligas, ut ἶσον ἀντίτυπον sit id, *quod ab omni parte æqualiter resistit*, adeoque nil mutandum censui. HEEREN. Plutarch. p. 882 F. ὄγκος ἀντίτυπος ὅσον ἐφ' ἑαυτῷ, ἢ τὸ κατέχον τόπον.

[342] [b]ΠΛΑΤΩΝ μήτε βαρὺ μήτε κοῦφον εἶναί τι φύσει ἐν τῷ οἰκείῳ τόπῳ ὑπάρχον, ἐν δὲ τῷ ἀλλοτρίῳ γενόμενον τότε νεῦσιν [c]ἴσχειν, ἐκ δὲ τῆς νεύσεως ῥοπὴν, ἤτοι πρὸς [d]βαρύτητα ἢ κουφότητα.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ [e]βαρύτατον μὲν εἶναι τὴν γῆν, κουφότατον δὲ τὸ πῦρ ἁπλῶς, ἀέρα δὲ καὶ [f]πῦρ ἄλλοτε ἄλλως. Καὶ δυνάμει μὲν εἰς ἄπειρον τέμνεσθαι, ἐντελεχείᾳ δὲ μηδαμῶς. [g]Τῶν δὲ ἁπλῶν σωμάτων εἶναι τὰς ποιότητας ἁπλᾶς· διαιρεῖσθαι δὲ εἰς ἄπειρον τὰ μεγέθη καὶ τὰ μέγεθος ἔχοντα[h]. Ταῦτα [i]δὲ καὶ συνεχῆ καλεῖσθαι, μεγέθη δὲ εἶναι μῆκος, πλάτος, βάθος· τὰ δ' ἔχοντα μέγεθος ἐξ ὑπάρχειν, σῶμα, τόπον, ἐπιφάνειαν, γραμμὴν, κίνησιν,
[344] χρόνον· ἐπιφάνειαν δ' εἶναι σώματος πέρας δυσὶν ὁριζομένην διαστάσεσι· γραμμὴν δὲ τὸ τῆς ἐπιφανείας πέρας, [k]κατὰ μίαν διάστασιν· σῶμα [l]δὴ τοίνυν ἐστὶ τὰς τρεῖς ἔχον διαστάσεις. [m]Ἐπεὶ δὲ καὶ περὶ τὸν τόπον εἰσὶν αὗται, προσθετέον τότε μετ' ἀντερείσεως. Καὶ τὸ μὴ δεχόμενον ἕτερον εἰς τὸν αὐτὸν [o]τόπον, σῶμα· πληρωτικὸν γὰρ εἶναι

[b] Respicit ad ea quæ Plato disputat in Timæo p. 62. 63. HEEREN.

[c] ἴσχει] ἔχει A. ἴσχειν Plutarch. et V. teste Heerenio.

[d] βαρύτητα ἢ κουφότητα] βαρύτατα ἢ κουφότατα V. A.

[e] βαρύτατον] βαρυτάτην V.

[f] Prima hæc, de gravitate et levitate elementorum, exponit Arist. de Cœl. IV. 4. Post πῦρ ex Plut. l. c. addidi ἁπλῶς. Habet enim id non modo Plutarchus, sed res ipsa postulat; opponitur enim τῷ ἄλλοτε ἄλλως. Contendit nempe Aristoteles alia elementa *simpliciter* gravia et levia esse, terram nempe et ignem, cum hic semper sursum, illa semper deorsum motum suum habeat; alia aërem et aquam pro varietate motus et gravia et levia dici posse. HEEREN.

[g] τοῦ] τῶν V. A. E.

[h] Distinguit Aristoteles magnitudines ipsas et ea quæ magna dicuntur. Ante oculos habuit auctor noster libros de Cœlo I. 1. etc. ubi hæc omnia exponuntur. HEEREN.

[i] δὲ καὶ] καὶ om. A. ubi infra ὑπάρχων.

[k] κατὰ] καὶ A.

[l] δὴ] δὲ A.

[m] ἐπειδὴ] ἐπεὶ δὲ V. A.

[o] τόπον] τρόπον V. A. E.

τοῦ τόπου τὸ σῶμα, καθάπερ καὶ τὸν τόπον τοῦ σώματος δεκτικὸν, ποιεῖν δὲ καὶ πάσχειν τὰ σώματα ταῖς ἀσωμάτοις δυνάμεσι· [p] κατὰ γὰρ τὰς ἐν ταύταις διαφορὰς ἀποτελεῖσθαι τάς τε τῶν δραστικῶν καὶ τὰς τῶν [q] παθητικῶν [r] φύσεις. Μηδὲν δὲ πῦρ κυκλοτερῶς φύσει κινεῖσθαι, [s] μόνον δὲ τὸ πέμπτον σῶμα.

ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ ἔφασκε τὰ σώματα εἰς ἄπειρον τέμνεσθαι καὶ τὰ τοῖς σώμασι προσεοικότα, οἷον ἐπιφάνειαν, γραμμὴν, τόπον, κενὸν, χρόνον· εἰς ἄπειρόν τε τούτων τεμνομένων, οὔτε σῶμα ἐξ ἀπείρων σωμάτων συνέστηκεν, [t] οὔτ' ἐπιφάνεια, οὔτε γραμμὴ, οὔτε [u] τόπος.

[346] Οἱ ΣΤΩΙΚΟΙ δύο μὲν ἐκ τῶν τεσσάρων στοιχείων κοῦφα, πῦρ καὶ ἀέρα· φύσει δὲ δύο [x] βαρέα, ὕδωρ καὶ γῆν. Κοῦφον γὰρ ὑπάρχει φύσει, [y] ὃ νεύσει ἀπὸ τοῦ ἰδίου μέσου, βαρὺ δὲ τὸ εἰς μέσον. Καὶ τὸ μὲν περίγειον φῶς [z] κατ' εὐθεῖαν, τὸ δ' αἰθέριον περιφερῶς κινεῖται.

Ἐπίκουρος ἀπερίληπτα εἶναι τὰ σώματα, καὶ [a] τὰ p. 33. πρῶτα [b] δὲ ἁπλᾶ· τὰ δὲ ἐξ ἐκείνων συγκρίματα βάρος ἔχειν. Κινεῖσθαι δὲ τὰ ἄτομα [c] τότε μὲν κατὰ στάθμην, τότε δὲ κατὰ παρέγκλισιν· τὰ δὲ ἄνω κινούμενα κατὰ πληγὴν [d] καὶ ἀποπαλμόν.

[348] ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ τὰ πρῶτά φησι σώματα, [e] ταῦτα δ'

p καὶ γὰρ] κατὰ γὰρ V. A.

q παθητικῶν] παθῶν V.

r φύσεις] φύσεως A.

s De quinto hoc corpore, quod solum motum circularem habeat, copiose disputat Aristot. de Cœlo I. 2. 3. HEEREN.

t οὔτε ἐπιφάνειαν etc.] οὔτ' ἐπιφάνεια οὔτε γράμμη, οὔτε τόπος V. A. E.

u Post τόπος excidisse videtur οὔτε κενὸν, οὔτε χρόνος. HEEREN.

x βαρέα] βρ̊αρέα A.

y ὃν ἀπὸ] ὃ νεύει ἀπὸ V. ὁ νεύσει ἀπὸ A. E.

z τάτ'] κάτ' V. A. E.

a καὶ πρῶτα] καὶ τὰ πρῶτα V. A.

b δὲ] Reiskius em. μέν.

c τότε—τότε] πότε—πότε V.

d καὶ ὑπὸ παλμὸν] Sic A. Cant. καὶ ἀπόπαλμον Heeren. collato Diog. Laërt. X. 44.

e ταῦτα δ' ἂν τὰ ναστὰ] ταῦτα ἦν τὰ ναστὰ sic A. V.

[f] ἦν τὰ ναστὰ, βάρος μὲν οὐκ ἔχειν, κινεῖσθαι δὲ κατ᾽ ἀλληλοτυπίαν ἐν τῷ ἀπείρῳ. Δυνατὸν δ᾽ εἶναι [g] κοσμιαίαν ὑπάρχειν ἄτομον. Ὁ δ᾽ αὐτὸς ἔλεγε, περὶ [h] τ᾽ ἀμερῆ ἵστασθαι τὴν τομήν.

[i] ΣΤΡΑΤΩΝ μὲν προσεῖναι τοῖς σώμασι φυσικὸν βάρος, τὰ δὲ κουφότερα τοῖς βαρυτέροις ἐπιπολάζειν, οἷον [k] ἐκπυρηνιζόμενα.

Οἱ ἀπὸ ΘΑΛΕΩΣ καὶ ΠΥΘΑΓΟΡΟΥ παθητὰ σώματα καὶ τμητὰ εἰς ἄπειρον, καὶ πάντα [l] τὰ συνεχῆ, γραμμὴν, ἐπιφάνειαν, στερεὸν σῶμα, τόπον, χρόνον.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ [[m] περὶ ἐλαχίστου] ἔφη πρὸ τῶν
[350] τεσσάρων στοιχείων θραύσματα ἐλάχιστα, οἱονεὶ στοιχεῖα πρὸ τῶν στοιχείων ὁμοιομερῆ.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ πρὸ τοῦ ἑνὸς δοκεῖ τισι ψήγματα καταλείπειν.

ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ καὶ ΔΙΟΔΩΡΟΣ ἀμερῆ τὰ ἐλάχιστα [n] ὡρίζοντο.

[f] ἂν τὰ] ὄντα Heeren. qui δὲ inseruit infra post κινεῖσθαι et δυνατόν.

[g] κοσμιαίας] κοσμιαίαν V. A.

[h] τὰ μέρη] τ᾽ ἀμερῆ Heeren.

[i] De Stratonis sententia conferendus est Simplic. ad Arist. de Cœlo I. p. 62 b. Ταύτης δὲ τῆς δόξης μετ᾽ αὐτὸν (sc. Aristotelem) γέγονε καὶ Στράτων καὶ Ἐπίκουρος, νομίζοντες ἅπαν σῶμα βάρος ἔχειν καὶ ἐπὶ τὸ μέσον φέρεσθαι. Τῷ δὲ τὰ βαρύτερα ὑφιζάνειν, τὰ ἧττον βαρέα ὑπ᾽ ἐκείνων ἐκθλίβεται βίᾳ ἐπὶ τὸ ἄνω· ὥστε εἴ τις ἀφέλοιτο τὴν γῆν, ἀφίκοιτο ἂν τὸ ὕδωρ ἐπὶ τὸ κέντρον. Κἂν εἴ τις τὸ ὕδωρ, ὁ ἀήρ· κἂν εἰ τὸν ἀέρα τις, τὸ πῦρ κατ᾽ αὐτούς. HEEREN.

[k] ἐκπυρην.] ἐκπυρρηνιζόμενα V. A.

[l] Τὰ addidi ex cod. A. Plenius forte adhuc legendum est ὡς καὶ πάντα τὰ συνεχῆ. HEEREN.

[m] Verba περὶ ἐλαχίστου nexum sermonis turbant adeoque merito suspecta sunt. Videntur olim rubricam constituisse, atque ita male in contextum migrasse. Plutarch. I. 13. Ἐμπεδοκλῆς—οἱονεὶ στοιχεῖα πρὶν στοιχείων, ὁμοιομερῆ, ad quæ addit ὅπερ ἐστὶ στρογγύλα. Galen. Hist. Phil. cap. 10. Empedoclis placitum, nomine philosophi omisso, sic servavit: πρὸ τῶν τεσσάρων θραύσματα βραχύτατα ἢ ψήγματα οἷον στοιχεῖα ἀπὸ στοιχείων ὁμοιομερῆ νομίζουσιν εἶναί τινες τὰ λεγόμενα ἐλάχιστα. HEEREN. ἐλαχίστου A.

[n] ὡρίζοντο] ὁρίζονται A.

ʽΗΡΑΚΛΕΙΔΗΣ θραύσματα.

[o]Σῶμά ἐστι τὸ τριχῆ διαστατὸν, πλάτει, βάθει, μήκει· ταῦτα δὲ [p]πλέον [ἄλλως] λέγεσθαι, ὁτὲ μὲν γὰρ μῆκος εἶναι λέγεσθαι τὸ μέγιστον διάστημα τοῦ σώματος, ὁτὲ δὲ μόνον τὸ κάτωθεν ἄνω· καὶ πλάτος, ὁτὲ μὲν τὸ δεύτερον διάστημα, [q]ὁτὲ δὲ τὸ ἐκ δεξιᾶς καὶ ἐξ εὐωνύμου. Καὶ βάθος, [r]ὁτὲ μὲν, [s]εἰς ἑαυτὸ διάστημα, ὁτὲ δὲ τὸ πρόσω καὶ ὀπίσω· κατὰ μὲν τὸν πρῶτον λόγον οὔτε τῶν [t]σφαιρῶν, οὔτε
[352²] τῶν τετραγώνων καὶ τῶν ὁμοίων οὐδὲν τῶν διαστημάτων τούτων ἐχόντων, κατὰ δὲ τὸν δεύτερον παντὸς σώματος τὰς τρεῖς ἔχοντος διαστάσεις, διὰ τὸ κατὰ πᾶσαν θέσιν ὑπὸ τὸν λόγον [u]τοῦτον πίπτειν [x]αὐτό.

2 [a]Παρμενίδου.

Πάντοθεν [b]εὐκύκλου σφαίρας ἐναλίγκιον ὄγκῳ,
μέσσοθεν ἰσοπαλὲς πάντῃ· τὸ γὰρ οὔτε τι μεῖζον
οὔτε [c]τι βαιότερον [d]πέλεναι χρεών ἐστι τῇ ἢ τῇ.

o Corporis definitionem, quæ sequitur, servavit quoque Sext. Emp. adv. Math. I. 21. ubi eam ex Mathematicorum schola petitam esse, addit, copiosius autem eam exponit III. 19. Ὅτι σῶμα μέν ἐστι τὰς τρεῖς ἔχον διαστάσεις, μῆκος, πλάτος, βάθος. Ὧν πρώτη μὲν διάστασίς ἐστιν ἡ κατὰ μῆκος, ἄνωθεν κάτω· δευτέρα δὲ ἡ κατὰ πλάτος, ἀπὸ δεξιῶν ἐπ' ἀριστερά· τρίτη δὲ ἡ κατὰ βάθος, ἀπὸ τῶν πρόσω εἰς τοὐπίσω, etc. HEEREN.

p Post πλέον codd. V. A. addunt ἄλλως, quod nescio an utrumque stare possit? Legendum forte una voce πλεοναχῶς, *varie*. HEEREN.

q ὅτε τὸ ἐκ] ὅτε δὲ τὸ ἐκ etc. V. A. Supra μὲν om. A.

r ὅτε μὲν εἰς] ὅτε δὲ καὶ εἰς A.

s εἰς ἑαυτὸ] καὶ εἰς ἑαυτὸ V. A.

t σφαιρῶν] σφοδρῶν A.

u τοῦτο] τοῦτον A.

x αὐτῷ] αὐτὸ V. A.

2.

a Παρμενίδου] Servavit hos Parmenidis versus Plato in Sophist. p. 244.

b ἐν κύκλου] εὐκύκλου V. A.

c τι βαιότερον] Οὔτε τι βιαιότερον πέλεν ἀχρεόν ἐστι τῇ ἢ τῇ Cant. et fere A. ubi om. τι.

d πέλεναι] Codex Platonis vetustiss. πελεναι absque accentu. Dindorfius in T. L. G. v. Πέλω reponit πέλεμεν.

Κεφ. ιέ.

ΠΕΡΙ ΣΧΗΜΑΤΩΝ.

1 Ὁμήρου [Il. θ'. 16.]

Τόσσον ἔνερθ' Ἀΐδεω ὅσον οὐρανός ἐστ' ἀπὸ [a]γαίης.

2

[354] [a]Ἀλλ' ὅγε πάντοθεν [b]ἶσος ἐὼν καὶ πάμπαν ἀπείρων,
[c]σφαῖρος κυκλοτερὴς, μονίῃ περιηγέϊ χαίρων.

3 Πορφυρίου.

Σχῆμά ἐστιν ἐπιφάνεια καὶ περιγραφὴ καὶ πέρας σώματος.

4 Πλάτωνος [Tim. p. 33.]

Πλάτων ἔφησε σφαιροειδῆ τὸν κόσμον ὑπάρχειν. Λέγει γὰρ οὕτως ἐν Τιμαίῳ· Σχῆμα δ' ἔδωκεν αὐτῷ τὸ πρέπον καὶ τὸ συγγενές· τῷ δὲ πάντα ζῶα ἐν αὐτῷ περιέχειν μέλλοντι ζώῳ πρέπον ἂν εἴη σχῆμα τὸ περιειληφὸς ἐν αὐτῷ πάνθ' ὁπόσα σχήματα. Διὸ καὶ σφαιροειδὲς ἐκ μέσου πάντῃ πρὸς τὰς τελευτὰς τόσον ἀπέχον, κυκλοτερὲς αὐτὸ ἐτορνεύσατο, πάντων τελεώτατον ὁμοιότατόν τε αὐτὸ ἐν αὐτῷ σχημάτων, νομίσας μυρίων κάλλιον ὅμοιον ἀνομοίου. p. 34.

5 Ἐν ταὐτῷ [p. 62.]

[356] Τοῦ γὰρ παντὸς οὐρανοῦ σφαιροειδοῦς ὄντος, ὅσα μὲν ἀφεστῶτα ἶσον τοῦ μέσου γέγονεν ἔσχατα [a]ὁμοίως αὐτὰ χρὴ ἔσχατα προσπεφυκέναι, τὸ δὲ μέσον τὰ αὐτὰ μέτρα τῶν

1.

[a] γαίης] γαίας A.

2.

[a] Ἀλλ' ὅγε] Hos versus Parmenidi tribuit V. teste Heerenio. Deest titulus A. Cant. Inter Empedoclea inseruit Karstenius v. 61. cujus videnda annotatio p. 185.

[b] ἶσος] ἶσον A. ἐὼν addidit Grotius.

[c] σφαῖρος κυκλοτερὴς, μιμίης περιτεθῇ χ. A. et fere Cant. ubi περιτείθη χ. In μιμίης latere videtur μονίῃ quod præbet Simplicius.

5.

[a] ὁμοίως α. χ. ἔ. om. Cant.

ἐσχάτων ἀφεστηκὸς ἐν τῷ κατ' ἀντικρὺ νομίζειν [b] δεῖ πάντων εἶναι· [c] τοῦ δὴ κόσμου ταύτῃ πεφυκότος τί τῶν εἰρημένων [d] ἄνω τις ἢ κάτω τιθέμενος, ὃν οὐκ ἐν δίκῃ δόξει τὸ [e] μηθὲν προσῆκον ὄνομα λέγειν. Ὁ μὲν γὰρ μέσος ἐν [f] αὐτῷ τόπος οὔτε κάτω πεφυκὼς οὔτε ἄνω λέγεσθαι [g] δίκαιος, ἀλλ' αὐτὸ ἐν μέσῳ· ὁ δὲ πέριξ οὔτε δὴ μέσος, οὔτε ἔχων διάφορον αὐτοῦ μέρος ἕτερον θατέρου μᾶλλον πρὸς τὸ μέσον ἤ [h] τι τῶν κατ' ἀντικρύ· τοῦ δὲ ὁμοίως πάντῃ πεφυκότος ποῖά τις ἐπιφέρων ὀνόματα αὐτῷ ἐναντία καὶ [i] πῇ, καλῶς ἂν [k] ἡγοῖτο λέγειν; εἰ γάρ τι καὶ στερεὸν εἴη κατὰ μέσον τοῦ παντὸς ἰσοπαλές, εἰς οὐδὲν ἄν τι ποτε τῶν ἐσχάτων [l] ἐνεχθείη διὰ τὴν πάντῃ ὁμοιότητα αὐτῶν· ἀλλ' εἰ καὶ περὶ ταὐτὸ πορεύοιτό τις ἐν κύκλῳ, πολλάκις ἂν [m] στὰς ἀντίπους ταὐτὸν αὐτοῦ κάτω καὶ ἄνω προσείποι· τὸ μὲν γὰρ ὅλον, καθάπερ εἴρηται νῦν [n] δή, σφαιροειδὲς ὂν τόπον τινὰ κάτω, τὸν δὲ ἄνω λέγειν ἔχειν, οὐκ ἔμφρονος.

6

ΟΙ ἈΠΟ ΠΥΘΑΓΟΡΟΥ τὸν κόσμον σφαῖραν κατὰ σχῆμα τῶν τεσσάρων στοιχείων· μόνον δὲ τὸ ἀνώτατον πῦρ κωνοειδές.

ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ τὰ ἄτομα πολυσχήμονα.

[a] ΟΙ ἈΠΟ ΛΕΥΚΙΠΠΟΥ τὰ ὁμοιομερῆ πολυσχήμονα.

ΚΛΕΑΝΘΗΣ [b] μόνος τῶν Στωϊκῶν τὸ πῦρ ἀπεφήνατο κωνοειδές.

ΖΗΝΩΝ ἔφασκε, τὸ πῦρ κατ' εὐθεῖαν κινεῖσθαι.

b δὴ A.
c τὸν δὲ A.
d ἄνω om. Cant.
e μηδὲν Cant.
f αὐτὸ τὸ Cant.
g δίκαιον A.
h τοι τὸ A. τι τὸν Cant.
i ποῖ A.
k ἡγεῖτο Cant.
l ἀνεχθείη Cant.
m τὰς ἀντιτύπους αὐτὸν Cant.
n δὲ Cant.

6.

a Οἱ λευκίππου] Οἱ ἀπὸ Λευκίππου V. A. λευχίππου A. et sic infra.
b τῶν Στωϊκῶν] μόνος τῶν Στωϊκῶν V. A.

[c] ʽΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ [d] σφαιροειδῆ τὸν κόσμον ἀπεφῄναντο.

ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ καὶ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ σφαιροειδῆ τὸν κόσμον.

[358] ΔΙΟΓΕΝΗΣ καὶ ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ ἔφησαν, [e] μετὰ τὸ συστῆναι τὸν κόσμον, καὶ τὰ ζῶα ἐκ τῆς γῆς [f] ἐξαγαγεῖν, ἐγκλιθῆναί πως τὸν κόσμον ἐκ τοῦ αὐτομάτου εἰς τὸ μεσημβρινὸν αὐτοῦ μέρος, ἴσως [g] ὑπὸ προνοίας, ἵν᾽ ἃ μὲν ἀοίκητα γένηται, ἃ δὲ οἰκητὰ μέρη τοῦ κόσμου κατὰ ψύξιν καὶ ἐκπύρωσιν καὶ εὐκρασίαν.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ ἔλεγε, μὴ διὰ παντὸς ἑστῶτας εἶναι μηδ᾽ ὡρισμένους τοὺς τόπους τῶν στοιχείων, ἀλλὰ πάντας [h] αὐτοὺς ἀλλήλων μεταλαμβάνειν· τοῦ δὲ ἀέρος [i] εἴξαντος τῇ τοῦ ἡλίου ὁρμῇ, ἐπικλιθῆναι τὰς ἄρκτους, καὶ τὰ μὲν βόρεια ὑψωθῆναι, τὰ δὲ νότια ταπεινωθῆναι, καθὸ καὶ [k] τὸν ὅλον κόσμον· καὶ δεξιὰ μὲν αὐτοῦ τὰ κατὰ τὸν θερινὸν τροπικὸν, ἀριστερὰ δὲ τὰ κατὰ τὸν χειμερινόν.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ, ΠΛΑΤΩΝ, [l] καὶ ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ δεξιὰ τοῦ κόσμου τὰ ἀνατολικὰ μέρη, ἀφ᾽ ὧν ἡ ἀρχὴ τῆς
[360] [m] κινήσεως, ἀριστερὰ δὲ τὰ δυτικά [n]. Οὐδ᾽ ὕψος δέ [o] φασιν

c Οἱ Στωϊκοὶ etc.] Στωϊκοὶ V. A.

d τὸν κόσμον σφαιροειδῆ ἀπεφ. V.

e μετὰ τὸ στῆναι] μετὰ τὸ σύστημα sic V. συστῆναι A.

f ἐξαγαγεῖν] Sic A. Cant. ἀναγαγεῖν tacite Heerenius.

g ἐκ προνοίας] ὑπὸ προνοίας V. A.

h αὐτοὺς] τοὺς A. Cant.

i ἤξαντος] εἴξαντος V. A.

k τὸν ὅλον] τὸν ἄλλον V.

l καὶ addit A.

m κινήσεως διὰ τὰς ἀνατολὰς] Sic A. Cant. διὰ τὰς ἀ. cum Plutarcho om. Heeren.

n Male hic ap. Cant. præpostera librarii diligentia repetita erant verba Ζήνων ἔφασκε, τὸ πῦρ κατ᾽ εὐθεῖαν κινεῖσθαι, quæ supra jam affuere. Turbatur iis simul sententiarum nexus, nam ea quæ sequuntur, jungenda sunt cum prioribus, a quibus Cant. male ea separavit. Verba illa itaque delenda putavimus, etsi error adeo antiquus sit, ut in omnibus codd. repetatur. HEEREN.

o φασὶν, deletis illis verbis, pertinet jam ad Platonem et Aristotelem. Plato in mundo supra vel infra aliquid dici posse, negat in Tim. Op. III. p. 62. Τοῦ δὴ κόσμου ταύτῃ πεφυκότος τῶν τι εἰρημένων ἄνω τις ἢ κάτω τιθέμενος, οὐκ ἐν δίκῃ δόξει τὸ μηδὲν προσῆκον ὄνομα λέγειν, et mox infra: τὸ γὰρ ὅλον, καθάπερ εἴρηται, νῦν δὴ σφαιροειδὲς ὂν, τόπον

οὔτε βάθος ἔχειν τὸν κόσμον, καθ᾽ ὃν λόγον ὕψος μὲν [p]λέγεται [q]τὸ κάτωθεν ἄνω διάστημα, βάθος δὲ τὸ ἄνωθεν κάτω. Μηδὲν γὰρ εἶναι τῶν [r]ὄντως διαστημάτων λεγομένων περὶ τὸν κόσμον, [s]διὰ τὸ περὶ ἑαυτοῦ μέσον αὐτὸν συνεστάναι, ἀφ᾽ οὗ πρὸς ἅπαν ἐστὶ, καὶ πρὸς τὸ πανταχόθεν, [t]ταυτό.

7 Φιλολάου Βάκχαι.

Ὁ κόσμος εἷς ἐστιν. Ἤρξατο δὲ γίνεσθαι [a]ἄχρι τοῦ μέσου, καὶ ἀπὸ τοῦ μέσου [b]εἰς τὸ ἄνω, διὰ τῶν αὐτῶν τοῖς κάτω [c]ἐστὶ τὰ ἄνω τοῦ μέσου ὑπεναντίως κείμενα τοῖς κάτω. Τοῖς γὰρ [d]κάτω [e]τὰ κατωτάτω [f]μέσα ἐστὶν,
[362] ὥσπερ τὰ ἀνωτάτω, καὶ τὰ ἄλλα ὡσαύτως. Πρὸς γὰρ τὸ p. 35.
μέσον κατὰ ταυτά ἐστιν ἑκάτερα, ὅσα μὴ μετενήνεκται.

Κεφ. ιϛ´.

ΠΕΡΙ ΧΡΩΜΑΤΩΝ.

1

Χρῶμά ἐστι [a]ποιότης σώματος, ὁρατὴ προηγουμένως. ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΟΙ χροιὰν ἐκάλουν τὴν ἐπιφάνειαν τοῦ σώματος, τὰ δὲ γένη τῶν χρωμάτων λευκόν τε καὶ μέλαν, ἐρυθρόν τε καὶ ὠχρόν· τὰς δὲ διαφορὰς τῶν χρωμάτων παρὰ

τινὰ κάτω, τὸν δὲ ἄνω λέγειν ἔχειν, οὐκ ἔμφρονος. Aristot. de Cœl. II. 2. idem ostendit. Ἅμα δὲ εἰώθαμεν λέγειν τὰ πλάγια ἐν τῷ κόσμῳ οὐ τὰ ἄνω καὶ τὰ κάτω, ἀλλὰ τὰ περὶ τοὺς πόλους etc. HEEREN.

p λέγεται] λέγεσθαι A.

q τὸν κάτωθεν] τὸ κάτωθεν A. V.

r ὄντως] οὕτως A.

s τὸ ἑαυτοῦ etc.] διὰ τὸ περὶ ἑαυτοῦ μέσον V. P. περὶ del. A.

t ταυτὸ scil. διάστημα rescripsi pro τοῦτο. HEEREN.

7.

a ἄχρι τοῦ μέσου intelligo *quod attinet ad medium*, quo sensu μέχρι et ἄχρι sæpius poni notatum jam est Lexicographis. Philolai enim sententiam hanc fuisse, formationem mundi inde a centro initium cepisse, clare docent sequentia. HEEREN.

b ἐς τὸ ἄνω] Sic Cant. εἰς τὸ ἄνω A. τὰ ἄνω Heeren.

c ἐστὶ] ἔστι δὲ Heeren.

d κάτω τῷ] κάτω τὸ V. A.

e τὰ κατωτάτω et mox τὰ ἀνωτάτω Heerenius tanquam ex V. τῷ κ. et τῷ ἀ. Cant.

f μέσα] μέγα A. Cant. μέσα conj. Canterus in marg.

1.

a ποιότητα] ποιότης V. A.

τὰς μίξεις τῶν στοιχείων, τὰς δὲ τῶν ζώων παρὰ τὰς ποικιλίας τῶν [b]τροφῶν καὶ τῶν ἀέρων.

[364] [c]ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ χρῶμα εἶναι ἀπεφαίνετο τὸ τοῖς πόροις τῆς ὄψεως ἐναρμόττον. [[d]τὰς δὲ διαφορὰς τῶν χρωμάτων παρὰ τὰς ποίας μίξεις τῶν στοιχείων, τὰς δὲ τῶν ζώων παρὰ τὰς τῶν τροφῶν ποικιλίας·] [e]Τέτταρα δὲ τοῖς στοιχείοις ἰσάριθμα, λευκὸν, μέλαν, ἐρυθρὸν, ὠχρόν.

[f]ΠΛΑΤΩΝ φλόγα ἀπὸ [g]τῶν σωμάτων, σύμμετρα μόρια ἔχουσαν πρὸς τὴν ὄψιν.

ʼΑΡΙΣΤΑΡΧΟΣ, Σάμιος, μαθηματικὸς, ἀκουστὴς Στράτωνος, φῶς εἶναι τὸ χρῶμα τοῖς ὑποκειμένοις [h]ἐπιπίπτον.

ΖΗΝΩΝ ὁ Στωϊκὸς τὰ χρώματα πρώτους εἶναι σχηματισμοὺς τῆς ὕλης.

[i]ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ φύσιν μὲν μηδὲν εἶναι [k]χρῶμα, τὰ μὲν γὰρ στοιχεῖα ἄποια, τά τε μεστὰ καὶ τὸ κενόν· τὰ δ' ἐξ αὐτῶν συγκρίματα [l]κεχρῶσθαι διαταγῇ τε καὶ ῥυθμῷ

[b] γραφῶν] τροφῶν V. A. et Cant. in marg.

[c] Plato in Menone p. 76. ΣΩ. Οὐκοῦν λέγετε ἀπορροάς τινας τῶν ὄντων κατὰ ʼΕμπεδοκλέα; MEN. Σφόδρα γε. ΣΩ. καὶ πόρους, εἰς οὓς καὶ δι' ὧν αἱ ἀπορροαὶ πορεύονται; MEN. Πάνυ γε. ΣΩ. καὶ τῶν ἀπορροῶν τὰς μὲν ἁρμόττειν ἐνίοις τῶν πόρων, τὰς δὲ ἐλάττους ἢ μείζους εἶναι; MEN. Ἔστι ταῦτα. ΣΩ. Οὐκοῦν καὶ ὄψιν καλεῖς τι; MEN. Ἔγωγε. ΣΩ. ʼΕκ τούτων δὲ σύνες ὅ τι λέγω, ἔφη Πίνδαρος. Ἔστι γὰρ χρόα ἀπορροὴ σχημάτων ὄψει σύμμετρος καὶ αἰσθητός.

[d] Verba hæc uncinis inclusa ex superioribus repetita sunt, adeoque cum apud Plutarchum simul et Galenum desiderantur, ex contextu ejicienda videntur. Integra ea exhibent codd. V. A. nam apud Cant. mutilate editum erat. τὰς δὲ διαφορὰς τῶν τροφῶν ποικιλίας. HEEREN.

[e] Post Τέτταρα add. δὲ V. A.

[f] Respicit ad locum Platonis in Timæo Op. III. p. 67. Τέταρτον δὴ λοιπὸν ἔτι γένος ἡμῖν αἰσθητικὸν, συχνὰ ἐν ἑαυτῷ ποικίλματα κεκτημένον· ἃ ξύμπαντα μὲν χρόας ἐκαλέσαμεν, φλόγα τῶν σωμάτων ἑκάστων ἀπορρέουσαν, ὄψει σύμμετρα μόρια ἔχουσαν πρὸς αἴσθησιν. quæ in sequentibus copiosius exponit. HEEREN.

[g] τῶν delevit Heeren.

[h] ἐπιπίπτον] ἐπιπίπτων V.

[i] Δημόκριτος] Δημόκρατος et in marg. Δημοκράτου V.

[k] χρώματα μὲν] χρῶμα τὰ μὲν Canterus in marg. Mox Heeren. στοιχεῖα ἄποια pro στοιχεῖα ποιά. Tum μέσα A.

[l] κέχρωσθαι] κέχρωσται V. A.

καὶ προτροπῇ, ὧν ἡ μέν ἐστι τάξις, [m] ἡ δὲ σχῆμα, ἡ δὲ θέσις· παρὰ ταῦτα γὰρ αἱ φαντασίαι. Τούτων δὲ τῶν [366] πρὸς τὴν φαντασίαν χρωμάτων τέτταρες αἱ διαφοραὶ, λευκοῦ, μέλανος, ἐρυθροῦ, ὠχροῦ.

'ΕΠΙΚΟΥΡΟΣ καὶ 'ΑΡΙΣΤΑΡΧΟΣ τὰ ἐν τῷ [n] σκότῳ [o] χρώματα χρόαν οὐκ [p] ἔχειν.

'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ πέρας ἐν ὡρισμένῳ διαφανεῖ, [q] διαφανὲς δὲ [r] τὴν ὕλην εἶναι διηθημένην καθαρὰν καὶ ἀμιγῆ, τούτου δὲ αὐτοῦ [s] τὸ κινητὸν χρῶμα ὑπάρχειν· ἐν δὲ τῷ σκότῳ τὰ χρώματα χρόαν δυνάμει μὲν [t] ἔχειν, ἐνεργείᾳ δὲ μηδαμῶς· πολὺ δὲ τὸ μεταξὺ [u] τοῦ τε μὴ ἔχειν καὶ μὴ ὁρᾶσθαι.

Οἱ μὲν ἄλλοι τὰ στοιχεῖα [x] κεχρῶσθαι φυσικῶς, οἱ δὲ τὰ ὁμοιομερῆ [y] ποιότητος μετέχειν τὰ πρῶτα, οἱ δὲ τὰ ἄτομα πάντα συλλήβδην ἄχροα, ἐξ ἀποίων δὲ, [z] τῷ λόγῳ θεωρητῶν, τὰς αἰσθητὰς ὑποφαίνουσι γίγνεσθαι ποιότητας.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου. [p. 67.]

Τέταρτον γὰρ δὴ [a] λοιπὸν ἔτι γένος ἡμῖν [b] αἰσθητικὸν, ὃ διελέσθαι δεῖ συχνὰ ἐν αὐτῷ ποικίλματα κεκτημένον, ἃ ξύμπαντα μὲν χρόας ἐκαλέσαμεν, φλόγα τῶν σωμάτων

[m] Verba ἡ δὲ σχῆμα desunt V. A. E.
[n] σκόπῳ] σκότῳ V. A.
[o] Aristoteles in libro de sensu Op. I. p. 514. Τὸ ἄρα διαφανὲς, καθ' ὅσον ἐνυπάρχει τοῖς σώμασιν, (ὑπάρχει δὲ μᾶλλον καὶ ἧττον,) ἐν πᾶσι χρώματος ποιεῖ μετέχειν. 'Επεὶ δὲ ἐν πέρατι ἡ χρόα, τούτου ἂν ἐν πέρατι εἴη, ὥστε τὸ χρῶμα ἂν εἴη τοῦ διαφανοῦς ἐν σώματι ὡρισμένῳ πέρας. Petita sunt ex hoc capite reliqua quoque quæ hic afferuntur, cum quo cf. Arist. de Anima II. 7. p. 492. ubi quoque rationes quare motum coloribus tribuerit (κινητὸν χρῶμα ὑπάρχειν), explicantur. HEEREN.
[p] ἔχειν] ἔχει V. A. E.
[q] διαφανὲς] διαφανῆ Heeren.
[r] τὴν ante ὕλην deest V. A.
[s] τὸ κινητὸν] τὸ om. Heeren.
[t] ἔχειν] ἔχει V. Mox τοῦ μεταξὺ A. Cant.
[u] τοῦ μὴ] τοῦτε μὴ V. A.
[x] κεχρῶσθαι] κεχρῆσθαι V. A. E.
[y] ποιότητος] Sic Heeren. Libri ποιότητα.
[z] τῷ λόγῳ] τῶν λόγων libri. Correxit Heeren.

2.

[a] λοιποῦ Cant. γὰρ om. A.
[b] αἰσθητὸν A.

[c]ἑκάστων ἀπορρέουσαν, ὄψει σύμμετρα μόρια ἔχουσαν πρὸς αἴσθησιν· ὄψεως δὲ [d]ἐν τοῖς πρόσθεν αὐτὸ περὶ τῶν αἰτίων τῆς γενέσεως ὀλίγα ἐρρήθη. Τῇδε οὖν τῶν χρωμάτων πέρι μάλιστα εἰκὸς [e]πρέποιτ' ἂν τὸν ἐπιεικῆ [f]λόγον διεξελθεῖν· τὰ φερόμενα ἀπὸ τῶν ἄλλων μόρια, ἐμπίπτοντά τε εἰς τὴν ὄψιν, τὰ μὲν ἐλάττω, τὰ δὲ μείζω, τὰ δὲ ἴσα τοῖς αὐτοῖς τῆς ὄψεως μέρεσιν εἶναι. Τὰ μὲν οὖν ἴσα, ἀναίσθητα, ἃ δὴ καὶ διαφανῆ λέγομεν· τὰ δὲ [g]μείζω καὶ ἐλάττω, τὰ μὲν συγκρίνοντα τὰ δὲ διακρίνοντα αὐτήν, [h]τοῖς περὶ τὴν σάρκα θερμοῖς καὶ ψυχροῖς καὶ τοῖς περὶ τὴν γλῶτταν στρυφνοῖς καὶ ὅσα [i]θερμαντικὰ ὄντα δριμέα ἐκαλέσαμεν, ἀδελφὰ εἶναι, τά τε λευκὰ καὶ τὰ μέλανα ἐκείνων παθήματα γεγονότα ἐν ἄλλῳ γένει τὰ αὐτά, φανταζόμενα δὲ ἄλλα διὰ ταύτας τὰς αἰτίας. Οὕτως οὖν αὐτὰ [k]προσρητέον, τὸ μὲν διακριτικὸν τῆς ὄψεως λευκόν, τὸ δ' ἐναντίον αὐτοῦ μέλαν, τὴν δὲ ὀξυτέραν φορὰν καὶ γένους πυρὸς ἑτέρου, προσπίπτουσαν καὶ διακρίνουσαν τὴν ὄψιν μέχρι [l]τῶν ὀφθαλμῶν, αὐτάς τε τῶν p. 36. ὀμμάτων τὰς διεξόδους βίᾳ [m]διωθοῦσαν καὶ τήκουσαν, πῦρ μὲν ἀθρόον καὶ ὕδωρ, ὃ δάκρυον καλοῦμεν, ἐκεῖθεν ἐκχέουσαν, αὐτὴν [n]δὲ οὖσαν πῦρ ἐξ ἐναντίας ἀπαντῶσαν, καὶ τοῦ μὲν ἐκπηδῶντος πυρὸς οἷον ἀπὸ ἀστραπῆς, τοῦ δὲ εἰσιόντος καὶ περὶ τὸ νοτερὸν κατασβεννυμένου, παντοδαπῶν ἐν τῇ [nn]κυκήσει ταύτῃ γιγνομένων χρωμάτων, μαρμαρυγὰς μὲν τὸ πάθος προσείπομεν· τὸ δὲ [o]τοῦτο ἀπεργαζόμενον λαμπρόν τε καὶ στίλβον ἐπωνομάσαμεν· τὸ δὲ τούτων αὖ μεταξὺ πυρὸς γένος πρὸς μὲν τὸ τῶν ὀμμάτων ὑγρὸν ἀφικνούμενον

[c] ἑκάστω A.
[d] τῆς Cant. pro ἐν τοῖς.
[e] πρέπει Cant.
[f] λόγῳ Cant.
[g] μείζονα Cant.
[h] τῆς Cant.
[i] θερματικὰ sine ὄντα Cant.
[k] προρρητέον Cant.
[l] τῶν om. Cant.
[m] διανθοῦσαν A.
[n] δὴ A. qui infra νεότερον.
[nn] κινήσει] κυσήσει A.
[o] τοῦτον Cant.

καὶ κεραννύμενον αὐτῷ, στίλβον δὲ, οὔ· τῇ δὲ διὰ τῆς [p]νοτίδος αὐγῇ τοῦ πυρὸς μιγνυμένῃ, χρῶμα ἔναιμον παρασχομένῃ, τοὔνομα ἔρυθρον λέγομεν. Λαμπρὸν δὲ ἐρυθρῷ λευκῷ τε μιγνύμενον, ξανθὸν γέγονε. Τὸ δὲ ὅσον μέτρον ὅσοις, οὐδ' εἴ τις εἰδείη, νοῦν ἔχειν [q]τὸ λέγειν, ὧν μήτε τινὰ ἀνάγκην μήτε τὸν εἰκότα λόγον, καὶ μετρίως ἄν τις εἰπεῖν εἴη δυνατός· ἐρυθρὸν δὲ δὴ μέλανι λευκῷ τε κραθὲν ἁλουργοῦν· [r]ὄρφνινον δὲ ὅτ' ἂν τούτοις μεμιγμένοις καυθεῖσί τε μᾶλλον συγκραθῇ μέλαν· πυρρὸν δὲ ξανθοῦ τε καὶ φαιοῦ κράσει γίνεται, φαιὸν δὲ λευκοῦ τε καὶ μέλανος· τὸ δὲ ὠχρὸν, λευκοῦ ξανθῷ [s]μεμιγμένου· λαμπρῷ δὲ λευκὸν συνελθὸν καὶ εἰς μέλαν κατακορὲς ἐμπεσὸν, κυανοῦν χρῶμα ἀποτελεῖται· κυανοῦ δὲ λευκῷ κεραννυμένου, γλαυκόν· πυρροῦ δὲ μέλανι, [t]πράσιον. Τὰ δ' ἄλλα ἀπὸ τούτων σχεδὸν δῆλα, αἷς ἂν ἀφομοιούμενα μίξεσι διασώζοι τὸν εἰκότα μῦθον. Εἰ δέ τις τούτων ἔργῳ σκοπούμενος [u]βάσανον λαμβάνοιτο, τὸ τῆς ἀνθρωπίνης καὶ θείας φύσεως ἠγνοηκὼς ἂν εἴη διάφορον.

Κεφ. ιζʹ.

ΠΕΡΙ ΜΙΞΕΩΣ ΚΑΙ ΚΡΑΣΕΩΣ.

[368] ΘΑΛΗΣ καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ, [a]κράσεις εἶναι τὰς τῶν στοιχείων μίξεις κατ' ἀλλοίωσιν.

[b]'ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ τὰς κράσεις κατὰ παράθεσιν γίγνεσθαι τῶν στοιχείων.

p νοτῖδος γῆ Cant.
q τὸ μὲν A.
r ὀρφινὸν Cant. ὄρφινον A.
s μιγνυμένου Cant.
t πράσιος Cant.
u βάσανος A.

1.

a κράσεις] Sic A. κρᾶσιν Cant.

b Anaxagoræ nomen exciderat ap. Stob. Revocavi illud ex Plut. de Pl. I. 17. ubi simul Democriti nomen additur: Οἱ δὲ περὶ 'Αναξαγόραν καὶ Δημόκριτον κατὰ παράθεσιν, ut adeo apud nostrum quoque forte supplendum sit 'Αναξαγόρας καὶ Δημόκριτος. HEEREN.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ καὶ ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ ἐκ μικροτέρων ὄγκων τὰ στοιχεῖα συγκρίνει, ἅπερ ἐστὶν ἐλάχιστα, καὶ οἱονεὶ στοιχεῖα στοιχείων.

ΠΛΑΤΩΝ τὰ μὲν τρία σώματα τρεπτὰ εἰς ἄλληλα, πῦρ, ἀέρα, ὕδωρ· τὴν δὲ γῆν εἴς τι τούτων [c]ἀμετάβλητον.

[370] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΟΥΣ ΚΑΙ ΤΩΝ ἈΠ' ΑΥΤΟΥ. Τὰ μὲν σώματά [d]φασι θρυπτόμενα, καὶ τὰ μικρὰ μόρια παρατίθεσθαι [e]ἀλλήλοις, τοὺς δ' ἀσωμάτους λόγους, [[f]εἴ τινές [g]εἰσι λόγοι,] συγκρίνασθαι.

[h]ΖΗΝΩΝΑ δὲ οὕτως ἀποφαίνεσθαι διαρρήδην· [i]τοιαύτην δὲ δεήσει εἶναι ἐν περιόδῳ τὴν τοῦ ὅλου διακόσμησιν ἐκ τῆς οὐσίας ὅταν ἐκ πυρὸς [k]τροπὴ εἰς ὕδωρ δι' ἀέρος γένηται, τὸ [l]μέν τι [m]ὑφίστασθαι καὶ γῆν συνίστασθαι, καὶ ἐκ τοῦ λοι-
[372] ποῦ δὲ τὸ μὲν διαμένειν ὕδωρ, ἐκ δὲ τοῦ ἀτμιζομένου ἀέρα γίγνεσθαι, ἔκ τινος δὲ τοῦ ἀέρος πῦρ ἐξάπτειν, τὴν δὲ μίξιν κρᾶσιν γίγνεσθαι τῇ εἰς ἄλληλα τῶν στοιχείων μεταβολῇ, σώματος ὅλου δι' ὅλου [n]τινὸς ἑτέρου διερχομένου.

ΚΛΕΑΝΘΗΣ δὲ οὕτω πώς φησιν ἐκφλογισθέντος τοῦ παντὸς [o]συνίζειν τὸ μέσον αὐτοῦ πρῶτον, εἶτα τὰ ἐχόμενα ἀποσβέννυσθαι δι' ὅλου. Τοῦ δὲ παντὸς ἐξυγρανθέντος, τὸ ἔσχατον τοῦ πυρὸς, ἀντιτυπήσαντος αὐτῷ τοῦ μέσου, τρέ-

[c] ἀμετάβλητον] Sic Plutarch. τῶν ἀμεταβλήτων libri.

[d] φησὶ] φασὶ V. A.

[e] ἀλλήλους] ἀλλήλοις A.

[f] οἵτινες] εἴτινες A.

[g] Vix dubium esse potest quin verba εἴ τινες εἰσὶ λόγοι, glossatori debeantur; quare uncinis ea inclusi. HEEREN.

[h] Ζήνων etc.] Ζήνωνα δὲ οὕτως ἀποφαίνεσθαι V. A.

[i] τοιαύτην δὲ] δὲ delevit Heeren.

[k] τροπὴ] Sic Heeren. tanquam ex A. Atqui A. habet τροπῇ cum Cant. Mox καὶ delet Heeren. post συνίστασθαι. Diog. Laërt. VII. 142. γίνεσθαι δὲ τὸν κόσμον, ὅταν ἐκ πυρὸς ἡ οὐσία τραπῇ δι' ἀέρος εἰς ὑγρότητα, εἶτα τὸ παχυμερὲς αὐτοῦ συστὰν ἀποτελεσθῇ γῆ, τὸ δὲ λεπτομερὲς ἐξαερωθῇ, καὶ τοῦτ' ἐπιπλέον λεπτυνθὲν πῦρ ἀπογεννήσῃ· εἶτα κατὰ μίξιν ἐκ τούτων, φυτά τε καὶ ζῶα, καὶ τὰ ἄλλα γένη.

[l] μέν τι] μέντοι V. A.

[m] ὑφίστασθαι] ὑφίσταται V. A.

[n] τινὸς] τίνας A. τινὰς V.

[o] συνίζειν] συνιζεῖν A. Cant.

πεσθαι πάλιν εἰς τοὐναντίον, εἶθ' οὕτω [p]τρεπόμενον ἄνω
φησὶν αὔξεσθαι καὶ ἄρχεσθαι διακοσμεῖν τὸ ὅλον· καὶ τοσ-
αύτην περίοδον αἰεὶ καὶ διακόσμησιν ποιουμένου, τοῦ ἐν τῇ p. 37.
τῶν ὅλων οὐσίᾳ τόνου μὴ παύεσθαι. Ὥσπερ γὰρ ἑνός τινος
τὰ μέρη πάντα [q]φύεται ἐκ σπερμάτων ἐν τοῖς καθήκουσιν
χρόνοις, οὕτω καὶ τοῦ ὅλου τὰ μέρη, ὧν καὶ τὰ ζῶα καὶ τὰ
φυτὰ ὄντα τυγχάνει, ἐν τοῖς καθήκουσι χρόνοις φύεται. Καὶ
ὥσπερ τινὲς λόγοι τῶν μερῶν εἰς [r]σπέρμα συνιόντες [s]μίγνυν-
[374] ται, καὶ αὖθις διακρίνονται [t]γεινομένων τῶν μερῶν, οὕτως ἐξ
ἑνός [u]τε πάντα γίγνεσθαι, καὶ ἐκ πάντων εἰς ἓν συγκρί-
νεσθαι, ὁδῷ καὶ συμφώνως διεξιούσης τῆς περιόδου.

ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ δὲ τοιοῦτόν τι διεβεβαιοῦτο· εἶναι τὸ ὂν
πνεῦμα κινοῦν ἑαυτὸ πρὸς ἑαυτὸ καὶ ἐξ αὑτοῦ, ἢ πνεῦμα
ἑαυτὸ κινοῦν [x]πρόσω καὶ ὀπίσω· πνεῦμα δὲ εἴληπται διὰ
τὸ λέγεσθαι [y]αὐτὸ ἀέρα εἶναι κινούμενον· ἀνάλογον δὲ
γίγνεσθαι [z]ἔπειτα αἰθέρος, ὥστε καὶ εἰς κοινὸν λόγον πεσεῖν
αὐτά. Ἡ τοιαύτη δὲ κίνησις κατὰ μόνους [a]γίγνεται τοὺς
νομίζοντας τὴν οὐσίαν πᾶσαν μεταβολὴν ἐπιδέχεσθαι, καὶ
[b]σύγχυσιν, καὶ σύστασιν, καὶ σύμμιξιν, καὶ σύμφυσιν, καὶ
τὰ τούτοις παραπλήσια. Διαφέρειν γὰρ ἀρέσκει τοῖς ἀπὸ
τῆς Στωϊκῆς αἱρέσεως, παράθεσιν, μίξιν, κρᾶσιν, σύγχυσιν·
[376] παράθεσιν μὲν γὰρ εἶναι σωμάτων συναφὴν κατὰ τὰς ἐπι-
φανείας, ὡς ἐπὶ τῶν σωρῶν ὁρῶμεν, ἐν οἷς πυροί τε καὶ
[c]κριθαὶ καὶ [d]φακοὶ, καὶ εἴ τινα τούτοις ἄλλα παραπλήσια

[p] τρεπόμενον] τρεπομένου V. A.
[q] φύσεται] φύεται V. A. P.
[r] σπέρματα] σπέρμα V. A. E.
[s] μιγνῦνται] μίγνυται A.
[t] γινομένων] γεινομένων V. A. E.
[u] τε] Sic Heeren. τι A. Cant.
[x] πρόσω] προσώπω A. et in marg. ἴσ πρόσω. προσώπῳ V.
[y] Post αὐτὸ add. ἑαυτὸ A.
[z] ἔπειτα] Sic Heeren. κἄπειτα A. Cant.
[a] γίγνεται] γίγνεσθαι V.
[b] σύγχυσιν] Sic Heeren. ex seqq. χύσιν libri. Ad hæc conf. Philo Judæus T. I. p. 433. ed. Mang.
[c] κριθαὶ] κριθοὶ A.
[d] φακοὶ] φακαὶ A.

περιέχεται, [e]καὶ τῶν ἐπὶ τῶν αἰγιαλῶν ψήφων καὶ ἄμμων· μίξιν δ' εἶναι δύο ἢ καὶ πλειόνων σωμάτων ἀντιπαρέκτασιν δι' ὅλων, ὑπομενουσῶν τῶν συμφυῶν περὶ αὐτὰ ποιοτήτων, ὡς ἐπὶ τοῦ πυρὸς ἔχει καὶ τοῦ πεπυρακτωμένου σιδήρου, ἐπὶ τούτων γὰρ [f]ὅλων γίγνεσθαι τῶν σωμάτων τὴν ἀντιπαρέκτασιν. Ὁμοίως δὲ κἀπὶ τῶν ἐν ἡμῖν ψυχῶν ἔχει· δι' ὅλων γὰρ τῶν σωμάτων ἡμῶν ἀντιπαρεκτείνουσιν, ἀρέσκει γὰρ [g]αὐτοῖς σῶμα διὰ σώματος ἀντιπαρήκειν. Κρᾶσιν δὲ εἶναι λέγουσι δύο [h]ἢ καὶ πλειόνων σωμάτων ὑγρῶν δι' ὅλων ἀντιπαρέκτασιν, τῶν περὶ αὐτὰ ποιοτήτων ὑπομενουσῶν. [i]Τὴν [k]μὲν [οὖν] μίξιν καὶ ἐπὶ ξηρῶν γίγνεσθαι σωμάτων, οἷον πυρὸς καὶ σιδήρου, [l]ψυχῆς τε καὶ τοῦ περιέχοντος [m]αὐτὴν σώματος· τὴν δὲ κρᾶσιν ἐπὶ μόνων φασὶ γίγνεσθαι τῶν
[378] ὑγρῶν· συνεκφαίνεσθαι γὰρ [n]ἐκ τῆς κράσεως τὴν ἑκάστου τῶν συγκραθέντων ὑγρῶν ποιότητα· οἷον οἴνου, μέλιτος, ὕδατος, ὄξους, τῶν παραπλησίων. Ὅτι δ' ἐπὶ τοιούτων κράσεων διαμένουσιν αἱ ποιότητες τῶν συγκραθέντων, πρόδηλον ἐκ τοῦ πολλάκις ἐξ ἐπιμηχανήσεως ἀποχωρίζεσθαι ταῦτα ἀπ' ἀλλήλων. Ἐὰν οὖν σπόγγον [o]ἐλαιούμενον καθῇ τις εἰς [p]οἶνον ὕδατι κεκραμένον, [q]ἀποχωρίσει τὸ ὕδωρ τοῦ οἴνου, ἀναδραμόντος τοῦ ὕδατος εἰς τὸν σπόγγον. Τὴν δὲ σύγχυσιν, δύο καὶ πλειόνων ποιοτήτων περὶ τὰ σώματα μεταβολὴν εἰς [r]ἑτέρας διαφερούσης τούτων [s]ποιότητος γένεσιν, ὡς

[e] τὴν ἐστὶ τῶν] τῶν ἐπὶ τῶν V. P. A.

[f] ὅλον] ὅλου V. A. ὅλων Heeren.

[g] αὐτοῖς] αὐτῶς A.

[h] καὶ πλειόνων] ἢ καὶ πλειόνων V. A.

[i] Τὴν μὲν] κατὰ μὲν V.

[k] μὲν οὖν] οὖν tacite addidit Heeren.

[l] ψυχῆς] ψυχεῖ A.

[m] ταύτην] αὐτὴν A. V.

[n] τῆς κράσεως] τῶν κράσεων V.

[o] ἐλαιούμενον καθεῖ] ἐλαίου μόνον καθῇ V. καθητῖς A.

[p] οἶνον] οἷον A.

[q] ἀποχωρίσει] ἀποχωρίσῃ V. A.

[r] ἑτέρας] ἑτέραν V. probante Heerenio. Præstat vulg.

[s] ποιότητος] ποιοτήτων A.

ἐπὶ τῆς συνθέσεως ἔχει τῶν μύρων καὶ τῶν ἰατρικῶν [t]φαρμάκων.

Κεφ. ιη΄.

ΠΕΡΙ ΚΕΝΟΥ [a]ΚΑΙ ΤΟΠΟΥ ΚΑΙ ΧΩΡΑΣ.

1 p. 38.

[b]ΘΑΛΗΣ καὶ ἕτεροι φυσικοὶ πάντες τὸ κενὸν ὡς ὄντως κενὸν ἀπέγνωσαν.

[c]Ἐμπεδοκλῆς·

Οὐδέ τι τοῦ παντὸς [d]κενεὸν πέλει οὐδὲ περιττόν.

[380] [e]ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ καὶ ἕτεροι, ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ, ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ, ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ, τὰ μὲν ἄτομα ἄπειρα τῷ πλήθει, τὸ δὲ κενὸν ἄπειρον τῷ μεγέθει.

ΣΤΡΑΤΩΝ ἐξωτέρω μὲν ἔφη τοῦ κόσμου μὴ εἶναι κενὸν, ἐνδοτέρω δὲ δυνατὸν γενέσθαι. Τόπον δὲ εἶναι τὸ μεταξὺ διάστημα τοῦ περιέχοντος καὶ [f]τοῦ περιεχομένου.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἐν τετάρτῳ Φυσικῆς Ἀκροάσεως γράφει· "εἶναι δέ φασιν οἱ Πυθαγόρειοι κενὸν καὶ [g]ἐπεισιέναι "[h]αὐτὸ τῷ οὐρανῷ ἐκ τοῦ ἀπείρου πνεύματος ὡς ἀνα"πνέοντι." Ἐν δὲ τῷ περὶ τῆς Πυθαγόρου φιλοσοφίας πρώτῳ γράφει, τὸν δὲ οὐρανὸν εἶναι ἕνα, ἐπεισάγεσθαι [i]δ'

[t] φαρμάκων] Delevi h. l. locum Posidonii cum Heerenio, infra legendum p. 46, 4. ed. Cant.

1.

[a] καὶ τόπου] καὶ om. A. Mox Heeren. addidit καὶ χώρας ex Photio.

[b] Οἱ ἀπὸ θαλέω φυσικοὶ πάντες τὸ κενὸν ἐπέγνωσαν] Sic Cant. Θαλῆς καὶ ἕτεροι φυσικοὶ πάντες τὸ κενὸν ὡς ὄντως κενὸν ἀπέγνωσαν A. qui in marg. Θάλητος καὶ ἑτέρων. Post πάντες Plutarchus inserit μέχρι Πλάτωνος.

[c] Ἐμπεδοκλῆς] Sic Cant. Deest v. A. cum lemmate tamen Ἐμπεδοκλέους in marg.

[d] κενεὸν] Sic Heeren. κενὸν libri.

[e] Δημόκριτος—Ἐπίκουρος A. in marg. ubi om. καὶ ἕτεροι.

[f] τοῦ ante περιεχομ. deest V.

[g] ἐτήσιον ἐν ταυτῷ] ἐπεισιέναι αὐτῷ Heeren. ex Arist. Nat. Ausc. IV. 6.

[h] ταυτῷ] αὐτῷ V. A. αὐτὸ Arist.

[i] ἐκ τοῦ] δὲ ἐκ τοῦ V. A.

[382] ἐκ τοῦ ἀπείρου χρόνον [k]τε καὶ πνοὴν, καὶ τὸ κενὸν, ὃ διορίζει ἑκάστων τὰς χώρας ἀεί. Καὶ ἐν ἄλλοις λέγει, τόπον εἶναι τὸ τοῦ περιέχοντος πέρας ἀκίνητον, ἢ ἐν ᾧ μένει τε καὶ κινεῖται τὰ σώματα, πλήρη μὲν, ὅταν πανταχόθεν [l]περιέχῃ τὸ σῶμα, κενὸν δὲ, ὅταν [m]μηδὲν ἔχῃ τὸ παράπαν ἐν ἑαυτῷ. Τόπον μὲν [n]οὖν ἀναγκαῖον ὑπάρχειν καὶ σῶμα, κενὸν δὲ οὐδαμῶς, εἰ μὴ μόνον [o]πρὸς νόησιν· ἀναιρετικὴν γὰρ εἶναι τὴν κατ' [p]ἐνδελέχειαν αὐτοῦ φύσιν τῆς τε τῶν ὄντων συμπαθείας καὶ τῆς τῶν σωμάτων ἀλληλουχίας· τὰς δὲ κινήσεις γίγνεσθαι τὰς κατὰ τόπον κατὰ τὸ πρότερον [q]ἀντιπεριισταμένων ἀλλήλοις τῶν σωμάτων· ἄπειρον δὲ [r]οὐδὲν ἀπολείπει, οὔτε κατὰ τὸ πλῆθος, οὔτε κατὰ τὸ μέγεθος.

ΖΗΝΩΝ [s]καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ, ἐντὸς μὲν τοῦ κόσμου μηδὲν εἶναι κενὸν, ἔξω δ' αὐτοῦ ἄπειρον. Διαφέρειν δὲ κενὸν, τόπον, [t]χώραν· καὶ τὸ μὲν κενὸν εἶναι [tt]ἐρημίαν σώματος, [u]τὸν δὲ τόπον τὸ ἐπεχόμενον ὑπὸ σώματος· τὴν δὲ χώραν, p. 39.
τὸ ἐκ μέρους ἐπεχόμενον.

[384] ΘΑΛΗΣ ἐρωτηθεὶς τί τὸ μέγιστον; ἔφησε, Τόπος· τἄλλα μὲν γὰρ ὁ κόσμος, τὸν δὲ κόσμον οὗτος περιέχει.

2 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἀσκληπιόν [Patrit. p. 18 b.]

Πᾶν τὸ κινούμενον, ὦ Ἀσκληπιὲ, [a]οὐκ ἔν τινι κινεῖται, καὶ ὑπό τινος;

[k] τε καὶ] δὲ καὶ A.

[l] περιέχῃ] περιέχει V. περιέχη A. non περίσχῃ ut legisse videtur Heeren.

[m] μηδὲν] μηθ' ἓν A.

[n] νῦν] οὖν V. A.

[o] πρὸ νόησιν] πρὸς νόησιν V. A.

[p] ἐνδελέχειαν] ἐντελέχειαν Heeren.

[q] ἂν καὶ] ἄν τι V. ἀντιπεριισταμένας A. ἂν καὶ περιισταμένων ed. Heeren.

[r] οὐδὲν] οὐθὲν A.

[s] καὶ supplevi ex codd. V. A. HEEREN. Atqui καὶ jam exstabat in Cant.

[t] χώρας] χώραν V. A.

[tt] ἐν ante ἐρημίαν deest V. A.

[u] Verba τὸν δὲ—σώματος desunt ob homoiotel. V.

2.

[a] οὐκ om. Patrit.

'ΑΣΚΛ. Μάλιστα.

῾ΕΡΜ. Οὐκ ἀνάγκη δὲ μεῖζον εἶναι [a]τὸ ἐν ᾧ κινεῖται ἢ τὸ κινούμενον;

'ΑΣΚ. 'Ανάγκη.

῾ΕΡΜ. [b]'Ισχυρότερον ἄρα τὸ κινοῦν τοῦ κινουμένου;

'ΑΣΚ. 'Ισχυρότερον γάρ.

῾ΕΡΜ. [c]'Εναντίαν δὲ φύσιν ἔχειν ἀνάγκη τὴν ἐν ᾧ κινεῖται τῇ τοῦ κινουμένου;

'ΑΣΚ. Καὶ πάνυ.

῾ΕΡΜ. Μέγας οὖν οὗτος ὁ κόσμος, οὗ μεῖζον οὐκ ἔστι σῶμα;

'ΑΣΚ. ῾Ωμολόγηται.

῾ΕΡΜ. Καὶ στιβαρὸς, πεπλήρωται γὰρ ἄλλων σωμάτων [d]μεγάλων πολλῶν, μᾶλλον δὲ πάντων ὅσα ἐστι σώματα;

'ΑΣΚ. Οὕτως ἔχει.

῾ΕΡΜ. Σῶμα δὲ [e]ὁ κόσμος, σῶμα [f]δὲ κινούμενον;

'ΑΣΚ. Μάλιστα.

῾ΕΡΜ. Πηλίκον οὖν δεῖ τὸν τόπον εἶναι ἐν ᾧ κινεῖται, καὶ ποταπὸν τὴν φύσιν; Οὐ πολὺ μείζονα, ἵνα δυνηθῇ δέξασθαι τῆς φορᾶς τὴν συνέχειαν, καὶ μὴ θλιβόμενον τὸ κινούμενον ὑπὸ τῆς στενότητος ἐπίσχῃ τὴν κίνησιν;

'ΑΣΚ. [g]Παμμεγεθές τι χρῆμα, ὦ Τρισμέγιστε;

῾ΕΡΜ. Ποταπῆς δὲ φύσεως; τῆς ἐναντίας ἄρα, ὦ 'Ασκληπιέ. Σώματι δὲ ἐναντία φύσις τὸ ἀσώματον;

'ΑΣΚ. ῾Ωμολόγηται.

[386] ῾ΕΡΜ. 'Ασώματος οὖν ὁ τόπος, τὸ δὲ ἀσώματον ἢ θεῖόν

a ἐν ᾧ κινεῖναι τὸ] τὸ ἐν ᾧ κινεῖται ἢ τὸ Patritius.

b Verba 'Ισχυρότερον — κινούμενου desunt ob homoiotel. V.

c 'Εναντίας] –τίαν A.

d μεγάλων deest V.

e οὐ κόσμος] ὁ κόσμος V. A. P.

f καὶ κινούμενον] δὲ κινούμενον A. Patritius.

g Novi fragmenti initium in A. præposito lemmate ἐν ταυτῷ.

ἐστι, [h]ἢ ὁ θεός. Τὸ δὲ θεῖον λέγω νῦν οὐ [i]τὸ γεννητὸν, ἀλλὰ τὸ ἀγέννητον.

3 Ἐν ταὐτῷ [Patrit. p. 19.]

ἙΡΜ. [a]Οὐδὲ ἓν τῶν ὄντων ἐστὶ κενὸν τῷ τῆς ὑπάρξεως λόγῳ. Τὸ δὲ ὂν οὐκ ἂν ἠδύνατο εἶναι ὂν, εἰ μὴ μεστὸν τῆς [b]ὑπάρξεως ἦν. Τὸ γὰρ ὑπάρχον κενὸν οὐδέποτε γενέσθαι δύναται.

ἈΣΚ. Οὐκ ἔστιν οὖν κενά τινα, ὦ Τρισμέγιστε, [c]οἷον [d]κάδος, καὶ [e]κέραμος, καὶ ληνὸς, καὶ τὰ ἄλλα τὰ παραπλήσια;

ἙΡΜ. Φεῦ τῆς πολλῆς [f]πλάνης, Ἀσκληπιέ· τὰ μᾶλλον πληρέστατα καὶ μεστότατα, ταῦτα κενὰ ἡγῇ εἶναι;

ἈΣΚ. Πῶς λέγεις, ὦ Τρισμέγιστε;

ἙΡΜ. Οὐ σῶμά ἐστιν ὁ ἀήρ;

ἈΣΚ. Σῶμα.

ἙΡΜ. Τοῦτο δὲ τὸ σῶμα οὐ διὰ πάντων διήκει τῶν ὄντων, καὶ πάντα διῆκον πληροῖ; Σῶμα δὲ οὐκ [g]ἐκ τῶν τεσσάρων κεκραμένον [h]συνέστηκε; [i]Μεστὰ οὖν πάντα ἐστὶν, ἃ σὺ φῂς κενὰ, τοῦ ἀέρος· [k]εἰ δὲ τοῦ ἀέρος, καὶ τῶν τεσσάρων σωμάτων, καὶ συμβαίνει ὁ ἐναντίος λόγος ἐκφαίνεσθαι, ὅτι ἃ σὺ φῂς μεστὰ, ταῦτα πάντα κενά ἐστι τοῦ ἀέρος, ἐκείνων [l]ὑπ' ἄλλων σωμάτων στενοχωρουμένων, καὶ
[388] μὴ ἐχόντων [m]τοῦτον δέξασθαι τὸν ἀέρα. Ταῦτα οὖν ἃ σὺ

h ἢ θεὸς] ἢ ὁ θεὸς V. A.
i τὸ γενν.] τὸν γενν. A.

3.

a Patritius: Οὐδὲν τῶν ὄντων ἐστὶ κενόν. Μόνον δὲ τὸ μὴ ὂν κενόν ἐστι, καὶ ξένον τῆς ὑπάρξεως. Τὸ δὲ ὂν etc.
b Post ὑπάρξεως add. ἦν V. A.
c Patritius: οἷον κάδδος κενὸς, καὶ κέραμος κενὸς, καὶ φρέαρ κενὸν, καὶ ληνὸς καὶ τὰ ἄλλα.
d κάδος] κάδδος V. A.
e κέραμος add. κενὸς V. A. P.
f πλάνης] σπάνης A. Mox μᾶλλον et ταῦτα om. Patrit.
g ἐκ τῶν] ἐν τῶν A.
h συνέστηκε δὲ μετὰ οὖν] συνέστηκε; μέστα οὖν etc. V.
i Μεστὰ] μετὰ A. δὲ μετὰ Cant. In A. item μετὰ infra.
k εἰ δὲ] ἡ δὲ V. usque ad τὸν ἀέρα om. Patrit.
l ἀπ' ἄλλων] ὑπ' ἄλλων V. A.
m τουτο] τοῦτον V. A.

[n]φῂς κοῖλα δεῖ ὀνομάζειν, [o]οὐ κενά· ὑπάρξει γὰρ μεστά ἐστιν ἀέρος καὶ πνεύματος.

ʼΑΣΚ. [p]ʼΑναντίρρητος ὁ λόγος, ὦ Τρισμέγιστε.

ʽΕΡΜ. Τὸν οὖν τόπον ἐν ᾧ κινεῖται τὸ πᾶν, τί [q]εἴπωμεν;

ʼΑΣΚ. ʼΑσώματον, [r]ὦ Τρισμέγιστε.

ʽΕΡΜ. [s]Τὸ οὖν ἀσώματόν ἐστι νοῦς, [t]ὅλος ἐξ ὅλου, ἑαυτὸν ἐμπεριέχων, ἐλεύθερος σώματος παντὸς, ἀπλανὴς, ἀπαθὴς, ἀφανὴς, [u]αὐτὸς ἐν ἑαυτῷ ἑστὼς, συγχωρητικὸς πάντων, καὶ σωτήριος τῶν ὄντων, οὗ ὥσπερ ἀκτῖνές εἰσι τὸ ἀγαθὸν, ἡ ἀλήθεια, τὸ ἀρχέτυπον [x]πνεύματος, τὸ ἀρχέτυπον [y]τῆς ψυχῆς. [z]Ὁ οὖν θεὸς τί ἐστιν; Ὁ μηδὲ ἓν τούτων [a]ὢν, ὢν δὲ καὶ τοῦ εἶναι τούτοις αἴτιος, καὶ πᾶσι καὶ [b]ἑνὶ ἑκάστῳ τῶν ὄντων πάντων.

4

ʼΕΠΙΚΟΥΡΟΣ ὀνόμασι πᾶσιν παραλλάττειν κενὸν, τόπον, χώραν.

[390] ΟΙ ΠΥΘΑΓΟΡΟΥ ἐκτὸς εἶναι τοῦ κόσμου κενὸν, εἰς ὃ ἀναπνεῖ ὁ κόσμος καὶ ἐξ οὗ.

[n] Post φῂς Patrit. addit κενὰ, non male. In proximis ὑπάρχει γὰρ καὶ μεστά ἐστιν correxi ex Patrit. pro ὑπάρξει γὰρ μετά ἐστιν quod ap. Cant. sine sensu legitur. HEEREN.

[o] οὐ] Sic A. Cant. οὔπω Heeren.

[p] ʼΑντίρρητος] ἀναντίρρητος V. A. P.

[q] εἴπομεν] εἴπωμεν A.

[r] ὦ Τρισμέγιστε] Sic Heeren. ʼΑσκληπιὲ A. Cant.

[s] Plenius et melius leg. ap. Patrit. Τὸ οὖν ἀσώματον τί ἐστι; ὁ νοῦς καὶ λόγος, ὅλος ἐξ ὅλου ἑαυτὸν ἐμπεριέχων, ἐλεύθερος σώματος παντὸς, ἀπλανὴς ἀφανὴς ἀπαθὴς σώματι, αὐτὸς ἐν ἑαυτῷ ἑστὼς, χωρητικὸς τῶν πάντων. Ultima hæc ap. Cant. legebantur corrupte: αὐτὸς ἐν ἑαυτῷ ἐπιχωριστικὸς πάντων. Revocavi lectionem in codd. V. A. servatam. HEEREN.

[t] ὅλος] ὅλως V.

[u] αὐτὸς etc.] αὐτὸς ἐν ἑαυτῷ ἑστὼς, συγχωρητικὸς πάντων V. A. χωρητικὸς P.

[x] Pro πνεύματος ap. Patrit. leg. φῶς, utrumque bene. HEEREN.

[y] τῆς ante ψυχῆς deest V. A.

[z] Legebatur ap. Cant. [et A.] corrupte: ταῦτ᾽ οὖν τί ἐστι; Excidisse tamen θεὸς vidit jam Cant. vertens: *Deus quid est?* Recepi lectionem Patritii. HEEREN.

[a] Pro ὢν ap. Patrit. ὑπάρχων. Post αἴτιος ap. Cant. [et A.] male repetitum erat ὤν. HEEREN. πάντων in fine delet Heeren.

[b] ἑνὶ] ἓν V. A.

[a]ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ εἶναι κενὸν, εἰς ὃ κατὰ τὴν ἐκπύρωσιν ἀναλύεται ὁ κόσμος, [b]ἄπειρος ὤν.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ ἔφησε τὸ ἐκτὸς τοῦ κόσμου οὐκ ἄπειρον, ἀλλ᾽ ὅσον αὔταρκες εἰς διάλυσιν.

ΠΛΑΤΩΝ τόπον εἶναι τὸ μεταληπτικὸν τῶν εἰδῶν, ὅπερ [c]εἴρηκε μεταφορικῶς τὴν ὕλην, καθάπερ τινὰ τιθήνην καὶ δεξαμενήν. Κενὸν δὲ μὴ εἶναι μήτε ἐκτὸς τοῦ κόσμου, μήτε p. 40.
ἐν τῷ κόσμῳ. Λέγει γὰρ ἐν τῷ [d]Τιμαίῳ οὕτως· Τῶν δὲ δὴ τεττάρων ἓν ὅλον ἕκαστον εἴληφεν ἡ τοῦ κόσμου σύστασις· ἐκ γὰρ πυρὸς παντὸς ὕδατός τε καὶ ἀέρος καὶ γῆς συνέστησεν αὐτὸν ὁ συνιστὰς, μέρος οὐδὲν οὐδενὸς οὐδὲ δύναμιν ἔξωθεν ὑπολιπὼν, τάδε διανοηθεὶς, πρῶτον μὲν ἵνα ὅλον ὅ τι μάλιστα ζῶον τέλειον ἐκ τελείων τῶν μερῶν [e]εἴη· πρὸς δὲ [f]τούτοις ἓν ἅτε οὐχ ὑπολελειμμένων, ἐξ ὧν ἄλλο [g]τοιοῦτον γένοιτ᾽ ἄν.—Λεῖον δὲ κύκλῳ πᾶν ἔξωθεν αὐτὸ [h]ἀπηκριβῶτο πολλῶν χάριν. Ὀμμάτων τε γὰρ ἐπεδεῖτο οὐδὲν, ὁρατόν τε γὰρ οὐθὲν ἔξωθεν ὑπελείπετο· οὐδ᾽ ἀκοῆς, οὐδ᾽ ἀκουστὸν πνεῦμά τε οὐκ ἦν [i]περιεστὼς δεόμενον ἀναπνοῆς.

Τόπον δ᾽ εἶναι ὁ ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ ἀπεφαίνετο, τὸ κατε-
[392] χόμενον δι᾽ ὅλου ὑπὸ ὄντος, ἢ τὸ οἷον κατέχεσθαι ὑπὸ ὄντος,

4.

[a] Nempe extra mundum; in mundo enim Stoici vacuum negabant. Plut. I. 18. Οἱ Στωϊκοὶ ἐντὸς τοῦ κόσμου οὐδὲν εἶναι κενὸν, ἔξωθεν δ᾽ αὐτοῦ ἄπειρον. Ponere enim debebant vacuum extra mundum, ut esset in quod mundus in communi conflagratione resolvi posset. Infinitum tamen illud esse, negasse dicitur Posidonius. HEER.

[b] ἄπειρος ὢν] ἄπειρον ὂν Heerenius; tacite.

[c] εἴρηται] εἴρηκε V. A.

[d] Τιμαίῳ] P. 32. et postea p. 33 B. τῷ Τιμ. A.

[e] εἴη] εἰσὶ A.

[f] τά τε] τούτοις A. ubi mox οὔτε pro ἅτε.

[g] τοιοῦτον] τοιοῦτο A.

[h] ἀπεκρεμᾶτο] ἀπηκριμῶτο A.

[i] περιεστὸς A.

[k] Sext. Empir. Pyrrh. Hyp. III. 124. Οἱ Στωϊκοί φασι, κενὸν μὲν εἶναι τὸ οἷόν τε ὑπὸ ὄντος κατέχεσθαι· μὴ κατεχόμενον δὲ ἢ διάστημα ἔρημον σώματος, ἢ διάστημα ἀκαθεκτούμενον ὑπὸ σώματος· τόπον δὲ διάστημα ὑπὸ ὄντος κατεχόμενον, καὶ ἐξισαζόμενον τῷ κατέχοντι αὐτόν· νῦν ὂν καλοῦντες τὸ σῶμα, χώραν δὲ διάστημα, κατὰ μέν τι κατεχόμενον ὑπὸ σώματος, κατὰ δέ

[l]καὶ δι' ὅλου κατεχόμενον εἴτε ὑπὸ τινὸς, εἴτε ὑπὸ τινῶν. Ἐὰν δὲ τοῦ οἷου τε κατέχεσθαι ὑπὸ ὄντος τὶ μὲν [m]κατέχηται, τὶ δὲ μὴ, [n]τὸ ὅλον (οὔτε) κενὸν ἔσται οὔτε τόπος, ἕτερον [o]δέ τι οὐκ ὠνομασμένον· τὸ μὲν γὰρ κενὸν τοῖς κενοῖς [p]ἀγγείοις λέγεσθαι παραπλησίως, τὸν δὲ τόπον τοῖς πλήρεσι· χώραν δὲ, [q]πότερον τὸ μεῖζον οἷόν τε κατέχεσθαι ὑπὸ ὄντος, καὶ οἷον μεῖζον ἀγγεῖον σώματος, ἢ τὸ χωροῦν μεῖζον [r]σῶμα; Τὸ μὲν οὖν κενὸν [s]ἄπειρον εἶναι λέγεσθαι· τὸ γὰρ ἐκτὸς τοῦ κόσμου [t]τοιοῦτ' εἶναι· τὸν δὲ τόπον [u]πεπερασμένον, διὰ τὸ μηδὲν σῶμα ἄπειρον εἶναι. Καθάπερ δὲ τὸ σωματικὸν πεπερασμένον εἶναι, οὕτω τὸ ἀσώματον ἄπειρον, ὅ τε γὰρ χρόνος ἄπειρος καὶ τὸ κενόν. Ὥσπερ γὰρ τὸ [x]μηδὲν οὐδέν ἐστι πέρας, οὕτω καὶ τοῦ μηδενὸς, οἷόν ἐστι τὸ κενόν. Κατὰ γὰρ τὴν αὐτοῦ ὑπόστασιν ἄπειρόν ἐστι· [y]περατοῦται δ' αὖ
[394] τοῦτο ἐκπληρούμενον· τοῦ δὲ πληροῦντος ἀρθέντος, οὐκ ἔστιν αὐτοῦ νοῆσαι [z]πέρας.

Κεφ. ιθ'.

ΠΕΡΙ ΚΙΝΗΣΕΩΣ.

I

ΠΥΘΑΓΟΡΟΥ. Κίνησίς ἐστι [a]διαφορότης ἢ ἑτερότης

τι ἀκαθεκτούμενον· ἐνίων χώραν εἰπόντων εἶναι τὸν τόπον τοῦ μεγάλου σώματος.

[l] Verba καὶ δι'—ὑπὸ ὄντος des. A.

[m] κατέχεται] κατέχηται V. A. Infra οὔτε πος A.

[n] τὸ ὅλον κενὸν] τὸ ὅλον οὔτε κενὸν legisse videtur Canterus, ut patet ex ejus versione Latina, probantibus Balforeo et Bakio ad Cleomed. pp. 262, 263.

[o] δέ τι] δέ τε V. A.

[p] ἀγγείοις] Sic em. Canterus. Libri αἰτίοις: et paullo post αἴτιον iidem, non ἀγγεῖον.

[q] πότερον] πρότερον A.

[r] σώματι] σῶμα V. A.

[s] ἄπορον] ἄπειρον A. λέγεσθαι del. A.

[t] τοῦ οὔτε] τοιοῦτ' V. A.

[u] πεπερασμένον εἶναι sic A.

[x] μηδὲν ἕν ἐστι] μηδὲν οὐδὲ ἕν ἐστι A.

[y] περ. δ' αὖ τοῦτο ἐκπληρούμενον, *fines habet cum expletur*, bene codd. V. A. pro δ' αὐτοῦ τὸ ἐκπληρούμενον ap. Cant. HEEREN.

[z] πέρας] Sic V. A. E. κέρας Cant.

I.

[a] διαφορότης] Sic Heeren. δια-

ἐν [b]ὕλῃ, ᾗ ἐστιν ὕλη. Οὗτος πάσης κινήσεως κοινὸς ὅρος.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ ἓν γένος κινήσεως, τὸ κατὰ [d]παλμὸν, ἀπεφαίνετο.

Ἐ ΠΙΚΟΥΡΟΣ δύο εἴδη [e]κινήσεως, τὸ κατὰ στάθμην, καὶ τὸ κατὰ [f]παρέγκλισιν. Εἰσὶ δέ τινες, οἳ καὶ τέταρτον εἶδος εἰσάγουσι, τὸ κατ' οὐσίαν, ὅπερ ἐστὶ τὸ κατὰ γένεσιν.
[396] Ἄλλοι δὲ καὶ τὴν διανοητικὴν προστιθέασι, μέχρι γὰρ τῶν πέντε προύβησαν.

ΔΙΟΔΩΡΟΣ ὁ Κρόνος, κεκινῆσθαι [g]μέν τι, κινεῖσθαι δὲ μηδέν.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ ἠρεμίαν μὲν καὶ στάσιν ἐκ τῶν ὅλων ἀνῄρει, κίνησιν δὲ τοῖς πᾶσιν ἀπεδίδου.

[h]ἩΡΟΦΙΛΟΣ κινήσεως τὴν μὲν λόγῳ [i]θεωρητὴν, τὴν δὲ αἰσθητήν.

ἈΣΚΛΗΠΙΑΔΗΣ πᾶσαν κίνησιν αἰσθητὴν ἀπεφῄνατο.

[k]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ τὴν κίνησιν ἐνέργειαν εἶναι τοῦ δυνάμει κινητικοῦ ἢ κινητοῦ. Τῶν δὲ κινήσεων τὰς μὲν εἶναι κατὰ
[398] τὸ ποσὸν, τὰς δὲ κατὰ τὸ ποιὸν, [l]τὰς δὲ κατὰ τόπον [m].

φερότης A. Cant. διαφορά τις Plutarch.

[b] ἔφασκε post ὕλῃ deest V. A. E.

[d] παλμὸν] πλάγιον Plutarch.

[e] κινήσεως] κινήσεων V. A.

[f] παρέκκλισιν] παρέγκλισιν V. A.

[g] κεκινεῖσθαι μέν τι] κ. μέντιοι sic V. κ. μέντιοικινεῖσθαι A.

[h] Ἡρόφιλος] πρόφιλος A.

[i] θεωρητὸν] θεωρητὴν V. A.

[k] Desumta sunt hæc Aristotelis placita ex Phys. III. 1. et V. 4. etc. et VIII. 7. etc. ubi de motu in universum, singulisque ejus generibus copiose agit philosophus. Definitionem motus quam Stobæus habet, ipsis his verbis apud Aristotelem non quidem invenio; convenit tamen cum iis quæ Aristoteles ll. cc. tradit.—ἢ κινητοῦ rescripsi ex cod. Par. Distinguit enim Aristoteles τὸ κινητικὸν et τὸ κινητόν. Cant. ἢ κινητικόν. Codd. V. A. E. ἢ κινητὸν, nullo sensu. HEEREN. Mox τὸν δὲ A.

[l] Verba τὰς δὲ κατὰ τόπον desunt V.

[m] Exponit hæc motus genera Arist. Phys. VIII. 7. ubi simul motum ratione loci φορὰν dici adjicit. HEEREN.

Κατὰ μὲν τὸ ποσὸν, [n] αὔξησιν καὶ μείωσιν, ἐν προσθέσει τινὶ θεωρουμένην καὶ ἀφαιρέσει· κατὰ δὲ τὸ ποιὸν, ἀλλοίωσιν καὶ μεταβολὴν, ὡς τὴν ἐκ θερμοῦ εἰς ψυχρὸν, ἐκ γλυκέος εἰς πικρόν. Κατὰ δὲ [o] τόπον, [p] ἣν ἂν ἰδιώτερον φορὰν ὠνόμασε, καθ' ὃν ἐξ οὗ εἰς ὃ μεταβαίνει τὰ κινούμενα. Ταύτης δὲ [q] τρεῖς εἶναι διαφορὰς, [r] ὧν δύο μὲν ἁπλᾶς, τήν τε κατ' εὐθεῖαν, καὶ τὴν ἐν κύκλῳ, μίαν δὲ μικτήν· εὐθεῖαν μὲν τὴν ἄνω καὶ κάτω, κατά τε κουφότητα καὶ βαρύτητα τῶν σωμάτων. Ἐν κύκλῳ δὲ τὴν περιφερῆ· μικτὴν δὲ τὴν [s] κατ' ἔγκλισιν. Τῆς δὲ κατὰ τόπον κινήσεως, τὴν μὲν ἀπὸ τοῦ μέσου γίγνεσθαι, τὴν δὲ ἐπὶ τὸ μέσον, [t] τὴν δὲ περὶ τὸ μέσον. p. 41. [u] Πυρὸς μὲν οὖν καὶ ἀέρος ἀπὸ τοῦ μέσου, γῆς καὶ ὕδατος ἐπὶ τὸ μέσον, [x] τοῦ δὲ ὅλου περὶ τὸ μέσον. Τούτοις δὲ κληροῦσθαι τὸν ὅλον κόσμον.

2 Ἑρμοῦ ἐκ τοῦ πρὸς Ἀσκληπιόν [Patrit. p. 18 b.]

ΕΡΜ. Πᾶν τὸ κινούμενον οὐκ ἐν κινουμένῳ κινεῖται, [400] ἀλλὰ ἐν ἑστῶτι· καὶ τὸ κινοῦν δὲ [a] ἕστηκεν, ἀδύνατον γὰρ αὐτῷ συγκινεῖσθαι.

[n] Post αὔξησιν add. καὶ μείωσιν V. A. Mox omnes προθέσει.

[o] τόπον] τὸπὸν A.

[p] ἣν ante ἂν deest V. A.

[q] Tria hæc motus ratione loci genera Aristoteles exponit Phys. VIII. 8. πᾶν γὰρ κινεῖται τὸ κινούμενον ἢ κύκλῳ, ἢ εὐθεῖαν, ἢ μικτήν. HEEREN.

[r] ὡς δύο] ὧν δύο A. V. post τὴν add. τε A. V.

[s] κατ' ἔγκλισιν rescripsi sensu jubente pro κατάλυσιν ap. Cant. [et A.] Idem jam Cant. versione expressit, vertit enim; *qui inclinat.* HEEREN.

[t] τὴν δὲ περὶ—ὅλου περὶ τὸ μέσον om. A.

[u] Ante oculos hic habuisse videtur Aristot. de Coel. IV. 4. ubi nonnulla saltem ex iis quæ hic ponuntur docet philosophus, reliqua unde hausta sint non reperio. HEEREN.

[x] Verba τὸ δὲ ὅλ. π. τ. μέσον des. V. Mox κόσμον ὅλον A.

ib. τοῦ δὲ ὅλου nempe κίνησιν εἶναι, quod præcedentia flagitant, rescripsi pro τὸ δὲ ὅλον ap. Cant. In corrupto autem κληροῦσθαι quid lateat, incertus maneo. Forte πληροῦσθαι *impleri,* etsi neque hoc arridet. Vertit Cant. *perfici,* qui voluisse videtur τελειοῦσθαι. HEEREN.

2.

[a] ἐστὶν] ἕστηκεν V. A. γὰρ αὐτῷ mox addidit Heeren ex Patrit.

ʼΑΣΚ. Πῶς οὖν, ὦ Τρισμέγιστε, τὰ ἐνθάδε συγκινεῖται τοῖς [b] κινοῦσιν; τὰς γὰρ σφαίρας ἔφης τὰς πλανωμένας κινεῖσθαι ὑπὸ τῆς ἀπλανοῦς σφαίρας.

ʽΕΡΜ. Οὐκ ἔστιν αὕτη, ὦ ʼΑσκληπιὲ, [c] συγκίνησις, ἀλλʼ ἀντικίνησις· οὐ γὰρ ὁμοίως κινοῦνται, ἀλλʼ ἐναντίως ἀλλήλαις. ʽΗ δὲ [d] ἐναντίωσις τὴν [e] ἀντέρεισιν τῆς κινήσεως ἑστῶσαν ἔχει· ἡ γὰρ ἀντιτυπία [f] στάσις φορᾶς. Διὸ καὶ [g] αἱ πλανώμεναι σφαῖραι ἐναντίως κινούμεναι τῇ ἀπλανεῖ ὑπʼ ἀλλήλων, τῇ ἐναντίᾳ ὑπαντήσει περὶ τὴν ἐναντιότητα ἑστῶσαν αὐτὴν ὑπʼ αὐτῆς ἕξει. Τὰς γὰρ ἄρκτους ταύτας ἃς ὁρᾷς μήτε δύνουσας μήτε ἀνατέλλουσας, περὶ δὲ τὸ αὐτὸ στρεφομένας, [h] οἴει κινεῖσθαι ἢ ἑστάναι;

ʼΑΣΚ. Κινεῖσθαι, ὦ Τρισμέγιστε.

ʽΕΡΜ. Κίνησιν ποίαν, ὦ ʼΑσκληπιέ;

ʼΑΣΚ. Τὴν περὶ τὰ αὐτὰ [i] ἀναστρεφομένην.

[402] ʽΕΡΜ. ʽΗ δὲ περιφορὰ ἡ περὶ τὸ αὐτὸ κίνησίς ἐστιν ὑπὸ στάσεως κατεχομένη. Τὸ γὰρ περὶ αὐτὸ κωλύει τὸ ὑπὲρ αὐτὸ, [[k] εἰ ἔστη εἰς τὸ περὶ αὐτό.] Οὕτω καὶ ἡ ἐναντία φορὰ ἕστηκεν ἑδραία, ὑπὸ τῆς ἐναντιότητος [l] ἀεὶ στηριζομένη. Παράδειγμα δέ σοι ἐπίγειον τοῖς ὀφθαλμοῖς ἐμπίπτον περὶ τούτου φράσω· [m] τὰ ἐπίγεια ζῶα, οἷον τὸν ἄνθρωπον

[b] Pro κινοῦσιν ap. Patrit. leg. κινουμένοις.

[c] Post συγκίνησις add. ἀλλὰ ἀντικίνησις V. A.

[d] ἐναντίωσις] Sic Patrit. ἐναντίως Cant. A.

[e] ἀντέρεισιν] ἀντέρεσιν A.

[f] στάσις] πάσης A.

[g] αἱ deest V. A.

[h] οἴει κινεῖσθαι ἢ] Sic Patritius. ποιεῖ κινεῖσθαι καὶ A. Cant.

[i] ἀναστρεφομένην] ἀεὶ τρεφομένην Patritius.

[k] εἰ ἔστη εἰς τὸ περὶ αὐτὸ addidi ex Patritio, etsi vel sic sensus obscurus manet. HEEREN.

[l] ἀεὶ ante στηριζομένη addit Patrit. HEEREN.

[m] Veram plenamque lectionem recepi ex Patrit. Ap. Cant. A. ἐπιπίπτον φράσω, τὰ ἐπίκηρα ζῶα etc. HEEREN.

[n] λέγω, θεώρει νηχόμενον. Φερουμένου γὰρ τοῦ ὕδατος, ἡ ἀντιτυπία τῶν ποδῶν καὶ τῶν χειρῶν στάσις γίγνεται τῷ ἀνθρώπῳ τοῦ μὴ συγκατενεχθῆναι τῷ ὕδατι, [[o] μήτε δῦναι ὑπ' αὐτό.]

ἈΣΚ. Σαφὲς τὸ παράδειγμα, ὦ Τρισμέγιστε.

ἙΡΜ. Πᾶσα οὖν κίνησις ἐν στάσει καὶ ὑπὸ στάσεως κινεῖται. Ἡ οὖν κίνησις τοῦ κόσμου καὶ παντὸς ζώου ὑλικοῦ οὐχ ὑπὸ τῶν κατ' ἐκτὸς [p] τοῦ κόσμου συμβαίνει γίνεσθαι, ἀλλ' ὑπὸ τῶν ἐντὸς εἰς τὸ κατ' ἐκτὸς [q] τῶν νοητῶν, ψυχῆς [r] ἢ πνεύματος ἢ ἄλλου τινὸς ἀσωμάτου. Σῶμα γὰρ ἔμψυχον οὐ κινεῖ, ἀλλ' οὐδὲ τὸ σύνολον σῶμα κἂν ᾖ ἄψυχον.

ἈΣΚ. Πῶς τοῦτο λέγεις, ὦ Τρισμέγιστε; Τὰ οὖν ξύλα,
[404] καὶ [s] τοὺς λίθους, καὶ τὰ [[t] ἄλλα] πάντα ἄψυχα οὐ σώματά ἐστιν [u] τὰ κινοῦντα;

ἙΡΜ. Οὐδαμῶς, Ἀσκληπιέ. Τὸ γὰρ ἔνδον τοῦ σώματος τοῦ [x] κινοῦντος τὸ ἄψυχον οὐ σῶμα ἐκεῖνό ἐστιν τὸ [y] ἀμφότερα κινοῦν, καὶ τὸ τοῦ [z] βαστάζοντος καὶ τὸ τοῦ βασταζομένου, διόπερ ἄψυχον οὐκ ἄψυχον κινήσει, [a] ἔμψυ-

[n] Hæc quoque sana exhibet Patrit. Nam ap. Cant. A. λέγω, νηχόμενον θεώρησον φερόμενον (φανερόμενον A.). Τοῦ γὰρ ὕδατος etc. nullo sensu. HEEREN.

[o] μήτε δῦναι ὑπ' αὐτὸ addidi ex Patritio. Sequentia sic ap. Patrit. Σαφέστατον παράδειγμα εἶπες ὦ Τρ. HEEREN.

[p] τοῦ κόσμου recte habet Patrit. pro τοῦ σώματος ap. Cant. A. universo enim mundo sermo est; nisi malis utrumque τοῦ κόσμου ἢ τοῦ σώματος, ut ultimum ad τοῦ ζώου ὑλικοῦ referatur. HEEREN.

[q] τῶν νοητῶν deest ap. Patrit. Sapit fere glossema sequentium ψυχῆς καὶ πνεύματος. HEEREN.

[r] καὶ πνεύματος] ἢ τοῦ πνεύματος A. V.

[s] οἱ λίθοι Heeren. τοὺς λίθους A. Cant.

[t] ἄλλα ante πάντα addit Patrit. HEEREN.

[u] Excidit ap. Cant. et A. τὰ κινοῦντα a quo pendent præcedentes accusativi. Servavit illud Patrit. HEEREN.

[x] Pro κινοῦντος Patrit. male κινοῦν, qui idem post βαστάζοντος addit σῶμα, nullo, quod video, sensu. HEEREN.

[y] ἀμφότερα] ἀμφότερον A.

[z] βαστάζοντος] –ζοντα V.

[a] Verba ἔμψυχον τὸ κινοῦν ἐπεὶ κινεῖ, addidi ex Patrit. HEEREN.

χον τὸ κινοῦν ἐπεὶ κινεῖ. Ὁρᾷς γοῦν [b]καταβαρυνομένην τὴν ψυχὴν, ὅταν δύο σώματα [c]φέρῃ.

3 Χρυσίππου.

Κίνησιν δέ [a]φησιν εἶναι ὁ Χρύσιππος μεταβολὴν κατὰ τόπον ἢ ὅλῳ ἢ μέρει, ἢ [b]μεταλλαγὴν ἐκ τόπου, ἢ καθ' [c]ὅλου ἢ κατὰ μέρος. [d]Καὶ ἄλλως· κίνησιν μεταλλαγὴν κατὰ τόπον ἢ σχῆμα· [e]φορὰν δὲ μετεώρου κίνησιν ὀξεῖαν, μονὴν δὲ τὸ μὲν οἷον ἀκινησίαν σώματος, [f]τὸ δὲ οἷον σώματος σχέσιν κατὰ ταυτὰ καὶ ὡσαύτως, νῦν τε καὶ πρότερον. Πολλαχῶς δὲ λέγεσθαι τὴν κίνησιν καὶ τὴν μονὴν, διὸ καὶ πολλοὺς
[406] καθ' ἕκαστον σημαινόμενον ἀποδίδοσθαι ὅρους. Τὰς δὲ πρώτας κινήσεις εἶναι δύο, τήν τε εὐθεῖαν καὶ τὴν καμπύλην· διὰ τούτων δὲ πολλαχῶς μιγνυμένων γίγνεσθαι πολλὰς κινήσεις καὶ διαφερούσας.

4 Ζήνωνος.

Τῶν δ' ἐν τῷ κόσμῳ πάντων τῶν κατ' ἰδίαν [a]ἕξιν συνε- p. 42.
στώτων τὰ μέρη τὴν φορὰν ἔχειν εἰς [b]τὸ τοῦ ὅλου μέσον, ὁμοίως δὲ καὶ αὐτοῦ τοῦ κόσμου, διόπερ ὀρθῶς λέγεσθαι [c]πάντα τὰ μέρη τοῦ κόσμου ἐπὶ τὸ μέσον τοῦ κόσμου τὴν φορὰν ἔχειν, μάλιστα δὲ [d]τὰ βάρος ἔχοντα· ταυτὸν δὲ αἴτιον εἶναι καὶ τῆς τοῦ κόσμου μονῆς ἐν ἀπείρῳ κενῷ καὶ [e]τῆς γῆς παραπλησίως ἐν τῷ κόσμῳ, περὶ [f]τὸ τούτου κέντρον [g]καθιδρυμένης ἰσοκρατῶς. Οὐ πάντως δὲ σῶμα βάρος

[b] καταβαρυνομένην bene Patrit. pro καὶ βαρυνομ. ap. Cant. [A]. HEEREN.

[c] φέρῃ] φέρει V. A. E.

3.

[a] εἶναι φησὶν] φησὶν εἶναι V. A.

[b] μεταλλαγὴν] Sic libri. μεταβολὴν Heeren. tacite.

[c] ὅλον] ὅλου A.

[d] Ἢ ἄλλ.] καὶ ἄλλως V. A.

[e] φοράδην] φορὰν δὲ V. A.

[f] τὸ δ' οἷον add. σώματος V. A.

4.

[a] ἐξ] ἕξιν V. A. P.

[b] τοῦ ὅλου] τὸ τοῦ ὅλου V. A.

[c] πάντα deest V. A.

[d] βάρος] τὰ βάρος V. A.

[e] τῇ γῇ] τῆς γῆς Heerenius.

[f] τούτου κεντρ.] τὸ τούτου κ. V.

[g] Post κατιδρυμ. add. ἰσοκρατῶ (sic) A.

ἔχειν, ἀλλ' [h]ἀβαρῆ εἶναι ἀέρα καὶ πῦρ· γίγνεσθαι δὲ καὶ ταῦτά πως ἐπὶ τὸ τῆς ὅλης σφαίρας τοῦ κόσμου μέσον, τὴν δὲ σύστασιν πρὸς τὴν περιφέρειαν αὐτοῦ ποιεῖσθαι. φύσει [408] γὰρ [i]ἀνώφοιτα ταῦτ' εἶναι, διὰ τὸ μηδενὸς μετέχειν βάρους· παραπλησίως δὲ τούτοις οὐδ' αὐτόν φασι τὸν κόσμον βάρος ἔχειν, διὰ τὸ τὴν ὅλην αὐτοῦ σύστασιν [k]ἔκ τε τῶν βάρος ἐχόντων στοιχείων εἶναι καὶ ἐκ τῶν ἀβαρῶν, τὴν δ' ὅλην γῆν καθ' ἑαυτὴν μὲν ἔχειν [l]ἀρέσκει βάρος· παρὰ δὲ τὴν θέσιν, διὰ τὸ τὴν μέσην ἔχειν χώραν, (πρὸς δὲ τὸ μέσον εἶναι τὴν φορὰν τοῖς τοιούτοις σώμασιν,) ἐπὶ τοῦ τόπου τούτου μένειν.

5 Πλάτωνος ἐκ τῶν Παρμενίδου [p. 138.]

Ὅτι κινούμενόν τε ἢ φέροιτο ἢ ἀλλοιοῖτο ἄν, αὗται γὰρ μόναι κινήσεις; Ναί.

6 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 43.]

Ὥστε τὸ μὲν ὅλον κινεῖσθαι ζῶον ἀτάκτως μὲν ὅπῃ τύχοι προϊέναι, καὶ ἀλόγως τὰς ἓξ ἁπάσας κινήσεις ἔχον· εἴς τε γὰρ τὸ πρόσθεν καὶ ὄπισθεν, καὶ πάλιν εἰς δεξιὰ καὶ ἀριστερὰ, κάτω τε καὶ ἄνω, καὶ πάντῃ κατὰ τοὺς ἓξ τόπους πλανώμενα.

7 Ἀπολλοδώρου.

ἈΠΟΛΛΟΔΩΡΟΣ ἐν τῇ Φυσικῇ Τέχνῃ, κίνησιν εἶναι μεταβολὴν κατὰ τόπον ἢ σχῆμα, ἢ ὅλῳ ἢ τοῖς μέρεσι· [410] σχέσιν δὲ [a]συνοχὴν κατὰ τόπον ἢ σχῆμα, καὶ τὸ ἴσχεσθαι [b]τοιοῦτον· γένη δὲ κινήσεως εἶναι πρῶτα δύο, τήν τε κατ' εὐθεῖαν, καὶ τὴν [c]ἐγκύκλιον. Τούτων δὲ [d]εἴδη γίγνεσθαι

[h] ἀβαρῆ] ἀβαρεῖ A. ἀλλὰ βάρη Cant.

[i] ἄνω τὰ φυτὰ] ἀνώφυτα A. ἀνώφοιτα Canterus in marg. et sic ed. Heeren.

[k] ἐκ τῶν] ἔκ τε τῶν V. A.

[l] ἀρέσκειν] ἀρέσκει V. A.

7.

[a] καὶ ante συνοχ. del. A.

[b] τοιοῦτο] τοιοῦτον A.

[c] ἐγκύκλιον edidi pro ἔγκυκλον. Sanam lectionem infra ipse exhibet Cant. HEEREN.

[d] εἴδη] ἤδη A.

πλείονα. Περὶ τὸ αὐτὸ δὲ κινήσεις γίγνεσθαι πολλὰς, καὶ ἐν τῷ αὐτῷ τόπῳ, οἷον περιπατεῖν καὶ τρέχειν, μὴ ἐκβαίνοντα τὸν ἀσώματον τόπον, [f]ἢ ἅμα κινεῖσθαι τήν τε ἐπ' [g]εὐθεῖαν καὶ τὴν εἰς τὰ πλάγια, καὶ τὴν [h]ἔμπροσθεν καὶ τὴν ὄπισθεν, καὶ τὴν εἰς δεξιὰν καὶ ἀριστερὰν, καὶ ἐγκύκλιον, καὶ ταχέως ἅμα καὶ βραδέως, καθάπερ ἐπὶ τῶν πλεόντων καὶ τῶν ὁμοίως τούτοις [i]διακειμένων [οὖν] τυγχάνειν. Ὥσπερ δὲ παντὸς σώματος ἐλέγομεν μέρος εἶναι σῶμα, καὶ πάσης ἐπιφανείας ἐπιφάνειαν, καὶ πάσης γραμμῆς γραμμὴν, καὶ παντὸς τόπου τόπον, καὶ παντὸς χρόνου χρόνον, οὕτω καὶ πάσης κινήσεως κίνησιν εἶναι ῥητέον, καὶ πάσης σχέσεως σχέσιν κατὰ τὴν αὐτὴν ἀναλογίαν.

8 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Θεαιτήτου [p. 181.]

Καί μοι λέγε, ἆρα κινεῖσθαι καλεῖς, ὅτ' ἄν τι χώραν ἐκ χώρας [a]μεταβάλλῃ, ἢ καὶ ἐν τῷ αὐτῷ [b]στρέφηται; Ἔγωγε. Τοῦτο μὲν τοίνυν ἓν ἔστω εἶδος· ὅτ' ἂν δὲ [c]ἡβᾷ μὲν ἐν τῷ αὐτῷ [d]γηράσκῃ δὲ, ἢ μέλαν ἐκ λευκοῦ ἢ σκληρὸν ἐκ μαλακοῦ γίγνηται, ἤ τινα ἄλλην ἀλλοίωσιν ἀλλοιοῦται, ἆρα οὐκ ἄξιον ἕτερον εἶδος κινήσεως φάναι; [e]Ἀναγκαῖον μὲν οὖν. Δύο δὴ λέγω τούτω εἴδη κινήσεως, ἀλλοίωσιν, [f]τὴν δὲ περιφοράν.

9 Ἐν ταυτῷ [p. 152.]

[412] Ἐγὼ ἐρῶ καὶ μάλα οὐ φαῦλον λόγον, ὡς ἄρα ἓν μὲν αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ οὐδέν ἐστι, οὐδ' ἄν τι προσείποις ὀρθῶς, οὐδ' ὁποιονοῦν τι· ἀλλ' ἐὰν ὡς μέγα [a]προσαγορεύῃς τι καὶ

f ἢ ἅμα] καὶ ἅμα V. A.
g εὐθεῖαν] εὐθείας A.
h Post ἔμπροσθεν add. καὶ τὴν ὄπισθεν V. A. P.
i διακειμένων sic A. οὖν uncinis inclusit Heeren.

8.

a μεταβάλλει] μεταβάλλῃ V. A.
b στρέφεται] στρέφεσθαι A.
c ἡβᾶμὲν (sic) A. ἢ Plato.
d γηράσκει] γηράσκει A. qui mox γίγνεται.
e Ἀναγκαίως] ἀναγκαῖον A.
f τήν τε] τὴν δὲ A.

9.

a προσαγορεύσῃς] προσαγορεύῃς A.

μικρὸν φανεῖται, καὶ ἐὰν βαρύ τι, κουφόν· ξύμπαντά τε οὕτως, ὡς μηδενὸς ὄντος ἑνὸς, μήτε τινὸς, μήτε [b]ὁποίουοῦν· ἐκ δὲ δὴ φορᾶς τε καὶ κινήσεως καὶ κράσεως πρὸς ἄλληλα γίγνεται πάντα, ἃ δὴ φαμὲν εἶναι οὐκ ὀρθῶς προσαγορεύοντες. Ἔστι μὲν γὰρ οὐδέποτε οὐδὲν, ἀεὶ δὲ γίγνεται· καὶ p. 43. περὶ τούτου πάντες ἑξῆς οἱ σοφοὶ, πλὴν Παρμενίδου, [c]ξυμφέρονται, Πρωταγόρας τε καὶ Ἡράκλειτος καὶ Ἐμπεδοκλῆς καὶ τῶν ποιητῶν οἱ ἄκροι τῆς ποιήσεως ἑκατέρας, κωμῳδίας μὲν Ἐπίχαρμος, τραγῳδίας δὲ Ὅμηρος, εἰπὼν,

Ὠκεανόν τε θεῶν γένεσιν καὶ μητέρα Τηθύν·

πάντα εἴρηκεν ἔγγονα ῥοῆς τε καὶ κινήσεως. [d]Ἦ δοκεῖ τοῦτο λέγειν; Ἔμοιγε. Τίς οὖν ἂν ἔτι πρός γε τοσοῦτον στρατόπεδον καὶ στρατηγὸν Ὅμηρον δύναιτο ἀμφισβητήσας, [e]μὴ ὡς καταγέλαστος γενέσθαι; Οὐ ῥᾴδιον, ὦ Σώκρατες. Οὐ ῥᾴδιον, ὦ Θεαίτητε, ἐπεὶ καὶ τάδε τῷ λόγῳ σημεῖα ἱκανὰ, ὅτι τὸ μὲν εἶναι δοκοῦν καὶ τὸ γίγνεσθαι κίνησις παρέχει, τὸ δὲ μὴ εἶναι καὶ [f]ἀπόλλυσθαι, ἡσυχία· τὸ γὰρ θερμόν τε καὶ πῦρ, ὃ δὴ καὶ τἆλλα γεννᾷ καὶ ἐπιτροπεύει, αὐτὸ γεννᾶται [g]ἐκ φορᾶς καὶ τρίψεως· [h]τοῦτο δὲ ἡ κίνησις. Ἦ οὐχ αὗται γενέσεις πυρός; Αὗται μὲν οὖν. Καὶ μὴν τό γε τῶν ζώων γένος ἐκ τῶν αὐτῶν [i]τούτων φύεται. Πῶς δ᾽ οὔ; Τί δέ; ἡ τῶν σωμάτων ἕξις, οὐχ ὑπὸ ἡσυχίας μὲν καὶ [k]ἀργίας διόλλυται, ὑπὸ γυμνασίων δὲ καὶ κινήσεως ἐπὶ τὸ πολὺ σώζεται; Ναί. Ἡ δ᾽ ἐν ψυχῇ ἕξις, οὐχ ὑπὸ μαθήσεως μὲν καὶ μελέτης κινήσεων ὄντων [l]κτᾶται μαθή-

[b] ὁποίου] ὁποιονοῦν A.
[c] συμφέρονται] ξυμφέρονται A.
[d] ἤν̈ (sic) δοκεῖ τ. λ. ἕ. accesserunt ex A.
[e] μὴ] μὴ ὡς A.
[f] ἀπολεῖσθαι] ἀπόλλυσθαι A.
[g] ἐκ φορᾶς] ἐκ φθορᾶς A. in textu ἐκ φορᾶς marg. ἡ ante κίνησις om. marg.
[h] τοῦτο δὲ κ. A. ex quo accesserunt ἢ οὐχ—μὲν οὖν.
[i] τούτων] τοῦτον A. ubi mox πῶς δ᾽ ἄν.
[k] ἀργιδίας] ἀργίας A.
[l] κατά τε] κτᾶται A.

ματα καὶ σώζεται καὶ γίγνεται βελτίων· ὑπὸ δὲ ἡσυχίας ἀμελετησίας τε καὶ [m] ἀμαθίας οὔσης, οὔτε τι μανθάνει, [n] ἅ τε ἂν μάθῃ ἐπιλανθάνεται; Καὶ μάλα. [o] Τὸ μὲν ἄρα ἀγαθὸν κίνησις κατά τε ψυχὴν καὶ κατὰ τὸ σῶμα, τὸ δὲ τοὐναντίον. Ἔοικεν. [p] Ἔτι οὖν σοι λέγω νηνεμίας τε καὶ [q] γαλήνας καὶ ὅσα τοιαῦτα, ὅτι αἱ μὲν ἡσυχίαι σήπουσι καὶ [r] ἀπολλύουσι, τὰ δ' ἕτερα σώζει· καὶ ἐπὶ τούτοις τὸν κολοφῶνα ἀναγκάζω προβιβάζων τὴν χρυσῆν σειρὰν, ὡς οὐδὲν ἄλλο ἢ τὸν ἥλιον Ὅμηρος λέγει, καὶ δηλοῖ, ὅτι ἕως μὲν ἂν ᾖ περιφορὰ ἡ κινουμένη, καὶ ὁ ἥλιος, πάντα ἐστὶ καὶ σώζεται ἐν θεοῖς τε καὶ [s] ἐν ἀνθρώποις· εἰ δὲ σταίη τοῦτο ὥσπερ [t] δεθὲν, πάντα χρήματ' ἂν διαφθαρείη, καὶ γένοιτ' ἂν τὸ λεγόμενον τὰ ἄνω κάτω πάντα.

Κεφ. κ'.

ΠΕΡΙ ΓΕΝΕΣΕΩΣ ΚΑΙ ΦΘΟΡΑΣ.

1

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ καὶ ΜΕΛΙΣΣΟΣ ἀνῄρουν γένεσιν καὶ φθορὰν, διὰ τὸ νομίζειν τὸ πᾶν ἀκίνητον.

[a] ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ φησιν ὅτι πάντα χωρεῖ, καὶ οὐδὲν μένει· καὶ ποταμοῦ ῥοῇ [b] ἀπεικάζων τὰ ὄντα, λέγει ὡς δὶς εἰς τὸν αὐτὸν ποταμὸν οὐκ ἂν [c] ἐμβαίης.

[m] ἀμαθίας] ἀμαθείας A.

[n] ἅτε—ἐπιλανθάνεται] οὔτε—ἐπιλανθάνηται A.

[o] Τῷ] τὸ A. Qui mox tamen τῷ. Mox dedi ἔοικεν pro ἐοικέναι.

[p] Τι] ἔτι A.

[q] γαλήνας] γαλήνης A.

[r] ἀπολλῦσι] ἀπολλύουσι A.

[s] ἐν addit A.

[t] δεθὲν] δοθὲν A.

1.

[a] Desumta sunt hæc Heraclitea ex Plat. Cratyl. Op. vol. I. p. 402. λέγει που Ἡράκλειτος ὅτι πάντα χωρεῖ καὶ οὐδὲν μένει· καὶ ποταμοῦ ῥοῇ ἀπεικάζων τὰ ὄντα, λέγει ὡς δὶς ἐς τὸν αὐτὸν ποταμὸν οὐκ ἂν ἐμβαίης. Idem alii scriptores quorum loca collegerunt interpretes ad Diog. Laert. IX. s. 8. HEEREN.

[b] ἀπεικάζειν τὰ] ἀπεικάζοντα A.

[c] ἐμβαίης] ἐμβαλησ (αί superscr.) A. αί a p. m. ut videtur.

[d]ΠΛΑΤΩΝ φθαρτὸν μὲν τὸν κόσμον, ὅσον ἐπὶ τῇ φύσει,
[414] αἰσθητὸν γὰρ εἶναι, διότι καὶ σωματικόν, οὐ μὴν φθαρησό-
μενόν γε προνοίᾳ καὶ συνοχῇ θεοῦ.

ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ, ʼΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ, ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ, ʼΕΠΙΚΟΥΡΟΣ, καὶ πάντες ὅσοι κατὰ συναθροισμὸν τῶν λεπτομερῶν σωμάτων κοσμοποιοῦσι, συγκρίσεις μὲν καὶ διακρίσεις [e] εἰσάγουσι, γενέσεις δὲ [f] καὶ φθορὰς οὐ κυρίως. [g]Οὐ γὰρ κατὰ τὸ ποιὸν ἐξ ἀλλοιώσεως, κατὰ δὲ τὸ ποσὸν ἐκ συναθροισμοῦ ταύτας γίγνεσθαι.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ καὶ πάντες ὅσοι παθητὴν τὴν ὕλην [h]ὑποτίθενται, κυρίως γενέσεις καὶ φθορὰς γίγνεσθαι· ἐκ γὰρ ἀλλοιώσεως τῶν στοιχείων, καὶ τροπῆς, καὶ ἀναλύσεως [[i]γενέσεως καὶ φθορᾶς] παράθεσιν καὶ μίξιν, κρᾶσίν [k] τε καὶ σύγχυσιν γίγνεσθαι.

[l]ΖΗΝΩΝΙ [m]καὶ ΚΛΕΑΝΘΕΙ καὶ ΧΡΥΣΙΠΠΩΙ ἀρέ-
σκει τὴν οὐσίαν μεταβάλλειν, οἷον εἰς [n] σπέρμα, [o] εἰς τὸ p. 44.
πῦρ, καὶ πάλιν ἐκ τούτου τοιαύτην ἀποτελεῖσθαι τὴν δια-
κόσμησιν, οἵα πρότερον ἦν.

ΠΑΝΑΙΤΙΟΣ πιθανωτέραν εἶναι [p] νομίζει καὶ μᾶλλον
[416] ἀρέσκουσαν αὐτῷ τὴν ἀϊδιότητα τοῦ κόσμου, ἢ τὴν τῶν ὅλων
εἰς πῦρ μεταβολήν.

[d] Respicere videtur ad ea quæ Plato disputat in Timæo Op. III. p. 37. HEEREN.

[e] εἰσάγουσι revocavi ex Plutarcho et Galeno pro ἄγουσι. Perierat εἰς ob præcedentem terminationem. Mox pro κυρίως ap. Galenum οἰκείως. HEEREN.

[f] καὶ φθορὰς] ἢ φθορὰς V. A.

[g] Paulo aliter Galen. οὐ γὰρ κατὰ ποιὰν ἀλλοίωσιν, ἀλλὰ κατὰ παράθεσιν καὶ συναθροισμὸν γίνεσθαι τὰ πάντα νομίζουσι. HEEREN.

[h] ὑποτίθενται] ὑποτίθεται A.

[i] Verba γενέσεως καὶ φθορᾶς, quæ nullum commodum sensum præbent, ex glossemate orta esse existimo, quo quis præcedentia τροπῆς κ. ἀναλύσεως explicare voluit, adeoque ea uncinis inclusi. Iis ejectis sensus optime procedit; cf. supra c. XVII. *de mixtione* princ. HEEREN.

[k] τε ante καὶ deest V.

[l] Ζήνωνι καὶ] Ζήνωνος A.

[m] καὶ ante Κλεανθ. deest V. A.

[n] σπέρμα] σπέρματα V. sic.

[o] εἰς addidit Heerenius.

[p] νομίζει] νομίζειν A. φησὶ malit Lynden. de Panætio p. 69.

[q]ʼΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ τὸ ὑπὸ τὴν σελήνην μέρος τοῦ κόσμου παθητικὸν ἀπεφαίνετο, ἐν ᾧ καὶ τὰ περίγεια [r]κηραίνεται. [[s]Ξενοφάνης, Παρμενίδης,] ΜΕΛΙΣΣΟΣ, ἀγέννητον εἶναι, ἀΐδιον καὶ ἄφθαρτον τὸν κόσμον. [[t]Καὶ] Οἱ φάμενοι δὲ τὴν διακόσμησιν [u]αἰώνιον ὑπάρχειν, περιοδευτικοὺς εἶναί φασι χρόνους, καθʼ οὓς [x]κατὰ ταυτὰ καὶ ὡσαύτως γίγνεσθαι πάντα, καὶ τὴν αὐτοῦ διασώζεσθαι τοῦ κόσμου διάταξίν τε καὶ διακόσμησιν.

ʼΑΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ, ʼΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ, ʼΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ, ʼΑΡΧΕΛΑΟΣ, ΔΙΟΓΕΝΗΣ, [y]ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ φθαρτὸν τὸν κόσμον, καὶ οἱ Στωϊκοὶ φθαρτὸν τὸν κοσμὸν [z]κατʼ ἐκπύρωσιν δέ.

ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ τὸν κόσμον φθείρεσθαι κατὰ τὴν [a]ἀντεπικράτειαν τοῦ νείκους καὶ τῆς φιλίας.

[418] ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ φθείρεσθαι τὸν κόσμον, τοῦ μείζονος τὸν [b]μικρότερον νικῶντος.

[c]ʼΕΠΙΚΟΥΡΟΣ πλείστοις τρόποις τὸν κόσμον φθείρεσθαι, καὶ γὰρ ὡς ζῶον, καὶ ὡς φυτὸν, καὶ πολλαχῶς.

q Arist. de Mundo c. 11. Μετὰ δὲ τὴν αἰθέριον καὶ θείαν φύσιν, ἥντινα τεταγμένην ἀποφαίνομεν, ἔτι δὲ ἄτρεπτόν τε καὶ ἀπαθῆ, συνεχής ἐστιν ἡ διʼ ὅλων παθητή τε καὶ τρεπτὴ, καὶ τὸ σύμπαν εἰπεῖν φθαρτή τε καὶ ἐπίκηρος.

r Post κηραίνεται spat. Tunc: Μέλισσος δὲ, γεννητὸν εἶναι A.

s Xenophanis et Parmenidis nomina desunt in codd. V. A. E. in contextu; in cod. tamen V. marg. adscripta sunt. Immerito autem illic exciderunt, constat enim placitum de mundi vel Unius æternitate commune fuisse Eleaticis philosophis. cf. Bruck. I. p. 1148. 1160. HEEREN.

t [Καὶ] quod sensum turbat, ejiciendum videtur. HEEREN.

u αἰώνιον] ἀΐδιον V.

x καὶ ταῦτα] κατὰ ταῦτα V. A.

y Λεύκιππος] Λεύχιππος δὲ A. ubi desunt τὸν κόσμον—Δημόκριτος φθείρεσθαι.

z κατὰ πύρωσιν] κατʼ ἐκπύρωσιν V. ib. κατʼ ἐκπύρωσιν rescripsi pro κατὰ πύρωσιν. Celeberrimum postea fuit illud Stoicorum dogma de exustione vel conflagratione mundi, quam ἐκπύρωσιν vocabant. cf. Plut. adv. Stoic. Op. II. p. 1075. HEEREN.

a ἐπικράτειαν] ἀντεπικράτειαν V.

b μακροτ.] μικροτ. A.

c Quod nempe hæc omnia, quæ sunt partes mundi, atomis constant, dissolutione et composi-

[d] ΦΙΛΟΛΑΟΣ διττὴν εἶναι τὴν φθορὰν τοῦ κόσμου, [e] τότε μὲν ἐξ οὐρανοῦ πυρὸς ῥυέντος, τότε δὲ ἐξ ὕδατος σεληνιακοῦ περιστροφῇ τοῦ [f] ἀέρος ἀποχυθέντος.

2 Φιλολάου Πυθαγορίου ἐκ τοῦ Περὶ Ψυχῆς.

Φιλόλαος ἄφθαρτον τὸν κόσμον εἶναι. Λέγει γοῦν οὕτως ἐν τῷ Περὶ Ψυχῆς·

[420] Παρ' ὃ καὶ ἄφθαρτος καὶ [a] ἀκαταπόνατος διαμένει τὸν ἄπειρον αἰῶνα· οὔτε γὰρ ἔντοσθεν ἄλλα τις αἰτία δυναμικωτέρα [b] αὐτᾶς εὑρεθήσεται, οὔτ' ἔκτοσθεν, φθεῖραι αὐτὸν [c] δυναμένα· ἀλλ' ἦν [d] ὅδε ὁ κόσμος ἐξ αἰῶνος, καὶ εἰς αἰῶνα [e] διαμένει, εἷς ὑπὸ ἑνὸς τῶ [f] συγγενέω καὶ κρατίστω καὶ [g] ἀνυπερθέτω κυβερνώμενος· ἔχει δὲ [h] καὶ τὰν ἀρχὰν τᾶς κινάσιος τε καὶ μεταβολᾶς ὁ κόσμος εἷς ἐών, καὶ συνεχής, καὶ [i] φύσει διαπνεόμενος, καὶ [k] περιαγεόμενος ἐξ ἀρχιδίου· καὶ τὸ μὲν ἀμετάβλατον αὐτοῦ, τὸ δὲ μεταβάλλον ἐστί· καὶ τὸ μὲν ἀμετάβολον ἀπὸ τᾶς τὸ ὅλον περιεχούσας ψυχᾶς μέχρι σελάνας [l] περαιοῦται, τὸ δὲ μεταβάλλον ἀπὸ

tione perpetuis mutationibus obnoxiis. HEEREN.

[d] Φιλόλαος add. ὁ Στωϊκὸς A. E.

ib. Philolai hoc placitum legitur quoque ap. Plut. de Pl. Ph. II. 5. Verba ipsa ap. Plut. l. c. et in codd. V. A. melius servata sunt quam apud Cant. Legitur ibi: Φιλόλαος διττὴν εἶναι τὴν φθορὰν τοῦ κόσμου, τὸ μὲν ἐξ ὑγροῦ πωρὸς ῥυέντος, τότε δὲ ἐξ ὕδατος σεληνιακοῦ περιστροφῇ τοῦ ἀέρος ῥυέντος. In quibus τότε μὲν pro τὸ μὲν suppeditat cod. A. postulat illud vero sequens τότε δέ. Pro ὑγροῦ ex Plut. rescripsi οὐρανοῦ; pro πωρὸς autem recte codd. V. A. E. habent πυρός. Mox pro τοῦ ἀστέρος bene codd. V. A. E. cum Plut. τοῦ ἀέρος; denique ἀποχυθέντος ex Plut. rescripsi pro ῥυέντος, oscitantia librarii temere ex superioribus repetito. HEEREN.

[e] τὸ μὲν] τότε μὲν A. P.

[f] ἀστέρος] ἀέρος A. E.

2.

[a] ἀκαταπόνατος] οὐκ ἀταπείνωτος V. A.

[b] αὐτᾶς] αὐτὰς V. A.

[c] δυνάμενα] δυναμένου V. A.

[d] ὅδε ὁ] ᾧδε ὁ etc. V.

[e] διαμένειν] διαμένων V. A.

[f] συγγενέω] συγκενέω A.

[g] ἀνυπερθέτω] ἀνυπερθάτω Heeren. Mox κυβερνόμενος A. Infra κινήσεως Cant. κινήσιος A.

[h] καὶ ante τὰν deest V. A.

[i] φύσις συνδιαπνεομ.] φύσει διαπνεόμενος V. A.

[k] περιαγόμενος] περιαγεόμενος V. A.

[l] περαιοῦται] περαιοῦνται A. σελήνας A. Cant. et inf.

τᾶς σελάνας μέχρι τᾶς γᾶς· ἐπεὶ δέ γε καὶ τὸ κινέον ἐξ αἰῶνος εἰς αἰῶνα περιπολεῖ, τὸ δὲ κινεόμενον ὡς τὸ κινέον ἄγει οὕτω [m] διατίθεσθαι, ἀνάγκα τὸ μὲν ἀεικίνατον, τὸ δὲ ἀειπαθὲς [n] εἶμεν, καὶ τὸ μὲν νῶ καὶ ψυχᾶς [o] ἀνάκωμα πᾶν,
[422] τὸ δὲ γενέσιος καὶ μεταβολᾶς· καὶ τὸ μὲν πρᾶτόν τᾳ δυνάμει καὶ ὑπερέχον, τὸ δ' ὕστερον καὶ καθυπερεχόμενον· τὸ δ' ἐξ ἀμφοτέρων τούτων, τοῦ μὲν ἀεὶ θέοντος, [p] θείου, τοῦ δὲ ἀεὶ μεταβάλλοντος, γεννατοῦ, κόσμος. Διὸ καὶ καλῶς ἔχειν ἔλεγε κόσμον ἦμεν ἐνέργειαν ἀΐδιον θεῶ τε καὶ γενέσιος κατὰ συνακολουθίαν τᾶς [q] μεταβλαστικᾶς φύσιος. Καὶ ὁ μὲν ἐς ἀεὶ διαμένει κατὰ τὸ αὐτὸ καὶ ὡσαύτως [r] ἔχων, τὰ δὲ καὶ γινόμενα καὶ φθειρόμενα πολλά· [s] καὶ τὰ μὲν [t] φθαρέντα κατὰ φύσεις καὶ [u] μορφὰς σώζεται, [x] τᾷ [y] γονᾷ πάλιν τὰν αὐτὰν μορφὰν ἀποκαθίσταντα τῷ [z] γεννήσαντι πατέρι καὶ δημιουργῷ.

m διατίθεσθαι] διατίθεται Heerenius.

n εἶμεν] ἦμεν A.

o ἀνάκωμα, vox obscura ac apud neminem, quod sciam, obvia, cujus nec vim nec originem assequor. HEEREN. Mox τᾷ Boeck. pro τε.

p Θεῖος et γεννατὸς κόσμος edidi pro θείου et γεννατοῦ κόσμου. Habent enim hi genitivi nihil ad quod referri possint, atque ex incuria librarii orti esse videntur, qui cum verbis proxime antecedentibus jungendos eos esse putabat. HEEREN.

q μεταβλατικὰς] -στικᾶς V. A.

r ἔχων] ἔχον A.

s Exstat corrupte ap. Cant. καὶ τὰ μὲν φθορᾷ ὄντα καὶ φύσει, καὶ μορφὰς σώζεται, καὶ γοῦν πάλιν etc. Sensus quidem loci apertus est; vult enim scriptor: *eorum quae natura sua intereunt, genera tamen formasque servari, ex semine iterum propullulantes*; sed verba passim depravata sunt. Pro φθορᾷ ὄντα codd. V. A. habent φθορὰ ὄντα, quo nihil proficimus. Rescripsi φθαρέντα, *ea quæ interierunt*, κατὰ φύσεις καὶ μορφὰς σώζεται, *natura tamen et forma servantur*. Pro καὶ γοῦν codd. V. A. P. καὶ γονὴ, pro quo vel legendum est καὶ ἐκ γονᾶς—ἀποκαθίσταντι, vel τᾷ γονᾷ retento ἀποκαθίσταντα, quod recepi. *Res quæ intereunt semine tamen suo alias iterum producunt, eandem naturam formamque servantes*. HEEREN.

t φθορᾷ] φθορὰ V. A.

u μορφὰς] μορφᾶς V.

x τᾷ γονᾷ] καὶ γονὴ A.

y γοῦν] γονὴ V. A. P.

z γεννήσαντι] γεννόσαντι A.

3 [a]Ὀκέλλου.

Ὄκελλος ἀΐδιον τὸν κόσμον· ὡδὶ γὰρ [b]ἐν τοῖς [c]Περὶ τῆς
τοῦ παντὸς [d]Φύσιος λέγει·

[424] [e]Ἔτι δὲ καὶ τὸ ἀτελεύτατον καὶ τῶ σχήματος καὶ τᾶς
[f]κινάσιος, καὶ τῶ χρόνω καὶ τᾶς [g]ὠσίας τοῦτο πιστοῦται
διότι ἀγέννατος ὁ κόσμος, καὶ ἄφθαρτος. Ἅ τε γὰρ τῶ
σχήματος [h]ἰδέα κύκλος, [i]οὗτος δὲ πάντοθεν ἴσος καὶ
ὅμοιος· διόπερ ἄναρχος καὶ ἀτελεύτατος· ἅ τε τᾶς κινάσιος
κατὰ κύκλον, αὕτα δὲ ἀπαράβατος καὶ ἀδιέξοδος· ὅ τε
χρόνος ἄπειρος ἐν ᾧπερ ἁ κίνασις, διὰ τὸ μήτε ἀρχὰν εἰλη- p. 45.
φέναι τὸ κινούμενον, μήτε τελευτὰν [k]λαμψεῖσθαι· [l]ἅ γε
μὰν οὐσία τῶν πραγμάτων [m]ἀνέκβατος καὶ ἀμετάβλατος,
διὰ τὸ μήτε ἀπὸ τῶ χείρονος εἰς τὸ βέλτιον, μήτ' ἀπὸ τῶ
βελτίονος ἐπὶ τὸ χεῖρον [n]πεφυκέναι [o]μεταβάλλεν.

Ἐπεὶ δ' ἐν τῷ [p]παντὶ τὸ μὲν γένεσις, τὸ δὲ αἰτία γενέ-
σιος, καὶ γένεσις μὲν ὅπου μεταβολὰ καὶ ἔκβασις τῶ
[q]ὑποκειμένω, αἰτία δὲ γενέσιος, ὅπου ταυτότας καὶ ὑπό-

3.

a Ὀκέλλου] Ἠκέλλου A. et sic infra.

b ἐν τῆς] ἐν τοῖς V.

c Περὶ τοῦ] περὶ τῆς τοῦ V. A.

d Φύσεως] φύσιος A. Seqq. communi dialecto scripta leguntur in Galei Opusc. Mythol. p. 514. Et in A. reperio ἀτελεύτητος, κίνησις, οὐσία, τοῦ βελτίονος μεταβάλλειν et fr. seq. ἐναντιώσεις.

e Præmittitur apud Gal. Ἔτι δὲ τὸ ἄναρχον καὶ ἀτελεύτητον, quod ap. Stob. excidisse videtur librariorum negligentia. HEEREN.

f κιναοῦς] κινάσιος V. A. E.

g ὠσίας] ὠδίας V. A.

h ἰδέα] ἰδία A.

i οὗτος δὲ] οὕτω καὶ A.

k λάμψειν] λάμψεις ὃ δὴ V. A. P. λαμψεῖσθαι corr. Valckenærius ad Herodot. III. 42.

l ἅ τε] ἄγε V. A.

m ἀνεκβάκτος] ἀνέκβατος A. V.

n πεφυκέναι, quod ordo verborum secundum antecedentia postulat, bene legitur ap. Gal. pro πέφυκεν ap. Stob. HEEREN.

o μεταβάλλεν] –λειν et cont. Ἐπειδ' V. A. E.

p περὶ παντὶ] παντὶ A. V.

q Post ὑποκειμένῳ add. et l. αἰτία δὲ γενέσιος, ὅπου ταυτότας (ταυτό τε P.) καὶ ὑπόστασις τῷ ὑποκειμένῳ φανερὸν ποτὶ μὲν τὰν αἰτίαν τὰν γενέσιος τότε πάσχειν καὶ τὸ κινεῖσθαι. Πράτως etc. V. A.

στασις τῷ ὑποκειμένῳ, φανερὸν, [r]περὶ μὲν τὰν αἰτίαν τὰν γενέσιος τό τε [s]ποιεῖν καὶ κινεῖν ἐστὶ, περὶ δὲ τὸ δεχόμενον τὰν γένεσιν τό τε πάσχειν καὶ τὸ κινεῖσθαι.

4 [a]Πράτως γὰρ ὕλα, τὸ πανδεχὲς, κοινὸν γὰρ ὑπόκειται [426] πᾶσιν, [b]ὥσπερ [c]πρᾶτον μὲν [d]τὸ δυνάμει σῶμα [e]αἰσθητὸν, [f]ἀρχά· δεύτερον δὲ αἱ ἐναντιώσιες, [g]οἷον θερμότας [h]καὶ ψυχρότας, καὶ ὑγρότας καὶ ξηρότας· τρίτον δὲ πῦρ, καὶ ὕδωρ, [i]καὶ γᾶ, καὶ ἀὴρ, ταῦτα γὰρ μεταβάλλοντι ἐς ἄλλαλα, αἱ δὲ ἐναντιώσιες [k]οὐ μεταβάλλοντι.

5 [a]Παντελὴς δὲ φθορὰ τᾶς περὶ τὰν γᾶν διακοσμάσιος οὔτε γέγονεν οὔτε ἔσται πόκα. Διὸ καὶ τοῖς [b]λεγόντεσσι τὰν τᾶς Ἑλλανικᾶς ἱστορίας ἀρχὰν ἀπὸ [c]Ἰνάχω ἦμεν τῶ Ἀργείω ποθεκτέον οὕτως, ὡς οὐκ ἀπό τινος ἀρχᾶς πρώτας, ἀλλὰ τὰς γενομένας μεταβολᾶς [d]κατ' αὐτάν. Πολλάκις

r περὶ] ποτὶ A. ὅτι περὶ Gal.

s ποιεῖν—τότε om. A.

4.

a Πράτως γὰρ] Apud Galeum p. 519.

b Legitur ap. Gal. ὥστε πρῶτον τὸ δυνάμει σῶμα αἰσθητὸν, ἀρχή. Quod ille vertit: *ut initium sit primum corpus, quod sensuum potestate percipi potest*; quo tamen admisso pro τὸ saltem legendum foret τᾷ, nisi verborum ordinem misere distortum esse a scriptore dicere velis. Præfero tamen lectionem Stobæi ὥσπερ, etsi vel sic pro τὸ rescribendum erat τᾷ. *Materiam omnibus substratam esse, ut primum corpus, quod sensu percipi possit.* Sic eam supra vocaverat: πρῶτον τὸ πρὸς ἁφὴν ὑφιζόμενον σῶμα πᾶσι τοῖς εἰς γένεσιν ἐρχομένοις. p. 18. HEEREN.

c πρῶτον] πρᾶτον V.

d τὸ δυνάμει] τᾷ δ. Heeren.

e αἰσθητὸν] αἰσθητὴν A.

f ἀρχὰν] ἀρχὰ V. ἀρχὴ Gal.

g Ap. Gal. legitur οἷον θερμότητος καὶ ψυχρότητος, καὶ ὑγρότητος καὶ ξηρότητος. HEEREN.

h καὶ ψυχρότας add. καὶ ξηρότας V. ψυχρότας καὶ ὑγρότας καὶ ξηρότας A. P.

i καὶ γᾶ des. A.

k οὐ ante μεταβάλλοντι, sensu flagitante, addidi ex Gal. HEEREN.

5.

a Παντελὴς] Apud Galeum p. 530.

b λέγοντες] Hinc λεγόντεσσι em. Koen. ad Gregor. D. D. c. CXLV. λέγουσι Heeren. ex Gal.

c Ἰνάχω] Ἰνάχω ἦμεν τῶ Ἀργείῳ ποθεκτέον οὕτως V. A.

d καὶ ante κατ' deest V. A. Tum αὐτὸν sc. *Inachi ævo*. Jacobs.

γὰρ [e]ἤδη καὶ γέγονε καὶ ἐσεῖται βάρβαρος ἁ Ἕλλας, [f]οὐχ ὑπ' [g]ἀνθρώπων μόνον γιγνομένα [h]μετανάστατος, ἀλλὰ καὶ
[428] ὑπ' αὐτᾶς τᾶς φύσιος, οὔτε μείζονος οὔτε μείονος αὐτᾶς [i]γινομένας, ἀλλὰ καινοτέρας ἀεὶ καὶ [k]ποθ' ἁμὲ ἀρχὰς λαμβανούσας. Περὶ μὲν ὦν τοῦ ὅλου καὶ παντὸς, [l]ἔτι δὲ γενέσιος καὶ [m]ἀφθαρσίας [n]τᾶς ἐν αὐτᾷ γιγνομένας, ὡς τ' ἔχει, ὥς θ' ἕξει τὸν ἅπαντα αἰῶνα, τᾶς μὲν ἀεικινάτω φύσιος ἐάσας, τᾶς δ' ἀειπαθέος, [o]καὶ τᾶς μὲν ἀεὶ κυβερνώσας, τᾶς δὲ [p]κυβερνεομένας, ἄνω εἴρηταί μοι περὶ τούτων.

6

ἈΡΙΣΤΑΙΩΝ ἔφησεν ἄφθαρτον εἶναι τὸν κόσμον, λέγει γοῦν ἐν τῷ Περὶ Ἁρμονίας οὕτως·

[a]Ἐπεὶ δὲ ἀρχὰ, ἅτε δὴ οὖσα [b]ἀρχὰ, πρὸ παντός τέ

[e] ἤδει] ἤδη A. om. Gal.

[f] οὖ ante οὐχ deest V. A.

[g] ἀνθρώπων] ἀνθρώπῳ V.

[h] μετανάστασις] μεταστάσεσιν V. μετανάστατος Gal.

[i] γινομένας] γενομένας A.

[k] πόθεμε] πρὸς ἡμᾶς Gal. ποτ' ἐμὲ Heeren. Scribendum erat ποθ' ἁμέ.

[l] ἔτι δὲ καὶ Galeus.

[m] ἀφθαρσίας] φθορᾶς Gal.

[n] τᾶς ἐν] τὰ ἐν V. A.

[o] καὶ addidi ex Galeo. HEEREN.

[p] κυβερνεομένας] κυβερνεωμένας A. Mox ἱκανῶς Gal. pro ἄνω.

6.

Pergit adhuc Stob. in exscribendis Pythagoricorum scriptorum locis, exhibens nobis locum insignem ex Aristæonis libro de Harmonia. Pertinet autem h. l. ad ea, in quibus corrumpendis et lacerandis certasse videntur librarii; ita enim scatet ulceribus, ut vix sani aliquid in eo relictum sit. Passim quidem medelam afferunt codd. attamen in plurimis ipsi medicam manum afferre ei conati sumus, quod qua fortuna factum sit lectoribus, harum rerum peritis, dijudicandum relinquimus. Id autem agit Aristæon hoc loco, ut ostendat cum principium mundi, seu Deus æternus sit, ipsum quoque mundum mundique ordinem ab eo institutum (τὴν διακόσμησιν) æternum esse debere. Fieri enim non posse, ut Deus unquam initium fecerit producendi mundum, cum illud sine labore, qui in Deum cadere non possit, factum esse nequiverit. HEEREN.

[a] Legitur ap. Cant. [et fere A.] Ἐπεὶ δὲ ἀρχὰ, ἅτε δὴ οὖσα ἀρχὰς, (ἀρχᾶς A.) πρὸ παντὸς τέ ἐστι καὶ ἀγέννητος καὶ αὐτοτελὴς, οὔτε γὰρ εἰμὲ μεθ' ἓξ θερόντι εἷς (ὡς A.) ὑπάρχοι ἂν ἔτι πρὸ παντὸς, οὔτε γινόμενον πόκα καὶ ἔκ τινος, οὔτε γὰρ ἀγέννητος ἂν εἴη ἔτι. In primis verbis pro ἀρχὰς legendum esse ἀρχὰ, Cant.

[430] ἐστι καὶ ἀγέννατος καὶ αὐτοτελὴς, (οὔτε γὰρ, [c] εἰ μεθ' ἅτερόν τι ἦς ὑπάρχοι ἂν ἔτι πρὸ παντὸς,) οὔτε γινόμενος πόκα καὶ ἔκ τινος (οὔτε γὰρ ἀγέννητος ἂν εἴη ἔτι), [d] ἀλλὰ μὰν ἀρχά τε καὶ αἰτία τῶν γενομένων, (οὔτε γὰρ αὐτοτελὴς, ἑτέρῳ γάρ τινός ποτε δεηθήσεται τῶ σώζοντος [e] αὐτὰν καὶ κινάσαντος) δῆλον δὴ, ὡς αὐτὰ καθ' αὐτὰν ἁ ἀρχὰ [f] ἀγέννατός τέ ἐστι, καὶ ἀΐδιος, καὶ αἰτία γενέσιός τε καὶ [g] κινάσιος. Καὶ κινοῦσα πάντα αὐτὰ ἐξ αὐτᾶς [h] φύσις ἐστὶ, καὶ αὐτοτελέα παρεχομένη τἄλλα αὐτὰ ἐξ αὐτᾶς αὐτοτελής ἐστι. Εἰκόνες δὲ καὶ [i] ὁμοιώσιες τὰς ἀρχᾶς ταύτας καὶ ἐν τοῖς φύσει [k] γινομένοις, καὶ ἐν τοῖς κατὰ τέχναν. [l] Ἐπεὶ δὲ τὸ ἀθάνατον τὸ ἀκάματον, [τὸ δὲ ἀκάματον τὸ μὴ κάμνον,] ὁ δὲ θεὸς
[432] τοιοῦτος, [m] κινέων τε τὸ ὅλον καὶ τὸ πᾶν, φανερὸν, ὡς ἀΐδιος

jam vidit, vertens: *Quoniam principium ut principium ante omnia est.* Ἀρχᾶς tamen omnes habent codd. punctis tamen, corruptelæ signis, in Esc. superscriptis. Cæterum tria hic ponit scriptor, principium esse debere ante omnia, sine ortu, et per se subsistens, quæ singula probant proxime sequentia. Verba οὔτε γὰρ εἰμὲ μεθ' ἓξ θέροντι εἷς (ὡς A.) ὑπάρχοι ἂν corruptissima esse, nemo non videt. Rescripsi, antiquæ lectionis vestigiis insistens, οὔτε γὰρ εἰ μὲν μεθ' ἅτερόν τι ἦς, ὑπάρχοι ἂν ἔτι πρὸ παντὸς, *si post aliud esset, non foret primum.* Reliqua jam ante me sanavit Koen. ad Corinth. de Dialectis p. 118. HEEREN.

[b] ἀρχὰς] ἀρχᾶς V. A.

[c] εἰμὲ] εἰ μὲν V. Mox γινόμενον A. Cant.

[d] οὔτε μὴν] ἀλλὰ μὰν Heerenius, qui et γενομένων pro γινομένων.

[e] αὐτὰ καὶ κινήσαντος] αὐτᾶ κ. κ. A. αὐτὰν καὶ κινάσαντος Heeren. qui mox δῆλον δὴ pro δῆλον δ'.

[f] ἀγέννητος] ἀγέννατος A.

[g] κινάσει κινοῦσα] κινάσιος, καὶ κινοῦσα πάντα etc. V. A.

[h] Pro φύσις mallem κίνασις; quatenus enim principium eo quod omnia movet φύσις dici possit, non assequor. HEEREN.

[i] ὁμοιώσιες] ὁμοιώσεις A. qui mox φύσι.

[k] γινομένοις] γενομένοις V.

[l] Corrupte legitur ap. Cant. [et fere A.] Ἐπεὶ δὲ τὸ ἀθάνατον τὸ ἀκάματον τὸ μὴ κάμνον ὁ θεὸς τοιοῦτος νέων τε τὸ ὅλον etc. Pro τὸ μὴ κάμνον cod. Par. bene τοῦτο δὲ τὸ μὴ κάμνον. Attamen verba hæc omnino glossema redolere, neminem non sentire arbitror; quare uncinis ea inclusi. In proximis ut nexus sententiarum constaret post ὁ addendum erat δέ. *Cum id quod immortale est, simul sine labore sit, hæc vero omnia competant Deo* etc. Corruptum νέων corrigunt codd. V. A. κινέων exhibentes. HEEREN.

[m] νέων] κινέων V. P. κινέον A.

ἂν εἴη ὁ κόσμος. Εἰ γὰρ ἀρχὰν λήψεται διακοσμάσιος, ἔκαμε πόκα τὸ κινέον αὐτὸ καὶ [n]ἀνέπαυσε διακοσμάσιος. Εἰ δέ γε [o]κάμνοι καὶ ἀμπαύοιτο τὸ κινέον, φθαρτὸν καὶ γεννατὸν ὑπάρχον, καὶ αὐτὸ πέρας ἕξει κινάσιος, καὶ τὸ ὅλον [p]δὲ καὶ τὸ πᾶν διακοσμάσιος· ὥστ' ἀνάγκα ἤτοι γένεσιν [q]ἀναιρεῖν, ἢ γεννᾶν [r]ἐκ τῶ μὴ ὄντος, ἢ τόνδε τὸν κόσμον [s]καταλείπεται ἀθάνατον καὶ ἀγήρατον εἶμεν. Λέγοιτο δὲ καὶ ἁρμονία [t]φύσιος, ὅτι πάντα κατὰ λόγον φύεται [u]τὸν ταύτας ποτ' ἀλλήλως, [x]καὶ ὡς ὁ τεχνίτας [y]ποτὶ τὰν τέχναν, [z]οὕτως θεὸς ποθ' ἁρμονίαν. Ἅ τε γὰρ τέχνα [a]ἐστὶ λόγος καὶ ἰδέα τῶν [b]γινομένων, καὶ φύσις. Τὸ [c]μὲν ὧν ἔργον [d]ἁμαρτάνεται ἐν τοῖς τεχνίταις, [e]ὅκα παραλλάξῃ p. 46.
τὸν τᾶς τέχνας λόγον· τὰ δὲ γινόμενα [f]φύσει φθείρεται, πηρὰ καὶ ἄναρθρα γινόμενα, ὅκα παραλλάξῃ τὸν τᾶς ἁρμονίας λόγον.

7 Ποσειδωνίου.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ δὲ [a]φθορὰς καὶ γενέσεις τέτταρας p. 37.

[n] ἀνέπαυσε rescripsi pro ἄμπαυσιν, postulat enim illud sequens ἀμπαύοιτο. HEEREN.
[o] κάμνον] κάμνοι Heeren.
[p] δὲ om. A.
[q] ἀναιρὲν] ἀναιρεῖν A. Cant.
[r] ἐκ τῶ] ἐν τῷ V. A.
[s] κατάλιπε] κατέλιπέτε A. Dedi καταλείπεται cum Valckenærio ad Orat. Chrysost. p. XXXII. et Euripid. Hippol. 370. Mox εἶναι A.
[t] φύσεως] φύσιος A.
[u] τὸ πάντας] τῶ ταύτας V. A.
[x] καὶ ὡς] καὶ add. Heeren.
[y] ποτὶ τὰν τέχναν] ποτὲ παντέχναν V. πόκα παντέχνας A.
[z] Verba οὕτως—τέχνα om. A.
[a] ἐστὶ] ἔτι V. ἔστι A.
[b] γενομένων] γινομένων Heeren.
[c] μὲν ὧν] ὧν addidit Heeren.
[d] ἁμαρτάν τι ἐν] ἁμαρτάνεται Heeren.
[e] ὅκα] καὶ ὄκκα A. ὄκα V. ὅταν Heeren.
[f] φύσει] φύσις A. Mox ὄκκα A.

7.

Sequitur hic ap. Cant. Posidonii de ortu et interitu sententia, quæ iisdem verbis jam supra a Stobæo exposita erat, c. XVII. [p. 37, 50. ed. Canter.] Eam tamen ad hoc caput potius pertinere ibi jam annotatum erat a Cant.; quare, ne idem bis exhiberemus, huc potius eam referre placuit. Leguntur tamen ex ea ap. Cant. hoc loco prima tantum verba usque ad λεγομένην κατάλυσιν. Corruptelæ quibus laborat, tum utriusque loci collatione, tum codd. ope maximam partem tolli possunt. HEEREN.

[a] φθορὰς] ὁ φθορεὺς V. A. h. l. δὲ φθορὰς supra A.

εἶναι [b]φησὶν, ἐκ τῶν ὄντων εἰς τὰ ὄντα γιγνομένας. Τὴν
[434] μὲν γὰρ ἐκ τῶν οὐκ ὄντων, [c]καὶ τὴν εἰς οὐκ ὄντα καθάπερ
εἴπομεν πρόσθεν, [d]ἀπέγνωσεν, ἀνύπαρκτον οὖσαν. Τῶν δὲ
εἰς ὄντα γιγνομένων μεταβολῶν, τὴν μὲν εἶναι κατὰ διαί-
ρεσιν, τὴν δὲ κατ᾽ ἀλλοίωσιν, τὴν δὲ κατὰ σύγχυσιν, τὴν δὲ
[e]ἐξ ὅλων λεγομένην [f]δὲ κατ᾽ ἀνάλυσιν. Τούτων δὲ τὴν κατ᾽
ἀλλοίωσιν περὶ τὴν οὐσίαν γίγνεσθαι, τὰς δὲ ἄλλας τρεῖς
περὶ τοὺς ποιοὺς λεγομένους, τοὺς ἐπὶ τῆς οὐσίας γιγνομέ-
νους, ἀκολούθως δὲ τούτοις καὶ τὰς γενέσεις [g]συμβαίνειν.
[h]Τὴν γὰρ οὐσίαν οὔτ᾽ αὔξεσθαι οὔτε μειοῦσθαι κατὰ πρόσ- p. 38.
θεσιν ἢ ἀφαίρεσιν, ἀλλὰ μόνον ἀλλοιοῦσθαι, καθάπερ ἐπ᾽
ἀριθμῶν καὶ μέτρων συμβαίνει. Ἐπὶ δὲ τῶν ἰδίως ποιῶν,
[436] οἷον καὶ Δίωνος καὶ Θέωνος, καὶ αὐξήσεις καὶ μειώσεις
γίνεσθαι. Διὸ καὶ παραμένειν τὴν ἑκάστου ποιότητα [i]ἀπὸ
τῆς γενέσεως μέχρι τῆς ἀναιρέσεως, ὡς ἐπὶ τῶν ἀναίρεσιν
δεχομένων ζώων καὶ φυτῶν, [ii]καὶ τῶν τούτοις παραπλησίων.
Ἐπὶ δὲ τῶν ἰδίως ποιῶν δύο μὲν εἶναί φησι τὰ δεκτικὰ
μόρια, τὸ μέν τι κατὰ τὴν τῆς οὐσίας ὑπόστασιν, τὸ δέ [k]τι

[b] φησὶν om. Heeren. φασὶν ἐν τῶν A. h. l.

[c] εἰς τὴν] καὶ τὴν V. A. καὶ τῶν A. supra.

[d] ἀπέγνωσεν] Sic Heeren. ἐπέγνωσαν supra p. 37, 52. Cant. ἀπέσωσαν h. l. A. Cant. εἴπομεν om. A. supra. Tum ὡς add. Heeren.

[e] Ad ἐξ ὅλων supplendum duco τῶν μερῶν, *solutio quæ omnes partes afficit.* Pro lectione a nobis publicata supra ap. Cant. corrupte exstat τῶν δὲ ἐξ ὅλων λεγομένων κ. α. Sed nostram lectionem habet et Cant. h. l. et Codd. V. A. utroque loco. HEEREN.

[f] κατ᾽ ἀνάλυσιν] δὲ κατάλυσιν A. h. l.

[g] συμβαίνει] συμβαίνειν V. A.

[h] In iis quæ hic sequuntur ap. Cant. ob particularum et defectum et corruptelas nexus sermonis desideratur, quem tamen ipse Cant. jam in versione sua restituit. Legitur apud eum τὴν δὲ οὐσίαν,— ἐπὶ τῶν ἰδέως ποιῶν pro τὴν γὰρ οὐσ. ἐπὶ δὲ τῶν ἰδίως π. Illud ἰδίως recte habet V. πρόσθεσιν autem, sensu jubente, dedi pro πρόθεσιν. HEEREN. καὶ συμβαίων ἐπὶ τῶν ἰδέως A. Infra μηώσεις A.

[i] Ante ἀπὸ male ap. Cant. leg. τὰ ex præcedenti verbo repetitum. Mox ὡς ante ἐπὶ, quod sensus flagitat, et quod ob terminationem præcedentis vocis exciderat, addidi de meo. HEEREN. Mox ἐπιδεχομένων A.

[ii] καὶ τῶν om. A. Mox δύο μὲν εἶναι φησὶ ed. Heeren. φασὶ δύο εἶναι A. Cant. Infra κατὰ τῆς οὐσίας καὶ ὑπόστασιν A.

[k] Vel τὶ supra erat delendum,

κατὰ τὴν τοῦ ποιοῦ. Τὸ γὰρ, ὡς πολλάκις λέγομεν, τὴν αὔξησιν καὶ τὴν μείωσιν ἐπιδέχεσθαι· μὴ εἶναί τε ταυτὸν τό τε ποιὸν ἰδίως, καὶ τὴν οὐσίαν [l]ἐξ ἧς ἐστι τοῦτο, μὴ μέντοι γε μηδ' ἕτερον, ἀλλὰ μόνον οὐ ταυτὸν, διὰ τὸ καὶ μέρος εἶναι [m]τῆς οὐσίας, καὶ τὸν αὐτὸν ἐπέχειν τόπον. Τὰ δ' ἕτερα τινῶν λεγόμενα δεῖν καὶ τόπῳ κεχωρίσθαι, καὶ μηδ' ἐν μέρει θεωρεῖσθαι. Τὸ δὲ μὴ εἶναι ταυτὸ τό τε κατὰ τὸ ἰδίως ποιὸν, καὶ τὸ κατὰ τὴν οὐσίαν, δῆλον εἶναί φησιν ὁ Μνήσαρχος, ἀναγκαῖον γὰρ τοῖς αὐτοῖς [n]ταυτὰ συμβεβηκέναι. Εἰ γάρ τις πλάσας ἵππον, λόγου χάριν, συνθλάσειεν, ἔπειτα κύνα ποιήσειεν, εὐλόγως ἂν ἡμᾶς ἰδόντας εἰπεῖν, ὅτι τοῦτ' οὐκ ἦν πάλαι, νῦν δ' ἐστί· ὥσθ' ἕτερον εἶναι τὸ ἐπὶ τοῦ ποιοῦ λεγόμενον, [o]τότε ἐπὶ τῆς οὐσίας. Καθόλου οὖν
[438] νομίζειν τοὺς αὐτοὺς ἡμᾶς εἶναι ταῖς οὐσίαις ἀπίθανον εἶναι φαίνεται· πολλάκις γὰρ συμβαίνει τὴν μὲν οὐσίαν ὑπάρχειν [p]πρὸ τῆς γενέσεως, εἰ τύχοι, τῆς Σωκράτους, τὸν δὲ Σωκράτην μηδέπω ὑπάρχειν, καὶ [q]μετὰ μὲν τὴν Σωκράτους ἀναίρεσιν ὑπομένειν μὲν τὴν οὐσίαν, αὐτὸν δὲ μηκέτι εἶναι.

8 Πλάτωνος ἐν τῷ Τιμαίῳ [p. 49.]

Ὅτι τὰ στοιχεῖα εἰς ἄλληλα μεταβάλλεται. Πῶς οὖν δὴ p. 46. 10

vel hic quoque addendum.—ποιοῦ recte legit Cod. Vat. pro ποιητοῦ ap. Cant. HEEREN.

l Ante ἐξ Cant. [et A.] male addit ὁ, quod delevi. Descendit jam ad argutias, quibus inprimis delectabantur Stoici, Posidonius, ut ostendat quatenus essentia et qualitas universalis inter se differant. Quare ex Stoicorum dialectica quid sit *aliud* et quid sit *idem* explicat; indeque miro modo efficit nec dici posse idem esse cum substantia qualitatem, nec aliud quid, sed modo non idem. En philosophum, ita laqueis suis irretitum, ut ipse amplius se ex iis expedire nequeat! HEEREN.

m τῆς οὐσίας, *quod pars sit substantiæ*, bene cod. V. pro τὴν οὐσίαν ap. Cant. [et A.] HEEREN.

n ταυτὰ, *necesse esse iisdem eadem evenire*, dedi pro ταῦτα. HEEREN. Supra v. 15. τόπον A.

o τό τε dedi pro τὸ δέ; et mox post καθόλου addidi οὖν. HEEREN. τόδε δὲ καὶ ἐπὶ A.

p πρὸς] πρὸ V. A.

q μετὰ τὴν τῆς Σ.] μετὰ τῆς A. μετὰ μὲν τὴν Heeren.

8.

Sunt verba Plat. ex Tim. Op. III. p. 49. Superscriptum est huic loco in Cant. ed. Ὅτι τὰ στοιχεῖα

τοῦτο αὐτὸ καὶ πῇ καὶ τί περὶ αὐτῶν εἰκότως διαπορηθέντες ἂν λέγωμεν; Πρῶτον μὲν ὃ δὴ νῦν ὕδωρ ὠνομάκαμεν, πηγνύμενον, ὡς δοκοῦμεν, λίθους καὶ γῆν γιγνόμενον ὁρῶμεν, τηκόμενον δὲ καὶ διακρινόμενον αὖ ταυτὸν τοῦτο πνεῦμα καὶ ἀέρα, ξυγκαυθέντα δὲ ἀέρα πῦρ, ἀνάπαλιν δὲ πῦρ ξυγκριθὲν καὶ κατασβεσθὲν εἰς ἰδέαν τε ἀπιὸν αὖθις [a] δὲ ἀέρος, πῦρ καὶ πάλιν ἀέρα ξυνιόντα καὶ πυκνούμενον νέφος καὶ ὁμίχλην, ἐκ δὲ τούτων ἔτι μᾶλλον συμπιλουμένων ῥέον ὕδωρ, ἐξ ὕδατος δὲ γῆν καὶ λίθους αὖθις, [b] κύκλον τε οὕτω [c] διαδιδόντα εἰς ἄλληλα, ὡς φαίνεται, τὴν γένεσιν. Οὕτω δὴ τούτων οὐδέποτε τῶν αὐτῶν ἑκάστων φανταζομένων, ποῖον αὐτῶν ὡς ὂν ὁτιοῦν τοῦτο καὶ οὐκ ἄλλο παγίως διισχυριζόμενος οὐκ αἰσχυνεῖταί τις ἑαυτόν; οὐκ ἔστιν· ἀλλ᾽ ἀσφαλέστατα μακρῷ περὶ τούτων τιθεμένους, ὧδε λέγειν ἀεί. Ὃ καθορῶμεν ἄλλοτε ἄλλῃ γιγνόμενον, ὡς πῦρ, [d] καὶ μὴ τοῦτο ἀλλὰ τὸ τοιοῦτον ἑκαστότε προσαγορεύειν πῦρ, μηδὲ ὕδωρ τοῦτο, ἀλλὰ τὸ τοιοῦτον ἀεί· μηδὲ ἄλλο ποτὲ μηδὲν ὥς τινα ἔχον βεβαιότητα, ὅσα δεικνύντες τῷ ῥήματι τῷ τόδε καὶ τοῦτο προσχρώμενοι [e] δηλοῦν ἡγούμεθά τι· φεύγει γὰρ οὐχ ὑπομένον τὴν τοῦ τόδε καὶ τοῦτο καὶ τὴν τῷδε καὶ πᾶσαν [f] ὅση μόνιμα ὡς ὄντα αὐτὰ ἐνδείκνυται φάσις.

9 Ἐν ταυτῷ [p. 32.]

Ὅτι δὲ τὸ πᾶν ἀΐδιον, δηλοῖ σαφῶς· λέγει γοῦν ἐν τῷ Τιμαίῳ οὕτως· Ἔκ τε δὴ τούτων καὶ τοιούτων καὶ [a] τὸν ἀριθμὸν τεττάρων, τὸ τοῦ κόσμου σῶμα ἐγεννήθη δι᾽ [b] ἀνα-

εἰς ἄλληλα μεταβάλλεται *elementa inter se mutari*, quæ inscriptio in cod. A. in contextum migravit. Omnino credo inscriptionem hanc grammatico deberi, cum et supra jam de elementorum permutatione dictum sit, et in Phot. capitum recensu nil tale exstet. HEEREN.

[a] δὲ add. A.

[b] κύκλον] κύκλων A.

[c] διαδιδόντα καὶ] διαδιδόντας εἰς A.

[d] μὴ] καὶ μὴ A. qui om. ἑκαστότε—τοιοῦτον.

[e] δηλοῦν add. A.

[f] ὅση] ὅσην A.

9.

[a] τῶν ἀριθμῶν A.

[b] ἀναλογίαν] ἀναλογίας A.

λογίας ὁμολογῆσαν, φιλίαν τε ἔσχεν ἐκ τούτων, ὥστε εἰς τὸ [c]αὐτὸ αὑτῷ ξυνελθὸν ἄλυτον ὑπὸ τῶν ἄλλων πλὴν ὑπὸ τοῦ ξυμφύσαντος γενέσθαι.

Χρόνος δ' οὖν μετ' [d]οὐρανοῦ γέγονεν, ἵν' ἅμα γεννηθέντες ἅμα καὶ λυθῶσιν, ἄν ποτε λύσις τις αὐτῶν γίγνηται, καὶ κατὰ τὸ παράδειγμα τῆς διαιωνίας φύσεως, ἵν' ὡς ὁμοιότατος αὐτῷ κατὰ δύναμιν ᾖ· τὸ μὲν γὰρ δὴ παράδειγμα πάντα αἰῶνα ἐστιν ὄν· ὁ δ' αὖ διὰ τέλους τὸν ἅπαντα
10 γεγονώς τε καὶ ὢν καὶ ἐσόμενος.

Ἐν ταυτῷ [p. 41.]

[a]Θεοὶ θεῶν, ὧν ἐγὼ δημιουργὸς πατήρ τε ἔργων, ἃ δι' ἐμοῦ γιγνόμενα ἄλυτα, ἐμοῦ [b]γε θέλοντος. Τὸ μὲν οὖν δὴ δεθὲν, πᾶν λυτόν· τό γε μὴν καλῶς ἁρμοσθὲν καὶ ἔχον εὖ λύειν θέλειν [c]κακοῦ. Διὸ καὶ ὑμεῖς ἔπει περ γεγενῆσθε, ἀθάνατοι μὲν οὐκ ἔστε, οὐδ' ἄλυτοι τὸ πάμπαν, οὔτι μὲν δὴ λυθήσεσθέ γε, οὐδὲ τεύξεσθε θανάτου μοίρας, τῆς ἐμῆς βουλήσεως μείζονος ἔτι δεσμοῦ καὶ κυριωτέρου λαχόντες ἐκείνων οἷς ὅτε ἐγίγνεσθε συνεδεῖσθε.

Κεφ. κα΄.

ΠΕΡΙ ΚΟΣΜΟΥ ΚΑΙ ΕΙ ΕΜΨΥΧΟΣ ΚΑΙ ΠΡΟΝΟΙΑΙ ΔΙΟΙΚΟΥΜΕΝΟΣ ΚΑΙ ΠΟΥ ΕΧΕΙ ΤΟ ἩΓΕΜΟΝΙΚΟΝ ΚΑΙ ΠΟΘΕΝ ΤΡΕΦΕΤΑΙ. p. 47.

1 Πλάτωνος.

ΠΛΑΤΩΝ τὸν κόσμον ἔφησε ζῶον ἔμψυχον ἐννοῦν τε,
[440] ὅτι τε ἀφ' ἑαυτοῦ τρέφεται, τὸ δὲ ἡγεμονικὸν τοῦ κόσμου ἐν οὐρανῷ τίθεται. Λέγει οὖν οὕτως ἐν τῷ [a]Τιμαίῳ· Βουληθεὶς

c αὐτῷ A. Mox ἄλυτον om. Cant. Mox ξυμφήσαντος Cant. ξυνδήσαντος Plat.

d αὐτοῦ A. Ceterum hæc sejunxi a superioribus, quippe quæ loco longe diverso in Platone reperiantur, scil. p. 38.

10.

a θεοὶ] θεὸς A. Cant.

b γε om. A.

c κακοῦ] κακὰ A. qui mox γεγένησθαι ἀθανάτου et in extr. συνεδεῖσθαι.

1.

a p. 30.

γὰρ ὁ θεὸς ἀγαθὰ μὲν πάντα, φλαῦρον [a] δὲ μηδὲν εἶναι κατὰ δύναμιν, οὕτω δὴ πᾶν ὅσον ἦν ὁρατὸν παραλαβὼν οὐχ ἡσυχίαν [aa] ἄγον ἀλλὰ κινούμενον πλημμελῶς τε [b] καὶ ἀτάκτως αὐτὸ ἤγαγεν ἐκ τῆς ἀταξίας, ἡγησάμενος ἐκεῖνο τούτου παντὸς ἄμεινον· [c] θέμιν δ᾽ οὔτε ἦν οὔτε ἔστι τῷ ἀρίστῳ δρᾶν ἄλλο, πλὴν τὸ κάλλιστον. Λογισάμενος οὖν εὕρισκεν ἐκ τῶν κατὰ φύσιν ὁρατῶν, οὐδὲν ἀνόητον τοῦ νοῦν ἔχοντος [d] ὅλον ὅλου κάλλιον ἔσεσθαι πότε ἔργον, νοῦν δὲ αὖ χωρὶς ψυχῆς ἀδύνατον πᾶς γενέσθαι τῳ, διὰ δὴ τὸν λογισμὸν τόνδε νοῦν μὲν ἐν τῇ ψυχῇ, ψυχὴν δὲ ἐν σώματι συνιστὰς τὸ πᾶν συνετεκταίνετο, ὅπως ὅ τι κάλλιστον εἴη κατὰ φύσιν, ἄριστόν τε ἔργον [e] ἀπειργασμένος. Οὕτως οὖν δὴ κατὰ λόγον [f] τὸν εἰκότα δεῖ λέγειν τόνδε τὸν κόσμον ζῶον ἔμψυχον ἔννουν τε τῇ ἀληθείᾳ διὰ τὴν τοῦ θεοῦ γενέσθαι πρόνοιαν.

2 Ἐν ταυτῷ [p. 33.]

Ἀπῄει τε γὰρ οὐδὲν οὐδὲ προσῄει αὐτῷ ποθὲν οὐδέν· οὐδὲ γὰρ ἦν· αὐτὸ γὰρ ἑαυτῷ τροφὴν, τὴν ἑαυτοῦ φθίσιν, παρέχον, καὶ πάντα ἐν [a] αὐτῷ καὶ ὑφ᾽ αὐτοῦ πάσχον καὶ δρῶν, ἐκ τέχνης γέγονεν.

3

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ τὸν τοῦ ἡλίου περίδρομον εἶναι περιγραφὴν τοῦ πέρατος τοῦ κόσμου.

ΣΕΛΕΥΚΟΣ ὁ Ἐρυθραῖος, καὶ ἩΡΑΚΛΕΙΔΗΣ ὁ Ποντικὸς [a] ἄπειρον τὸν κόσμον.

[a] δὲ καὶ A.

[aa] ἄγον] ἄγον̓ A.

[b] καὶ] τε καὶ A. qui mox τοῦ παντὸς.

[c] θέμην] θέμιν A. θέμις Plato.

[d] ὅλον ὅλου] ὅλο ὅλον A. Mox παραγενέσθαι Plato.

[e] ἀπειργασμένον] ἀπειργασμένος A.

[f] τὸν εἰκότα] τὸν om. A. qui mox δὴ et πρόνοια.

2.

Exstant hæcverba Platonis in Tim. Op. III. p. 33. unde ea correximus. Apud Stob. corrupte leg. προσείη—οὐδὲ γὰρ—δρᾶν, pro προσῄει—οὐδὲν οὐ γὰρ—δρῶν. HEEREN.

[a] ἑαυτῷ—ἑαυτοῦ et mox δρᾶν A.

3.

[a] ἀπείρατον] ἄπιερον V. A.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ καὶ ΜΕΛΙΣΣΟΣ τὸ μὲν πᾶν ἄπειρον, τὸν δὲ κόσμον [b]πεπερασμένον.

[442] ῾ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ διαφέρειν τὸ πᾶν καὶ τὸ ὅλον· [c]πᾶν μὲν γὰρ εἶναι σὺν τῷ κενῷ τῷ ἀπείρῳ, ὅλον δὲ χωρὶς τοῦ κενοῦ τὸν κόσμον. Μήτε αὔξεσθαι δὲ μήτε μειοῦσθαι τὸν κόσμον, τοῖς δὲ μέρεσιν ὁτὲ μὲν παρεκτείνεσθαι πρὸς πλείονα τόπον, ὁτὲ δὲ συστέλλεσθαι. [d]᾿Απὸ γῆς δὲ ἄρξασθαι τὴν γένεσιν τοῦ κόσμου, καθάπερ ἀπὸ κέντρου, ἀρχὴ δὲ σφαίρας τὸ [e]κέντρον.

[f]Οἱ μὲν ἄλλοι πάντες ἔμψυχον τὸν κόσμον, καὶ πρνοίᾳ διοικούμενον· Λεύκιππος δὲ καὶ Δημόκριτος καὶ ᾿Επίκουρος οὐδέτερα τούτων, φύσει δὲ ἀλόγῳ ἐκ τῶν ἀτόμων συνεστῶτα.

4

῾Ομηρός φησι πεπερασμένον εἶναι τὸν κόσμον, δηλοῦται δὲ διὰ τούτων·

Τριχθὰ δὲ πάντα δέδασται, ἕκαστος δ᾽ ἔμμορε τιμῆς.

[444] [a]Τοῦτο τοίνυν [b]ἐνὶ στίχῳ διαρρήδην ἐδήλωσεν, τὸ γὰρ ἄπειρον οὐκ ἔστιν εἰς [c]μοίρας διελεῖν. Καὶ ἐν τούτοις δὲ τὸ αὐτὸ σημαίνεται [d].

b πεπερᾶσθαι] πεπερασμένον V. πεπεράνθαι A.

c πᾶν μὲν γὰρ add. εἶναι V. P. A.

d ᾿Απὸ γῆς] Sic libri cum Plutarcho II. 6. ὑπὸ γῆς Heeren.

e κέντρον αὐτόν] αὐτὸν deest V. A. Plut.

f ῎Αλλοι] Οὐδὲν ἄλλοι V. A.

ib. Restitui hæc verba ex Plut.: apud Cant. enim leg. ῎Αλλοι πάντες ἔ. τ. κόσμον, προνοίᾳ δ. Codd. V. A. E. Οὐδὲν ἄλλοι etc. pro quo cum Plut. rescribendum esse Οἱ μὲν ἄλλοι etc. docent sequentia. Καὶ ante προν. etiam addidi ex Plut. HEEREN.

4.

Versus Homeri exstat Il. ό. 189.

a Τοῦτον] τοῦτο V. A.

ib. Τοῦτο—στίχῳ et μοίρας recte legunt codd. V. A. E. pro τοῦτον—στοίχῳ et μόρας ap. Cant. HEEREN.

b ἐνὶ στοίχῳ] ἐνί στίχῳ A.

c μόρας] μοίρας V. A.

d Leguntur hæc ap. Hom. Il. ό. 190—193.

[e] Ἤτοι ἐγὼν ἔλαχον πολιὴν ἅλα ναίεμεν αἰεὶ
παλλομένων, Ἀΐδης δ' ἔλαχεν ζόφον ἠερόεντα,
Ζεὺς δ' ἔλαχ' [f] οὐρανὸν εὐρὺν ἐν αἰθέρι καὶ νεφέλῃσι,
γαῖα δ' [g] ἔτι ξυνὴ πάντων, καὶ μακρὸς Ὄλυμπος.

ὡς τῶν ἐν μέσῳ φύσεων πεποιημένος τὴν [h] νέμησιν, τὰ δὲ ἄκρα καὶ περατοῦντα ἀνέμητα καταλελοιπώς. Καὶ εἶναι τὴν γῆν μὲν κατωτάτω πάντων, τὸν δὲ Ὄλυμπον ἀνωτάτω, δεδήλωκεν ἐν τούτῳ[i]·

Ἀλλ' ὅτε [k] δὴ καὶ ἐγὼ πρόφρων ἐθέλοιμι [l] ἐρύσσαι
αὐτῇ κεν γαίῃ ἐρύσαιμ' αὐτῇ τε θαλάσσῃ· p. 48.
σειρὴν μέν κεν ἔπειτα [m] περὶ ῥίον οὐλύμποιο
[n] δησαίμην, τὰ δέ κ' αὖτε μετήορα πάντα γένοιτο.

Τὴν γὰρ γῆν μετέωρον γενήσεσθαί φησιν ἐξ ἕδρας ἀνασπασθεῖσαν, ὡς [o] ἐκ τῆς κατωτάτω εἰς τὴν ἀνωτάτω.

5

Κόσμον δ' εἶναί φησιν ὁ ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ σύστημα ἐξ οὐρανοῦ καὶ γῆς καὶ τῶν ἐν τούτοις φύσεων· ἢ τὸ ἐκ θεῶν καὶ ἀνθρώπων σύστημα καὶ ἐκ τῶν ἕνεκα τούτων γεγονότων.
[446] Λέγεται [a] δ' ἕτερος κόσμος ὁ θεὸς, καθ' ὃν ἡ διακόσμησις γίνεται καὶ τελειοῦται· τοῦ δὲ κατὰ τὴν διακόσμησιν λεγομένου κόσμου τὸ μὲν εἶναι περιφερόμενον περὶ τὸ μέσον, τὸ δ' ὑπομένον· περιφερόμενον [b] μὲν τὸν αἰθέρα, ὑπομένον δὲ τὴν γῆν, καὶ τὰ ἐπ' αὐτῆς ὑγρὰ, καὶ τὸν ἀέρα. Τὸ γὰρ

[e] Ἤτοι ἐγὼ μὲν ἔλαχον πολίην ἅλα ναίειν V. A.

[f] οὐρανὸν ἐν νεφέλῃ καὶ νεφέλεσι V. A. E. νεφέλῃσι addit V.

[g] ἔτι] ἐστὶ V. A. E.

[h] νέμησιν] νέμεσιν A.

[i] Il. θ'. 23—26.

[k] δὴ] κεν V. A. E.

[l] ἐρύσσαι] ἐρύσαις V. E. ἐρύσσαῖς A. qui v. seq. ἐρύσσαιμ'.

[m] περὶ ῥίον] περιρρέον V. A. E. P.

[n] δησαίμην] δημαίμην et mox μετώορα A.

[o] ἐκ τῆς κ. εἰς τ.] *Ex infimis locis,* (quæ terra occupat) *ad suprema.* Sic sensu postulante rescripsi pro ὡς τὴν κατωτάτω ὡς τὴν ἀνωτάτω ap. Cant. [et A.] HEEREN.

5.

[a] δεύτερος] δ' ἕτερος V. A.

[b] καὶ τὸν] μὲν pro καὶ Canterus in marg.

τῆς πάσης οὐσίας πυκνότατον ὑπέρεισμα πάντων εἶναι κατὰ φύσιν, ὅνπερ τρόπον ἐν ζώῳ τὰ ὀστέα, τοῦτο δὲ καλεῖσθαι γῆν. Περὶ δὲ ταύτην τὸ ὕδωρ [c] περικεχύσθαι σφαιρικῶς, ὁμαλωτέραν τὴν ἴσχυν [d] διειληχός. Τῆς γὰρ γῆς ἐξοχάς τινας ἐχούσης [e] ἀνωμάλους, διὰ τοῦ ὕδατος εἰς ὕψος ἀνηκούσας, [f] ταύτας δὲ νήσους καλεῖσθαι. Τούτων δὲ τὰς ἐπιπλεῖον [g] διηκούσας, ἠπείρους [h] προσηγορεῦσθαι, ὑπ' ἀγνοίας τοῦ περιέχεσθαι καὶ ταύτας πελάγεσι μεγάλοις. Ἀπὸ δὲ τοῦ ὕδατος τὸν ἀέρα ἐξῆφθαι, καθάπερ ἐξατμισθέντα, σφαιρικῶς, καὶ [i] περικεχύσθαι· ἐκ δὲ τούτου τὸν αἰθέρα ἀραιότατόν τε καὶ εἰλικρινέστατον. Τὸν μὲν οὖν κατὰ τὴν διακόσμησιν λεγόμενον κόσμον εἰς ταύτας διακεκρίσθαι τὰς φύσεις· τὸ δὲ περιφερόμενον [k] αὐτοῦ ἐγκυκλίως αἰθέρα εἶναι, ἐν ᾧ τὰ ἄστρα καθίδρυται, τά τε ἀπλανῆ καὶ τὰ πλανώμενα, [l] τὰ δὲ πλανώμενα ἕπτα τὸν ἀριθμὸν εἶναι, πάντα δὲ τὰ πλανώμενα θεῖα τὴν φύσιν ὄντα καὶ ἔμψυχα, καὶ διοικούμενα κατὰ τὴν πρόνοιαν. Τῶν μὲν οὖν
[448] ἀπλανῶν ἀστέρων ἀκατάληπτον εἶναι τὸ πλῆθος, τὰ δὲ πλανώμενα [m] ταπεινότερα τῶν ἀπλανῶν. Τετάχθαι δὲ [n] τὰ μὲν ἀπλανῆ ἐπὶ μιᾶς ἐπιφανείας, ὡς καὶ ὁρᾶται· τὰ δὲ πλανώμενα [o] ἐπ' ἄλλης καὶ ἄλλης φορᾶς· περιέχεσθαι δὲ πάσας τὰς τῶν πλανωμένων [p] ὑπὸ τῆς τῶν ἀπλανῶν σφαι-

[c] περικέχυσθαι] περικεχεῖσθαι V.
[d] διειληχὸς] –ληχῶς A.
[e] ἀνωμάλους] –μάλως V.
[f] ταύτας δὲ] ταύτας γε Heeren.
[g] διοικούσας, ἀπείρους] διηκούσας, ἢ ἄπειρον V. διηκούσας, ἀπείρους A.
[h] προσηγορεῦσθαι] Sic A. προσηγορεύεσθαι Cant. προσαγορεύεσθαι Heeren.
[i] περικέχυσθαι] περικεχεῖσθαι V. A.
[k] αὐτοὺς] αὐτοῦ V. A.
[l] Verba τὰ δὲ πλανώμενα ἕπτα τὸν ἀριθμὸν εἶναι, πάντα δὲ τὰ πλανώμενα etc. solus supplet cod. Paris. Nam ap. Cant. et in reliquis codd. mutilate exstat, καὶ τὰ πλανώμενα, θεῖα τὴν φύσιν etc. HEEREN.
[m] ταπεινότερα] ταπεινώτερα A.
[n] τὰ μένα νῆ] τὰ μὲν ἀπλανῆ V. A.
[o] ἐπ' ἄλλης rescripsi pro ἀπ' ἄλλης. HEEREN.
[p] Verba ὑπὸ τῆς — πλανωμένων om. A. V.

ρας. Τῶν δὲ πλανωμένων ὑψηλοτάτην εἶναι μετὰ τὴν ἀπλανῶν τὴν τοῦ Κρόνου, μετὰ δὲ ταύτην τὴν τοῦ Διὸς, εἶτα τὴν τοῦ [q]Ἄρεος, ἐφεξῆς δὲ τὴν τοῦ Ἑρμοῦ, καὶ μετ' αὐτὴν [r]τὴν τῆς Ἀφροδίτης, εἶτα τὴν τοῦ ἡλίου, ἐπὶ πᾶσι δὲ τὴν τῆς σελήνης, πλησιάζουσαν τῷ ἀέρι. Διὸ καὶ ἀερωδεστέραν φαίνεσθαι, καὶ μάλιστα διατείνειν τὴν [s]ἀπ' αὐτῆς δύναμιν εἰς τὰ περίγεια. Ὑπὸ δὲ τὴν σελήνην [t]τὴν τοῦ ὑπ' αὐτοῦ φερομένου ἀέρος, εἶτα τὴν ὕδατος, τελευταίαν δὲ τὴν τῆς γῆς, περὶ τὸ μέσον σημεῖον τοῦ κόσμου [u]κειμένης, ὃ δὴ τοῦ παντός ἐστι κάτω, ἄνω δὲ τὸ [x]ἀπ' αὐτοῦ εἰς τὸ κύκλῳ πάντῃ.

6

ἜΚΦΑΝΤΟΣ ἐκ μὲν τῶν [a]ἀτόμων συνεστάναι τὸν κόσμον, διοικεῖσθαι δὲ [b]ὑπὸ προνοίας.

[c]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ οὔτε ἔμψυχον [d]ὅλον δι' ὅλου, οὔτε [e]λογικὸν, οὔτε νοερὸν, οὔτε προνοίᾳ διοικούμενον. Τὰ μὲν
[450] γὰρ οὐράνια πάντων τούτων [f]κοινωνεῖν, σφαίρας γὰρ περιέχειν ἐμψύχους καὶ [g]ζωτικὰς, τὰ δὲ περίγεια μηδενὸς αὐτῶν, τῆς δ' εὐταξίας [h]κατὰ συμβεβηκὸς οὐ προηγουμένως μετέχειν. Εἰ δὲ τρέφεται ὁ κόσμος καὶ φθαρήσεται· ἀλλὰ [i]μηδὲν οὐδεμίας δεῖται τροφῆς, διὰ τοῦτο καὶ ἀΐδιος.

q Ἄρεος] ἀέρος A.

r τὴν Ἀφροδ.] τὴν τῆς Ἀφροδίτης V. A.

s ἀπ'] ἐπ' A.

t τοῦ ὑπ' αὐτοῦ] τὴν τοῦ ὑπ' αὐτοῦ V. A.

u κειμένης, quod postulat γῆς, ipse rescripsi pro κειμένην. HEEREN.

x ὑπ' αὐτοῦ] ἀπ' αὐτοῦ V. A.

6.

a ἀτόμων] ἀσίμων A.

b ἀπὸ] ὑπὸ A.

c Respicit hic ad ea quæ Aristoteles passim disputat de Cœlo libr. I. II. HEEREN.

d ὅλον] ὅλην A.

e λογικὸν] λογικὴν A.

f κοινωνεῖν] Sic Heeren. κοινωνεῖ A. Cant.

g ζωτικοὺς] ζωτικὰς V. A.

h κατὰ συμβεβηκὸς] Vid. Bakium ad Cleomed. p. 282.

i μηδενὸς] μηδὲν V. A.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ [k] φησὶ γεννητὸν κατ᾽ ἐπίνοιαν τὸν κόσμον, οὐ κατὰ χρόνον· ὃς καὶ πρῶτος ὠνόμασε τὴν τῶν ὅλων περιοχὴν κόσμον, ἐκ τῆς ἐν αὐτῷ τάξεως· ἄρξασθαι δὲ τὴν γένεσιν τοῦ κόσμου ἀπὸ πυρὸς καὶ τοῦ πέμπτου [l] στοιχείου. Πέντε δὲ σχημάτων ὄντων στερεῶν, ἅπερ καλεῖται καὶ μα- p. 49. θηματικὰ, ἐκ μὲν τοῦ κύβου φησὶ γεγονέναι τὴν γῆν, ἐκ δὲ
[452] τῆς πυραμίδος τὸ πῦρ, ἐκ δὲ τοῦ ὀκταέδρου τὸν ἀέρα, ἐκ δὲ τοῦ εἰκοσαέδρου [m] τὸ ὕδωρ, ἐκ δὲ τοῦ δωδεκαέδρου τὴν τοῦ παντὸς σφαῖραν.

ΦΙΛΟΛΑΟΣ ἔφησε, [n] τὸ μὲν ἐξ οὐρανοῦ πυρὸς ῥυέντος, τὸ δὲ ἐξ ὕδατος σεληνιακοῦ περιστροφῇ τοῦ [o] ἀέρος ἀποχυθέντος, εἶναι τὰς ἀναθυμιάσεις, τροφὰς τοῦ κόσμου. Τὸ δὲ ἡγεμονικὸν ἐν τῷ [p] μεσαιτάτῳ πυρὶ, ὅπερ [q] τρόπιος δίκην προυπεβάλλετο [r] τῆς τοῦ παντὸς [σφαίρας] ὁ [s] δημιουργὸς θεός.

[t] ΚΛΕΑΝΘΗΣ ὁ Στωϊκὸς ἐν ἡλίῳ ἔφησεν εἶναι τὸ ἡγεμονικὸν τοῦ κόσμου.

[u] ᾿ΑΡΧΙΔΑΜΟΣ τὸ ἡγεμονικὸν τοῦ κόσμου ἐν γῇ ὑπάρ-
[454] χειν ἀπεφήνατο.

[k] φησὶ] φασὶ V. A.

[l] Post στοιχείου spat. V. A.

[m] Verba τὸ ὕδωρ, ἐκ δὲ τοῦ δωδεκαέδρου quæ in Stob. codd. exciderunt, supplevi ex Plutarcho. Ceterum vix dubitari potest, fundum omnis hujus disputationis esse Platonis Timæum, in quo eadem hæc copiose exponuntur. Cf. Plat. Op. III. p. 55. 56. HEEREN.

[n] τὸ μὲν ἐξ οὐρανοῦ] Vid. supra p. 44, 20. ed. Cant. Mox ῥεέντος A.

[o] ἀέρος] περιστροφῇ τοῦ ἀέρος V. A.

[p] μεσωτάτῳ] μεσαιτάτῳ V. A.

[q] τρόπιος] Sic Heeren. τροπέως A. V. Cant.

[r] τῆς nil habet ad quod referri possit. Supplendum videtur σφαίρας, quod uncinis inclusum addidi. Sic Philolaus supra cap. I. fr. 3. s. f. τὰ ἐν τᾷ σφαίρᾳ σώματα, *corpora quæ in mundo sunt.* Quod autem ad placitum ipsum attinet, lucem illud lucrabitur ex iis quæ Stobæus infra tradit [p. 51, 24. ed. Cant.] Φιλόλαος πῦρ etc. et quæ Aristot. habet de Cœl. II. 13. princ. HEEREN.

[s] Post δημιουργὸς add. θεὸς V. A.

[t] Verba Κλεάνθης—κόσμου desunt, nomen Cleanthis in marg. quoque desideratur V. HEEREN.

[u] ᾿Αρχίδαμος] ᾿Αρχέδημος A.

῾ΗΡΑΚΛΕΙΤΟΣ οὐ κατὰ χρόνον εἶναι γεννητὸν τὸν κόσμον, ἀλλὰ κατ᾽ ἐπίνοιαν.

[x] ᾽ΕΠΙΔΙΚΟΣ ὑπὸ φύσεως [y] γεγενῆσθαι τὸν κόσμον.

᾽ΑΡΧΕΛΑΟΣ ὑπὸ [z] θερμοῦ καὶ ἐμψυχίας συστῆναι τὸν κόσμον[a].

7 ᾽Εκ τοῦ Φιλολάου Περὶ Κόσμου.

᾽Ανάγκα τὰ ἐόντα εἶμεν πάντα [a] ἢ περαίνοντα ἢ ἄπειρα,

ib. Verba ᾽Αρχέδημος—τοῦ κόσμου A. in marg. sed eadem manu.

[x] ᾽Επίδεκτος] ᾽Επίδικος V. A. E.

[y] γενῆσθαι] γεγενῆσθαι V. A.

[z] θεοῦ] Novimus ex Diog. II. 16. Archelaum physicum non deum et animam, sed *calorem* et *frigus* causas ortus posuisse. ῎Ελεγε δὲ δύο αἰτίας εἶναι γενέσεως, θερμὸν καὶ ψυχρόν. Dubitari itaque nequit in nostro θεοῦ latuisse θερμοῦ; alterum vero ἐμψυχίας vertendum esse non *animam*, sed *refrigerationem*. Quod ad formam vocis attinet, ea quidem insolita est, nihil tamen mutare audeo cum rite derivata sit ex ἐμψύχω, *refrigero*, eandemque vim habeat, quæ alias vocibus ἔμψυξις et ἀναψυχὴ tribuitur. HEEREN. Vid. Dindorf. Thesaur. L. G. T. III. p. 957 C.

[a] Male hic iterum in codd. adjiciuntur verba eaque mutila, quæ supra jam affuere cap. X. fr. 10. p. 296. [p. 26, 53. ed. Cant.] ᾽Ιωνικὸν ἐκπληροῦσι φιλοσοφίαν, οὕτω προσαγορευθεῖσαν, διότι Μιλήσιος ἀνὴρ, ὁ Θαλῆς, αὐτῆς κατῆρξεν ἀπὸ τῆς τῶν ᾽Ιώνων μητροπόλεως. Ejecimus ea ex contextu, cum aperte alieno hic loco inserta sint, desiderantur enim non Thaletis modo, sed reliquorum quoque principum Ionicæ sectæ nomina. Præterea h. l. verba ne quidem integra exstant, desiderantur enim καὶ οἱ μὲν in principio. HEEREN.

7.

Sequitur hic jam insignis Philolai Pythagorei locus, cujus apud Cant. prima tantum verba usque ad ἀριθμὸν ἔχοντι exstant, reliqua plane desiderantur. Integrum eum exhibemus ex codd. V. A. E. in quibus tamen ipsis multa adeo corrupta ac depravata exhibita sunt, ut de iis restituendis fere desperaverimus. Petitus est h. l. ex Philolai Physicorum libro I. auctore Nicomacho in Harmon. p. 17. ed. Meibom. qui et ipse ultima loci nostri verba ibi descripsit. An vero hæc omnia in Philolai opere continua serie lecta fuerint, dubitaverim; etsi enim sic in codd. Stob. scribuntur, vix tamen satis inter se cohærere, atque ex diversis potius libri illius partibus petita videntur. In primis autem verbis habemus ipsum initium libri Philolai, teste Diog. Laert. VIII. 85. Τοῦτόν φησιν Δημήτριος πρῶτον ἐκδοῦναι τῶν Πυθαγορικῶν περὶ φύσεως, ὧν ἡ ἀρχὴ ἥδε· Φύσις δὲ ἐν τῷ κόσμῳ ἁρμόχθη ἐξ ἀπείρων τε καὶ περαινόντων, καὶ ὅλος κόσμος, καὶ τὰ ἐν αὐτῷ πάντα· quæ tamen pleniora leguntur in Stob. nostro. HEEREN.

[a] ἢ περαίνοντα τε καὶ ἄπειρα, ἄπειρα δὲ] ἢ περαίνοντα ἢ ἄπειρα, ἢ

[456] ἢ περαίνοντά τε καὶ ἄπειρα, ἄπειρα δὲ μόνον [b] οὐκ ἀεί.
Ἐπεὶ τοίνυν φαίνεται οὔτ' ἐκ περαινόντων πάντων ἐόντα,
[c] οὔτ' ἐξ ἀπείρων πάντων, δῆλόν τ' ἄρα ὅτι ἐκ περαινόντων
τε καὶ ἀπείρων ὅ τε κόσμος καὶ τὰ ἐν αὐτῷ συναρμόχθη.
Δηλοῖ δὲ καὶ τὰ ἐν τοῖς ἔργοις. Τὰ μὲν γὰρ αὐτῶν [d] ἐκ
περαινόντων, περαίνοντα, τὰ δ' ἐκ περαινόντων τε καὶ ἀπεί-
ρων, [e] περαίνοντά τε καὶ οὐ περαίνοντα, τὰ δ' ἐξ ἀπείρων
ἄπειρα φανέονται.

Καὶ πάντα γα μὰν τὰ γιγνωσκόμενα [f] ἀριθμὸν ἔχοντι.
Οὐ γὰρ [g] ὁτιῶν οἷόν τε οὐδὲν οὔτε νοήθημεν οὔτε γνώσθημεν ἄνευ
τούτω. Ὁ γα μὰν ἀριθμὸς [h] ἔχει μὲν δύο ἴδια εἴδη, περισ-
σὸν καὶ ἄρτιον, τρίτον δὲ ἀπ' ἀμφοτέρων μιχθέντων, [i] ἀρτιο-
[458] πέριττον. Ἑκατέρω δὲ τῶ εἴδεος πολλαὶ μορφαὶ, ἃς ἕκα-
στον [k] αὔταυτο † σημαίνει.

Περὶ δὲ φύσιος καὶ ἁρμονίας [l] ὧδε ἔχει· [m] Ἁ μὲν [n] ἐστὼ

περαίνοντά τε καὶ ἄπειρα, ἄπειρα δὲ μόνον οὐκ ἀεὶ A. καὶ μόνον οὐκ ἀεί. Ἐπεὶ etc. V. P.

[b] οὐκ ἀεὶ] οὐκ ἂν εἴη corr. Heeren.

[c] οὐχ ἐξ] οὔτ' ἐξ V. A. Post περαινόντων add. τε V. A.

[d] ἐκπεραίνοντι A. qui om. περαίνοντα.

[e] Pro περαίνοντα codd. V. A. bis habent περαίνοντι, sed præfero lectionem vulgatam, quæ ad φανέονται referenda est. Iidem codd. doricam formam servarunt in φανέονται pro φαίνονται ap. Cant. HEEREN. φαινέονται A.

[f] ἀριθμεῖν] ἀριθμὸν A. Seqq. usque ad p. 186, 16. hujus ed. primus edidit Heeren. ex mss.

[g] ὁτιῶν τε] ὁτιῶν οἷόν τε οὐθὲν Boeck. Mox οὔτ' ἐνοήθημεν οὔτ' ἐγνώσθημεν ἄνευ τουτ^χ A.

[h] ἔχει δύο μὲν] ἔχη μὲν δύο A.

[i] ἀρτιοπέρισσον, *parimparem numerum*, vocarunt Arithmetici numerum parem, qui in duo æqualiter divisus partes impares habet; v. c. *sex* vel *decem*. Iamblich. Introd. in Nicom. Arith. p. 29. Ἀρτιοπέρισσος δέ ἐστιν, ὁ καὶ αὐτὸς μὲν εἰς δύο ἶσα κατὰ τὸ κοινὸν διαιρούμενος, οὐ μέντοι γε τὰ μέρη ἔτι διαιρετὰ ἔχων, ἀλλ' εὐθὺς ἑκάτερον περισσὸν, ἔνθεν καὶ ὠνομάσθη. HEEREN.

[k] αὖ ταυτὸ] ἀντ' αὐτὸ A. i. e. αὔταυτο.

[l] ὧδε] Sic Heeren. οὗδε A.

[m] Quæ jam sequuntur obscura atque passim corrupta sunt. Habent codd. ἁ μὲν ἑστώτων πραγμάτων ἀΐδιος ἔσσα, καὶ αὐτὰ μὲν ἁ φύσις, θεῖάν τε καὶ οὐκ ἀνθρωπίνην ἐνδέχεται γνῶσιν πλέον γα (Cod. A. πλέοντα) ἢ ὅτι οὐχ οἷον τὴν οὐθένι τῶν ἐόντων καὶ γιγνωσκομένων ὑφ' ἁμῶν γεγνέσθαι. Sensus universi hujus loci, quantum et ex his et ex sequentibus colligi potest, is est; *cognitionem rerum exsistentium in-*

τῶν πραγμάτων ἀΐδιος ἔσσα, καὶ αὐτὰ μὲν ἁ φύσις, θείαν [460] τε καὶ οὐκ ἀνθρωπίναν ἐνδέχεται γνῶσιν, [o]πλέον γα, ἢ ὅτι οὐχ οἷόν τ' ἦς οὐθενὶ τῶν ἐόντων καὶ γιγνωσκομένων ὑφ' ἁμῶν [oo]γνωσθῆναι, μὴ ὑπαρχούσας [p]αὐτᾶς ἐντὸς τῶν πραγμάτων ἐξ ὧν συνέστα ὁ κόσμος, [q]καὶ τῶν περαινόντων καὶ τῶν ἀπείρων. Ἐπεὶ δέ τε ἀρχαὶ ὑπᾶρχον οὐχ ὅμοιαι οὐδ' ὁμόφυλοι [r]ἔσσαι, ἤδη ἀδύνατον ἧς ἂν καὶ αὐτοῖς κοσμηθῆναι εἰ μὴ ἁρμονία ἐπεγένετο, ᾧτινι [s]ἂν τρόπῳ ἐγένετο. Τὰ μὲν ὦν ὅμοια καὶ ὁμόφυλα ἁρμονίας οὐδὲν ἐπεδέοντο, τὰ δὲ

teriorisque earum naturæ non cadere in homines, sed tantum in mentem divinam; cognosci tamen ab hominibus relationes rerum inter se, idque fieri numerorum ope, communi quo omnia conjungantur vinculo, vel harmonia. cf. Bruck. I. p. 1138. Quod ad verba attinet, aperte corrupta est vox ἔσσα, suspectum quoque esse potest ἑστώτων, dictum enim illud esse debet pro ὑφεστώτων, *res revera exsistentes,* quod insolitum videtur. Utitur tamen hac voce sic Iamblich. Introd. in Nicomach. p. 9. ubi geometriam dicit versari circa explorationem τοῦ μένοντος καὶ ἑστῶτος πηλίκου. Locum vel sic sanandum arbitror, ut pro ἔσσα rescribamus ὠσία, atque pro ἑστώτων legamus ἔσω τῶν, ut sit: ἡ ἔσω τῶν πραγμάτων ὠσία καὶ φύσις, *interior rerum essentia atque natura;* vel ut retento ἑστώτων (pro ὑφεστώτων) in sequentibus pro ἔσσα καὶ legamus ἐσσεῖται (dorice pro ἔσται, qua forma utitur ipse Philolaus ap. Iambl. l. c. p. 7. ἀρχὴ γὰρ οὐδὲ τὸ γνωσούμενον ἐσσεῖται) quod præferendum duxi. Prodit itaque sensus; *ipsam internam rerum naturam æternam esse, atque non sub hominum sed Dei tantum intelligentiam cadere.* Sed corruptiora sunt quæ sequuntur πλέον γα ἢ ὅτι etc. Lego ex superioribus, quod et confirmant sequentia; πλὴν γ' ἁρμονίᾳ, ὅτι etc. *Rerum relationes harmonia, quæ in numeris consistit, innotescere hominibus.*—In proximis τ' ἦς (revocata forma Dorica pro τ' ἦν) rescripsi pro τήν.—Sequentia iterum corruptissima sunt. Exstat in codd. ὑφ' ἁμῶν γεγενέσθαι (cod. V. γενέσθη) μὴ ὑπαρχούσας τὰς ἐν τοὺς τῶν πραγμάτων. Correxi ὑφ' ἁμῶν γνωσθῆναι, μὴ ὑπαρχούσας αὐτὰς (scil. ἁρμονίας) ἐντὸς τῶν πραγμάτων. *Homines de ipsis rebus non notiones habituros esse, nisi illæ ad harmonicas numerorum rationes referrentur.* Cf. supra cap. I. fr. 3. ubi ipse Philolaus: Οὐ γάρ ἐντι δῆλον οὐδενὶ οὐδὲν τῶν πραγμάτων, εἰ μὴ ἦς ἀριθμὸς, καὶ ἁ τούτω ὠσία. HEER.

[n] ἑστώτων] ἐστὼ τῶν Boeck. De ἔσσα mox vid. Ahrens Dial. Dor. p. 324.

[o] πλέον γα] Sic A. planissime, non πλέοντα ut ait Heerenius.

[oo] γεγνέσθαι A. γνωσθῆναι Heeren. γνωσθῆμεν Boeck.

[p] αὐτὰς ἐντὸς] τὰς ἐντοὺς A.

[q] καὶ τῶν] Sic A. τῶν τε Heeren.

[r] ἔσσαι] Heerenius perperam ἔασσαι.

[s] ἂν τρόπῳ] ὃν ἂν τρόποι A.

ἀνόμοια μηδὲ ὁμόφυλα μηδὲ [t] ἰσοτελῆ, ἀνάγκα τὰ τοιαῦτα ἁρμονίαις συγκεκλεῖσθαι, [u] εἰ μέλλοντι ἐν κόσμῳ κατέ-
[462] χεσθαι. Ἁρμονίας δὲ μέγεθός ἐστι συλλαβὰ καὶ [x] δι'
[464] ὀξειᾶν. Τὸ δὲ δι' ὀξειᾶν μεῖζον τᾶς συλλαβᾶς ἐπογδόῳ· ἔστι γὰρ ἀπὸ ὑπάτας ἐπὶ μέσαν [y] συλλαβὰ, ἀπὸ δὲ μέσας [z] ἐπὶ νεάταν δι' ὀξειᾶν, ἀπὸ δὲ νεάτας ἐς τρίταν, συλλαβά·
[466] ἀπὸ δὲ τρίτας ἐς ὑπάταν, δι' ὀξειᾶν. Τὸ δὲ μέσον μέσας καὶ τρίτας, [a] ἐπόγδοον· ἁ δὲ συλλαβὰ, ἐπίτριτον· τὸ δὲ δι' ὀξειᾶν, ἡμιόλιον· [b] τὸ διὰ πασᾶν δὲ, διπλόον. Οὕτως ἁρ-
[468] μονία πέντε [c] ἐπογδόων καὶ δυοῖν διέσεων, δι' ὀξειᾶν δὲ τρία ἐπόγδοα καὶ δίεσις. [[d] Συλλαβὰ δὲ δύ' ἐπόγδοα καὶ δίεσις.]

8

Τὸ πρᾶτον ἁρμοσθὲν, τὸ ἓν, ἐν τῷ μέσῳ τᾶς σφαίρας, ἑστία καλεῖται.

9 Ἑρμοῦ ἐκ τοῦ πρὸς Τάτ.

ʼΑΣΚ. Ἐπεί μοι ἐν τοῖς ἔμπροσθεν γενικοῖς λόγοις ὑπέσχου δηλῶσαι περὶ τῶν τριάκοντα ἓξ δεκανῶν, νῦν μοι δήλωσον περὶ αὐτῶν καὶ τῆς τούτων ἐνεργείας.

[470] ἙΡΜ. Οὐδὲ εἷς φθόνος, ὦ Τὰτ, καὶ ὁ [a] κυριώτατος πάντων λόγος καὶ κορυφαιότατος [b] οὗτος ἂν εἴη. [c] Εὖ δὲ νόει οὕτως. Ἔφαμέν σοι περὶ τοῦ ζωδιακοῦ [d] κύκλου, [e] ἢ τοῦ

[t] ἰσοτελῆ] ἰσοταχῆ A. E.
[u] εἰ] ἢ εἰ A.
[x] δι' ὀξειᾶν. Τὸ δὲ δι' ὀξειᾶν] Sic Boeck. δι' ὀξεῖαν A. et sic infra.
[y] συλλαβὰ] συλλαβὰν A. et sic mox.
[z] ἐπὶ] Sic A. ποτὶ Heeren.
[a] ἐπόγδοον] ἐπ' ὀγδόῳ A. qui mox ἐπίτριτος.
[b] τὸ διὰ πασᾶν] διὰ πᾶσαν A.
[c] ἐπογδόων καὶ δυοῖν διέσεων] ἐπ' ὀγδόῳ καὶ διέσιος A. ἐπόγδοα καὶ δύο διέσιες Boeck.
[d] Συλλαβὰ et seqq. om. A.

8.

Hoc fragmentum a præcedente sejunxit Heeren.

9.

[a] κυριώτατος] κυριότατος A.
[b] οὗτος] αὐτὸς A.
[c] Εὖ] οὗ A.
[d] μὲν κύκλου] μὲν om. A.
[e] Legitur in codd. V. A. E. καὶ τοῦ ζωοφ. At vero zoophorus ipse est Zodiacus. Cf. Arist. de Mundo cap. 2. Rescripsi itaque ἢ τοῦ ζωοφόρου. HEEREN.

ζωσφόρου, καὶ τῶν πέντε πλανητῶν, καὶ ἡλίου καὶ σελήνης, καὶ [f] τῶν ἑκάστου τούτων κύκλου.

'ΑΣΚ. Ἔφης γὰρ, ὦ Τρισμέγιστε.

'ΕΡΜ. Οὕτω βούλομαί [g] σε νοεῖν καὶ περὶ τῶν τριάκοντα ἓξ δεκανῶν, μεμνημένος ἐκείνων, ἵνα εὔγνωστός σοι καὶ ὁ περὶ τούτων λόγος γένοιτο.

'ΑΣΚ. Μέμνημαι, ὦ πάτερ.

'ΕΡΜ. Φαμέν που, ὦ τέκνον, περιεκτικὸν τῶν ἁπάντων εἶναι σῶμα· ἐννόησον οὖν καὶ αὐτὸ ὥσπερ κυκλοειδὲς σχῆμα, καὶ γὰρ οὕτως ἔχει τὸ πᾶν.

'ΑΣΚ. Τοιοῦτον σχῆμα [h] νοῶ οὕτως ὡς λέγεις, ὦ πάτερ.

'ΕΡΜ. Ὑπὸ δὲ τὸν κύκλον τοῦ σώματος [i] τούτου τετάχθαι τοὺς τριάκοντα ἓξ δεκανοὺς, μέσους τοῦ παντὸς κύκλου [k] καὶ τοῦ ζωδιακοῦ, [l] διορίζοντας ἀμφοτέρους τοὺς
[472] κύκλους, καὶ ὥσπερ ἐκεῖνον μὲν κουφίζοντας τὸν ζωδιακὸν, [m] καὶ καθορίζοντας, συμφερομένους τοῖς πλάνησι, καὶ ἰσοδυναμεῖν τῇ τοῦ παντὸς φορᾷ, κατὰ τὸ ἐναλλὰξ τοῖς ἑπτά. Καὶ τὸ μὲν περιεκτικὸν ἐπέχειν σῶμα, ἔσχατον γὰρ ἂν ἦν ἐν τῇ φορᾷ αὐτὸ καθ' αὐτὸ, [[n] ἐν τῷ πάσχειν.] Ἐπισπεύδειν δὲ τοὺς ἑπτὰ ἄλλους κύκλους [o] διὰ τὸ βραδυτέραν κίνησιν κινεῖσθαι τοῦ παντὸς κύκλου. Ὥσπερ οὖν ἀνάγκη αὐτοὺς κινεῖσθαι, καὶ [p] τὸν τοῦ παντός. Νοήσωμεν

[f] τοῦ] τῶν A.

[g] σε νοεῖν, *sic quoque hoc te intelligere volo*, dedi pro σοὶ νοεῖν in codd. V. A. E. HEEREN.

[h] νοῶ emendavi pro νῦν, quod sine sensu in codd. legitur. HEEREN.

[i] τούτου, referendum ad σώματος, meo periculo rescripsi pro τούτους, quod ad sequens τοὺς τριακ. ἓξ pertinebat. HEEREN.

[k] καὶ τοῦ] καὶ addidit Heeren.

[l] διορίζοντας] Sic A. non διορίζοντος ut ait Heeren.

[m] καὶ om. A. qui mox τοῖς ἑπτὰ non τοὺς ut apud Heeren.

[n] Verba ἐν τῷ πάσχειν non intelligo, eaque vel corrupta esse, vel glossemati deberi suspicor, quare uncinis ea inclusi. HEER.

[o] διὰ τὸ] διά τε A.

[p] τὸν ante τοῦ παντὸς, sc. κύκλον, male exciderat in codd. HEEREN.

οὖν [q] καὶ αὐτῶν τῶν ἕπτα, καὶ τοῦ παντὸς τοῦ κύκλου, μᾶλλον δὲ τῶν ἐν κόσμῳ ἁπάντων, ὥσπερεὶ φύλακας αὐτοὺς περιΐστασθαι, πάντα συνέχοντας, καὶ τηροῦντας τὴν τῶν πάντων εὐταξίαν.

ʼΑΣΚ. Οὕτω γὰρ νοῶ, πάτερ, ἐξ ὧν λέγεις.

ʽΕΡΜ. Ἔτι δὲ νόησον, Τὰτ, ὅτι καὶ ἀπαθεῖς εἰσιν, ὧν οἱ ἄλλοι ἀστέρες πάσχουσιν· οὔτε γὰρ ἐπεχόμενοι τὸν δρόμον στηρίζουσιν, οὔτε κωλυόμενοι [r] ἀναποδίζουσιν, ἀλλ᾽ οὐδὲ μὴν ὑπὸ τοῦ φωτὸς τοῦ ἡλίου σκέπονται, ἅπερ πάσχουσιν
[474] οἱ ἄλλοι ἀστέρες. Ἐλεύθεροι δὲ ὄντες ὑπεράνω πάντων ὥσπερ φύλακες ἀκριβεῖς καὶ ἐπίσκοποι τοῦ παντὸς, περιέχονται τῷ νυχθημέρῳ τὸ πᾶν.

ʼΑΣΚ. Ἆρ᾽ οὖν καὶ οὗτοι, ὦ πάτερ, ἔχουσι πρὸς ἡμᾶς ἐνέργειαν;

ʽΕΡΜ. Τὴν μεγίστην, ὦ τέκνον. Εἰ γὰρ ἐκείνοις ἐνεργοῦσι, πῶς οὐ καὶ ἡμῖν; καὶ καθ᾽ ἕνα ἕκαστον καὶ κοινῇ.—
[s] Οὕτως, ὦ τέκνον, τῶν καθολικῶς πάντων συμβαινόντων p. 49.
τῇ ἐνεργείᾳ ἀπὸ τούτων ἐστὶν, οἷον, ὃ [t] λέγω νόησον, [u] βασιλειῶν μετατροπαὶ, πόλεων ἐπαναστάσεις, [x] λοιμοὶ, λιμοὶ, ἄμπωτις θαλάσσης, γῆς σεισμοί· οὐδὲν τούτων, ὦ τέκνον, χωρὶς τῆς τούτων ἐνεργείας γίγνεται. Ἔτι τε πρὸς τούτοις νόησον· [y] εἰ γὰρ οὗτοι μὲν ἐπιστατοῦσιν ἐκείνων, ἡμεῖς δὲ καὶ ὑπὸ τοὺς ἕπτα ἐσμὲν, οὐ νοεῖς καὶ εἰς ἡμᾶς τινὰ ἐκείνων [z] φθάνειν ἐνέργειαν, ἤτοι [a] υἱεῖς αὐτῶν, ἢ δι᾽ ἐκείνων;

[q] καὶ τὰς τῶν ἕπτα καὶ πάντα τὸν κύκλον] Constat ex iis quæ proxime sequuntur legendum esse καὶ αὐτῶν τῶν ἕπτα (sc. κύκλων) καὶ τοῦ παντὸς τοῦ κύκλου, quod exhibui. HEEREN.

[r] Dedi lectionem cod. V. Nam A. male habet ἀνταποδίδωσιν, et statim μὲν pro μήν. HEEREN. In A. ἀναποδίζουσῑ liquido, et μὴν.

[s] Ab his verbis incipit iterum ed. Cant. et quæ jam sequuntur et in ea et ap. Patrit. p. 38 b. leguntur. HEEREN.

[t] λέγων] λέγω V. A.

[u] βασιλέων μετατροπαὶ] βασιλαίων (βασιλέων A.) μετὰ τροπαίων sic V. A.

[x] λοιμοὶ λιμοὶ] λοιμοὶ λιμοὶ A. (β α)

[y] οὐ γὰρ] εἰ γὰρ A.

[z] φθάνει] φιθάνειν V. A.

[a] ἢ εἰς] υἱεῖς V. A.

'ΑΣΚ. [b]Τίς αὐτοῖς εἴη, ὦ πάτερ, ὁ τοῦ σώματος τύπος;

'ΕΡΜ. [c]Τούτους οὖν καλοῦσιν οἱ πολλοὶ δαίμονας· οὐδὲ γὰρ ἴδιόν τί ἐστι γένος τὸ τῶν δαιμόνων, οὔτε ἄλλα σώματα ἔχοντες ἐξ ἰδίας τινὸς ὕλης, οὐδὲ [d]ψυχῇ κινούμενοι ὥσπερ ἡμεῖς, ἀλλὰ ἐνέργειαί εἰσι τῶν [e]τριάκοντα ἓξ τούτων θεῶν.
[476] [f]Ἔτι δὲ πρὸς τούτοις νόησον, ὦ Τὰτ, ἐνέργημα τούτων, ὅτι καὶ εἰς τὴν γῆν σπερματίζουσιν ἃς καλοῦσι Τάνας, τὰς μὲν σωτηρίους, τὰς δὲ ὀλεθριωτάτας. Ἔτι καὶ ἐν οὐρανῷ φερόμενοι ἀστέρες γεννῶσιν [g]αὐτοῖς ὑπολειτουργοὺς, καὶ ὑπηρέτας καὶ στρατιώτας ἔχουσιν. Οὗτοι δὲ ὑπ' ἐκείνων μιγνύμενοι φέρονται ἐν τῷ αἰθέρι αἰωρούμενοι, τὸν τούτου τόπον ἀναπληροῦντες, ὅπως [gg]μηδεὶς ᾖ τόπος ἄνω κενὸς ἀστέρων, συγκοσμοῦντες τὸ πᾶν, ἐνέργειαν ἰδίαν ἔχοντες, [h]ὑποτεταγμένην δὲ τὴν τῶν τριάκοντα ἓξ ἐνέργειαν, ἐξ ὧν καὶ κατὰ τὰς χώρας φθοραὶ γίγνονται τῶν ἄλλων ἐμψύχων ζώων, καὶ ἡ πληθὺς τῶν λυμαινομένων ζώων τοὺς καρπούς. Ὑπὸ δὲ τούτους ἐστὶν ἡ καλουμένη ἄρκτος, κατὰ μέσον τοῦ ζωδιακοῦ, ἐξ ἀστέρων συγκειμένη ἑπτὰ, ἔχουσα ἀντίζυγον ἑτέραν ὑπὲρ κεφαλῆς. Ταύτης μὲν ἡ [i]ἐνέργειά ἐστι καθάπερ ἄξονος, μηδαμοῦ μὲν δυνούσης μηδὲ ἀνατελλούσης, μενούσης δὲ ἐν τῷ αὐτῷ τόπῳ [k]καὶ περὶ αὐτὸ στρεφομένης, ἐνεργούσης p. 50.
δὲ τὴν τοῦ ζωοφόρου κύκλου [[l]περιφορὰν], [m]παραδιδοῦσαν

[b] Τίς δ'] Sic Heeren. δ' om. A. Cant.

[c] Τούτους] οὖν add. V. A.

[d] ψυχῇ] Sic Heeren. ψυχῆς A. Cant.

[e] ἑξήκοντα] τριάκοντα V. A.

[f] Post Ἔτι add. δὲ V. A.

[g] αὐτοῖς] αὐτοῦσ A.

[gg] μηδεὶς] μηδὲν A. Cant. μηδὲ Patrit.

[h] ὑποτεταγμένην] ἀποτεταγμένην A. τὴν ante τῶν deest A.

[i] ἐνέργ.] ἡ ἐνέργεια V. A.

[k] καὶ sensu jubente rescripsi pro τῆς. HEEREN. qui et τοῦ add. mox post τήν. Tum ζωηφόρου A.

[l] Dubitari nequit ex superioribus, ubi de zodiaci motu disputatur, post κύκλου excidisse περιφορὰν vel similem vocem. Eam enim desiderari docet præcedens τὴν, quod nihil habet ad quod referri possit. HEEREN.

[m] παραδιδοῦσαν] –σα V. A.

[n]τὸ πᾶν τοῦτο ἀπὸ μὲν τῆς νυκτὸς ἡμέρᾳ, ἀπὸ δ' ἡμέρας νυκτί. Μετὰ δὲ ταύτην ἐστὶν ἄλλος χορὸς ἀστέρων, οὓς ἡμεῖς [o]προσηγοριῶν οὐ κατηξιώσαμεν, οἱ δὲ μεθ' ἡμᾶς, μιμησάμενοι μὲν, καὶ αὐτοὶ προσηγορίας [p]τούτοις θήσονται. Κάτωθεν δὲ τῆς σελήνης εἰσὶν ἕτεροι ἀστέρες φθαρτοὶ, ἀργοὶ,
[478] πρὸς ὀλίγον χρόνον συνιστάμενοι, εἰς τὸν ὑπὲρ γῆς ἀέρα ἐξ αὐτῆς τῆς γῆς ἀναθυμιώμενοι, οὓς καὶ ἡμεῖς ὁρῶμεν διαλυομένους, τὴν φύσιν [q]ὁμοίαν ἔχοντας τοῖς ἀχρήστοις τῶν ἐπὶ γῆς ζώων, ἐπὶ ἕτερον δὲ οὐδὲν γίγνεται ἢ [r]ἵνα μόνον φθαρῇ, οἷον τὸ τῶν μυιῶν γένος, καὶ τῶν ψυλλῶν, καὶ τῶν σκωλήκων, καὶ τῶν ἄλλων τῶν ὁμοίων. Καὶ γὰρ [s]ἐκεῖνα, ὦ Τὰτ, οὔτε ἡμῖν οὔτε τῷ κόσμῳ χρήσιμά ἐστι, τοὐναντίον δὲ λυπεῖ ἐνοχλοῦντα, παρακολουθήματα ὄντα τῆς φύσεως, καὶ κατὰ τὸ [t]περισσὸν τὴν γένεσιν ἔχοντα· τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ οἱ ἀπὸ τῆς γῆς ἀναθυμιώμενοι ἀστέρες τὸν μὲν ἄνω τόπον οὐ καταλαμβάνουσιν, ἀδυνατοῦσι γὰρ, ὡς κάτωθεν ἀνιόντες. Πολὺ δὲ τὸ [u]ἐμβριθὲς ἔχοντες, ἑλκόμενοι κάτω [x]ὑπὸ τῆς ἰδίας ὕλης διαχέονται ταχέως, καὶ διαλυθέντες πίπτουσι πάλιν εἰς γῆν, μηδὲν ἐνεργήσαντες, ἢ μόνον ὀχλήσαντες τῷ ὑπὲρ γῆν [y]ἀέρι. Ἕτερόν ἐστι γένος, ὦ Τὰτ, τὸ τῶν καλουμένων κομητῶν, κατὰ καιρὸν ἐπιφαινομένων, καὶ πάλιν μετὰ χρόνον ὀλίγον ἀφανῶν γινομένων· [z]μήτε ἀνατελλόντων μήτε δυνόντων μήτε [a]διαλυομένων· οἵτινες φανεροὶ [b]ἄγγελοι καὶ κήρυκες καθολικῶν ἀποτελεσμάτων γίγνονται, μελλόντων ἔσεσθαι· οὗτοι δὲ τὸν τόπον ἔχουσιν ὑπὸ τὸν κύκλον τὸν

[n] τὸ πᾶν] τὸ om. Heeren. qui addidit δ' ante ἡμέρας.

[o] προσηγορικὸς οὐ] προσηγοριῶν οὐ V. A. –ρικῶν P.

[p] τούτοις om. A.

[q] ὁμοίαν] ὁμοίως V.

[r] ἵνα] Sic A. Cant. ὅτι tacite Heeren.

[s] ἐκεῖνα] ἐκεῖναι V. A.

[t] περισσὸν] τὸ περισσὸν V. A.

[u] ἐμβριθὲς] ἐμφρυθὲς A.

[x] ἀπὸ] ὑπὸ V. A.

[y] ἀνδρὶ] ἀέρι V. A.

[z] Post μήτε ἀνατελλ. add. μήτε δυνόντων V. A.

[a] διαλυομένων] δυνόντων P.

[b] ἄλλοι] ἄγγελοι V. A.

τοῦ ἡλίου. Ἐπὰν οὖν [c] μέλλῃ τι τῷ κόσμῳ συμβαίνειν οὗτοι φαίνονται, [d] φανέντες δὲ ὀλίγας ἡμέρας, πάλιν ὑπὸ τὸν [480] κύκλον ἐλθόντες τοῦ ἡλίου ἀφανεῖς μένουσιν[e], ἐν τῷ ἀπηλιώτῃ φανέντες, ἄλλοι δὲ ἐν τῷ βορρᾷ, ἄλλοι δὲ ἐν τῷ λιβὶ, ἄλλοι δὲ ἐν τῷ νότῳ· [f] μάντεις δὲ τούτους προσηγορεύσαμεν. Καὶ ἀστέρων ἥδε φύσις. Ἀστέρες δὲ [g] ἄστρων διαφορὰν ἔχουσιν. Ἀστέρες μὲν γάρ εἰσιν οἱ ἐν τῷ οὐρανῷ αἰωρούμενοι, ἄστρα δὲ τὰ ἐγκείμενα ἐν τῷ σώματι τοῦ οὐρανοῦ, συμφερόμενα δέ [h] εἰσι τῷ οὐρανῷ, ἐξ ὧν δώδεκα ζώδια προσηγορεύσαμεν. Ὁ ταῦτα μὴ ἀγνοήσας ἀκριβῶς δύναται νοῆσαι τὸν θεὸν, εἰ δὲ καὶ τολμήσαντα δεῖ εἰπεῖν, καὶ αὐτόπτην γενόμενον θεάσασθαι, καὶ θεασάμενον μακάριον γενέσθαι.

ἈΣΚ. [i] Μακάριος ὡς ἀληθῶς, ὦ πάτερ, ὁ [k] τοῦτον θεασάμενος.

ἙΡΜ. Ἀλλ' ἀδύνατον, ὦ τέκνον, τὸν ἐν σώματι [l] τούτου εὐτυχῆσαι. Δεῖ δὲ προγυμνάζειν [m] αὐτοῦ τινα τὴν ψυχὴν ἐνθάδε, ἵνα ἐκεῖ γενομένη, ὅπου αὐτὴν ἔξεστι θεάσασθαι, ὁδοῦ μὴ σφαλῇ. Ὅσοι δὲ ἄνθρωποι [n] φιλοσώματοί εἰσιν, οὗτοι οὐκ ἄν ποτε θεάσαιντο τὴν τοῦ καλοῦ καὶ ἀγαθοῦ ὄψιν. Οἷον γάρ ἐστι κάλλος, ὦ τέκνον, τὸ μήτε σχῆμα, [o] μήτε χρῶμα, μήτε σῶμα [p] ἔχον;

[c] μέλλῃ] μέλλει V.

[d] φανέντας ὀλίγας] φανέντες δὲ ὀλίγας V. φανέντες δὲ om. A.

[e] Supplendum hic videtur ἄλλοι μέν. Ceterum in sequentibus ter scriptum exstat ἄλλα, pro quo vel ἄλλοι vel ἄλλοτε necessario emendandum erat. HEEREN.

[f] μάντις] μάντεις V. A.

[g] ἄστρων bene codd. V. A. pro ἀστέρων. Ἄστρα *sidera*, vocantur *stellarum fixarum signa*, ἀστέρες *planetæ*. HEEREN. In A. ἀστέρων clare legitur.

[h] εἴσι rescripsi pro ἐν quod nemo hic intelliget. *Stellæ fixæ, quæ in cælo sedem habent, una cnm eo feruntur*. HEEREN.

[i] Μακάριον] μακάρος A.

[k] τοῦτο] τοῦτον V. A.

[l] τούτῳ] τούτου V. A.

[m] αὐτοὺς] αὐτοῦ V. A.

[n] φιλοσώματοι] φιλοσώματι A.

[o] μήτε χρῶμα deest V.

[p] ἔχον] ἔχων A.

ʼΑΣΚ. Εἴη δʼ ἄν τι, ὦ πάτερ, χωρὶς τούτων καλόν;
ʽΕΡΜ. Μόνος ὁ θεὸς, ὦ τέκνον, μᾶλλον δὲ τὸ μεῖζόν τι ὂν, [q]τοῦ θεοῦ τὸ ὄνομα.

Κεφ. κβʹ.

[482] ΠΕΡΙ ΤΑΞΕΩΣ ΤΟΥ ΚΟΣΜΟΥ, ΚΑΙ ΕΙ ʽΕΝ ΤΟ ΠΑΝ.

I

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ [a]στεφάνας εἶναι περιπεπλεγμένας, ἐπαλλήλους τὴν μὲν ἐκ τοῦ ἀραιοῦ, τὴν δὲ ἐκ τοῦ πυκνοῦ· μικτὰς δὲ ἄλλας [b]ἐκ φωτὸς καὶ σκότους μεταξὺ τούτων· καὶ τὸ περιέχον δὲ πάσας τείχους δίκην στερεὸν ὑπάρχειν, ὑφʼ ᾧ [c]πυρώδης στεφάνη· καὶ τὸ μεσαίτατον πασῶν περὶ [d]ὂν πάλιν πυρώδης· τῶν δὲ συμμιγῶν τὴν μεσαιτάτην [484] ἁπάσαις [e]τοκέα πάσης κινήσεως καὶ γενέσεως ὑπάρχειν, p. 51. ἥντινα καὶ δαίμονα [f]καὶ [g]κυβερνῆτιν καὶ κληροῦχον ἐπονομάζει, δίκην τε καὶ ἀνάγκην. Καὶ τῆς μὲν γῆς [h]τὴν ἀπόκρισιν εἶναι τὸν ἀέρα, διὰ τὴν [i]βιαιοτέραν αὐτῆς ἐξατμισθέντα [k]πίλησιν, τοῦ δὲ πυρὸς ἀναπνοὴν τὸν ἥλιον καὶ τὸν γαλαξίαν κύκλον· συμμιγῆ δʼ ἐξ ἀμφοῖν εἶναι [l]τὴν σελήνην, [ll]τοῦ τʼ ἀέρος καὶ τοῦ πυρός. Περιστάντος δὲ ἀνωτάτω πάντων τοῦ αἰθέρος, ὑπʼ αὐτῷ τὸ πυρῶδες ὑποταγῆναι, τοῦθʼ ὅπερ κεκλήκαμεν οὐρανὸν, ὑφʼ οὗ ἤδη τὰ περίγεια.

q τοῦ θεοῦ] τὸ θεοῦ Heeren.

I.

a στεφανὰς] στεφανείας A.

b ἐκ φωτὸς] Sic Plutarch. Plac. Phil. II. 7. ἐκ om. A. Cant.

c πυρώδης] πυρῶδες A. Mox Davis. ad Cic. N. D. I. 11. conj. καὶ τὴν μεσαιτάτην πασῶν ἀραιῶν πάλιν πυρώδη, improbante Karstenio de Parm. Phil. p. 246. qui verba Stobæi sic scribenda autumat: καὶ τὸ μεσαίτατον πασῶν .... περὶ ᾧ πάλιν πυρώδης, ut exciderit κέντρου τάξιν ἔχειν, aut simile quid.

d ὧν] ὂν A. V.

e τοκέα] Davisius. τε καὶ libri.

f καὶ ante κυβ. deest V. A.

g κυβερνῆτιν] Sic A. Cant. κυβερνήτην Heeren. Mox κληδοῦχον em. Karsten. p. 241.

h τὴν om. A.

i βιωτέραν] βιαιοτέραν A.

k πήλυγιν] πίλησιν V. A.

l καὶ ante τὴν σελ. deest V. A.

ll τοῦδʼ] τοῦ τʼ A. V.

[486] [m] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ [n] πρῶτον αἰθέρα ἀπαθῆ, πέμπτον τι σῶμα, μεθ' ὃν παθητὰ πῦρ, ἀέρα, ὕδωρ, τελευταίαν δὲ γῆν. Περιέχεσθαι δὲ ταῦτα ὑπὸ τοῦ αἰθέρος, ἔνθα τὰ θεῖα διανενεμημένα κατὰ σφαίρας ἵδρυται τῶν λεγομένων ἀπλανῶν τε καὶ πλανωμένων ἀστέρων. [o] Ὅσας δὲ εἶναι τὰς σφαίρας, τοσούτους ὑπάρχειν καὶ τοὺς κινοῦντας θεοὺς [p] ταύτας, ὧν μέγιστον τὸν πάσας περιέχοντα, ζῶον ὄντα λογικὸν, καὶ μακάριον, [q] συνεκτικὸν καὶ προνοητικὸν τῶν οὐρανίων. Συνεστάναι δὲ τὰ ἄστρα καὶ τὸν οὐρανὸν ἐκ τοῦ αἰθέρος, τοῦτον δὲ οὔτε βαρὺν οὔτε κοῦφον, οὔτε γεννητὸν ἢ φθαρτὸν, οὔτε αὐξόμενον οὔτε μειούμενον, εἰς ἀεὶ διαμένειν ἄτρεπτον καὶ ἀναλλοίωτον, πεπερασμένον καὶ σφαιροειδῆ, καὶ ἔμψυχον, κινούμενον περὶ τὸ μέσον ἐγκυκλίως.

[488] ΦΙΛΟΛΑΟΣ, πῦρ ἐν μέσῳ περὶ τὸ κέντρον, ὅπερ ἑστίαν τοῦ παντὸς καλεῖ, καὶ Διὸς οἶκον, καὶ μητέρα θεῶν, βωμόν τε καὶ συνοχὴν, καὶ μέτρον φύσεως. Καὶ πάλιν, πῦρ ἕτερον

[m] Ἀριστοτέλης] Desumta sunt hæc Aristotelis placita partim quidem ex libris de Cœlo I. 2, 3. ubi de quinto illo corpore fuse disputat philosophus, et II. 7, etc. partim vero talia sunt, ut ex deperdito Aristotelis opere hausta esse videantur, quibus ea maxime annumeranda sunt, quæ de divina stellarum natura proponuntur. Eadem hæc Aristoteli decreta tribuit Cicero de N. D. II. 15. *Cum igitur aliorum animantium ortus in terra sit, aliorum in aqua, in aëre aliorum; absurdum esse Aristoteli videtur, in ea parte, quæ sit ad gignenda animalia aptissima, animal gigni nullum putare. Sidera autem ætherium locum obtinent; qui quoniam tenuissimus est, et semper agitatur et viget, necesse est quod animal in eo gignatur, id et sensu acerrimo et mobilitate celerrima esse. Quare cum in æthere astra gignantur, consentaneum est, in his sensum inesse et intelligentiam; ex quo efficitur in Deorum numero astra esse ducenda.* Egerat autem de his Stagirites in opere quod laudat Anonym. in vita Aristotelis, catalogum scriptorum ejus exhibens, περὶ ζώων, et quod ante oculos habuit Plut. de pl. Phil. V. 20. Ἔστι πραγματεία Ἀριστοτέλους, ἐν ᾗ τέσσαρα γένη ζώων φησὶ, χερσαῖα, ἔνυδρα, πτηνὰ, οὐράνια, nempe sidera. Unde ea quoque quæ hic habet Stobæus ex hoc libro philosophi depromta esse, merito suspicaberis. HEEREN.

[n] πρῶτόν τε] τε deest V. A.

[o] Post Ὅσας add. δὲ V. A.

[p] ταύτας] ταῦτα V.

[q] συνακτικὸν] συνεκτικὸν A.

ἀνωτάτω, τὸ περιέχον. Πρῶτον δ' εἶναι φύσει τὸ μέσον, περὶ δὲ τοῦτο δέκα σώματα θεῖα χορεύειν, [r] οὐρανὸν, πλανήτας, μεθ' οὓς ἥλιον, ὑφ' ᾧ σελήνην, ὑφ' ᾗ τὴν γῆν, ὑφ' ᾗ τὴν ἀντίχθονα, μεθ' ἃ σύμπαντα τὸ πῦρ, ἑστίας ἐπὶ τὰ κέντρα τάξιν ἐπέχον. Τὸ μὲν οὖν ἀνωτάτω μέρος τοῦ περιέχοντος, ἐν ᾧ τὴν εἰλικρίνειαν εἶναι τῶν στοιχείων,
[490] Ὄλυμπον καλεῖ· τὰ δὲ ὑπὸ τὴν τοῦ Ὀλύμπου φορὰν, ἐν ᾧ τοὺς πέντε πλανήτας μεθ' ἡλίου καὶ σελήνης τετάχθαι, [s] κόσμον. Τὸ δ' ὑπὸ τούτοις ὑποσέληνόν τε καὶ περίγειον μέρος, ἐν ᾧ τὰ τῆς φιλομεταβόλου γενέσεως, οὐρανόν. Καὶ περὶ μὲν τὰ τεταγμένα τῶν μετεώρων γίγνεσθαι τὴν σοφίαν, περὶ δὲ τὰ γενόμενα [t] τῆς ἀταξίας, τὴν ἀρετὴν, τελείαν μὲν ἐκείνην, ἀτελῆ δὲ ταύτην.

[u] ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ καὶ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ χιτῶνα [x] κύκλῳ καὶ ὑμένα περιτείνουσι τῷ κόσμῳ, διὰ τῶν [y] ἀγκιστροειδῶν [z] ἄστρων ἐμπεπλεγμένον.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ ἐνίων μὲν [a] κόσμων ἀραιὸν τὸ πέρας, ἐνίων δὲ [b] τὸ πυκνὸν, καὶ τούτων τὰ μέν τινα κινούμενα, τὰ δὲ ἀκίνητα.

[492] ΠΛΑΤΩΝ τὸν ὁρατὸν κόσμον γεγονέναι παράδειγμα τοῦ νοητοῦ [c] κόσμου. Τοῦ δὲ ὁρατοῦ προτέραν μὲν τὴν ψυχὴν, μετὰ δὲ ταύτην τὸ σωματοειδὲς, τὸ ἐκ πυρὸς μὲν καὶ γῆς

r Post οὐρανὸν add. τε V. A.

s κόσμον] κόσμος V.

t τῆς ἀταξίας] τὴν ἀταξίαν V. A.

u Λεύκιππος] Λεύχιππος A.

ib. Cicero de N. D. I. 24. *Ista enim flagitia Democriti, sive etiam ante Leucippi, esse corpuscula quædam levia, alia aspera, rotunda alia, partim autem angulata, curvata quædam et quasi adunca: ex his effectum esse cœlum et terram, nulla cogente natura, sed concursu quodam fortuito.*

x κύκλῳ] κύκλου A.

y ἀγκιστροειδῶν] ἀγγιστρ. A. V. E.

z ἄστρων] ἀτόμων conj. Heeren.

a κόσμων revocavi ex Plut. l. c. pro κόσμον. HEEREN.

b τὸ πυκνὸν] τὸ om. A. πυκνῶν V.

c κόσμου ἐξ ὁρατοῦ· πρότερον] κόσμου τοῦ δὲ ὁρατοῦ προτέρου (προτέραν A.) μὲν τὴν ψύχην etc. V. A.

πρῶτον, ὕδατος δὲ καὶ ἀέρος δεύτερον. Λέγει γοῦν ἐν [d]Τιμαίῳ οὕτως· "Τῶν δὲ δὴ τεττάρων ἓν ὅλον ἕκαστον εἴληφεν "ἡ τοῦ κόσμου σύστασις· ἐκ γὰρ πυρὸς [e]παντὸς ὕδατός "τε καὶ ἀέρος καὶ γῆς ξυνέστησεν αὐτὸν ὁ ξυνιστὰς, μέρος "οὐδὲν οὐδενὸς οὐδὲ δύναμιν ἔξωθεν ὑπολείπων, τάδε δια"νοηθεὶς, πρῶτον μὲν ἵνα ὅλον ὅτι μάλιστα ζῶον τέλειον "[f]ἐκ τελείων τῶν μερῶν εἴη, πρὸς δὲ τούτοις ἓν, ἅτε οὐχ "ὑπολελειμμένων ἐξ ὧν [g]ἄλλο τοιοῦτον γένοιτ' ἄν."

2

ΟΜΗΡΟΣ τὸν αἰθέρα τοῦ ἀέρος ὑψηλότερον εἶναί φησιν, εἴρηκε δὲ οὕτως· p. 5..

> Εἰς ἐλάτην ἀναβὰς [a]περιμήκετον, ἣ τότ' ἐν Ἴδῃ
> μακροτάτη [b]πεφυυῖα δι' ἠέρος αἰθέρ' ἵκανεν.

Ἐπέκεινα [c]δὲ τοῦ αἰθέρος τὸν οὐρανὸν ὑπάρχειν ἀπεφήνατο· λέγει γὰρ τοιῶσδε·

> Ὣς οἱ μὲν μάρναντο, [d]σιδήρειος δ' [e]ὀρυμαγδὸς
> χάλκεον οὐρανὸν ἷκε δι' αἰθέρος ἀτρυγέτοιο.

Ἐπὶ πᾶσι δὲ τὸν Ὄλυμπον ὑπάρχειν κατ' ἐξοχήν τινα καὶ θειότητα· φησὶ γὰρ οὕτως·

[494] Ἠερίη δ' ἀνέβη μέγαν οὐρανὸν Οὔλυμπόν τε.

Τὸ γὰρ ἀπωτάτω τῆς [f]γῆς, καὶ μήτε τὴν σκιὰν αὐτῆς μήτε τὰς ἀναθυμιάσεις προσδεχόμενον, ὡς ἀειλαμπὲς καὶ

[d] Verba Platonis leguntur in Timæo Op. III. p. 32.

[e] παντὸς] ὁ παντὸς V. A.

[f] ἐκ τελείων] ἐκτελεῖ A.

[g] ἄλλοι τοιοῦτοι γένοιντ' ἂν] ἄλλο τοιοῦτο γένοιτ' ἂν V. τοιοῦτον γένοιτ' A. E. Supra ὑπολελειμμένον A.

2.

Primum Homeri testimonium desumtum est ex Il. ξ'. v. 287. Alterum ex Il. ρ'. v. 424. 425. ubi pro ἷκε legitur ἵκε. Tertium denique Il. α'. 497. HEEREN.

[a] περιμήκετον] περιμήκεστον V. A.

[b] πεφυυῖα δι' ἄερος] πεφυκυῖα δι' ἤερος V. A.

[c] δὲ om. A.

[d] μ. σιδήρειος] μαρίαντο σίδηρος A.

[e] ὀρυμαγδὸς] ὀρυγμαδὸς A.

[f] Post γῆς add. καὶ μήτε τὴν σκιὰν αὐτῆς V. A. E.

ὁλολαμπὲς Ὄλυμπον οἱ παλαιοὶ προσηγόρευσαν. Τοῦτο δὲ καὶ δι᾽ αὐτῶν [g]δηλοῦται ἐν οἷς φησι [h]τοιῶσδε·

> [i]Οὔλυμπόνδ᾽, ὅθι φασὶ θεῶν ἕδος ἀσφαλὲς αἰεὶ
> ἔμμεναι, οὔτ᾽ ἀνέμοισι τινάσσεται οὔτε ποτ᾽ ὄμβρῳ
> δεύεται, [j]οὐδὲ χιὼν ἐπικίδναται, ἀλλὰ μάλ᾽ αἴθρη
> πέπταται ἀννέφελος, λευκὴ δ᾽ [k]ἐπιδέδρομεν αἴγλη.

3

ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ κόσμον ἕνα. Οὐ μέντοι τὸ πᾶν εἶναι τὸν κόσμον, ἀλλὰ ὀλίγον τι τοῦ [a]παντὸς μέρος· τὸ δὲ λοιπὸν, ὕλην.

[496] [b]ΟΙ ΜΕΝ ἈΠΟ ΤΗΣ [c]ΣΤΟΑΣ ἕνα κόσμον ἀπεφήναντο, ὃν δὴ καὶ τὸ πᾶν ἔφασαν εἶναι [d]τὸ σωματικόν.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ, ὁ καθηγητὴς Ἐπικούρου, φησὶν ἄτοπον εἶναι ἐν μεγάλῳ πεδίῳ ἕνα [e]στάχυν γεννηθῆναί, καὶ ἕνα κόσμον ἐν τῷ ἀπείρῳ. Ὅτι δὲ ἄπειρος κατὰ τὸ πλῆθος, δῆλον ἐκ τοῦ [f]ἄπειρα τὰ αἴτια εἶναι. Εἰ γὰρ ὁ κόσμος πεπερασμένος, τὰ δ᾽ αἴτια πάντα ἄπειρα ἐξ ὧν [g]ὅδε ὁ κόσμος γέγονεν, ἀνάγκη ἀπείρους εἶναι. Ὅπου γὰρ τὰ αἴτια [h]πάντα, ἐκεῖ καὶ [i]τὰ ἀποτελέσματα. Αἴτια δὲ, ἤτοι αἱ ἄτομοι [k]ἢ τὰ στοιχεῖα.

ΘΑΛΗΣ, Πυθαγόρας, Ἐμπεδοκλῆς, Ἔκφαντος, Παρμενίδης, Μέλισσος, Ἡράκλειτος, Ἀναξαγόρας, Πλάτων, Ἀριστοτέλης, Ζήνων, ἕνα τὸν κόσμον.

[g] δηλοῦνται] δηλοῦται V. A. E.
[h] Verba τοιῶσδε—ὅθι φασὶ des. A. E.
[i] Versus hi leguntur Od. ζ΄. 42. etc. Proximo versu ὄμβρῳ revocavi ex Homero pro ὄμβρον ap. Cant. A. HEEREN.
[j] Verba οὐδὲ—πέπταται des. A. E.
[k] ἐπιδέδρομεν] ἐπιδέδωκεν A.

3.

[a] Post παντὸς add. κόσμου A.
[b] Στωϊκοὶ] Οἱ μὲν οὖν ἀπὸ τῆς στοᾶς V. A.
[c] στωᾶς A.
[d] τὸ] Sic Plutarch. τὸν A. Cant.
[e] ἀστάχυν] στάχυν V. A.
[f] ἄπειρα τὰ] ἀπείρατα A.
[g] ὅδε edidi ex Plut. et Gal. pro δὲ ap. A. Cant. HEEREN.
[h] πάντα om. A.
[i] τὰ ἀποτελέσματα] τὰ om. A. Cant.
[k] καὶ τὰ] ἢ τὰ V. A. E.

ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ, Ἀναξιμένης, Ἀρχέλαος, Ξενοφάνης, Διογένης, Λεύκιππος, Δημόκριτος, Ἐπίκουρος, ἀπεί-
[498] ρους κόσμους ἐν τῷ ἀπείρῳ, κατὰ πᾶσαν περιαγωγήν.

[l]Τῶν δ' ἀπείρους [m]ἀποφῃναμένων τοὺς κόσμους,

ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ τὸ ἶσον αὐτοὺς ἀπέχειν ἀλλήλων,

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ ἄνισον [n]εἶναι τὸ μεταξὺ τῶν κόσμων διάστημα.

[o]ΠΛΑΤΩΝ ἕνα τὸν κόσμον ἀπεφήνατο· Λέγει γὰρ ἐν τῷ Τιμαίῳ οὕτως· "Πότερον οὖν ὀρθῶς ἕνα οὐρανὸν προσειρήκαμεν, ἢ πολλοὺς καὶ ἀπείρους λέγειν [p]ἦν ὀρθότερον; "Ἕνα· εἴπερ κατὰ τὸ παράδειγμα δεδημιουργημένος ἔσται. "Τὸ γὰρ περιέχον πάντα ὁπόσα νοητὰ ζῶα μεθ' ἑτέρου "δεύτερον οὐκ [q]ἄν ποτε εἴη. Πάλιν γὰρ [r]ἂν ἕτερον εἶναι "τὸ περὶ ἐκείνω δέοι ζῶον, οὗ μέρος ἂν [s]εἴτην ἐκείνω· καὶ "οὐκ ἂν ἔτι ἐκείνοιν, ἀλλ' ἐκείνῳ τῷ περιέχοντι τόδ' ἂν "[t]ἀφωμοιωμένον λέγοιτο ὀρθότερον. Ἵνα οὖν τόδε κατὰ "τὴν μόνωσιν ὅμοιον [u]ᾖ τῷ [x]παντελεῖ ζώῳ, διὰ ταῦτα οὔτε "δύο οὔτε ἀπείρους ἐποίησεν ὁ [y]ποιῶν [z]κόσμους, ἀλλ' εἷς "[a]ὅδε μονογενὴς [b]οὐρανὸς γεγονὼς ἔστι τε καὶ [c]ἔτι "ἔσται."

[l] Τῶν δ'] δ' om. A. Cant.
[m] ἀποφῃναμένων] ἀπεφῃναμένων V.
[n] εἶναι deest V. A.
[o] Verba Platonis exstant in Timæo Op. III. p. 31.
[p] ἦν] ᾖ A.
[q] ἄν ποτε] ἄμποτε V.
[r] ἂν om. A.
[s] ἤτην] εἴη τὴν A. i. e. εἴτην.
[t] –μοιώμενον] –μοιούμενον A.
[u] ἦν] ᾖ V. A.
[x] παντελεῖ] ἀτελεῖ A. Cant.
[y] θεὸς] ποιῶν A. Cant.
[z] κόσμου] κόσμους V. A.
[a] ὁ δὲ] ὅ γε A.
[b] κόσμος] οὐρανὸς A. Cant.
[c] ἔσται] ἔτ' ἔσται V. A.

Κεφ. κγ΄.

[500] ΠΕΡΙ [a]ΤΗΣ ΟΥΡΑΝΟΥ ΟΥΣΙΑΣ ΚΑΙ ΔΙΑΙΡΕΣΕΩΣ. 55

ʼΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ καὶ ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ τὴν περιφορὰν τὴν ἐξωτάτω τῆς γῆς εἶναι τὸν οὐρανόν.

ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ στερέμνιον εἶναι τὸν οὐρανὸν ἐξ ἀέρος p. 53. παγέντος ὑπὸ πυρὸς [b]κρυσταλλοειδῶς, τὸ πυρῶδες καὶ τὸ ἀερῶδες [c]ἐν ἑκατέρῳ τῶν ἡμισφαιρίων περιέχοντα.

ʼΑΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ ἐκ θερμοῦ καὶ ψυχροῦ μίγματος.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ, Ἡράκλειτος, Στράτων, Ζήνων, πυρινὸν εἶναι τὸν οὐρανόν.

ʼΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἐκ πέμπτου σώματος. Λέγει γοῦν
[502] ἐν τοῖς περὶ τῆς [d]Φυσικῆς ʼΑκροάσεως [[e]καὶ] αὐτοῦ λόγοις οὕτως· συνεστάναι δὲ τὰ ἄστρα καὶ τὸν οὐρανὸν ἐκ τοῦ αἰθέρος· τοῦτον δὲ οὔτε βαρὺν οὔτε κοῦφον, οὔτε γεννητὸν οὔτε φθαρτὸν, οὔτε [f]αὐξόμενον οὔτε μειούμενον [g]εἰς ἀεὶ διαμένειν ἄτρεπτον καὶ ἀναλλοίωτον, πεπερασμένον καὶ σφαιροειδῆ, καὶ ἔμψυχον, κινούμενον περὶ τὸ μέσον ἐγκυκλίως.

ΘΑΛΗΣ, Πυθαγόρας καὶ οἱ ἀπʼ αὐτοῦ, μεμερίσθαι τὴν τοῦ παντὸς οὐρανοῦ σφαῖραν εἰς κύκλους πέντε, οὕς τινας προσαγορεύουσι ζώνας· καλεῖται δʼ αὐτῶν ὁ μὲν ἀρκτικός τε καὶ [h]ἀειφανὴς, ὁ δὲ θερινὸς τροπικὸς, ὁ δὲ ἰσημερινὸς, ὁ

1.

[a] ΤΗΣ ΟΥΡΑΝΟΥ] τοῦ οὐρανοῦ V.

[b] κρυσταλλ.] καὶ κρυστ. V. A.

[c] ἐν ἑκατέρῳ] ἐν om. A. Cant. Addidit Heeren. ex Plutarch. Plac. II. 11.

[d] φυσικῆς ἀκροάσεως] φύσεως κ. ἀκροάσεως V.

[e] [καὶ,] quod sensum turbat, uncinis inclusi, procul dubio enim delendum est. Placita, Aristoteli hic tributa, supra jam iisdem verbis exhibita sunt p. 486. In *physicorum libris*, quos laudat noster, nil tale legitur. HEEREN.

[f] αὐξόμενον] αὐξούμενον A.

[g] ἐς A.

[h] Arist. de Mundo c. 2. τῶν δὲ δύο πόλων ὁ μὲν ἀεὶ φανερός ἐστιν, ὑπὲρ κορυφὴν ὤν, κατὰ τὸ βόρειον κλίμα ἀρκτικὸς καλούμενος· ὁ δὲ ὑπὸ γῆν ἀεὶ κατακέκρυπται, κατὰ τὸ νότιον ἀνταρκτικὸς καλούμενος. Cf. et Arat. Phænom. v. 26. et ibi Schol.

δὲ χειμερινὸς τροπικὸς, ὁ δὲ [i] ἀνταρκτικός τε καὶ ἀφανής. Λοξὸς δὲ ἐν τοῖς τρισὶ μέσοις ὁ καλούμενος ζωδιακὸς [k] ὑποκέκλιται, [l] παραψαύων τῶν μέσων τριῶν. Πάντας δὲ αὐτοὺς ὁ μεσημβρινὸς πρὸς ὀρθὰς ἀπὸ τῶν ἄρκτων ἐπὶ τὸ ἀντικρὺ τέμνει.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ πρῶτος ἐπινενοηκέναι λέγεται τὴν λόξωσιν τοῦ ζωδιακοῦ κύκλου· ἥντινα Οἰνοπίδης ὁ Χῖος ἐπίνοιαν ὡς ἰδίαν σφετερίζεται.

Κεφ. κδ΄.

[506] ΠΕΡΙ ΟΥΣΙΑΣ ΑΣΤΡΩΝ ΚΑΙ ΣΧΗΜΑΤΩΝ, ΚΙΝΗΣΕΩΣ ΤΕ ΚΑΙ ΕΠΙΣΗΜΑΣΙΑΣ.

ΘΑΛΗΣ γεώδη μὲν, [a] ἔμπυρα δὲ τὰ ἄστρα.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ πύρινα ἐκ τοῦ πυρώδους, ὅπερ ὁ [b] ἀὴρ ἐν ἑαυτῷ περιέχων [c] ἐξανέλαμψε, ἤτοι ἐξανέθλιψε, κατὰ τὴν πρώτην διάκρισιν· καὶ τοὺς μὲν ἀπλανεῖς ἀστέρας συνδεδέσθαι τῷ κρυστάλλῳ, τοὺς δὲ πλανήτας [d] ἀνεῖσθαι.

[508] ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ τὸν περικείμενον αἰθέρα πύρινον μὲν εἶναι κατὰ τὴν οὐσίαν, τῇ δὲ εὐτονίᾳ τῆς περιδινήσεως ἀναρπάσαντα πέτρους ἀπὸ τῆς γῆς [e] καὶ καταφλέξαντα τούτους ἠστερωκέναι· ἀπ᾿ ἀνατολῶν δὲ ἐπὶ δυσμὰς φέρεσθαι πάντας τοὺς ἀστέρας.

Ὑψηλότερος γάρ ἐστι, (nempe polus arcticus) καὶ ἀειφανὴς, οὐδέποτε δυόμενος. HEEREN.

[i] ἀνταρκτικὸς] ἀντάρτικος A.

[k] ὑποκέκλιται edidi pro ὑποκέκληται, quod ap. Cant. et in codd. nullo sensu legitur. Habet Plut. ὑποβέβληται, παρεπιψαύων τῶν μ. τρ. mox vero pro τὸ ἀντικρὺ legit τὸ ἀντίξουν. HEEREN. Plutarchi lectionem defendit Bakius ad Cleomed. p. 283.

[l] παραψαύων] –ον V.

I.

[a] ἔμπυρα] ἔμπειρα V.

[b] ἀὴρ] αἰθὴρ Plut. Plac. II. 13.

[c] Post ἐξανέλαμψε add. ἤτοι ἐξανέθλιψε V. A. περιέχων ἐξέθλιψε Plutarch.

[d] ἀνεῖσθαι] αὐεῖσθαι V.

[e] καὶ καταφ.] καὶ om. A. ἀναρπάζοντα et ἠστερικέναι Plutarch.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ [f]κισσηροειδῆ τὰ ἄστρα, διαπνοίας δὲ αὐτὰ νομίζει τοῦ κόσμου, εἶναι δὲ διάπυρα· συμπεριφέρεσθαι δὲ τοῖς φανεροῖς ἄστροις ἀφανεῖς λίθους, καὶ παρ' αὐτὸ τοῦτ' ἀνωνύμους· πίπτοντα δὲ πολλάκις ἐπὶ τῆς γῆς σβέννυσθαι· καθάπερ [g]τὸν ἐν Αἰγὸς ποταμοῖς πυρωδῶς κατενεχθέντα ἀστέρα πέτρινον[h].

[i]ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ πέτρους· καὶ πρῶτα μὲν τὰ ἀπλανῆ, μετὰ δὲ ταῦτα τοὺς πλανήτας.

[510] ᾿ΑΡΧΕΛΑΟΣ μύδρους ἔφησεν εἶναι τοὺς ἀστέρας, διαπύρους δέ.

᾿ΑΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ [k]πιλήματα ἀέρος τροχοειδῆ, πυρὸς ἔμπλεα, κατά τι μέρος ἀπὸ στομίων [l]ἐκπνέοντα φλόγας· καὶ ἀνωτάτω μὲν πάντων τὸν ἥλιον τετάχθαι, [m]μετ' αὐτὸν δὲ τὴν σελήνην· ὑπὸ δὲ αὐτοὺς τὰ ἀπλανῆ τῶν ἄστρων καὶ τοὺς πλανήτας.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ ὁμοίως περὶ σχήματος τῶν ἀστέρων καὶ αὐτὸς ἀπεφήνατο.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ καὶ ῾ΗΡΑΚΛΕΙΤΟΣ πιλήματα πυρὸς τὰ ἄστρα· [n]τρέφεσθαι δὲ τοὺς ἀστέρας ἐκ τῆς ἀπὸ γῆς ἀναθυμιάσεως.

᾿ΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ πυρίνην μὲν τὴν φύσιν τῶν [o]ἀστέρων, παρέχειν δέ τινα καὶ γεώδη σώματα, συμπεριφερόμενα

[f] κισσηροειδῆ] κισηροειδῆ A. Cant. κισσηρώδη Plut.

[g] τὸν] τῶν A.

[h] Ostendebatur nempe ad Ægospotamon in Thracia lapis ex cœlo delapsus, cujus lapsum prædixerat Anaxagoras. Diog. II. 10. Φασὶ δ' αὐτὸν προειπεῖν τὴν περὶ Αἰγὸς ποταμὸν γενομένην τοῦ λίθου πτῶσιν, ὃν εἶπεν ἐκ τοῦ ἡλίου πεσεῖσθαι. Cf. ibi interprett. qui aliorum testimonia collegerunt. Celebris enim adeo fuit hæc in antiquitate fabula, ut in ipso marmore Pario mentio ejus injecta sit: Ep. 58. ἀφ' οὗ ἐν Αἰγὸς ποταμοῖς ὁ λίθος ἔπεσε—ἔτη CCV. i. e. 469. a. C. HEEREN.

[i] Δημόκριτος add. πέτρους V. A.

[k] πιλήματα] πιλήματος V.

[l] ἐκπνέοντα] ἐμπνέοντα A.

[m] μετ' αὐτὸν add. δὲ V. A.

[n] στρέφεσθαι] τρέφεσθαι V. A.

[o] ἄστρων] ἀστέρων A.

τούτοις, ἀόρατα· ἥλων δὲ δίκην καταπεπηγέναι τὰ ἄστρα τῷ κρυσταλλοειδεῖ· τὰς δ' ἐπισημασίας γίγνεσθαι διὰ τὸν ἥλιον μόνον· οὐχ ὑπὸ τὴν γῆν δὲ, ἀλλὰ περὶ αὐτὴν [p]στρέφεσθαι τοὺς ἀστέρας.

ΠΛΑΤΩΝ ἐκ μὲν τοῦ πλείστου [q]γένους πυρίνους, μετέ- p. 54.
[512] χοντας δὲ καὶ τῶν ἄλλων στοιχείων· κοινῶς δὲ τὸν κόσμον ὅλον καὶ τὰ ἄστρα ἐξ αὐτοῦ τρέφεσθαι. [r]Καὶ πρῶτον μετά γε τὴν τῶν ἀπλανῶν θέσιν [s]Φαίνοντα λεγόμενον τὸν τοῦ [t]Κρόνου, δεύτερον Φαέθοντα τὸν τοῦ Διὸς, τρίτον Πυρόεντα, τὸν τοῦ [u]Ἄρεος, τέταρτον Ἑωσφόρον, τὸν τῆς Ἀφροδίτης, πέμπτον [x]Στίλβοντα, τὸν τοῦ Ἑρμοῦ, ἕκτον ἥλιον, ἕβδομον σελήνην. Τὰς δὲ ἐπισημασίας, τάς τε χειμερινὰς καὶ τὰς θερινὰς, κατὰ τὰς τῶν ἄστρων ἐπιτολάς [y]τε καὶ δυσμὰς γίγνεσθαι.

[z]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἐκ τοῦ πέμπτου σώματος γεγενῆσθαι τὰ ἄστρα· μὴ δεῖσθαι δὲ τὰ οὐράνια τροφῆς, οὐ γὰρ φθαρτὰ, ἀλλ' ἀΐδια εἶναι· [a]πάντα δὲ κινεῖσθαι, τὰ μὲν πρὸς ἡμῶν καλούμενα [b]πλανήτας, [c]ὑπὸ τὸν ζωδιακὸν κύκλον, λοξὸν ὄντα, καὶ τῶν τροπικῶν ἐφαπτόμενον, τὰ δὲ ἀπλανῆ ἀπὸ τοῦ ἀεὶ φανεροῦ παρήκοντα μέχρι τοῦ ἀφανοῦς· οὐκ ὀλίγα δὲ αὐτῶν τῆς γῆς εἶναι μείζονα.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ ἐκ νεφῶν μὲν [d]πεπυρωμένων· σβεννυ-

[p] στρέφεσθαι] τρέφεσθαι V.

[q] γένους] Leg. μέρους cum Plutarcho. Respici ad Platonis Epin. p. 981. monet Heeren.

[r] Καὶ πρῶτον] Cum seqq. conf. Aristot. de Mundo c. 2.

[s] Φαίνοντα] φαίνωνα V. A. Leg. cum Plutarch. φαίνοντα, v. Arist. de Mund. c. 2.

[t] Docet hæc Plato in Epinomi p. 987. HEEREN.

[u] ἀέρος] Ἄρεος V. A.

[x] Στίλβωνα] Sic A. Cant. Leg. Στίλβοντα. Vid. Kuster. ad Suid. v. Ἐποχή.

[y] τε om. A.

[z] Eadem hæc Aristotelis placita supra jam exposita sunt cap. XXI. 6. p. 450. HEEREN.

[a] In hisce auctor ante oculos habuit librum de Mundo, Op. I. p. 465. HEEREN.

[b] πλατήτας A. Post ἡμῶν add. καλούμενα V. A.

[c] ἀπὸ] ὑπὸ V. A. P.

[d] ἐκπυρωμένων] πεπυρωμένων V. A.

[514] μένους δὲ καθ' ἑκάστην ἡμέραν ἀναζωπυρεῖν νύκτωρ καθάπερ τοὺς ἄνθρακας. Τὰς γὰρ ἀνατολὰς καὶ τὰς δύσεις ἐξάψεις εἶναι καὶ [e]σβέσεις· τοὺς δ' ἐπὶ τῶν πλοίων φαινομένους οἷον ἀστέρας, οὓς καὶ [f]Διοσκούρους καλοῦσί τινες, νεφέλια εἶναι, κατὰ τὴν ποιὰν κίνησιν παραλάμποντα.

ἩΡΑΚΛΕΙΔΗΣ καὶ οἱ [g]ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΟΙ ἕκαστον τῶν ἀστέρων κόσμον [h]ὑπάρχειν, γῆν περιέχοντα ἀέρα [i]τε ἐν τῷ ἀπείρῳ αἰθέρι. Ταῦτα δὲ τὰ δόγματα ἐν τοῖς Ὀρφικοῖς φέρεσθαι, κοσμοποιοῦσι γὰρ ἕκαστον τῶν ἀστέρων.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ οὐδὲν ἀπογινώσκει τούτων, ἐχόμενος τοῦ ἐνδεχομένου.

ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ κατὰ μιᾶς ἐπιφανείας οἴεται κεῖσθαι
[516] τοὺς ἀστέρας, οἱ δ' ἄλλοι Στωϊκοὶ πρὸ τῶν ἑτέρων τοὺς ἑτέρους ἐν ὕψει καὶ βάθει.

ΤΩΝ ΜΑΘΗΜΑΤΙΚΩΝ τινὲς μὲν ὡς [j]Πλάτων φασὶν εἶναι τὴν τάξιν τῶν ἀστέρων, τινὲς δὲ μέσον πάντων τὸν ἥλιον, ταυτὸ δὲ πεπονθέναι τῷ Ἑωσφόρῳ τὸν [k]Στίλβοντα, ἰσοδρομεῖν δὲ αὐτοὺς τῷ ἡλίῳ, καὶ συμπεριφέρεσθαι αὐτῷ· καὶ τότε μὲν προανατέλλοντα Ἑωσφόρον φαίνεσθαι, τότε δ' ἐπικαταδυόμενον, [l]Ἕσπερον καλεῖσθαι· τοὺς δὲ πλανήτας τοῖς ἀπλανέσιν ἀπὸ δυσμῶν ἐπ' ἀνατολὰς ἀντιφέρεσθαι. [m]Τοῦτο δὲ συνομολογεῖ καὶ Ἀλκμαίων.

[n]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ δὲ ὑπὸ τῶν σφαιρῶν, ὑφ' ὧν ἕκαστα

e σβέσεις] σβύσεις A.

f Διοσκούρους] Διοσκόρους A.

g Πυθαγόρειοι] Πυθαγόριοι A.

h ὑπάρχειν] ὑπέχειν V.

i τε addidi ex Plut. ut nexus constaret. Ceterum in Plut. leg. γῆν περιέχοντα, ἀέρα τε καὶ αἰθέρα ἐν τῷ ἀπείρῳ αἰθέρι. HEEREN.

j Πλάτων] Sic Plutarch. Pl. II. 15. πλατεῖαν Cant. A. Mox ταυτὸν A. Cant.

k Στίλβοντα] στίλβωνα A. στίλβονα Cant.

l Copiosius Plut. II. 16. Ἀλκμαίων καὶ οἱ μαθηματικοὶ τοὺς πλανήτας τοῖς ἀπλανέσιν ἐναντίους· ἀπὸ γὰρ δυσμῶν ἐπ' ἀνατολὰς ἀντιφέρεσθαι. HEEREN.

m Τοῦτο] τούτω A.

n Desumta sunt hæc ex Arist. de Cœl. II. 8. Aristoteles nempe sideribus non proprium motum tribuebat, sed circulis quibus infixa hærerent. Λείπεται τοὺς μὲν κύκλους κινεῖσθαι, τὰ δὲ ἄστρα ἠρεμεῖν, καὶ ἐνδεδεμένα τοῖς κύκλοις φέρε-

συμβέβηκε, καὶ ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ ὑπὸ τῶν κύκλων καὶ τῶν σφαιρῶν, ἐφ᾽ ὧν ἕκαστος βέβηκε, φέρεσθαι.

Οἱ μὲν ἄλλοι [[o]ΣΤΩΙΚΟΙ] σφαιρικοὺς [p]αὐτοὺς, Κλεάνθης δὲ κωνοειδεῖς.

[518] ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ πρῶτον μὲν τάττει τὸν Ἑῶον, τὸν αὐτὸν δὲ νομιζόμενον ὑπ᾽ αὐτοῦ καὶ Ἕσπερον, ἐν τῷ αἰθέρι· μεθ᾽ ὃν τὸν ἥλιον, [q]ὑφ᾽ ᾧ τοὺς ἐν τῷ πυρώδει ἀστέρας, [r]ὅπερ οὐρανὸν καλεῖ.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ ἅπαντας τοὺς ἀπλανεῖς ἀστέρας ὑπὸ τοῦ ἡλίου προσλάμπεσθαι.

[s]ΣΤΡΑΤΩΝ καὶ [t]αὐτὸς τὰ ἄστρα ὑπὸ τοῦ ἡλίου φωτίζεσθαι.

ΔΙΟΤΙΜΟΣ Τύριος, ὁ [u]διακρίτιος, τὴν αὐτὴν τούτοις [x]εἰσηνέγκατο γνώμην.

ἘΥΔΟΞΟΣ καὶ ἌΡΑΤΟΣ τὰς ἐπισημασίας κατὰ τὰς τῶν [y]ἄστρων ἐπιτολὰς γίγνεσθαι. Λέγει γοῦν Ἄρατος ἐν τοῖς [z]Φαινομένοις οὕτως·

Αὐτὸς γὰρ τά γε [a]σήματ᾽ ἐν οὐρανῷ ἐστήριξεν
ἄστρα διακρίνας· ἐσκέψατο δ᾽ εἰς ἐνιαυτὸν
ἀστέρας, οἵ [b]κε μάλιστα τετυγμένα [c]σημαίνοιεν.

σθαι. Et paulo ante: οὕτω δ᾽ οὐκ ἂν ἔχοιεν οἰκείαν κίνησιν, ἀλλὰ φέροιντο ἂν ὑπὸ τῶν κύκλων. Sphæræ itaque a Stob. pro cyclis positæ sunt. HEEREN.

[o] Στωϊκοὶ addidi ex Plut. apud quem, Οἱ Στωϊκοὶ σφαιρικοὺς τοὺς ἀστέρας——Κλεάνθης δὲ κωνοειδεῖς. HEEREN.

[p] αὐτοὺς] τούτους V. om. A.

[q] ὑφ᾽ ᾧ] ἐφ᾽ ᾧ V.

[r] ὅπερ] ὥσπερ V.

[s] Stratonis placitum solus Stob. servavit. Additur καὶ αὐτὸς, quod Strato princeps fere inter antiquos physicos haberetur, cf. Diog. V. 38. HEEREN.

[t] αὐτὸς] αὐτὸν A.

[u] In διακρίτιος quid lateat, difficile dictu est. Scripserat Diotimus *de veritatis criteriis*, cf. Sext. Emp. VII. s. 140. Fieri inde potuit, ut ipsi cognomen ὁ διακρίτικος, vel simile, (nam ὁ διακρίτιος ne Græcum quidem est,) adhæserit. HEEREN. διοκρίτιος A.

[x] εἰσενεγκ.] εἰσηνέγκατο A. V.

[y] ἄστρων] ἀστέρων V.

[z] Sunt verba Arati ex Phænom. v. 10.

[a] σήματ᾽] σώματ᾽ V. A.

[b] κε deest V. A.

[c] σημαίνοιεν] σημαίνουσιν V. A. E

Ἄστρον δὲ εἶναί φησιν ὁ ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ σῶμα θεῖον ἐξ αἰθέρος συνεστηκὸς, λαμπρὸν καὶ πυρῶδες, οὐδέποτε στά- P. 55. σιν ἔχον, ἀλλ' ἀεὶ φερόμενον ἐγκυκλίως· ἰδίως δὲ τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνην ἄστρα λέγεσθαι· διαφέρειν δὲ ἀστέρα
[520] ἄστρου· εἰ μὲν γάρ τίς ἐστιν ἀστὴρ, καὶ ἄστρον ὀνομασθή- σεται δεόντως, οὐ μὴν ἀνάπαλιν.

Ἀνατολὴν δ' εἶναί φησιν ὁ ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ ἐν ταῖς Φυσι- καῖς Τέχναις, ὑπεροχὴν ἄστρου ὑπὲρ γῆς, δύσιν [d]δὲ [e]κρύψιν ἄστρου [f]ὑπὸ γῆν. Γίγνεσθαι δὲ ἅμα τῶν αὐτῶν ἀνατολὴν καὶ δύσιν πρὸς ἄλλους τε [g]καὶ ἄλλους. Ἐπιτολὴν δ' ἄστρου ἅμα ἡλίῳ ἀνατολὴν, δύσιν δὲ τὴν ἅμα ἡλίῳ δύσιν. Διχῶς γὰρ λέγεσθαι δύσιν, τὴν μὲν κατὰ τὴν ἀνατολὴν, τὴν δὲ κατὰ τὴν ἐπιτολήν. Κυνὸς δ' ἐπιτολὴν ἅμα [h]ἡλίῳ κυνὸς ἀνατολὴν, δύσιν δὲ ἅμα ἡλίῳ κυνὸς ἀπόκρυψιν εἰς γῆν. Τὸν δ' ὅμοιον λόγον εἶναι καὶ ἐπὶ τῆς πλειάδος.

ἈΠΟΛΛΟΔΩΡΟΣ ἐν τῷ δευτέρῳ Περὶ Θεῶν, [i]Πυθαγο- ρείαν εἶναι [k]τὴν περὶ [l]τοῦ τὸν αὐτὸν εἶναι Φωσφόρον τε καὶ Ἕσπερον δόξαν.

Κεφ. κέ.

[522] ΠΕΡΙ ΟΥΣΙΑΣ ἩΛΙΟΥ, ΚΑΙ ΜΕΓΕΘΟΥΣ, [a]ΣΧΗΜΑΤΟΣ ΤΕ ΚΑΙ ΤΡΟΠΩΝ, ΚΑΙ ἘΚΛΕΙΨΕΩΣ, ΚΑΙ ΣΗΜΕΙΩΝ, ΚΑΙ ΚΙΝΗΣΕΩΣ.

1 ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ ἐκ [b]νεφῶν πεπυρωμένων εἶναι τὸν ἥλιον,

[d] καὶ post δὲ deest V. A.
[e] κρύψιν] κρίσιν V. A.
[f] ὑπὸ γῆν] ὑπὲρ γῆς A.
[g] καὶ ἄλλους] ἄλλως ed. Heeren.
[h] Post ἡλίῳ add. κυνὸς ἀνατολὴν δύσιν δὲ ἅμα ἡλίῳ, κυνὸς ἀπόκρυψιν A.
[i] Πυθαγορείαν] Πυθαγορίαν A.
[k] τὴν, quod sequens δόξαν postulat, edidi pro τὸ ap. Cant. [et A.] Plane potius illud delendum censet Heyne Comm. Apollod. p. 1044. HEEREN.
[l] τούτων] τοῦ τὸν V. A.

1.

[a] καὶ σχήματος] σχήματός τε V. E. σχήματόν τε A.
[b] Plut. Plac. II. 20. habet νέφος πεπυρωμένον. Galen. ἀναπτομένην

ἔκλειψιν δὲ γίγνεσθαι κατὰ σβέσιν· ἕτερον δὲ πάλιν ταῖς ἀνατολαῖς γίγνεσθαι. Παριστόρηκε δὲ καὶ ἔκλειψιν ἡλίου ἐφ' ὅλον μῆνα, καὶ πάλιν [c]ἐντελῆ, ὥστε τὴν ἡμέραν νύκτα φανῆναι.

[d]ΘΕΟΦΡΑΣΤΟΣ ἐν τοῖς Φυσικοῖς γέγραφεν, ἐκ πυριδίων μὲν [e]τῶν συναθροιζομένων ἐκ τῆς ὑγρᾶς ἀναθυμιάσεως, συναθροιζόντων δὲ τὸν ἥλιον.

[524] ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ κύκλον εἶναι ὀκτὼ καὶ εἰκοσαπλασίονα τῆς γῆς, [f]ἁρματείῳ τροχῷ παραπλήσιον, ἔχοντα κοίλην περιφέρειαν, πλήρη πυρὸς, κατὰ μέρος ἐκφαίνουσαν διὰ στομίου τὸ πῦρ, ὥσπερ διὰ πρηστῆρος. Καὶ τὸν μὲν ἥλιον ἶσον εἶναι τῇ γῇ· τὸν δὲ κύκλον ἀφ' οὗ τὴν ἐκπνοὴν ἔχει, καὶ ὑφ' οὗ περιφέρεται, εἶναι τοῦ προειρημένου μεγέθους. Γίγνεσθαι δὲ τὴν ἔκλειψιν, τοῦ στομίου τῆς τοῦ πυρὸς ἐκπνοῆς [g]ἀποκλειομένου.

ἈΝΑΞΙΜΕΝΗΣ πύρινον ὑπάρχειν τὸν ἥλιον [h]ἀπεφήνατο, ὑπὸ πεπυκνωμένου [i]δὲ ἀέρος καὶ ἀντιτύπου ἐξωθούμενα τὰ ἄστρα τὰς τροπὰς ποιεῖσθαι· [k]πλατὺν δ' εἶναι τῷ σχήματι.

νεφέλην. In reliquis consentiunt cum Stob. Forte ap. hunc olim lectum fuit ἐκ νέφους πεπυρωμένου. HEEREN.

[c] ἐντέλειν] ἐντέλει V. A. ἐντελῆ Plutarch.

[d] Quæ hic ex Theophrasti Physicis desumta dicuntur, a Plut. Gal. et Eus. adhuc tribuuntur Xenophani; habent enim illi: Ξενοφάνης ἐκ πυριδίων etc. ἢ νέφος πεπυρωμένον. Theophrasti quæ sententia fuerit, non amplius constat; fieri sane potuit, ut ille ipse eo loco non suam sed alterius sententiam proposuerit. Clariora quam nostra sunt quæ habet Galen. Ξενοφάνης ἐκ τῶν ξηρῶν ἄτμων τὰ πυρίδιά τινα συνέρχεσθαι, ἃ εἰς τὸ ἓν σῶμα καθεστηκότα τὸν ἥλιον συνιστῶσι. Apud Stob. τῶν dedi pro τὴν, ex codd. V. A. ἐκ autem, sensu flagitante, addidi ex Plut. —Euseb. plenius legit ἐκ πυριδ. τῶν φαινομένων, συναθροιζομένων etc. HEEREN.

[e] τὴν συναθρ.] τῶν συναθρ. V. A.

[f] ἀρτίῳ] ἁρματίῳ V. A.

[g] ἀποκλειομένου] ἀπεκλειομένου A.

[h] ἀπεφήνατο] ἀπεφαίνετο A.

[i] δὲ ἀέρος] καὶ ἀέρος V.

[k] πλατὺν εἶναι] πλατὺν δ' εἶναι V. A.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ καὶ ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ πύρινον ὑπάρχειν τὸν ἥλιον.

᾿ΑΝΤΙΦΩΝ πῦρ, ἐπινεμόμενον μὲν τὸν περὶ τὴν γῆν ὑγρὸν ἀέρα, ἀνατολὰς δὲ καὶ δύσεις ποιούμενον, τῷ τὸν μὲν [l]ἐπικαιόμενον αἰεὶ προλείπειν, τοῦ δ' ὑπονοτιζομένου πάλιν ἀντέχεσθαι.

[526] ῾ΗΡΑΚΛΕΙΤΟΣ καὶ ῾ΕΚΑΤΑΙΟΣ [m]ἄναμμα νοερὸν, τὸ ἐκ θαλάττης, εἶναι τὸν ἥλιον, σκαφοειδῆ [n]δ' εἶναι [o]ὑπόκυρτον. Γίγνεσθαι δὲ τὴν ἔκλειψιν κατὰ τὴν [p]τοῦ σκαφοειδοῦς στροφὴν, ὥστε τὸ μὲν κοῖλον ἄνω γίγνεσθαι, τὸ δὲ κυρτὸν κάτω, πρὸς τὴν ἡμετέραν ὄψιν· τὸ δὲ μέγεθος ἔχειν εὖρος ποδὸς ἀνθρωπείου[q].

᾿ΑΛΚΜΑΙΩΝ πλατὺν εἶναι τὸν ἥλιον.

[r]Οἱ ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΟΙ σφαιροειδῆ τὸν ἥλιον, ἔκλειψιν δὲ γίγνεσθαι σελήνης αὐτὸν ὑπερχομένης.

2 Πορφυρίου ἐκ τοῦ Περὶ ᾿Αγαλμάτων.

Καθάπερ καὶ ὁ ῞Ηλιος τὸν ἐναντίον τῷ πόλῳ ποιεῖται δρόμον, ([a]ὥσπερ δοκεῖ τὸν οὐρανὸν ὁ ἥλιος εἰς τἀναντία περιφέρειν,) αὐτὸς ἀπὸ δυσμῶν ἐπὶ τὰς ἀνατολὰς φερόμενος.

3

᾿ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ μύδρον ἢ πέτρον διάπυρον εἶναι τὸν p. 56. 4

[l] ἐπικαιόμενον] ἐπικείμενον V. A. h. l. sed ἐπικαιόμενον infra.

[m] ἄναμμα] Sic Heerenius, forte ex Plutarcho p. 890 A. ubi Στωϊκοὶ ἄναμμα νοερὸν ἐκ θαλάττης. Libri ἄναλμα. Vid. inf. p. 206. n.[u].

[n] εἶναι] δ' εἶναι V. A.

[o] ὑπόκυρτον] ὑπόκριτον A.

[p] τοῦ σκαφοειδοῦς] Sic Plutarchus. σκαφοειδῆ A. τοῦ om. Cant.

[q] Repetuntur hic apud Cant. [et A.] verba: Μητρόδωρος πύρινον ὑπάρχειν τὸν ἥλιον, quæ supra jam affuere; quare ea delevi. HEEREN.

[r] Οἱ Πυθαγόρειοι] Πυθαγόριοι A.

2.

[a] ὣς τὸν] ὥσπερ δοκεῖ τὸν A.

3.

Repetitur hic in Cant. ed. ut et in codd. mss. Antiphontis de Solis natura sententia iisdem verbis, quibus modo ante adfuit. Omittendam itaque eam duxi. HEEREN.

[528] ἥλιον· τροπὴν δὲ γίγνεσθαι [a]ἀνταπώσει τοῦ [b]πρὸς ταῖς ἄρκτοις ἀέρος, ὃν αὐτὸς συνωθῶν ἐκ τῆς πυκνώσεως ἰσχυροποιεῖ.

ΘΑΛΗΣ γεοειδῆ τὸν ἥλιον· ἐκλείπειν δὲ αὐτὸν τῆς σελήνης ὑπερχομένης κατὰ κάθετον, οὔσης φύσεως γεώδους· βλέπεσθαι δὲ τοῦτο κατοπτρικῶς [d]ὑποτιθεμένον [e]τῷ δίσκῳ.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ [f]κισσηροειδῆ τὸν ἥλιον, εἰς ὃν ἀπὸ τοῦ αἰθέρος ἀκτῖνες ἐναποστηρίζονται· ὑπὸ δὲ τοῦ ἀντιπίπτοντος τῇ θερμότητι ψυχροῦ σβέννυσθαι.

[530] ΦΙΛΟΛΑΟΣ ὁ [g]Πυθαγόρειος ὑαλοειδῆ τὸν ἥλιον, δεχόμενον μὲν τοῦ ἐν τῷ κόσμῳ [h]πυρὸς τὴν ἀνταύγειαν, [i]διηθοῦντα δὲ πρὸς ἡμᾶς τό τε φῶς καὶ τὴν ἀλέαν, ὥστε τρόπον τινὰ διττοὺς ἡλίους γίγνεσθαι, τό τε ἐν τῷ οὐρανῷ πυρῶδες, καὶ τὸ ἀπ' αὐτοῦ πυροειδὲς κατὰ τὸ [k]ἐσοπτροειδές· εἰ μή τις καὶ [l]τρίτον λέξει, τὴν ἀπὸ τοῦ ἐνόπτρου κατ' ἀνάκλασιν διασπειρομένην πρὸς ἡμᾶς αὐγήν.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ δύο ἡλίους, τὸν μὲν ἀρχέτυπον, πῦρ, ὃν ἐν τῷ ἑτέρῳ ἡμισφαιρίῳ τοῦ κόσμου, [m]πεπληρωκὸς τὸ ἡμισφαίριον, αἰεὶ κατ' ἀντικρὺ τῇ ἀνταυγείᾳ ἑαυτοῦ τεταγμένον· τὸν δὲ φαινόμενον, ἀνταύγειαν, ἐν τῷ ἑτέρῳ ἡμισφαιρίῳ, τῷ τοῦ ἀέρος τοῦ θερμομιγοῦς πεπληρωμένῳ, ἀπὸ κυκλοτεροῦς τῆς γῆς κατ' ἀνάκλασιν γιγνομένην εἰς τὸν

[a] ἀνταποδόσει] ἀνταποδώσει A. ἀνταπώσει Plutarch. ἀνταπωθήσει Heeren.

ib. ἀνταπωθήσει τοῦ πρὸς τοῖς ἄρκτοις ἀέρος, emendavi pro ἀνταποδώσεις τοῦ πυρὸς τοῖς ἄρτοις ἀέρος, quod corrupte ap. Cant. exstat. HEEREN.

[b] πρὸς] πυρὸς A.

[d] ὑποτιθέμενον] ὑποτιθεμένῳ Plutarchus. Wyttenbach. conj. β. δὲ αὐτὴν κ. ὑποτιθεμένην.

[e] τῷ δύσμῳ] τῷ δίσκῳ V. A.

[f] κισσηροειδὴ] κισηροειδῆ A. et sic infra.

[g] Πυθαγόρειος] Πυθαγόριος A.

[h] πυρὸς] πρὸς A. Cant.

[i] διηθοῦντα] διωθοῦντα A.

[k] ἐσοπτροειδὲς] ἔσοπτρον. εἰ δὲς sic V.

[l] τρίτην] Sic Heeren. τρίτον A. Cant.

[m] πεπληρωκὸς] Sic Heeren. ex Plutarcho. πεπληρωκότος A. Cant.

ἥλιον [n] κρυσταλλοειδῆ, συμπεριελκομένην τῇ κινήσει τοῦ πυρίνου. Ὡς δὲ βραχέως εἰρῆσθαι συντεμόντα, ἀνταύγειαν εἶναι τοῦ περὶ τὴν γῆν πυρὸς τὸν ἥλιον, τροπὴν δὲ γίγνεσθαι ὑπὸ τῆς περιεχούσης αὐτὸν σφαίρας [o] κωλυομένου ἄχρι παντὸς εὐθυπορεῖν, καὶ ὑπὸ τῶν τροπικῶν κύκλων. Ἶσον δὲ τῇ γῇ τὸν κατὰ τὴν ἀνταύγειαν, ἔκλειψιν δὲ γίγνεσθαι [p] σελήνης αὐτὸν ὑπερχομένης.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ γήϊνον πύκνωμα τὸν ἥλιόν φησιν εἶναι, [532] [q] κισσηροειδῶς καὶ σπογγοειδῶς ταῖς κατατρήσεσιν, ὑπὸ πυρὸς [r] ἀνημμένον· [s] τηλικοῦτον δὲ ἡλίκος φαίνεται, ἢ μικρῷ τινι μείζων ἢ ἐλάττων.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνην ἐκ τοῦ γαλαξίου κύκλου ἀποκριθῆναι, τὸν μὲν ἀπὸ τοῦ ἀραιοτέρου μίγματος, ὃ δὴ θερμὸν, τὴν δὲ ἀπὸ τοῦ πυκνοτέρου, ὅπερ ψυχρόν.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ μύδρον ἢ πέτρον διάπυρον, τροπὴν δὲ γίνεσθαι ἐκ [t] τῆς περιφερούσης αὐτὸν δινήσεως.

ΚΛΕΑΝΘΗΣ [u] ἄναμμα νοερὸν, τὸ ἐκ θαλάττης, τὸν ἥλιον. Περὶ δὲ τῶν [x] στροφῶν φασι κατὰ τὸ διάστημα τῆς ὑποκειμένης τροφῆς· ὠκεανὸς δ' ἐστὶν [[y] καὶ ἡ γῆ], ἧς τὴν ἀναθυμίασιν ἐπινέμεται. Συγκαταφέρεσθαι δὲ τὸν ἥλιον [534] κινούμενον ἕλικα ἐν τῇ σφαίρᾳ, ἀπὸ τοῦ ἰσημερινοῦ ἐπί τε

[n] κρυσταλλοειδῆς περιελκομένῃ] κρυσταλοειδῆ συμπεριελκομένην V. κρυσταλουδῆ—μένην A.

[o] κωλυομένου] κωλυόμενον A. Cant.

[p] σελήνης] ἡλίου A.

[q] Habet Plut. κισσηροειδὲς ταῖς κατατρήσεσιν ὑπὸ τοῦ π. α. Eus. addit σπογγοειδές. HEEREN.

[r] Post ἀνημμένον add. τηλικοῦτον δὲ, ἡλίκος (ἥλιος A. τηλικαύτα δὲ ἡλίκα P.) φαίνεται. ἢ μικρῷ τινὶ μείζων, ἢ ἐλάττων V. A. P.

[s] Servavit nobis Diog. X. 90. ipsa Epicuri verba: τὸ δὲ μέγεθος ἡλίου καὶ τῶν λοιπῶν ἄστρων, κατὰ μέντοι πρὸς ἡμᾶς, τηλικοῦτόν ἐστιν, ἡλίκον ὅποτε φαίνεται. HEEREN.

[t] τῆς ante περιφ. deest V. A.

[u] ἔναλμα] ἄναλμα V. A. ἄναμμα P.

[x] στροφῶν] Sic V. A. τροφῶν Cant. τροπῶν Bakius Posidon. p. 67.

[y] Verba καὶ ἡ γῆ addidi ex Plut. Nam ap. Stob. male ea excidisse, docet sequens ἧς. HEEREN.

ἄρκτου καὶ νότου, ἅπερ ἐστὶ πέρατα τῆς ἕλικος· ἄλλοι δὲ ἐπ' εὐθείας αὐτὸν κινεῖσθαι τὴν ἕλικα, οὐ περὶ σφαῖραν ποιοῦντα, [z]περὶ δὲ κύλινδρον.

'ΑΡΙΣΤΑΡΧΟΣ τὸν ἥλιον ἵστησι [a]μετὰ τῶν ἀπλανῶν, τὴν δὲ γῆν κινεῖσθαι περὶ τὸν ἡλιακὸν κύκλον, καὶ κατὰ τὰς [b]ταύτης ἐγκλίσεις σκιάζεσθαι.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ πολλοὺς εἶναι ἡλίους καὶ σελήνας, κατὰ τὰ κλίματα τῆς γῆς καὶ ἀποτομὰς καὶ [c]ζώνας. Κατὰ δέ τινα καιρὸν ἐκπίπτειν τὸν δίσκον εἴς τινα ἀποτομὴν τῆς γῆς οὐκ [d]οἰκουμένην ὑφ' ἡμῶν, καὶ οὕτως ὡσπερεὶ κενεμβατοῦντα ἔκλειψιν ὑποφαίνειν· ὁ δ' αὐτὸς τὸν ἥλιον εἰς [e]ἄπειρον μὲν προϊέναι, δοκεῖν δὲ κυκλεῖσθαι διὰ τὴν ἀπόστασιν.

'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἐκ πέμπτης οὐσίας τὸν ἥλιον. Πυ- p. 57.
ροῦσθαι δὲ τὸν ἀέρα, καὶ σφόδρα γίνεσθαι θερμὸν ἀνίσχοντός τε τοῦ ἡλίου καὶ πλησιάζοντος ἡμῖν, οὐ διὰ τὸ πύρινον εἶναι τὴν οὐσίαν, ἀλλὰ διὰ τὴν ὀξύτητα τῆς κινήσεως αὐτοῦ, καὶ τὴν πρὸς τὸν ἀέρα παράτριψιν, ὑποβεβλημένον αὐτοῦ τῇ
[536] φορᾷ καὶ παρακείμενον· οὔτε [[f]διὰ] τὸν ἥλιον, οὔτε τῶν ἄλλων ἄστρων ὁτιοῦν, πῦρ εἶναι· σφαιροειδῆ μὲν γὰρ τούτων τὰ σχήματα, πυρὸς δὲ ἐκτός· οὔτε γὰρ τὴν περὶ τὸ μέσον οἰκείαν εἶναι κίνησιν πυρὸς, ἀλλὰ τὴν ἀπὸ τοῦ μέσου· οὔτε τὴν τῆς αὐξήσεως τῶν ζώων καὶ φυτῶν δύναμιν, ἀλλὰ τὴν τῆς φθορᾶς· οὐδὲ τὴν καθ' ἑαυτὰ διαμονὴν, τὸ γὰρ πῦρ ἀν[illegible]τον εἶναι τῆς ὕλης. 'Εκ πέμπτης ἄρα [g]τινὸς καὶ οὔσης τοῦ πυρὸς οὐσίας τόν τε οὐρανὸν ὑπάρχειν, καὶ

ὶ δὲ] Hæc sequentibus jun-

τον] μετὰ V. A.
ύτας] ταύτης V. A.
ῦνας] ζῶνας V. A. E.
:ουμένην] Sic Plutarch. οἰκουμένης A. Cant.

[e] Post ἄπειρον add. μὲν V. A. P.

[f] διὰ vel omnino delendum est, vel rescribendum δὴ aut γάρ. HEEREN.

[g] τινὸς] πυρὸς V. A.

τὰ ἐν [h]αὐτῷ πάντα. Καὶ τὸν μὲν ἥλιον ἡμέρας ἀπεργάζεσθαι ὑπὲρ γῆν ἰόντα, νύκτα δὲ [i]χωρήσαντα ὑπὸ γῆν. Καὶ τοῦ μὲν ἑτέρου τῶν τροπικῶν ἐφαψάμενον, βραχυτάτην ποιεῖν τὴν ἡμέραν, μακροτάτην δὲ τὴν νύκτα· θατέρου δὲ ἀνάπαλιν· τοῦ δ' ἰσημερινοῦ ἰόντα τε καὶ [k]ἀπιόντα, διαθεῖν δὲ τὸν ἴδιον [l]ἐν ἐνιαυτῷ κύκλον. Ἔκλειψιν δὲ τοῦ ἡλίου φαίνεσθαι σελήνης ὑποδραμούσης ὑπὸ τὸν [m]αὐτοῦ κύκλον, καὶ ταῖς [n]ἡμετέραις ὄψεσιν [o]ἀντιπραττούσης, προσγειοτάτην γὰρ εἶναι τῶν ἄλλων ἄστρων· ὁπότ' οὖν κατὰ διάμετρον ὑπ' [p]αὐτὸν γένοιτο, ταῖς προπιπτούσαις ἀπ' αὐτοῦ πρὸς τὴν γῆν ἀκτῖσιν ἐπιπροσθεῖν, ὥστε τοσοῦτον τόπον
[538] ἀφώτιστον ἀπεργάζεσθαι τῆς γῆς, ὁπόσον ἂν αὐτῆς ἐπίσχῃ τὸ σκίασμα, παρ' ὃ καὶ μήτε [q]κατὰ πᾶν κλίμα τῆς γῆς, μήτε κατὰ τὴν αὐτὴν ὥραν, μήτε ἐπὶ πολὺν ἄγαν τόπον διατείνειν τὸ τῆς ἡλιακῆς ἐκλείψεως πάθος.

ΖΗΝΩΝ τὸν ἥλιόν φησι καὶ τὴν σελήνην καὶ τῶν ἄλλων ἄστρων ἕκαστον εἶναι νοερὸν [r]καὶ φρόνιμον, καὶ [s]πύρινον, πυρὸς τεχνικοῦ. Δύο γὰρ γένη πυρὸς, τὸ μὲν ἄτεχνον καὶ μεταβάλλον εἰς ἑαυτὸ τὴν τροφὴν, τὸ δὲ τεχνικὸν, αὐξητικόν τε καὶ τηρητικὸν, οἷον ἐν τοῖς φυτοῖς ἐστι καὶ ζώοις, ὃ δὴ φύσις ἐστὶ καὶ ψυχή· [t]τοιούτου δὴ πυρὸς εἶναι τὴν τῶν ἄστρων οὐσίαν· τὸν δὲ ἥλιον καὶ τὴν σελήνην δύο φορὰς

[h] αὐτῷ] ἐν αὐτῷ V. A.
[i] χωρίσαντα] χωρήσαντα A. V.
[k] ἀπόντα] ἀπιόντα V. A.
[l] ἐν addidit Heeren.
[m] αὐτὸν] αὐτοῦ Heeren.
[n] ἡμετέραις] ἡμέραις τε V. A.
[o] ἀντιπραττούσης] ἀντιφραττούσης Bakius ad Cleomed. p. 445.
[p] αὐτὸν] αὐτοῦ A.
[q] κατὰ πᾶν] κατασπᾶν V.
[r] καὶ φρόνιμον] Habet Cant. καὶ φρόνιμον πύρινον πῦρ, ὡς τεχνικοῦ. Vocem πύρινον delent codd. V. A. Ferri tamen illud potest dummodo in proximis, quæ corruptela laborant, pro πῦρ ὡς legas πυρός. Sic vero emendandum esse, recte colligas ex cap. proximo, ubi Zenonis sententia de luna, iisdem verbis repetita, sic legitur. HEEREN. Vid. p. 59, 39. ed. Cant.
[s] πύρινον deest V. A.
[t] τούτου] τοιούτου V. A.

φέρεσθαι, τὴν μὲν ὑπὸ τοῦ κόσμου ἀπ' ἀνατολῆς ἐπ' ἀνατολὴν, τὴν δὲ ἐναντίαν τῷ κόσμῳ, ζώδιον ἐκ ζωδίου [u] μεταβαίνοντας. Τὰς δ' ἐκλείψεις τούτων γίγνεσθαι διαφόρους, ἡλίου μὲν περὶ τὰς συνόδους, σελήνης δὲ περὶ τὰς [x] πανσελήνους. Γίνεσθαι δ' [y] ἐπ' ἀμφοτέρων τὰς ἐκλείψεις καὶ [z] μείζους καὶ ἐλάττους.

[540] ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ, τὸν ἥλιον εἶναι τὸ ἀθροισθὲν [a] ἔξαμμα νοερὸν ἐκ τοῦ τῆς θαλάσσης ἀναθυμιάματος, σφαιροειδῆ δὲ εἶναι τῷ σχήματι.

ΕΥΡΙΠΙΔΗΣ, πῦρ εἶναι τὸν ἥλιον. Λέγει γοῦν ἐν Φοινίσσαις [v. 3.]

[b] Ἥλιε θοαῖς ἵπποισιν εἱλίσσων φλόγα.

Ἐν δὲ Φαέθοντι·

Θερμὴ δ' ἄνακτος φλὸξ [c] ὑπερτέλλουσα γῆς.

ὍΜΗΡΟΣ, μὴ εἶναι πῦρ τὸν ἥλιον, ἀλλὰ φῶς καθαρώτατον. Δείκνυσι δὲ τοῦτο σαφῶς διὰ τῶν ἐπῶν· λέγει γὰρ οὕτως·

Σείων [d] Πηλιάδα μελίην κατὰ δεξιὸν ὦμον
δεινὴν, ἀμφὶ δὲ χαλκὸς ἐλάμπετο εἴκελος αὐγῇ
ἢ πυρὸς αἰθομένου, ἢ ἠελίου ἀνιόντος.

Τί οὖν φαίνεται ποιῶν ἄλλο, ἢ τῇ διαζεύξει [e] μαρτυρόμενος, ὅτι πῦρ οὐ νομίζει τὸν ἥλιον, ἀλλ' ἕτερον μὲν πυρὸς, φαινόμενον δὲ ἐν ταῖς ἀνατολαῖς πυρώδη διὰ τὴν ὑγρότητα καὶ

[u] μεταβαίνοντας] –νοντα V.
[x] πανσελήνους] –λήνης A.
[y] ἐπ'] ἀπ' A.
[z] μείους] μείζους A.
[a] ἔζαμε] ἔξαμμα V. A.
ib. ἔξαμμα] Sententiam eandem protulerat Posidonius in sexto Physicorum, teste Diog. VII. 145. Τρέφεσθαι τὸν μὲν ἥλιον ἐκ τῆς μεγάλης θαλάττης, νοερὸν ὄντα ἄναμμα. HEEREN.
[b] Ἥλιε θοαῖς] Ἥλιε θ' ὁ V. A. E. οἱλίσσων A.
[c] ὑπερτελοῦσα] ὑπερτέλλουσα V. A.
[d] Πηλιάδω] Πηλιάδα V. A.
[e] μαρτυρόμενος] μαρτυρώμενος A.

τὴν ἀναθυμίασιν, ᾗ μιγνύμενον [f]ἐρυθραίνεται πᾶν τὸ λαμπρόν;

4 Φιλολάου ἐκ Βακχῶν. p. 58.

5 [Ἀράτου Διοσ. 90.]

[542] Μή οἱ [a]ποικίλλοιτο νέον βάλλοντος [b]ἀρούρας
κύκλος, ὅτ' εὐδίου κεχρημένος ἤματος εἴης,
μηδέ τι σῆμα φέροι, φαίνοιτο δὲ [c]λιτὸς [d]ἁπάντη.
εἰ δ' αὔτως καθαρόν μιν ἔχοι [e]βουλύσιος ὥρη,
δύνοι δ' ἀννέφελος μαλακὴν ὑποδείελος αἴγλην,
[f]καί κεν ἐπερχομένης ἠοῦς [g]ἔθ' ὑπεύδιος εἴη.
Ἀλλ' οὐχ ὁππότε κοῖλος ἐειδόμενος [h]περιτέλλῃ,
οὐδ' ὁπότ' ἀκτίνων αἱ μὲν νότον, αἱ δὲ βορῆα
σχιζόμεναι βάλλωσι, τὰ δ' αὖ περὶ μέσσα [i]φαείνῃ,
ἀλλά που ἢ ὑετοῖο διέρχεται, ἢ ἀνέμοιο.
Σκέπτεο δ' εἴ κέ τοι αὐγαὶ [k]ὑπείκωσ' ἠελίοιο
αὐτὸν ἐς [l]ἠέλιον, τοῦ γὰρ σκοπιαὶ καὶ ἄρισται,
εἴ τί που [m]ἢ καὶ ἔρευθος ἐπιτρέχει, οἷά τε πολλὰ
ἑλκομένων νεφέων [n]ἐρυθραίνεται ἄλλοθεν ἄλλα·
ἢ εἴ που [o]μελανεῖ· καί τοι τὰ μὲν ὕδατος ἔστω

[f] ἐρυθαίνεται] ἐρυθραίνεται V. A.

4.

Excidisse hic videtur librariorum incuria fragmentum ex Philolai Bacchis desumtum. Codd. enim V. A. E. F. in marg. habent Φιλολάου Βακχαῖς, quamquam ex loco ipso nihil superest. HEEREN. Φιλολάου ἐκ βακχῶν A.

5.

Sequitur insignis Arati ex Diosemiis locus, 822 (90). Præmittuntur apud poëtam tres versus a Stobæo male omissi: Ἠελίοιο δέ τοι μελέτω ἑκάτερθεν ἰόντος· Ἠελίῳ καὶ μᾶλλον ἐοικότα σήματα κεῖται, Ἀμφότερον, δύνοντι, καὶ ἐκ περάτης ἀνιόντι. HEEREN.

[a] ποικίλλοιτο νέον] ποίκιλον τὸ νεὸν V. A. E. ποίκιλα P.

[b] ἀρούραις] ἀρούρας V. A. E.

[c] λιτὸς] λητὸς A. E.

[d] ἁπάντη] ἅπαντι V.

[e] βουλύσιος] βουλήσιος V. A. E.

[f] καὶ μὲν] καί κεν V. A.

[g] ἔθ' ὑπεύδιος] εὐθυπέδιος V. A. E.

[h] περιτέλλῃ] περιτέλλοι V. A. E.

[i] φαείνῃ] φάειν A. φανείῃ Cant.

[k] ὑπήκωσ'] ὑπείκωσ' A. V. E.

[l] ἠέλιον] ἥλιον A. qui mox εἰσὶν pro καί.

[m] ἢ καὶ] ἢ om. A.

[n] ἐρυθαίνεται] ἐρυθραίνεται V. A. E.

[o] μελανεῖ] μελανοὺς V.

σήματα μέλλοντος, τὰ δ' ἐρευθέα πάντ', ἀνέμοιο·
[544] εἴ γε μὲν [p] ἀμφοτέροις ἄμυδις [q] κεχρωσμένος εἴη,
καί κεν ὕδωρ φορέοι, καὶ [r] ὑπηνέμιος τανύοιτο.
Εἰ δέ [s] τοι ἢ ἀνιόντος ἢ αὐτίκα δυομένοιο
ἀκτῖνες συνίωσι, καὶ ἀμφ' ἐνὶ πεπλήθωσιν,
ἤ ποτε καὶ νεφέων πεπιεσμένος, [t] ἢ ὅγ' ἐς ἠῶ
ἔρχηται παρὰ νυκτὸς, ἢ ἐξ ἠοῦς ἐπὶ νύκτα,
ὕδατί κεν κατιόντι παρατρέχοι ἤματα κεῖνα.
Μηδ' ὅτε [u] οἱ ὀλίγη νεφέλη πάρος ἀντέλλῃσι,
τὴν δὲ μετ' ἀκτίνων [x] κεχρωσμένος αὐτὸς ἀερθῇ,
ἀμνηστεῖν ὑετοῖο· πολὺς δ' ὅτε οἱ περὶ κύκλος
οἷον τηκομένῳ ἐναλίγκιος εὐρύνηται,
πρῶτον ἀνερχομένοιο, καὶ ἂψ ἐπὶ μεῖον ἴησιν,
εὔδιός κε φέροιτο· καὶ [y] εἴ ποτε [z] χείματος ὥρῃ
[a] ὠχρήσαι κατιών· ἀτὰρ ὕδατος ἡμερινοῖο
γινομένου, κατόπισθε περὶ νέφεα σκοπέεσθαι.
Καὶ δὴ δυομένου τετραμμένος ἠελίοιο,
ἣν μὲν ὑποσκιάῃσι μελαινομένῃ εἰκυῖα
ἠέλιον νεφέλῃ, ταὶ δ' ἀμφί μιν ἔνθα καὶ ἔνθα
ἀκτῖνες μεσσηγὺς [b] ἑλισσόμεναι διχόωνται,
ἦτ' ἂν ἔτ' εἰς [c] ἠῶ σκέπαος κεχρημένος εἴης.
[546] Εἰ δ' ὁ μὲν ἀννέφελος βάπτοι [d] ῥόου ἑσπερίοιο,
ταὶ δὲ κατερχομένου νεφέλαι καὶ ἔτ' οἰχομένοιο
πλησίαι ἑστήκωσιν [e] ἐρευθέες, [f] οὔ σε μάλα χρὴ

[p] ἀμφοτέροις] ἀμφοτέρων V. A.
[q] κεχρωσμ.] κεχρώμενος V. E.
[r] ὑπηνέμιος] ὑπηνέμενος V. A. E.
[s] τι] τοι V. A. E.
[t] ἢ ὅς γ' V. A.
[u] οἱ ὀλίγη] ἡ ὀλίγη V.
[x] κεχρωσμένος] κεκτημένος A. E.
[y] εἴποτε] ὕποτε A. qui v. seq. ὠχρήαι κ. ὕδατος ἀτὰρ ἡμελινοῖο.
[z] σχήματος] χείματος V. A.
[a] ὠχρήσῃ etc.] ὠχρήαι κατιὼν ὕδατος ἀτὰρ ἡμερινοῖο A. V. nisi quod ἡμελινοῖο A.
[b] ἑλισσόμεναι διχοῶνται] ἑλισσομένην διχοῶντα V. ἑλισσομένη διχόωντα A.
[c] ἠῶ] ἤως V.
[d] ῥόου] ῥόνου A. V.
[e] ἐρευθέες] ἐρευθέντες V.
[f] οὐ σὲ] οὖσαι V. A.

αὔριον οὐδ᾽ ἐπὶ νυκτὶ περιτρομέειν ὑετοῖο.
Ἀλλ᾽ ὁπότ᾽ ἠελίοιο [g]μαραινομένῃσιν ὁμοῖαι
ἐξαπίνης ἀκτῖνες ἀπ᾽ οὐράνοθεν [h]τανύωνται,
(οἷον ἀμαλδύνονται, ὅτε [i]σκιάῃσι κατ᾽ ἰθὺ
[k]ἱσταμένη γαίης τε καὶ ἠελίοιο [l]σελήνη,)
[m]οὐδ᾽ ὅτε οἱ ἐπέχοντι φανήμεναι ἠῶθι πρὸ
φαίνονται νεφέλαι ὑπερευθέες ἄλλοθεν ἄλλαι,
[n]ἄρραντοι γίνονται ἐπ᾽ ἤματι κείνῳ ἄρουραι.
Μηδ᾽ αὔτως ἔτ᾽ ἐόντι πέρην, ὁπότε προταθεῖσαι
ἀκτῖνες φαίνονται ἐπίσκιοι ἠῶθι πρὸ,
ὕδατος ἢ ἀνέμοιο κατοισομένου λελαθέσθαι.
Ἀλλ᾽ εἰ μὲν κεῖναι μᾶλλον [o]κνέφαος φορέοιντο
ἀκτῖνες, μᾶλλόν κεν ἐφ᾽ ὕδατι σημαίνοιεν.
Εἰ δ᾽ ὀλίγος τανύοιτο [p]περὶ δνόφος ἀκτίνεσσι,
οἷόν που μαλακαὶ νεφέλαι φορέουσι μάλιστα,
ἦτ᾽ ἂν ἐπερχομένοιο περιδνοφέοιντ᾽ ἀνέμοιο.
Οὐδὲ μὲν ἠελίου σχεδόθεν μελανεῦσαι ἁλωαὶ
εὔδιοι· ἀσσότεραι δὲ καὶ [q]ἀστεμφὲς μελανεῦσαι,
μᾶλλον χειμέριαι, δύο δ᾽ ἂν χαλεπώτεραι εἶεν·
σκέπτεο δ᾽ ἢ ἀνιόντος ἢ αὐτίκα δυομένοιο
[548] εἴπου [r]οἱ νεφέων τὰ παρήλια κικλήσκονται, p. 59.
ἢ νότου, ἠὲ βορῆος ἐρεύθεται, ἢ ἑκάτερθεν,
μηδ᾽ οὕτω σκοπιὴν ταύτην ἀμενηνὰ φυλάσσειν.
Οὐ γὰρ ὅτ᾽ ἀμφοτέρωθεν ὁμοῦ περὶ [s]μέσσον ἔχωσιν
ἠέλιον κεῖναι νεφέλαι σχεδὸν ὠκεανοῖο,

g μαραινομένῃσιν] μαραινόμενοι εἰσὶν V. A. E.
h τανύωνται] –ονται V. A. E.
i σκιάῃσι] σκίανσι V. A. E.
k ἱσταμένη] –μένης V. A. E.
l σελήνη] –νης V. A. E.
m οὐδ᾽ ὅτε] οὐδέ τε V. A.
n ἄρραντοι γίνονται] ἄρραντι γίγνονται V. ἄραντι A.
o κνέφαος—μᾶλλον om. A.
p περὶ δνόφος] περὶ γνόφος V. A. E. Mox περϊδ᾽ ὀφνέοιντ᾽ A.
q ἀστέμφες] ἀστέμφεες V. A.
r οἱ deest V. A. E.
s μέσσον] μέσον V. A. E.

γίγνεται [t] ἀμβολίη διόθεν χειμῶνος [u] ἰόντος.
Εἴ γε μὲν ἐκ [x] βορέαο μί' οἴη φοινίσσοιτο,
ἐκ βορέω [y] πνοιάς κε φέροι· [z] νοτίη δὲ νότοιο,
ἢ καί που ῥαθάμιγγες ἐπιτροχόωσ' ὑετοῖο.
[a] Ἑσπερίοις καὶ μᾶλλον [b] ἐπίτρεπε σήμασι τούτοις·
ἑσπερόθεν γὰρ ὁμῶς [c] σημαίνεται ἔμμενὲς αἰεί.

Κεφ. κς'.

ΠΕΡΙ ΣΕΛΗΝΗΣ ΟΥΣΙΑΣ ΚΑΙ ΜΕΓΕΘΟΥΣ, ΚΑΙ ΣΧΗΜΑΤΟΣ, [[a] ΦΩΤΙΣΜΩΝ ΤΕ ΚΑΙ ΠΕΡΙ ΕΚΛΕΙΨΕΩΣ, ΚΑΙ ἈΠΟΣΤΗΜΑΤΩΝ, ΚΑΙ ΣΗΜΕΙΩΝ.]

1 ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ κύκλον εἶναι ἐννεακαιδεκαπλάσιον [550] τῆς γῆς, ὅμοιον ἁρματείῳ [[b] τροχῷ], [c] κοίλην ἔχοντι τὴν ἀψῖδα, καὶ πυρὸς πλήρη, καθάπερ τὸν τοῦ ἡλίου, κείμενον λοξόν· ὡς [d] κἀκεῖνον ἔχοντα μίαν ἐκπνοήν, οἷον πρηστῆρος αὐλόν, ἐκλείπειν δὲ κατὰ τὰς [e] στροφὰς τοῦ τροχοῦ.

ἈΝΑΞΙΜΕΝΗΣ πυρίνην τὴν σελήνην.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ πυρίνην, ἴσην δὲ τῷ ἡλίῳ, καὶ γὰρ ἀπ' αὐτοῦ φωτίζεται.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ σκαφοειδῆ τῷ σχήματι.

t ἀμβολίη] ἀμφοβολίη E.

u ἰόντος] ἐόντος V. A. E.

x βορεάο] βόρεας V.

y πνοίας] πλοίας V. A.

z νοτίη] νοτέους A.

a Legitur hic versus in ed. Arat. Ἑσπερίοις καὶ μᾶλλον ἀληθέα τεκμήραιο; apud Stob. vero: ἑσπερίοις καὶ μᾶλλον ἐπίτρεπε σήμασι τούτοις, utrumque bene; nec sensu multum diverso. HEEREN.

b ἐπιτρεπὲσ ἥμασι V. A. E. fere ut Cant. ubi ἥματι.

c σημαίνεται] σημαίνετον V. A.

1.

a Inscriptio cap. ap. Cant. et in codd. manca erat, desiderabantur enim ibi ultima inde a φωτισμῶν, quæ supplevi ex Photio; agitur enim de his quoque rebus in capite nostro. HEEREN. Mox ἁρματίῳ Stobæi libri.

b [τροχῷ], quod ap. Stob. excidit, supplevi ex Plut. HEEREN.

c κοιλὴν] κοιλὸν V. τρόχῳ θ. E.

d κἀκεϊνος ἔχοντι] κἀκεῖνον ἔχοντα V. A.

e στροφὰς] τροπὰς V. A.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ νέφος εἶναι [f]τὴν σελήνην πεπιλημένον.

ΘΑΛΗΣ γεώδη τὴν σελήνην ἀπεφήνατο.

'ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ καὶ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ, στερέωμα διά-
[552] πυρον, ἔχον ἐν ἑαυτῷ πεδία καὶ ὄρη καὶ φάραγγας.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ [g]κισσηροειδὲς ἄναμμα τὴν σελήνην.

[h]ἼΩΝ, [i]σῶμα τῇ μὲν [k]ὑελοειδὲς, διαυγὲς, τῇ δ' ἀφεγγές.

[l]ΒΗΡΩΣΣΟΣ ἡμιπύρωτον σφαῖραν τὴν σελήνην.

[m]῾ΗΡΑΚΛΕΙΔΗΣ καὶ [n]ὨΚΕΛΛΟΣ, γῆν ὁμίχλῃ περιεχομένην.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ κατοπτροειδὲς σῶμα.

[o]'ΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ ἀέρα συνεστραμμένον νεφοειδῆ, πεπηγότα ὑπὸ πυρὸς, ὥστε σύμμικτον, δισκοειδῆ δὲ τῷ σχή-
[554] ματι· τινὲς δὲ κυλινδροειδῆ.

ΠΛΑΤΩΝ, [p]ἐκ πλείονος τοῦ πυρὸς εἶναι τὴν σελήνην.

'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ σελήνην ἐν μεθορίοις [q]ἀέρος τεταγμένην, καὶ τῆς πέμπτης οὐσίας [r]μετέχουσαν, ἐν μηνὶ [s]περιέρχεσθαι τὸν ἴδιον κύκλον, [t]ἐλάττονα δὲ τῆς γῆς εἶναι τῷ μεγέθει.

f τὴν σελήνην deest V. A.

g κισσηρ.] κισηροειδὲς V. κισηροϋδὲς A.

h 'Ιὼν] ∴″ ὦν (sic) A. et forte V.E.

i σώματι μὲν] σῶμα τῇ μὲν V.A.E.

k ὑαλοειδὲς, *vitreum*, seu omnino *pellucidum*, ex certissima, ni fallor, conjectura edidi pro ὑλοειδὲς. HEEREN. ὑελοειδὲς A. Cant.

l Βηρωσὸς] Βόσορος et in marg. Βήσορος V. ∵ ησορος A. E. ὄκελος et mox ὁμίχλην A.

m Plut. Euseb. et Galen. omissis Heraclidis et Ocelli nominibus, habent: ῾Ηράκλειτος γῆν ὁμιχλῇ περιειλουμένην; (ex quo ὁμιχλῇ pro ὁμιχλὴν ap. Stob. rescripsimus; nunquam enim περιέχεσθαι quarto casui jungitur). Cæterum num Heracliti vel Heraclidis nomen melius hic positum sit, haud facile dictu est. HEEREN.

n Ὤκελλος] Ὄκελλος A. V. Mox ὁμίχλην A.

o Aliis verbis idem hoc profert Plut. de Fac. Lun. Op. II. p. 932. Καὶ γὰρ 'Εμπεδοκλῇ δυσκολαίνουσι, πάγον ἀέρος χαλαζώδη ποιοῦντι τὴν σελήνην, ὑπὸ τῆς τοῦ πυρὸς σφαίρας περιεχόμενον. HEEREN.

p ἐκ πλέονος τοῦ πυρὸς] Euseb. ἐκ πλείονος τοῦ γεώδους.

q ἀέρος] κέρος V. A.

r μετέχουσαν] ὑπάρχουσαν V. A.

s περιέρχεσθ.] περιέχεσθαι A.

t ἐλάττωνα A.

ΖΗΝΩΝ τὴν σελήνην ἔφησεν ἄστρον νοερὸν καὶ φρόνιμον, πύρινον δὲ, πυρὸς τεχνικοῦ.

ΚΛΕΑΝΘΗΣ πυροειδῆ τὴν σελήνην, [u]πιλοειδῆ δὲ τῷ σχήματι.

[x]ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ δὲ, καὶ οἱ πλεῖστοι τῶν Στωϊκῶν, μικτὴν ἐκ πυρὸς καὶ ἀέρος, μείζονα δὲ τῆς γῆς ὡς καὶ τὸν ἥλιον, σφαιροειδῆ δὲ τῷ σχήματι· σχηματίζεσθαι δ' αὐτὴν πολλαχῶς, καὶ γὰρ πανσέληνον γιγνομένην, καὶ διχοτόμον, καὶ ἀμφίκυρτον, καὶ μηνοειδῆ.

ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ τὸ ἀθροισθὲν ἔξαμμα μετὰ τὸν [y]ἥλιον,
[556] νοερὸν, ἐκ τοῦ ἀπὸ τῶν ποτίμων ὑδάτων ἀναθυμιάματος, διὸ καὶ τούτοις τρέφεσθαι· σφαιροειδῆ δὲ εἶναι. Μῆνα δὲ καλεῖσθαι τὴν τοῦ δρόμου αὐτῆς περίοδον. Μεὶς δ' ἐστὶ, φησὶ, τὸ φαινόμενον τῆς σελήνης πρὸς ἡμᾶς, [z]ἡ σελήνη, μέρος ἔχουσα φαινόμενον πρὸς ἡμᾶς.

ΠΕΡΙ ΦΩΤΙΣΜΩΝ ΑΥΤΗΣ.

'ΑΞΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ, Ξενοφάνης, [b]Βηρωσσὸς, ἴδιον αὐτὴν ἔχειν φῶς.

'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἴδιον μὲν, ἀραιότερον δέ πως.

'ΟΙ ΣΤΩΙΚΟΙ, ἀμαυροφανὲς, ἀεροειδὲς γάρ.

'ΑΝΤΙΦΩΝ ἰδιοφεγγῆ μὲν τὴν σελήνην, τὸ δ' ἀποκρυπτόμενον περὶ αὐτὴν ὑπὸ τῆς [c]προσβολῆς τοῦ ἡλίου ἀμαυροῦσθαι, πεφυκότος τοῦ ἰσχυροτέρου τὸ ἀσθενέστερον ἀμαυροῦν, ὃ δὴ [d]συμβαίνειν καὶ περὶ τὰ ἄλλα ἄστρα.

[u] Pro πιλοειδῆ corrupte habet Cant. et codd. πηλοειδῆ, nullo sensu. Lectionem a nobis vulgatam restituit Lips. de Phys. Stoic. II. 13. Op. IV. p. 585. HEEREN.

[x] Ποσειδώνιος add. δὲ V. A.

[y] Post ἥλιον add. νοερὸν V. A.

[z] ἡ σελήνη, *sive luna*, sic bene codd. V. A. pro ἡ σελήνη ap. Cant. Ceterum confirmat hoc Chrysippi placitum, ex parte saltem, Diog. VII. 145. γεωδεστέραν δὲ τὴν σελήνην,—τρέφεσθαι δὲ ἐκ ποτίμων ὑδάτων, ἀερομιγῆ τυγχάνουσαν, καὶ πρόσγειον οὖσαν. HEEREN.

[a] φωτισμὸν] φωτισμῶν V. A. In A. E. verba περὶ φωτ. αὐτ. in rubrica sunt.

[b] Βηρωσὸς] Βησωρὸς V. Βήρωσος A. E.

[c] προσβολῆς] προβολῆς A.

[d] συμβαίνει] συμβαίνειν V. A. E.

ΘΑΛΗΣ [e]πρῶτος ἔφησε ὑπὸ τοῦ ἡλίου φωτίζεσθαι. p. 60.

[558] ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ, Παρμενίδης, [f]Ἐμπεδοκλῆς, Ἀναξαγόρας, Μητρόδωρος ὁμοίως.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ [g]ταυτὸ πεπονθέναι τήν [h]τε σελήνην καὶ τὸν ἥλιον. Σκαφοειδεῖς δὲ ὄντας τοῖς σχήμασι τοὺς ἀστέρας, δεχομένους [i]τὰς ἀπὸ τῆς ὑγρᾶς ἀναθυμιάσεως αὐγὰς, φωτίζεσθαι πρὸς τὴν φαντασίαν, λαμπροτέρως μὲν τὸν ἥλιον, ἐν καθαρωτέρῳ γὰρ ἀέρι φέρεσθαι, τὴν δὲ σελήνην ἐν [j]θολωτέρῳ, καὶ διὰ τοῦτο ἀμαυροτέραν φαίνεσθαι.

ΠΕΡΙ ἘΚΛΕΙΨΕΩΣ ΣΕΛΗΝΗΣ.

ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ τοῦ [k]στομίου τοῦ περὶ τὸν τροχὸν ἐπιφραττομένου.

[l]ΒΗΡΩΣΣΟΣ, κατὰ τὴν πρὸς ἡμᾶς ἐπιστροφὴν τοῦ [m]ἀπυρώτου μέρους.

ἈΛΚΜΑΙΩΝ, Ἡράκλειτος, [n]Ἀντίφαντος κατὰ τὴν τοῦ σκαφοειδοῦς στροφὴν, καὶ τὰς περικλίσεις.

ΤΩΝ ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΩΝ τινὲς κατὰ τὴν [o]Ἀριστοτελικὴν
[560] ἱστορίαν, καὶ τοῦ [p]Φιλίππου τοῦ Ὀπουντίου ἀπόφασιν,

[e] πρῶτος ἔφησε] ἔφη πρῶτος V. πρῶτον ἔφη A.

[f] Empedoclis versum, quo illud docuit, servavit Plut. de Facie Lunæ Op. II. p. 929. Ἀπολείπεται τοίνυν τὸ τοῦ Ἐμπεδοκλέους, ἀνακλάσει τινὶ τοῦ ἡλίου πρὸς τὴν σελήνην γίνεσθαι τὸν ἐνταῦθα φωτισμὸν ἀπ' αὐτῆς, et mox ipsa addit Empedoclis verba: Ὡς αὐγὴ τύψασα σεληναίης κύκλον εὐρύν. Ubi ad αὐγὴ supple τοῦ ἡλίου. Parmenidis versum, de luna dicentis, Αἰεὶ παπταίνουσα πρὸς αὐγὰς ἠελίοιο, servavit Plutarch. II. p. 929 A. HEEREN.

[g] ταυτὸ] ταυτὸν A.

[h] τε om. A.

[i] τοὺς] τὰς V. A.

[j] θολωτέρῳ] θολερωτέρῳ Plutarch.

[k] στωμίου] στομαίου A.

[l] Βήρωσσος] βήρωσος A.

[m] ἀπυρώτου] ἀπυράτου A.

[n] Antiphantus hic plane obscuri est nominis, et hic semel tantum a Stob. commemoratur. Suspicor Antiphontis nomen, sæpius laudatum, in eo latere. HEEREN.

[o] Ἀριστοτελικὴν] Ἀριστοτέλιον A.

ib. Aristotelis nempe liber de Pythagoricis, quem laudat Diog. V. 25. HEEREN.

[p] Φιλίππου τοῦ Ὀπουντίου ex certa, ni fallor, emendatione rescripsi pro Φιλίππου τοῦ Ποντίου (sic A.) obscuro prorsus et barbaro nomine. Dicendum saltem fuisset Ποντικοῦ, sed ne Philippus quidem Ponticus unquam commemoratur. Philippum contra Opuntium novimus

ἀντιφράξει, τοτὲ μὲν τῆς γῆς, τοτὲ δὲ τῆς ἀντίχθονος. [q]Τῶν δὲ νεωτέρων εἰσί τινες οἷς ἔδοξε κατ᾽ ἐπινέμησιν φλογὸς κατὰ μικρὸν ἐξαπτομένης τεταγμένως, ἕως τὴν τελείαν πανσέληνον ἀποδῷ, καὶ πάλιν ἀναλόγως μειουμένης μέχρι τῆς συνόδου [r]καθ᾽ [rr]ἣν τελείως σβέννυται.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ καὶ τὴν [s]μηνιαίαν [t]ἀπόκρυψιν κατάσβεσιν.

ΘΑΛΗΣ, Ἀναξαγόρας, Πλάτων, οἱ Στωϊκοὶ, τοῖς Μαθηματικοῖς συμφώνως τὰς μὲν [u]μηνιαίας ἀποκρύψεις συνοδεύουσαν αὐτὴν ἡλίῳ καὶ περιλαμπομένην ποιεῖσθαι, τὰς δ᾽ ἐκλείψεις εἰς τὸ σκίασμα τῆς γῆς ἐμπίπτουσαν, μεταξὺ μὲν ἀμφοτέρων τῶν ἀστέρων γενομένης, μᾶλλον δὲ [x]τῇ σελήνῃ ἀντιφραττομένης.

ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ, ὥς φησι Θεόφραστος, καὶ τῶν ὑποκάτω τῆς σελήνης ἔσθ᾽ ὅτε σωμάτων ἐπιπροσθούντων.

ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ ἐκλείπειν τὴν σελήνην τῆς γῆς [y]αὐτῇ ἐπιπροσθούσης, καὶ εἰς σκιὰν αὐτῆς [z]ἐμπίπτουσαν.

ex Diog. III. 25. Proprium ille librum conscripserat de Solis et Lunæ defectu, teste Suida v. φιλόσοφος, ubi Philippi nostri nomen supplendum esse, bene ostendit Küster. ad h. l. Ex hoc itaque libro hæc quoque petita esse, dubitari nequit. HEEREN.

q Τῶν δὲ νεωτέρων, *seriorum* nempe Pythagoricorum, rescripsi ex Plutarch. pro τῶν δὲ μεθ᾽ ἑτέρων, quod ap. Stob. sine sensu legitur. Idem quoque Cant. jam in marg. emendaverat.—Ex eodem mox τελείως dedi, jubente sensu, pro τελείωσιν. Juniores quidem hi qui sint, non additur; videntur tamen hæc a Stobæo vel ex Aristotelis historia, vel ex Philippi Opuntii libro adhuc hausta esse; quare non de recentissimis hic Pythagoricis cogitandum est, sed de iis, qui vel Aristotelis, vel Philippi saltem ætatem præcesserunt. HEEREN.

r καθ᾽ ἣν] καθ᾽ ὃν V.

rr ἣν τελείως] ὃν τελείωσιν A.

s μηνιαίωνα] μηνιαίαν V. E. A.

t ἀπόκρυψιν] ἀπόκρισιν A.

u μηνιαίους] μηνιαίας A.

x τῇ σελήνῃ addidi ex Plut. pro τῆς σελήνης, sensus enim est: *cum terra lunæ opponitur.* HEEREN.

y αὐτῇ rescripsi pro αὐτὴν, tertio enim casui ἐπιπροσθεῖν jungitur. Diog. VII. 145. de Stoicorum decretis: ἐκλείπειν δὲ τὸν ἥλιον, ἐπιπροσθούσης αὐτῷ τῆς σελήνης—τὴν δὲ σελήνην ἐμπίπτουσαν εἰς τὸ τῆς γῆς σκίασμα. Petita hæc sunt ibi ex Posidonio, cui adeo in hisce cum Chrysippo convenit. HEEREN.

z ἐμπιπτούσης] ἐμπίπτουσαν cum Diogene Bakius ad Cleomed. p. 468.

[562] ΠΕΡΙ ἘΜΦΑΣΕΩΣ ΑΥΤΗΣ.

Τῶν ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΩΝ τινὲς μὲν, ὧν ἐστι Φιλόλαος, τὸ γαιοφανὲς αὐτῆς εἶναι διὰ τὸ περιοικεῖσθαι τὴν σελήνην, καθάπερ τὴν παρ' ἡμῖν γῆν, ζώοις καὶ [a] φυτοῖς μείζοσι καὶ καλλίοσιν. Εἶναι γὰρ πεντεκαιδεκαπλάσια τὰ ἐπ' αὐτῆς ζῶα τῇ δυνάμει, μηδὲν [b] περιττωματικὸν ἀποκρίνοντα, [c] καὶ τὴν ἡμέραν τοσαύτην τῷ μήκει. Ἄλλοι δὲ, τὴν ἐν τῇ σελήνῃ ἔμφασιν ἀνάκλασιν εἶναι [d] τῆς πέραν τοῦ [e] διακεκαυμένου κύκλου τῆς οἰκουμένης ὑφ' ἡμῶν θαλάττης.

[564] [f] ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ [g] ἀνωμαλότητα συγκρίματος, διὰ [h] τὸ ψυχρομιγὲς ἅμα καὶ [i] γεῶδες, τὰ μὲν ἐχούσης ὑψηλὰ, τὰ δὲ ταπεινὰ, τὰ δὲ κοῖλα. Καὶ παραμεμίχθαι τῷ πυροειδεῖ τὸ ζοφῶδες, ὧν τὸ πάθος ὑποφαίνει τὸ [k] σκιερὸν, ὅθεν ψευδοφανῆ λέγεσθαι [l] τόν ἀστέρα.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ, [m] ἀποσκίασμά τι τῶν ὑψηλῶν ἐν αὐτῇ μερῶν, [mm] ἄγκη γὰρ αὐτὴν ἔχειν καὶ νάπας.

[a] φυτοῖς] συτοῖς A.

[b] περιττωματικὸν] περιττοματικὸν A.

[c] Habet Cant. omnesque Stob. codd. καὶ τὴν ἡμετέραν τοσαύτην τῷ μήκει, nullo sensu. Plut. et Gal. pro eo τὴν ἡμέραν τ. τ. μ. *Diem in luna quindecuplam longitudinem nostrorum dierum habere;* quam lectionem Cant. quoque in marg. annotavit. HEEREN. qui edidit e conjectura, τῶν ἡμετέρων τοσαῦτα τῷ μήκει, *animalia lunaria tum viribus, tum altitudine quindecies superare terrena.*

[d] τῆς πέραν] τοῦ πέραν V.

[e] διακεκαυμένου] διακειμένου A.

[f] Ad ἐχούσης, si lectio sana est, supplendum est σελήνης, sed mallem ἔχοντος, ut ad συγκρίματος referretur. Apud Plut. exstat. Ἀναξαγόρας ἀνωμαλότητα διὰ τοῦ συγκρίματος, διὰ τὸ ψυχρομιγὲς ἅμα καὶ γεῶδες· παραμεμίχθαι γὰρ τῷ πυροειδεῖ τὸ ζοφῶδες· ὅθεν ψευδοφανῆ λέγεσθαι τὸν ἀστέρα. HEEREN.

[g] ὠμαλώτητα] ἀνωμαλότητα V. P. ἀνομαλοτάτη A.

[h] τὸ ψυχρομιγὲς] ψυχρομιθὲς (γ) A.

[i] γεῶδες] γαιῶδες V.

[k] σκιερὸν] σκιαρὸν A.

[l] τὸν ἀστέρα, nempe lunam, rescripsi pro τὸν ἀέρα; expresserat jam hanc lectionem Cant. in versione, in qua *stellam* vertit. HEEREN.

[m] ἀποσκιάσματι] ἀποσκίασματα V. A.

[mm] Ἄγκη, *valles*, est egregia Cant. in marg. emendatio, pro ἀνάγκη (ἀνάγη A.), quod habent codd. omnes. Confirmant illam quæ supra de Democriti de luna sententia dicta erant, continere eam πεδία καὶ ὄρη καὶ φάραγγας. HEEREN.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ, διὰ τὸ παραμεμίχθαι τῷ περὶ αὐτὴν πυρώδει τὸ ζοφῶδες, ὅθεν ψευδοφανῆ τὸν ἀστέρα καλεῖ.

[n]Οἱ ΣΤΩΙΚΟΙ διὰ τὸ ἀερομιγὲς τῆς οὐσίας μὴ εἶναι αὐτῆς ἀκήρατον τὸ σύγκριμα.

᾿ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ, μὴ εἶναι αὐτῆς ἀκήρατον τὸ σύγκριμα [o]διὰ τὰ πρόσγεια περιττώματα τοῦ αἰθέρος, ὃν [p]προσαγορεύει σῶμα πέμπτον.

Οἱ ἀπὸ τῶν ΜΑΘΗΜΑΤΙΚΩΝ τὸ ἀνώμαλον συγκριτικὸν αἰτιῶνται. Καθάπερ οὖν τῶν προσαυγαζομένων ὑπὸ τοῦ ἡλίου νεφῶν τὰ μὲν [q]ἀραιότερα μέρη λαμπρότερα [r]φαίνεται, τὰ δὲ πυκνότερα ἀμαυρότερα, οὕτω καὶ τῆς σελήνης, [s]ἐοικυίας μὲν νεφελοειδεῖ πιλήματι, προσαυγαζομένης δ' p. 61.
ὑπὸ τοῦ ἡλίου.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ, τὸν μὲν ἥλιον χρήσιμον εἶναι πρὸς τὴν
[566] τοῦ κόσμου καὶ τὴν τῶν ἐν αὐτῷ ζώων γένεσίν τε καὶ διοίκησιν, τὴν δὲ σελήνην παρέλκειν.

ΠΕΡΙ ᾿ΑΠΟΣΤΗΜΑΤΩΝ ΑΥΤΗΣ.

᾿ΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ διπλάσιον ἀπέχειν [t]τὴν σελήνην ἀπὸ γῆς ἤπερ ἀπὸ τοῦ ἡλίου· οἱ δὲ ἀπὸ τῶν μαθηματικῶν, ὀκτωκαιδεκαπλάσιον.

᾿ΕΡΑΤΟΣΘΕΝΗΣ, τὸν ἥλιον ἀπέχειν ἀπὸ τῆς γῆς σταδίων [u]μυριάδων μυριάδας τετρακοσίας καὶ στάδια ὀκτάκις μύρια· τὴν δὲ σελήνην ἀπέχειν ἀπὸ τῆς γῆς μυριάδας ἑβδομήκοντα ὀκτὼ σταδίων.

[n] Οἱ deest V. E. A.

[o] Corrupta sunt hæc Aristotelica apud Stob. Legitur ibi: διὰ τὰ πρόσγεια ἐρώματα, pro quo codd. V. A. ἀερώματα. Rescripsi: διὰ τὰ πρόσγεια περιττώματα τοῦ αἰθέρος, *ob sordes terrestres, ætheri, ex quo proprie constat, admixtas.* Dicitur enim περίττωμα tum de sordibus, tum de omni superfluo. HEEREN. ἀερώματα V. A. E.

[p] προσαγορεύσει] —ρεύει V. A.

[q] γὰρ ante ἀραιοτ. deest V. A.

[r] φαίνεται] φαίνεσθαι A. qui mox πυκνώτερα.

[s] ἐοικείας] ἐοικυίας V. A.

[t] τῆς σελήνης] τὴν σελήνην V. A.

[u] μυριάδων] μυριάδας A.

[x]ʼΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ τοῦ [y]ὕψους τοῦ ἀπὸ τῆς γῆς [z]ἕως οὐρανοῦ, ἥτις ἐστὶν ἀφ' ἡμῶν ἀνάτασις, πλείονα εἶναι τὴν κατὰ τὸ πλάτος διάστασιν, κατὰ τοῦτο τοῦ οὐρανοῦ μᾶλλον ἀναπεπταμένου, διὰ τὸ ᾠῷ παραπλησίως τὸν κόσμον κεῖσθαι. Βοηθὸς δὲ [a]πρὸς τὴν φαντασίαν δέχεται τὸ ἀναπεπταμένον, οὐ κατὰ τὴν ὑπόστασιν.

2 Σημεῖα σελήνης ἐκ τῶν Ἀράτου Φαινομένων [v. 778.]

Σκέπτεο δὴ [a]πρώτη κεράων ἑκάτερθε σελήνην,
ἄλλοτε γάρ τ' ἄλλῃ μιν [b]ἐπιγράφει ἕσπερος αἴγλῃ,
[568] ἄλλοτε δ' ἀλλοῖαι μορφαὶ κερόωσι σελήνην,
εὐθὺς ἀεξομένην, αἱ μὲν τρίτῃ, αἱ δὲ τετάρτῃ·
[c]τάων καὶ περὶ μηνὸς ἐφεσταότος [d]κε πύθοιο.
Λεπτὴ μὲν καθαρή τε περὶ τρίτον ἦμαρ [e]ἐοῦσα,
εὔδιός κ' εἴη· λεπτὴ δὲ καὶ [f]εὖ μάλ' ἐρευθὴς,
[g]πνευματίη· [h]παχίων δὲ καὶ [i]ἀμβλείῃσι κεραίαις,
τέτρατον ἐκ τριτάτοιο φόως ἀμενηνὸν ἔχουσα
ἢ νότῳ ἀμβλύνεται, [k]ἢ ὕδατος ἐγγὺς ἐόντος.
Εἰ δέ κ' [l]ἐπ' ἀμφοτέρων κεράων τρίτον ἦμαρ ἄγουσα
μήτε τι [m]νευστάζοι, μήθ' [n]ὑπτιόωσα φαείνοι,

[x] Præfigitur huic Empedoclis placito ap. Cant. inscriptio περὶ ἡλίου καὶ σελήνης, quæ tamen deest in omnibus codd. HEEREN.

[y] ὕψους] ὕψου A.

[z] ἕως οὐρανοῦ, *usque ad cœlum*, sensu jubente rescripsi pro οἷον οὐρανοῦ ap. Cant. HEEREN. οἷον οὐρανὸν A.

[a] πρὸς] κατὰ Heerenius, nescio unde.

2.

[a] πρώτη Cant. et omnes codd. pro πρῶτον ap. Arat. HEEREN.

[b] ἐπιγράφει] ἐπιγράφῃ A.

[c] τάων] ταίον sic V. A.

[d] κε] καὶ V.

[e] ἐοῦσα] ἰοῦσα V. A.

[f] εὖ μαλ'] οὐ μάλλ' A.

[g] πνευματίη] πνεύματι V.

[h] παχίων] παχέων A.

[i] ἀμβλίῃσι] ἀμβίῃσί A. E.

[k] ἢ ante ὕδ. deest V.

[l] ἐπ' exhibui ex Arato pro ἀπ', quod male habent Stob. codd. Sensus enim est: *Si utraque lunæ cornua pura manerent, ita ut recta surgere videantur, nec quidquam in iis offuscatum sit.* HEEREN.

[m] νευστάζοι] νευστάζῃ V. E. νευστάζει A.

[n] ὑπτιόωσα] ὑπτίουσα A.

ἀλλ' [o]ὀρθαὶ ἑκάτερθε [p]περιγνάμπτωσι κεραῖαι,
ἑσπέριοί [q]γ' ἄνεμοι κείνην μετὰ νύκτα φέροιντο.
Εἰ δ' αὔτως ὀρθὴ καὶ τέτρατον ἦμαρ [r]ἀγινοῖ,
ἦτ' ἂν χειμῶνος συναγειρομένοιο [s]διδάσκοι.
εἰ δέ [t]κε οἱ κεράων τὸ [u]μετήορον εὖ [x]ἐπινεύοι,
δειδέχθαι βορέω, ὅτε δ' ὑπτιάῃσι, νότοιο.
Αὐτὰρ [y]ἐπὴν τριτόωσαν [z]ὅλος περὶ κύκλος [a]ἑλίσσῃ
πάντῃ ἐρευθόμενος, μάλα κεν τότε χείμερος εἴη·
μείζονι δ' ἂν χειμῶνι πυρώτερα φοινίσσοιτο.
[570] Σκέπτεο [b]δ' ἐς πληθύν τε καὶ ἀμφότερον διχόωσαν,
ἢ μὲν ἀεξομένην, ἢ δ' ἐς κέρας αὖθις ἰοῦσαν·
καί οἱ ἐπὶ χροιῇ τεκμαίρεο μηνὸς ἑκάστου.
[c]Πάντῃ μὲν καθαρῇ τε μάλ' εὔδια τεκμήραιο·
[d]πάντα δ' ἐρευθομένῃ, δοκέειν ἀνέμοιο [e]κελεύθους·
ἄλλοθι δ' ἄλλο μελαινομένῃ, δοκέειν ὑετοῖο.
Σήματα [f]δ' οὐ μάλα πᾶσιν ἐπ' ἤμασι πάντα τέτυκται.
Ἀλλ' ὅσα μὲν [g]τριτάτῃ τε τεταρταίῃ τε πέλονται
μέσφα [h]διχαζομένης· διχάδος γε μὲν ἄχρις ἐπ' αὐτήν,

[o] ὀρθαὶ] ὀρθὰ V. ὀρθὰσ A.

[p] περιγνάμπτωσι] –γνάπτωσι A.

[q] γε pro κε habent Stob. codd. cum Cant. HEEREN. δ' V.

[r] ἀγινοῖ] ἀγινεῖ V. A. E.

ib. Cant. cum edit. Arati ubivis habet optativos ἀγινοῖ, διδάσκοι, ἐπινεύοι, pro quibus codd. V. A. E. indicativos exhibent, ἀγινεῖ etc. Sed lectionem vulgatam tuentur tum formæ verborum quæ antecesserunt, tum ipsæ sententiæ, infinite expressæ. HEEREN.

[s] διδάσκοι] διδάσκει V. A. E.

[t] κεν οἱ] καὶ V. A. E.

[u] μετήορον] μετῆωρον A.

[x] ἐπινεύοι] –νεύει V. A. E.

[y] ἐπεὶ] ἐπὴν V. A.

[z] ὅλος—κύκλος] ὅλον—κύκλον V. A. E.

[a] ἑλίσσῃ] ἑλίσσει V. A.

[b] δ' ἐς] δ' εἰς V. δ' εἰ A.

[c] Πάντῃ μὲν bene exhibent Stob. codd. pro πάντῃ γὰρ ap. Arat., sequitur enim δέ.—Iidem καθαρῇ τε habent pro καθαρῇ κε ap. Arat. HEEREN.

[d] πάντα] πάντῃ V. A. E.

[e] κελεύθους] κέλευθον V. A. E.

[f] δ' οὐ μάλα πᾶσιν Stob. codd. bene pro δ' οὔτ' ἄρ πᾶσιν ap. Arat. HEEREN.

[g] τριτάτῃ] τριτάτῃ τε V.

[h] Pro διχαζομένης ap. Arat. eodem sensu διχαιομένης. HEEREN.

σημαίνει διχόμηνον· ἀτὰρ πάλιν [i] ἐκ διχομήνου
[j] ἐς διχάδα φθιμένην· [k] δέχεται μὲν αὐτίκα τετρὰς
μηνὸς ἀποιχομένου· ἡ δὲ τριτάτη ἀπιόντος·
[572] εἰ δέ [l] κέ μιν περὶ πᾶσαν ἁλωαὶ κυκλώσωνται,
ἢ τρεῖς, ἠὲ [m] δύω περικείμεναι, ἠὲ μί' οἴη,
τῇ μὲν ἴῃ ἀνέμοιο γαληναίης τε [n] δοκεύειν,
ῥηγνυμένῃ, ἀνέμοιο· μαραινομένῃ δὲ, γαλήνης· p. 62.
[o] ταὶ δύο δ' ἂν χειμῶνι [p] περιτροχάοιντο σελήνην·
μείζονα δ' ἂν χειμῶνα φέροι τριέλικτος ἁλωὴ,
καὶ μᾶλλον μελανεῦσα· καὶ εἰ [q] ῥηγνύατο, μᾶλλον.

Κεφ. κζ'.

[a] ΠΕΡΙ ΓΑΛΑΚΤΟΣ.

Κύκλος ἐστὶ νεφελοειδὴς, ἐν μὲν τῷ ἀέρι διαπαντὸς φαινό-
[574] μενος, διὰ δὲ τὴν λευκόχροιαν ὀνομαζόμενος γαλαξίας.

[i] διχομηνῆς] ἐκ διχομήνου V. E. ἐνδιχομήνου A.

ib. διχομήνου omnes Stob. codd. In Arati ed. διχομήνης. HEEREN.

[j] εἰς] ἐς V. A.

[k] Legitur ap. Arat. ἔχεται δέ οἱ αὐτίκα τετρὰς μηνὸς ἀποιχομένου, τῇ δὲ τριτάτῃ ἀπιόντος. *Succedit autem huic* (nempe τῇ διχάδι) *tetras luna decrescente; huic autem trias;* ubi tamen pro τριτάτη saltem legendum foret τριτάτη casu primo.—Stobæi quidem lectio a me vulgata, (tenent autem eam cum Cant. omnes codd,) non minus obscura, quin et aperte corrupta est; attamen in re incerta nil in ea mutare ausus sum, cum nos ad verum forte inveniendum ducere possit. Quid enim? si legas δέχεται δέ μιν αὐτίκα τέτρας, eodem sensu? Quamvis vel sic ultima obscura manere profiteor. Nec Grotii lectionem expedio: δέχεται δὲ οἱ αὐτίκα τετράς. Relinquenda itaque hæc potius sunt futuris poëtæ interpretibus. HEEREN.

[l] κε] καὶ V. A. E.

[m] δύω] δύο A. qui v. seq. ἀνέμοι.

[n] δοκεύειν] δοκέειν V. A. E.

[o] ταὶ] τὰς A. Verba χειμῶνι—δ' ἂν om. A.

[p] In Arat. ed. περιτροχάοιτο σελήνῃ. Sed nostram lectionem cum Cant. exhibent Codd. V. A. E. P. Num σελήνην tertio vel quarto casu legas, ad idem redit; sed περιτροχάοιντο, plurali numero, grammatica ratio postulat. HEEREN.

[q] ῥηγνύατο] ῥυγνύατο V. A. E.

I.

[a] Plut. II. 1. et Galen. c. XVII. περὶ τοῦ γαλαξίου κύκλου. HEEREN.

[b]ΤΩΝ ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΩΝ οἱ μὲν ἔφασαν ἀστέρος εἶναι διάκαυσιν, ἐκπεσόντος μὲν ἀπὸ τῆς ἰδίας ἕδρας, [c]δι' οὗ δὲ περιέδραμε χωρίου κυκλοτερῶς αὐτὸ περιφλέξαντος, ἐπὶ τοῦ κατὰ Φαέθοντος ἐμπρησμοῦ· οἱ δὲ τὸν ἡλιακὸν ταύτῃ [d]φασὶ κατ' ἀρχὰς γεγονέναι δρόμον. Τινὲς δὲ κατοπτρικὴν εἶναι φαντασίαν τοῦ ἡλίου, τὰς αὐγὰς πρὸς τὸν οὐρανὸν ἀνακλῶντος, ὅπερ [e]κἀπὶ τῆς [f]ἴριδος ἐπὶ τῶν νεφῶν συμβαίνει.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ διὰ τὴν πάροδον τοῦ ἡλίου, τοῦτον γὰρ εἶναι τὸν ἡλιακὸν κύκλον.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ τὸ τοῦ πυκνοῦ καὶ [g]τὸ τοῦ ἀραιοῦ μίγμα γαλακτοειδὲς ἀποτελέσαι χρῶμα.

[576] [h]ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ τὴν σκιὰν τῆς γῆς κατὰ τόδε τὸ μέρος ἵστασθαι τοῦ οὐρανοῦ, ὅταν περὶ τὴν γῆν ὁ ἥλιος [i]γενόμενος μὴ πάντα περιφωτίζῃ.

[Δημόκριτος] πολλῶν καὶ μικρῶν καὶ συνεχῶν ἀστέρων,

[b] Οἱ μὲν Πυθαγόρειοι] Τῶν Πυθαγορείων οἱ μὲν ἔφασ. etc. V. A. E. ib. Aristot. Meteorol. I. 8. Τῶν μὲν οὖν καλουμένων Πυθαγορείων φασί τινες ὁδὸν εἶναι ταύτην, οἱ μὲν τῶν ἐκπεσόντων τινὸς ἄστρων, κατὰ τὴν λεγομένην ἐπὶ Φαέθοντος φθοράν· οἱ δὲ τὸν ἥλιον τοῦτον τὸν κύκλον φέρεσθαί ποτε φασίν. Docte vero de utraque hac opinione disputat Olympiod. ad Arist. l. c. fol. 15 b. HEEREN.

[c] δι' οὗ δὲ περιέδραμε χωρίου ἐμπρησμοῦ τὸν ἡλιακὸν ταύτῃ φησὶ κατ' ἀρχὰς] δι' οὗ δὲ περιέδραμεν χωρίου (χωρίον A. E.) κυκλοτερῶς αὐτὸ περιφλέξαντος, ἐπὶ τοῦ κατὰ Φαέθοντος ἐμπρησμοῦ. Οἱ δὲ τὸν ἡλιακὸν etc. V. A. E.

[d] φησὶ] φασὶ V.

[e] κ' ἀπ'] κἀπὶ τῆς V. A. E.

[f] ἴριδος] ἔριδος A. qui statim om. ἐπί.

[g] τοῦ] τὸ τοῦ A.

[h] Anaxagoræ et Democriti sententias sic exponit Aristot. l. c. Οἱ δὲ περὶ Ἀναξαγόραν καὶ Δημόκριτον, φῶς εἶναι τὸ γάλα λέγουσι ἄστρων τινῶν· τὸν γὰρ ἥλιον ὑπὸ τὴν γῆν φερόμενον, οὐχ ὁρᾶν ἔνια τῶν ἄστρων. Ὅσα μὲν οὖν ὁρᾶται ὑπ' αὐτοῦ, τούτων μὲν οὐ φαίνεσθαι τὸ φῶς, κωλύεσθαι γὰρ ὑπὸ τῶν τοῦ ἡλίου ἀκτίνων· ὅσοις δ' ἀντιφράττει ἡ γῆ, ὥστε μὴ ὁρᾶσθαι ὑπὸ τοῦ ἡλίου, τὸ τοιούτων οἰκεῖον φῶς εἶναι τὸ γάλα; in qua ut in reliquorum sententiis refutandis, multus est Aristoteles. Pro περὶ τὴν γῆν, quod obscurum est, legendum videtur ex Aristot. ὑπὸ τ. γ. Democriti nomen, quod apud Stob. exciderat, addidi ex Plut. Gal. HEEREN.

[i] γενόμενος ὁ ἥλιος] ὁ ἥλιος γενόμενος A.

συμφωτιζομένων [k]ἀλλήλοις, διὰ τὴν πύκνωσιν συναυγασμόν.

[l]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἀναθυμιάσεως [m]ξηρᾶς ἔξαψιν πολλῆς τε καὶ συνεχοῦς. Τὸν γὰρ κύκλον ἐν ᾧ δοκεῖ θεωρεῖσθαι μέγιστον ὄντα, πλήρη τῶν μεγίστων ὑπάρχειν καὶ [n]λαμπροτάτων ἄστρων, καὶ ἔτι τῶν σποράδων καλουμένων, ὥστε διὰ ταῦτα συνεχῶς πλείστην περὶ [o]τοῦτον ἀθροίζεσθαι τὸν τόπον τὴν ἀπὸ τῆς γῆς ἀναθυμίασιν, καὶ ποιεῖν τὴν τοῦ γάλακτος φαντασίαν.

ΠΟΣΕΙΔΩΝΙΟΣ [p]πυρὸς σύστασιν, ἄστρου μὲν μανωτέραν, αὐγῆς δὲ πυκνοτέραν.

Κεφ. κη΄.

ΠΕΡΙ ΚΟΜΗΤΩΝ, ΚΑΙ ΔΙΑΤΤΟΝΤΩΝ, ΚΑΙ ΤΩΝ ΤΟΙΟΥΤΩΝ.

I

Τῶν ΠΥΘΑΓΟΡΕΙΩΝ τινὲς μὲν ἀστέρα φασὶν εἶναι τὸν
[578] κομήτην, τῶν οὐκ αἰεὶ μὲν φαινομένων, διὰ δέ τινος διωρισμένου χρόνου [a]περιοδικῶς ἀνατελλόντων· ἄλλοι δὲ ἀνά-

k τ' ante ἀλληλ. om. V. A.

l Aristoteles sententiam suam, hic adductam, copiosius ipse exposuit in Meteorol. l. c.—Cf. quoque de ea Olympiod. ad h. l. HEEREN.

m ξηρᾶς] μικρᾶς V. A.

n τῶν λαμπ.] τῶν om. A. Cant.

o τούτων] τοῦτον V. A.

p πυρὸς σύστασιν ἄστρου μὲν] Sic Cant. cum Plutarch. Plac. III. 1. πρὸς σύστασιν μὲν ἄστρου V. A. E.

1.

Pythagoricorum de cometis sententias servavit quoque Aristot. Meteorol. I. 6. Τῶν δ' Ἰταλικῶν τινες, καὶ καλουμένων Πυθαγορείων, ἕνα λέγουσιν αὐτὸν εἶναι τῶν πλανητῶν ἀστέρων, ἀλλὰ διὰ πολλοῦ τε χρόνου τὴν φαντασίαν αὐτοῦ εἶναι, καὶ τὴν ὑπερβολὴν ἐπὶ μικρὸν, ὅπερ καὶ συμβαίνει περὶ τὸν τοῦ Ἑρμοῦ ἀστέρα.—Alteram opinionem, qua cometa solaris luminis refractio esse dicitur, Aristoteles tribuit Hippocrati. Copiose et erudite de utraque disputant Aristotelis interpretes Olympiod. ad Meteorol. p. 12. et Ioh. Philop. fol. 94. ed. Ald. HEEREN.

a περιοδικῶν] περιοδικῶς A. V. E.

κλασιν τῆς ἡμετέρας ὄψεως [b] πρὸς τὸν ἥλιον [c] παραπλησίαν ταῖς κατοπτρικαῖς ἐμφάσεσιν.

[d] ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ καὶ Δημόκριτος σύνοδον ἀστέρων δυοῖν ἢ καὶ πλειόνων κατὰ συναυγασμόν.

[e] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ τῆς ξηρᾶς ἐκ γῆς ἀναθυμιάσεως διάπυρον [f] σύστασιν· κομήτας δὲ, ὅταν ἐπὶ πλέον [g] ἐξαφθῇ καὶ πρὸς πλείονα διαμένῃ χρόνον, τοῦ μὲν ἀστέρος φαινομένου κάτωθεν, τῆς δὲ κόμης ἄνωθεν ἐπιλαμπούσης· πωγωνίας δὲ, ὅταν ἔμπαλιν ὁ μὲν ἀστὴρ ἄνωθεν [h] θεωρῆται, ἡ δὲ κόμη [i] κάτωθεν, παρεχομένη τῷ σχήματι πώγωνος ἔμφασιν.

ΣΤΡΑΤΩΝ [k] ἄστρου φῶς περιληφθὲν νέφει πυκνῷ, καθάπερ ἐπὶ τῶν λαμπτήρων [l] γίγνεται.

ἩΡΑΚΛΕΙΔΗΣ ὁ Ποντικὸς, νέφος μετάρσιον ὑπὸ μετ-
[580] αρσίου φωτὸς καταυγαζόμενον. Ὁμοίως δ' [m] αἰτιολογεῖ p. 63.
πωγωνίαν, δοκίδας, κίονα, καὶ τὰ τούτοις συγγενῆ, καθάπερ ἀμέλει πάντες οἱ Περιπατητικοὶ παρὰ τοὺς τοῦ νέφους [n] γίγνεσθαι ταῦτα σχηματισμούς.

ἘΠΙΓΕΝΗΣ πνεύματος [o] ἀναφορᾷ γαιομιγοῦς πεπυρωμένου.

ΒΟΗΘΟΣ ἀέρος ἀνημμένου φαντασίαν.

[p] ΔΙΟΓΕΝΗΣ ἀστέρας εἶναι τοὺς κομήτας.

[b] εἰς τὸν] πρὸς τὸν A. E.

[c] παραπλησίως] –σίαν V. A.

[d] Aristot. l. c. Ἀναξαγόρας μὲν οὖν καὶ Δημόκριτός φασιν εἶναι τοὺς κομήτας σύμφασιν τῶν πλανητῶν ἀστέρων, ὅταν διὰ τὸ πλησίον ἐλθεῖν δόξωσι θιγγάνειν ἀλλήλων. HEEREN.

[e] Aristoteles suam de cometis sententiam copiose exposuit in Meteorol. I. 7. quæ noster ante oculos habuit. Discrimen tamen inter cometen et pogoniam paulo aliter ibi constituitur. HEEREN.

[f] σύστασιν] σύστημα A.

[g] ἐξαυθῇ] ἐξαφθῇ A. E.

[h] θεωρεῖται] θεωρεῖται (η superscr.) A.

[i] κάτω παρεχομένης] κάτωθεν. παρεχομένη etc. V. A.

[k] ἄστρου] ἄστρων A.

[l] γίγνεται om. A. E.

[m] αἰτιολογεῖ] ἀντιολογεῖ A.

[n] γίγνεσθαι ταῦτα] ταῦτα γίνεσθαι A.

[o] ἀναφορᾷ] Plut. ἀναφορὰν, et cum eo Galen. Defendi tamen poterit lectio Stobæi, si supples γίγνεσθαι. HEEREN. γαιωμιγοῦς A.

[p] Διογένης—κομήτας accedunt ex V. A.

[q] ʼΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ *τοὺς καλουμένους διάττοντας ἀπὸ τοῦ αἰθέρος* [r] *σπινθήρων δίκην καταφέρεσθαι, διὸ καὶ παραυτίκα σβέννυσθαι.*

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ *τὴν* [s] *εἰς τὰ νέφη τοῦ ἡλίου βίαιον ἔμπτωσιν πολλάκις* [t] *σπινθηρίζειν.*

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ [u] *πάντα τὰ τοιαῦτα νεφῶν* [x] *πεπυρωμένων συστήματα ἢ* [y] *κινήματα.*

[582] *Χαλδαίους μὲν δὴ λόγος περὶ κομητῶν ὧδε γιγνώσκειν· ὅτι εἰσί τινες καὶ ἄλλοι ἔξω τῶν φαινομένων πλανητῶν ἀστέρες, οἱ τέως μὲν ἀφανεῖς εἰσὶν, ὅτε ἐπὶ πολὺ ἄνω που ἀφ᾽ ἡμῶν φέρονται, ἤδη δὲ καὶ ταπεινωθέντες ὤφθησαν,* [z] *οὕτως πως* [zz] *ξενοὶ ἐνεχθέντες εἰς τὰ ὅλα· καὶ τούτους κομήτας καλεῖν φίλον τοῖς οὐ γινώσκουσιν ὅτι* [a] *καὶ αὐτοὶ ἐκ τῶν πολλῶν ἀστέρων εἰσί·* [b] *ἀφανίζεσθαι δὲ δοκοῦσιν, ἐπειδὰν* [c] *ἀνενεχθῶσιν εἰς τὴν σφῶν χώραν, δῦντες εἰς τὸ βάθος τοῦ αἰθέρος, ὥσπερ εἰς τὸν τοῦ πελάγους βυθὸν* [d] *οἱ ἰχθῦς.* [e] *Οἱ δ᾽ ὑπ᾽ ἀνέμων ἢ θυέλλης ἀναφέρεσθαί* [f] *τινα*

[q] Ἀναξαγόρας] Anaxagoræ hanc sententiam confirmat Diog. II. 9. τούς γε διάττοντας οἷον σπινθῆρας ἀπὸ τοῦ ἀέρος ἀποπάλλεσθαι. HEEREN.

[r] σπινθήρων] σπινθῆρος V. A.

[s] Ante εἰς τὰ add. τὴν V. A.

[t] σφὶν τήρησιν] σφιντήρισιν A. E. ib. σπινθηρίζειν revocavi ex Plut. et Galen. HEEREN.

[u] πάντα] πάντα τὰ V. A.

[x] πεπυρωμένων om. A.

[y] καὶ κιν.] καὶ deest V. A. E.

[z] Corrupte edidit Cant. οὕτως ξυνενεγκόντες εἰς τὰ ὅλα. Vertit ille: *re ita exigente*, nescio quo jure. Codd. V. A. legunt ξυνενέγκοντες; Esc. vero ἐξενεγκόντες, nullo meliori sensu. Veram lectionem eruisse mihi videor ex iis quæ sequuntur: ἐπειδὰν ἀνεχθῶσιν εἰς τὴν σφῶν χώραν, rescribendo hoc loco, οὕτως πως ξενοὶ ἐνεχθέντες εἰς τὰ ὅλα. *Hospitum instar in nostrum cœlum illati.* Nam τὰ ὅλα intelligendum est de mundo nostro, i. e. de cœlo et regione a sideribus quæ nos conspicimus occupata; cui opponitur immensum ætheris spatium, ab aliis *vacuum* vocatum, extra limites nostri mundi. Cf. supra p. 442. διαφέρειν γὰρ τὸ πᾶν καὶ τὸ ὅλον· πᾶν μὲν γὰρ σὺν τῷ κενῷ τῷ ἀπείρῳ, ὅλον δὲ χωρὶς τοῦ κενοῦ τὸν κόσμον. HEEREN. p. 47, 35. ed. Cant.

[a] δὲ καὶ] δὲ deest V. A.

[b] ἀφανίζουσαν] ἀφανίζουσι V. A.

[c] ἀνεχθῶσιν] ἀνενεχθῶσιν V. A.

[d] οἱ] οἷα V. A. E.

[e] Οἱ δ᾽ ἐπ᾽] Οἱ δὲ ὑπ᾽ V. A.

γαιώδη ἐς τὸν ἄνω ἀέρα ἐδόξασαν, καὶ ταῦτα ἐκπυρωθέντα, [g]καὶ εἰς τὴν [h]δίνην ἐμπεσόντα τοῦ αἰθέρος, ξυμπερινοστεῖν τῷ παντὶ ἐπὶ χρόνον, ἔπειτα ἀπαναλωθέντα πρὸς τοῦ πυρὸς ἀφανῆ καθίστασθαι, καὶ τοὺς κομήτας [i]δὲ καλουμένους ἀστέρας ταῦτα εἶναι.

[k]ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΥ δὲ ὁ λόγος λεγόμενός ἐστιν, ὥς κατ' ἀντίλαμψιν τῶν πλανωμένων ἀστέρων πρὸς ἀλλήλους τε
[584] καὶ τοὺς ἀπλανεῖς οἱ κομῆται συνίστασθαι δοκοῦσι, καθάπερ πλειόνων κατόπτρων ἀντιλαμπόντων σφισὶν ἤδη τινὰ ὤφθη ἀστεροειδῆ [l]φαντάσματα.

2 [a]Ἀρριανοῦ.

Ἀρριανός φησιν· Ὅσα δὲ μένει ἐπὶ χρόνον τὰ μὲν ὡς συμπεριφέρεσθαι τῷ οὐρανῷ, τὰ δὲ ἤδη τινὰ καὶ ἰδίαν πλάνην πλανώμενα· [b]οὗτοι εἰσὶν οἱ κομῆται ἀστέρες, καὶ λαμπάδες, καὶ πωγωνίαι, καὶ πίθοι, καὶ δοκίδες, καθ' ὁμοιότητα [c]ἕκαστα τῇ ἰδέᾳ τῆς ἐπωνυμίας [d]λεγόμενα. Τεκμήριον δὲ, ὅτι μὴ παραυτίκα διαφθείρεται, ὡς εἴ γε ἐν τῷ ἀέρι ξυνίσταντο, ταχεῖα ἂν ἐγίγνετο αὐτοῖς ἐν τῷ ψυχρῷ ἢ

[f] Ante τινὰ ap. Cant. et in codd. male insertum erat εἰς, quod delevi.—Denique δίνην, *verticem, turbinem,* bene servarunt codd. V. A. E. pro δίκην ap. Cant. HEEREN.

[g] καὶ ante εἰς deest V.

[h] δίκην] δίνην V. A. E.

[i] γε pro δὲ ed. Heeren.

[k] Δημόκριτος] Δημοκρίτου V. A. E.

[l] φαντάσματι] –ματα A. V. E.

2.

[a] Ἀρριανοῦ] Plane diversus fuit hic Arrianus ab Arriano Stoico. Memoriam ejus servavit Phot. p. 1378. ubi eum librum *de cometis* reliquisse tradit, ex quo hæc descripta esse debent. Alium ejus librum περὶ τῶν μετεώρων laudat Joh. Philop. ad Arist. Phys. p. 24. qui num ab illo de cometis diversus fuerit, vel potius locus de cometis tantum pars illius fuerit, dubitari potest. Attamen, cum cometæ non proprie ad *meteora*, sed potius ad *cœlestia*, pertineant, diversi fuisse videntur. Certe ex illo de Meteoris quoque locum servavit Stobæus, infra cap. 29. fr. 2. HEEREN.

[b] οὗτοι] οὗτοι δ' Heeren.

[c] ἑκάστη ἰδέα τῆς ἐ. λέγοντα] Leviter correxi ἕκαστα τῇ ἰδέᾳ assumpto λεγόμενα ex V. Infra p. 229. 14. καθ' ὁμοιότητα τοῦ εἴδους ὅτῳ ἐπιφημίζεται.

[d] λέγοντα] λεγόμενα V. λέγωντα A. λαχόντα conj. Canter. Mox παχεῖα A.

σβέσις. Ὅτι δὲ [e] πρόσκαιρός ἐστιν ἡ φθορὰ αὐτῶν, ἐδήλωσε, καὶ ὅτι πρὸς ἄρκτοις [f] μᾶλλόν τι ἢ ἄλλῃ χώρᾳ συνίσταται τοῦ οὐρανοῦ, [g] καὶ τούτῳ ἔτι αὐτῶν μέρει ἔνθα παχύς τε ὁ ἀὴρ [h] μᾶλλον, καὶ ἡ σύστασις οὐ ῥᾳδία φορηθῆναι πρὸς γῆν. Φέρονταί τε ἀτάκτως οἱ πολλοὶ τῶν κο-
[586] *μητῶν, ἐπινεμομένοι, ἐμοὶ [i] δοκεῖν, τὴν ἄνω ἀναφερομένην τροφὴν, καὶ ταύτῃ [k] ἐφομαρτοῦντες· ἡ δὲ ἀρχὴ αὐτῶν ἀστεροειδής ἐστι, καθότι [l] εἰς σφαῖραν ξυνάγεσθαι πέφυκε πᾶν, ὅσον [m] πυροειδές· ἡ δὲ κόμη, αὐγοειδὴς, τῶν μὲν ὥσπερ ἄφετος [n] ἀνειμένη, τῶν δὲ ἀπευθὺς οὖσα, καὶ [o] ἐς τὸ ἄνω μᾶλλόν τι ἀπὸ τοῦ ἀέρος τεινομένη. Οἱ δὲ πίθοι ὀλιγάκις πεφήνασι, καθότι πλείονος δέονται ξυναγωγῆς πυρός. Ἤδη δὲ καὶ τῶν ἀπλανῶν ἐστιν οἱ [p] ξὺν κόμῃ ἐφάνησαν, ἐπειδὰν περὶ αὐτοὺς ἀέρος ἀναφορὰ πυκνωθεῖσα ξυναφὲς ἐργάσηται τῆς κόμης τὸ εἴδωλον, καθάπερ καὶ [q] ἄλως ξυναφεῖς αὐτοῖς τοῖς ἄστροις φαίνονται. Ἤδη δὲ καὶ πλησίον ἡλίου ξυν-*

[e] πρόσκαιρος] πρόσκαιρα V. A.

[f] μᾶλλον ἔτι ἢ ἄλλη] μᾶλλόν τι ἢ ἄλλῃ V. A. P.

[g] Corruptissimus fuit hic locus apud Cant. Habet ille: καὶ τοῦτο ἐπ' αὐτὸν φέρει ἔνθα παχύς τε ὁ ἀὴρ μ. κ. σ. οὐ ῥαδ. φορηθῆναι πρὸς τὴν οὐ φέρονται, etc. Codd. nihil solatii afferunt, sed omnem h. l. conjecturæ relinquunt. Καὶ τούτῳ ἔτι αὐτῶν (scil. τῶν ἄρκτων) μέρει est præclara Cant. in marg. emendatio, quam in contextum recipere non dubitavi. *Conspici cometas semper versus septentrionem*, (quam tamen opinionem oppugnat Arist. Meteor. I. 9. et ejus interpretes ad h. l. Olympiodorus et Philoponus. Præter eos vero Seneca Quæst. Nat. VII.) *maxime autem ea parte ubi aër sit densissimus.* Mox γῆν pro τὴν facili conjectura ipse rescripsi. *Conspici iis locis, quibus ob densitatem aëris non facile ad terram ferri possint.* Hic vero majori distinctione posita, delevi οὐ, quod sequentia non admittunt. HEEREN.

[h] μᾶλλον] καὶ μᾶλλον V. A.

[i] δοκεῖ] δοκεῖν V. A. E.

[k] ἐφομαρτ.] ἐφαμαρτοῦντες V. ἐφαρμοῦντες A. Mox μορφὴ Wyttenbach. pro ἀρχή.

[l] εἰς σφαῖραν, *in orbem*, rescripsi pro εἰς φέρον ap. Cant. [et A.] quod nemo intelligit. Sic vertit quoque Cant. πυροειδὲς pro πυροειδὴς grammatica ratio postulat. HEEREN.

[m] πυροειδὴς] –ειδεῖ V.

[n] ἀνειμένου] ἀνειμένη V. ἀνημένη (μ supra) A.

[o] ἐς τὸ ἄνω μᾶλλον] εἰς τὸ ἀνώμαλλοντι V. εἰς τὸ ἀνώμαλόν τι A.

[p] ξὺν κόμῃ] ξυγκόμῃ A.

[q] ἄλως] ἄλλως V. A.

στάντες κομῆται, οἱ μὲν [r] ἔφθησαν ἀφανισθῆναι πρὶν τὴν
γένεσιν αὐτῶν καταστῆναι [s] ἐμφανῆ· οἱ δὲ ἐκλείποντος ἡλίου p. 64.
ἐξεφάνησαν· οἱ δὲ καὶ [t] ἐπικαταδύνοντες τῷ ἡλίῳ, πρόσθεν,
οἷα δὴ εἰκὸς, ὑπὸ τῶν [u] αὐγῶν καταλαμπόμενοι, τῷ μὴ
[588] ἐμφανεῖς καθίστασθαι. Ὥστ' ἐκεῖνος ἂν κρατοίη ὁ λόγος,
ἀποφαίνειν ἀέρος [x] πιλήματα, ἀποθλιβόμενα καὶ ἐμ-
πίπτοντα εἰς τὰ κατωτέρω καὶ τῷ ἀέρι ξυναφῆ, τοῦ αἰθέρος
ἐξαφθέντα, ἐς τ' ἂν ὑπάρχοι περὶ αὐτοὺς ἡ τροφὴ ξυμ-
μένειν τε καὶ ξυμπερινοστεῖν τῷ αἰθέρι. Καὶ ταῦτα ὅπως
ἂν τύχῃ ἀπὸ τῆς ἰδέας ἐπικληΐζεσθαι ἕκαστον, κομήτας
μὲν, ἀφ' ὧν ὥσπερ [y] κόμη εἰς τὰ κύκλῳ ἀπολάμπει αὐγὴ,
ἢ πυρός· πωγωνίας δὲ, [a] ἀφ' ὅτου εἰς πώγωνος σχῆμα
ἀπήρτηται [b] αὐγὴ ἐς τὸ ἐπιθάτερα· πίθους δὲ, ὅσα με-
γάλα, κυκλοτερῆ, [c] καί τι καὶ βάθους ἐν σφισιν ἐξέφηνε·
δόκους δ' [d] αὖ καὶ λαμπάδας, καθ' ὁμοιότητα [e] τοῦ εἴδους
[f] ὅτῳ ἐπιφημίζεται. [g] Φαίνεται δὲ τούτων ἕκαστον καὶ
ἑσπέριον καὶ ἑῷον, τὰ δὲ καὶ ἀμφιφανῆ φαίνεται. Ἀμφι-
φανῆ δὲ κλῄζουσιν, ὅσα περὶ πρῶτα τῆς νυκτὸς φανέντα
πρὸς δύσει, ἔπειτα ἐν τῇ αὐτῇ νυκτὶ, πρὶν ἡμέραν ἐπιλα-
βεῖν, ἔφθη ἀνασχόντα.

[r] ἔφθησαν] ἔφθισαν V.

[s] ἐμφανεῖς] ἐμφανῆ V. A.

[t] ἐπικαταδύναντες] –δύνοντες V. A.

[u] αὐτῶν καταλιμπανόμενοι] αὐγῶν καταλαμπόμενοι Canteri margo.

[x] πιλήματι] πιλήματα V. A.

[y] κόμη rescripsi pro κόμης ap. Cant. et in codd. In sequentibus corrupte exstat ἀπολάμπει αὐτῆς ἢ πυρὸς, in quibus pro αὐτῆς, certissima ni fallor conjectura, rescripsi αὐγὴ, *igneo eos splendore circumdatos esse.* HEEREN.

[a] ἄφοτα] ἀφότω V. A. ἀφ' ὅτου Heeren.

[b] αὐτῆς εἰς] αὐγὴ ἐς Heeren.

[c] καίτοι] καί τι V. A.

[d] ἂν] αὖ V. A.

[e] Post τοῦ εἴδους spatiolum V. A. E.

[f] Pro ὅτῳ codd. V. A. τῷ, antea spatiolo vacuo relicto. Edidi itaque ὅτῳ i. e. ᾧτινι. HEEREN.

[g] Φαίνεται] φαίνονται A.

Κεφ. κθʹ.

[590] ## ΠΕΡΙ [a]ΒΡΟΝΤΩΝ, ΑΣΤΡΑΠΩΝ, ΚΕΡΑΥΝΩΝ, ΠΡΗΣΤΗΡΩΝ [b]ΚΑΙ ΤΥΦΩΝΩΝ.

I

ἈΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ ἐκ τοῦ πνεύματος ταῦτʼ εἶπε συμβαίνειν· ὅταν γὰρ περιληφθὲν νέφει παχεῖ βιασάμενον ἐκπέσῃ τῇ [c]λεπτομερείᾳ καὶ κουφότητι, τότʼ ἡ μὲν ῥῆξις τὸν ψόφον, ἡ δὲ διαστολὴ παρὰ τὴν [d]μελανείαν τοῦ νέφους τὸν διαυγασμὸν ἀποτελεῖ.

ἈΝΑΞΙΜΕΝΗΣ [e]ταυτὰ τούτῳ, προστιθεὶς τὸ ἐπὶ τῆς θαλάσσης, ἥτις σχιζομένη ταῖς κώπαις παραστίλβει.

ΜΗΤΡΟΔΩΡΟΣ, ὅταν εἰς νέφος πεπηγὸς ὑπὸ πυκνό-
[592] τητος ἐμπέσῃ πνεῦμα, τῇ μὲν συνθραύσει [f]τὸν κτύπον ἀποτελεῖ, τῇ δὲ πληγῇ καὶ τῷ [g]σχισμῷ διαυγάζει, τῇ δʼ ὀξύτητι τῆς φορᾶς, [h]προσλαμβάνον τὴν ἀπὸ τοῦ ἡλίου θερμότητα, κεραυνοβολεῖ· τοῦ δὲ κεραυνοῦ τὴν ἀσθένειαν εἰς πρηστῆρα [i]περιΐστησιν.

[k]ἈΝΑΞΑΓΟΡΑΣ, ὅταν θερμὸν εἰς τὸ ψυχρὸν ἐμπέσῃ, (τοῦτο δʼ ἐστὶν αἰθέριον μέρος εἰς ἀερῶδες,) τῷ μὲν ψόφῳ

I.

[a] ΒΡΟΝΤΩΝ] βροτῶν A. qui mox om. κεραυνῶν.

[b] ΚΑΙ ante ΤΥΦ. deest V. A. E.

[c] λεπτομερίᾳ] λεπτομερείᾳ V. A.

[d] μελανίαν] μελανείαν V. A. E.

[e] ταυτὰ τούτῳ, *eadem cum illo*, rescripsi pro ταῦτα τοῦτο. Eodem quoque sensu emendari posset ταυτὸ τοῦτο. HEEREN.

[f] τὸν κτύπον] κατὰ κτύπον A.

[g] σχισμῷ recepi ex Plut. et Gal. pro σεισμῷ, quod habent Stob. codd. Postulat enim lectionem illam aperte verbum διαυγάζει. *Per fissuram, turbinis ictu in nubibus ortam, translucere fulmen.* Idem quoque Cant. in versione expressit, vertens, *discidium*. HEEREN.

[h] προσλαμβάνον] –βάνων V. A.

[i] περίστησι] περιίστησιν V. A. περίστησιν E.

[k] Anaxagoræ placitum aliis verbis et brevius servavit Aristot. Meteor. II. 9. Ἀναξαγόρας, τοῦ ἄνωθεν αἰθέρος, ὃ δὴ ἐκεῖνος καλεῖ πῦρ, (ap. nostr. τὸ θερμὸν,) κατενεχθὲν ἄνωθεν κάτω; i. e. *in regionem aëriam*. HEEREN.

βροντὴν ἀποτελεῖ, τῷ δὲ παρὰ τὴν [l]μελανείαν τοῦ νέφους χρώματι, τὴν ἀστραπήν· τῷ δὲ πλήθει καὶ μεγέθει τοῦ φωτὸς, τὸν κεραυνόν· τῷ δὲ [m]πολυσωμάτῳ πυρὶ, τὸν τυφῶνα· τῷ δὲ νεφελομιγεῖ, τὸν πρηστῆρα.

ἈΡΧΕΛΑΟΣ [n]ταυτὸ τούτῳ λέγει, παρατιθεὶς τὸ τῶν διαπύρων λίθων καθιεμένων ἐς ψυχρὸν ὕδωρ πάθος.

ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ ἀστραπὰς γίγνεσθαι, λαμπρυνομένων τῶν νεφῶν κατὰ τὴν κίνησιν.

ἘΜΠΕΔΟΚΛΗΣ ἔμπτωσιν φωτὸς εἰς νέφος, ἐξείργοντος τὸν [o]ἀνθεστῶτα ἀέρα, οὗ τὴν μὲν σβέσιν καὶ τὴν θραῦσιν κτύπον ἀπεργάζεσθαι, τὴν δὲ λάμψιν, ἀστραπήν· κεραυνὸν δὲ, τὸν τῆς ἀστραπῆς [p]τόνον.

[594] ΔΙΟΓΕΝΗΣ [q]ἔμπτωσιν πυρὸς εἰς νέφος ὑγρὸν, [r]βροντὴν μὲν τῇ σβέσει ποιοῦν, τῇ δὲ λαμπηδόνι τὴν ἀστραπήν. Συναιτιᾶται δὲ [s]καὶ τὸ πνεῦμα.

ἩΡΑΚΛΕΙΤΟΣ βροντὴν μὲν, κατὰ συστροφὰς ἀνέμων καὶ νεφῶν, καὶ ἐμπτώσεις πνευμάτων εἰς τὰ νέφη, ἀστραπὰς δὲ, κατὰ τὰς τῶν θυμιωμένων [t]ἐξάψεις, πρηστῆρας δὲ κατὰ νεφῶν ἐμπρήσεις καὶ σβέσεις.

ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ πυρὸς [u]ἐναπολη φθέντος νέφεσι παχυτάτοις ἔκπτωσιν ἰσχυρὰν βροντὴν ἀποτελεῖν ἀποφαίνεται.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ βροντὴν μὲν, ἐκ συγκρίματος ἀνωμάλου, τὸ περιειληφὸς αὐτὸ νέφος πρὸς τὴν κάτω φορὰν ἐκβιαζομένου· ἀστραπὴν δὲ, σύγκρασιν νεφῶν, ὑφ' ἧς τὰ

[l] μελανίαν] –νείαν V. A.

[m] πολὺ σωματωτέρῳ] πολυσωμάτῳ V. A.

[n] τοῦτο] ταυτὸ τούτῳ tacite Heerenius.

[o] ἀνθεστῶτα] καθεστῶτα V.

[p] τόνον] γόνον V. πόνον A.

[q] ἔμπτωσιν est præclara Canteri in marg. conjectura pro ἐμπύρωσιν, quod cum Cant. omnes exhibent codd. HEEREN.

[r] βροντὴν] βροντῆς A.

[s] καὶ om. A.

[t] ἐξάψεις] ἐξάψϊς A.

[u] ἐναποληφθέντος] –λειφθέντος V. A.

γεννητικὰ τοῦ πυρὸς διὰ τῶν [x] πολυκένων ἀραιωμάτων ταῖς [y] παρατρίψεσιν εἰς τὸ αὐτὸ συναυλιζόμενα [z] διηθεῖται· κεραυνὸν δὲ, ὅταν ἐκ καθαρωτέρων καὶ λεπτοτέρων, ὁμαλωτέρων p. 65. τε καὶ πυκναρμόνων, καθάπερ αὐτὸς γράφει, γεννητικῶν τοῦ πυρὸς ἡ φορὰ [a] βιάσηται· πρηστῆρα δὲ, ὅταν πολυκενώτερα συγκρίματα πυρὸς ἐν [b] πολυκένοις κατασχεθέντα χώραις, καὶ [c] περιοχαῖς ὑμένων ἰδίων σωματοποιούμενα τῷ πολυμιγεῖ τὴν ἐπὶ τὸ βάρος ὁρμὴν λάβῃ.

[596] ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ ἀστραπὴν, ἔξαψιν νεφῶν ἐκτριβομένων ἢ ῥηγνυμένων [d] ὑπὸ πνεύματος, βροντὴν δὲ εἶναι τὸν τούτων ψόφον· ἅμα δὲ [e] γίγνεσθαι ἐν τῷ ἀέρι βροντήν τε καὶ ἀστραπὴν, πρότερον δὲ τῆς ἀστραπῆς ἀντιλαμβάνεσθαι ἡμᾶς διὰ τὸ τῆς ἀκοῆς ὀξυτέραν εἶναι τὴν ὅρασιν· ὅταν δὲ ἡ τοῦ πνεύματος φορὰ σφοδροτέρα γένηται καὶ πυρώδης, κεραυνὸν ἀποτελεῖσθαι, ὅταν δὲ ἄθρουν ἐκπέσῃ τὸ πνεῦμα καὶ ἧττον πεπυρωμένον, πρηστῆρα γίγνεσθαι, ὅταν δέ τι [f] ἧττον ἢ πεπυρωμένον τὸ πνεῦμα, τυφῶνα.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἐξ ἀναθυμιάσεως καὶ τὰ τοιαῦτα γίγνεσθαι τῆς ξηρᾶς. [g] Ὅταν οὖν ἐντύχῃ μὲν τῇ ὑγρᾷ [h] παραβιάζηται δὲ τὴν ἔξοδον, [i] τῇ μὲν παρατρίψει καὶ τῇ
[598] ῥήξει [k] τὸν ψόφον, τῇ δ' [l] ἐξάψει τῆς ξηρότητος τὴν ἀστραπὴν παρίστησι.

[x] πολυκένων] πολυκέρων V.
[y] παρατρέψεσιν] παρατρίψεσιν A.
[z] διηθεῖται] διαθεῖται A. E.
[a] βιάσηται] βιώσηται vulg.
[b] πολυκένοις] πολυκένων A.
[c] περιοχουμένων ἰδίων σώματος ποιούμενα] περιοχαῖς ὑμένων ἰδίων σωματοποιούμενα etc. V. A. P.
[d] ἀπὸ πν.] ὑπὸ πνεύματος V. A. ἢ ῥηγνυμένων om. A.
[e] Post γίγνεσθαι add. ἐν τῷ ἀέρι βροντήν τε καὶ ἀστραπήν. ποότερον δὲ τῆς ἀστραπῆς ἀντιλαμβάνεσθαι ἡμᾶς, διὰ τὸ τῆς ἀκοῆς ὀξυτέραν εἶναι τὴν ὅρασιν V. A.
[f] ἧττον πεπυρωμένον] ἧττον ἢ (ἢ A.) πεπυρωμένον τὸ πνεῦμα, τυφῶνα V. A. P.
[g] Ὅταν τυχῇ] ὅταν οὖν ἐντύχῃ V. A.
[h] παραβιβάζηται] παραβιβάζεται A. παραβιάζηται Plutarch.
[i] τὴν μὲν] τῇ μὲν V. A.
[k] τὴν ψόφον A.
[l] ἐμφάσει] ἐξάψει Heeren. ex Plutarch.

ΣΤΡΑΤΩΝ, θερμοῦ [m] ψυχρῷ παρείξαντος, ὅταν ἐκβιασθὲν τύχῃ, τὰ τοιαῦτα γίγνεσθαι, βροντὴν μὲν ἀπορρήξει, φάει δὲ ἀστραπὴν, τάχει δὲ κεραυνὸν, πρηστῆρας δὲ καὶ τυφῶνας τῷ πλεονασμῷ τῷ τῆς ὕλης, ἣν ἑκάτερος αὐτῶν ἐφέλκεται, θερμοτέραν μὲν ὁ πρηστὴρ, [n] παχυτέραν δὲ ὁ τυφών.

[o] Οἱ ΣΤΩΙΚΟΙ βροντὴν μὲν προσκρουσμὸν νεφῶν, ἀστραπὴν δὲ, ἔξαψιν ἐκ παρατρίψεως, κεραυνὸν δὲ, σφοδροτέραν ἔκλαμψιν, [p] πρηστῆρα δὲ νωθεστέραν.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ [q] τυφῶνα μὲν, ὅταν [r] ἐκνεφίας δινούμενος [s] καταφέρηται. Τὸ γὰρ πνεῦμα κωλυόμενον μὲν εἰς ὀρθὸν ἰέναι παρ' [t] ἀντίπνοιαν ἢ ψύχος ἢ [u] πάχος ἤ τινα ἄλλην αἰτίαν, ἐλαυνόμενον δὲ [x] ὑπὸ τοῦ κατόπιν [y] ἐπεισιόντος, ἀναστρέφει εἰλούμενον ἐν τῷ νέφει κύκλῳ καὶ συγκατάγει ἐπὶ γῆν ἑαυτῷ τὸ νέφος· εἶθ' ὅτῳ ἂν ἐντύχῃ, φερόμενον σφοδρῶς ἀναρπάζειν, καὶ πάλιν ἀπορρίπτειν, τοῦτο γὰρ εἶναι [600] τὸ πάθος οἷον [z] ἐκνεφίας, ἄπεπτον [a]. Πρηστῆρας δὲ, ὅταν βιαίως κατιὸν ἐκπυρωθῇ τὸ πνεῦμα κατὰ τὴν φορὰν, [b] συνεμπίπρασθαι γὰρ τὸν ἀέρα πυρώσει χρωματιζόμενον, διὸ καὶ νυκτὸς ἐκλάμπειν· ἀναρπάζειν τε καὶ περιτρέπειν

[m] ψυχρῷ] καὶ ψυχρῷ A.

[n] παχυτέραν] Sic V. ταχυτέραν A. qui mox om. ὁ ante τυφών.

[o] Οἱ om. A.

[p] πρηστῆρας δὲ νωθετέραν] πρηστῆρα δὲ νωθεστέραν V. A. E.

[q] τυφῶνα μὲν] Sic Heeren. tanquam ex A. V. Atqui A. τυφῶνας δ' cum Cantero. Mox ἐκνεφείας A.

[r] ἐννεφίας] ἐκνεφείας V. A. E.

[s] Pro καταφέρηται ex Aristotele Meteor. III. 1. rescribi malim κάτω φέρεται. HEEREN.

[t] ἀντίπνειαν] ἀντίπνοιαν V. A.

[u] τάχος] πάχος V. P. In A. add. ἢ πάχος post ἢ τάχος.

[x] ὑπὸ] ἐπὶ A.

[y] ἐπισείοντος] ἐπεισιόντος V. ἐπισιόντος A.

[z] ἐκνεφίας] ἐκνεφείαν V. A.

[a] Aristot. l. c. Καλεῖται δὲ, ἂν ἀχρωμάτιστον ᾖ, τοῦτο τὸ πάθος τυφὼν, ἄνεμος ὢν, οἷον ἐκνεφίας, ἄπεπτος. Pro his excerptor, nimia brevitate usus, statim dicit τὸ πάθος ἄπεπτον. Dicitur vero ἄπεπτος, *crudus*, omnino pro *indigestus*, seu ἀδιάκριτος, ut illud explicat Olympiodor. ad Aristot. h. l. HEEREN.

[b] ἐμπίπρασθαι τὸν] συνεμπίπρασθαι γὰρ τὸν ἀέρα V. A. P.

ὁμοίως καὶ τούτους, ὥσπερ πυρώδεις ὄντας τυφῶνας. Κεραυνὸν δὲ, ὅταν πολὺ καὶ λεπτὸν [c]περιληφθὲν ἐν τοῖς νέφεσι πνεῦμα πυρωθὲν [d]ἐκθλιφθῇ, καὶ μετ᾽ ἰσχυρᾶς ἐπὶ γῆν κατασκήψῃ φορᾶς, ἐὰν μὲν ᾖ πάνυ λεπτὸν, [e]καὶ διὰ τοῦτο οὐκ ἐπικαῖον, ἀργῆτα λέγεσθαι κατὰ τοὺς ποιητάς· ἐὰν δὲ ἧττον ἐπικαῖον, ψολόεντα. Τὸ μὲν γὰρ διὰ τὴν λεπτότητα καὶ πρὶν ἐκπυρῶσαι φερόμενον οἴχεσθαι διὰ τάχους, ὡς μηδ᾽ ἐπιμελάναι τι τῶν ὑποκειμένων· τὸν δὲ, [f]οἷον καὶ βραδύτερον, ἐπιχρῶσαι μὲν ὥστ᾽ [g]ἐπ᾽ αἰθάλου, παρενεχθῆναι
[602] δὲ μηδὲν ἀφανίσαντα. Διὸ καὶ τὰ μὲν ἀντιτυπήσαντα φλέγεσθαι, [h]τὰ δ᾽ εἰς τὰς ἑαυτῶν ἀραιότητας ὑποδεξάμενα μηδὲν πάσχειν. Ἤδη γοῦν ἀσπίδος πληγείσης τακῆναι μὲν τὸ χάλκωμα, τὸ δὲ ξύλον μηδὲν παθεῖν, [i]φθάσαντος τοῦ πνεύματος διὰ τὴν τῆς ὕλης μανότητα πρὸ τῆς [k]καύσεως διεκδραμεῖν· καὶ δι᾽ ἱματίων ὁμοίως διελθὸν οὐ κατέ-

[c] περιλειφθὲν] περιληφθὲν V. A.

[d] ἐκλυφθῇ] ἐκληφθῇ V. A. unus ms. Arist.

ib. ἐκθλιφθῇ, ex ipso Aristot. emendavi pro ἐκλύφθῃ ap. Cant. Habet ille: ἐὰν δ᾽ ἐν αὐτῷ τῷ νέφει πολὺ καὶ λεπτὸν ἐκθλιφθῇ (ἐκθλιβῇ) πνεῦμα, τοῦτο γίνεται κεραυνός. HEEREN.

[e] καὶ διὰ τούτου ἐπικαιρὸν ἐπικαῖον ἀ.] καὶ τοῦτο καὶ ἐπικαῖον ἀργῆτα etc. V. διὰ τούτου καὶ ἐπικαῖον A.

ib. καὶ διὰ τοῦτο οὐκ ἐπικαῖον iterum ex Aristotele emendavi pro διὰ τούτου ἐπικαιρὸν ἐπικαῖον. Patet insulsam hanc lectionem inde ortam esse, quod ἐπικαῖον bis scriptum sit. Melius quoque codd. V. A. καὶ διὰ τοῦτο καὶ ἐπικαῖον. Sed præterea omnino addi debet οὐκ, quod sequentia flagitant. Opponuntur enim apud Arist. huic fulminum generi altera quæ incendunt et comburunt. Quæ de poëtarum loquendi usu adjicit, nescio qua fide ea dixerit. Certe ap. Hom. Od. ψ΄. 225. vocatur κεραυνὸς ψολόεις fulmen quo Jupiter Ulyssis navem disjecerat.—Cæterum cum his conferenda sunt quæ traduntur ab auctore libri de Mundo c. 4. et ibi vid. Kapp. HEEREN.

[f] οἷον καὶ βραδύτερον rescripsi pro οἷον κατὰ βαρύτερον quod ap. Cant. et in codd. nullo sensu legitur. Aristot. l. c. ὁ δὲ βραδύτερος ἔχρωσε μὲν, ἔκαυσε δ᾽ οὐ, ἀλλ᾽ ἔφθασε διϊών. HEEREN. οἱ κατὰ βαρύτ. A.

[g] ἐπ᾽] ἀπ᾽ V. A.

[h] τὰ] τὰς A.

[i] Post φθάσαντος add. τοῦ πεύματος V. A.

[k] Post καύσεως add. διεκδραμεῖν. καὶ δι᾽ ἱματίων ὁμοίως (εὐθέως P.) διελθὸν, οὐ κατέκαυσεν, ἀλλ᾽ οἷον τρύχος ἐποίησε V. A.

καυσεν, ἀλλ' οἷον τρύχος ἐποίησε. Περὶ μὲν οὖν τούτων διετάττετο οὕτως.

2 Ἀρριανοῦ.

[a]Ὅσοι δὲ ξηροὶ ἀτμοὶ, ῥυέντες μὲν εὐθὺς ἀνέμους εἰργάσαντο, ἐν [b]νέφει δὲ ἀπολειφθέντες, ἔπειτα ῥηγνύντες βίᾳ τὸ νέφος, βροντάς τε καὶ ἀστραπὰς [c]ἐξέφηναν. [d]Ἐμ- p. 66.
πίπτοντες δ' ἐπὶ μέγα, διάπυροι μὲν, κεραυνοί· ἀθρόοι δὲ καὶ ἡμίπυροι, πρηστῆρες· [e]ὅσοι δὲ ἔρημοι πυρὸς, τυφῶνες· οἱ δὲ ἔτι [f]ἀνειμένοι, [g]ἐκνεφίαι· κατασκήψαντες δὲ εἰς γῆν, ξύμπαντα ταῦτα [h]σκηπτοὶ κλήζονται. Οὐδὲ [i]ἶσον δὲ αἱ κοιλότητες τῶν νεφῶν καὶ ῥήξεις [k]καὶ ἐπ' αὐταῖς [l]βρονταὶ ἔχουσιν. Ἀστραπὴ δὲ ὑπὸ [m]τῇ ῥήξει ἐκτρίβεται, καὶ
[604] ἐξάπτει τὸ πνεῦμα, ὡς ἐκλάμψαι ἐπὶ μέγα. Καὶ [n]γίνεται μὲν ἀστραπὴ μετὰ βροντὴν, ὀξυτέρα δὲ τοσόνδε, ὅσον ὄψις ἀκοῆς [o]ὀξύτερον· καὶ ὅτι ἀκοὴ μὲν πελαζούσης τῆς φωνῆς αἰσθάνεται, ὄψις δὲ ἐπὶ τὸ ὁρώμενον αὐτὸ ἐκπέμπεται. Κεραυνὸς δὲ καθότι πνεῦμά ἐστιν, ἀπὸ τῶνδε τεκμηριῶσαι παρέχει· ῥήγνυσί τέ [p]ἐστι τινὰ τῶν ἐντυχόντων, καὶ περιδινηθῆναι οἷά τε, καὶ [q]διοιχνεῖται, ὅθεν οὐκ ἄν τι ἄλλο, ὅ τι μὴ πνεῦμα, διέλθοι. Ὡς δὲ ἔμπυρον πνεῦμά ἐστι, δηλοῖ μὲν τοῦτό γε καὶ ἡ ὄψις ὅτῳ ἐγγὺς κατέσκηψε,

2.

[a] Ὅσοι δὲ ξηροὶ ἀτμοὶ] ἀοῒ δὲ ξηροὶ ἀτμὴ A.

[b] νέφει δὲ] δὲ νέφει Heeren.

[c] ἐξεφήναντο] ἐξέφηναν A. V.

[d] Ἐμπίπτοντες scil. εἰς γῆν, *dum magna vi in terram irruunt.* Malim tamen ἐκπίπτοντες, nempe ἐκ τοῦ νέφους, *dum ex nube discissa prorumpunt.* HEEREN.

[e] ὅση] ὅσοι V. A.

[f] ἀνειμένοι] ἀνεμένοι V.

[g] ἐκνεφίαι] ἐκνεφεῖαι A.

[h] σκηπτοὶ κλήζονται] σκηπτὸν κληίζονται V. A. E.

[i] ἶσον] ἴσου V. A.

[k] καὶ ἐπ'] αἱ ἐπ' V. A. P.

[l] βροντὰς] βροιτὰς A. βρονταὶ Heeren.

[m] ῥῆξει] τῇ ῥήξει V. A.

[n] γίγνεσθαι μ. ἀστραπὴν] γίνεται μ. ἀστραπὴ V. A. E.

[o] ὀξύτερον] ὀξύτερος em. Heeren.

[p] Habent Cant. et codd. ἔς τινα, nullo sensu. Rescripsi ἔστι τινὰ, i. e. ἔνια, solito Græcorum more loquendi. HEEREN.

[q] διοιχνεῖται] διοικνεῖται A.

πῦρ γὰρ φαίνεται. Ἤδη δὲ καὶ ἀφ᾿ ὧν ἐργάζεται ἐδήλωσε. Περιφλέγει γὰρ [r] ἔστι τινὰ τῶν πελασάντων, τὰ δὲ καὶ ἐξάπτει πάντῃ, καὶ ἀπολείπεται ἀπ᾿ αὐτοῦ ἴχνη, [s] οἷα δὴ ἐπὶ πυρὶ ἐκκαύσαντι [t] ἐσβεσμένῳ. [u] Ἐκνεφίας δὲ ἄνεμος, ἐπὰν δινούμενος ἐκπέσῃ, νέφους ῥαγέντος, τυφὼν κληΐζεται. Γίγνεται δὲ ἡ δίνη ὧδε· [x] ἐπειδὰν [y] κοίλωμα ἐν τῷ νέφει [z] ἐκτριφθῇ, [a] τῷ μὴ οὐκ ἔπ᾿ εὐθὺ ἐκπεσεῖν τὴν πνοὴν,
[606] ἀναστρέφεταί τε καὶ ἀνειλεῖται [b] εἰς [c] αὐτήν. [d] Εἴργεται δὲ ὑπὸ πάχους νεφέλης ἐπ᾿ εὐθὺ ἐκπεσεῖν, ἢ κρύους ἀποστρέψαντος, ἢ ἀντιπεσούσης ἄλλης πνοῆς. [e] Οὕτω τοι καὶ πρὸς ἄλλοτε [f] ἄλλῃ αἱ θύελλαι ἀναστρέφονταί τε, καὶ ἀνειλούμεναι αὖθις ἄνω ἀναφέρονται, [g] ἐπειδάν γε ἐκρίψας τόπος τις γῆς ἀνακόψῃ τῆς πνοῆς τὴν ἐπ᾿ εὐθὺ ὁρμήν. Καὶ αἱ δίναι ἐν τοῖς [h] ποταμοῖς ταυτὸ τοῦτό εἰσι. Φερόμενον γὰρ [i] εὐθείᾳ τὸ ὕδωρ, οὔποτ᾿ ἂν [k] δινηθείη· ἀντιπεσόντος δὲ ἄλλοτε ἄλλου πρὸς τὴν φορὰν, ἀναστρέφει ἡ ῥοὴ, [l] ἀναστρα-

[r] ἔστι τινὰ, ita ut modo, dedi pro ἔς τινα, quod cum Cant. habent codd. HEEREN.

[s] οἷον] οἷα V. A.

[t] ἐσβεσμένῳ bene cod. A. pro ἐσβεσμένον. HEEREN.

[u] Ἐκνεφίας] ἐκνεφείας A.

[x] Habet Cant. ἐπειδὰν κάλυμμα ἐν τῷ νέφει ἐγριφθῇ, in quo duplex ulcus hæret. Primum quid sit illud κάλυμμα in nube, nemo facile explicaverit. Legendum est procul dubio κοίλωμα, *cavitas, sinus.* Sic modo ante αἱ κοιλότητες τῶν νεφῶν commemorantur. Deinde pro ἐγριφθῇ cod. A. ἐκτριφθῇ, [ἐκριφθῇ A.] *si nubium sinus perforati sunt, ut turbini incluso exitus pateat.* HEEREN.

[y] κάλυμμα] κάλυμα V.

[z] ἐγριφθῇ] ἐγκριφθῇ V. ἐκριφθῇ A.

[a] τῷ] τὸ A.

[b] εἰς] ἐς A.

[c] αὐτὸν] αὐτὴν V. A.

[d] Post εἴργεται add. δὲ V. A.

[e] οὕτω τῇ] οὕτω τοι V. A.

[f] ἄλλῃ] ἄλλοι V. A.

[g] ἐπειδάν γε ἐκρίψας τόπος τις γῆς, *si locus aliquis in terra eos repellit,* emendavi pro ἐπειδὰν δὲ ἐγκρίψας τόπος τῆς γῆς, quod male habet Cant.—ἐκρίψας confirmat cod. A. Reliqua meo periculo mutavi. HEEREN. ἐπειδὰν δὲ ἐγκρΐψας τ. τῆς A. planissime. ἐγρίψας Cant.

[h] Post ποταμοῖς ap. Cant. additur ὕδατος. Glossema illud redolet, temere, et ne suo quidem loco contextui insertum; turbat enim justum verborum ordinem. HEEREN. Supra αἱ ante δίναι addit Heeren.

[i] εὐθείᾳ] εὐθύα A.

[k] δινηθείη] δυνηθείη V. A.

[l] ἀναστραφεῖσα add. δὲ V. A.

φεῖσα δὲ ἐς κύκλον ἐπικάμπτει ἐπὶ τῇ ῥύμῃ, ὅτι μὴ οἵά τε [m]ἐπ' εὐθὺ ἐς τὸ [n]ἔμπαλιν ἐκφέρεσθαι. Οἱ δὲ τυφῶνες καὶ τῆς νεφέλης τὸ πολὺ ἐς τὸ κάτω σὺν ἕλικι ἐπάγουσιν ἅμα σφισί· καὶ προσπεσόντες τῇ γῇ ἀναρπάζουσιν ὅτῳ ἂν ἐντύχωσιν, ἀντικοπτομένης τῆς ῥύμης, ὡς ξὺν τῇ αὐτῇ ἕλικι ἀναστρέφεσθαι· ὥστε καὶ ναῦς ἤδη ἅμα τῷ φόρτῳ [o]ἐκπεσόντες ἐξῆραν ἐπὶ μέγα ἔξω τῆς θαλάσσης. Κεραυνῶν δὲ πολλαί ἰδέαι τε καὶ ὀνόματά εἰσιν. Οἱ μὲν αὐτῶν ψολόεντες, οἱ δὲ ἀργῆτες κληΐζονται, σκηπτοί τε ὅσοι κατα-
[608] σκήπτουσιν, καὶ αἰγίδες ὅσοι ἐν συστροφῇ πυρὸς καταφέρονται, ἕλικες δὲ, ὅσοι ἐς ἑλικοειδῆ γραμμὴν διάττουσι. Καὶ δὴ ὅσοι μὲν καὶ πάντη ὀξέως ἐκπεσόντες ὕλῃ ἐνέτυχον [p]καυσίμῳ, ἔκαυσάν τε αὐτὴν ὑπὸ τῇ διατριβῇ καὶ [q]αὐτῷ κατεσχέθησαν τῷ ἔργῳ· ὅσοι δὲ [r]ξὺν πολλῷ τῷ [s]τάχει κατέσκηψαν, οὗτοι πρὶν ἐκκαῦσαι διῇξαν, ὥστε ἡμίπυρά ἐστιν ἃ [t]ὑπελείφθη· οἱ δὲ καὶ αἰθαλώσαντες μόνον διῆλθον. [u]Οἱ δὲ ἔτι καὶ τῶνδε ὀξύτεροι οὐδὲ ἓν [x]ἐξεργάσασθαι ἔφθασαν, ἀλλὰ ἀραιᾷ μὲν ὕλῃ, εἰ καὶ πάνυ [y]καυσίμῳ ἐντυχόντες, [z]διεχώρησαν μόνον· ἀντιτύπῳ δὲ [a]εἰ πελάσειεν ἐνεχθέντες, κατειργάσαντό τε αὐτὴν καὶ διέφθειραν· ὥστε κυτίδος μὲν ξύλου μαλθακοῦ ἁψάμενοι διῇξαν, ἀπαθῆ ἀπολιπόντες·

m ἐπ' εὐθὺ] ἐπὶ τὸ εὐθὺ Heeren.

n ἔμπαλιν pro ἔκπαλιν V. A. E.

o Pro ἐκπεσόντες melius forte legeretur ἐμπεσόντες, *in navim irruentes*. Ferri tamen potest lectio vulgata, subintellecto ἐκ τῶν νεφῶν. HEEREN.

p Post καυσίμῳ add. ἔκαυσάντε αὐτὴν ὑπὸ τῇ διατριβῇ. καὶ αὐτοὶ κατεσχέθησαν τῷ ἔργῳ ὅσοι δὲ etc. V. A. P.

q αὐτοὶ] αὐτῷ Heeren.

r ξὺν πολλ.ῷ] ξυμπολλῷ A.

s τάχα] τάχει V. πάχει A. E.

t ὑπελῆφθαι] ὑπολῆφθαι (ει) ἀπ' αὐτῶν A.

u Οἱ δὲ καὶ τῶν ὀξ.] οἱ δὲ ἔτι καὶ τῶνδε ὀξύτεροι A.

x ἐξεργάσασθαι ἔφθασαν] ἐξειργ. ἔφθησαν (ι) V. A.

y καυσίμῳ] καυσίμων A. V.

z διεχώρισαν] διεχώρησαν V. διεχόρησαν A.

a εἰ πελάσειεν] ὑπελάσειεν V.

τὸ δὲ χρυσίον [b] ἔτηξαν τὸ ἐνὸν, ὅτι [c] ἐσχέθησαν ἐν τῷ χρυσίῳ. Καὶ χιτῶνα ἤδη οὐκ ἔκαυσαν, ἀλλὰ ἐτρύχωσαν μόνον· καὶ διὰ μὲν κεράμου διῆλθον, τὸ δὲ ἐνὸν [d] ἐν αὐτῷ διεφόρησαν. Τούτων ξυμπάντων οἱ μὲν λαμπροὶ, ἀργῆτες· [e] ὅσοι δὲ
καταιθαλώσαντες τὰ πελάσαντά σφισιν ἐπαύσαντο, οὗτοι p. 67.
δὲ ψολόεντες ἐπὶ τῷ ἔργῳ ἐκλήθησαν. Καὶ οἱ μὲν [f] εὐθείᾳ κατασκήψαντες εἰς τὸ ἔμπαλιν τῇ αὐτῇ εὐθείᾳ ἀνῆξαν· οἱ δὲ [g] ἐκ πλαγίου ἐμπεσόντες πρὸς ἶσον γωνίαν ἄνω ἀναφέρονται· καὶ οἱ μὲν ἁπλοὶ, οἱ δὲ διπλοὶ κατέσκηψαν· πλεῖ-
[610] στοι δὲ ἦρος καὶ μετοπώρου, καὶ ἅμα βιαιότεροι περί τε πλειάδος καὶ Ἀρκτούρου ἐπιτολὴν, ὅτι ἐν κινήσει καὶ παθήμασι πολυειδέσιν ὁ ἀὴρ τῇδε τῇ ὥρᾳ ἐστὶν, οἷα δὴ οὔτε ὑπὸ κρύει πεπηγὼς, οὔτε ὑπὸ [h] τῷ θερινῷ ἡλίῳ ἐκκεκαθαρμένος. Τοιγάρτοι καὶ ἐν χώραις [i] ὅσαι νιφετώδεις καὶ ψυχραὶ καὶ ὅσαι ἂν κεκαυμέναι ὑπὸ ἡλίου [k] οὐ [l] κατασκήπτουσιν· οἱ [m] κατασκήψαντες δὲ ἐν θαύματι ἀναφέρονται, καθάπερ ἐν Κελτοῖς καὶ παρ᾽ Αἰγυπτίοις.

3 [a] Φίλωνος Φυσικῶν.

Ἀστραπαί εἰσι διτταὶ, ἡ μὲν ἡμερινὴ, ἡ δὲ νυκτερινή. Γίγνεται δὲ ἡ μὲν ἡμερινὴ [b] ὑπὸ τοῦ ἡλίου, ὅταν ῥαγῇ τὸ ὕδωρ, ὑποφαινομένου αὐτοῦ, λαμπρὰ δὲ [c] οὐ φαίνεται,

[b] ἔτηξαν τὸ ἐνὸν] ἔτι ξαντὸν ἐνὸν V. ἔτιξαν τὸν ἐ. A.
[c] ἐσχέθησαν] ἐσχέσθησαν A.
[d] ἐκ] ἐν A.
[e] ὅσοι τε] ὅσον τε A. ὅσοι δὲ Heeren.
[f] εὐθεῖᾳ] εὐθείας V. εὐθεῖαι A.
[g] ἐκπλαγίου] ἐκπλάγιον A.
[h] θερινῷ] τῷ θερινῷ V. A.
[i] οὖσαι] ὅσαι V. A.
[k] οὐ, quod ob terminationem præcedentis vocis exciderat, meo periculo addidi. Flagitat enim sensus negandi particulam: *in terris admodum frigidis vel calidis fulmina non terram attingere solent, si vero attingunt pro prodigiis habentur.* HEEREN.
[l] κατασκηπτ.] καὶ σκήπτ. A.
[m] κατασκηψ.] κατασκάψαντ. A. Tum δὲ add. Heeren.

3.

[a] Φιλωνος V. A. E. Μίλωνος Cant. Μήλωνος Photius in scriptorum catalogo.
[b] ὑπὸ] ἀπὸ A.
[c] ὡς] οὐ de suo Heerenius.

ὥσπερ [d]ἡ νυκτερινὴ, ὅτι ἐν φάει γίγνεται· ἡ δὲ νυκτερινὴ ὑπὸ τῶν [e]ἄστρων γίνεται, ὅταν ῥαγῇ τὸ ὕδωρ, ὑπερφαινομένων αὐτῶν· λαμπρὰ δὲ φαίνεται, ὅτι ἐν ζόφῳ γίγνεται.

Κεφ. λ′.

[612] ## ΠΕΡΙ ΙΡΙΔΟΣ, ΠΕΡΙ ἉΛΩ, ΚΑΙ [a]ΠΑΡΗΛΙΟΥ, ΚΑΙ ῬΑΒΔΩΝ.

I

Τῶν μεταρσίων παθῶν τὰ μὲν καθ' ὑπόστασιν [b]γίνεται, οἷον ὄμβρος, χάλαζα, τὰ δὲ κατ' ἔμφασιν, ἰδίαν οὐκ ἔχοντα ὑπόστασιν· αὐτίκα γοῦν πλεόντων ἡμῶν ἡ [c]ἤπειρος κινεῖσθαι δοκεῖ. Ἔστιν οὖν κατ' ἔμφασιν ἡ Ἶρις.

[d]ΠΛΑΤΩΝ φησὶ, Θαύμαντος αὐτὴν γενεαλογῆσαι τοὺς ἀνθρώπους, [e]διὰ τὸ θαυμάσαι ταύτην. [f]Ὅμηρος·

Ἠΰτε πορφυρέην νεφέλην θνητοῖσι τανύσσει.

Καὶ ἐμυθεύσαντό τινες αὐτὴν ταύρου κεφαλὴν ἔχουσαν [g]ἀναρροφεῖν τοὺς ποταμούς.

[d] καὶ νυκτ.] ἡ νυκτ. V. A.

[e] Post ἄστρων add. γίνεται V. A.

I.

Quæ in primo hoc fragmento continentur, ap. Cant. mutila edita sunt. Exstant ibi prima tantum verba usque ad Ὅμηρος, quibus statim subjunguntur ultima καὶ οἱ ὀφθαλμιῶντες etc. [p. 241, 28.] Reliqua omnia desiderantur. Supplent ea codd. V. A. E. Exstant tamen quoque ap. Plut. de Pl. III. 5. atque ex parte saltem ap. Gal. c. XIX. HEEREN.

[a] Pro παρηλίου malim παρηλίων, solent enim plures simul parelii apparere. HEEREN. Supra ἄλλω A.

[b] γίνεται οἷον] Sic Plutarch. οἷον γίνεται A. Cant.

[c] ἄπειρος] ἤπειρος A. Plut.

[d] Respicit ad verba Platonis in Theæteto Op. I. p. 155. Καὶ ἔοικεν ὁ τὴν Ἶριν Θαύμαντος ἔκγονον φήσας, οὐ κακῶς γενεαλογεῖν. HEEREN. θαυμαστῶς A. pro θαύμαντος.

[e] διὰ etc.] διαθαυμάσαι ταύτην. Tunc add. Ὅμηρος, ἥντε—τὸν λύχνον ἀποβλέψωσι V. A. E. P.

[f] Versus Homeri exstat Il. ρ′. 547. Legitur ibi: Ἠΰτε πορφυρέην ἶριν θνητοῖσι τανύσσει. Pro ἠΰτε codd. Stob. ἥντε, reclamante tamen metro, quare ἠΰτε recepi. Lectionem tamen νεφέλην pro ἶριν retinendam putavi, habet enim quo se commendare possit. HEEREN. In fine θνητῇσι τανύσει A.

[g] ἀναρροφεῖν] ἀναφορεῖν A.

[614] Πῶς οὖν γίνεται; [h] Ὁρῶμεν δὴ κατὰ γραμμὰς, ἢ κατ᾽ εὐθείας, ἢ κατὰ καμπύλας, [i] ἢ κατ᾽ ἀνακλωμένας. Γραμμὰς δὲ λέγω θεωρητὰς καὶ ἀσωμάτους. Κατὰ μὲν οὖν εὐθείας ὁρῶμεν τὰ ἐν ἀέρι, καὶ τὰ διὰ τῶν λίθων τῶν [k] διαυγῶν καὶ κεράτων, λεπτομερῆ γὰρ ταῦτα πάντα. Καμπύλας δὲ γραμμὰς καθ᾽ ὕδατος [l] βλέπομεν· κάμπτεται γὰρ ἡ ὄψις βίᾳ, διὰ τὴν πυκνοτέραν τοῦ ὕδατος ὕλην. Διὸ καὶ τὴν κώπην ἐν τῇ θαλάσσῃ μακρόθεν καμπτομένην βλέπομεν. Τρίτος τρόπος τοῦ βλέπειν τὰ ἀνακλώμενα, ὡς τὰ κατοπτρικά. Ἔστιν οὖν τὸ τῆς ἴριδος πάθος τοιοῦτον. Δεῖ γὰρ ἐπινοῆσαι τὴν ὑγρὰν ἀναθυμίασιν εἰς νέφος μεταβάλλουσαν, εἶτα ἐκ τούτου κατὰ βραχὺ εἰς μικρὰς ῥανίδας νοτιζούσας. Ὅταν οὖν ὁ ἥλιος γένηται [m] ἐν δυσμαῖς, ἀνάγκη [n] πᾶσαν ἶριν ἀντικρὺς ἡλίου φαίνεσθαι· τότε γὰρ ἡ ὄψις προσπεσοῦσα ταῖς ῥανίσιν ἀνακλᾶται, ὥστε γίγνεσθαι τὴν ἶριν. Εἰσὶ δὲ αἱ ῥανίδες [o] οὐ σχήματος
[616] μορφαὶ, ἀλλὰ χρώματος. Καὶ ἔχει [p] τὸ μὲν πρῶτον φοινικοῦν, τὸ δὲ δεύτερον ἁλουργὲς καὶ πορφυροῦν, τὸ δὲ τρίτον

h Ὁρῶμεν recepi ex Plut. Nam ap. Stob. sine sensu legitur ἐροῦμεν. HEEREN.

i Veram ni fallor lectionem Stob. hic codd. servarunt. Nam ap. Plut. distinctione simul et lectione mutata exstat: ἢ κατ᾽ ἀνακλωμένας γραμμὰς ἀδήλους, λόγῳ θεωρητὰς καὶ ἀσωμάτους. Lineæ nempe ἀνακλώμεναι sunt *reflexæ*, καμπύλαι, *refractæ*. Cf. Corsin. ad h. l. HEEREN.

k διαυγῶν] δι᾽ αὐτῶν A.

l Post βλέπομεν additur γινομένας ap. Plut. HEEREN.

m Pro ἐν δυσμαῖς Plut. melius forte, εἰς δυσμὰς, vertendum enim est, *versus occasum*. Idem mox pro Τότε γὰρ ἡ ὄψις, sublata ante majori interpunctione, ὅτε ἡ ὄψις etc. Cæterum Corsin. ad h. l. bene annotat, ἀνακλᾶται hic vertendum esse *reflectitur*, non vero *frangitur*. HEEREN.

n Pro πᾶσαν malim πᾶσα, *fieri aliter non potest, quin* etc. HEEREN.

o Perverse habent Stob. codd. οὐ χρώματος μορφαὶ, ἀλλὰ σχήματος. Veram lectionem revocavi ex Plut. Male quoque habet Gal. οὐ σχήματος μορφαὶ, ἀλλὰ χρώματα φαίνεται. Scilicet μορφαὶ positum hic est pro θεάματα. *Iridis speciem non figuræ sed coloris guttularum effectum esse.* HEEREN.

p τὸ om. A.

κυανοῦν καὶ πράσινον. Μήποτ' [q] οὖν τὸ μὲν φοινίκεον, ὅτι ἡ λαμπρότης τοῦ ἡλίου προσπεσοῦσα, καὶ ἡ λαμπηδὼν ἀκραιφνὴς ἀνακλωμένη, ἐρυθρὸν ποιεῖ καὶ φοινίκεον χρῶμα· τὸ [r] δὲ δεύτερον μέρος ἐπιθολούμενον καὶ ἐκκαιόμενον μᾶλλον τῆς λαμπηδόνος διὰ τὰς ῥανίδας, ἁλουργές. [[s] Ἄνεσις γὰρ τοῦ ἐρυθροῦ τοῦτο. Ἔτι δὲ πάλιν ἐπιθολούμενον] τὸ διορίζον εἰς τὸ πράσινον μεταβάλλει. [t] Ἔστι δὲ τοῦτο διορίσαι δι' ἔργων· [v] εἰ γάρ τις ἀντικρὺ στὰς τοῦ ἡλίου λάβῃ ὕδωρ καὶ [u] πτύσῃ, αἱ δὲ ῥανίδες ἀνάκλασιν πρὸς τὸν ἥλιον λάβωσιν, εὑρήσει [x] εἰσγιγνομένην τὴν ἶριν. Καὶ οἱ ὀφθαλ- 28
μιῶντες δὲ τοῦτο πάσχουσιν, ὅταν εἰς τὸν λύχνον ἀποβλέψωσιν.

2 Ἀριστοτέλους.

Ἅλω δὲ καὶ ἴριδας, καὶ παρήλιον, καὶ ῥάβδους, καὶ 30
[618] τἄλλα τὰ κατὰ τὰς ἐμφάσεις, ὑπὸ μὲν τῆς αὐτῆς αἰτίας γίνεσθαι, πάντα γὰρ εἶναι ταῦτα τῆς ὄψεως [a] ἀνάκλασιν· [b] διαφέρειν δὲ τοῖς [c] τρόποις, καὶ ἀφ' ὧν καὶ ὡς ἔχει συμ-

[q] οὖν [et μὲν] addidi ex Plut. ut nexus constaret. Nam μήποτε hic est *fortasse*, atque post φοινίκεον subintelligendum ἐστὶ vel φαίνεται ἐν τῇ ἴριδι. *Rubrum colorem in arcu cœlesti inde oriri videri, quod* etc. HEEREN. Mox προπεσοῦσα A.

[r] δὲ male exciderat in Stob. codd. In proximis iidem ἐκκαιόμενον exhibent pro ἐκλυόμενον ap. Cant. HEEREN. Pro *Cant.* leg. *Plutarch.*

[s] Verba Ἄνεσις — ἐπιθολούμενον male exciderant in Stob. codd. Supplevi ea ex Plut. HEEREN.

[t] Apud Plut. ἔστιν οὖν τοῦτο δοκιμάσαι δι' ἔργων. Ultimum δι' ἔργων inde recepi; nam ap. Stob. corrupte διείργων. HEER. διεῖργον A.

[v] Legitur ap. Plut. εἰ γάρ τις ἀντικρὺ τῶν ἡλίου ἀκτίνων λάβῃ etc. eodem sensu. HEEREN.

[u] πτύσῃ] πυτίσοι A.

[x] εἰσγινομένην bene Stob. codd. pro γινομένην in Plut. Ultima verba habet quoque Cant. qui corrupte λιχνὸν exhibet pro λύχνον. HEEREN. εὕρῃ εἰσγι. A.

2.

Aristotelica hæc petita sunt ex Meteorolog. III. cap. 2—5. nullo tamen in iis exscribendis certo ordine a scriptore observato. HEEREN. Mox ῥάβδας A. et inf. om. τὰ.

[a] ἀνάκλασιν] ἀνάκλασις A.

[b] Verba διαφερ.—ἀνακλ. om. in A. E.

[c] τόποις] τρόποις revocavi ex Aristot. apud quem l. c. cap. 2. διαφέρουσι δὲ τοῖς τρόποις, καὶ ἀφ' ὧν καὶ ὡς συμβαίνει τὴν ἀνάκλασιν γενέσθαι πρὸς τὸν ἥλιον. HEEREN.

βαίνειν τὴν ἀνάκλασιν. Ἅλω μὲν οὖν καὶ [d] περὶ ἥλιον φαίνεσθαι καὶ περὶ σελήνην, καὶ καθόλου περὶ τὰ λαμπρὰ τῶν ἄστρων, καὶ οὐθὲν ἧττον ἡμέρας [e] ἢ νυκτὸς, καὶ περὶ [f] μεσημβρίαν ἢ δείλην· ἕωθεν δ' ἐλαττονάκις καὶ περὶ [g] δύσιν. Συμβαίνει δὲ, ὅταν διὰ τοῦ πέριξ ἀέρος ἀχλυώδους ὄντος ἐπιλάμπηται τὸ φῶς αὐτῶν, ὥσθ' ὅλον ὁρᾶσθαι τὸν κύκλον· περιφανῆ γὰρ εἶναι καὶ σφαιρικὴν κατὰ τὴν ἔμφασιν τὴν ἅλω. Ταύτης δὲ τὴν μὲν ἐπιμένουσαν ὑετὸν σημαίνειν, τὴν δὲ διασπασθεῖσαν, πνεῦμα, τὴν δὲ μαραινομένην, εὐδίαν. Ἶριν δὲ περὶ μόνον ἥλιον καὶ σελήνην συνίστασθαι, γίνεσθαι δὲ καὶ νύκτωρ, [h] ὀλιγάκις δὲ, καὶ πάνυ διὰ πολλοῦ. Κύκλον δὲ μηδέποτε φαίνεσθαι τῆς ἴριδος, μηδὲ μεῖζον ἡμικυκλίου τμῆμα. Ποικίλην δ' ἔχειν τὴν ἔμφασιν, διὰ τὸ κατὰ [i] τὴν τῆς ὄψεως ἀνάκλασιν φοινικοῦν καὶ πράσινον καὶ ἁλουργὸν προσπίπτειν ἀπ' αὐτῆς χρῶμα. Φοινικοῦν [620] μὲν, ὅτι τὸ λαμπρὸν ἐν μέλανι καὶ διὰ μέλαν ὁρώμενον τοιαύτην ἀποτελεῖ χρόαν. [k] Τοῖς γοῦν θεωμένοις τὸν ἥλιον δι' [l] ὁμίχλης, ἢ διὰ καπνοῦ, δοκεῖν ἐρυθρὸν εἶναι· ἢ [m] καὶ τὴν ἀπὸ τῶν χλωρῶν ξύλων φλόγα πεφοινιγμένην, διὰ τὸ [n] παχὺν αὐτῇ καταμεμίχθαι καπνόν. Κατὰ τοῦτο δὴ καὶ

[d] παρήλιον] παρ' ἡλίου A. Reposui περὶ ἥλιον ex Aristotele.

[e] ἢ νυκτὸς bene cod. V. pro καὶ νυκτός. [Sic A.] In proximis corrupte editum erat: ἢ δείλην ἕωθεν δ' ἔλαττον πολλάκις καὶ περὶ δύσιν. Apud Aristot. vero l. c. ἔτι δ' οὐθὲν ἧττον νυκτὸς ἢ ἡμέρας, καὶ περὶ μεσημβρίαν ἢ δείλην, ἕωθεν δ' ἐλαττονάκις καὶ περὶ δύσιν. Ex quibus nostrum correxi. HEEREN.

[f] μεσημβρίας] -βριαν V. A.

[g] δύσιν] δείλην δύσιν V. A.

[h] ὀλιγάκις add. δὲ V. A. E.

[i] τὴν om. A.

[k] Τοῖς γοῦν θεομένοις] τούτους γ. θεωμένους V. τούτου γοῦν θεωρουμένου A.

[l] ὁμίχλης] ὁμίχλην A.

[m] καὶ ante τὴν deest V. A.

[n] πολὺν] παχὺν A. E.

ib. παχὺν recepi auctoritate codd. V. A. E. pro πολὺν ap. Cant. Edita tamen Aristotelis antiquam lectionem confirmare videntur. Ibi enim l. c. cap. 4. Ὁρᾶν ἔξεστι τό γε τῶν χλωρῶν ξύλων πῦρ, ὡς ἐρυθρὰν ἔχει τὴν φλόγα, διὰ τὸ, τῷ καπνῷ πολλῷ μεμίχθαι τὸ πῦρ, λαμπρὸν ὂν καὶ λευκόν. HEEREN.

τὴν ἐξωτάτω καὶ μείζονα περιφέρειαν τῆς ἴριδος [o] ἐμφαίνειν τὸ φοινικοῦν· διὰ γὰρ μέλανος τοῦ νέφους ἀνακλωμένην τὴν ὄψιν πρὸς [p] λαμπρότατον [q] ὄντα τὸν ἥλιον, ἀντιλαμβάνεσθαι τοιοῦδε χρώματος. Τὴν δὲ δευτέραν καὶ τρίτην περιφέρειαν, διὰ τὴν τῆς ὄψεως ἀσθένειαν, τό τε πράσινον καὶ τὸ ἁλουργὲς p. 68. ἐμφαίνειν. Τὸ δ' ὅλον [r] εἶναι τὴν ἶριν ἔμφασιν ἡλίου τμήματος ἢ σελήνης ἐν νέφει κοίλῳ καὶ [s] δεδροσισμένῳ κατὰ κύκλου περιφέρειαν ὁρωμένην. Γίνεσθαι δὲ ἔστιν ὅτε διπλῆν, ὡς τὴν [t] ἑτέραν ἀμαυροτέραν φαίνεσθαι, καὶ διὰ παντὸς ἐξ ἐναντίας [u] ἱσταμένην τῇ προτέρᾳ, καὶ τῇ θέσει τῶν χρωμάτων [x] ἀντεστραμμένην. Παρηλίους δὲ καὶ ῥάβδους γίνεσθαι μὲν [y] ἀπὸ τῆς αὐτῆς αἰτίας, οὔτε μὴν ὁμοίως ἔχοντος τοῦ νέφους. Ὅταν γὰρ ἀχλυῶδες ᾖ καὶ ὁμαλὲς, πρὸς δὲ τούτοις ὑδατῶδες καὶ πυκνὸν, ὡς [z] ὑπὸ χαλκοῦ κατόπτρου λείου [a] κλώμενον πρὸς τὸν ἥλιον τὴν ὄψιν, λευκοῦ [b] ποιεῖν φαντασίαν. Παραπλήσιον γὰρ ἡλίῳ κατά τε τὴν [622] χρόαν καὶ τὸ σχῆμα φαίνεσθαι τὸν παρήλιον. Τὴν μὲν γὰρ ὁμαλότητα τοῦ νέφους αἰτίαν εἶναι τοῦ χρώματος, τὴν δὲ ἀνάκλασιν [c] τῆς ὄψεως τῆς τοῦ ἡλίου, διὰ τῆς ἀχλυώδους ἐμφάσεως, προσπίπτουσαν ἀθρόως πρὸς πεπυκνωμένον, ὥσπερ ἔνοπτρον, οὐδέπω μὲν ὂν ὕδωρ, ἐγγὺς δ' ὑπάρχον τῆς πρὸς ὕδωρ μεταβολῆς, διὸ καὶ σημεῖον ὕδατος εἶναι τὸν παρήλιον· [d] καὶ μᾶλλόν γε τὸν νότιον τοῦ [e] βορείου, παρὰ

[o] ἐμφαίνειν, jubente verborum ordine, edidi pro ἐμφαίνει. HEER.

[p] λαμπρότατον] λαμπρότητα A.

[q] ὄντα] εἶναι V. A.

[r] εἶναι τὴν om. V. A.

[s] –μενᾳ] –μένῳ V. A.

[t] Post ἕτεραν add. ἀμαυροτέραν V. A. P.

[u] ἱσταμένην] –άμενον V. A.

[x] ἀντιστραμμένην] ἀντεστραμμένον V. A. E.

[y] ὑπὸ] ἀπὸ V. A.

[z] ὑπὸ] ἀπὸ A.

[a] κλώμενον] κλωμένου V. κλωμ̂ενA.

[b] ποιεῖν] ποεῖν A.

[c] Post τῆς ὄψεως add. τῆς τοῦ ἡλίου διὰ τῆς ἀχλυώδους [χλυώδους A.] ἐμφάσεως προσπιπτ. etc. V. A. E.

[d] μᾶλλον etc.] μᾶλλόν γε (τε A.) τὸν νότιον etc. V. A.

ib. Sic bene codd. V. A. E. pro καὶ μᾶλλον τὸ νότιον τοῦ βορείου etc. HEEREN.

[e] βορείου] βορείους V.

τὸ μᾶλλον μεταβάλλειν εἰς ὕδωρ τὸν [f] νότιον ἀέρα τοῦ πρὸς ἄρκτον. [g] Γίνεσθαι δὲ [h] περὶ τὰς ἀνατολὰς τοῦ ἡλίου, καὶ περὶ δύσεις, οὐκ ἄνωθεν, ἀλλ' ἐκ τῶν πλαγίων, καθάπερ καὶ τὰς ῥάβδους. [i] Εἶναι δὲ τὰς καλουμένας ῥάβδους ἰριοειδεῖς εὐθείας ἐμφάσεις περὶ τὸν ἀέρα συνισταμένας δι' ἀνωμαλίαν τῶν ἐνοπτριζόντων νεφῶν.

Κεφ. λα'.

ΠΕΡΙ ΝΕΦΩΝ, ὉΜΙΧΛΗΣ, ὙΕΤΩΝ, ΔΡΟΣΟΥ, ΠΑΧΝΗΣ, ΧΑΛΑΖΗΣ.

Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 59.]

Τὸ πυρὶ μεμιγμένον ὕδωρ ὅσον λεπτὸν ὑγρόν τε διὰ τὴν κίνησιν καὶ τὴν ὁδὸν ἣν κυλινδούμενον ἐπὶ γῆς ὑγρὸν λέγεται, μαλακόν τε αὐτῷ τὰς βάσεις ἧττον ἑδραίας οὔσας ἢ τῆς γῆς, ὑπείκειν· τοῦτο, ὅταν πυρὸς ἀποχωρισθὲν ἀέρος τε μονωθῇ, γέγονε μὲν ὁμαλώτερον, [a] ξυνέωται δὲ ὑπὸ τῶν ἐξιόντων εἰς αὐτὸ, παγέν τε οὕτως τὸ μὲν ὑπὲρ γῆς μάλιστα παθὸν τοιαῦτα, χάλαζα, τὸ δὲ ἐπὶ γῆς, [b] κρύσταλλος· τὸ δὲ ἧττον, ἡμιπαγές τε [c] ὂν ἔτι, τὸ μὲν ὑπὲρ γῆς αὖ χιὼν, τὸ δ' ἐπὶ γῆς ξυμπαγὲν ἐκ δρόσου γενόμενον, πάχνη λέγεται.

Κεφ. λβ'.

ΠΕΡΙ ΑΝΕΜΩΝ.

[624] Ἀριστοτέλης τῆς ξηρᾶς ἀναθυμιάσεως τὴν πρώτην ανα-

[f] νότιον] νότον A.
[g] Post Γίνεσθαι add. δὲ V. τε A.
[h] περὶ add. τε V. A.
[i] Εἶναι δὲ καλουμένας, δι' ἀνωμαλίαν] εἶναι δὲ διὰ τὰς καλουμένας ῥάβδους ἰριοείδεις εὐθεῖας ἐμφάσεις περὶ τὸν ἀέρα συνισταμένας δι' ἀνωμαλίαν etc. V. A. E.

I.

[a] ξυναίωται A.
[b] κρύσταλοι A.
[c] ὂν] ἔτι add. A.

φοράν· γίνεσθαι δέ ποτε τῇ ξηρᾷ πρὸς τὴν ὑγρὰν μίξιν. Πνεῦμα μὲν ἐκ πολλῶν συνιουσῶν ἀναθυμιάσεων, τὸν γὰρ [a]ἄνεμον μὲν εἶναι ξηρᾶς ἀναδόσεως πλῆθος κινούμενον [b]ἐπὶ γῆν· τοὺς δ' ἐκνεφίας ἀνέμους, ὅταν ἀθρόον καὶ πυκνὸν φερόμενον εἰς ἑαυτὸ, τὸ πλέον [c]ἀναλύσῃ τοῦ νέφους τῇ σφοδρότητι τῆς ῥύμης. Τὸ γὰρ τάχος τῆς ἐκκρίσεως ποιεῖν τὴν τοῦ πνεύματος ἰσχύν.

[626] ΠΛΑΤΩΝ πάσης κινήσεως [d]ἓξ εἶναι περιστάσεις, ἄνω καὶ κάτω, [e]ἐπὶ δεξιὰ καὶ θάτερα, πρόσθεν καὶ ὄπισθεν. Κατ' οὐδεμίαν [f]δὲ τούτων ἐνδέχεσθαι τὴν γῆν κινεῖσθαι, ἐν τῷ πανταχόθεν [g]ἰσωτάτῳ κειμένην, μένειν [h]μὲν ἀκίνητον, ἅτε δὴ μηδὲν ἔχουσαν ἐξαίρετον ἐς τὸ ῥέψαι μᾶλλον· τόπους δὲ αὐτῆς [i]κατ' ἀραιότητα σαλεύεσθαι.

Κεφ. λγ'.

[a]ΠΕΡΙ ΣΕΙΣΜΩΝ ΓΗΣ.

[628] [b]'ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ φησὶ σεισμοὺς γίνεσθαι καὶ μυκήματα, καὶ χάσματα, τῆς ξηρᾶς ἀναθυμιάσεως εἰς τὰς

I.

a ἄνεμον] ἄνεμον μὲν A.

b ἐπὶ] περὶ A. et mox ἐκνεφείας.

c ἀναλύσει τ. ν. τῆς σφοδρότητος τ. ῥ.] ἀναλύσῃ τοῦ νέφους τῇ σφοδρότητι τῆς ῥύμης V. A. E.

d Sex motus genera, hic commemorata, habet Plato in Timæo Op. III. p. 43. Reliqua petita videntur ex Phædone Op. I. p. 109. HEEREN.

e ἐπὶ δεξιὰ καὶ θάτερα rescripsi ex Plut. simul et ipso Platone ll. cc. pro ἐπὶ δεξιὰ καὶ καθ' ἕτερα in Stob. codd. HEEREN.

f δὲ addidi ex Plut. ut nexus constaret.—Mox idem pro ῥέψαι melius habet ῥέπειν. HEEREN.

g ἰσωτάτῳ] ἰσοτάτῳ A. κατωτάτην Plut.

h μένειν] μένειν μὲν Plut. μένειν μὲν οὖν Heeren. tacite.

i κατὰ] καὶ A. qui supra ἐνετὸ ῥέψαι.

I.

a Capitis inscriptionem addidi ex Photio; nam apud Cant. ut in codd. Stob. nihil annotatur, nisi quod Cant. in versione latina, ut passim, inscriptionem de suo inseruit. HEEREN.

b Egit Aristoteles de terræ motu copiose in Meteorol. II. 7. 8. quæ noster ante oculos habuit. HEEREN.

ἀραιότητας [c] καὶ τῆς γῆς ῥυείσης, καὶ κατὰ τὰς [d] ἀθρόας ἐμπτώσεις [e] τρόμους καὶ βρασμοὺς περὶ αὐτὴν ἀπεργαζομένης. Ὡς γὰρ ὁρμήσασαν ἔξω τὴν ἀναθυμίασιν ἄνεμον ποιεῖν σφοδρὸν, οὕτως εἴσω καθειρχθεῖσαν τῇ ῥύμῃ τῆς φορᾶς διακραδαίνειν τοὺς τόπους ἐν οἷς ἂν ἀπολειφθῇ. [f] Συνέχεσθαι δὲ τὴν δύναμιν ταύτην ἐν τῇ γῇ διά τε πύκνωσιν τῆς ἐπιφανείας καὶ διὰ κατάψυξιν καὶ διὰ ξηρασίαν. Ὅθεν καὶ νηνεμίας οὔσης ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ γίνεσθαι τοὺς σεισμοὺς, p. 69.
τῆς τῶν ἀνέμων [g] τροπῆς εἴσω τραπείσης· καὶ νυκτὸς μᾶλλον διὰ τὴν ψύξιν, [h] καὶ περὶ τὸν ὄρθρον· τοὺς γὰρ ἀνέμους τότε τῆς πνοῆς ἄρχεσθαι, καὶ πρὸς τὴν γῆν ἀποστρέφειν κατὰ τὴν ἀναθυμίασιν ἀνιὸν πνεῦμα· καὶ τῆς ἡμέρας ἐστὶν ὅτε
[630] περὶ [i] μεσημβρίαν. Τὸν γὰρ ἥλιον τῆς ἀναθυμιάσεως ἐπικρατοῦντα κατακλείειν αὐτὴν εἰς τὴν γῆν· καὶ [k] ἔαρος καὶ μετοπώρου μᾶλλον, ἀνωμάλους γὰρ [l] ταύτας εἶναι τὰς ὥρας· τὸ μὲν [m] γὰρ θέρος καὶ τὸν χειμῶνα, [n] τὸ μὲν διὰ τὸν πάγον, τὸ δὲ διὰ τὴν ἀλέαν ἀκίνητον ποιεῖν τὸν ἀέρα, διὰ τὸ [o] τὸ μὲν ἄγαν εἶναι ξηρὸν, τὸν δὲ ἄγαν ψυχρὸν, καὶ ἐν τοῖς

c Post καὶ, nisi particulam hanc omnino delere malis, vox excidisse videtur, v. c. κοιλότητας, vel ὕπαντρα, vel tale quid. Apud Aristotelem ipsum verba hæc non exstant, quare ad ejus auctoritatem frustra hic confugimus. HEEREN.

d ἀθρόας] ἀθρόους Heeren.

e τρόμους] ἐντρόμους A.

f Συνέχεσθαι] δὲ addidit Heeren.

g Pro τροπῆς malim ὁρμῆς. Aristot. l. c. ἀκολουθεῖ γὰρ ἐπὶ τὸ πολὺ τῇ ὁρμῇ τῆς ἀρχῆς. Dici tamen Græce quoque τροπὴν τρέπεσθαι, dubitari nequit. Plut. in Galba Op. I. p. 1058. ἐκάκιζε δὲ ἐκείνους, ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ τροπὰς τοσαύτας τρεπομένους. HEEREN.

h καὶ τὸν] καὶ περὶ τὸν V. A.

ib. περὶ bene addunt codd. V. A. Apud Aristot. πρὸς ὄρθρον. HEEREN.

i μεσημβρίας] –βρίαν V. A.

k ἔαρος jubente sensu rescripsi pro ἀέρος. Arist. l. c. καὶ ἔαρος δὲ καὶ μετοπώρου μάλιστα. HEEREN. ἔαρος diserte A.

l ταῦτα] ταύτας V. A.

m γὰρ addidi sensu jubente, et mox τὸν δὲ rescripsi pro τὸ δέ. HEEREN.

n τὸ δὲ] τὸ μὲν Heeren.

o τὸν μὲν] τὸ μὲν Heeren.

αὐχμοῖς ὅτε μάλιστα πνευματώδης ὁ ἀήρ· [p]τοῦτο γὰρ εἶναι τὸν αὐχμὸν, ξηρᾶς πλῆθος ἀναθυμιάσεως. Ἀπελαυνομένης οὖν τῆς ἀτμίδος εἰς τὴν γῆν, καὶ [q]καθειργνυμένης, σφυγμὸν γίγνεσθαι περὶ αὐτὴν καὶ [r]τρόμον, καὶ ἐν ταῖς ἐπομβρίαις ἐπιφραττομένης ὑπὸ τῶν ὑγρῶν καὶ τοῦ ψυχροῦ τῆς γῆς, καὶ τῆς ἐντὸς ἀναθυμιάσεως αὐξομένης ὑπὸ τῶν ὑετῶν καὶ πυκνουμένης, ὥστε κατὰ τὴν πρόπτωσιν ἰσχυρῶς κινεῖν καὶ σείειν, καὶ ἐν τοῖς ὑπάντρους καὶ [s]σομφοὺς ἔχουσιν τοὺς κάτω τόπους, ἢ καὶ παρακειμένην ῥοώδη θάλατταν, [t]διὰ τὸ θυράθεν πλεῖον ὑποδέχεσθαι πνεῦμα, καὶ διὰ τὴν θάλατταν προσπίπτουσαν [u]ἀπωθεῖν εἰς τὴν γῆν τὸ πεφυκὸς ἀπ᾽ αὐτῆς ἀποπνεῖν πνεῦμα, καὶ σκεδάννυσθαι. Περὶ γοῦν τὴν Πελοπόννησον, καὶ τὴν Ἀχαΐαν, καὶ τῆς Εὐβοίας τὰς κοιλάδας, πολλοὺς καὶ μεγάλους γίνεσθαι σεισμούς. Ὡς γὰρ ὑφ᾽ ἡμῶν πολλάκις τὸ διαπνεόμενον ἔξω πνεῦμα, παλινδρομή-
[632] σαν εἴσω, παλμὸν παρέχει καὶ [x]σφυγμὸν ἐν τοῖς σώμασιν, οὕτω τὸ [y]περιλειφθὲν ἐν τῇ γῇ κατὰ τὴν κίνησιν κλονούμενον περὶ τοὺς πόρους καὶ διεγκοπτόμενον, σπασμοὺς καὶ σεισμοὺς ἀποτελεῖν. Συμβαίνει δὲ καὶ τὰ μυκήματα ποτὲ μὲν μετὰ σεισμῶν, ποτὲ δὲ καὶ χωρὶς τοῦ πνεύματος ἠχοῦντος, ὥστ᾽ ἐξακούεσθαι ψόφον τινὰ καὶ βόμβον ἐπιμήκιστον, ὁπότε διὰ τῶν [z]συρίγγων διαυλοδρομεῖ παρατριβόμενον, μηδ᾽ ἐξιόν. Τὰ δὲ [a]χάσματα μετὰ σεισμῶν. Ἤδη γοῦν τινας σεισμοὺς μὴ πρότερον λῆξαι, πρὶν ἢ διαρραγῆναι τοὺς τόπους ἐν οἷς [b]ἐγένοντο, βιασαμένου τοῦ [c]περιλειφθέντος

[p] τοῦτον] τοῦτο γὰρ εἶναι τὸν αὐχμὸν V. A.

[q] καθειργομ.] καθειργνυμένης, σφιγμὸν etc. V. A. E.

[r] τρόμους] τρόμον V. A.

[s] σοφοὺς] σομφοὺς A. V.

[t] διὰ—θάλατταν desunt V. A.

[u] ἀπωθεῖν] ἀπειθεῖν A.

[x] σφυγμὸν] σφιγμὸν A.

[y] περιληφθὲν] περιλειφθὲν V. A.

[z] συρίγγων] συράγγων V. An σηράγγων? Vid. inf. p. 266, 27.

[a] Post χάσματα add. μετὰ V. A. E.

[b] ἐγένετο] ἐγένοντο V. A.

[c] περιλειφθέντος] περιληφθέντος A.

πνεύματος περὶ τὴν ἔξοδον, ὥσπερ [d]ἐκνεφίου τινὸς ἀνέμου, καθάπερ καὶ τὸν περὶ τὴν Ποντικὴν Ἡράκλειαν, καὶ τὸν ἔτι πρότερον γενόμενον περὶ τὴν ἱερὰν καλουμένην Αἰόλου νῆσον. Ἐν ταύταις γὰρ ὑπὸ σεισμῶν οἰδήματα τῆς γῆς γίνεσθαι μεγάλα· καὶ ταῦτα διαρραγέντα πολὺν ἄνεμον ἐκπεφυσηκέναι καὶ φέψαλον, ὥστε κατατεφρῶσαι πλησίον οὖσαν τὴν τῶν [e]Λιπαραίων πόλιν. Τὰς δὲ ποντίους λεγομένας νήσους ἧττον [f]σείεσθαι τῶν προσγείων, διὰ τὸ καταψύχεσθαι τῷ πλήθει τῆς θαλάττης τὴν ἀπὸ τῆς γῆς ἀνα-
[634] *θυμίασιν. Τεκμήριον δὲ εἶναι τοῦ ῥεῖν ὑπὸ τὴν γῆν τὸ πνεῦμα, πρῶτον μὲν ἀπὸ τοῦ ἐν οἷς γίνεται [g]προσημαίνειν ἠχοῦντος, εἶτα τὸ περὶ τὸν ἥλιον πάθος· ἀμαυρότερον γὰρ καὶ ἀχλυώδη φαίνεσθαι χωρὶς νέφους, ὑπονοστεῖν ἀρχομένου τοῦ πνεύματος εἰς τὴν γῆν τοῦ λεπτύνοντος τὸν ἀέρα καὶ διακρίνοντος. Πρός τε τούτοις, τὸ πρὸ τῶν αἰθρίων σεισμῶν νηνεμίαν γίνεσθαι καὶ ψῦχος· τὴν μὲν γὰρ ξυμβαίνειν [h]διὰ τὴν εἴσω τῶν ἀνέμων μετάρροιαν, τὸ δὲ, διὰ τὴν τῆς θερμῆς ἀναθυμιάσεως ἀπουσίαν. Καὶ περὶ μὲν σεισμῶν, καὶ τῶν ἄλλων τῶν [i]περὶ τὴν γῆν παθημάτων, ἐπὶ τοσοῦτον.*

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ *καὶ* ἩΡΑΚΛΕΙΔΗΣ [k]*ὑπὸ τοῦ ἡλίου,*
[636] [l]*τὰ πλεῖστα τῶν πνευμάτων κινοῦντος καὶ* [m]*συμπεριφέροντος,* [n]*ὑφ᾽ ὧν ἐμβαλλόντων μὲν προωθουμένην ἀνοιδεῖν τὴν* p. 70.

[d] ἐκνεφίου] ἐκνεφείου A.

[e] Λιπαραίων ex Aristot. l. c. rescripsi pro Λιπαρῶν in Stob. codd. —Steph. v. Λίπαρα, τὸ ἐθνικὸν, inquit, Λιπαραῖος. HEEREN. Mox ποντίας A.

[f] σείεσθαι] γενέσθαι V. A. Aristot.: ἐν δὲ ταῖς νήσοις ταῖς ποντίαις ἧττον γίγνεται σεισμὸς τῶν προσγείων.

[g] Jungendum ἀπὸ τοῦ προσημαίνειν, ἠχοῦντος, *cum sonitum edat.*—Arist. l. c. ἠχοῦσι γὰρ οἱ τόποι δι᾽ ὧν γίνεται τὰ ἀναφυσήματα. HEEREN.

[h] τὴν εἴσω] διὰ τὴν εἴσω V. A.

[i] περὶ] ἐπὶ A.

[k] Verba ὑπὸ τοῦ ἡλίου leguntur post πνευμάτων A. E.

[l] τὰ πλεῖστα] τὰ γὰρ πλεῖστα Plutarch. τά γε πλ. Heeren.

[m] συμπεριφέροντος dedi ex Plut. pro περιφέροντος, sensu flagitante. HEEREN.

[n] ἐμφ᾽] ὑφ᾽ V. A. E.

Ἀτλαντικὴν θάλατταν καὶ [o] κατασκευάζειν τὴν πλήμμυραν, καταληγόντων δ' ἀντιπερισπωμένην ὑποβαίνειν, ὅπερ εἶναι τὴν ἄμπωτιν.

[p] ΠΛΑΤΩΝ ἐπὶ τὴν αἰώραν φέρεται τῶν ὑδάτων. Εἶναι γάρ τινα φυσικὴν αἰώραν διά τινος [q] ἐγγείου τρήματος περιφέρουσαν τὴν παλίρροιαν, ὑφ' ἧς ἀντικυμαίνεσθαι τὰ πελάγη.

Κεφ. λδ.

ΠΕΡΙ ΥΔΑΤΩΝ.

1 Ἀριστοτέλους.

Τὰς [a] δὲ τῶν ὑδάτων δυνάμεις, [b] καὶ τοὺς χυλοὺς, καὶ
[638] τὰς ἄλλας πάσας [c] ποιότητας, ὡς εἰπεῖν [d] συλλαβόντι, γίγνεσθαι παρὰ τρεῖς αἰτίας. Ἢ γὰρ παρὰ τὴν τῆς γῆς διαφοράν· ([e] ἐν οἵα γὰρ ἂν ἕκαστον ᾖ, καὶ [f] δι' οὗ ἂν ῥέῃ, τοιοῦτον [g] ἴσχειν τὸν χυλὸν, οἷον ἁλυκὸν, ἢ νιτρῶδες, ἢ πικρὸν, ἢ τῶν ἄλλων ὁποιονοῦν·) ἢ παρὰ τὴν τῆς καπνώδους καὶ πυρώδους [h] ἀναθυμιάσεως μίξιν· (ἀπολίθωσιν γὰρ καὶ πῆξιν ἁλῶν, καὶ νίτρων, ἔτι τε βαρύτητας καὶ [i] κουφότητας, καὶ παχύτητας, καὶ λεπτότητας, καὶ τὰς ἄλλας δυνάμεις ἀπεργάζεσθαι τὴν τοῦ θερμοῦ καὶ καπνώδους μίξιν·) ἢ

[o] κατασκευάζειν] παρασκευάζειν Plutarch.

[p] Respicit ad locum Platonis in Phædone Op. I. p. 111. Ταῦτα δὲ πάντα κινεῖν ἄνω καὶ κάτω, ὥσπερ αἰώραν τινὰ ἐνοῦσαν ἐν τῇ γῇ. Ἔστι δὲ ἄρα αὕτη ἡ αἰώρα διὰ φύσιν τοιάνδε τινὰ ἕν τι τῶν χασμάτων τῆς γῆς· ἄλλως τε μέγιστον τυγχάνει ὂν, καὶ διαμπερὲς τετρημένον δι' ὅλης τῆς γῆς. Pro *αἰώραν* apud Plut. male *ἑώρα* legitur. Est enim *αἰώρα vas pensile, aqua impletum*, cum quo Plato l. c. confert Tartarum, commune omnium aquarum receptaculum. HEEREN.

[q] ἐγγείου] ἐγγίου A. στομίου Plutarch. Tum τρήμματος A.

1.

[a] δὲ] δὴ A.

[b] κατὰ] καὶ A. E.

[c] Ante ποιότητ. add. πάσας V. A.

[d] συμβάλλοντι] συλλαβόντι V. A.

[e] ἔνοια] ἐν οἵα V. A.

[f] δι' ὃν] δι' οὗ V.A. δι' ἣν Heeren.

[g] ἴσχειν] ἰσχὺν A.

[h] ἀναθύμιξιν] ἀναθυμιάσεως μίξιν V. A. E. P.

[i] κουφότητας] κρυφότητας V.

παρὰ τὸν ἀέρα· θερμότητας γὰρ καὶ ψυχρότητας καὶ παρὰ [k]τὴν γῆν μὲν γίνεσθαι, δι' οἵας ἂν ῥέῃ, καὶ [l]ἐν οἵᾳ [m]γίνεται. Θερμὰ μὲν γὰρ τὴν κατακεκαυμένην [n]καὶ τὴν ξηρὰν καὶ τὴν [o]ἀσφαλτώδη ποιεῖν· [p]ψυχρὰ δὲ, ὡς μὲν ἁπλῶς εἰπεῖν, τοὺς ναματιαίους, ὡς δὲ [q]καθ' ἕκαστα, [r]τοὺς κατὰ βάθους ὡς ἐπίπαν, ὥσπερ καὶ τὰ ἐν τοῖς μετάλλοις, πόρρω γὰρ τοῦ ἡλίου, πλὴν ἐὰν πυρώδης ὁ τόπος ᾖ. [s]Δεῖ γὰρ [t]ἀφεστάναι τῶν θερμῶν, [u]τά τ' ἐν τῷ ἀέρι, [x]καὶ τὰ ἐν τῇ γῇ, καὶ τὰ ἐν τοῖς ὑψηλοῖς, διά τε τὰ πνεύματα, καὶ μάλιστα
[640] διὰ τὴν τοῦ ἀέρος ψυχρότητα· καὶ ἐν τοῖς συσκίοις καὶ πνευματώδεσι, ψύχεται γὰρ ὑπ' ἀμφοτέρων· διὸ καὶ κοπέντων δένδρων ἔνια θερμὰ γίνεσθαι. Καὶ τὰ [y]διαπνοὰς ἔχοντα φαραγγώδεις καὶ ὑπάντρους· τὸ γὰρ πνεῦμα διαυλωνίζον ταύτῃ ψύχει, καθάπερ ἐν τοῖς λάκκοις. Καὶ τὰ διὰ πάγους ῥέοντα καὶ ἐνίκμου, ψυχρὸν γὰρ ὁ λίθος, [z]καὶ μᾶλλον ὁ τοιοῦτος [a]ἡδὺς, ὥσπερ γλυκὺ πᾶν ὕδωρ,

k Si lectio τὴν γῆν sana est, accipienda est hæc vox non de solo, sed potius de regione seu aëris temperie, qua aqua varie afficitur. De hoc enim agit philosophus. Potius tamen aliquid excidisse putaverim: v. c. θερμότητας μὲν γὰρ καὶ ψυχρότητας, καὶ παρὰ τοῦτον, καὶ παρὰ τὴν γῆν γίνεσθαι etc. HEEREN.

l ἐν οἵας] ἐν οἵᾳ V. A.

m γίνεται] γίνεσθαι A.

n καὶ ξηρὰν] καὶ τὴν ξηρὰν V. A.

o σφαλτώδη] ἀσφαλτώδη A.

p ψυχρὰ] ψυχὰ A. E.

q καθέκαστα] καθ' ἕκαστά τε V. A.

r κατὰ] τοὺς κατὰ ed. Heeren.

s Δῆ] δεῖ V. A.

t ἀφεστάναι] ἀφιστάναι A.

u τοῦ] τὰ Heeren.

x καὶ τὰ ἐν τῇ γῇ] καὶ τοῦ ἐν τ. γ. V. τὰ om. A.

y διὰ πνοίας] διαπνοὰς V. A. E.

z Sine sensu habet hic Cant. καὶ μᾶλλον ὁ τοιοῦτος εἰδὼς ὑπὲρ γλυκὺ πᾶν ὕδωρ. Pro εἰδὼς codd. V. A. bene habent ἡδὺς, pro ὑπὲρ jam Cant. in marg. conjecit ὥσπερ, quo tamen sensus nondum restituitur. Venit mihi in mentem: ψυχρὸς γὰρ ὁ λίθος, καὶ μᾶλλον ὁ τοιοῦτος ἡδύς. Ὥσπερ οὖν γλυκὺ πᾶν ὕδωρ, οὕτω καὶ ψυχρόν. *Solum lapidosum frigidum simul esse, et dulcedinem continere, unde aquæ, illud perfluentis, eadem natura sit.* Manca tamen videntur priora, ac potius ob homoioteleuton pauca excidisse putaverim: v. c. καὶ ὅσῳ ἂν μᾶλλον ὁ τοιοῦτος ἡδὺς, τοσούτῳ γλυκύτερον καὶ τὸ ὕδωρ. Ὥσπερ οὖν γλυκὺ etc. eodem quidem sensu, quem antea exposui, sed luculentiori sermone. HEEREN.

a εἰδὼς] ἡδὺς V. A.

οὕτω καὶ ψυχρόν. Οἰκεῖα γὰρ ἄμφω τῆς φύσεως, ἡ θερμότης καὶ ἡ τῶν χυλῶν ποιότης, γένοιτ' ἂν [b]ἀφ' ἑτέρων. Συμβαίνει δ' οὖν καὶ ἐκ τοῦ λόγου τούτου μὴ εἶναι τοῦ ὕδατος καθ' ἑαυτὸ διαφορὰν, ἀλλὰ [c]ταῖς ἄλλων δυνάμεσι διαφέρειν, εἴπερ τὰ μὲν [d]τὴν γῆν, τὰ δὲ τὸ πῦρ, τὰ δὲ τὸν ἀέρα ποιεῖν συμβέβηκεν.

2 Περὶ τοῦ παντός. Ἐκ τῆς Ἀριστοτέλους πρὸς Ἀλέξανδρον Ἐπιστολῆς. [Περὶ Κόσμου c. 2.]

Κόσμος μὲν οὖν ἐστι σύστημα ἐξ οὐρανοῦ καὶ γῆς καὶ [642] τῶν ἐν τούτοις περιεχομένων φύσεων. Λέγεται δὲ καὶ ὁ κόσμος ἑτέρως, ἡ τῶν ὅλων τάξις τε καὶ διακόσμησις, ὑπὸ θεοῦ τε καὶ διὰ θεῶν φυλαττομένη. [a]Ταύτης δὲ τὸ μὲν μέσον καὶ ἀκίνητόν τε καὶ ἑδραῖον φερέσβιος εἴληχε γῆ, παντοδαπῶν ζώων [b]δεσπόζουσα καὶ μήτηρ· [c]τὸ δὲ ὕπερθεν αὐτῆς πᾶν τε καὶ πάντη [d]πεπερατωμένον, εἰς τὸ ἄνω τὸ τῶν θεῶν οἰκητήριον, οὐρανὸς ὠνόμασται· [e]πλήρης δ' ὢν σωμάτων θείων, ἃ δὴ καλεῖν ἄστρα εἰώθαμεν, κινούμενος κίνησιν ἀΐδιον ἐν [f]περιαγωγῇ καὶ ἐν κύκλῳ, συγχορεύει πᾶσι τούτοις [g]ἀπαύστως δι' αἰῶνος. [h]Τοῦ δὲ σύμπαντος οὐρανοῦ τε καὶ κόσμου σφαιροειδοῦς ὄντος, καὶ κινουμένου, καθάπερ

[b] ἀφ' ἑτέρων] ἐφ' ἑτέρων V.

[c] τὰς] ταῖς V. A. E.

[d] τὴν γῆν] τῇ γῇ V.

2.

[a] Ταύτα] ταύτης V.

[b] In ed. Arist. pro δεσπόζουσα rectius forte legitur ἑστία τε οὖσα, quod expressit quoque Apuleius, qui vertit, *altrix et genitrix*. HEEREN.

[c] Et lectione et distinctione mutata, in Arist. ed. exstat; τὸ δὲ —πάντη πεπερατωμένον, ἧς τὸ ἀνώτατον θεοῦ οἰκητήριον, οὐρανὸς ὠνόμασται. HEEREN.

[d] πῶς πεπερατωμένον] πῶς deest V. A.

[e] πλήρης] πλῆθος A.

[f] Exstat in ed. Arist. μιᾷ περιαγωγῇ, καὶ κύκλῳ συναναχορεύει πᾶσι etc. HEEREN.

[g] ἀπαύστως] ἄπαυστος A.

[h] Legitur in ed. Arist. Τοῦ δὲ σύμπαντος οὐρανοῦ τε καὶ κόσμου σφαιροειδοῦς ὄντος, καὶ κινουμένου, καθάπερ εἶπον, ἐνδελεχῶς, δύο ἀκίνητα ἐξ ἀνάγκης ἐστὶ σημεῖα, καταντικρὺ ἀλλήλων, καθάπερ τῆς ἐν τόρνῳ κυκλοφορουμένης σφαίρας, στερεὰ μένοντα, καὶ συνέχοντα τὴν σφαῖραν, περὶ ἃ ὁ πᾶς κόσμος κινεῖται. Ὁ μὲν οὖν κόσμος κύκλῳ περιστρέφεται. HEEREN.

εἶπον, ἐνδελεχῶς, δύο ἐξ ἀνάγκης ἀκίνητά ἐστι σημεῖα κατ' ἀντικρὺ ἀλλήλοις, καθάπερ [i] τόρνῳ κυκλοφορουμένης σφαί-
[644] ρας, παραμένοντα, καὶ συνέχοντα τὴν σφαῖραν, περὶ ἃ ὁ p. 71.
πᾶς ὄγκος κύκλῳ στρέφεται. Καλοῦνται δὲ οὗτοι πόλοι, δι' ὧν [k] εἰ νοήσαιμεν ἐπεζευγμένην εὐθεῖαν, ἥν τινες ἄξονα καλοῦσι, διάμετρος [l] ἔσται τοῦ κόσμου, [m] μέσην μὲν ἔχουσα τὴν γῆν, τοὺς δὲ δύο πόλους πέρατα. Τῶν δ' ἀκινήτων πόλων τούτων ὁ μὲν ἀεὶ φανερός ἐστιν, [n] ὑπὲρ κορυφὴν ὢν κατὰ βόρειον κλίμα, ἀρκτικὸς καλούμενος, ([o] ὁ δὲ ὑπὸ γῆν ἀεὶ κατακέκρυπται, κατὰ τὸ νότιον, ἀνταρκτικὸς καλούμενος.) Οὐρανοῦ δὲ καὶ [p] ἄστρων οὐσίαν μὲν αἰθέρα [q] καλοῦμεν, οὐχ, ὥς τινες, διὰ τὸ πυρώδη οὖσαν αἴθεσθαι, πλημμελοῦντες περὶ τὴν [r] πλεῖστον πυρὸς ἀπηλλαγμένην δύναμιν, ἀλλὰ διὰ τὸ ἀεὶ θεῖν κυκλοφορουμένην, στοιχεῖον οὖσαν [s] ἕτερον τῶν τεττάρων, ἀκήρατόν τε καὶ θεῖον. Τῶν γε μὴν [t] ἐμπεριεχομένων ἄστρων, [u] τὰ μὲν ἀπλανῶς τῷ σύμπαντι οὐρανῷ [x] συμπεριφέρεται, τοσαύτας ἕδρας ἐχόντων·
[646] μέσος δὲ ὁ ζῳοφόρος καλούμενος κύκλος ἐγκάρσιος ὤν, διὰ τῶν τροπικῶν διέζωσται, κατὰ μέρη [y] διῃρημένος εἰς δώδεκα ζῳδίων χώρας· τὰ δὲ πλανητὰ ὄντα οὔτε τοῖς προτέροις

i Post τόρνῳ add. κυκλοτερουμένη σφαίρα, παραμένοντα καὶ συνέχοντα τὴν σφαίραν. Περὶ ἃ ὁ πᾶς ὄγκος κύκλῳ στρέφεται etc. V. A. E.

k ἐννοήσομεν] νοήσομεν V. A.

ib. εἰ νοήσαιμεν, jubente sensu, ex ed. Arist. rescripsi pro ἐννοήσαμεν ap. Stob. HEEREN.

l ἔσται] ἐστι A.

m μέσην add. μὲν V. A.

n Ante ὑπὲρ add. καὶ A. V. E.

o Verba ὁ δὲ—καλούμενος supplevi ex Arist. Omiserunt ea librarii in Stob. quod ob præcedens homoioteleuton ab iis oculi aberrarent. HEEREN. Mox οὐρανοῦ τε A.

p ἀστέρων] ἀστρῶν (sic) A.

q καλοῦμεν om. A. addidit Heeren.

r πλεῖστον] πλείστου Heeren.

s ἕτερον] ἑτέρων A.

t ἐν περιεχομ.] ἐμπεριεχομένων V. A.

u Legitur apud Arist. τὰ μὲν ἀπλανῆ τῷ σύμπαντι οὐρανῷ συμπεριστρέφονται, τὰς αὐτὰς ἔχοντα ἕδρας, ὧν μέσος ὁ Ζωοφόρος καλούμενος κύκλος ἐγκάρσιος διὰ τῶν τροπικῶν διέζωσται, κατὰ μέρος διῃρημένος etc. HEEREN.

x συμπεριφ.] περιφέρεται V.

y διῃρημένος] —μένον A.

ὁμοταχῶς κινεῖσθαι πέφυκεν οὔτε ἐν ἀλλήλοις, ἀλλὰ ἐν ἑτέροις καὶ ἑτέροις κύκλοις, [z] ὥστε τὸν μὲν προσγειότερον εἶναι, τὸν δὲ ἀνώτερον. Τὸ μὲν οὖν τῶν ἀπλανῶν [a] πλῆθος ἀνεξερεύνητόν ἐστιν ἀνθρώποις, καίπερ ἐπὶ μιᾶς κινουμένων ἐπιφανείας τῆς τοῦ [b] παντὸς οὐρανοῦ· τὸ δὲ τῶν πλανητῶν εἰς ἕπτα μέρη [c] κεφαλαιούμενον, ἐν τοσούτοις ἐστὶ κύκλοις ἐφεξῆς κειμένοις, ὥστε ἀεὶ τὸν ἀνώτερον μείζω τοῦ ὑποκάτω εἶναι, τοὺς δὲ ἕπτα ἀλλήλοις περιέχεσθαι· [d] πάντας γε μὴν [648] ὑπὸ τῆς τῶν ἀπλανῶν σφαίρας [e] περιειλῆφθαι. [f] Συνεχῆ δὲ ἀεὶ τὴν θέσιν ταύτην εἶναι μέχρις οὗ αἰθὴρ ὁρίζεται, τὰ θεῖα ἐμπεριέχων σώματα, καὶ τὴν τῆς κινήσεως τάξιν. Μετὰ δὲ τὴν αἰθέριον καὶ θείαν φύσιν, ἥντινα τεταγμένην ἀποφαίνομεν, ἔτι δὲ ἄτρεπτον καὶ [g] ἀναλλοίωτον καὶ ἀπαθῆ, συνεχής ἐστιν ἡ δι' ὅλων παθητή τε καὶ τρεπτὴ, καὶ τὸ σύμπαν εἰπεῖν, φθαρτή τε καὶ ἐπίκηρος. Ταύτης δὲ αὐτῆς πρώτη ἐστὶν ἡ λεπτομερὴς καὶ φλογώδης οὐσία, ὑπὸ τῆς [h] αἰθερίου πυρουμένη, διὰ τὸ μέγεθος αὐτῆς, καὶ τὴν ὀξύτητα τῆς κινήσεως· ἐν δὲ τῇ [i] πυρώδει καὶ τῇ ἀτάκτῳ λεγομένῃ [k] τὰ σέλα διάττει, καὶ φλόγες ἀκοντίζονται, καὶ [l] δοκίδες δὲ

[z] Exstat ap. Arist. ὥστε αὐτῶν τὸ μὲν—τὸ δέ. HEEREN.

[a] πάθος] πλῆθος ed. Heeren. cum Arist.

[b] σύμπαντος habet Arist.—Mox ibidem ἐν ἀλλήλοις male pro ἀλλήλοις. HEEREN.

[c] κεφαλαιουμένου] –μενον V. A. E.

[d] ταύτας] πάντας V. A.

[e] περιειλῆφθαι add. Συνεχῆ δὲ etc. V. A.

[f] Longe aliter hic, pluribusque insertis, habent edd. Aristotelis: Συνεχῆ δὲ ἔχει ἀεὶ ταύτην τὴν θέσιν, ὁ τοῦ Φαίνοντος, ἅμα καὶ Κρόνου καλούμενος κύκλος· ἐφεξῆς δὲ, ὁ τοῦ Φαέθοντος, Διὸς λεγόμενος· εἶθ' ὁ Πυρόεις, ὁ Ἡρακλέους τε καὶ Ἄρεος προσαγορευόμενος· ἑξῆς δὲ ὁ Στίλβων, ὃν ἱερὸν Ἑρμοῦ καλοῦσιν ἔνιοι, τινὲς δὲ Ἀπόλλωνος· μεθ' ὃν ὁ τοῦ Φωσφόρου, ὃν Ἀφροδίτης, οἱ δὲ Ἥρας προσαγορεύουσιν· εἶτα ὁ Ἡλίου, καὶ τελευταῖος ὁ τῆς σελήνης μέχρι τῆς γῆς ὁρίζεται. Ὁ δὲ αἰθὴρ τά τε θεῖα ἐμπεριέχει σώματα, etc. HEEREN.

[g] ἀναλλοίωτον] Arist. ἀνετεροίωτον.

[h] Post αἰθερίου, ap. Arist. additur φύσεως. HEEREN.

[i] πυρώδει] πυρώσει A. Cant.

[k] τὰ σέλατα] τὰ σέλα V. A.

[l] δὲ post δοκίδες deest V.

καὶ βόθυνοι καὶ κομῆται λεγόμενοι στηρίζονταί τε καὶ σβέν-
νυνται πολλάκις. Ἑξῆς δὲ ταύτης ὁ ἀὴρ ὑποκέχυται, ζο-
φερὸς ὢν καὶ παγετώδης τὴν φύσιν, [m] ὑπὸ δὲ ἐκείνης λαμ-
πόμενος [n] ἅμα καὶ καιόμενος [o] λαμπρότερός τε γίνεται καὶ
[650] ἀλεεινός. [p] Ἐν δὲ τούτῳ τῆς παθητῆς ὄντι καὶ αὐτῷ δυνά-
μεως, καὶ [q] παντοδαπῶς [r] ἀλλοιουμένῳ, νέφη συνίστανται,
καὶ ὄμβροι [s] καταράττουσι, χιόνες τε καὶ πάχναι καὶ p. 72.
χάλαζαι πνοιαί τε ἀνέμων καὶ τυφώνων, ἔτι δὲ καὶ βρονταὶ
καὶ ἀστραπαὶ καὶ πτώσεις κεραυνῶν μυρίων τε γνόφων
συμπληγάδες.

Ἑξῆς δὲ τῆς ἀερίου φύσεως γῆ τε καὶ θάλαττα ἐρήρεισται, φυτοῖς τε βρύουσα καὶ ζώοις, πηγαῖς τε καὶ ποταμοῖς, τοῖς μὲν ἀνὰ γῆν [t] ἀνελιττομένοις, τοῖς δὲ [u] ἀνερευγομένοις εἰς θάλατταν. Πεποίκιλται δὲ χρόαις μυρίαις, ὄρεσί τε ὑψηλοῖς, βαθυξύλοις τε δρυμοῖς καὶ πόλεσιν, ἃς τὸ σοφὸν ζῶον ἄνθρωπος ἱδρύσατο, νήσοις τε εναλίοις [x]. Τὴν μὲν οὖν οἰκουμένην ὁ πολὺς λόγος εἴς τε νήσους καὶ ἠπείρους διεῖλεν, ἀγνοῶν ὅτι καὶ ἡ σύμπασα μία νῆσός ἐστιν, ὑπὸ τῆς Ἀτλαντικῆς καλουμένης θαλάττης περιρρεομένη· πολλὰς δὲ καὶ ἄλλας [y] τῇδε [z] ἀντιπόρθμους ἄπωθεν κεῖσθαι,

[m] ὑπ' ἐκείνης] ὑπὸ δὲ ἐκείνης ed. Heeren.

ib. Pro ὑπὸ δὲ ἐκείνης Aristot. habet ὑπὸ δὲ κινήσεως. HEEREN. ἐκείνης unus ms. Aristotelis.

[n] ἅμα καὶ] ἅμα δὲ καὶ A.

[o] λαμπρότερος etc.] λαμπρός τε γίνεται καὶ ἀλεεινὸς V. A. E.

[p] In Arist. edit. mutato verborum ordine; ἐν δὲ τούτῳ καὶ αὐτῷ τῆς παθητῆς ὄντι δυνάμεως.—Mox post νέφος bene additur τε. HEEREN.

[q] παντοδαπῶς] Ante h. v. καὶ add. Heeren.

[r] ἀλλοιωμένῳ νέφη] ἀλλοιουμένῳ νέφει V. A.

[s] κατακράττουσι] καταράττουσι V. A.

[t] ἀνελιττομένοις] ἀνηληπτόμενος V. ἀνελιττόμενος A. E.

[u] ἀνερευνωμένοις] ἀνερευγομένοις V. A.

[x] Addunt hic Arist. ed. καὶ ἠπείροις. HEEREN.

[y] εἰκὸς addunt Arist. edd. quæ et τῆσδε pro nostro τῇδε exhibent. HEEREN.

[z] ἀντιπορθμοῦσαι ἀπωκεῖσθαι] –μουσας ἀποκίσθαι V. ἀντιπορθμοῦσα ἀπωκεῖσθαι A. ἄπωθεν κεῖσθαι Aristot. An l. ἀπῳκίσθαι?

τὰς μὲν μείζους [a]αὐτῆς, τὰς δὲ ἐλάττους, ἡμῖν δὲ πάσας
πλὴν τῆσδε ἀοράτους. [b]Ὅπερ γὰρ αἱ παρ' ἡμῖν νῆσοι πρὸς
ταῦτα [c]τὰ πελάγη πεπόνθασι, τοῦτο ἥδε ἡ οἰκουμένη πολ-
[652] λαί τε ἕτεραι πρὸς σύμπασαν τὴν θάλατταν. Καὶ αὗται
[d]μὲν μεγάλαι τινές εἰσι νῆσοι μεγάλοις περικλυζόμεναι
πελάγεσιν. [e]Ἡ δὲ σύμπασα τοῦ ὑγροῦ φύσις ἐπιπολάζουσα,
κατὰ τὰς τοῦ ὑγροῦ ποιότητας, καὶ τὰ κοιλώματα, τὰς
καλουμένας ἀναπεφυκυῖα οἰκουμένας, [f]ἑξῆς ἂν εἴη [g]τῆς
ἀερίου μάλιστα φύσεως. Μετὰ δὲ [h]ταῦτα, ἐν τοῖς βυθοῖς
κατὰ τὸ μεσαίτατον τοῦ κόσμου ἐρηρεισμένη [i]γῆ, συνέστηκεν
ἀκίνητος καὶ ἀσάλευτος, καὶ τοῦτ' ἔστι τοῦ κόσμου τὸ πᾶν,
ὃ καλοῦμεν κάτω. Πέντε δὲ στοιχεῖα ταῦτα ἐν πέντε
χώραις [k]σφαιρικῶς (λέγω δὲ γῆς μὲν ἐν ὕδατι, ὕδατος δὲ
ἐν ἀέρι, ἀέρος δὲ ἐν πυρὶ, πυρὸς δὲ ἐν [l]αἰθέρι), τὸν [m]ὅλον
κόσμον συνεστήσατο· καὶ [n]τὸ μὲν ἄνω πᾶν [o]θεῶν ἀπέδειξεν
[654] οἰκητήριον, τὸ κάτω δὲ [p]ἐφημέρων ζώων. Αὐτοῦ γε μὴν
τούτου [q]τὸ μὲν ὑγρόν ἐστιν, ὃ καλεῖν ποταμοὺς καὶ νάματα
καὶ θαλάσσας εἰθίσμεθα, τὸ δὲ ξηρὸν, ὃ γῆν τε καὶ ἠπείρους
καὶ νήσους ὀνομάζομεν.

[a] αὐτῆς] αὐτοὺς A.

[b] Legitur ap. Arist. Ὅπερ—πεπόνθασι, τοῦτο ἥδε ἡ οἰκουμένη πρὸς τὴν Ἀτλαντικὴν θάλατταν. Πολλαί τε ἕτεραι πρὸς σύμπασαν τὴν θάλατταν. HEEREN.

[c] πελάγη] τὰ πελάγη A. V.

[d] γὰρ additur ap. Arist. et mox τισὶ ante πελάγεσι. HEEREN.

[e] Legitur in Arist. Ἡ δὲ σύμπασα τοῦ ὑγροῦ φύσις ἐπιπολάζουσα, κατά τινας τῆς γῆς σπίλους τὰς καλουμένας ἀναπεφυκυῖα οἰκουμένας. HEEREN.

[f] ἑξῆς] ἕξις V. A.

[g] τῆς] τοὺς A.

[h] Pro ταῦτα Aristot. ed. ταύτην, quæ mox συνερηρεισμένη pro ἐρηρεισμένη. HEEREN.

[i] γῆ, quod sensus flagitat, addidi ex Aristot.—Plenius ibidem legitur: καὶ πεπιεσμένη συνέστηκεν. HEEREN.

[k] Post σφαιρικῶς supplet Aristot. ἐγκείμενα, περιεχομένης ἀεὶ τῆς ἐλάττονος τῇ μείζονι. HEEREN.

[l] Post αἰθέρι add. ἀέρος δὲ τὸν etc. V. A.

[m] ὅλον κόσμον] κόσμον ὅλον A.

[n] τὸ bene supplet cod. V. cum ed. Aristot. HEEREN.

[o] θεῶν] θεῷ V.

[p] ἐφ' ἡμέρων] ἐφημένον A. E.

[q] Ante μὲν add. τὸ V. A.

Τῶν δὲ νήσων αἱ μέν εἰσιν μεγάλαι, καθάπερ οὖν πᾶσα ἡ οἰκουμένη [r]λέλεκται [s]πολλοῖς [t]τε ἑτέροις [u]μεγάλοις περιρρεομένη πελάγεσιν, αἱ δὲ ἐλάττους, φανεραὶ δὲ ἡμῖν καὶ [x]ἐντὸς οὖσαι. Καὶ τούτων αἱ μὲν ἀξιόλογοι, Σικελία τε καὶ Εὔβοια, καὶ Κύπρος Σαρδώ τε, Κύρνος Κρήτη τε [[y]καὶ Πελοπόννησος,] καὶ Λέσβος· [z]αἱ δὲ ὑποδεέστεραι, ὧν αἱ μὲν Σποράδες, [a]Κυκλάδες, αἱ δὲ ἄλλως ὀνομάζονται.

Πέλαγος δὲ τὸ μὲν ἔξω τῆς οἰκουμένης Ἀτλαντικόν τε καὶ [b]Ὠκεανὸς καλεῖται, περιρρέων ἡμᾶς· [c]ἐντὸς δὲ, πρὸς δύσεις, στενοπόρῳ [d]διανεωγὼς στόματι, ταῖς [e]Ἡρακλείαις λεγομέναις στήλαις, τὸν εἴσρουν εἰς τὴν ἔσω θάλασσαν, ὡς ἂν εἰς λιμένα, ποιεῖται· κατὰ μικρὸν δὲ ἐπιπλατυνόμενος [f]ἀναχεῖται, μεγάλους περιλαμβάνων κόλπους ἀλλήλοις συναφεῖς[g]. Πρῶτον μὲν οὖν λέγεται [h]ἐγκεκολπῶσθαι
[656] ἐν δεξιᾷ εἰσπλέοντι [i]τὰς Ἡρακλείους στήλας διχῶς εἰς τὰς καλουμένας [k]Σύρτεις, ὧν τὴν μὲν μεγάλην, τὴν δὲ μικρὰν καλοῦσιν· ἐπὶ θάτερα δὲ οὐκ [l]ἔθ᾽ ὁμοίως ἀποκολπούμενος, p. 73.

[r] λέλεκται] λέγεται A.

[s] Legitur in ed. Arist. πολλαί τε ἕτεραι περιρρεόμεναι μεγάλοις πελάγεσι. HEEREN.

[t] τε deest V. A.

[u] μεγάλοις om. Heeren.

[x] νῆσοι ἐντὸς οὖσαι, sunt *insulæ maris mediterranei*, τῆς ἔσω θαλάσσης. HEEREN.

[y] καὶ ante πελοπ. deest V. A.

ib. Verba καὶ Πελοπόννησος desunt in ed. Aristot. HEEREN.

[z] οὐδὲ] αἱ δὲ V. A. E.

[a] αἱ δὲ addunt ed. Arist. ante Κυκλάδες. HEEREN.

[b] Ὠκεανὸν] ὠκεανὸς V. A.

[c] Mutato verborum simul ordine et lectione, habent hic edd. Arist. ἐν δὲ τῷ πρὸς δύσιν στενοπόρῳ στόματι διανεωγὸς κατὰ τὰς Ἡρακλείους στήλας, τὸν εἰσροῦν εἰς τὴν ἔσω θάλατταν, ὡσὰν εἰς λιμένα, ποιεῖται. HEEREN.

[d] διανεωγὼς] διανεογὼς A. διανέαγως V.

[e] ἡρακλείου] ἡρακλείοις A. ἡρακλείαις V.

[f] ἀναλεῖται] ἀναχεῖται V. A. E.

[g] Addunt hic edd. Arist. πῆ μὲν, κατὰ στενοπόρους αὐχένας ἀνεστομωμένος, πῆ δὲ, πάλιν πλατυνόμενος. HEEREN.

[h] κολπῶσθαι] ἐγκεκολπῶσθαι V. A. E.

[i] τὰς] τῆς A.

[k] Σύρτεις] σύρτας A.

[l] ἐθ᾽] ἔσθ᾽ ὅμοιος A.

τρία [m]ποιεῖ πελάγη, [n]τό τε Σαρδικὸν, καὶ τὸ Γαλατικὸν λεγόμενον, καὶ τὸ Ἄδριον, ἑξῆς [o]δὲ τούτων ἐγκάρσιον [p]τὸ μὲν Σικελικὸν, μετὰ δὲ τοῦτο τὸ [q]Κρητικὸν, συνεχὲς [r]δ' αὐτοῦ τῇ μὲν τὸ Αἰγύπτιον, καὶ Παμφύλιον, καὶ Σύριον, τῇ δὲ τὸ [s]Αἰγαῖόν τε καὶ τὸ Μυρτῷον. [t]Ἀντιπαρῆκε δὲ τοῖς εἰρημένοις, πολυμερέστατος [u]ὢν, Πόντος, οὗ τὸ μὲν πυμαίτατον Μαιῶτις καλεῖται, τὸ δὲ ἔξω πρὸς τὸν Ἑλλήσποντον συνεστόμωται τῇ καλουμένῃ Προποντίδι. [x]Πρός γε μὴν ταῖς [y]ἀνασχέσεσι τοῦ ἡλίου [z]πάλιν εἰσρέων ὁ Ὠκεανὸς, τὸν Ἰνδικόν τε καὶ Περσικὸν [a]διανοίξας κόλπον, ἀναφαίνει τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν, διειληφώς. Ἐπὶ θάτερον δὲ κέρας [b]καταστενοῦται καὶ ἐπιμήκη [c]διϊὼν εἰς αὐχένα πάλιν [d]ἀνευρύνεται, τὴν Ὑρκανίαν τε καὶ Κασπίαν ὁρίζων· τὸ δὲ
[658] ὑπὲρ ταύτην βαθὺν ἔχει τὸν ὑπὲρ τὴν Μαιῶτιν λίμνην τόπον. Εἶτα κατ' [e]ὀλίγον τι ὑπὲρ τοὺς Σκύθας τε καὶ Κελτικὴν

m ποιεῖ] πόσα A.

n τότε Σαρδικὴν etc.] τό τε Σαρδανικὸν καὶ τὸ Γαλατικὸν λεγόμενον καὶ ἀδριὸν V. A.

o δὲ τούτων] καὶ τοῦτον A.

p τὸ μὲν] μὲν om. A.

q Prava simul interpunctione et lectione exhibent codd. Stob. et Cant. τὸ κρητικὸν συνεχὲς αὐτοῦ. Τῇ μὲν, τὸ Αἰγύπτιον etc. quæ sensu jubente emendavi ex ed. Aristot. HEEREN.

r δ' αὐτοῦ] δ' om. A.

s Αἰγαῖόν τε καὶ τὸ] αἰγέονται καὶ (ε superscr.) A. Αἰγεῖόν τε καὶ τὸ Heeren.

t Ἀντιπαρῆκε τ. εἰρημένοις] ἀντιπαρήκει τ. λεγομένοις Heeren. tacite.

u Male hic Stob. codd. inserunt δὲ, quod delevi. HEEREN.

x Πρός γε] πρός τε A.

y ὑποσχέσι leg. in contextu, in marg. ὑποκλίσεσι eadem manu V. ὑποσχέσεσι (κλι superscr.) A.

ib. ἀνασχέσεσι jubente sensu rescripsi ex Arist. pro ὑποσχέσεσι ap. Stob. Ante ἀναφαίνει Arist. ed. bene addunt συνεχῆ. Sensus enim est, *Sinum Indicum et Persicum excipere mare Erythræum*, i. e. Arabicum inter Africam et Indiam. Διειληφώς, pleonastice hic positum, vertendum est *complectens*, quo sensu sæpius verbo διαλαμβάνειν utitur noster, ut infra cap. V. 6. μιᾷ διαλαβοῦσα σφαίρας ἐπιφανείᾳ. HEEREN.

z πάλιν om. Heeren.

a διανοιξ.] διανήξας A. E.

b κατὰ στένον τε καὶ ἐπιμήκη διήκων αὐχένα Aristot.

c διὼν] διϊὼν V. A. E.

d ἀνευθύνεται] ἀνευρύνεται V. A. E. P.

e ὀλίγον τι] ὀλίγον τε V. A.

[f]σφίγγει τὴν οἰκουμένην, [g]πρός τε τὸν [h]Γαλατικὸν [i]καλούμενον κόλπον, καὶ τὰς προειρημένας στήλας [k]Ἡρακλείους, ὧν ἔξω περιρρεῖ τὴν γῆν ὁ Ὠκεανός. Ἐν τούτῳ γε μὴν νῆσοι μεγάλαι τυγχάνουσιν, αἵ τε δύο [l]Βρεταννικαὶ λεγόμεναι, [m]Ἄλβιον καὶ [n]Ἰέρνη, τῶν προϊστορημένων μείζους, ὑπὲρ Κελτοὺς κείμεναι· τούτων δὲ [o]ἐλάττους [p]ἥ τε Ταπροβάνη πέραν Ἰνδῶν λοξὴ πρὸς τὴν οἰκουμένην, [q]καὶ ἡ Φοβέα [καὶ Εὔβοια] καλουμένη, κατὰ τὸν Ἀράβιον κειμένη κόλπον. Οὐκ ὀλίγαι τε [r]ἄλλαι μικραὶ περὶ τὰς Βρεταννικὰς καὶ τὴν Ἰβηρίαν κύκλῳ περιεστεφάνωνται τὴν οἰκουμένην ταύτην,
[660] ἣν δὴ νῆσον εἰρήκαμεν, ἧς πλάτος μὲν κατὰ τὸ βαθύτατον τῆς ἠπείρου [s]βραχὺ [t]ἀποδέον [v]τετράκις μυρίων σταδίων φασὶν οἱ εὖ γεωγραφήσαντες, μῆκος δὲ περὶ ἑπτάκις μυρίους μάλιστα. Διαιρεῖται δὲ εἴς τε Εὐρώπην καὶ Ἀσίαν καὶ Λιβύην.

Εὐρώπη μὲν οὖν ἐστιν ἧς ὅρος κύκλῳ στῆλαί τε [u]Ἡρακλέους, καὶ μυχοὶ Πόντου, θάλαττά [x]τε Ὑρκανία, καθ' ἣν [y]στενώτατος ἰσθμὸς εἰς τὸν πόντον διήκει· τινὲς δὲ ἀντὶ τοῦ ἰσθμοῦ Τάναϊν ποταμὸν εἰρήκασιν. Ἀσία δέ ἐστι [z]τὸ ἀπὸ

f σφίγγει] σφίγγα V. A. E.

g πρός τε] τε om. A.

h Γαλακτικὸν] Γαλατικὸν V. A. E.

i καλούμενον deest in ed. Arist. HEEREN.

k Ἡρακλείους] –ας A.

l Βρεταννικαὶ] Βρεττανικαὶ A.

m Ἄλβιον καὶ Ἰέρνη ex Arist. ed. rescripsi pro καὶ λαβεῖον καὶ Ἰέρνη, quod habent Stob. codd. et Cant. HEEREN.

n Ἰέρνη] ἱέρμη V. A. E.

o Ante ἐλάττους in ed. Arist. inseritur οὐκ. HEEREN.

p ἥ τε Ταπροβάνη] ἡ, τε προβάνη A. τὰ deest V. A. E.

q καὶ ἡ] καὶ addidit Heeren. ex Aristot.

ib. Ed. Aristot. καὶ ἡ Φέβολ καλουμένη, omisso καὶ Εὔβοια. HEEREN.

r ἄλλαι τε] τε om. V. A. E.

s βραχὺν ἀποδέονται] βραχὺ ἀποδέον Aristot.

t ἀποδέονται] ἀποδέοντα V. A. E.

v τετράκις] τῷρακισμυρίων A.

u Ἡρακλέους] –ως A.

x Post τε male ap. Stob. additur καί. Mox autem idem ἀντὶ τοῦ ἰσθμοῦ recte legit pro ἀπὸ τοῦ ἰσθμοῦ, quod ed. Arist. nullo prorsus sensu exhibent. HEEREN.

y στενώτατος] στενότατος A. ubi mox ἰσθμοῦς.

z τὸ ἀπὸ] τὰ ἀπὸ A.

τοῦ εἰρημένου ἰσθμοῦ [a] τοῦ τε Πόντου, καὶ τῆς Ὑρκανίας θαλάττης [b] μέχρι θατέρου ἰσθμοῦ, ὃς μεταξὺ κεῖται τοῦ τε Ἀραβικοῦ κόλπου καὶ τῆς ἔσω θαλάττης, [c] περιεχόμενος ὑπό τε ταύτης καὶ τοῦ πέριξ ὠκεανοῦ· [d] τινὲς δὲ ἀπὸ Ταναΐδος μέχρι Νείλου τίθενται ὅρον. Λιβύη δὲ, τὸ ἀπὸ τοῦ [e] Ἀραβικοῦ ἰσθμοῦ ἕως Ἡρακλείων στηλῶν· οἱ δὲ ἀπὸ τοῦ Νείλου φασὶν ἕως ἐκείνων. Τὴν δὲ Αἴγυπτον ὑπὸ τῶν τοῦ Νείλου στομάτων [f] περιχεομένην, οἱ μὲν τῇ Ἀσίᾳ, οἱ δὲ τῇ Λιβύῃ προσάπτουσιν· καὶ τὰς νήσους οἱ μὲν ἐξαιρέτους ποιοῦσιν, οἱ δὲ ἀεὶ [g] προσνέμουσιν ταῖς γείτοσι μοίραις. Γῆς
[662] μὲν δὴ καὶ θαλάττης φύσιν καὶ θέσιν, [h] ἣν καλεῖν εἰώθαμεν οἰκουμένην, τοίαν πη ἱστορήκαμεν.

Περὶ δὲ τῶν ἀξιολογωτάτων ἐν αὐτῇ καὶ [i] ὑπὲρ αὐτῆς παθῶν νῦν [ii] λέγομεν, αὐτὰ τὰ ἀναγκαῖα ἀνακεφαλαιούμενοι. [j] Δύο γὰρ δή τινες ἀναθυμιάσεις ἀπ' αὐτῆς ἀναφέρονται συνεχῶς εἰς τὸν ὑπὲρ ἡμᾶς ἀέρα, λεπτομερεῖς καὶ ἀόρατοι παντάπασιν, ἔκ τε τῶν κατὰ τὰς [k] ἠόνας τόπων, ἔκ τε ποταμῶν τε καὶ ναμάτων ἀναφερόμεναι θεωροῦνται. Τούτων δ' [l] ἡ μέν ἐστι ξηρὰ καὶ καπνώδης, ἀπὸ τῆς γῆς p. 74.

[a] καὶ τοῦ πόντου] τοῦτε πόντου A.V.

[b] μέχρι] ὁ μέχρι A. E.

[c] περιεχόμενος] περιεσχημένος V. A.

[d] Fusius ed. Arist. τινὲς δὲ τὸ ἀπὸ Ταναΐδος μέχρι Νείλου στομάτων τίθενται τὸν τῆς Ἀσίας ὅρον. HEEREN.

[e] Ἀραβικοῦ] Ἀραβίου καὶ A.

[f] Pro περιχεομένην, *circumfusam*, *circumdatam*, ed. Arist. περιρρεομένην. HEEREN.

[g] Post προσνέμουσιν add. ἀεὶ ταῖς γείτοσι μοίραις. Γῆς μὲν δὴ καὶ θαλάττης φύσιν καὶ θέσιν ἣν καλεῖν etc. V. A. E.

[h] Mutilate Cant. ed. ἣν καλεῖν εἰώθαμεν οἰκουμένην τε οἵαν πη ἱστορήκαμεν. Plena ea edidi ex codd. V. A. τοίαν πη rescribendo simul pro τε οἵαν πη, quod illi sine sensu exhibent. Ed. Arist. τοιάνδε τινά. HEEREN. τε ante οἵαν om. A.

[i] ὑπὲρ αὐτῆς, *supra eam*, nempe in aëre, bene codd. Stob. pro περὶ αὐτὴν in ed. Arist. HEEREN. Stobæi libri ὑπὲρ ταύτης.

[ii] λέγομεν] λέγωμεν Arist.

[j] Arist. Δύο—παντάπασιν, εἴ τι μὴ κατὰ ἑώας ἐστὶν, αἴτε διὰ ποταμῶν etc. HEEREN.

[k] ἠόνας] ἤοὒας A.

[l] ἡμῖν] ἡ μὲν V. A. E.

ἀπορρέουσα· ἡ δὲ νοτέρα καὶ ἀτμώδης, [m]ἀπὸ τῆς ὑγρᾶς ἀναθυμιωμένη φύσεως. Γίγνονται δὲ ἀπὸ μὲν ταύτης ὁμίχλαι καὶ δρόσοι καὶ πάγων ἰδέαι, [n]νέφη τε καὶ ὄμβροι
[664] καὶ χιόνες καὶ χάλαζαι, ἀπὸ δὲ τῆς ξηρᾶς ἄνεμοί τε καὶ [o]πνεύματα διάφορα· βρονταί τε καὶ ἀστραπαὶ καὶ πρηστῆρες καὶ κεραυνοὶ καὶ τὰ ἄλλα, ἃ δὴ τούτοις ἐστὶ σύμφυλα.

Ἔστι δὲ [p]ὁμίχλη μὲν ἀτμώδης ἀναθυμίασις [q]ἄγονος ὕδατος, ἀέρος μὲν παχυτέρα, νέφους δὲ ἀραιοτέρα· γίνεται δὲ ἤτοι [r]ἐξ ἀρχῆς νέφους, [s]ἢ ἐξ ὑπολείμματος. Ἀντίπαλος δὲ [t]αὐτῇ λέγεταί τε καὶ ἔστιν [u]αἰθρία, οὐδὲν [x]ἄλλο οὖσα πλὴν ἀὴρ ἀνέφελός [y]τε καὶ ἀνόμιχλος. Δρόσος δέ ἐστιν ὑγρὸν ἐξ αἰθρίας κατὰ σύστασιν [z]λεπτὴν φερόμενον, κρύσταλλος δὲ ἀθρόον ὕδωρ ἐξ αἰθρίας πεπηγός, [a]πάχνη δέ ἐστιν ἡμιπαγὴς δρόσος· νέφος δέ ἐστιν [[b]πάχος] [c]ἀτμῶδες συνεστραμμένον γόνιμον ὕδατος· [d]ὄμβρος δὲ γίνεται μὲν κατ᾽ ἐκπιασμὸν νέφους εὖ μάλα [e]πεπαχυμένου· διαφορὰς δ᾽ [f]ἴσχει ὅσας καὶ ἡ τοῦ νέφους ἀπόθλιψις· [g]ἠπία μὲν γὰρ

[m] καὶ ἀπὸ] καὶ delevit Heerenius præeunte Aristotele.

[n] νέφη] νέφοι V.

[o] Arist. πνευμάτων διαφοραί. HEEREN.

[p] ὁμίχλη] ὁμίχλη μὲν V. A.

[q] Pro ἄγονος, quod ex Arist. revocavi, codd. Stob. habent ἀγόνου. Aristot. Meteorol. I. 9. ἔστι γὰρ ἡ ὁμίχλη, οἷον νεφέλη ἄγονος. HEEREN.

[r] Pro ἐξ ἀρχῆς in Arist. ἐξ ἀραιώσεως ἀρχῆς. HEEREN.

[s] καὶ ἐξ] ἢ ἐξ V. A. P.

[t] αὑτῃ emendavi pro αὕτη. HEEREN.

[u] αἰθρία] Sic Heeren. cum Arist. αἴθριος A. Cant.

[x] ἄλλον] ἄλλο A.

[y] τε deest A. V.

[z] λεπτὴν] λεπτὸν A. Arist.

[a] Arist. πάχνη δὲ δρόσος πεπηγυῖα· δροσοπάχνη δὲ ἡμιπαγὴς δρόσος. HEEREN.

[b] [πάχος] necessario ex ed. Arist. supplendum est, ut proxima adjectiva habeant ad quod referri possint. HEEREN.

[c] ἀτμῶδες] ἀτμώδης V. ἀτμήδος A.

[d] ὄμβρος] ὄμβροου A.

[e] πεπαχυμένου] Sic A. Cant. πεπαχυσμένου Aristot. πεπτασμένου Heeren.

[f] ἴσχει] Sic A. Cant. cum Aristot. ἔχει Heeren.

[g] ἠπίνα] ἠπίνα V. ἠπία A. ἠπία Aristot.

[666] οὖσα μαλακὰς ψεκάδας διασπείρει, σφόδρα [h] δὲ ἀδροτέρας. [i] Καὶ τοῦτο καλοῦμεν [k] ὄμβρον [l] ὑετὸν μείζονα καὶ συνεχῆ [m] συστρέμματα ἐπὶ γῆς φερόμενα. Χιὼν δὲ γίνεται κατὰ νεφῶν πεπυκνωμένων ἀπόθραυσιν πρὸ τῆς εἰς ὕδωρ μεταβολῆς ἀνακοπέντων. Ἐργάζεται δὲ ἡ μὲν κοπὴ τὸ ἀφρῶδές [n] τε καὶ ἔκλευκον· ἡ δὲ σύμπηξις [o] τοῦ ἐνόντος ὑγροῦ τὴν ψυχρότητα οὔπω χυθέντος, οὐδὲ ἠραιωμένου· σφόδρα δ᾽ αὕτη καὶ ἀθρόα καταφερομένη, νιφετὸς ὠνόμασται. Χάλαζα δὲ γίνεται νιφετοῦ συστραφέντος, καὶ [p] βρῖθος ἐκ πιλήματος εἰς καταφορὰν [q] ταχυτέραν λαβόντος. Παρὰ δὲ τὰ μεγέθη τῶν ἀπορρηγνυμένων θραυσμάτων, [r] οἵ τε ὄγκοι μείζους, [s] αἵ τε [t] φοραὶ γίνονται βιαιότεραι. Ταῦτα μὲν οὖν ἐκ τῆς ὑγρᾶς ἀναθυμιάσεως πέφυκε [u] συμπίπτειν.

Ἐκ δὲ τῆς ξηρᾶς ὑπὸ ψύχους μὲν ὠσθείσης ὥστε ῥεῖν, ἄνεμος ἐγένετο. Οὐδὲν γάρ ἐστιν οὗτος πλὴν ἀὴρ [x] ῥέων πολὺς καὶ ἀθρόος, ὅστις ἅμα καὶ πνεῦμα λέγεται. [y] Κα-
[668] λεῖται δὲ πνεῦμα καὶ ἑτέρως ἥ τε ἐν φυτοῖς καὶ [z] ζώοις καὶ διὰ πάντων [a] διήκουσα ἔμψυχός τε καὶ [b] γόνιμος οὐσία, περὶ ἧς νῦν λέγειν οὐκ ἀναγκαῖον. [c] Τὰ δὲ ἐν ἀέρι πνέοντα πνεύματα καλοῦμεν ἀνέμους, αὔρας δὲ, τὰς ἐξ ὑγροῦ φερομένας ἐκπνοάς. Τῶν δὲ ἀνέμων οἱ μὲν ἐκ νενοτισμένης γῆς

[h] δὲ om. A.

[i] Arist. καὶ τοῦτο καλοῦμεν ὑετὸν, ὄμβρου μείζω, καὶ συνεχῆ συστρέμματα ἐπὶ γῆς φερόμενα. HEEREN.

[k] ὄμβρον] ὄ̈μβρον A.

[l] ὑστὸν] ὑετὸν V. A. E. P.

[m] συστεμμ.] συστέμματα V.

[n] τε deest Arist.

[o] τούτου] τοῦ V. E. A.

[p] βρίθος] βρύθης A.

[q] ταχυτέραν] παχυτέραν A. E.

[r] οἵ τε] οὗ τε A.

[s] αἳ τοραὶ] αἵτε φοραὶ V. A. E. P.

[t] φοραὶ] καταφοραὶ Arist. ed. vet.

[u] συμπίπτειν] Arist. συνεκπίπτειν.

[x] πολὺς ῥέων] ῥέων πολὺς V. A. E.

[y] Καλεῖται] Arist. λέγεται.

[z] ζώοις] ζώης A.

[a] ἤκουσα] διήκουσα V. A.

[b] γόνιμος] μόνιμος V. A. E.

[c] Τὰ δὲ ἐνθάτερα πνέοντα καλοῦμεν] τὰ δὲ ἐν θέρει πνέοντα πνεύματα καλοῦμεν V. A. E. ἀέρι Aristot. pro θέρει.

[d]ῥέοντες, ἀπόγειοι λέγονται· οἱ δὲ ἐκ [e]κόλπων διεξάττοντες, ἐγκολπίαι. Τούτοις δὲ [f]ἀνάλογόν τι ἔχουσιν [g]οἱ ἐκ ποταμῶν τε καὶ λιμνῶν· οἱ δὲ κατὰ ῥῆξιν γιγνόμενοι, καὶ ἀνάλυσιν τοῦ πάχους εἰς ἑαυτοὺς ποιούμενοι, [h]ἐκνεφίαι· μεθ' ὕδατος δὲ [i]ἀθρόου ῥαγέντος, ἐξυδρίαι λέγονται. Καὶ οἱ μὲν ἀπὸ ἀνατολῆς [k]συνεχεῖς εὖροι κέκληνται, βορέαι δὲ, οἱ ἀπὸ ἄρκτου· ζέφυροι δὲ οἱ ἀπὸ [l]δυσμῶν· νότιοι δὲ οἱ ἀπὸ
[670] μεσημβρίας. Τῶν γε μὴν εὔρων [m]Ἀπαρκτίας μὲν λέγεται ἀπὸ τοῦ περὶ τὰς [n]θερινὰς ἀνατολὰς τόπου [o]ῥέων ἄνεμος, ἀπηλιώτης δὲ, [p]. . . ἀπὸ τοῦ περὶ τὰς χειμερινάς. Καὶ τῶν ἐναντίων ζεφύρων, [q]Ἀργέστης μὲν ὁ ἀπὸ τῆς θερινῆς δύσεως, ὅντινα καλοῦσιν οἱ μὲν Ὀλυμπίαν, οἱ δὲ [r]Ἰάπυγα. Ζέφυρος δὲ ἀπὸ [s]ἰσημερινῆς. Καὶ τῶν [t]βορείων, ἰδίως [v]ὁ μὲν [τῶν] ἑξῆς τῷ Καικίᾳ καλεῖται· [u]Βορέας δὲ καὶ Ἀπαρκτίας διὸ ἐφεξῆς [[x]αὐτῶν καθεξῆς] ἀπὸ τοῦ πόλου p. 75.

[d] ῥέοντες] ῥέοντος V.

[e] κολπῶν] πολλῶν V. A. E. P.

[f] ἀνάλογον ἐπέχουσιν] ἕνα λόγον ἐπέχουσιν V. A. E. ἀνάλογόν τι ἔχουσιν Heeren. cum Aristot.

[g] Ante ἐκ add. οἱ V. A.

[h] ἐκνεφίαι] ἐκνεφεῖαι A.

[i] ἀθροόυ rescripsi pro ἄρθρου ap. Cant. A. In Arist. leg. ἐκραγέντος ἀθρόως. HEEREN.

[k] συνεχεῖς om. Heeren. Tum λέγονται A. pro κέκληνται.

[l] Pro δυσμῶν ap. Arist. exstat δύσεως; qui in proximis quoque pro νότιοι ἀπ., rectius forte habet νότιοι, οἱ ἀπὸ μ. HEEREN.

[m] Ἀπαρκτίας] Arist. καικίας.

[n] ἑσπερινὰς] θερινὰς V. A. E.

[o] ῥέων] Arist. πνέων.

[p] Ex Aristot. supplendum et rescribendum: Ἀπηλιώτης δὲ ὁ ἀπὸ τοῦ περὶ τὰς ἰσημερινάς, Εὖρος δὲ, ὁ ἀπὸ τοῦ περὶ τὰς χειμερινάς. HEEREN.

[q] Ἀργέστης] ἀργέτης V. A. E.

[r] Ἰάπυγα] ἴπυγα A.

[s] Ante ἰσημερ. add. τῆς V. A. E.

ib. Adduntur hic ap. Arist. verba: λὶψ δὲ, ὁ ἀπὸ τῆς χειμερινῆς. HEEREN.

[t] Pro βορείων in ed. Arist. male exstat βορέων. Mox τῶν quod uncis inclusi deest ap. Arist. atque omnino apud nostrum delendum videtur. HEEREN.

[v] ὁ μὲν] οἱ μὲν V. A. E.

[u] Arist. ὁ μὲν ἑξῆς τῷ καικίᾳ, καλεῖται βορέας· Ἀπαρκτίας δὲ, ὁ ἐφεξῆς ἀπὸ τοῦ πόλου κατὰ τὸ μεσημβρινὸν πνέων. HEEREN.

[x] Verba αὐτῶν καθεξῆς vel corrupta vel omnino delenda sunt. Habet Apuleius, *qui septem stellarum regione generatur*, unde τῶν ἕπτα ἀστέρων, vel πλειάδων, vel tale quid in iis latere, suspicari possis. HEEREN.

κατὰ τὸ μεσημβρινόν. [y]Θρασκίας δὲ, ὁ ἑξῆς τῷ Ἀργέστῃ, ὃν ἔνιοι Καικίαν καλοῦσι. Καὶ τῶν μὲν [z]νότων ὁ μὲν ἀπὸ
[672] τοῦ ἀφανοῦς πόλου φερόμενος, ἀντίπαλος τῷ ἀπαρκτίᾳ, καλεῖται Νότος· Εὐρόνοτος δὲ ὁ μεταξὺ [a]τούτου καὶ Εὔρου. [b]Τὸν δὲ ἐπὶ θάτερα μεταξὺ Λιβός τε καὶ Νότου, οἱ μὲν Λιβόνοτον, οἱ δὲ Λιβοφοίνικα καλοῦσι. Τῶν δὲ ἀνέμων οἱ μέν εἰσιν εὐθύπνοοι, ὁπόσοι [c]διεκθέουσι πρόσω κατ' εὐθεῖαν· οἱ δέ [d]εἰσιν [h]ἀνακαμψίπνοοι, καθάπερ ὁ Καικίας λεγόμενος. Καὶ οἱ μὲν χειμῶνος, καθάπερ οἱ [i]νότοι, δυναστεύοντες, οἱ δὲ θέρους, ὡς οἱ ἐτήσιαι λεγόμενοι, μίξιν ἔχοντες τῶν τε ἀπὸ [k]τῆς Ἄρκτου φερομένων, καὶ Ζεφύρων. Οἱ δὲ Ὀρνιθίαι καλούμενοι, [l]ἐάρινοί τινες ὄντες ἄνεμοι, βόρειοί εἰσι τῷ γένει. Τῶν γε μὴν βιαίων πνευμάτων, [m]καταιγὶς μέν ἐστι πνεῦμα βίᾳ καὶ ἄνω προσαλλόμενον· λαίλαψ δὲ καὶ στρόβιλος, πνεῦμα εἱλούμενον ἄνω καὶ κάτω· ἀναφύσημα δὲ, πνεῦμα γῆς ἄνω φερόμενον κατὰ τὴν ἐκ βυθοῦ τινὸς ἢ ῥήγματος ἀνάδοσιν· ὅταν δὲ [n]πολὺ φέρηται εἰ-

[y] Θρακίας] Θρασκίας V. A.
[z] ὄντων] νότων A. E.
[a] τούτου] Arist. νότου.
[b] Τὸν flagitante sensu rescripsi pro τό. HEEREN. το sine acc. A. Mox λιβὸς δὲ A.
[c] διεκθύουσι] διεκθέουσι V. A. E. P. διεκπνέουσι Arist. πρόσω om. Heeren.
[d] εἰσὶν deest Arist. qui in proximis pro καθάπερ habet ὥσπερ. HEEREN.
[h] ἀνακαμψίπνοοι] –πνοι V. A. E.
[i] νότοι] νότιοι A. et mox ἐτήσιοι.
[k] τῆς] τοῦ A.
[l] ἐάρινοί τινες ὄντες] Sic Arist. εἰσὶν οἱ πνέοντες Cant. οἶσιν οἱ π. A.
[m] καταιγὶς edidi ex Arist. pro corrupto κατὰ γῆς ap. Stob. Ceterum apud nostrum omnis h. l. fere mutilus videtur; plenius enim legitur ap. Arist. Καταιγὶς μέν ἐστι πνεῦμα ἄνωθεν τύπτον ἐξαιφνῆς· θύελλα δὲ, πνεῦμα βίαιον, καὶ ἄφνω προσαλλόμενον· Λαίλαψ δὲ καὶ στρόβιλος, πνεῦμα εἱλούμενον κάτωθεν ἄνω. Attamen recte dubitari potest, num verba θύελλα δὲ, etc. ab ipso scriptore, vel potius a glossatoris manu profecta sint. Insignem sane lectionis varietatem jam antiquitus in Aristotelis codd. obtinuisse, patet vel ex Apuleio, qui in versione nec Aristotelis nec Stobæi lectiones accurate expressit. HEEREN.
[n] πολὺ φέρηται εἱλούμενον ex Arist. revocavi pro πολὺς φ. εἱλούμενος. Pendet enim a πνεῦμα. Vestigia veræ lect. servavit quoque cod. A. qui habet εἰλούμενον. HEEREN.

[674] λούμενον, πρηστὴρ χθόνιός ἐστιν. [o]Εἰληθὲν δὲ πνεῦμα ἐν
νέφει [p]παχεῖ τε καὶ [q]νοτίῳ, καὶ [r]ἐξωσθὲν δι' αὐτοῦ βιαίως
τὸ πίλημα τοῦ νέφους βρόμον καὶ παταγὸν [s]μέγαν ἀπειρ-
γάσατο, βροντὴν λεγόμενον, ὥσπερ ἐν ὕδατι πνεῦμα σφοδρῶς
ἐλαυνόμενον. Κατὰ δὲ τὴν τοῦ νέφους ἔκρηξιν πυρωθὲν τὸ
πνεῦμα καὶ λάμψαν, ἀστραπὴ λέγεται, ὃ δὴ πρότερον τῆς
βροντῆς [t]προσέπεσεν, ὕστερον γενόμενον, ἐπεὶ τὸ ἀκουστὸν
ὑπὸ τοῦ ὁρατοῦ πέφυκε φθάνεσθαι· τοῦ μὲν καὶ πόρρωθεν
δηλουμένου, τοῦ δὲ ἐπειδὰν ἐμπελάσῃ τῇ ἀκοῇ, καὶ ὅταν
τὸ μὲν τάχιστον ᾖ τῶν ὄντων, [u]λέγω [x]δὲ τὸ πυρῶδες, τὸ δὲ
ἧττον ταχὺ τὸ ἀερῶδες, ἐν τῇ πλήξει πρὸς ἀκοὴν ἀφικνού-
μενον. Τὸ δὲ ἀστράψαν, ἀναπυρωθὲν βιαίως, [y]καὶ ἄχρι
τῆς γῆς διεκθέον, κεραυνὸς καλεῖται· ἐὰν δὲ ἡμίπυρον ᾖ,
[z]σφόδρον ἄλλως, καὶ ἀθρόον, πρηστήρ· ἐὰν δὲ [a]ἄπυρον
[676] [b]παντελῶς, τυφών. Ἕκαστον δὲ τούτων [c]κατασκῆψαν εἰς
γῆν, σκηπτὸς ὀνομάζεται. Τῶν δὲ κεραυνῶν οἱ μὲν αἰθα-
λώδεις, ψολόεντες λέγονται· οἱ δὲ ταχέως διάττοντες, ἀρ-
γῆτες· ἑλικίαι δέ, [d]οἱ γραμματοειδῶς φερόμενοι· σκηπτοὶ
δὲ ὅσοι κατασκήπτουσιν εἴς τι. Συλλήβδην δὲ τῶν ἐν ἀέρι
φαντασμάτων τὰ μέν ἐστι κατ' ἔμφασιν, [[e]τὰ δὲ καθ'

o Εἰληφὲν] εἰληθὲν Aristot.

p πάχειτε] παχύτε V. καὶ om. A.

q νοτίῳ] νοτερῷ Aristot.

r ἔξωθεν] ἐξωσθὲν V. A. ἔξωθεν δι' αὐτοῦ ῥηγνύον βιαίως τὰ συνεχῆ πιλήματα τ. ν. Arist.

s ἀπειργάσατο μέγαν] μέγαν ἀπειργάσατο A.

t προσὲν] προσέπεσεν V. A.

u Mutile Cant.: λέγω δὴ τὸ πυρῶδες ἐν τῇ πλήξει πρὸς ἀκοὴν ἀφικνούμενον. Verba τὸ δὲ ἧττον ταχὺ τὸ ἀερῶδες supplevi ex codd. V. A. E. Pro τὸ ἀερῶδες Arist. ἀερῶδες ὄν. HEEREN.

x δὴ] δὲ V. δη A. sine acc. Post πυρῶδες add. τὸ δὲ ἧττον ταχὺ τὸ ἀερῶδες ἐν τῇ πλῆξει etc. V. A.

y καὶ deest Arist.

z σφοδρὸν] σφοδρὸς A.
ib. Arist. σφόδρα δὲ ἄλλως etc.

a Post ἄπυρον Arist. ᾖ.

b παντελῶς] παντελὸς A.

c κάτω σκῆψαν] κατασκῆψαν A. E.

d οἱ γραμματοειδῶς] ἡ γραμματο- $\overset{\text{ως}}{\text{ειδεῖς}}$ (sic) A. γραμμοειδῶς Arist.

e Verba τὰ δὲ καθ' ὑπόστασιν· κατ' ἔμφασιν μὲν ἶρις quæ ob homoioteleuton ap. Stob. exciderant, supplevi ex Arist. HEEREN.

ὑπόστασιν. Κατ᾽ ἔμφασιν μὲν] [f]ἶρίς τε καὶ ῥάβδοι, καὶ ἁπλῶς τὰ τοιαῦτα, καθ᾽ ὑπόστασιν δὲ [g]σέλα τε διάττοντα καὶ κομῆται, καὶ τὰ τούτοις παραπλήσια. [h]Ἶρις μὲν οὖν ἐστιν ἔμφασις ἡλίου τμήματος ἢ σελήνης ἐν νέφει νοτερῷ καὶ κοίλῳ καὶ συνεχεῖ πρὸς φαντασίαν, ὡς ἐν κατόπτρῳ θεωρουμένη κατὰ κύκλου περιφάνειαν. [i]Ῥάβδος δὲ ἴριδος ἔμφασις εὐθεῖα· [k]ἅλως δ᾽ ἐστὶν ἔμφασις λαμπρότητος ἄστρου, περὶ κύτος διαφέρουσα τῇ ἰδιότητι, (ὅτι) ἡ μὲν ἶρις
[678] ἐξ ἐναντίας φαίνεται ἡλίου τε καὶ σελήνης, ἡ δ᾽ [l]ἅλως [m]κύκλῳ παντὸς [n]ἄστρου. Σέλας δέ ἐστι πυρὸς ἀθρόου ἔξαψις ἐν ἀέρι. Τῶν δὲ σελῶν [o]τὰ μὲν ἀκοντίζεται, τὰ δὲ στηρίζεται. Ὁ μὲν οὖν ἐξακοντισμός ἐστι πυρὸς γένεσις ἐκ παρατρίψεως ἐν ἀέρι φερομένου ταχέως, καὶ φαντασίαν [p]μήκους καταφαίνοντος διὰ τὸ τάχος· ὁ δὲ στηριγμὸς χωρὶς φορᾶς προμήκης [q]ἔκτασις, καὶ οἱονεὶ ἄστρου ῥύσις. p. 76.
Πλατυνομένη δὲ κατὰ θάτερον, κομήτης καλεῖται. Πολλάκις δὲ τῶν σελῶν τὰ μὲν ἐπιμένει πλείονα χρόνον, τὰ δὲ παραχρῆμα σβέννυται. Πολλαὶ δὲ καὶ ἄλλαι [r]φασμάτων ἰδέαι θεωροῦνται, λαμπάδες τε καλούμεναι καὶ δοκίδες, [s]καὶ πωγωνίαι καὶ βόθυνοι, κατὰ τὴν πρὸς ταῦτα [t]ὁμοιό-

f ἔρις δε] ἶρις τε A.

g σέλατα] σέλα τε V. A. E.

h Corrupte ac nullo prorsus sensu habet Cant. ἶρις—τμήματι γῆς μόνης ἐν στενότητι, καὶ κοίλῳ etc. Idem codd. V. A. E. nisi quod pro στενότητι habent στενοτέρῳ, [στενωτέρῳ A.] quo vera lectio ἐν νοτέρῳ confirmatur. Reliqua ex Arist. emendare non dubitavi. HEEREN.

i Ῥάβδος—ἔμφασις] ῥάβδον—ἔμφασιν A. Supra περιφέρειαν Arist.

k Longe aliter hic Arist. ἅλως —ἄστρου περίαυγος· διαφέρει δὲ ἴριδος ὅτι etc. ὅτι, quod ob præcedentis verbi terminationem exciderat, revocavi ex Arist. HEEREN.

l ἅλως] ἄλλως A.

m κύκλῳ edidi ex Arist. pro κύκλου ap. Cant. HEEREN.

n ἄστρου] ἀστείου V. A.

o ταὶ μὲν ἀκοντίζονται· ὁ μὲν] τὰ μὲν ἀκοντίζεται, [ἀκοντίζονται A.] τὰ δὲ στηρίζεται. Ὁ μὲν etc. V. A. P.

p μήκους] Sic Heeren. ex Aristot. ubi ἐμφαίνοντος. μὴ Cant. A.

q ἔκτασις] ἔντασις V. ἔντασιν A. E.

r φασμάτων] φαντασμάτων Arist.

s Pro καὶ πωγωνίαι Arist. καὶ πίθοι.

t ὁμοιότητα] σιμοΐτητα A.

τητα ὧδε προσαγορευθεῖσαι. Καὶ τὰ μὲν τούτων ἑσπέρια, τὰ δὲ ἑῷα, τὰ δὲ [u]ἀμφιφανῆ θεωρεῖται· σπανίως δὲ καὶ βόρεια καὶ νότια. [x]Πάντα δὲ ἀβέβαια. Οὔτε γάρ ποτέ τι [y]τούτων ἀεὶ φανερὸν [z]ἱστορεῖται κατεστηριγμένον.

[680] Τὰ μὲν τοίνυν ἀέρια τοιαῦτα· ἐμπεριέχει δὲ καὶ ἡ γῆ πολλὰς ἐν ἑαυτῇ καθάπερ ὕδατος, οὕτως δὲ καὶ πνεύματος καὶ πυρὸς πηγάς· τούτων δὲ αἱ μὲν ὑπὸ γῆν εἰσὶν ἀόρατοι, πολλαὶ δὲ ἀναπνοὰς ἔχουσι, καὶ ἀναφυσήσεις, ὥσπερ Λίπαρά τε καὶ Αἴτνη, καὶ [a]Αἰόλου νῆσοι· [b]αἱ δ' ἐκρέουσι πολλάκις ποταμοῦ δίκην, καὶ [c]μύδρους ἀναρριπτοῦσι διαπύρους. Ἔνιαι δὲ ὑπὸ γῆν οὖσαι πλησίον [d]πηγαὶ ὑδάτων θερμαίνουσι ταῦτα· καὶ τὰ μὲν χλιαρὰ τῶν ναμάτων ἀνιᾶσι, τὰ δὲ ὑπέρζεστα, τὰ δὲ [e]εὖ ἔχοντα κράσεως. Ὁμοίως δὲ καὶ τῶν πνευμάτων πολλὰ πολλαχοῦ γῆς [f]στόμια ἀνέῳκται. Καὶ [g]τὰ μὲν ἐνθουσιᾶν ποιεῖ τοὺς [h]ἐμπελάζοντας, τὰ δὲ χρησμῳδεῖν, ὥσπερ τὰ ἐν Δελφοῖς καὶ τὰ ἐν Λεβαδείᾳ, τὰ δὲ καὶ παντάπασιν ἀναιρεῖ, [i]καθάπερ τὰ ἐν Φρυγίᾳ. Πολλάκις δὲ καὶ συγγενές τι
[682] πνεῦμα εὔκρατον ἐν γῇ [k]παρεξωσθὲν εἰς μυχίους [l]σήραγγας αὐτῆς, ἔξεδρον γενόμενον ἐκ τῶν οἰκείων τόπων, πολλὰ μέρη

[u] ἀμφιφανῆ θεωρεῖται] ἀμφιοθανῆ θεωροῦνται A.

[x] Πάντα δὲ revocavi ex Arist. pro πάντα γάρ. HEEREN.

[y] τούτοις τ'] τούτων ἀεὶ etc. V. A. E.

[z] ἱστορεῖται κατεστηρισμένον] ἱστόρηται κατεστηριγμένον V. A. E.

[a] Αἰόλου νῆσοι] Αἰόλον νῆσος A. καὶ τὰ ἐν Αἰόλου νήσοις Arist.

[b] αἱ δ' ἐκρέουσι] αἱ δὴ καὶ ῥέουσι Arist.

[c] μυδροὺς ἐκριπτ.] μύδρους ἀναρρίπτουσι V. ἀναρριπτοῦσι A. E. P.

[d] πηγαὶ] Arist. πηγαίων.

[e] δὲ ἔχοντα] δὲ εὖ ἔχοντα V. A.

[f] στόμια] στόματα V. στόμενα A.

[g] τὰ] ταῦτα V. A.

[h] Post ἐμπελάζοντας add. Arist. τὰ δὲ ἀτροφεῖν.

[i] καθάπερ] Nescio unde Heerenius ὥσπερ.

[k] παρωθὲν] παρεξωσθὲν V. A.

[l] σήραγγας] Sic Cant. cum Arist. σύραγγας (η superscr.) A. σύραγγας V. E. σύριγγας Heeren.

[m] συνεκράδανε· πολλάκις δὲ πολὺ γενόμενον [n] ἐξωσθὲν [o] ἐν τοῖς ταύτης κοιλώμασι, καὶ ἀποκλεισθὲν [p] ἐξόδου, μετὰ βίας αὐτὴν συνετίναξε, ζητοῦν ἔξοδον αὐτῷ, καὶ ἀπειργάσατο τὸ πάθος τοῦτο, ὃ καλεῖν σεισμοὺς εἰώθαμεν. Τῶν δὲ σεισμῶν οἱ μὲν [q] εἰς τὰ πλάγια σείοντες κατ' [r] ὀξείας γωνίας, [s] ἐπικλίνται καλοῦνται· οἱ δὲ ἄνω [t] ῥιπτοῦντες καὶ κάτω κατ' ὀρθὰς γωνίας, βράσται· οἱ δὲ συνιζήσεις ποιοῦντες [u] καὶ τὰ κοῖλα, χωματίαι· οἱ δὲ χάσματα ποιοῦντες, καὶ γῆν ἀναρρηγνύντες, ῥῆκται. Τούτων δὲ οἱ μὲν καὶ [x] πνεῦμα προσαναβάλλουσιν, οἱ δὲ πέτρας, οἱ δὲ πηλὸν, οἱ δὲ πηγὰς [684] φαίνουσι, τὰς [y] πρότερον οὐκ οὔσας. [z] Τινὲς δὲ ἀνατρέπονται [a] κατὰ μίαν πρόωσιν, οὓς καλοῦσιν ὤστας· οἱ δὲ ἀναπάλλοντες, καὶ ταῖς εἰς ἑκάτερον ἐγκλίσεσι καὶ ἀναπάλσεσι διορθοῦντες ἀεὶ τὸ σειόμενον, παλματίαι λέγονται, τρόμῳ πάθος ὅμοιον ἀπεργαζόμενοι. Γίγνονται δὲ καὶ [b] μυκῆται σεισμοὶ, σείοντες τὴν γῆν μετὰ [c] βρόμου. Πολλάκις δὲ καὶ χωρὶς σεισμοῦ γίνεται μύκημα γῆς, ὅταν τὸ πνεῦμα [d] σείειν μὲν μὴ αὔταρκες ῇ, [e] εἰλούμενον δὲ ἐν αὐτῇ κόπτηται

[m] συνέδρανε] συνεκράδανε V. A. P. συνέκρανε E.

[n] Arist. ἔξωθεν, ἐγκατειλήθη τοῖς ταύτης κοιλώμασι.

[o] Verba ἐν τοῖς—ἀποκλεισθὲν des. A.

[p] ἔξοδον] ἐξόδους A.

[q] εἰς τὰ πλάγια σείοντες] τὰ om. Arist. εἰς τὰς πλαγίας ὄντες Cant. A.

ib. πλαγείας] πλαγίας A.

[r] ὀξείας] ὀξεῖαν A.

[s] ἐπικλίνται] ἐπικλῖται A.

[t] Post ῥιπτοῦντες add. καὶ κάτω κατ' ὀρθὰς γωνίας βράσται. Οἱ δὲ συνιζήσεις ποιοῦντες, καὶ τὰ κοῖλα χωματίας etc. V. A. E. P.

[u] καὶ τὰ κοῖλα, χωματίαι] Arist. εἰς τὰ κοῖλα, χασματίαι. A. χωματίας.

[x] πνεύματα] πνεῦμα V. A. E.

[y] πρότερον ex Arist. pro προτέρας ed. Heeren.

[z] Mutilate simul et corrupte hic Cant. οἵ τινες ἀποτρέπονται, καὶ ταμίαν πρόεισιν, οὓς καλοῦσιν καὶ ἀπὸ πάλσεσι διορθοῦντες ἀεὶ etc. Nec in codd. quidquam præsidii, nisi quod V. A. habent κατὰ μίαν pro καὶ ταμίαν. Reliqua supplevi et emendavi ex Arist. HEEREN.

[a] καὶ ταμίαν] κατὰ μίαν V. A. E.

[b] μυκῆται V. A. Cant. μυκητίαι Arist.

[c] βρόμου] Sic Heeren. ex Arist. pro τρόμου. τρόμον A.

[d] σείειν Heeren. ex Arist. pro σεῖον.

[e] Habet Arist. ἐνειλούμενον; non male; ἐν αὐτῇ dedi pro ἐπ' αὐτῇ

μετὰ ῥοθίου βίας· [f] συσσωματοποιεῖται δὲ τὰ σείοντα πνεύ-
ματα [g] ὑπὸ τῶν ἐν τῇ γῇ ὑγρῶν κεκραμένων. [h] Τὰ δὲ ἀνά-
λογον [i] συμπίπτει τούτοις καὶ ἐν θαλάσσῃ. Γίνονται [k] γὰρ
χάσματα θαλάττης, καὶ ἀναχωρήματα πολλάκις, καὶ
κυμάτων [l] ἐπιδρομαὶ, ποτὲ μὲν [m] ἀντανακοπὴν ἔχουσαι,
ποτὲ δὲ [n] πρόωσιν μόνην· ὥσπερ ἱστορεῖται περὶ Ἑλίκην τε
καὶ [o] Βοῦραν. Πολλάκις δὲ καὶ ἀναφυσήματα [p] γίγνεται
[686] πυρὸς ἐν τῇ θαλάσσῃ, καὶ πηγῶν ἀναβλύσεις, καὶ ποταμῶν
ἐκβολαὶ, καὶ δένδρων [q] ἐκφύσεις, ῥοαί τε καὶ δῖναι, [r] ταῖς
τῶν πνευμάτων ἀνάλογον, [s] αἱ μὲν ἐν μέσοις πελάγεσιν, αἱ
δὲ κατὰ τοὺς εὐρίπους τε καὶ πορθμούς. Πολλαί τε [t] ἀμ-
πώτεις λέγονται καὶ κυμάτων ἄρσεις συμπεριοδεύειν [u] ἀεὶ p. 77.
τῇ σελήνῃ κατά τινας ὡρισμένους καιρούς. [x] Ὡς δὲ τὸ
πᾶν εἰπεῖν, τῶν στοιχείων [y] συγκεκραμένων ἀλλήλοις ἐν ἀέρι
τε καὶ γῇ καὶ θαλάττῃ, [z] κατὰ τὸ εἰκὸς αἱ τῶν παθῶν
ὁμοιότητες συνίστανται, [a] τοῖς μὲν ἐπὶ μέρους φθορὰς καὶ
γενέσεις φέρουσαι, τὸ δὲ σύμπαν ἀγέννητόν τε καὶ ἀνώλε-
θρον φυλάττουσαι.

quod male habet Stob. HEEREN. Mox κόπτεται vulg.

f συσσωματοποιεῖται] συνσωμ. Cant. σὺν σωμ. A.

ib. Ed. Arist. συσσωματοποιεῖται δὲ τὰ εἰσιόντα πνεύματα καὶ ὑπὸ τῶν ἐν τῇ γῇ ὑγρῶν κεκρυμμένων. HEEREN.

g καὶ ὑπὸ etc.] καὶ ὑπὸ τὴν γῆν ὑγρῶν κεκραμένων A. E.

h Τὸ] τὰ A. Arist. Cant.

i συμπίπτειν] συμπίπτει V. A. E.

k γὰρ sensu postulante supplevi ex Arist. HEEREN. χάσματα γίνονται A. χάσματά τε γὰρ γίνεται Arist.

l περιδρομαὶ] ἐπιδρομαὶ V. A.

m ἀντανάκοπον] ἀντανακοπὴν V. A.

n πρόοδον] πρόωσι V. πρόεισιν A.

o Βοῦραν] βορρὰν A.

p γίγνεται] γίγνονται V. A.

q ἐκφύσεις] ἐκφύσεως (εις superscript) A.

r ταῖς, sensu postulante, supplevi ex Arist. HEEREN.

s αἱ μὲν—αἱ δὲ revocavi ex Arist. pro ἅ μὲν—ἅ δὲ ap. Cant. [A.] HEEREN.

t ἀμπώτεις] –πώτις V. A. Ante κύματ. add. καὶ V. A. E. P.

u ἀεὶ] πότε V.

x Ὡς δὲ] ὡς καὶ A.

y κεκραμ.] συγκεκραμ. A. E.

ib. συγκρεκραμένων] Arist. ἐγκεκραμένων.

z κατὰ τὸ] κατάτι A.

a τοῖς] τῆς A.

[b] Καίτοι γέ τις [c] ἐθαύμαζε, πῶς ποτε [d] ἐκ τῶν ἐναντίων ἀρχῶν συνεστηκὼς ὁ κόσμος, λέγω [e] δὲ ξηρῶν τε καὶ ὑγρῶν, ψυχρῶν τε καὶ θερμῶν, οὐ πάλαι διέφθαρται καὶ ἀπόλωλεν· ὡς κἂν εἰ πόλιν τινὲς [f] θαυμάζοιεν, ὅπως [g] διαμένοι [h] συνεστηκυῖα ἐκ τῶν ἐναντιωτάτων ἐθνῶν, πενήτων λέγω
[688] καὶ πλουσίων, [i] νέων γερόντων, ἀσθενῶν ἰσχυρῶν, πονηρῶν χρηστῶν. Ἀγνοοῦσι δὲ, ὅτι τοῦτ' ἐστι πολιτικῆς [k] ὁμονοίας τὸ θαυμασιώτατον· λέγω δὲ, [l] τὸ μίαν ἐκ πολλῶν, καὶ ὁμοίαν ἐξ ἀνομοίων ἀποτελεῖν διάθεσιν, ὑποδεχομένην πᾶσαν καὶ φύσιν καὶ [m] τύχην. Ἴσως δὲ τῶν ἐναντίων ἡ φύσις γλίχεται, καὶ ἐκ τούτων ἀποτελεῖ τὸ σύμφωνον, οὐκ ἐκ τῶν ὁμοίων, ὥσπερ ἀμέλει τὸ ἄρρεν συνήγαγε πρὸς τὸ θῆλυ, καὶ οὐχ ἑκάτερον πρὸς τὸ ὁμόφυλον, καὶ τὴν πρώτην ὁμόνοιαν διὰ τῶν ἐναντίων συνῆψεν, οὐ διὰ τῶν ὁμοίων. Ἔοικε δὲ καὶ ἡ τέχνη, τὴν φύσιν μιμουμένη, [n] τὸ αὐτὸ ποιεῖν· ζωγραφία μὲν γὰρ λευκῶν τε καὶ μελανῶν, ὠχρῶν τε καὶ ἐρυθρῶν χρωμάτων [o] ἐγκερασαμένη [p] φύσεις, τὰς εἰκόνας τοῖς προηγουμένοις ἀπετέλεσε συμφώνως, μουσικὴ δὲ ὀξεῖς [q] ἅμα καὶ βαρεῖς, μακρούς τε καὶ βραχεῖς [r] φθόγγους μίξασα ἐν διαφόροις φωναῖς, μίαν ἀπετέλεσεν ἁρμονίαν, γραμματικὴ δὲ φωνηέντων τε καὶ ἀφώνων γραμμάτων κρᾶσιν

[b] Καί τι] καί τοι A. V.
[c] ἐθαύμαζε] Arist. ἐθαύμασε.
[d] Pro ἐκ—συνεστηκὼς Arist. ed. εἰ ἐκ—συνέστηκεν.
[e] δὲ om. A.
[f] θαυμάσειεν] θαυμάζοιεν V. A.
[g] διαμένει] διαμένει A. (ο supra)
[h] συνεστηκυῖαν] συνεστηκυῖα A. ib. Arist. ed. vet. συνεστηκυῖαν ἐκ τῶν ἐναντίων ἐθνῶν.
[i] Post νέων additur καὶ in Arist. νέον A.
[k] ὁμονοίας] ἡγεμονίας V.
[l] Pro τὸ—ἀποτελεῖν in Arist. exstat ὅτι—ἀποτελεῖ, et statim ὑποδεχομένη pro ὑποδεχομένην. HEEREN.
[m] τύχην] τέχνην A.
[n] τὸ αὐτὸ] τοῦτο Arist. qui mox συμφώνως pro vulg. συμφώνους. HEEREN.
[o] ἐγκερασαμένη] ἐκκερασαμένη A.
[p] φύσεις] φύσις V. A.
[q] δὲ post ἅμα deest V. A.
[r] φθόγγους etc.] Add. φθόγγους μίξασα ἐν διαφόροις φωναῖς, μίαν ἀπετέλεσεν ἁρμονίαν, γραμματικὴ δὲ etc. V. A. E.

ποιησαμένη τὴν ὅλην τέχνην ἀπ' αὐτῶν συνεστήσατο. Αὐτὸ δὲ
[690] τοῦτ' ἦν παρὰ τῷ σκοτεινῷ [s]Ἡρακλείτῳ λεγόμενον· [t]Συνάψειας οὖλα καὶ οὐχ οὖλα, συμφερόμενον διαφερόμενον, συνᾷδον διᾷδον, ἐκ πάντων ἓν καὶ ἐξ ἑνὸς πάντα.

Οὕτως οὖν καὶ τὴν τῶν ὅλων σύστασιν, οὐρανοῦ λέγω καὶ γῆς τοῦ τε σύμπαντος κόσμου, διὰ τῆς τῶν ἐναντιωτάτων κράσεως ἀρχῶν μία διεκόσμησεν ἁρμονία· ξηρὸν γὰρ ὑγρῷ [u]ψυχρόν τε θερμῷ μιγὲν, βαρεῖ τε κοῦφον καὶ ὀρθὸν περιφερεῖ, γῆν τε πᾶσαν[x], καὶ αἰθέρα, καὶ ἥλιον, καὶ σελήνην, καὶ τὸν ὅλον οὐρανὸν ἐκόσμησε [y]μία διὰ πάντων διήκουσα δύναμις, ἐκ τῶν ἀμίκτων καὶ ἑτεροίων, ἀέρος τε [z]καὶ γῆς, καὶ πυρὸς καὶ ὕδατος [a]τὸν σύμπαντα κόσμον δημιουργήσασα, καὶ μιᾷ περιλαβοῦσα σφαίρας ἐπιφανείᾳ, τάς τε ἐναντιωτάτας ἐν αὐτῷ φύσεις ἀλλήλαις ἀναγκάσασα
[692] ὁμολογῆσαι, καὶ ἐκ τούτων μηχανησαμένη τῷ παντὶ σωτηρίαν. [b]Αἰτία δὲ ταύτης μὲν ἡ τῶν στοιχείων ὁμολογία, τῆς δὲ ὁμολογίας ἰσομοιρία, καὶ τὸ μηδὲν [c]αὐτῶν [d]πλέον ἕτερον ἑτέρου δύνασθαι, τὴν γὰρ ἴσην [e]ἀντίτασιν ἔχει τά τε βαρέα πρὸς τὰ κοῦφα, καὶ τὰ θερμὰ πρὸς τὰ θάτερα, τῆς φύσεως ἐπὶ τῶν μειζόνων διδασκούσης, ὅτι τὸ ἶσον σωστικόν

[s] Verba hæc Heracliti ap. Cant. male sic leguntur: *συλλήψειες ὅλα καὶ οὐχ ὅλα*. Codd. V. A. *συλλάψει ἐς* quo vera lectio *συνάψειας* satis indicatur. Pro *ὅλα* Ionice *οὖλα* ex Aristot. rescribendum esse, dubitari nequit. HEEREN.

[t] *συλλήψιες ὅλον*] *συλλάψει εἰς ὅλα καὶ οὐχ ὅλα* V. A. *καὶ* ante *διαφ.* deest V. A.

[u] Arist. *θερμὸν δὲ ψυχρῷ, βαρεῖ τε κοῦφον μιγὲν* etc. HEEREN.

[x] *καὶ θάλασσαν* add. Arist.

[y] *μία δὲ*] *μία ἡ* Aristot.

[z] *καὶ* ante *γῆς* deest A. V.

[a] *καὶ συμπ.*] *τὸν σύμπαντα* V. A. E.

[b] Mutilate hic legitur in Cant. et in codd. *αἰτία δὲ ταύτης ἡ τῆς ὁμολογίας ἰσομοιρία.* Supplevi locum ex Arist. Flagitant enim verba omissa non modo nexus sermonis, sed quoque sequentia: *ὅτι τὸ ἶσον σωστικόν πώς ἐστιν ὁμονοίας* etc. HEEREN.

[c] *αὐτῶν*] *αὐτῷ* A.

[d] *πλέον*] *πλεῖον* A. Cant. Tum *ἕτερον* Cant. *ἑτέρου* A. Utrumque habet Aristot.

[e] *ἀντίτασιν*] Arist. *ἀντίστασιν* qui mox om. *τε*.

πῶς ἐστιν ὁμονοίας, ἡ δὲ ὁμόνοια τοῦ πάντων [f]γεννήτορός τε καὶ περικαλλεστάτου κόσμου. Τίς γὰρ ἂν εἴη φύσις τοῦδε κρείττων; Ἣν γὰρ ἂν εἴπῃ τις μέρος ἐστὶν αὐτοῦ, τό τε καλὸν πᾶν ἐπώνυμόν ἐστι τούτου, καὶ τὸ τεταγμένον ἀπὸ τοῦ κόσμου λεγόμενον κεκοσμῆσθαι. Τί δὲ τῶν ἐπὶ μέρους δύναιτ' ἂν [g]ἐξισωθῆναι τῇ κατ' οὐρανὸν τάξει καὶ φορᾷ τῶν p. 78. ἄστρων; ἡλίου τε καὶ σελήνης κινουμένων ἐν ἀκριβεστάτοις μέτροις ἐξ αἰῶνος εἰς ἕτερον αἰῶνα. Τίς δὲ γένοιτ' ἂν [h]ἀψεύδεια τοιάδε, [i]ἥν τινα φυλάττουσιν αἱ καλαὶ καὶ γόνιμοι τῶν ὅλων ὧραι, θέρη τε καὶ χειμῶνας ἐπάγουσαι τεταγμένως, ἡμέρας τε καὶ νυκτὰς εἰς μηνὸς ἀποτέλεσμα καὶ ἐνιαυτοῦ; Καὶ μὴν μεγέθει μὲν οὗτος [k]ἀνυπέρτατος, [694] κινήσει δὲ ὀξύτατος, [l]λαμπρότητι δὲ τηλαυγέστατος, δυνάμει δὲ ἀγήρως καὶ ἄφθαρτος. Οὗτος ἐναλίων ζώων καὶ πεζῶν καὶ ἀερίων φύσεις ἐχώρισε, καὶ βίους ἐμέτρησε ταῖς αὐτοῦ κινήσεσι. Ἐκ τούτου πάντα [m]ἐμπνεῖται καὶ ψυχὴν ἴσχει τὰ ζῶα. Ἐκ τούτου καὶ αἱ παράδοξοι νεοχμώσεις τεταγμένως ἀποτελοῦνται, [n]συνταραττόντων μὲν ἀνέμων παντοίων, πιπτόντων δὲ ἐξ οὐρανοῦ κεραυνῶν, [o]ῥηγνυμένων τε χειμώνων ἐξαισίων[p]. Διὰ δὲ τούτων [q]τὸ νοτερὸν ἐκπιεζόμενον τό τε πυρῶδες διαπνεόμενον εἰς ὁμόνοιαν ἄγει τὸ πᾶν καὶ καθίστησιν. Ἥ τε γῆ φυτοῖς κομῶσα [[r]κοσμηθεῖσα]

[f] Arist. γενητῆρος, omisso sequenti τε. In ed. Heeren. γενέτορος.

[g] ἐξιλωθῆναι] ἐξισωθῆναι V. A. E. Mox ἐν om. A. Cant.

[h] αὖ εὐδεία] ἀψευδεία V. A. E.

[i] ἥν τινα] τινα addidit Heerenius tacite ex Aristot.

[k] ἀνυπέρτατος] ἀνυπέρθετος V. A. E. πανυπέρτατος Arist.

[l] λαμπρότητα] λαμπρότητι V. A.

[m] ἐμπνεῖται] ἐκπνεῖ τε Arist. ed. vet. ἐμπνεῖται duo mss.

[n] συνταραττόντων] Arist. συναραττόντων.

[o] ῥηγνυμένων χ. ἐξαιδίων] ῥηγουμένων τε χειμώνων ἐξεσίων A.

[p] Διὰ δὲ] Sic Arist. διά τι A. διά τε Cant. Mox τὸ νοτερὸν Arist.

[q] νώτερον] τονώτερον V. A.

[r] [κοσμηθεῖσα,] quod nil nisi glossema τοῦ κομῶσα redolet, deest in ed. Arist. adeoque a me uncinis inclusum est. HEEREN.

παντοδαποῖς, νάμασί τε [s]περιβρύουσα καὶ [t]περιοχουμένη ζώοις, κατὰ καιρὸν ἐκφύουσά τε πάντα καὶ τρέφουσα [u]καὶ δεχομένη, μυρίας φέρουσα ἰδέας καὶ [x]πόας, τὴν ἀγήρω φύσιν ὁμοίως τηρεῖ, καίτοι [γῆ] καὶ σεισμοῖς τινασσομένη, καὶ πλημμύραις ἐπικλυζομένη, [y]πυρκαϊαῖς τε [z]καθ' ἡμέραν φλογιζομένη. [a]Πάντα δὲ ἔοικεν αὐτῇ πρὸς ἀγαθοῦ γινό-
[696] μενα τὴν δι' αἰῶνος σωτηρίαν παρέχειν. Σειομένης τε γὰρ [b]διεξάττουσιν αἱ τῶν πνευμάτων παρεμπτώσεις, [c]κατὰ τὰ ῥήγματα τὰς ἀναπνοὰς ἴσχουσαι, καθὼς ἄνω λέλεκται, [d]καθαιρομένη τε ὄμβροις ἀποκλύζεται [e]πάντα τὰ νοσώδη, περιπνεομένη δὲ αὔραις τά τε [f]ὑπ' αὐτὴν καὶ τὰ ὑπὲρ αὐτὴν [g]εἰλικρινεῖται. Καὶ μὴν αἱ [h]φλόγες μὲν τὸ παγετῶδες πιαίνουσιν, οἱ [i]πάγοι δὲ τὰς φλόγας ἀνιᾶσι. Καὶ τῶν ἐπὶ μέρους, τὰ μὲν γίνεται, τὰ δὲ ἀκμάζει, τὰ δὲ φθείρεται. Καὶ αἱ μὲν γενέσεις [k]ἀνασηκοῦσι τὰς φθορὰς, αἱ φθοραὶ δὲ κουφίζουσι τὰς γενέσεις. Μία δὲ ἐκ πάντων [l]περαινομένη σωτηρία διὰ τέλους, [m]ἀντιπαρισταμένων ἀλλήλοις, [n]καὶ τὸ μὲν περικρατοῦν τὸ δὲ περικρατούμενον, φυλάττει τὸ σύμπαν ἄφθαρτον δι' αἰῶνος.

[s] περιβρύουσα] Arist. περιβλύζουσα.

[t] περιοχουμένη] –χουμένον A.

[u] Verba καὶ δεχομένη μυρίας φέρουσα desunt V.

[x] πόας] Arist. πάθη.

[y] πυρκαιαῖς τε καθ' ἡμέραν φλογιζομένη om. A.

[z] καθ' ἡμέραν] κατὰ μέρος Aristot.

[a] Πάντα δὲ ἔοικεν] Arist. ταῦτα δὲ πάντα ἔοικεν.

[b] ἐξάττουσιν ἀέντων] διεξάττουσιν αἱ τῶν etc. V. A. E.

[c] κατὰ] κατὰ τὰ Heeren. ex Arist. tacite.

[d] Καθαιρομένη—περιπνεομένη] καθαιρομένης περιπνεομένης Aristot.

[e] Post πάντα add. τὰ A.

[f] ὑπ' αὐτῆς—ὑπὲρ αὐτὴν] ὑπ' αὐτὴν—ὑπὲρ αὐτὴν Aristot. ὑπ' αὐτὴν—ὑπὲρ αὐτῆς Heeren.

[g] εἰλικρινεῖται] εἰλικρινεῖ τε A.

[h] φλόγες] φλόγαις A. V.

[i] πάγοι] πάγει A.

[k] ἀνασηκοῦσι] ἐπαναστέλλουσι Arist.

[l] περαινομένη σωτηρία δὲ διατέλους] περαινομένη σωτηρία δὲ διὰ τέλους A. π. σ. διατελεῖ Arist. ed. vet.

[m] ἀντιπαρισταμένων] Arist. ἀντιπεριϊσταμένων.

[n] Arist. καὶ τότε μὲν κρατούντων, τότε δὲ κρατουμένων φυλάττει etc.

Κεφ. λε΄.

[698] ΠΕΡΙ ΦΥΣΕΩΣ ΚΑΙ ΤΩΝ ΕΞ ΑΥΤΗΣ ΣΥΜΒΑΙΝΟΝΤΩΝ ΑΙΤΙΩΝ.

1 Ἑρμοῦ ἐκ τοῦ πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 4.]

A. Ἐγὼ, ὦ τέκνον, καὶ τῆς φιλανθρωπίας ἕνεκα καὶ τῆς πρὸς τὸν θεὸν εὐσεβείας, πρῶτον [a] τόδε συγγράφω. Οὐδεμία γὰρ ἂν γένοιτο δικαιοτάτη εὐσέβεια, ἢ [b] τὸ νοῆσαι τὰ ὄντα, καὶ χάριν τῷ ποιήσαντι ὑπὲρ τούτων ὁμολογῆσαι, ὅπερ διατελῶν οὐ παύσομαι.

T. Τί οὖν ἄν τις πράττων, ὦ πάτερ, εἰ [c] μηδέν ἐστιν ἀληθὲς ἐνθάδε, καλῶς [d] διαγάγοι τὸν βίον;

A. Εὐσέβει, ὦ τέκνον. Ὁ δὲ εὐσεβῶν ἄκρως [e] φιλοσοφήσει· χωρὶς γὰρ φιλοσοφίας ἄκρως εὐσεβῆσαι ἀδύνατον· ὁ δὲ μαθὼν οἷά ἐστι καὶ πῶς διατέτακται, καὶ ὑπό τινος, καὶ ἕνεκεν τίνος, [f] χάριν εἴσεται ὑπὲρ πάντων τῷ δημιουργῷ, ὡς πατρὶ ἀγαθῷ καὶ τροφεῖ χρηστῷ καὶ ἐπιτρόπῳ πιστῷ· ὁ δὲ χάριν ὁμολογῶν εὐσεβήσει· ὁ δὲ εὐσεβῶν [g] εἴσεται καὶ ποῦ ἐστιν ἡ ἀλήθεια, καὶ τίς ἐστιν ἐκείνη· καὶ μαθὼν ἔτι
[700] μᾶλλον εὐσεβέστερος ἔσται. Οὐδέποτε γὰρ, ὦ τέκνον, ψυχὴ ἐν σώματι οὖσα καὶ κουφίσασα ἑαυτὴν ἐπὶ τὴν κατάληψιν τοῦ ὄντος ἀγαθοῦ καὶ ἀληθοῦς ὀλισθῆσαι δύναται ἐπὶ τὸ ἐναντίον· δεινὸν γὰρ ἔρωτα ἴσχει καὶ λήθην πάντων p. 79.

1.

[a] τόδε] τόγε A. τάδε Heeren. Tum σὔγγραφο A.

[b] τὸ νοῆσαι edidi pro τοῦ νοῆσαι, quod ferri nequit cum ἢ præcesserit. Vertit Cant. *nulla verior esse potest, quam* etc. qui voluisse videtur, δικαιοτέρη—τοῦ νοῆσαι· omisso ἢ. HEEREN. δικαιωτέρα—ἢ τὸ Patrit.

[c] μὴ δὲ] μηδὲν V. A.

[d] διαγάγοι dedi pro διαγάγει. HEEREN. καὶ ὡς A. pro καλῶς.

[e] φιλοσοφεῖ] φιλοσοφήσει V. A. E.

[f] Post χάριν add. ἕπεται ὑπὲρ πάντων τῷ δημιουργῷ, ὡς etc. V. A. in ἕπεται latet εἴσεται.

[g] ἴσεται] εἴσεται V. A. E.

τῶν κακῶν ψυχὴ μαθοῦσα ἑαυτῆς τὸν προπάτορα, καὶ οὐκ ἔτι ἀποστῆναι [h] τοῦ ἀγαθοῦ δύναται. Τό τε, τέκνον, τοῦτο εὐσεβείας ἔστω τέλος, ἐφ' ὃ ἀφικνούμενος καὶ καλῶς βιώσῃ, καὶ εὐδαιμόνως [i] τεθνήξῃ, τῆς ψυχῆς σου μὴ ἀγνοούσης ποῦ αὐτὴν [k] δεῖ ἀναπτῆναι. Αὕτη γὰρ μόνη ἐστὶν, ὦ τέκνον, ἡ πρὸς ἀλήθειαν ὁδὸς, ἣν [l] καὶ οἱ ἡμέτεροι πρόγονοι ὥδευσαν, καὶ ὁδεύσαντες ἔτυχον τοῦ ἀγαθοῦ. Σεμνὴ αὕτη ὁδὸς καὶ λεία, [m] χαλεπὴ δὲ ψυχῇ ὁδεῦσαι ἐν σώματι οὔσῃ. Πρῶτον μὲν γὰρ αὐτὴν [n] ἑαυτῇ πολεμῆσαι δεῖ, καὶ διάστασιν μεγάλην ποιῆσαι, καὶ ὑπὸ τοῦ ἑνὸς μέρους πλεονεκτηθῆναι. Ἑνὸς γὰρ γίγνεται πρὸς δύο ἡ [o] στάσις, τοῦ μὲν [p] φυγόντος, τῶν δὲ καθελκόντων κάτω. Καὶ ἔρις καὶ μαχὴ πολλὴ πρὸς ἄλληλα τούτων γίγνεται, τοῦ μὲν φυγεῖν βουλομένου, τῶν δὲ κατασχεῖν σπευδόντων. Ἡ δὲ νίκη ἀμφο-
[702] τέρων οὐχ ὁμοία· τὸ μὲν γὰρ [q] πρὸς τὸ ἀγαθὸν σπεύδει, τὰ δὲ πρὸς τὰ κακὰ κατοικεῖ· καὶ τὸ μὲν ἐλευθερωθῆναι ποθεῖ, [r] τὰ δὲ τὴν δουλείαν ἀγαπᾷ. Κἂν μὲν νικηθῇ τὰ δύο μέρη, μεμένηκεν [s] ἑαυτῶν ἔρημα καὶ τοῦ ἄρχοντος, ἐὰν δὲ τὸ ἓν ἡττηθῇ, ὑπὸ τῶν δύο ἄγεται καὶ φέρεται [t] τιμωρούμενον τῇ ἐνθάδε διαίτῃ. Οὗτός ἐστιν, ὦ τέκνον, ὁ τῆς ἐκεῖσε ὁδοῦ ἀγωγός· δεῖ γάρ σε, ὦ τέκνον, πρῶτον τὸ σῶμα πρὸ τοῦ τέλους [u] ἐγκαταλεῖψαι, καὶ νικῆσαι τὸν ἐναγώνιον βίον, καὶ νικήσαντα οὕτως ἀνελθεῖν. Νῦν δὲ, ὦ τέκνον, κεφαλαίοις

h τοῦ ἀγαθοῦ δύναται] δύναται τοῦ ἀγαθοῦ A.

i τεθνήξῃ] τεθνήξει A.

k δεῖ] δὴ A.

l καὶ ante οἱ deest V. A. ὥδευσαν, καὶ deest V.

m χαλεπὸν] χαλεπὴ V. A.

n ἑαυτοῦ] ἑαυτῇ V. ἑαυτῇ A.

o σύστασις] στάσις V.

p Post φυγόντος add. τῶν δὲ καθελκόντων κάτω. Καὶ ἔρις καὶ μάχη πολλὴ πρὸς ἄλληλα τούτων γίγνεται. Τοῦ μὲν φυγεῖν βουλομένου, τῶν δὲ κατάσχειν etc. V. A. E.

q πρὸς] παρὰ V. A.

r τὸ δὲ] τὰ δὲ V. A.

s ἑαυτῶν edidi pro ἑαυτῷ. HEEREN.

t τιμωρούμενον] τιμωρουμένη V. A.

u ἐγκαταλῆψαι] –λεῖψαι V. A. E.

τὰ ὄντα διεξελεύσομαι· νοήσεις γὰρ τὰ λεγόμενα μεμνημένος ὧν ἤκουσας. Πάντα τὰ ὄντα κινεῖται· μόνον τὸ μὴ ὂν ἀκίνητον. Πᾶν σῶμα μεταβλητὸν, οὐ πᾶν σῶμα διαλυτόν· ἔνια τῶν σωμάτων διαλυτά. Οὐ πᾶν ζῶον θνητὸν, οὐ πᾶν ζῶον ἀθάνατον. Τὸ [x] διαλυτὸν φθαρτὸν, τὸ μένον ἀμετάβλητον, [y] τὸ ἀμετάβλητον ἀΐδιον. [z] Τὸ ἀεὶ γιγνόμενον ἀεὶ καὶ φθείρεται, τὸ δὲ ἅπαξ γιγνόμενον οὐδέποτε [704] φθείρεται, οὐδὲ ἄλλο τι γίγνεται. Πρῶτον ὁ θεὸς, δεύτερον ὁ κόσμος, τρίτον ὁ ἄνθρωπος. Ὁ κόσμος διὰ τὸν ἄνθρωπον, ὁ δὲ ἄνθρωπος διὰ τὸν θεόν. Ψυχῆς τὸ μὲν αἰσθητὸν θνητὸν, τὸ δὲ λογικὸν ἀθάνατον. Πᾶσα οὐσία ἀθάνατος, πᾶσα οὐσία [a] μεταβλητή. Πᾶν [b] τὸ ὂν διττὸν, [c] οὐδὲν τῶν ὄντων ἕστηκεν. Οὐ πάντα ψυχῇ κινεῖται, πᾶν δὲ [d] ὂν ψυχὴ κινεῖ. Πᾶν τὸ πάσχον αἴσθεται, πᾶν τὸ [e] αἰσθόμενον πάσχει. Πᾶν τὸ λυπούμενον καὶ ἥδεται, ζῶον θνητὸν, οὐ πᾶν τὸ [f] ἡδόμενον λυπεῖται, ζῶον ἀΐδιον. Οὐ πᾶν σῶμα νοσεῖ· πᾶν σῶμα νοσοῦν διαλυτόν. Ὁ νοῦς ἐν τῷ θεῷ, ὁ λογισμὸς ἐν τῷ ἀνθρώπῳ. [g] Ὁ λογισμὸς ἐν τῷ νοῒ, ὁ νοῦς ἀπαθής. Οὐδὲν ἐν σώματι ἀληθὲς, ἐν ἀσωμάτῳ τὸ πᾶν ἀψευδές. [h] Πᾶν τὸ γενόμενον μεταβλητὸν, οὐ πᾶν τὸ γενόμενον φθαρτόν. Οὐδὲν ἀγαθὸν ἐπὶ τῆς γῆς, οὐδὲν κακὸν ἐν τῷ οὐρανῷ. [i] Ὁ θεὸς ἀγαθὸς, ὁ ἄνθρωπος κακός. Τὸ ἀγαθὸν ἑκούσιον, τὸ κακὸν ἀκούσιον. Οἱ θεοὶ τὰ ἀγαθὰ αἱροῦνται ὡς ἀγαθά.

[x] διαλυτὸν] τὸ διαλυτὸν A.
[y] τὸ ἀμετάβλητον deest V. A.
[z] δὲ τὸ] δὲ om. A.
[a] Pro μεταβλητὴ sensus postulare videtur ἀμετάβλητος. HEEREN. οὐ μεταβλητὴ Patrit.
[b] τὸ ὂν] τὸ ἓν A.
[c] οὐδὲ] οὐδὲν V.
[d] ὂν ψυχῇ κινεῖται] ὂν ψύχη κινεῖ V. A. E.
[e] αἰσθόμενον] αἰσθανόμενον V.
[f] εἰδόμενον] ἡδόμενον V. A.
[g] Verba Ὁ λογισμ. ἐν τῷ νοῒ om. A. ὁ λόγος Patrit. Mox οὐδὲ A. et infra ἀψευδὲς.
[h] Post πᾶν τὸ γενόμενον add. μεταβλητόν. Οὐ πᾶν τὸ γενόμενον φθαρτὸν V. A.
[i] Ὁ θεὸς] Ὁ δὲ θεὸς V. A.

[k]Ἡ εὐνομία [l]μεγάλου, εὐνομία· ἡ εὐνομία ὁ νόμος. [m]Θεῖος
[706] χρόνος, νόμος ἀνθρώπινος. Κακία κόσμου [n]τροφὴ, χρόνος
ἀνθρώπου φθορά. Πᾶν ἐν οὐρανῷ ἀμετάθετον, πᾶν τὸ ἐπὶ
γῆς μετάθετον. Οὐδὲν ἐν οὐρανῷ δοῦλον, οὐδὲν ἐπὶ γῆς
ἐλεύθερον. Οὐδὲν ἄγνωστον ἐν οὐρανῷ, οὐδὲν γνώριμον ἐπὶ
τῆς γῆς. Οὐ κοινωνεῖ τὰ ἐπὶ γῆς τοῖς ἐν οὐρανῷ· [o]πάντα
τὰ ἐν οὐρανῷ ἄμωμα, πάντα τὰ ἐπὶ γῆς ἐπίμωμα. Τὸ
ἀθάνατον οὐ θνητὸν, τὸ θνητὸν οὐκ ἀθάνατον. Τὸ σπαρὲν οὐ
πάντως γεννητὸν, τὸ δὲ γεννητὸν πάντως καὶ σπαρέν. Δια-
λυτοῦ σώματος δύο χρόνοι· ὁ ἀπὸ τῆς σπορᾶς μέχρι τῆς p. 80.
γενέσεως, καὶ ὁ ἀπὸ τῆς γενέσεως μέχρι τοῦ [p]θανάτου· τοῦ
ἀϊδίου σώματος χρόνος ἐκ τῆς γενέσεως μόνος. Τὰ διαλυτὰ
σώματα αὔξεται καὶ μειοῦται. Ἡ διαλυτὴ ὕλη εἰς τὰ
ἐναντία [q]ἐναλλοιοῦται, φθορὰν καὶ γένεσιν· ἡ δὲ ἀΐδιος ἢ
εἰς [r]αὐτὴν, ἢ εἰς τὰ ὅμοια. Γένεσις ἀνθρώπου φθορὰ, φθορὰ
ἀνθρώπου γενέσεως ἀρχή. [s]Τὸ ἀπογιγνόμενον . . . καὶ
ἀπογίγνεται. Τῶν ὄντων τὰ μὲν ἐν σώμασίν εἰσι, τὰ δὲ
ἐν [t]ἰδέαις, τὰ δὲ [u]ἐνεργείαις· σῶμα δὲ ἐν ἰδέαις, ἰδέα δὲ
καὶ ἐνέργεια ἐν σώματί ἐστι. Τὸ ἀθάνατον οὐ μετέχει τοῦ
θνητοῦ, τὸ δὲ θνητὸν τοῦ ἀθανάτου μετέχει. Τὸ [x]μὲν θνητὸν
[708] εἰς ἀθάνατον σῶμα οὐκ ἔρχεται, τὸ δὲ ἀθάνατον εἰς θνητὸν
παραγίγνεται. Αἱ ἐνέργειαι οὐκ εἰσιν ἀνωφερεῖς, ἀλλὰ

k Forte scripsit auctor: Ἡ εὐνομία μετὰ τοῦ θείου, ἡ ἀνομία ἀνθρώπινος. HEEREN.

l μεγάλου] μεγάλη V. A. E.

m Θεῖον] θεῖος V. A. E. P.

n τροφὴ] τρυφὴ V. A. E. P.

o πάντα ἐν] πάντα τὰ ἐν V. A.

p ἀθανάτου] θανάτου V. A. E.

q ἐναλλοιοῦνται] –οῦται V. A. E.

r αὐτὴν] αὐτὸν V.

s Supplendum duco: Τὸ ἀπογιγνόμενον καὶ ἐπιγίγνεται, τὸ δὲ ἐπιγιγνόμενον καὶ ἀπογίγνεται. *Ortum ex interitu, interitumque iterum ex ortu æterna vicissitudine oriri.* HEEREN.

t ἰδέαις] ἰδίαις V. ἰδέαις A.

u ἐνεργείας] ἐνεργείαις add. σῶμα δὲ ἐν ἰδέαις, ἰδέα [ἰδίαις ἰδία A.] δὲ καὶ ἐνέργεια ἐν σώματί ἐστιν etc. V. A. E. P. In A. E. ἰδίαις et ἴδια.

x δὲ θνητ.] μὲν θνητὸν V. A. E.

κατωφερεῖς. Οὐδὲν [y] ὠφελεῖ τὰ ἐπὶ γῆς τὰ ἐν οὐρανῷ, πάντα ὠφελεῖ τὰ [z] ἐπὶ γῆς τὰ ἐν οὐρανῷ. Ὁ οὐρανὸς σωμάτων ἀϊδίων δεκτικὸς, ἡ γῆ σωμάτων [a] φθαρτικῶν δεκτική. Ἡ γῆ [b] ἄλογος, ὁ οὐρανὸς [c] λογικός. [d] Τὰ ἐν οὐρανῷ ὑπόκειται, τὰ ἐπὶ [e] γῆς τῇ γῇ ἐπίκειται. Ὁ οὐρανὸς πρῶτον [f] στοιχεῖον, ἡ γῆ ὕστατον στοιχεῖον. Πρόνοια θεία τάξις, ἀνάγκη προνοίᾳ [g] ὑπηρέτις. Τύχη [h] φορὰ ἀτάκτου, ἐνεργείας εἴδωλον, δόξα ψευδής. [i] Τί θεός; ἄτρεπτον ἀγαθόν· τί ἄνθρωπος; ἄτρεπτον κακόν.

Τούτων τῶν κεφαλαίων μεμνημένος, καὶ ὧν σοι διὰ πλειόνων λόγων [k] διεξῆλθον [l] εὐθέως ἀναμνησθήσῃ· ταῦτα γὰρ [m] ἐκείνων εἰσὶ περιοχαί. Τὰς μέντοι πρὸς τοὺς πολλοὺς ὁμιλίας παραιτοῦ· φθονεῖν μὲν γάρ σε οὐ βούλομαι, μᾶλλον δὲ ὅτι πολλοῖς [n] δόξεις καταγέλαστος εἶναι. Τὸ γὰρ ὅμοιον πρὸς τὸ ὅμοιον παραλαμβάνεται, ἀνόμοιος δὲ ἀνο-
[710] μοίῳ οὐδέποτε φίλος. Οὗτοι δὲ οἱ λόγοι ὀλίγους παντελῶς τοὺς ἀκροατὰς ἔχουσιν, ἢ τάχα οὐδὲ τοὺς ὀλίγους [o] ἕξουσιν. Ἔχουσι δέ τι καὶ ἴδιον ἐν ἑαυτοῖς, [p] τοὺς γὰρ κακοὺς μᾶλλον παροξύνουσι πρὸς τὴν κακίαν. Διὸ χρὴ τοὺς πολλοὺς φυλάττεσθαι, μὴ [q] νοοῦντας τῶν λεγομένων τὴν ἀρετήν.

T. Πῶς εἶπας, ὦ πάτερ;

A. Οὕτως, ὦ τέκνον. Πᾶν τὸ ζῶον τῶν ἀνθρώπων ἐπιρ-

[y] ὠφελεῖ τὰ] ὠφελεῖται A.

[z] Post ἐπὶ γῆς add. τὰ ἐν οὐρανῷ. Ὁ οὐρανὸς etc. V. A. P.

[a] φθαρτῶν] φθαρτικῶν V.

[b] ἄλογος] ἄλὄγος A.

[c] λογικὸς] λοξὸς V. A.

[d] Vix hæc sanum sensum præbent! Legendum duco: Τῷ οὐρανῷ ὑπόκειται τὰ ἐπὶ γῆς, τῇ γῇ ἐπίκειται ὁ οὐρανός. Ὁ οὐρανὸς πρῶτον etc. Certe alterum ὁ οὐρανὸς facile omitti potuit. HEEREN.

[e] γῆς] τῆς V.

[f] Post στοιχεῖον add. ἡ γῆ ὕστατον στοιχεῖον V. A. P.

[g] ὑπηρέτης A.

[h] φθορὰ] φορὰ V. A. E.

[i] Τί θεὸς] τὶ ὁ θεὸς V. τὸ θεὸς A.

[k] ἐξῆλθον] διεξῆλθον V. A.

[l] εὐκόλως] εὐθέως V. A. E.

[m] ἐκείνων] ἐκεῖνον A.

[n] δόξης] δόξεις V. A.

[o] ἄξουσι] ἕξουσιν V. A. E.

[p] τοὺς γὰρ] Heerenius γὰρ tacite addidit de suo.

[q] νοοῦντας] –τες A.

ρεπέστερόν ἐστιν εἰς τὴν κακίαν, καὶ ταύτῃ σύντροφον γίγνεται, διὸ καὶ ἥδεται αὐτῇ. Τοῦτο δὲ τὸ ζῶον, ἐὰν μάθῃ ὅτι γεννητὸς ὁ κόσμος καὶ πάντα κατὰ πρόνοιαν καὶ [r] ἀνάγκῃ γίγνεται, εἱμαρμένης πάντων ἀρχούσης, οὐ [s] πολλῷ ἑαυτοῦ χεῖρον ἔσται, καταφρονῆσαν μὲν τοῦ παντὸς ὡς γεννητοῦ, τὰς δὲ αἰτίας τοῦ κακοῦ τῇ εἱμαρμένῃ [t] ἀναφέρον, οὐκ ἀφέξεταί ποτε παντὸς ἔργου κακοῦ. Διὸ φυλακτέον αὐτοὺς ὅπως ἐν ἀγνοίᾳ ὄντες ἔλαττον ὦσι κακοὶ φόβῳ τοῦ ἀδήλου.

2 Ἐκ τοῦ Ἀρχύτου Περὶ Ἀρχῶν.

Ἀνάγκα καὶ δύο ἀρχὰς [a] ἦμεν τῶν ὄντων, μίαν μὲν, τὰν
[712] συστοιχείαν ἔχουσαν τῶν τεταγμένων καὶ ὁριστῶν, ἑτέραν δὲ τὰν συστοιχείαν ἔχουσαν τῶν ἀτάκτων καὶ ἀορίστων. Καὶ [aa] τὰν μὲν ῥητὰν καὶ λόγον ἔχουσαν καὶ τὰ ἐόντα ὁμοίως συνέχειν, καὶ [b] τὰ μὴ ἐόντα ὁρίζειν καὶ συντάσσειν· πλατιάζουσαν γὰρ ἀεὶ τοῖς γινομένοις εὐλόγως καὶ [c] εὐρυθμῶς [d] ἀνάγκῃ ταῦτα καὶ τὸ [e] καθ' ὅλω οὐσίας τε καὶ [f] ἰδέας μεταδίδομεν· τὰν δ' ἄλογον καὶ ἄρρητον καὶ τὰ συντεταγμένα λυμαίνεσθαι, καὶ τὰ [g] ἐς γένεσιν δὲ καὶ ὠσίαν παραγινόμενα διαλύειν· [h] πλατιάζουσαν γὰρ ἀεὶ τοῖς πράγμασιν ἐξομοιοῦν [i] αὔταυτα. Ἀλλ' ἐπείπερ ἀρχαὶ δύο κατὰ γένος ἀντιδιαιρούμεναι τὰ πράγματα τυγχάνοντι,

[r] ἀνάγκην] –κη A. E.

[s] πολλῷ] πολλῶ (ῦ) A.

ib. πολλῷ scil. χρόνῳ. *Non diu.*— Καταφρονῆσαν et mox ἀναφέρον, quod nexus sermonis flagitat, et Cant. jam in versione expressit, dedi pro καταφρονῆσαι et ἀναφέρειν. HEEREN. Mox ἡμαρμένη A.

[t] ἀναφέρειν] ἀναφέρων V. A.

2.

[a] εἶμεν] Sic A. et infra sæpe. ἡ μὲν V. Mox συστοιχεῖαν A. et infra συστοιχίαν.

[aa] τὰν] τὰ A.

[b] τὰ μὲν ὄντα] τὰ μὴ ἐόντα V. A.

[c] ἀριθμῶς] ἀρ̈ιθμῶς A. εὐρυθμῶς Canter. in marg.

[d] ἀνάγειν] ἀνάγκη V. A.

[e] καθ' ὅλω ὠσίας] καθόλου (ω) οὐσίας A.

[f] εἴδεος] ἰδέας μεταδιδῶμεν V. ἡδ̈έας μεταδιδῶμεν A. E.

[g] ἐκ] ἐς V. A. Tum τε Heeren. pro δέ.

[h] πλατιαζ.] πλατυάζουσαν V.

[i] αὖ ταῦτα] In his latet αὔταυτα. Heeren. ed. αὐτᾷ ταῦτα.

τῷ τὰν μὲν [k] εἶναι ἀγαθοποιὸν, [l] τὰν δ' ἦμεν κακοποιὸν,
ἀνάγκα [m] καὶ δύο λόγους ἦμεν, τὸν μὲν ἕνα τᾶς ἀγαθο- p. 81.
ποιῶ [n] φύσιος, τὸν δ' ἕνα τᾶς [o] κακοποιῶ. Διὰ τοῦτο καὶ
[p] τὰ τέχνᾳ καὶ τὰ φύσει γινόμενα δύο τούτων [q] πρᾶτον
μετείληφεν, τᾶς [r] τε μορφῶ καὶ τᾶς οὐσίας. Καὶ ἁ μὲν
μορφὼ [s] ἐστιν αἰτία [t] τοῦ τόδε τι ἦμεν· ἁ δὲ ὠσία [u] τὸ ὑπο-
[714] κείμενον, [x] παραδεχόμενον τὰν μορφώ. Οὔτε δὲ τᾷ ὠσίᾳ
οἷόν τέ ἐστι μορφᾶς μετεῖμεν [y] αὐτᾷ ἐξ αὐτᾶς, οὔτε μὰν
τὰν μορφὼ γενέσθαι περὶ τὰν ὠσίαν, [z] ἀλλ' ἀναγκαῖον ἑτέραν
τινὰ ἦμεν αἰτίαν, τὰν κινάσοισαν [a] τὰν ἐστὼ τῶν πραγμά-
των ἐπὶ τὰν μορφώ· [b] ταύταν δὲ τὰν πράταν [c] τᾷ δυνάμει
καὶ καθυπερτάταν ἦμεν τᾶν ἀλλᾶν· ὀνομάζεσθαι δ' [d] αὐτὰν
[e] ποθήκει [f] θεόν· ὥστε τρεῖς ἀρχὰς ἦμεν ἤδη, τόν τε θεὸν, καὶ
τὰν ἐστὼ τῶν πραγμάτων, καὶ τὰν μορφώ. Καὶ τὸν μὲν
θεὸν τεχνίταν καὶ τὸν κινέοντα, τὰν δ' [g] ἐστὼ τὰν ὕλαν καὶ

k ἦμεν] Sic Heeren. εἶναι A. Cant.

l Verba τὰν δ' ἦμεν κακοποιὸν desunt V. τάδ' εἶμεν A. E.

m δὲ δύο λόγος] καὶ δύο λόγους εἶμεν V. A.

n φύσεως] φύσιος V. A.

o κακοποιῶ] κακοποιοῦν V. A.

p τὰ] τῷ A.

q πρῶτον] πρᾶτον V. A.

r τε] γε V.

s ἐστιν αἴτια] ἔστι δ' αἴτια V. A.

t τοῦ τόδε τι ἦμεν, *ut id quod existit ad certam speciem pertineat;* sic edidi pro τοῦτο δέ τι εἶμεν, quod Cant. [et A.] nullo sensu vulgavit. HEEREN.

u τὸ ὑποκείμενον] τόποκείμενον A.

x παραδεχόμενον] ὑποδεχόμενον Heeren. nescio unde.

y αὐτᾷ quod ex οὐσίᾳ pendet, edidi pro αὐτά. HEEREN. ἀυτὰ ἐξ-αὐτῆς (α superscr.) A

z Corrupte exstat ap. Cant. ἀλλ' ἀναγκαιοτέραν τ. εἶμεν αἰτ. τ. κινάσοισαν ἀνεστώτων πραγμάτων etc. In quibus primo ἀναγκαῖον ἑτέραν satis certa, ut puto, conjectura ductus, dedi pro ἀναγκαιοτέραν. In sequentibus vero τὰν ἐστὼ τῶν exhibent codd. V. A. pro ἀνεστώτων. Dicitur nempe ἡ ἐστὼ, ut sequentia docent, pro ἡ οὐσία. HEEREN. τὰν ἐστὼ τῶν dedit Canter. in marg. τὰν ἑστώτων V. A. E.

a ἀνεστώτων] τὰν ἐστώτων V. A.

b Legitur in priori ed. ut in codd. ταῦτα δὲ, τὰν πράταν τᾷ δυνάμει κ. καθ. εἶμεν τὰν ἄλλαν. Rescripsi ea quæ sensus simul nexusque sermonisque postulat. HEEREN. καθυπερτάτων A.

c τῷ δυν.] τᾷ δυνάμει V. A.

d αὐτὰν dedi pro αὐτὰ, refertur enim ad αἰτίαν. HEEREN.

e ποθήκα] ποθήκει V. A.

f θεὸν] θεῶν A.

g ἔστω τὰν] ἑστώταν V. E. ἐστώταν A.

[h]τὸ κινεόμενον, τὰν δὲ μορφὼ τὰν τέχναν καὶ [i]πόθ' ἂν κινέεται [k]ὑπὸ τῶ κινέοντος [l]ἁ ἐστώ. Ἀλλ' ἐπεὶ τὸ κινεόμενον ἐναντίας ἑαυτῷ [m]δυνάμεις [n]ἴσχει τὰς τῶν ἁπλῶν σωμάτων, τὰ δ' ἐναντία [o]συναρμογᾶς τινος δεῖται καὶ [p]ἑνώσιος, ἀνάγκη ἀριθμῶν [q]δυνάμιας καὶ ἀναλογίας καὶ τὰ ἐν ἀριθμοῖς καὶ [r]γεωμετρικοῖς δεικνύμενα [s]παραλαμβάνειν, ἃ καὶ [t]συναρμόσαι καὶ ἑνῶσαι τὰ ἐναντιώτατα [u]δυνασεῖται τὰν ἐστὼ τῶν πραγμάτων ποττὰν μορφώ. Καθ' αὑτὰν μὲν γὰρ [x]ἔσσα ἁ ἐστὼ ἄμορφός ἐστι, κιναθεῖσα δὲ ποτὶ τὰν
[716] μορφὼ ἔμμορφος γίνεται καὶ λόγον [y]ἔχουσα τὸν τᾶς συντάξιος. [z]Ὁμοίως δὲ καὶ τὸ [a]δυσκινέεται τὸ κινεόμενόν ἐστι τὸ [b]πράτως κινέον· ὥστ' ἀνάγκα τρεῖς ἦμεν τὰς ἀρχάς, τάν τε [c]ἐστὼ τῶν πραγμάτων, καὶ τὰν μορφὼ, καὶ τὸ [d]ἐξ

h τὸν κινούμενον] τὸ κινεόμενον Heeren.

i ποθὲν] ποθ' ἂν *ad quam* Koën. Gregor. de Dial. p. 194. ed. sec.

k ὑπὸ τὸ κ. ἐ. etc.] ὑπὸ τῶ κινέοντος δὲ ἔστω V. A.

l ἁ, quod ægre desideratur, omittit Cant.—Codd. V. A. δὲ ἐστὼ, in quo si τὸ ἕ, male bis scriptum librarii oscitantia, deleveris, articulum dorica forma latere, patet. HEEREN.

m δυνάμεις] δυνάμιας Heeren.

n ἴσχει] ἔχει A. E.

o συναρμογᾶς τινὸς] –μογὰς τινὰς A.

p ἑνώσιος] ἐνώδιος V. A.

q δυνάμιας] δυναμένας V. δυνάμεας A.

r γεωμέτροις] γεωμετροις sine acc. A. γεωμετρικοῖς Heeren.

s παραλαμβάνει] –βάνειν V. A.

t συναρμόσαι καὶ ἑνῶσαι τᾷ δυνάσει τε ἐν τὰ ἐστὼ τῶν π. π. μ.] συναρμόσαι καὶ ἑνῶσαι τὰ ἐναντιώτατα τᾷ δυνάμει (τῶ δυνάσει A.) τε ἐν τῷ ἐστώτων πραγμάτων ποτὰν μορφὼ V. A.

u δυνασεῖται τὰν ἐστὼ τ. π. ποττὰν Koen. ad Gregor. p. 277. pro δυνάσει τε τὰ ἐ. τ. π. ποτάν. Similiter Valckenær. Eurip. Hippol. 370.

x ἔσσα] ἔασσα Heeren.

y ἔχουσα] ἔχοισα Heeren. Mox τῆς συντάξϊως A.

z Corrupte legitur in priori ed. ὁμοίως δὲ καὶ τὸ δισκιάνεται τὸ κινεόμενον ἐστι τὸ πρᾶτος κινεόν. Edidi pro insulsis hisce nugis ea quæ codd. V. A. servarunt. Attamen horum quoque sensum obscurum manere, non diffiteor. Neque enim quid sit τὸ δυσκινέετον, neque quis omnino sensus verbis subesse possit, facile explicaveris. HEEREN.

a δισκινέεται] δυσκινέετον V. δὶς κινίεται A.

b πρᾶτος] πράτως V. A.

c ἔστω τῶν] ἐστώτων V. A.

d ἐξ αὐτῶ facili conjectura edidi pro ἐξ αὐτῶν. HEEREN.

αὐτῶ κινατικὸν καὶ ἀόρατον [e]τᾷ δυνάμει. Τὸ δὲ [f]τοιοῦτον [g]οὐ νόον μόνον ἦμεν δεῖ, ἀλλὰ καὶ νόω τι κρέσσον· νόω δὲ κρέσσον ἐστὶν, ὅπερ ὀνομάζομεν θεὸν [h]φανερῶς. [i]Ὁ μὲν ὧν τῶ ἴσω λόγος περὶ τὰν ῥητὰν καὶ λόγον ἔχοισαν φύσιν ἐστίν· ὁ δὲ τῶ ἀνίσω περὶ [k]τὰν ἄλογον καὶ ἄρρητον· [l]αὐτὰ δ' ἐστὶ ἁ ἐστὼ, καὶ διὰ τοῦτο γένεσις καὶ φθορὰ γίνεται περὶ ταύταν, καὶ οὐκ ἄνευ ταύτας.

Ἐκ τῶν Πορφυρίου πρὸς τὰ νοητὰ Ἀφορμῶν.

Τὰ κατηγορούμενα τοῦ αἰσθητοῦ καὶ ἐνύλου ἀληθῶς ἐστὶ ταῦτα, τὸ πάντῃ εἶναι διαπεφορημένον, τὸ μεταβλητὸν εἶναι, τὸ ὑφεστάναι ἐν ἑτερότητι, τὸ σύνθετον εἶναι, τὸ [a]καθ' αὑτὸ αὐτὸ ὑπάρχειν, τὸ ἐν τόπῳ [b]τὸ ἐν ὄγκῳ θεωρεῖσθαι, καὶ [718] [c]ὅσα τούτοις παραπλήσια· τοῦ δὲ ὄντως ὄντος καὶ καθ' αὑτὸ ὑφεστηκότος αὐτοῦ, τὸ εἶναι ἀεὶ ἐν ἑαυτῷ ἱδρυμένον· ὡσαύτως τὸ κατὰ ταυτὰ ἔχειν, τὸ ἐν [d]ταυτότητι οὐσιῶσθαι, τὸ ἀμετάβλητον εἶναι κατ' οὐσίαν, τὸ ἀσύνθετον, τὸ μήτε λυτὸν μήτε ἐν [e]τόπῳ εἶναι, μήτε εἰς ὄγκον διαπεφορεῖσθαι, τὸ μήτε γιγνόμενον μήτε ἀπολλύμενον εἶναι, καὶ ὅσα τοιαῦτα, ὧν ἐχομένους δεῖ μηδὲν [f]ἐπαλλάττοντας περὶ τῆς διαφόρου

[e] Ante δυνάμει add. τᾷ V. τὰ A. E.

[f] τοιοῦτον] τοιοῦτο A.

[g] ὄνομον] οὐ νόον V. A. E.

[h] φανερῶς] φανερὸν Cant.

[i] Ὁ μὲν ὧν] ὧν addidit Heeren.

[k] τὰν ἄλογον] τὰς ἄλογον V. A.

[l] αὐτὰ δ' ἐστὶ δ' ἔστω] αὐτὰ δ' ἔτι δ' ἔστω V. A.

3.

Legitur h. l. in Opusculis Porphyrii ab Holstenio Romæ 1630. editis p. 78. ex Stobæi codd. descriptus. HEEREN. Sect. 33. p. 234. ed. Cantab.

[a] καθ' ἑαυτὸ] καθ' αὑτὸ αὐτὸ V. A. P. ἑαυτὸ οὐχ Heeren.

[b] τὸ ἐν—παραπλήσια om. A.

[c] ὅσα edidi pro θέα quod nullo sensu in codd. Stob. et ap. Cant. legitur. Nullam enim fere videbis esse mutationem, si utramque vocem litteris majusculis scripseris. Holsten. edidit οἷα. HEEREN.

[d] αὐτότητι] ταυτότητι V. A.

[e] Post τόπῳ εἶναι add. κατ' οὐσίαν V.

[f] μηδὲ ἐπ' ἄλλον τᾶς] Codd. V. A. E. una voce ἐπάλλοντας, ex quo veram ut puto lectionem refinxi, μηδὲν ἐπαλλάττοντας *nihil mutando*, i. e. *firmiter constantes*. HEEREN.

αὐτῶν φύσεως καὶ αὐτοὺς λέγειν, καὶ ἄλλων λεγόντων ὑπακούειν.

4 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἄμμωνα. [Patrit. p. 40.]

Ἡ ψυχὴ τοίνυν οὐσία ἐστὶν ἀσώματος, καὶ ἐν σώματι
δὲ οὖσα οὐκ ἐκβαίνει τῆς [a]ἰδίας οὐσιότητος. Τυγχάνει γὰρ
οὖσα [b]ἀεικίνητος κατ' οὐσίαν, [c]κατὰ νόησιν αὐτοκίνητος, οὐκ
ἔν τινι κινουμένη, οὐ πρός τι, οὐ ἕνεκέν τινος· προτερεῖ γὰρ τῇ
δυνάμει, τὸ δὲ πρότερον οὐ δεῖται τῶν ὑστέρων. Τὸ ἔν τινι
[720] τοίνυν ἐστὶν ὁ τόπος καὶ χρόνος καὶ φύσις, τὸ δὲ πρός τι
ἐστὶν ἁρμονία καὶ εἶδος καὶ σχῆμα, τὸ δὲ οὗ [d]ἕνεκα τὸ σῶμα·
ἕνεκα γὰρ σώματος καὶ χρόνος καὶ τόπος καὶ φύσις.
Ταῦτα δὲ κατὰ συγγενικὴν οἰκειότητα κοινωνεῖ ἀλλήλοις.
Ἐπεὶ τοίνυν τὸ σῶμα ἐδεῖτο τόπου, ἀμήχανον γὰρ ἦν συ-
στῆναι σῶμα ἄνευ τόπου, καὶ μεταβάλλεται [e]φύσει,
ἀδύνατον δὲ μεταβολὴν εἶναι ἄνευ χρόνου καὶ τῆς κατὰ
φύσιν κινήσεως, οὔτε σώματος οἷόν τε σύστασιν εἶναι ἄνευ p. 82.
ἁρμονίας. Ἕνεκα τοίνυν τοῦ σώματός [f]ἐστιν ὁ τόπος· παρα-
δεχόμενος γὰρ τὰς τοῦ σώματος μεταβολὰς οὐκ ἐᾷ ἀπόλ-
λυσθαι τὸ μεταβαλλόμενον· μεταβαλλόμενον δὲ ἀφ' ἑτέρου
εἰς ἕτερον μεταπίπτει, καὶ τῆς μὲν ἕξεως στερίσκεται, τοῦ
δ' εἶναι σῶμα οὐχί[g]· μεταβληθὲν δὲ εἰς ἕτερον τὴν τοῦ
ἑτέρου [h]ἕξιν ἔχει. Τὸ γὰρ σῶμα, [i]ᾗ σῶμα, μένει σῶμα·

4.

[a] ἰδίου] ἰδίας A. Supra οὐκ om. Heeren.

[b] ἀκίνητος] ἀεὶ κινητὴς V. ἀεικίνητος A.

[c] καὶ ante κατὰ deest V. A. Mox οὗ ἕνεκεν A.

[d] οὗ ἕνεκα etc.] οὗ ἕνεκα, τὸ σῶμα. Ἕνεκα γὰρ σώματος etc. V. A. P.

[e] φύσει, *natura sua*, edidi pro φυσικῇ ap. Cant. ex Patrit. HEEREN. φυσικῇ A.

[f] ἐστιν—σώματος om. A.

[g] Male hic ac nullo prorsus sensu inseritur συστατόν. Ejiciendum illud esse, clare docent sequentia: Τὸ γὰρ σῶμα ᾗ σῶμα, μένει σῶμα, quibus sensus l. n. explicatur: *corporum quidem affectiones mutari, ipsam autem* οὐσίαν *manere*. Omisit illud quoque Patrit. HEEREN.

[h] ἕξιν] ἕξιν A.

[i] Post ᾗ σῶμα add. μένει σῶμα V. A. P.

ἡ δὲ ποιὰ διάθεσις οὐ μένει· τὸ σῶμα [k] τοίνυν κατὰ διάθεσιν μεταβάλλεται. Ἀσώματος τοίνυν ὁ τόπος, καὶ ὁ χρόνος, καὶ ἡ φυσικὴ κίνησις. Τυγχάνει δὲ ἕκαστον τούτων τῆς [722] ἰδίας ἰδιότητος. Ἰδιότης δὲ τοῦ τόπου [l] παραδοχὴ, χρόνου δὲ διάστημα καὶ ἀριθμὸς, φύσεως δὲ κίνησις, ἁρμονίας δὲ φιλία, σώματος δὲ μεταβολή· ἰδιότης δὲ ψυχῆς ἡ κατ' οὐσίαν νόησις.

5 Ἀρχύτου ἐκ τοῦ Περὶ [a] Ἀρχᾶς.

[b] Ἀρχὰ τᾶς τῶν ἐόντων γνώσιος [c] τὰ αὐτὰ αὐτόθεν φαινόμενα. Τῶν δ' αὐτόθεν φαινομένων τὰ μέν ἐντι [d] νοατὰ, τὰ δ' [e] αἰσθατά· νοατὰ μὲν τὰ ἀκίνητα, αἰσθατὰ δὲ τὰ κινεόμενα. Κριτήριον δὲ τῶν μὲν νοατῶν ὁ κόσμος, τῶν δ' αἰσθατῶν ἁ [f] αἴσθασις. Τῶν δὲ μὴ αὐτόθεν φαινομένων τὰ μέν ἐντι ἐπιστατὰ, τὰ δὲ δοξαστά· ἐπιστατὰ μὲν τὰ ἀκίνητα, δοξαστὰ δὲ τὰ κινεόμενα. Δεῖ δὲ ταῦτα τρία [g] νοᾶσαι, [h] τό τε κρίνον, καὶ τὸ κρινόμενον, καὶ ποθ' ὅπερ [i] κρίνεται. Καὶ τὸ μὲν κρίνον [k] εἶμεν τὸν νόον καὶ τὰν αἴσθασιν· τὸ δὲ κρινόμενον τὸν λόγον, ποθ' ὅπερ [l] δὲ κρίνεται τὸ αὐτόθεν φαινόμενον. Τούτου δὲ τὸ μὲν νοατὸν, τὸ δὲ αἰσθατόν. Ἐπικρίνει δὲ ὁ νόος τὸν λόγον, ὅκα μὲν ποτὶ [m] τὸ νοατὸν [n] ἐπιβάλλων, ὅκα δὲ ποτὶ τὸ αἰσθατόν. [o] Ὅκα μὲν γὰρ περὶ

[k] τοίνυν] οὖν ed. Heeren. tacite.

[l] παρασχῇ] παραδοχὴ V. A. E. περιοχὴ Cant. marg.

5.

[a] Ἀρχᾶς] ἀρχῶν Canteri margo.

[b] Ἀρχύτας] ἀρχὰ τᾶς Canterus in marg. ἀρχήτας A.

[c] Post τὰ add. αὐτὰ V. A. E. f. leg. αὐταυτόθεν.

[d] νοητὰ] νοατὰ sic fere semper V. A.

[e] αἰσθατὰ] αἰσθητὰ A. et sic mox.

[f] σις] αἴσθησις A. V. E. ἁ om. A.

[g] νοῆσαι] νοᾶσαι V. A.

[h] τὸ κρίνον] τό τε κρίνον V. A.

[i] κρίνεται] κρίνετε A.

[k] εἶμεν] οἱ μὲν A. et mox αἴσθησιν.

[l] καὶ κρίνεται] δὲ κρίνεται A.

[m] τὸν νοατὸν] τὸ νοατὸν A. V.

[n] ἐπιβάλλων] ἐπιβάλλον V. A.

[o] Ὅκαν μὲν etc.] ὅκα μὲν γὰρ περὶ νοατῶν μαστεύηται ὁ λόγος ποτὶ τὸ νοατὸν ποτὶ βάλλει (ποτιβαίνει P.) ὅκα δὲ περὶ αἰσθατῶν, περὶ τὸ αἰσθατὸν V. P.

ib. ὅκα—αἰσθατὸν om. A.

νοατῶν μαστεύηται ὁ λόγος, ποτὶ τὸ νοατὸν ποτιβάλλει,
[724] ὅκα δὲ περὶ αἰσθατῶν, ποτὶ τὸ αἰσθατόν. Καὶ δι' αὐτὸ [p]ψευδογραφίαι ἐν γαμετρίᾳ κατὰ σχήματα καὶ ἀριθμοὺς ἐμφαίνονται, [q]αἰτιολογίαι δὲ καὶ εἰκοτολογίαι ἐν φυσιολογίᾳ καὶ [r]πολιτικᾷ [s]κατὰ γένεσιν καὶ πράξιας. Τὸ μὲν γὰρ [t]ὅτι ἐν [u]διπλόῳ λόγῳ ἁρμονία τυγχάνει, ποτὶ [x]τὸν νοατὸν λόγον [y]ποτιβάλλων ὁ λόγος γινώσκει· τὸ δ' ὅτι συμφωνεῖ ὁ διπλόος λόγος, διὰ [z]τᾶς αἰσθάσιος ἐπιμαρτυρεῖται. Καὶ τῶν μαχανικῶν δέ τοι λόγοι ποττὰ νοητὰ ποτιβάλλονται σχήματα καὶ ἀριθμοὺς καὶ ἀναλογίας, τὰ δὲ ἀποτελέσματα ποτὶ τὰ αἰσθητά· μεθ' ὕλας γὰρ ταῦτα θεωρεῖται καὶ κινάσιος. Καθόλου δὲ ἀμάχανον γνῶμεν τὸ διά τι ἐν ἑκάστῳ, μὴ προειδότας [a]τὸ τί ἐστιν ἕκαστον. Κρίνεται δὲ [b]τὸ μὲν τί ἐντι ἕκαστον τῶν ἐόντων τῷ νόῳ· τὸ δὲ ὅτι ἔστιν, ἢ [c]ὅτι οὕτως ἔχει, λόγῳ καὶ αἰσθάσει· λόγῳ μὲν, ὅκα δεῖξιν τινὸς σαμάνωμεν [d]διὰ συλλογισμῶ, ὑπάρχοντος ἐξ ἀνάγκας· [e]αἰσθάσει δ', ὅκα ἐπιμαρτυρώμεθα τὸν λόγον διὰ τᾶς αἰσθάσιος.

6 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 44.]

[726] Τ. Ὀρθῶς ταῦτ' ἀπέδειξας, ὦ πάτερ· ἐκεῖνα δ' ἔτι με δίδαξον. [a]Ἔφης γάρ που τὴν ἐπιστήμην καὶ τὴν τέχνην

[p] ψευδογραφείαι] –φίαι V. A.

[q] αἰτιολογίαι sunt *disquisitiones de causis rerum*; περὶ τῶν αἰτίων, quæ ad physicam pertinent; εἰκοτολογίαι, *conjectationes de probabili rerum eventu*, quæ ad politicam spectant. HEEREN.

[r] πολιτικᾷ] πολιτικὰ V. A. E.

[s] κατὰ om. A.

[t] ἐστὶ] ὅτι V. E. A.

[u] διπλῷ] διπλόῳ A. V.

[x] τὸν νοατὸν λόγον] τὸ νοατὸν Heeren. tacite.

[y] ποτιβάλλων] ποτιβαλὸν V.

[z] τὰς αἰσθάσιας] τᾶς [τὰς A.] αἰσθάσιος V. A.

[a] ποῦ τι] τό τι V. A.

[b] τὸ μὲν τὸ ἕν τι ἕ. ἐ.] τὸ μὲν τὶ ἔντι ἕκαστον ἐόντων A. V. E.

[c] καὶ ὅτι] ἢ ὅτι V. A.

[d] διὰ rescripsi pro ἃ quod ap. Cant. [et A.] nullo sensu legitur. Ceterum paulo durior est verborum ordo. Nam jungendum est ὅκα δεῖξιν τινὸς ὑπάρχοντος ἐξ ἀνάγκας (i. e. ὅτι ἀναγκαίως οὕτως ὑπάρχει,) διὰ συλλογισμῶ σημάνωμεν. HEER.

[e] αἰσθάσεις] αἰσθάσει V. A. E.

6.

[a] Ἔφης] Ἔρος A.

ἐνέργειαν εἶναι τοῦ λογικοῦ· νῦν δὲ φὴς τὰ ἄλογα ζῶα στερήσει τοῦ λογικοῦ ἄλογα εἶναι καὶ κεκλῆσθαι· δηλονότι ἀνάγκη κατὰ τοῦτον τὸν λόγον τὰ ἄλογα ζῶα [b] μὴ μετέχειν ἐπιστήμης μηδὲ τέχνης διὰ τὸ ἐστερῆσθαι τοῦ λογικοῦ.

ʼΑΣΚ. ʼΑνάγκη γὰρ, ὦ τέκνον.

Τ. Πῶς οὖν ὁρῶμεν, ὦ πάτερ, τινὰ τῶν ἀλόγων [c] ἐπιστήμῃ καὶ τέχνῃ χρώμενα, οἷον τοὺς μύρμηκας τὰς τροφὰς ἀποθησαυριζομένους τοῦ χειμῶνος, καὶ τὰ ἀέρια ζῶα ὁμοίως καλιὰς ἑαυτοῖς [d] συντιθέντα, τὰ δὲ τετράποδα γνωρίζοντα τοὺς φωλεοὺς τοὺς ἰδίους.

Α. Ταῦτα, ὦ τέκνον, οὐκ [e] ἐπιστήμῃ οὐ τέχνῃ ποιεῖ, ἀλλὰ φύσει. Ἡ γὰρ ἐπιστήμη καὶ ἡ τέχνη διδακτικά εἰσι· τούτων δὲ τῶν ἀλόγων οὐδεὶς οὐδὲν διδάσκεται. Τὰ δὲ
[728] φύσει γιγνόμενα ἐνεργείᾳ μὲν γίγνεται [f] καθολικῇ. [g] Τὰ δὲ p. 83.
ἐπιστήμῃ καὶ τέχνῃ εἰδόσι παραγίγνεται, οὐ πᾶσι· τὰ δὲ πᾶσι γιγνόμενα ὑπὸ φύσεως ἐνεργεῖται. [h] Οἷον οἱ ἄνθρωποι ἄνω βλέπουσιν, οὐ πάντες δὲ ἄνθρωποι μουσικοὶ, οὐδὲ πάντες τοξόται, ἢ κυνηγοὶ, οὐδὲ τὰ ἄλλα πάντα· ἀλλά τινες αὐτῶν τι ἔμαθον, ἐπιστήμης καὶ τέχνης ἐνεργούσης. Τὸν αὐτὸν τρόπον [i] εἰ μέν τινες τῶν μυρμήκων τοῦτο ἔπραττον, οἱ δ᾽ οὔ, [k] καλῶς ἂν ἔλεγες ἐπιστήμῃ αὐτὸ τοῦτο πράττειν, καὶ τέχνῃ συνάγειν τὰς τροφάς· εἰ δὲ πάντες ὁμοίως ἄγονται ὑπὸ τῆς φύσεως ἐπὶ τοῦτο, καὶ ἄκοντες, δηλονότι οὐκ ἐπιστήμῃ [l] οὐδὲ τέχνῃ τοῦτο πράττουσιν. [m] ʼΕνέργειαι γὰρ,

[b] μὴ μετέχειν] μήτετέχειν A.
[c] ἐπιστήμην κ. τέχνη χρώμενος] ἐπιστήμῃ καὶ τέχνῃ χρώμενα V. A. E.
[d] συντεθέντα] συντεθέντας A. συντιθ. Patrit.
[e] ἐπιστήμῃ—ἡ γὰρ om. A. Mox διδακτὰ Patrit.
[f] καθεκτικῇ] καθολικὴ V. A.
[g] Τῇ δὲ ἐπιστήμῃ] ἡ δὲ ἐπιστήμη de suo Heeren. qui mox τὰ δὲ πᾶσι addidit. Melius Heeren. in notis τὰ δὲ ἐπιστήμῃ. In Patrit. τὰ δὲ φύσει γιγνόμενα ὑπὸ φ. ἐ.
[h] Post Οἷον οἱ add. οἷον οἱ ἄνθρωποι ἄνω (ἄλλοι P.) βλέπουσιν· οὐ πάντες δὲ ἄνθρωποι etc. V. A. E. οἷον πάντες οἱ ed. Heeren.
[i] οἱ μὲν] εἰ μὲν V.
[k] καλῶς] οὐδὲ καλῶς V.
[l] οὐδὲ τέχνη] καὶ τέχνῃ V.
[m] ʼΕνέργειαι] ἐνέργεια V. A.

ὦ Τὰτ, [n] ἀσώματοι [o] αὗται οὖσαι, ἐν σώμασίν εἰσιν, καὶ διὰ τῶν σωμάτων [p] ἐνεργοῦσιν. Διόπερ, ὦ Τὰτ, καθότι ἀσώματοί εἰσι, καὶ ἀθανάτους [q] αὐτὰς φὴς εἶναι· καθότι δὲ χωρὶς [r] σωμάτων ἐνεργεῖν οὐ δύνανται, φημὶ [s] αὐτὰς εἶναι ἀεὶ ἐν σώματι. Τὰ γὰρ πρός τι ἢ ἕνεκά τινος γενόμενα προνοίᾳ [t] καὶ ἀνάγκῃ ὑποπεπτωκότα [u] ἀδύνατον ἀργά ποτε μεῖναι τῆς ἰδίας ἐνεργείας. Τὸ γὰρ [x] ὂν ἀεὶ ἔσται, τοῦτο γὰρ αὐτοῦ καὶ σῶμα [y] ἐστι καὶ ζωή. Τούτῳ τῷ λόγῳ
[730] ἕπεται τὸ καὶ ἀεὶ τὰ σώματα εἶναι. [z] Διὸ καὶ αὐτὴν τὴν σωμάτωσιν φημὶ [a] ἀΐδίαν ἐνέργειαν εἶναι. [b] Εἰ γὰρ σώματα [c] ἐπίγεια διαλυτὰ, σώματα δὲ δεῖ εἶναι, τόπους καὶ ὄργανα τῶν ἐνεργειῶν [d] ταῦτα, αἱ δὲ ἐνέργειαι ἀθάνατοι, τὸ δὲ ἀθάνατον ἀεί ἐστιν, ἐνέργεια καὶ ἡ σωματοποίησις, εἴγε ἀεί ἐστι. Παρέπονται δὲ τῇ ψυχῇ οὐκ ἀθρόως παραγιγνόμεναι, ἀλλὰ τινὲς μὲν αὐτῶν ἅμα τῷ [e] γίνεσθαι τὸν ἄνθρωπον ἐνεργοῦσιν, ὁμοῦ τῇ ψυχῇ περὶ τὰ ἄλογα οὖσαι, αἱ δὲ καθαρώτεραι ἐνέργειαι κατὰ μεταβολὴν τῆς [f] ἡλικίας τῷ [g] λογικῷ μέρει τῆς ψυχῆς συνεργοῦσι. Αὗται δὲ αἱ ἐνέργειαι τῶν σωμάτων εἰσὶν ἠρτημέναι. Καὶ ἀπὸ μὲν τῶν θείων σωμάτων ἔρχονται εἰς τὰ θνητὰ αὗται αἱ σωματοποιοῦσαι, ἑκάστη δὲ αὐτῶν ἐνεργεῖ ἢ περὶ τὸ σῶμα, [h] ἢ τὴν ψυχήν. Καὶ αὐτῇ μέντοι τῇ ψυχῇ συγγίγνονται χωρὶς σώματος· ἀεὶ δὲ ἐνέργειαί εἰσιν, οὐκ ἀεὶ δὲ ἡ ψυχὴ ἐν σώματι θνητῷ ἐστι,

[n] ἀσώματοι] ἀσώματο̈ν A.
[o] ταύται] αὗται V. A.
[p] ἐνεργοῦσαι] ἐνεργοῦσιν V. A.
[q] αὐτὰς] αὐτοὺς V. A.
[r] σωμάτων] σώματος V.
[s] αὐτὰς] αὐτοὺς V. A.
[t] καὶ] ἢ ed. Heeren.
[u] ἀδύνατα] ἀδύνατον V. A.
[x] ὂν] ἐὸν V. A.
[y] ἐστι καὶ ζωὴ] καὶ ζωή ἐστι A.
[z] Διὸ—εἶναι deest ob homoiotel. V.

[a] ἀεὶ δι'] ἀΐδίαν A. V.
[b] Εἰ] εἰς V. A.
[c] ἐπίγεια] ἐπίγερα A.
[d] ταῦτα] ὄντα de suo Heeren.
[e] γενέσθαι] γίνεσθαι Heeren.
[f] ἡσυχίας] ἡλικίας — συνεργοῦσι Heeren. tanquam ex A. V. Atqui A. diserte ἡσυχίας—συνεργοῦσαι cum Cant. ἡσυχίας—συνεργοῦσιν Patrit.
[g] λόξῳ] λογικῷ V. A. E.
[h] καὶ τὴν] ἢ τὴν E. A.

[732] δύναται γὰρ χωρὶς τοῦ σώματος εἶναι, [i] αἱ δὲ ἐνέργειαι χωρὶς τῶν σωμάτων οὐ δύνανται εἶναι. Ἱερὸς λόγος ἐστὶν, ὦ τέκνον, οὗτος. Συνεστάναι μὲν σῶμα χωρὶς ψυχῆς οὐ [k] δύναται, τὸ δὲ εἶναι δύναται.

Τ. Πῶς τοῦτο λέγεις, ὦ πάτερ;

Α. Οὕτω νόησον, ὦ Τάτ· τῆς ψυχῆς χωρισθείσης τοῦ σώματος, [l] ἐπιμένει αὐτὸ τὸ σῶμα· τοῦτο δὲ τὸ σῶμα παρὰ τὸν τῆς ἐπιμονῆς [m] χρόνον ἐνεργεῖται διαλυόμενον καὶ ἀειδὲς γιγνόμενον· ταῦτα δὲ οὐ δύναται πάσχειν τὸ σῶμα χωρὶς ἐνεργείας. Ἐπιμένει οὖν τῷ σώματι ἡ ἐνέργεια αὕτη ψυχῆς χωρισθείσης. Αὕτη οὖν ἡ διαφορὰ ἀθανάτου σώματος καὶ θνητοῦ, ὅτι τὸ μὲν ἀθάνατον ἐκ μιᾶς ὕλης συνέστηκε, τὸ δὲ οὔ· καὶ τὸ μὲν ποιεῖ, τὸ δὲ πάσχει· πᾶν γὰρ τὸ ἐνεργοῦν κρατεῖ, τὸ δὲ ἐνεργούμενον κρατεῖται· καὶ τὸ μὲν [n] κρατοῦν ἐπιτακτικὸν καὶ ἐλεύθερον [o] ὂν ἄγει, τὸ δὲ δοῦλον φέρεται. Αἱ [p] μὲν οὖν ἐνέργειαι οὐ μόνον τὰ ἔμψυχα ἐνεργοῦσι σώματα, ἀλλὰ [q] καὶ τὰ ἄψυχα, ξύλα καὶ λίθους, καὶ τὰ ἄλλ' [r] ὅμοια· αὔξουσαί τε καὶ καρποφοροῦσαι, καὶ πεπαίνουσαι, καὶ φθείρουσαι, καὶ τήκουσαι, καὶ σήπουσαι, καὶ θρύπτουσαι, καὶ τὰ ὅμοια ἐνεργοῦσαι, ὅσα [s] δύναται σώματα [t] ἄψυχα πάσχειν. Ἐνέργεια γὰρ κέκληται, ὦ τέκνον,
[734] αὐτὸ τοῦτο, ὅτι ποτέ ἐστι τὸ [u] γιγνόμενον· ἀεὶ δὲ [x] γίγνεσθαι δεῖ [y] καὶ πολλὰ, μᾶλλον δὲ πάντα· οὐδέποτε γὰρ χηρεύει τῶν ὄντων τινὸς ὁ κόσμος, ἀεὶ δὲ φερόμενος ἐν

[i] αἱ δὲ—εἶναι om. A.

[k] δύνανται] δύναται V. A. Tunc add. A. τὸ δὲ εἶναι δύναται.

[l] ἐπιμένει] ἐπειμένει A.

[m] τὸν ante χρόνον deest V. A.

[n] κρατοῦν] κρατούμενον A.

[o] Addidi ὂν, quod ob terminationem vocis præcedentis exciderat. HEEREN.

[p] μὲν οὖν] οὖν addidit Heeren.

[q] καὶ τὰ ἄψυχα] ἀλλὰ κ. τ. ἄψυχα V. τοὺς ante λιθ. deest V.

[r] ὅμοια] ὅμοιαι A. E.

[s] δύναται] δύνανται V.

[t] ἄψυχα om. Heeren.

[u] γιγνόμενον] γενόμενον V. A.

[x] Post γίγνεσθαι add. δεῖ V. A. E.

[y] καὶ om. Heeren.

ἑαυτῷ [z]κυίσκει τὰ ὄντα, οὐδέποτε ἀπολειφθησόμενα [a]αὐτοῦ τῆς φθορᾶς. Πᾶσα οὖν ἐνέργεια νοείσθω, ὡς ἀεὶ ἀθάνατος p. 84. οὖσα, ἥτις [b]ἂν ᾖ ἐν οἱῳδήποτε σώματι. Τῶν δὲ ἐνεργειῶν αἱ μὲν εἰσι τῶν θείων σωμάτων, αἱ δὲ τῶν φθαρτῶν, καὶ αἱ μὲν καθολικαὶ, αἱ δὲ ἰδικαὶ, καὶ αἱ μὲν τῶν γενῶν, αἱ δὲ τῶν μερῶν ἑνὸς ἑκάστου. Θεῖαι μὲν οὖν εἰσιν, [c]αἱ εἰς τὰ [d]ἀΐδια σώματα ἐνεργοῦσαι· αὗται δὲ καὶ τέλειαί εἰσιν, ὡς εἰς τέλεια σώματα· μερικαὶ δὲ αἱ δι' ἑνὸς [e]ἑκάστου γένους τῶν ζώων· ἰδικαὶ δὲ, [f]αἱ εἰς ἕκαστον τῶν ὄντων τί. Οὗτος οὖν ὁ λόγος, ὦ τέκνον, συνάγει πάντα μεστὰ εἶναι ἐνεργειῶν. Εἰ γὰρ ἀνάγκη τὰς ἐνεργείας ἐν [g]σώμασιν εἶναι, πολλὰ δὲ σώματα ἐν κόσμῳ, πλείους φημὶ εἶναι τὰς ἐνεργείας τῶν σωμάτων. Ἐν ἑνὶ γὰρ πολλάκις σώματί ἐστι μία, καὶ δευτέρα, καὶ τρίτη, χωρὶς τῶν παρεπομένων καθολικῶν· καθολικὰς γὰρ ἐνεργείας φημὶ τὰς ὄντως σωματικὰς, διὰ δὲ τῶν αἰσθήσεων καὶ τῶν κινήσεων γινομένας· χωρὶς γὰρ τούτων τῶν ἐνεργειῶν τὸ σῶμα συστῆναι [h]οὐ δυνατόν. Ἕτεραι
[736] δέ εἰσιν ἰδικαὶ ἐνέργειαι ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνθρώπων, διὰ τεχνῶν, καὶ ἐπιστημῶν, καὶ ἐπιτηδευμάτων, καὶ ἐνεργημάτων. Παρέπονται γὰρ ταῖς ἐνεργείαις [i]αἱ αἰσθήσεις, μᾶλλον δὲ [k]ἀποτελέσματα τῶν ἐνεργειῶν αἱ [l]αἰσθήσεις εἰσί. Νόησον οὖν, ὦ τέκνον, [m]διαφορὰν ἐνεργείας [[n]καὶ

[z] κυίσκει] κυήσει V. A. E.

[a] αὐτοῦ] Rescripsi αὖθις, quo sensus restituitur. Vertit Cant. *motum suum nunquam deserentes;* qui adeo pro φθορᾶς voluisse videtur φορᾶς, non video quo jure. HEER.

[b] Post ἂν add. ᾖ V. A.

[c] καὶ εἰς] αἱ εἰς A.

[d] ἀΐδια] ἴδια A. Cant. Correxit Heeren. post Canterum tamen in marg.

[e] Post ἑκάστου add. γένους V. A. καὶ ante εἰς deest V. αἱ A.

[f] Pro αἱ Cant. et codd. male legunt καί. HEEREN.

[g] σώματι] σώμασιν V. A.

[h] ἀδύνατον] οὐ δυνατὸν V. A.

[i] καὶ] αἱ Heeren. tanquam ex V. A. E. In A. tamen καὶ legitur.

[k] ἀπὸ τέλει καύματα] ἀποτελέσματα V. A. E.

[l] αἰσθήσεις add. αἱ A. Mox οὖν deest V. A.

[m] Plenam lectionem debemus cod. P. nam Cant. ceterique codd. mutilate: διαφορὰν ἐνεργείας ἄνωθεν πέμπεται. HEEREN.

[n] καὶ—γὰρ om. A.

αἰσθήσεως· ἐνέργεια γὰρ] ἄνωθεν πέμπεται· ἡ δὲ αἴσθησις ἐν τῷ σώματι οὖσα, καὶ ἀπὸ τούτου τὴν οὐσίαν ἔχουσα, δεξαμένη τὴν ἐνέργειαν, φανερὰν ποιεῖ, καθάπερ αὐτὴν σωματοποιήσασα. Διόπερ τὰς αἰσθήσεις καὶ σωματικὰς καὶ θνητάς φημι εἶναι, [o]τοσοῦτον συνεστώσας, [p]ὅσον καὶ τὸ σῶμα. Καὶ γὰρ συγγεννῶνται τῷ σώματι αἱ [q]αἰσθήσεις καὶ συναποθνήσκουσι· τὰ δὲ ἀθάνατα σώματα αὐτὰ μὲν [r]ἀθάνατον αἴσθησιν οὐκ ἔχει, ὡς ἐξ οὐσίας τοιαύτης συνεστῶτα· ἡ γὰρ αἴσθησις οὐδ' ὅλως [s]ἄλλου ἐστὶ [[t]σωματικὴ] ἢ τοῦ προσγενομένου [u]τῷ σώματι κακοῦ ἢ τοῦ ἀγαθοῦ, ἢ τοῦ πάλιν αὖ ἀπογενομένου. Τοῖς δὲ ἀϊδίοις σώμασιν οὔτε προσγίνεται οὔτε ἀπογίνεται· διὸ αἴσθησις ἐν ἐκείνοις οὐ γίνεται.

Τ. Ἐν παντὶ οὖν σώματι [y]αἴσθησις αἰσθάνεται;

[738] Α. Ἐν παντὶ, ὦ τέκνον, καὶ [z]ἐνέργειαι πᾶσιν ἐνεργοῦσι.

Τ. Καὶ [a]τοῖς ἀψύχοις, ὦ πάτερ;

Α. Καὶ ἀψύχοις, ὦ τέκνον. Διαφοραὶ δέ εἰσι τῶν αἰσθήσεων· αἱ μὲν τῶν λογικῶν μετὰ λόγου γίγνονται, αἱ δὲ τῶν ἀλόγων [b]σωματικαί εἰσι μόνον, αἱ δὲ τῶν ἀψύχων αἰσθήσεις μέν εἰσι, παθητικαὶ δὲ, κατ' αὔξησιν [c]μόνον καὶ κατὰ μείωσιν γιγνόμεναι. Τὸ δὲ πάθος καὶ αἴσθησις ἀπὸ μιᾶς κορυφῆς ἤρτηνται, εἰς δὲ τὸ αὐτὸ συνάγονται, [d]ὑπὸ δὲ

[o] τοσούτων] τοσοῦτον V. A.
[p] ὅσον τὸ] ὅσον καὶ τὸ V. A.
[q] αἰσθήσεις add. αἱ V. A.
[r] ἀθάνατον deest V. A.
[s] ἄλλον] ἄλλου V. A. ἄλλως Patrit.
[t] [σωματικὴ] plane hic alienum ac male in contextum intrusum videtur, quare illud uncis inclusi. HEEREN.
[u] Verba τῷ—ἀγαθοῦ desunt V. A. P.
ib. Repetuntur hic ap. Cant. verba τῷ σώματι κακοῦ ἢ ἀγαθοῦ. Omittunt tamen ea codd. V. A. E. P. ἢ τοῦ π. αὖ ἀπ. om. Patrit.
[y] αἴσθησιν] αἰσθήσει A. αἴσθησις V. Heeren.
[z] ἐνέργεια] –γειαι V. A. ἐν ante πᾶσιν add. Heeren.
[a] ἐν τοῖς] ἐν om. A. Cant.
[b] σωματικοὶ] –καὶ V. A.
[c] μόνον καὶ] μόνον δὲ V. A.
[d] ὑπὸ δὲ] δὲ om. Heeren. cum Patrit.

τῶν ἐνεργειῶν[e]. Τῶν δὲ ἐμψύχων ζώων εἰσὶ δύο ἄλλαι ἐνέργειαι, αἱ παρέπονται ταῖς αἰσθήσεσι καὶ τοῖς πάθεσι, [f]λύπη καὶ χαρά· [g]καὶ χωρὶς τούτων ζῶον ἔμψυχον καὶ μάλιστα λογικὸν αἴσθεσθαι ἀδύνατον· διὸ καὶ ἰδέας ταύτας εἶναί φημι τῶν παθῶν, [h]ἰδέας τῶν λογικῶν μᾶλλον [i]ζώων ἐπικράτουσας. Αἱ [k]μὲν οὖν ἐνέργειαι ἐνεργοῦσιν, αἱ δὲ αἰσθήσεις τὰς ἐνεργείας ἀναφαίνουσιν. Αὗται δὲ οὖσαι σωματικαὶ ἀνακινοῦνται ὑπὸ τῶν τῆς ψυχῆς ἀλόγων μερῶν, διὸ καὶ ἀμφοτέρας φημὶ κακωτικὰς εἶναι. Τό τε γὰρ χαίρειν μεθ' ἡδονῆς τὴν αἴσθησιν παρέχον πολλῶν κακῶν εὐθέως αἴτιον [l]συμβαίνει τῷ παθόντι, ἥ τε λύπη ἀλγηδόνας
[740] καὶ ὀδύνας ἰσχυροτέρας παρέχεται, διόπερ εἰκότως ἀμφότεραι κακωτικαὶ ἂν [m]εἴησαν.

Τ. Ἡ [n]αὐτὴ δ' ἂν εἴη αἴσθησις [o]ψυχῆς καὶ σώματος, ὦ πάτερ;

Α. Πῶς νοεῖς, ὦ παῖ, ψυχῆς αἴσθησιν;

Τ. Οὐχ ἡ μὲν ψυχὴ ἀσώματος, ἡ δὲ αἴσθησις σῶμα ἂν εἴη, ὦ πάτερ, [p]ἡ αἴσθησις [q]ἡ ἐν σώματι οὖσα τυγχάνει;

Α. Ἐὰν ἐν σώματι αὐτὴν θῶμεν, ὦ τέκνον, ὁμοίαν τῇ ψυχῇ [r]αὐτὴν ἀποφανοῦμεν, ἢ ταῖς ἐνεργείαις. Ταῦτα γὰρ

e Ducta est imago ex Platonis Phædone Op. vol. I. p. 60. ubi Socrates dolorem ac voluptatem eodem modo inter se conjunctas esse ponit: ὥσπερ ἐκ μιᾶς κορυφῆς ἡμμένω, δύ' ὄντε. HEEREN.

f λύπη καὶ χωρὶς] λύπη καὶ χαρά χωρὶς τούτων etc. V. P. A. λύπη καὶ ἡδονὴ χ. Patrit.

g καὶ χωρὶς] καὶ om. A.

h ἰδέας τῶν] ἰδέας om. Heeren. cum Patrit.

i ζῶον ἐπικρ.] ζώων ἔτι κρατούσας V. A.

k μὲν οὖν] οὖν add. Heeren.

l συμβαίνει τῷ πάθοντι sensu jubente restitui pro συμβαίνειν τὸ παθόν τι. HEEREN. τῷ παθόντι Patrit. et mox ἡ δέ.

m εἴησαν] ἦσαν V.

n αὐτὴ δ'] δ' add. Heeren.

o Post ψυχῆς add. καὶ σώματος ὦ πάτερ; πῶς νοεῖς ὦ παῖ ψυχῆς αἴσθησιν V. A. P.

p ἡ γὰρ] γὰρ add. Heeren.

q ἐν σώματι] ἡ ἐν σώματι V. A.

r αὐτὴν] αὐτῇ A.

ἀσώματα ὄντα φαμὲν ἐν σώμασιν. Ἡ δὲ αἴσθησις οὐδὲ p. 85. ἐνέργειά ἐστιν, οὔτε ψυχὴ, [s] οὔτε σώματός τι ἄλλο, παρὰ τὰ προειρημένα, οὐκ ἂν οὖν [t] εἴη ἀσώματον· εἰ δ᾽ οὐκ ἔστιν ἀσώματον, σῶμα ἂν εἴη· τῶν γὰρ ὄντων [u] δεῖ τὰ μὲν σώματα εἶναι, τὰ δὲ ἀσώματα.

7 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἄμμωνα. [Patrit. p. 40.]

Κινεῖται δὲ τὸ κινούμενον κατ᾽ ἐνέργειαν τῆς κινήσεως, τῆς κινούσης τὸ πᾶν. Ἡ γὰρ φύσις τοῦ παντὸς τῷ παντὶ παρέχει κινήσεις· μίαν μὲν τὴν [a] κατὰ δύναμιν αὐτῆς, ἑτέραν δὲ τὴν κατ᾽ ἐνέργειαν· καὶ ἡ μὲν διήκει διὰ τοῦ σύμπαντος κόσμου, καὶ ἐντὸς [b] συνέχει· ἡ δὲ παρήκει, καὶ ἐκτὸς [742] περιέχει, καὶ διὰ πάντων πεφοιτήκασι κοινῇ. Καὶ ἡ φύσις πάντων, φύουσα τὰ γιγνόμενα, φυὴν παρέχει τοῖς φυομένοις, σπείρουσα μὲν τὰ ἑαυτῆς σπέρματα, [c] γενέσεις ἔχουσα δι᾽ ὕλην κινητήν. Κινουμένη δὲ θερμαίνεται, καὶ γίγνεται [d] ἡ ὕλη πῦρ καὶ ὕδωρ, τὸ μὲν σθεναρὸν καὶ ἰσχυρὸν, τὸ δὲ πάσχον. Τὸ δὲ πῦρ ἐναντιούμενον τῷ ὕδατι ἐξήρανε τοῦ ὕδατος, καὶ ἐγένετο [e] ἡ γῆ ὀχουμένη ἐπὶ τοῦ ὕδατος. Περιξηραινομένου δὲ [f] ἀτμὸς ἐγένετο ἐκ τῶν τριῶν, τοῦ τε ὕδατος, τῆς γῆς, καὶ τοῦ πυρὸς, καὶ ἐγένετο ἀήρ. Ταῦτα συνῆλθε κατὰ τὸν τῆς ἁρμονίας λόγον, θερμὸν ψυχρῷ, ξηρὸν ὑγρῷ, καὶ ἐκ τῆς συμπνοίας τούτων ἐγένετο πνεῦμα, καὶ σπέρμα

s οὔτε σώματος] οὔτε ἀσώματόν τι V. A.

t εἴη om. Patrit. ἀσώματον—εἴη om. A.

u ἀεὶ] δεῖ Cant. in marg. ἀεὶ Patrit. qui in fine add. φαμέν.

7.

a Verba κατὰ δυν.—δὲ om. A.

b ἔχει] συνέχει V. A.

c γένεσις, ἔχουσα ὕλην κινητήν. V. bene add. δι᾽, quo simul facile patet pro γένεσις, sublata distinctione, rescribendum esse γενέσεις, quod exhibet quoque Patrit. *motum materiæ generationis causam esse.* HEEREN. δὲ ὕλην A.

d ἡ ὕλη] ἡ om. A.

e ἡ γῆ deest ap. Cant. et in codd. Supplendum tamen illud esse, facile docent sequentia; legiturque jam ap. Patrit. HEEREN.

f ἀτμὶς] ἀτμὸς V. A. Patrit.

ἀνάλογον [g]τῷ περιέχοντι πνεύματι. Τοῦτο δὲ [h]ἐς τὴν μήτραν ἐμπεσὸν οὐκ ἠρεμεῖ ἐν τῷ σπέρματι, οὐκ ἠρεμοῦν δὲ μεταβάλλει τὸ σπέρμα, μεταβαλλόμενον δὲ [i]αὔξην ἴσχει καὶ μέγεθος. Ἐπὶ [g]τῷ μεγέθει δὲ εἴδωλον ἐπισπᾶται σχήματος, καὶ σχηματίζεται· ὀχεῖται δὲ ἐπὶ τῷ σχήματι τὸ εἶδος, δι' οὗ καὶ εἰδωλοποιεῖται τὸ εἰδωλοποιούμενον. Ἐπεὶ τοίνυν τὸ πνεῦμα οὐκ εἶχεν ἐν τῇ νηδύϊ τὴν ζωτικὴν κίνησιν, τὴν δὲ [k]βραστικὴν, καὶ ταύτην ἥρμοσεν ἁρμονίᾳ, ὑποδοχὴν οὖσαν τῆς διανοητικῆς ζωῆς. Ἔστι δὲ αὕτη ἀμε-
[744] ρὴς καὶ ἀμετάβλητος, οὐδέποτε ἐξισταμένη τῆς ἀμεταβλησίας. Τὸ δ' ἐν τῇ νηδύϊ [l]ἀριθμοῖς λοχεύει καὶ μαιοῦται καὶ εἰς τὸν ἔξω ἀέρα ἄγει, καὶ ἐγγυτάτω [m]ψυχῇ οὖσα οἰκειοῦται, οὐ κατὰ [n]τὴν συγγενικὴν [o]ἰδιότητα, ἀλλὰ τὴν καθ' εἱμαρμένην· οὐ γὰρ [p]ἔρως ἐστὶν αὐτῇ μετὰ σώματος εἶναι. Διὰ τοῦτο καθ' εἱμαρμένην παρέχει τῷ γιγνομένῳ διανοητικὴν κίνησιν, καὶ νοερὰν ζωῆς αὐτῆς οὐσίαν. Παρεισέρπει [q]γὰρ τῷ πνεύματι καὶ κινεῖ ζωτικῶς.

8 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Ἄμμωνα πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 45 b.]

Καὶ ὁ μὲν κύριος καὶ πάντων δημιουργὸς τῶν ἀϊδίων σωμάτων, ὦ Τάτ, ἅπαξ ποιήσας οὐκ ἔτι ἐποίησεν οὐδὲ ποιεῖ. Ταῦτα γὰρ ἑαυτοῖς παραδοὺς καὶ ἑνώσας ἀλλήλοις, ἀφῆκε φέρεσθαι, μηδὲν ἐνδεόντα, [a]ὡς ἀΐδια. Εἰ δὲ δέονται τινῶν,

[g] τῷ] τὸ A.

[h] ἐς] ὡς A.

[i] αὔξην] αὔξειν A. Patrit.

[k] βραστικὴν, vox lexicographis neglecta, ex βράζω, *ferveo, æstuo;* unde δύναμις βραστικὴ est *vis quæ æstuare facit*. HEEREN.

[l] ἀριθμοῖς] ἀριομοῖς A.

[m] ψυχῇ, sic rescripsi pro ψυχὴ, pendet enim ex Harmonia. HEEREN.

[n] τὴν] Articulum om. Heeren. hic et infra.

[o] ἰδιότητα] οἰκειότητα V. οὐσιότητα A.

[p] ἔρως ἐστὶν αὐτῇ recepi ex Patrit. pro ἐρώτων ἐστὶν αὕτη, quod nullo sensu cum Cant. habent codd. HEEREN.

[q] γὰρ] δὲ V. A.

8.

[a] καὶ ἀΐδια εἰ δέονταί τινα ἀ. δ.] ὡς ἀΐδια. Εἰ δὲ δέονται τινῶν, ἀλλήλων δεήσονται etc. V. A.

ἀλλήλων δεήσονται, οὐδεμίας δὲ [b]τῆς ἔξωθεν ἐπιφορᾶς, ὡς ἀθάνατα. Ἔδει γὰρ τὰ ὑπ' ἐκείνου σώματα [c]γιγνόμενα τοιαύτην ἔχειν καὶ τὴν φύσιν. Ὁ δὲ ἡμέτερος δημιουργὸς ἐν σώματι ὢν ἐποίησεν ἡμᾶς, καὶ ποιεῖ ἀεὶ καὶ ποιήσει σώματα [d]διαλυτὰ καὶ θνητά. Οὐ γὰρ θέμις ἦν αὐτῷ
[746] μιμεῖσθαι τὸν ἑαυτοῦ δημιουργὸν, ἄλλως τε καὶ [e]ἀδύνατον. Ὁ μὲν γὰρ ἐκ τῆς πρώτης οὐσίας ἐποίησεν οὔσης ἀσωμάτου, ὁ δὲ ἐκ τῆς γειναμένης σωματώσεως ἐποίησεν ἡμᾶς. Εἰκότως οὖν [f]κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον ἐκεῖνα μὲν τὰ σώματα, ὡς ἐξ [g]ἀσωμάτου οὐσίας γεγεννημένα, ἀθάνατά ἐστι· τὰ δὲ ἡμέτερα διαλυτὰ καὶ θνητὰ, ὡς τῆς ὕλης ἡμῶν ἐκ [h]σωμάτων συνεστώσης, διὰ τὸ ἀσθενῆ εἶναι καὶ [i]πολλῆς ἐπικουρίας δεόμενα. Πῶς γὰρ ἂν καὶ τὸ τυχὸν ἀντέσχεν ὁ σύνδεσμος ἡμῶν τῶν σωμάτων, εἰ μή τινα εἶχεν ἐπεισερχομένην τροφὴν ἐκ τῶν ὁμοίων στοιχείων, καὶ [k]ὑπεσωμάτου ἡμᾶς καθ' ἑκά- p. 86.
στην [l]ἡμέραν; Καὶ γὰρ γῆς τε καὶ ὕδατος καὶ πυρὸς καὶ ἀέρος ἐπιρροὴ ἡμῖν γίγνεται, ἥ τις τὰ σώματα ἡμῶν νεοποιοῦσα συνέχει τὸ σκῆνος· ὥστε καὶ πρὸς τὰς κινήσεις ἐσμὲν ἀσθενέστεροι, φέροντες κινήσεις μηδὲ ἡμέρας μιᾶς. [m]Εὖ γὰρ ἴσθι, ὦ τέκνον, ὅτι εἰ μὴ ἐν ταῖς νυξὶν ἡμῶν ἀνεπαύετο τὰ σώματα, οὐκ ἂν πρὸς μίαν ἡμέραν [n]ἀντέσχομεν. Ὅθεν ἀγαθὸς ὢν ὁ δημιουργὸς πάντα [o]προυπιστάμενος, εἰς διαμονὴν τοῦ ζώου ἐποίησε τὸν ὕπνον, [p]ὃν μέγιστον τοῦ κα-

[b] τῆς om. Heeren. cum Patrit.
[c] γιγνόμενα] γενόμενα V. A. E.
[d] λυτὰ] διαλυτὰ V. A.
[e] ἀδύνατον] ὅτι ἀδύνατον Heeren.
[f] κατὰ τὸν] καὶ τὸν V.
[g] ἀσωμάτου] –μάτων V.
[h] σωμάτων] στομάτων A.
[i] πόλις] πολλῆς V. A.
[k] ὑπεσωμάτου, recte derivatum ex ὑποσωματόω, *corpus reficio*. Frustra in codd. corruptelæ notula adjicitur. HEEREN. ὑποσωμάτου A.
[l] τὴν ἡμέραν] τῆς ἡμέρας V. τὴν om. A.
[m] Εἰ] εὖ V. A. E.
[n] ἀντέσχομεν] –σχωμεν V.
[o] προεπιστ.] προυπιστάμενος V.
[p] Nullo hic sensu habet Cant. ὃν μέγιστον τοῦ καμάτου τῆς κινήσεως, καὶ ἐπισότητος ἔταξεν ἑκάστῳ χρόνῳ. Post κινήσεως vox excidisse vide-

ματου τῆς κινήσεως [θελκτήριον], καὶ ἔπισον ἔταξεν ἑκάστῳ χρόνον, μᾶλλον δὲ τῇ ἀναπαύλῃ πλείονα. [q] Μεγίστην δὲ νόει, τέκνον, τοῦ ὕπνου τὴν ἐνέργειαν, ἐναντίαν [r] τῇ τῆς ψυχῆς, [748] οὐκ [s] ἐλάττονα δὲ ἐκείνης. Καθάπερ γὰρ ἡ ψυχὴ κινήσεώς ἐστιν ἐνέργεια, τὸν αὐτὸν τρόπον καὶ τὰ σώματα ζῆν οὐ [t] δύνανται χωρὶς τοῦ ὕπνου. Ἄνεσις γὰρ καὶ ἄφεσίς ἐστι τῶν συνδέτων [u] μελῶν, καὶ ἔσωθεν ἐνεργεῖ σωματοποιῶν τὴν [x] ἐπεισελθοῦσαν ὕλην, ἑκάστῳ τὸ [y] οἰκεῖον διαστέλλων· τὸ μὲν ὕδωρ τῷ αἵματι, τὴν δὲ γῆν ὀστέοις καὶ μυελοῖς, τὸν δὲ ἀέρα τοῖς νεύροις καὶ φλεψὶ, τὸ δὲ πῦρ τῇ ὁράσει. Διόπερ καὶ [z] ἥδεται ἄκρως τὸ σῶμα τῷ ὕπνῳ, ταύτην ἐνεργοῦντος τὴν ἡδονήν.

9 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κρατύλου [p. 400.]

Τὸ σῶμα λέγεις; Πολλαχῇ μοι δοκεῖ τοῦτό γε· ἂν μὲν καὶ σμικρόν τις παρακλίνῃ, καὶ [a] πάνυ· καὶ γὰρ σῆμά τινες φασὶν αὐτὸ εἶναι τῆς ψυχῆς, ὡς τεθαμμένης ἐν τῷ παρόντι [b] καὶ νῦν, διότι αὖ τοῦτο σημαίνει, [c] ἃ ἂν σημαίνῃ ἡ ψυχὴ, καὶ ταύτῃ σῆμα ὀρθῶς καλεῖσθαι. Δοκοῦσι μέντοι μάλιστα θέσθαι οἱ ἀμφὶ Ὀρφέα τοῦτο τὸ ὄνομα, ὡς δίκην διδούσης τῆς ψυχῆς, ὧν δὴ ἕνεκα δίδωσι· τοῦτον δὲ περίβολον ἔχειν, ἵνα σώζηται, δεσμωτηρίου εἰκόνα· [d] εἶναι οὖν τῆς ψυχῆς τοῦτο

tur ad quod *μέγιστον* referri possit, v. c. *θελκτήριον*, quod uncis inclusum addidi. Ὃν male ex terminatione vocis præcedentis repetitum videtur. Vertit Patritius: *quem maximum laboris ac quietis æquatorem ordinavit singulo tempore*, et edidit *ἐπισότητα* pro *ἐπισότητος*. Quo tamen sensum, non verba reddidit. Nos pro *ἐπισότητα* rescripsimus *ἔπισον*, quod sensus flagitat. HEEREN.

[q] Μέγιστον] μεγίστην A.

[r] τῆς ψυχῆς] τῇ τῆς ψυχῆς V. A.

[s] ἔλαττον] ἐλάττονα δὲ Heeren. οὐκ om. Patrit.

[t] δύναται] δύνανται V. A.

[u] μελῶν] τῶν μελῶν V. A.

[x] ἐπελθουσ.] ἐπεισελθοῦσαν V. A. E.

[y] εἰκεῖον] οἰκεῖον V. ἴδιον A.

[z] εἴδεται] ἥδεται V. A. E.

9.

[a] πᾶν] πάνυ A. Supra reddidi σμικρόν τις ex Plat. pro σμικρότης.

[b] καὶ νῦν om. A. τῷ νῦν π. καὶ Plat.

[c] ἃ ἂν σ. om. A.

[d] οὖν] εἶναι οὖν A

αὐτὸ, ὥσπερ ὀνομάζεται, ἕως ἂν [e] ἐκτίσῃ τὰ ὀφειλόμενα σώματα, καὶ οὐδὲν δεῖν παράγειν οὐδὲν γράμμα.

10

Ὡσαύτως δὲ καὶ Ὅμηρος ἐδήλωσε· τὸ μὲν γὰρ τῶν [a] ζώντων ἀεὶ δέμας προσαγορεύει, ὡς ἐν τούτοις· [b]

[750] ἐπεὶ [c] οὐχ ἕθεν ἐστὶ χερείων
οὐ δέμας οὐδὲ φυήν.

Τὸ δὲ ἀποβεβληκὸς τὴν ψυχὴν σῶμα καλεῖ· [d]

Σῶμα δὲ οἴκαδ' ἐμὸν δόμεναι πάλιν, ὄφρα πυρός με
Τρῶες καὶ Τρώων ἄλοχοι λελάχωσι θανόντα.

Τὸ γὰρ αὐτὸ τῆς ψυχῆς [e] δεσμὸς μὲν ἦν καὶ δέμας, κρατουμένης, σῶμα δὲ ἀπολείπεται, τουτέστι σῆμα καὶ [f] ἴχνος, ἀπελθούσης.

11 Ἑρμοῦ. [Patrit. p. 51 b.]

Ἔστι τοίνυν τὸ [a] πρὸ ὂν ἐπὶ πάντων τῶν ὄντων, καὶ τῶν ὄντως [b] ὄντων. Πρὸ ὂν γάρ ἐστι, δι' οὗ ἡ οὐσιότης ἡ καθόλου λεγομένη, κοινὴ [c] νοητῶν τῶν ὄντως ὄντων, καὶ τῶν ὄντων τῶν καθ' ἑαυτὰ νοουμένων. Τὰ δὲ ἐναντία τούτοις

[e] ἐκτίσει] ἐκτίσῃ A. Mox τὸ σῶμα Plato.

10.

Junguntur hæc verba in codd. V. A. E. continuo loco Platonis, nullo in marg. scriptoris nomine addito, ac si apud ipsum Platonem legerentur, etsi apud eum non exstant. Cohærent sane cum Platonicis; nam cum Plato vocem σῶμα derivasset a σῆμα, quasi corpus esset sepulcrum, pergit noster, ipsum quoque Homerum illud confirmare, quippe qui σῶμα de *funere* usurpet, cum corpus vita præditum δέμας appellare soleat. Quæ cum ita sint, vix dubitaveris verba hæc antiquum continere Platonis scholion, quod jam in codice, quo utebatur Stobæus, in ipsum contextum irrepserat. Ab ipso enim Stobæo ea profecta esse, vix verisimile videtur, cum ille pro consilio suo aliorum tantum laciniis suam collectionem ditaverit. HEEREN.

[a] ζώντων] ζώων A.

[b] Sunt verba Homeri Il. α'. 115.

[c] οὐθὲν] οὐ ἕθεν V. A.

[d] Il. η'. 79. 80.

[e] δεσμὸν] δεσμὸς V. A.

[f] ἴχνος] ἴσχνος V.

11.

[a] πρόην] προὸν (sic) A. προὲν P. πρὸ ὄν. Ὂν γὰρ Patrit.

[b] ὄντων πρὸ ὄν· οὐ γὰρ] ὄντων πρὸ ὄν· ὂν γὰρ A. Mox κόλου A. pro καθόλου.

[c] καὶ τῶν νοητῶν] καὶ τῶν add. Heeren. τῶν ν. Patrit.

κατὰ τὸ ἕτερον πάλιν αὐτὰ καθ' ἑαυτά ἐστι. [d] Φύσις δὲ
[e] οὐσία αἰσθητὴ, ἔχουσα ἐν ἑαυτῇ αἰσθητὰ πάντα. Μεταξὺ
δὲ τούτων νοηματικοὶ καὶ αἰσθητοὶ θεοί. Τὰ μὲν [[f] νοημα-
[752] τικὰ τὰ] μετέχοντα [g] τῶν νοητῶν [[h] θεῶν], τὰ δὲ δοξαστὰ, τὰ
κοινωνοῦντα τῶν αἰσθητῶν θεῶν. Αὗται δὲ εἰκόνες εἰσὶ νοη-
μάτων, οἷον ἥλιος εἰκών ἐστι τοῦ ἐπουρανίου δημιουργοῦ θεοῦ.
Καθάπερ γὰρ [i] ἐκεῖνος τὸ ὅλον ἐδημιούργησε, καὶ ὁ ἥλιος
δημιουργεῖ τὰ ζῶα, καὶ γεννᾷ φυτὰ, [[k] καὶ τῶν πνευμάτων
πρυτανεύει.]

Κεφ. λϛ'.

ΠΕΡΙ ΤΗΣ ΤΩΝ ΖΩΩΝ ΓΕΝΕΣΕΩΣ.

I Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 77.]

Ἐπειδὴ δὲ πάντα ἦν τὰ τοῦ θνητοῦ ζώου συμπεφυκότα p. 87.
μέρη καὶ μέλη, τὴν δὲ ζωὴν ἐν πυρὶ καὶ πνεύματι συνέβαι-
νεν ἐξ ἀνάγκης ἔχειν αὐτῷ, καὶ διὰ ταῦτα ὑπὸ τούτων
τηκόμενον κενούμενον ἔφθινε, [a] βοήθειαν αὐτῷ θεοὶ μηχανῶνται·
τῆς γὰρ ἀνθρωπίνης ξυγγενῆ φύσεως φύσιν ἄλλαις ἰδέαις
καὶ αἰσθήσεσι κεραννύντες, ὥσθ' ἕτερον ζῶον εἶναι, φυτεύ-
ουσιν· ἃ δὴ νῦν ἥμερα δένδρα καὶ φυτὰ καὶ σπέρματα
παιδευθέντα ὑπὸ γεωργίας τιθασσῶς πρὸς ἡμᾶς ἔσχε· πρὶν

[d] Φύσις δὲ] δὲ add. Heeren.

[e] Post οὐσία add. αἰσθητὴ, ἔχουσα ἐν ἑαυτῇ αἰσθητὰ (εἴδη τὰ P.) πάντα, μεταξὺ δὲ τούτων νοηματικοὶ καὶ αἰσθητοὶ etc. V. A. P.

[f] Verba quæ uncinis inclusi male excidisse, adeoque revocanda esse, docet membrorum sibi oppositorum ratio; quo simul patet αἰσθητῶν recte a me rescriptum esse pro νοηματικῶν. Distinxit enim modo Deos qui intellectu, et qui sensu percipiuntur. Jam vero pergit in illos cadere τὰ νοητὰ, quæ certa sunt et ratione tantum comprehenduntur; in hos τὰ δοξαστὰ, *opiniones*, quæ a sensibus proficiscuntur. Cf. supra fr. 6. HEEREN.

[g] τῶν ante νοητῶν deest V. A.

[h] θεῶν om. A. Cant. Patrit.

[i] ἐκεῖνον] ἐκεῖνος V. A.

[k] Verba καὶ τῶν πνευμάτων πρυτανεύει desunt V. A. Seqq. in A. Cant. Πλάτων—καὶ λογικά. quæ repetuntur infra p. 87, 50. ed. Cant.

I.

[a] βοήθειαν αὐτῶν] βοηθίαν αὐτῷ A.

δὲ ἦν μόνα τὰ τῶν ἀγρίων γένη, πρεσβύτερα τῶν [c]ἡμέρων ὄντα· πᾶν γὰρ οὖν ὅτι περ ἂν [d]μετάσχῃ τοῦ ζῆν, ζῶον μὲν ἂν ἐν δίκῃ λέγοιτο ὀρθότατον· [e]μετέχει γε μὴν τοῦτο, ὃ νῦν λέγομεν, τοῦ τρίτου ψυχῆς εἴδους, ὃ μεταξὺ φρενῶν ὀμφαλοῦ τε ἱδρῦσθαι λόγος, ᾧ δόξης μὲν λογισμοῦ τε καὶ νοῦ μέτεστι τὸ μηδὲν, αἰσθήσεως δὲ ἡδείας καὶ [ee]ἀλγεῖν μετὰ ἐπιθυμιῶν· πάσχον γὰρ διατελεῖ πάντα· στραφέντι δὲ αὐτῷ ἐν ἑαυτῷ περὶ [f]ἑαυτὸ, τὴν μὲν ἔξωθεν [g]ἀπωσαμένῳ κίνησιν, τῇ δὲ οἰκείᾳ χρησαμένῳ, τῶν αὐτοῦ τι λογίσασθαι κατιδόντι φύσει οὐ παρέδωκεν ἡ γένεσις· διὸ δὴ ζῇ μὲν, [h]ἔστι τε οὐχ ἕτερον [i]ζώου, μόνιμον δὲ καὶ κατερριζωμένον πέπηγε, [k]διὰ τὸ τῆς ὑφ᾽ ἑαυτοῦ κινήσεως ἐστερῆσθαι.

2 Ἑρμοῦ ἐκ τῆς Ἀφροδίτης [Patrit. p. 46.]

[754] Παρὰ [a]τί τὰ βρέφη ὅμοια τοῖς γονεῦσι γίνεται; ἢ συγγενείαις ἀποδίδοται; Ἐκθήσω λόγον. Ὅταν [b]νοστίμου αἵματος [c]ἐξαφεδρουμένου ἡ γένεσις [d]ἀποθησαυρίζῃ γόνον, συμβαίνει πως [e]ἐκπνέειν ἐκ τοῦ σώματος [f]ὅλου μελῶν οὐσίαν τινὰ κατὰ θείαν ἐνέργειαν, ὡς τοῦ αὐτοῦ ἀνθρώπου [g]γινομένου, τὸ δ᾽ αὐτὸ καὶ ἐπὶ τῆς γυναικὸς [h]εἰκὸς γίγνεσθαι. [i]Ὅταν οὖν [j]καθυπερτερήσῃ τὸ ῥυὲν ἀπὸ τοῦ ἀνδρὸς, καὶ [k]ἄθικτον

c ὑμετέρων] ἡμερῶν A.
d μετέχει] μετάσχῃ A.
e μετέχειν A. qui infra νοῦν.
ee ἀλγεινῆς Plat.
f αὐτὸ] ἑαυτὸ A.
g ἀποσαμένη A.
h ἔστι τε] τε om. A.
i ζῶον] ζῶον (ου superscr.) A.
k διὰ τὸ] τὸ om. A.

2.

a τί δὲ] δὲ deest V. A. E.
b νοστίμου] νοστήμου A.
c ἐξαφεδρομένου] –δρουμένου V. A. E. ἐξαφεδρευμένου ed. Heeren. ἐξαφιδρουμένου Schneider. in T. L. G. T. III. p. 1270.
d ἀποθησαυρίζει] –ρίζῃ V. –ρίζει (η superscr.) A.
e εἰσπνέειν] ἐκπνέειν V.
f ὅλου μελῶν] μελῶν om. Heeren.
g γινομένου] γειναμένου Heeren.
h εἰκὸς Cant. in marg. pro εἰς τό.
i Ὅταν οὖν] οὖν addidit Heeren.
j καθυπερτερίσῃ] –τερήσῃ V. A. E.
k ἄθικτον] Patrit. ἄτηκτον.

γένηται, τῷ πατρὶ ὁμοιούμενον τὸ βρέφος ἀποδειχθήσεται, ὡς τὸ ἀνάπαλιν [l]τὸν αὐτὸν τρόπον τῇ μητέρι. [m]Ἔτι δὲ ἐάν τινος μέρους [n]καθυπέρθεσις γένηται, πρὸς ἐκεῖνο τὸ μέρος ἀφομοιοῦται. Ἔσθ' ὅτε δὲ καὶ εἰς μακρὰς γενεὰς παραβάλλει τὸ βρέφος τῇ μορφῇ τοῦ γεννήσαντος, ἐκείνου [o]δεκανοῦ λόγον ἔχοντος πρὸς τὴν ὥραν, ἐν ᾗ ἡ γυνὴ ἐπαιδοποίει.

3 Ἀριστοτελικῶν.

[756] Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἀριστοτέλην καὶ Ἱπποκράτην φασὶν, ἐὰν μὲν ἐκπληρωθῇ ἡ [a]μήτρα [b]ἐν τοῖς ἕπτα μησὶ, τότε προκύπτειν καὶ γεννᾶσθαι γόνιμα· ἐὰν δὲ προκύψῃ μὲν, μὴ [c]τρέφηται δὲ, ([d]ἀσθενήσαντος τοῦ ὀμφαλοῦ διὰ τὸ ἐπίπονον [e]αὐτῷ γενέσθαι [[f]τὸ κύημα,]) τὸ ἔμβρυον ἄτροφον εἶναι. Ἐὰν δὲ [g]μείνῃ τοὺς [h]ἐννέα μῆνας ἐν τῇ μήτρᾳ, προκύψαν τότε ὁλόκληρόν ἐστι.

[l] τὸν αὐτὸν τρόπον] τῷ αὐτῷ τρόπῳ Heeren. Mox μητρὶ A.

[m] Ἔτι δὲ addidi ut nexus sermonis constaret. Mox παραβάλλει edidi pro παραβάλλειν. HEEREN.

[n] καθυπέρθεσις] –θεσιν V. A.

[o] δὲ κανοῦ] δεκανοῦ V. A. E.

ib. Vocantur *decani* apud Hermetem aliosque ætatis hujus scriptores dæmones seu angeli, qui pro constellationis qua quisque natus est ratione, mortali custodes adduntur. Duodecim nempe zodiaci signa ab astrologis iterum quodvis in triginta partes dividuntur; quæ singulæ decanos suos aut angelos custodes habent. Copiose hæc exponit Petit. Observ. Miscell. II. 16. HEEREN.

3.

Leguntur hæc quoque apud Plut. de Plac. V. 18. et Galen. c. 34. —Aristotelis locus, quem ante oculos habuit scriptor, exstat in Hist. Anim. VII. 4. sub Hippocratis autem nomine integrum adhuc librum *de partu septimestri* circumferri constat. HEEREN.

[a] μήτρα] Sic Plutarch. ἡμέρα A. Cant.

[b] ἑπτὰ etc.] ἐν τοῖς ἑπτὰ μησὶ V. A.

[c] στρέφηται] τρέφηται V. A.

[d] ἀσθενήσαντος δὲ] ἀσθενοῦντος sine δὲ Plutarch.

[e] αὐτῷ] αὐτὸ A. Cant. αὐτὴν Plutarch.

[f] τὸ κύημα om. A. Cant. Addidit Heeren. cum Plutarchi ed. Xyl. nam codices τὸ κρῖμα præbent.

[g] μεῖναι] μείνῃ V. A.

[h] ἔννεα om. A.

Κεφ. λζʹ.

ΠΟΣΑ ΓΕΝΗ ΖΩΩΝ ΚΑΙ ΕΙ ΠΑΝΤΑ [a]ΛΟΓΙΚΑ ΚΑΙ ΑΙΣΘΗΤΑ.

[b]ΠΛΑΤΩΝ [c]καὶ ᾿ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ, τέτταρα γένη ζώων, [758] χερσαῖα, ἔνυδρα, πτηνὰ, οὐράνια. Καὶ γὰρ τὰ ἄστρα ζῶα λέγεσθαι, [[d]καὶ αὐτὸν] τὸν κόσμον [e]ἔνθεον ζῶον, λογικὸν, ἀθάνατον.

Κεφ. ληʹ.

ΠΩΣ ΗΥΞΗΘΗ ΤΑ ΦΥΤΑ ΚΑΙ ΕΙ ΖΩΑ.

[a]ΠΛΑΤΩΝ καὶ Θαλῆς καὶ τὰ φυτὰ ἔμψυχα ζῶα. Φανερὸν δὲ καὶ ἀπὸ τοῦ σαλεύεσθαι, καὶ [b]ἐντεταμένους ἔχειν τοὺς κλάδους, καὶ ταῖς ἐπαγωγαῖς εἴκειν, καὶ πάλιν σφοδρῶς ἀναχαλᾶσθαι, [c]ὥστε καὶ συνανέλκειν βάρη. ᾿Αριστοτέλης ἔμψυχα μὲν, οὐ μὴν ζῶα. Τὰ γὰρ ζῶα ὁρμητικὰ εἶναι, καὶ [d]αἰσθητὰ, ἔνια δὲ καὶ λογικά.

I.

[a] ΛΟΓΙΚΑ] λοξὰ V. A.

[b] Plato hanc sententiam exposuit in Timæo, Op. III. p. 77. Quod ad Aristotelem attinet decerpta hæc sunt ejus placita ex libro deperdito περὶ ζώων, de quo Plut. l. c. initio capitis. Ἔστι πραγματεία ᾿Αριστοτέλους ἐν ῇ τέσσαρα γένη ζώων φησὶ, χερσαῖα, ἔνυδρα, πτηνὰ, οὐράνια etc. HEEREN.

[c] καὶ ante ᾿Αριστ. deest V.

[d] καὶ αὐτὸν τὸν κόσμον ἔνθεον] Sic ed. Heeren. τὸν κόσμον καὶ τὸν ἔνθεον A. τ. κ. καὶ τὸ ἑ. θ. Cant. καὶ τὸν κόσμον καὶ τὸν θεὸν in Plutarcho ed. Wyttenbach. Galenus: Πλάτων καὶ ᾿Αριστοτέλης δ′ εἶναι ζώων γένη λέγουσι, καὶ τὸν αὐτὸν κόσμον ζῶον, χερσαῖα, ἔνυδρα, πτηνὰ, οὐράνια. Καὶ γὰρ τὰ ἄστρα ζῶα εἶναι καὶ αὐτὸν τὸν κόσμον ζῶον λογικὸν ἀθάνατον.

[e] τὸ ἔνθεον] τὸν ἔνθεον V. A.

I.

[a] Πλάτων καὶ Θαλῆς] καὶ Θαλῆς om. A. Cant. h. l. ᾿Εμπεδοκλῆς Plut. Verba Πλάτων—λογικὰ desunt V.

[b] ἐντεταμένους] Heeren. ex Beckii conj. edidit ἐκτεταμένους.

[c] ὥστε καὶ—ὁρμητικὰ εἶναι om. A. Cant. h. l.

[d] αἰσθητὰ] αἰσθητικὰ A. Cant. h. l.

Κεφ. λθ΄.

ΠΕΡΙ ΦΥΣΕΩΣ ΑΝΘΡΩΠΩΝ.

Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 90.]

Καὶ δὴ καὶ τὰ νῦν ἡμῖν ἐξ ἀρχῆς παραγγελθέντα διεξελ- p. 88.
θεῖν περὶ τοῦ παντὸς μέχρι γενέσεως ἀνθρωπίνης σχεδὸν ἔοικε τέλος ἔχειν. Τὰ γὰρ ἄλλα ζῶα ᾗ γέγονεν αὖ διὰ βραχέων ἐπιμνηστέον, ὃ μή τις [a] ἀνάγκη μηκύνειν. Οὕτω γὰρ εὐμετρότερός τις αὐτῷ ἂν δόξειε περὶ τοὺς τοιούτων λόγους εἶναι. Τῇ δ' οὖν τὸ τοιοῦτον ἔστω λεγόμενον. Τῶν [b] γενομένων ἀνδρῶν ὅσοι [c] δειλοὶ καὶ τὸν βίον ἀδίκως διῆλθον, κατὰ λόγον τὸν εἰκότα γυναῖκες μετεφύοντο ἐν τῇ δευτέρᾳ γενέσει. Καὶ κατ' ἐκεῖνον δὴ τὸν χρόνον διὰ ταῦτα θεοὶ τὸν τῆς [d] ξυνουσίας ἔρωτα ἐτεκτήναντο, ζῶον, τὸ μὲν ἐν ἡμῖν, τὸ δ' ἐν ταῖς γυναιξὶ συστήσαντες [e] ἔμψυχον, τοιῷδε τρόπῳ ποιήσαντες ἑκάτερον· τὴν τοῦ ποτοῦ διέξοδον, ᾗ διὰ τοῦ πνεύμονος τὸ [f] πῶμα ὑπὸ τοὺς νεφροὺς εἰς τὴν κύστιν ἐλθὸν, καὶ τῷ πνεύματι θλιφθὲν συνεκπέμπει δεχομένη [ff] συνετρίβησαν εἰς τὸν ἐκ τῆς κεφαλῆς κατὰ τὸν αὐχένα καὶ διὰ τῆς ῥάχεως μυελὸν ξυμπεπηγότα, ὃν δὴ σπέρμα ἐν τοῖς πρόσθεν λόγοις εἴπομεν. Ὁ δὲ, ἅτε ἔμψυχος ὢν, καὶ λαβὼν ἀναπνοὴν τοῦθ' ᾗπερ ἀνέπνευσε, τῆς ἐκροῆς ζωτικὴν ἐπιθυμίαν ἐμποιήσας αὐτῷ, τοῦ γεννᾶν ἔρωτα ἀπετέλεσε. Διὸ δὴ τῶν μὲν ἀνδρῶν τὸ περὶ τὴν τῶν αἰδοίων φύσιν, ἀπειθές τε καὶ αὐτοκρατὲς γεγονὸς, οἷον ζῶον ἀνυπήκοον τοῦ λόγου, πάντων δι' ἐπιθυμίας οἰστρώδεις ἐπιχειρεῖ κρατεῖν· αἱ δ' ἐν ταῖς γυναιξὶ μῆτραί τε καὶ ὑστέραι λεγόμεναι

I.

[a] ἀνάγκη—τις om. A.
[b] γεννημένων A.
[c] δηλοὶ A.
[d] ἐξουσίας A.
[e] ἄψυχον A.
[f] σῶμα A.
[ff] συνέτρησαν Plat.

διὰ τὰ αὐτὰ ταῦτα, ζῶον ἐπιθυμητικὸν ἐνὸν τῆς παιδοποιίας, ὅταν ἄκαρπον παρὰ τὴν ὥραν χρόνον πολὺν γίγνηται, χαλεπῶς ἀγανακτοῦν [g]φέρει, καὶ πλανώμενον πάντῃ κατὰ τὸ σῶμα, τὰς τοῦ πνεύματος διεξόδους ἀποφράττον, [h]ἀναπνεῖν οὐκ ἐῶν, εἰς ἀπορίας τὰς ἐσχάτας ἐμβάλλει, καὶ νόσους παντοδαπὰς ἄλλας παρέχει, μέχρι περ ἂν ἑκατέρων ἡ ἐπιθυμία καὶ ὁ ἔρος ξυναγαγόντες, οἷον ἀπὸ δένδρων καρπὸν ἀποδρέψαντες, ὡς εἰς ἄρουραν τὴν μήτραν ἀόρατα ὑπὸ σμικρότητος καὶ ἀδιάπλαστα ζῶα κατασπείραντες, καὶ πάλιν διακρίναντες, μεγάλα ἐντὸς ἐκθρέψωνται, καὶ μετὰ τοῦτο εἰς φῶς ἀγαγόντες ζώων ἀποτελέσωσι γένεσιν. Γυναῖκες μὲν οὖν καὶ τὸ θῆλυ πᾶν οὕτω γέγονε· τὸ δὲ τῶν ὀρνίθων φῦλον μετερρυθμίζετο, ἀντὶ τριχῶν πτερὰ φύον, ἐκ τῶν ἀκάκων ἀνδρῶν, [i]κούφων δέ· καὶ [j]μετεωρολογικῶν μὲν, ἡγουμένων δὲ δι' ὄψεως τὰς περὶ τούτων ἀποδείξεις βεβαιοτάτας εἶναι δι' εὐήθειαν. Τὸ δ' αὖ πεζὸν καὶ θηριῶδες γένος ἐκ τῶν μηδὲν προσχρωμένων [k]φιλοσοφίᾳ, μηδὲ ἀθρούντων τῆς περὶ τὸν οὐρανὸν φύσεως πέρι μηδὲν, διὰ τὸ μηκέτι ταῖς ἐν τῇ κεφαλῇ χρῆσθαι περιόδοις, ἀλλὰ [l]τοῖς περὶ τὰ στήθη τῆς ψυχῆς ἡγεμόσιν ἕπεσθαι μέρεσιν. Ἐκ τούτων οὖν τῶν ἐπιτηδευμάτων, [m]τά τ' ἔμπροσθεν κῶλα καὶ τὰς κεφαλὰς εἰς γῆν ἑλκόμενα ὑπὸ συγγενείας ἤρεισαν, προμήκεις τε καὶ παντοίας ἔσχον τὰς κορυφὰς, ὅπῃ [n]συνελήφθησαν ὑπὸ ἀργίας ἑκάστων αἱ περιφοραί. Τετράπουν τε τὸ γένος αὐτῶν ἐκ ταύτης ἐφύετο καὶ πολύπουν τῆς προφάσεως, Θεοῦ βάσεις ὑποτιθέντος πλείους τοῖς μᾶλλον ἄφροσιν, ὡς μᾶλλον ἐπὶ γῆν ἕλκοιντο. Τοῖς δ' ἀφρονεστά-

g φέρειν A.
h ἀναπνοὴν A.
i κοῦφον A.
j μετεωρολικῶν A.
k φιλοσοφίαν A.
l τῆς A.
m τάπεμπροσθεν A.
n συνεθλίφθησαν Plat.

τοις αὐτῶν τούτων, καὶ παντάπασι πρὸς γῆν πᾶν τὸ σῶμα κατατεινομένοις, ὡς οὐδὲν ἔτι [n] ποδῶν χρείας οὔσης, ἄποδα αὐτὰ καὶ ἰλυσπώμενα ἐπὶ γῆς ἐγέννησαν. Τὸ δὲ τέταρτον γένος ἔνυδρον γέγονεν ἐκ τῶν μάλιστα ἀνοητοτάτων καὶ ἀμαθεστάτων, οὓς οὐδ' ἀναπνοῆς καθαρᾶς ἔτι ἠξίωσαν οἱ μεταπλάττοντες, ὡς τὴν ψυχὴν ὑπὸ πλημμελείας πάσης ἀκαθάρτως ἐχόντων, ἀλλ' ἀντὶ λεπτῆς καὶ καθαρᾶς ἀναπνοῆς ἀέρος εἰς ὕδατος θολερὰν καὶ βαθεῖαν ἔωσαν ἀνάπνευσιν. Ὅθεν ἰχθύων γένος καὶ τὸ τῶν ὀστρέων, ξυναπάντων τε ὅσα ἔνυδρα γέγονε, δίκην ἀμαθίας ἐσχάτης ἐσχάτας οἰκήσεις εἰληχότων. Καὶ κατὰ ταῦτα δὴ πάντα τότε καὶ νῦν διαμείβεται τὰ ζῶα εἰς ἄλληλα, νοῦ καὶ ἀνοίας ἀποβολῇ καὶ κτήσει μεταβαλλόμενα. Καὶ δὴ καὶ τέλος περὶ τοῦ παντὸς νῦν ἤδη τὸν λόγον φῶμεν ἔχειν· θνητὰ γὰρ καὶ ἀθάνατα ζῶα λαβὼν, καὶ συμπληρωθεὶς ὅδε ὁ κοσμὸς, οὕτω ζῶον ὁρατὸν, τὰ ὁρατὰ περιέχον, εἰκὼν τοῦ ποιητοῦ θεὸς αἰσθητὸς, μέγιστος καὶ ἄριστος, κάλλιστός τε καὶ τελεώτατος γέγονεν, εἷς οὐρανὸς ὅδε, μονογενὴς ὤν.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 42.]

[o] Πρῶτον μὲν οὖν αἴσθησιν ἀναγκαῖον εἴη πᾶσιν ἐκ βιαίων παθημάτων σύμφυτον γίνεσθαι· δεύτερον δὲ, ἡδονῇ καὶ λύπῃ μεμιγμένον ἔρωτα· πρὸς δὲ τούτοις φόβον τε καὶ θυμὸν, ὅσα τε ἑπόμενα αὐτοῖς καὶ ὁπόσα ἐναντίως πέφυκε διεστηκότα.

3 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κρατύλου [p. 399.]

[762] Ὀρθῶς ὁ ἄνθρωπος ὠνομάσθη, ἀναθρῶν ἃ ὄπωπε.

4 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 90.]

Τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ πονηροὺς σφόδρα ὀλίγους εἶναι ἑκατέρους, τοὺς δὲ μεταξὺ πλείστους.

[n] πολλῶν A.

[o] ἐρῶ τὸν—ἀναγκαίων A.

5 Πλάτωνος Νόμων έ [p. 747.]

Καὶ γάρ, ὦ [a]Μέγιλλέ τε καὶ Κλεινία, μηδὲ τοῦθ' ἡμᾶς λανθανέτω περὶ τόπων, ὡς οὐκ εἰσί τινες ἄλλοι διαφέροντες ἄλλων τόπων πρὸς τὸ γεννᾶν ἀνθρώπων ἀμείνους καὶ χείρους, οἷς οὐκ ἐναντία νομοθετητέον. Οἱ μέν γε που διὰ πνεύματα παντοῖα καὶ διειλήσεις ἀλλόκοτοί τε εἰσι καὶ ἐναίτιοι αὐτῶν, οἱ δὲ δι' ὕδατα, οἱ δὲ δι' αὐτὴν τὴν ἐκ τῆς γῆς τροφὴν ἀναδιδοῦσαν οὐ μόνον τοῖς σώμασιν ἀμείνω καὶ χείρω, ταῖς ψυχαῖς δὲ οὐχ ἧττον δυναμένην πάντα τὰ τοιαῦτα ἐμποιεῖν.

6 Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους Φυσιογνωμονικῶν.

Ὅτι [a]αἱ διάνοιαι ἕπονται τοῖς [b]ἀνθρώποις, καὶ οὔκ εἰσιν [c]αὐταὶ καθ' αὑτάς, ἀπαθεῖς [d]μένουσαι τῶν τοῦ σώματος κινήσεων, [e]τοῦτο δῆλον γίνεται [f]ἐν ταῖς μέθαις [g]καὶ ἀρρωστίαις, πολὺ γὰρ ἐξαλλάττουσαι φαίνονται αἱ διάνοιαι ὑπὸ τῶν τοῦ σώματος παθημάτων. Καὶ τουναντίον [h]δὴ τοῖς τῆς ψυχῆς παθήμασι τὸ σῶμα [i]συμπάσχειν, φανερὸν [k]ἐστι
[764] περί τε τοὺς ἔρωτας καὶ τοὺς φόβους [l]καὶ τὰς λύπας καὶ τὰς ἡδονάς. Ἔτι δὲ ἐν τοῖς φύσει γιγνομένοις μᾶλλον ἄν τις [m]συνίδοι, ὅτι οὕτως ἔχει πρὸς ἄλληλα σῶμά τε καὶ ψυχὴ συμφυῆ, ὥστε τῶν πλείστων ἀλλήλοις αἴτια γίγνεσθαι παθημάτων. Οὐδὲν γάρ [n]που ζῶον γεγένηται τοιοῦτον,

5.

a μ̈έγιλλέγε A. qui inf. διειλήσεις non διαλήσεις.

6.

Leguntur hæc ap. Aristotel. in libro de Physiognomia, init. Op. I. p. 888. Codd. V. A. E. in marg. Ἐκ τῶν (τοῦ A.) Ἀριστοτέλους φυσιογνωμικῶν. HEEREN. φισιογνώμο A.

a καὶ διάνοιαι] αἱ διανοίαι A.

b Statim pro ἀνθρώποις melius ed. Arist. habent σώμασι. HEEREN.

c αὐταὶ] αὐτὰ A.

d μένουσαι, bene habet Stob. pro οὖσαι in ed. Arist. HEEREN.

e τοῦτο δὲ Arist.

f ἔν τε Arist.

g καὶ ἐν ταῖς Arist.

h δὴ] δὲ A.

i Pro συμπάσχειν edd. Arist. habent συμπάσχον, in quo vix habeas quod præferas. HEEREN.

k Edd. Arist. pro ἐστὶ legunt γίνεται. HEEREN.

l τε καὶ Arist.

m συνίδοι] σύνοδοι A.

n Apud Arist. pro που legitur πώποτε, et mox ἔσχεν pro ἔσχηκε. HEEREN.

ὃ τὸ μὲν εἶδος [o]ἔσχηκέ τι ἑτέρου ζώου, τὴν δὲ διάνοιαν ἄλλου, ἀλλ' ἀεὶ τοῦ αὐτοῦ τό τε σῶμα καὶ [p]ἡ ψυχὴ, [q]ὡς ἀναγκαῖον ἕπεσθαι τῷ τοιῷδε σώματι τοιάνδε [r]διάνοιαν. Ἔτι δὲ καὶ τῶν ἄλλων ζώων, οἱ περὶ ἕκαστον ἐπιστήμονες, ἐκ τῆς [s]ἰδέας δύνανται θεωρεῖν, [t]ἱππικοί τε ἵππους, καὶ [u]κυνηγετικοὶ κύνας. Εἰ δὴ [x]ταῦτά ἐστιν [y]ἀληθῆ, ἀληθὴς [z]ἂν εἴη ἡ φυσιογνωμονία.

7 Πλάτωνος Νόμων ζʹ. [p. 797.]

Μεταβολὴν γὰρ δὴ πάντων πλὴν κακῶν πολὺ σφαλερώτατον εὑρήσομεν, ἐν ὥραις πάσαις, ἐν πνεύμασι καὶ διαίταις σωμάτων, ἐν τρόποις ψυχῶν, ἐν ὡς ἔπος εἰπεῖν οὐ τοῖς μὲν τοῖς δ' οὔ, πλὴν ὅπερ εἶπον νῦν δὴ κακοῖς· ὥστε εἴ τις ἀποβλέψειε πρὸς σώματα, ὡς πᾶσι μὲν σιτίοις πᾶσι δὲ ποτοῖς καὶ πόνοις ξυνήθη γιγνόμενα, καὶ τὸ πρῶτον [a]ταραχθέντα ὑπ' αὐτῶν, ἔπειτα ἐξ αὐτῶν τούτων ὑπὸ χρόνου σάρκας φύσαντα οἰκείας τούτοις [b]φίλα τε καὶ ξυνήθη καὶ γνώριμα γενόμενα, πάσῃ ταύτῃ τῇ διαίτῃ πρὸς ἡδονὴν καὶ [c]ὑγείαν ἄριστα [d]διάγει· καὶ ἐάν ποτ' ἄρα ἀναγκασθῇ μεταβάλλειν αὖθις ἡντινοῦν τῶν εὐδοκίμων διαιτῶν, τότε κατ' ἀρχὰς συνταραχθεὶς ὑπὸ νόσων μόγις ποτὲ κατέστη τὴν συνήθειαν τῇ τροφῇ πάλιν ἀπολαβών· [e]ταυτὸν δὴ δεῖ νομίζειν τοῦτο

[o] ἔσχεν ἑτέρου Arist.

[p] Si ἡ ψυχὴ vera lectio est, supplendum erit ἐστί; in ed. Arist. exstat τὴν ψυχὴν, quod referendum erit ad ἔσχηκε. HEEREN.

[q] ὡς] ὥστε Arist. tum ἀναγκαῖ A.

[r] Pro διάνοιαν apud Arist. hic legitur διάθεσιν, eodem prorsus sensu; de animi enim indole sermo est. HEEREN.

[s] ἰδέας] ἰδίας V. A.

[t] ἱππικοὶ etc.] ἱππική τε ἵππους κ. κυνηγετικὴ κύνας V. A.

[u] κυνηγετικοὶ] κυνηγέται Arist.

[x] ταῦτα ἀληθῆ εἴη, ἀεὶ δὲ ταῦτα ἀληθῆ ἐστὶν, εἴη ἂν φυσιογνωμονεῖν. Arist.

[y] ἀληθῆ om. A. qui infra ἡ φύσις γνωμονία.

[z] εἴη ἂν] ἂν εἴη V.

7.

[a] τραχυνθέντα A. Mox σάρκα A. Cant.

[b] φυλάττει] φίλατε A.

[c] ὑγρὰν] ὑγείαν A.

[d] συνάγει] διάγει A.

[e] ταυτὸ] ταυτὸν A.

γίγνεσθαι καὶ περὶ τὰς τῶν ἀνθρώπων διανοίας τε ἅμα καὶ τὰς τῶν ψυχῶν φύσεις. Οἷς γὰρ ἂν ἐντραφῶσι νόμοις, καὶ κατά τινα θείαν εὐτυχίαν ἀκίνητοι γένωνται μακρῶν καὶ πολλῶν χρόνων, ὡς μηδένα ἔχειν μνείαν μηδὲ ἀκοὴν τοῦ ποτὲ ἄλλως [f] αὐτὰ σχεῖν ἢ καθάπερ νῦν ἔχει, σέβεται p. 89.
καὶ φοβεῖται πᾶσα [g] ἡ ψυχὴ τῶν τι κινεῖν τῶν τότε καθεστώτων.

8 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 11 b.]

Κοινωνία δέ ἐστι [a] ψυχῶν. Καὶ κοινωνοῦσι μὲν αἱ τῶν
[766] θεῶν ταῖς τῶν ἀνθρώπων, [b] αἱ δὲ τῶν ἀνθρώπων ταῖς τῶν ἀλόγων. Ἐπιμελοῦνται δὲ οἱ κρείττονες τῶν ἐλαττόνων, θεοὶ μὲν ἀνθρώπων, ἄνθρωποι δὲ τῶν ἀλόγων ζώων, [c] ὁ δὲ θεὸς πάντων. Ὁ μὲν οὖν κόσμος ὑπόκειται τῷ θεῷ, ὁ δὲ ἄνθρωπος τῷ κόσμῳ, τὰ δὲ ἄλογα τῷ ἀνθρώπῳ, ὁ δὲ θεὸς ὑπὲρ πάντα καὶ περὶ πάντα. Καὶ τοῦ μὲν θεοῦ, καθάπερ αἱ ἀκτῖνες, αἱ ἐνέργειαι· τοῦ δὲ κόσμου αἱ ἀκτῖνες αἱ φύσεις· τοῦ δὲ ἀνθρώπου αἱ τέχναι καὶ αἱ ἐπιστῆμαι. Καὶ αἱ μὲν ἐνέργειαι διὰ τοῦ κόσμου ἐνεργοῦσι καὶ ἐπὶ τὸν ἄνθρωπον διὰ τῶν τοῦ κόσμου φυσικῶν ἀκτίνων· αἱ [e] δὲ φύσεις διὰ τῶν στοιχείων, οἱ δὲ ἄνθρωποι διὰ τῶν τεχνῶν καὶ ἐπιστημῶν. Καὶ αὕτη ἡ τοῦ παντὸς διοίκησις ἠρτημένη ἐκ τῆς [f] τοῦ ἑνὸς φύσεως, καὶ [g] διήκουσα τοῦ ἑνὸς τοῦ νοῦ, [h] οὗ οὐδέν ἐστι θειότερον καὶ ἐνεργέστερον καὶ ἑνωτικώτερον, ἀνθρώπων μὲν πρὸς θεούς, θεῶν δὲ πρὸς ἀνθρώπους. Οὗτός ἐστιν

[f] αὐτὰς] αὐτὰ A. qui mox καθάπερ non καθάπως.
[g] ἡ om. A. Mox τό τι κ. Plato.

8.
[a] ψυχῶν] ψυχῆς V.
[b] Verba αἱ δὲ τῶν ἀνθρώπων desunt V.
[c] ὁ δὲ θ. π.] δὲ πάντων ὁ θεὸς A.
[d] ἂν] αἱ A.
[e] δὲ om. A.
[f] τοῦ ἑνὸς] Sic Patrit. Heeren. τοῦ om. A. Cant.
[g] διοικοῦσα] διήκουσα V. A. E. ἡ ante διηκ. deest V. A. δ. δι' ἑνὸς Patrit.
[h] οὗ οὐδέν ἐστι] Sic Heeren. cum Patrit. ὁ δὲ νοῦς ἐστι A. Cant.

ὁ ἀγαθὸς δαίμων, οὗ ἂν μακαρία ψυχὴ ᾖ [i] ἡ τούτου πληρεστάτη, [k] κακοδαίμων δὲ ψυχὴ, ἡ τούτου κενωτάτη.

Τ. Πῶς τοῦτο πάλιν λέγεις, ὦ πάτερ;

Α. Οἴει οὖν, ὦ τέκνον, ὅτι πᾶσα ψυχὴ νοῦν ἔχει τὸν ἀγαθὸν, περὶ γὰρ τούτου [l] ὁ νῦν λόγος, οὐ τοῦ ὑπηρετικοῦ περὶ οὗ ἔμπροσθεν εἰρήκαμεν, τοῦ καταπεμπομένου ὑπὸ τῆς δίκης. Ψυχὴ γὰρ χωρὶς νοῦ

[m] οὔτε τι εἰπεῖν
οὔτ' ἔρξαι δύναται.

[768] Πολλάκις γὰρ [n] ἐξίπταται ὁ νοῦς τῆς ψυχῆς, καὶ ἐν ἐκείνῃ τῇ ὥρᾳ οὔτε βλέπει ἡ ψυχὴ, οὔτε ἀκούει, [o] ἀλλ' ἀλόγῳ ζώῳ ἔοικε. Τηλικαύτη δύναμίς ἐστι τοῦ νοῦ, ἀλλ' [p] οὐδὲ νωθρᾶς ψυχῆς ἀνέχεται, ἀλλὰ καταλείπει τὴν [q] τῷ σώματι προσκειμένην καὶ ὑπ' αὐτοῦ ἀγχομένην κάτω· ἡ τοιαύτη δὲ ψυχὴ, ὦ τέκνον, νοῦν οὐκ ἔχει. Ὅθεν οὐδ' ἄνθρωπον ἡγεῖσθαι δεῖ τὸν τοιοῦτον· ὁ γὰρ ἄνθρωπος θεῖον ζῶόν ἐστι, καὶ οὐδὲ τοῖς ἄλλοις ζώοις [r] συγκρινόμενον τῶν ἐπιγείων τισὶν, ἀλλὰ τοῖς ἄνω ἐν οὐρανῷ λεγομένοις θεοῖς. Μᾶλλον δὲ ἔχρην [s] τολμήσαντας εἰπεῖν τὸ ἀληθὲς, ὑπὲρ ἐκείνους ἐστὶν ὁ ὄντως ἄνθρωπος, ἢ πάντως ἰσοδυναμοῦσιν ἀλλήλοις. Οὐδεὶς μὲν γὰρ τῶν [t] οὐρανίων ἐπὶ γῆς κατελεύσεται, οὐρανοῦ τὸν ὅρον καταλιπών· ὁ δὲ ἄνθρωπος καὶ εἰς τὸν οὐρανὸν ανα-

[i] ἡ quod ob præcedens ᾖ excidisse videtur, addidi. Statim δὲ ante ψυχὴ bene supplet V. Pro κενωτάτη Patrit. habet κενή. HEEREN.

[k] κακοδαίμων—κενωτάτη desunt V. Post κακοδ. add. δὲ A.

[l] ὁ νῦν] Heeren. νῦν ὁ.

[m] οὔτε] Theognis 177.

[n] ἐξίπταται] ἐξήπτατε A.

[o] ἀλλὰ λόγῳ] ἀλλ' ἀλόγῳ V. A.

[p] οὐ] οὐδὲ V. A.

[q] Male hic additur ἐν, quod delevi. In proximis veram lectionem καὶ ὑπ' αὐτοῦ revocavi ex Patritio; nam Cant. et codd. male habent κατὰ πάντα. HEEREN.

[r] συγκρινόμενον] συνκρινόμενον Heeren.

[s] τολμήσαντας] τολμήσαντα Heeren.

[t] οὐρανίων] ἐπουρανίων Heeren.

βαίνει, καὶ μετρεῖ αὐτὸν, καὶ τὸ πάντων μεῖζον οὐδὲ τὴν γῆν καταλιπὼν, ἄνω γίγνεται· τοσοῦτον τὸ μέγεθός ἐστιν αὐτοῦ τῆς ἐκστάσεως. [u] Διὸ τολμητέον εἰπεῖν [x] τὸν μὲν ἄνθρωπον ἐπίγειον εἶναι θνητὸν θεὸν, [y] τὸν δ' ἐν οὐρανῷ θεὸν, ἀθάνατον ἄνθρωπον. Διόπερ διὰ τούτων τὰ πάντα τῶν δύο, κόσμου καὶ ἀνθρώπου, ὑπὸ δὲ τοῦ ἑνὸς πάντα.

9 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 10 b.]

[770] Ὁ μὲν ἄνθρωπος τὸ δεύτερον ζῶον μετὰ τὸν [a] κόσμον, πρῶτον δὲ τῶν [b] θνητῶν. Ψυχὴ δὲ ἀνθρώπου ὀχεῖται τὸν τρόπον τοῦτον, ὁ νοῦς ἐν τῷ λόγῳ, ὁ λόγος ἐν τῇ ψυχῇ, [c] ἡ δὲ ψυχὴ ἐν τῷ πνεύματι, τὸ πνεῦμα [[d] ἐν τῷ σώματι. Τὸ δὲ πνεῦμα] [e] διῆκον διὰ φλεβῶν καὶ ἀρτηριῶν καὶ αἵματος κινεῖ τὸ ζῶον, καὶ ὥσπερ τρόπον τινὰ βαστάζει. Διὸ καί τινες τὴν ψυχὴν αἷμα νομίζουσιν εἶναι, σφαλλόμενοι, τὴν φύσιν οὐκ εἰδότες, [f] ὅτι πρῶτον [g] δεῖ τοῦ πνεύματος ἀναχωρήσαντος εἰς τὴν ψυχὴν [h] τὸ αἷμα παγῆναι, καὶ τὰς φλέβας [i] καὶ τὰς ἀρτηρίας κενωθῆναι, καὶ τότε τὸ ζῶον ἐκλείπειν· p. 90. καὶ τοῦτο ἔστιν ὁ θάνατος τοῦ σώματος.

[u] Διὸ] διόπερ Heeren.

[x] τὸν ἄνθρωπον] τὸν μὲν ἄνθρωπον V. A.

[y] τὸν δ' ἐν οὐρανῷ θεὸν rescripsi pro τὸν δὲ οὐρανὸν θεόν. Oritur suspicio scripsisse auctorem τοὺς δ' οὐρανίους θεοὺς, ἀθανάτους ἀνθρώπους. HEEREN.

9.

[a] κόσμον] τὸν κόσμον A.

[b] Post θνητῶν pauca hic inseruntur ap. Patrit. Τῶν μὲν ἄλλων ζώων τὸ ἔμψυχον ἔχει. Οὐκ ἔτι δὲ μόνον οὐκ ἀγαθὸς, ἀλλὰ καὶ κακὸς, ὡς θνητός. Ὁ μὲν γὰρ κόσμος οὐκ ἀγαθὸς, ὡς κινητὸς, οὐ κακὸς δὲ ὡς ἀθάνατος. Ὁ δὲ ἄνθρωπος καὶ ὡς κινητὸς, κακός· ψυχὴ δὲ ἀνθρώπου etc. Cant. in editione sua, priora a sequentibus separando, lacunam indicavit. In codd. tamen Stob. statim post θνητῶν continuo legitur ψυχὴ δὲ etc. HEEREN.

[c] ἡ δὲ ψυχὴ om. A.

[d] ἐν τῷ—πνεῦμα om. A. Cant. Quæ exciderunt supplevit Heeren. ex Patritio.

[e] διοίκον] διῆκον V. A. E.

[f] Melius forte edidit Patrit. ὅτι πρῶτον δεῖ τὸ πνεῦμα ἀναχωρῆσαι εἰς τὴν ψυχὴν, καὶ τότε τὸ αἷμα παγῆναι. HEEREN.

[g] δεῖ] δὴ V. A.

[h] τὸ σῶμα] τὸ αἷμα V. A.

[i] Corrupte exstat ap. Cant. [et A.] καὶ τὰς ἀρτηρίας κενωθείσας, τὸ ζῶον καταλείπειν [καταλίπειν A.]. Pro καταλείπειν Patrit. habet καθε-

10 Πλάτωνος Πολιτείας δ΄. [p. 435.]

Ἆρ᾽ οὖν, ἦν δ᾽ ἐγὼ, πολλὴ ἀνάγκη ὁμολογεῖν ὅτι γε τὰ αὐτὰ ἐν ἑκάστῳ [a]ἔνεστιν ἡμῶν εἴδη τε καὶ ἤθη ἅπερ ἐν τῇ πόλει; οὐ γάρ [b]που ἄλλοθεν ἐκεῖσε [c]ἀφῖκται. Γελοῖον γὰρ ἂν εἴη, εἴ τις [d]οἰηθείη τὸ θυμοειδὲς μὴ ἐκ τῶν ἰδιωτῶν ἐν ταῖς πόλεσιν ἐκγεγονέναι, οἳ δὴ καὶ ἔχουσι ταύτην τὴν αἰτίαν, οἷον οἱ κατὰ τὴν Θρᾴκην [e]τε καὶ Σκυθικὴν καὶ σχεδόν τι κατὰ τὸν ἄνω τόπον· ἢ [f]τὸ φιλομαθὲς, ὃ δὴ (περὶ) τὸν παρ᾽ ἡμῶν μάλιστ᾽ ἄν τις αἰτιάσαιτο τόπον· καὶ τὸ φιλοχρήματον, τὸ περὶ [g]τούς τε Φοίνικας εἶναι, καὶ τοὺς κατ᾽ Αἴγυπτον φαίη τις ἂν οὐχ ἥκιστα.

11 Πλάτωνος Πολιτείας δ΄. [ε΄. p. 455.]

[772] [a]Ἴθι δὴ, φήσομεν πρὸς αὐτὸν, ἀποκρίνου. Ἆρα οὕτως ἔλεγες, τὸν μὲν εὐφυῆ πρός τι εἶναι, τὸν δ᾽ ἀφυῆ, ἐν ᾧ ὁ μὲν ῥᾳδίως τι [b]μανθάνοι, ὁ δὲ χαλεπῶς; καὶ ὁ μὲν ἀπὸ βραχείας μαθήσεως ἐπὶ πολὺ εὑρετικὸς εἴη οὗ ἔμαθεν, ὁ δὲ πολλῆς μαθήσεως τυχὼν καὶ μελέτης, μηδὲ ἃ ἔμαθε σώζοιτο; καὶ τῷ μὲν τὰ τοῦ σώματος ἱκανῶς [c]ὑπηρετοίη τῇ διανοίᾳ, τῷ δ᾽ ἐναντιοῖτο; [d]Ἆρ᾽ ἄλλ᾽ ἄττα ἐστὶν ἢ ταῦτα, οἷς τὸν εὐφυῆ πρὸς ἕκαστα καὶ τὸν μὴ ὁρίζου; Οὐδεὶς, ἦ δ᾽ ὅς, ἄλλα φήσει.

12 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 64.]

Μέγιστον δὲ καὶ λοιπὸν τῶν κοινῶν περὶ ὅλον τὸ σῶμα

λεῖν, quo nil proficimus. Rescripsi ἐκλείπειν, *tunc demum animal deficere, adeoque interire.* Reliqua emendavi ex Patrit. HEEREN.

10.

a ἔστιν] ἐνέστιν A.
b πω] που A.
c ἀφίκεται] ἀφῖκται A.
d οἰήθη] οἰηθείη A.
e τε καὶ Σ. add. A.
f τὸ φ.—καὶ τὸ om. A.
g τε τοὺς] τούς τε A.

11.

a Ἴσθη A.
b μανθάνει A.
c ὑπηρετείη A.
d Corrupte habet Cant. ἆρ᾽ ἀλλάττα ἐστὶν ἢ ταῦτα εἰς τὸν εὐφυῆ etc. Meliora suppeditant codd. V. A. HEEREN.

παθημάτων, τὸ τῶν ἡδέων καὶ τὸ [a]τῶν ἀλγεινῶν αἴτιον, ἐν οἷς διεληλύθαμεν, καὶ ὅσα διὰ τῶν τοῦ σώματος μορίων αἰσθήσεις κεκτημένα, καὶ λύπας ἐν αὑτοῖς ἡδονάς [b]τε ἑπομένας ἔχει. [12]Ὧδ' οὖν κατὰ παντὸς αἰσθητοῦ καὶ ἀναισθήτου παθήματος [c]τὰς αἰτίας [d]λαμβάνωμεν, ἀναμιμνησκόμενοι τὸ τῆς εὐκινήτου τε [e]καὶ δυσκινήτου φύσεως ὅ τι διειλόμεθα ἐν τοῖς πρόσθεν· ταύτῃ γὰρ μεταδιωκτέον πάντα ὅσα ἐπινοοῦμεν ἑλεῖν. Τὸ μὲν [f]γὰρ κατὰ φύσιν εὐκίνητον, ὅταν καὶ βραχὺ πάθος εἰς αὐτὸ [g]ἐμπίπτῃ, διαδίδωσι κύκλῳ μόρια ἕτερα ἑτέροις, ταὐτὸν ἀπεργαζόμενα, μέχρι περ ἂν ἐπὶ τὸ φρόνιμον ἐλθόντα ἐξαγγείλῃ τοῦ ποιήσαντος τὴν δύναμιν. Τὸ δ' ἐναντίον, ἑδραῖον [h]ὂν, κατ' οὐδένα τε κύκλον ἰὸν, πάσχει μόνον, ἄλλο δὲ οὐ κινεῖ [i]τῶν πλησίον· ὥστε οὐ διαδιδόντων μορίων μορίοις ἄλλων ἄλλοις, τὸ πρῶτον πάθος ἐν αὐτοῖς ἀκίνητον εἰς τὸ πᾶν ζῶον γενόμενον, ἀναίσθητον παρέσχε τὸ παθόν. Ταῦτα δὲ περί τε ὀστᾶ καὶ τρίχας ἐστὶ, καὶ ὅσα ἄλλα γήϊνα τὸ πλεῖστον ἔχομεν ἐν ἡμῖν μόρια. Τὰ δὲ ἔμπροσθεν περὶ [k]τὰ τῆς ὄψεως καὶ ἀκοῆς μάλιστα, διὰ τὸ πυρὸς ἀέρος τε ἐν [l]αὐτοῖς δύναμιν [m]ἐνεῖναι μεγίστην. Τὸ [n]δὴ τῆς ἡδονῆς καὶ λύπης ὧδε δεῖ διανοεῖσθαι. Τὸ μὲν παρὰ φύσιν καὶ βίαιον γιγνόμενον ἀθρόον παρ' ἡμῖν πάθος, ἀλγεινόν· τὸ δ' εἰς φύσιν ἀπιὸν πάλιν ἀθρόον, ἡδύ· τὸ δὲ ἠρέμα καὶ κατὰ σμικρὸν, ἀναίσθητον· τὸ δ' ἐναντίον τούτοις, ἐναντίως. Τὸ δὲ μετ' εὐπετείας γιγνόμενον ἅπαν, αἰσθητὸν μὲν ὅτι μάλιστα, [o]λύπης δὲ καὶ ἡδονῆς οὐ μετέχον· οἷον

12.

[a] τῶν] τὸ τῶν A.

[b] θ' ἅμα] τε A.

[c] τὰς om. A.

[d] λαμβάνομεν A.

[e] καὶ] τε καὶ A.

[f] γὰρ] μὲν γὰρ A.

[g] ἐμπίπτει (η supra) A.

[h] ὂν om. A.

[i] τὸν πλησίον (ω supra) A.

[k] τὰ om. A.

[l] αὐτῆς A.

[m] εἶναι] ἐκεῖνα A. ἐνεῖναι Plato.

[n] δὴ] δὲ A. ubi mox ὧδεν διανοεῖσθαι δεῖν.

[o] ἡδονῆς καὶ λύπης οὐ A.

τὰ περὶ τὴν ὄψιν αὐτὴν παθήματα· ᾗ δὴ σῶμα ἐν τοῖς ἔμπροσθεν ἐρρήθη καθ' ἡμέραν ξυμφυὲς ἡμῶν γίγνεσθαι.

13 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου [p. 31.]

Λέγω τοίνυν, τῆς ἁρμονίας μὲν λυομένης ἡμῖν ἐν τοῖς ζώοις, ἅμα λύσιν τῆς φύσεως καὶ γένεσιν ἀλγηδόνων ἐν τῷ [a] τότε γίγνεσθαι χρόνῳ. Πάνυ λέγεις εἰκός. Πάλιν δὲ ἁρμοττομένης τε καὶ εἰς τὴν αὐτὴν φύσιν [aa] ἀπιούσης ἡδονὴν γίγνεσθαι λεκτέον, εἰ δεῖ δι' ὀλίγων ὅτι τάχιστα περὶ μεγίστων ῥηθῆναι. Οἶμαι μέν [b] σε ὀρθῶς λέγειν, ὦ Σώκρατες, ἐμφανέστερον δὲ ἔτι [c] τὰ αὐτὰ ταῦτα πειρώμεθα λέγειν. Οὐκοῦν [d] τὰ δημόσιά που καὶ περιφανῆ ῥᾷστον συννοεῖν; Ποῖα; Πείνη μέν που, καὶ λύσις εἶναι. Ἐδωδὴ δὲ, πλήρωσις γιγνομένη πάλιν, ἡδονή. Ναί. Δίψους δ' αὖ φθορὰ καὶ λύπη καὶ λύσις, ἡ δὲ τοῦ ὑγροῦ πάλιν τὸ ξηρανθὲν πληροῦσα δύναμις, ἡδονή· διάκρισις δέ τ' αὖ καὶ διάλυσις, ἡ παρὰ φύσιν [e] τοῦ πνίγους πάθη, λύπη· κατὰ φύσιν δὲ πάλιν ἀπόδοσίς τε καὶ ψύξις, ἡδονή. Πάνυ μὲν οὖν. Καὶ ῥίγους ἡ μὲν παρὰ φύσιν τοῦ ζώου τῆς ὑγρότητος πῆξις [f] λύπη, πάλιν δ' εἰς ταὐτὸν ἀπιόντων καὶ διακρινομένων, ἡ κατὰ φύσιν ὁδὸς, ἡδονή. Καὶ ἑνὶ λόγῳ [g] σκόπει εἰ σοι μέτριος ὁ λόγος, ὃς ἂν φῇ τὸ ἐκ τῆς ἀπείρου καὶ πέρατος κατὰ φύσιν ἔμψυχον γεγονὸς εἶδος, ὅπερ ἐν τῷ πρόσθεν ἔλεγον, ὅταν μὲν τοῦτο φθείρηται, τὴν [h] φθορὰν λύπην εἶναι, τὴν δ' εἰς τὴν αὐτῶν οὐσίαν ὁδὸν, [i] ταύτην δ' αὖ πάλιν τὴν ἀναχώρησιν πάντων, ἡδονήν. Ἔστω· δοκεῖ γάρ μοι τύπον γέ τινα ἔχειν. [k] Τοῦτο μὲν τοίνυν ἓν εἶδος [l] τιθώμεθα λύπης τε καὶ

13.

[a] ποτὲ A. Cant.
[aa] ἀπιάσης A. Supra αὐτῆς Plato.
[b] τοι A.
[c] τὰ αὐτὰ om. A.
[d] τὰ] δὲ A. Mox λύσις καὶ λύπη. ναί. Plat.
[e] τοῦ—φύσιν om. A. ἡ item om. A.
[f] καὶ λύπη A.
[g] σκόπειν ε. σ. μέτρος λόγος A.
[h] φορὰν A.
[i] ταύτην—ἡδονὴν om. A.
[k] τοῦτον A.
[l] τιθέμεθα A.

ἡδονῆς ἐν τούτοις τοῖς πάθεσιν ἑκατέροις. Κείσθω. Τίθει τοίνυν αὐτῆς τῆς ψυχῆς κατὰ τὸ τούτων τῶν παθημάτων προσδόκημα, τὸ μὲν [m] πρὸ τῶν ἡδέων ἐλπιζόμενον [n] ἡδὺ καὶ θαρραλέον, τὸ δὲ [o] πρὸ τῶν λυπηρῶν φοβερὸν καὶ ἀλγεινόν. Ἔστι γὰρ οὖν [p] τοῦθ' ἡδονῆς καὶ λύπης ἕτερον εἶδος, τὸ χωρὶς τοῦ σώματος αὐτῆς τῆς ψυχῆς διὰ [q] προσδοκίας γιγνόμενον.

14 [Ἐν ταυτῷ. p. 33.]

Καὶ μὴν τό γε ἕτερον εἶδος τῶν ἡδονῶν, ὃ τῆς ψυχῆς αὐτῆς εἶναι ἔφαμεν, διὰ μνήμης πᾶν ἐστι γεγονός. Πῶς; Μνήμην, ὡς ἔοικεν, ὅ τι ποτέ ἐστι, πρότερον ἀναληπτέον· καὶ κινδυνεύει πάλιν ἔτι [a] πρότερον αἴσθησιν μνήμης, εἰ μέλλει ταῦθ' ἡμῖν κατὰ τρόπον φανερά πῃ γενήσεσθαι. Πῶς φῄς; [b] Θὲς τῶν περὶ τὸ σῶμα ἡμῶν ἑκάστοτε παθημάτων τὰ μὲν ἐν τῷ σώματι κατασβεννύμενα, πρὶν ἐπὶ τὴν ψυχὴν διεξελθεῖν, ἀπαθῆ ἐκείνην ἐάσαντα, τὰ δὲ δι' ἀμφοῖν ἰόντα, καί τινα ὥσπερ σεισμὸν ἐντιθέντα ἴδιόν τε καὶ κοινὸν ἑκατέρῳ. [bb] Κείσθω. Τὰ μὲν [c] δὴ μὴ δι' ἀμφοῖν ἰόντα ἐὰν τὴν ψυχὴν ἡμῶν [d] φῶμεν λανθάνειν, τὰ [e] δὲ δι' ἀμφοῖν μὴ λανθάνειν, ἆρ' ὀρθότατα ἐροῦμεν; Πῶς γὰρ οὔ; Τὸ τοίνυν λεληθέναι μηδαμῶς ὑπολάβῃς, ὡς λέγω λήθης ἐνταῦθά που γένεσιν. Ἔστι γὰρ λήθη μνήμης ἔξοδος, ἡ δ' ἐν τῷ λεγομένῳ νῦν οὔπω γέγονε· [f] τοῦ δὲ μήτε ὄντος μήτε γεγονότος [g] πως γίγνεσθαι φάναι τινα ἀποβολὴν, ἄτοπον. Ἦ γάρ; Τί μήν; Τὰ τοίνυν ὀνόματα μετάβαλε μόνον. Πῶς; Ἀντὶ τοῦ λε-

[m] πρὸ τῶν] πρῶτον A.
[n] ἡδὺ om. A.
[o] πρὸ τῶν λυπηρῶν] δεύτερον λυπῶν A.
[p] τοῦθ'] τοῦ δ' A.
[q] προσδοκίαν] προσδοκίας A.

14.

[a] προτέραν A.
[b] Θεὶ A.
[bb] κεῖσθαι A.
[c] δὴ μὴ om. A.
[d] φῶμεν om. A.
[e] δὲ om. A.
[f] οὐδ' οὐ A.
[g] πω (ου) A.

ληθέναι τὴν ψυχὴν, ὅταν ἀπαθὴς αὕτη γίγνηται τῶν σεισμῶν τῶν τοῦ σώματος, [h]ἣν νῦν λήθην καλεῖς, ἀναισθησίαν ἐπονόμασον. Ἔμαθον. Τὸ δ' ἐν ἑνὶ πάθει τὴν ψυχὴν καὶ τὸ σῶμα κοινῇ γιγνόμενον κοινῇ καὶ κινεῖσθαι, ταύτην [i]δ' αὖ τὴν κίνησιν ὀνομάζων αἴσθησιν, οὐκ ἀπὸ τρόπου [k]φθέγγοι' ἄν. Ἀληθέστατα λέγεις. Οὐκοῦν ἤδη μανθάνομεν ὃ βουλόμεθα καλεῖν τὴν αἴσθησιν;

15 Ἐν ταυτῷ [p. 50.]

Ὅτι καὶ σῶμα ἄνευ ψυχῆς καὶ ψυχὴ ἄνευ σώματος καὶ κοινῇ μετ' ἀλλήλων ἐν τοῖς παθήμασι μεστά ἐστι, συγκεκραμένης ἡδονῆς λύπαις.

Κεφ. μ'.

ΠΕΡΙ ΝΟΥ.

1 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου [p. 58.]

[774] Ἔγωγε ἡγεῖσθαι οἶμαι ξύμπαντας, ὅσοις νοῦ καὶ [a]σμικρὸν προσήρτηται, μακρῷ ἀληθεστάτην εἶναι γνῶσιν.

2 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 93.]

Φέρε δὴ, πρὸς Διὸς, λέγεται ψυχὴ ἡ μὲν νοῦν τε ἔχειν καὶ ἀρετὴν καὶ εἶναι ἀγαθὴν, ἡ δὲ ἄνοιαν τε καὶ μοχθηρίαν καὶ εἶναι κακήν; Καὶ ταῦτα ἀληθῶς λέγεται;

3 Ἑρμοῦ [Patrit. p. 11.]

Τ. Πῶς τοῦτο λέγεις, ὦ πάτερ, ὁ νοῦς τῆς ψυχῆς χωρίζεται, καὶ ἡ ψυχὴ τοῦ πνεύματος; σοῦ εἰπόντος [a]ἔνδυμα εἶναι τοῦ μὲν νοῦ τὴν ψυχὴν, τῆς δὲ ψυχῆς τὸ πνεῦμα;

Α. Συννοεῖν [b]δεῖ, ὦ τέκνον, τὸν ἀκούοντα τῷ λέγοντι, καὶ

[h] ἣν] ὃν A. Mox τόδε δ' ἑνὶ A.

[i] δ' αὖ] δὴ A.

[k] φθέγγει (η) A.

1.

[a] σμικρὸν] σμικροῖς A.

3.

[a] Apud Cant. et in codd. male legitur δύναμιν. Revocavi veram lectionem ἔνδυμα ex Patrit. HEEREN.

[b] δεῖ bene Patrit. pro δὲ ap. Cant. et in codd. nisi quod cod. A. habet δή. HEEREN.

συμπνεῖν, καὶ ὀξυτέραν [c]ἔχειν τὴν ἀκοὴν τῆς τοῦ λέγοντος
[776] φωνῆς. Ἡ σύνθεσις τῶν [d]ἐνδυμάτων τούτων ἐν σώματι
γηΐνῳ γίγνεται· ἀδύνατον γὰρ τὸν νοῦν ἐν γηΐνῳ σώματι
[e]γυμνὸν αὐτὸν καθ' ἑαυτὸν ἑδράσαι. Οὔτε γὰρ τὸ γήϊνον
σῶμα δυνατόν ἐστι τὴν τηλικαύτην [f]ἀθανασίαν ἐνεγκεῖν,
οὔτε τὴν τοσαύτην ἀρετὴν [g]ἀνασχέσθαι συγχρωτιζόμενον
αὐτῇ [h]παθητὸν σῶμα. Ἔλαβεν [οὖν] ὥσπερ περιβόλαιον
τὴν ψυχήν· ἡ δὲ ψυχὴ καὶ αὐτή τις θεία οὖσα καθάπερ
[i]ὑπηρέτις τῷ πνεύματι χρῆται, τὸ δὲ πνεῦμα τὸ ζῷον
[k]διοικεῖ. Ὅταν οὖν ὁ νοῦς ἀπαλλαγῇ τοῦ γηΐνου σώματος,
τὸν ἴδιον εὐθὺς ἐνεδύσατο χιτῶνα τὸν πύρινον, ὃν οὐκ ἠδύνατο
ἔχων εἰς τὸ γήϊνον σῶμα κατοικῆσαι. Γῆ γὰρ πῦρ οὐ
βαστάζει· πᾶσα γὰρ γῆ φλέγεται καὶ ὑπὸ ὀλίγου σπιν-
θῆρος. Διὰ τοῦτο καὶ τὸ ὕδωρ περικέχυται τῇ γῇ, ὥσπερ
ἔρυμα καὶ [l]τεῖχος ἀντέχον πρὸς τὴν τοῦ πυρὸς φλόγα.
Νοῦς δὲ, ὀξύτατος πάντων τῶν θείων νοημάτων, [m]καὶ τὸ ὀξύ-
τατον πάντων τῶν στοιχείων ἔχει τὸ πῦρ σῶμα. Δημιουρ- p. 91.
γὸς γὰρ ὢν ὁ νοῦς τῶν πάντων, ὀργάνῳ τῷ πυρὶ πρὸς τὴν
δημιουργίαν χρῆται. Καὶ ὁ μὲν τοῦ παντὸς τῶν πάντων, ὁ
δὲ τοῦ ἀνθρώπου τῶν ἐπὶ γῆς μόνον. Γυμνὸς γὰρ ὢν τοῦ
πυρὸς ὁ ἐν ἀνθρώποις νοῦς ἀδυνατεῖ τὰ θεῖα δημιουργεῖν,
[n]ἀνθρώπου ὢν τῇ οἰκήσει.

[c] ἔχει] ἔχειν V. A.

[d] Post ἐνδυμάτων add. τούτων V. A. P.

[e] γυμνὸν om. Heeren.

[f] ἀθανασίαν] εὐεργεσίαν V.

[g] ἀνέχεσθαι] ἀνασχέσθαι V. A. P.

[h] παθητὸν οὖν] οὖν addidi, ut nexus sermonis constaret. Parum tamen abest, quin mutata interpunctione malim; αὐτῇ, παθητὸν ὄν. Σῶμα οὖν ἔλαβεν κ.τ.λ. HEEREN. συγχρωματιζόμενον αὐτῷ παθητὸν σῶμα. ἔλαβεν οὖν ὥσπερ Poemandri ed. Turn.

[i] ὑπηρέτου] –της V. –τις A. –τῃ Patr. καθαπερεὶ πυρὶ Turn.

[k] διήκει *pervadit, penetrat* dedi pro διοικεῖ, quæ verba sæpius apud nostrum male permutantur. Statim post ὅταν addidi οὖν ex Patrit. ut nexus sermonis constaret. HEEREN. ὅταν οὖν Turn.

[l] τεῖχος] τοῖχος A.

[m] καὶ add. τὸ V. A. καὶ ὀξύτερος Turn.

[n] Verba ἀνθρώπου ὢν τῇ οἰκήσει, quæ corrupta sunt, omittit cod. V. quare ea ut suspecta uncis inclusi.

4 [a]Πορφυρίου ἐκ τῶν πρὸς τὰ νοητὰ Ἀφορμῶν.

[778] Πᾶν γεννητὸν ἀπ' ἄλλου τὴν αἰτίαν τῆς γενέσεως ἔχει, εἴγε μηδὲν ἀναιτίως γίγνεται. Ἀλλὰ [b]τῶν γε γεννητῶν ὅσα μὲν διὰ συνθέσεως [c]κέκτηται τὸ εἶναι, [d]αὐτὰ ἂν εἴη καὶ διὰ τοῦτο φθαρτά· ὅσα δὲ ἁπλᾶ καὶ ἀσύνθετα ὄντα ἐν τῷ ἁπλῷ τῆς ὑποστάσεως [c]κέκτηται τὸ εἶναι, ἄλυτα ὄντα, ἐστὶ μὲν ἄφθαρτα, γεννητὰ δὲ λέγεται, οὐ τῷ σύνθετα εἶναι, ἀλλὰ τῷ ἀπ' αἰτίου τινὸς ἀνηρτῆσθαι. Τὰ μὲν οὖν σώματα διχῶς γεννητὰ, καὶ ὡς ἀπ' αἰτίας ἠρτημένα τῆς παραγούσης, καὶ ὡς σύνθετα· ψυχὴ δὲ καὶ νοῦς γεννητὰ, ὡς ἀπ' αἰτίας ἠρτημένα μόνον, οὐ μὴν καὶ ὡς σύνθετα· τὰ μὲν ἄρα σώματα γεννητὰ καὶ λυτὰ καὶ φθαρτά· τὰ δὲ ἀγέννητα μὲν ὡς ἀσύνθετα, καὶ ταύτῃ καὶ ἄλυτα καὶ ἄφθαρτα, γεννητὰ δὲ ὡς αἰτίου ἠρτημένα.

5 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὁ νοῦς οὐκ ἔστιν ἀρχὴ πάντων· πολλὰ γάρ ἐστιν ὁ νοῦς, πρὸ δὲ τῶν πολλῶν ἀνάγκη εἶναι τὸ ἕν. Ὅτι δὲ πολλὰ ὁ νοῦς δῆλον, νοεῖ γὰρ ἀεὶ τὰ νοήματα, οὐχ ἓν ὄντα, ἀλλὰ πολλὰ, καὶ οὐκ ἄλλα ὄντα παρ' ἐκεῖνο. Εἰ οὖν [a]ὁ αὐτός
[780] ἐστιν αὐτοῖς, ἐκεῖνα δὲ πολλὰ, πολλὰ ἂν εἴη καὶ ὁ νοῦς. Ὅτι δὲ ὁ αὐτός ἐστι τοῖς νοητοῖς, οὕτως δείκνυται. Εἰ γάρ τί ἐστιν ὃ θεωρεῖ, ἢ τὸ ἐν [b]ἑαυτῷ ἔχον τοῦτο θεωρήσει, ἢ ἐν ἄλλῳ κείμενον. Καὶ ὅτι μὲν θεωρεῖ δῆλον· σὺν [c]γὰρ τῷ νοεῖν εἴη ἂν [d]νοῦς, ἀφαιρεθεὶς [e]δὲ τοῦ νοεῖν ἀφῄρηται τῆς οὐ-

Si ea retinueris, legendum saltem erit *ἐν τῇ ἀνθρώπου ὢν οἰκήσει*, *dum in homine habitat*. HEEREN. *ἀνθρώπινος ὢν τῇ διοικήσει*. Turn.

4.

[a] Exstat locus apud Holsten. pag. 62. HEEREN. p. 222. ed. Cantab.

[b] τῶν τε] τῶν γε A.

[c] κέκτηται] κέκτηνται V. A.

[d] αὐτὰ] αὐτοὶ A.

5.

[a] αὐτὸς] ὁ αὐτὸς V. ὁ αὐτὸς—πολλὰ ἂν om. A. Mox l. 25. ὁ om. A.

[b] ἑαυτῶ recte cod. A. pro αὐτῷ ap. Cant. HEEREN.

[c] γὰρ τὸ] γὰρ τῷ V.

[d] ὁ ante νοῦς deest V. A.

[e] γὰρ] δὲ V. A.

σίας. Δεῖ τοίνυν ἐπιστήσαντας τοῖς πάθεσιν ἃ [f] συμβαίνει περὶ τὰς γνώσεις, ἀνιχνεῦσαι τὴν ἐκείνου θεωρίαν. Γνωστικαὶ δὲ δυνάμεις ἐν ἡμῖν ἀθρόον, αἴσθησις, φαντασία, νοῦς. [g] Πάντῃ δὲ τὸ αἰσθήσει [h] προσχρώμενον [i] τοῖς ἔξω ἐπιβάλλον θεωρεῖ, [k] οὐχ ἑνούμενον ἐκείνοις ἃ θεωρεῖ, ἀλλὰ μόνον τύπον αὐτῶν ἐκ τῆς πρὸς αὐτὰ προσβολῆς λαμβάνον. Ὅταν οὖν ἴδῃ ὀφθαλμὸς τὸ ὁρώμενον, ἀμήχανον ἐν [l] ταυτότητι γενέσθαι τοῦ ὁρωμένου· οὐ γὰρ ἂν [m] ἴδοι, εἰ μὴ ἐν διαστάσει γένοιτο. Ὡσαύτως δὲ καὶ τὸ ἁπτόμενον, [n] ἐν ταυτότητι γενόμενον, [o] φθαρείη. Ἐξ ὧν δῆλον, ὅτι ἀεὶ ἥ τε αἴσθησις, καὶ τὸ αἰσθήσει προσχρώμενον, εἰς τὸ ἔξω φέρεται, εἰ [p] μέλλει τὸ αἰσθητὸν καταλήψεσθαι. Ὡσαύτως δὲ καὶ ἡ φαντασία ἀεὶ ἐπὶ τὸ ἔξω φέρεται, καὶ [q] τῇ τάσει αὐτῆς τὸ εἰκόνισμα [r] παρυφίσταται, ἤτοι καὶ [s] παρασκευάζει ἔξωθεν [t] αὐτῇ τῇ
[782] πρὸς τὸ ἔξω τάσει τὴν ὡς ἔξω ὄντος εἰκονίσματος [u] ἐνδεικνυμένου [αἴσθησιν]. Καὶ τούτων μὲν κατάληψις τοιαύτη, ὧν οὐδεμία εἰς ἑαυτὴν συννεύουσα καὶ συναγομένη ἐντύχοι ἂν ἢ τῷ αἰσθητῷ ἢ τῷ ἀναισθήτῳ εἴδει. [x] Ἐπὶ δὲ τοῦ νοῦ,

[f] συμβαίνειν] –βαίνει V. A.

[g] Πάντῃ, *omnimodo*, dedi ex Holsten. pro πάντα ap. Cant. HEEREN. πάντα̈ A.

[h] προσχρώμ.] προσχόμενον A.

[i] τῆς ἔξω] τοῖς ἔξω V.

[k] οὐ χινουμ.] οὐχ ἑνούμενον V. A. E.

[l] ταυτότητι] αὐτότητι V.

[m] ἴδιον] ἴδοι V. A. P. Holsten.

[n] ἐν ταυτότητι deest V.

[o] φθαρήει] φθαρείη V. A.

[p] μέλει] μέλλει V. A.

[q] τῇ τάσει] ἡ τάξις V.

[r] παρυφίσταται] παραφίσταται V. E. παρηᵃφίσταται A.

[s] παρασκευάζει] παρασκευάζον V. A.

[t] ἡ αὐτὴ πρὸς] Ante πρὸς add. τῇ V. A. ib. Habet Cant. et cum eo Patric. [Holst.] ἡ αὐτὴ πρὸς τὸ etc. quod sensui adversatur. Vult enim scriptor *imaginationis eam vim esse, ut vel imaginem ut præsentem sibi sistat, vel ipsa sua, in rem extra se positam, intensione, imaginem ejus ut extra se positam cernat.* Deleto itaque ἡ ante αὐτὴ rescripsi αὐτῇ. In proximis clare apparet post ἐνδεικνυμένου excidisse vocem, ad quam præcedens τὴν referri possit. Supplendum est sensu postulante αἴσθησιν, vel simile verbum; nisi forte in ἐνδεικνυμένου latere malis ἔνδειξιν. HEEREN.

[u] ἐνδεικνύμενον] Sic V. A. Cant. ἐνδεικνυμένου Heeren.

[x] Ἐπὶ] ἐπεὶ V. A.

οὐ τοῦτον τὸν τρόπον ἡ κατάληψις, ἀλλὰ συννεύοντος εἰς
ἑαυτὸν, καὶ ἑαυτὸν θεωροῦντος. Παρεξελθὼν γὰρ τοῦ θεά-
σασθαι τὰς ἑαυτοῦ ἐνεργείας, καὶ ὄμμα εἶναι [y]τῶν αὐτοῦ
ἐνεργειῶν, [z]οὐσῶν τὸ ὅραμα, οὐδὲν ἂν νοήσειεν. Ὡς μὲν οὖν
ἦν [a]ἡ αἴσθησίς τε καὶ [b]τὸ αἰσθητὸν, οὕτως ἐστὶ νοῦς τε καὶ τὸ
[c]νοητόν. Θεωρεῖ δὲ ἡ μὲν ἐκτεινομένη εἰς τὸ ἔξω, εὑρίσκουσα
τὸ αἰσθητὸν [d]ἐν τῇ ὕλῃ κείμενον· ὁ δὲ νοῦς εἰς αὑτὸν συνα-
γόμενος, [e]οὐδαμῇ ἔξω ἐκτεινόμενος, ὅπερ καὶ [f]ἐδόκει τισὶν,
ὀνόματος διαφορᾶς προστεθείσης τῇ τοῦ νοῦ ὑποστάσει καὶ
τῆς φαντασίας. [g]Ἡ γὰρ ἐν λογικῷ ζώῳ φαντασία δέ-
δοκτο αὐτοῖς νόησις· ἀλλ' [h]ἐκείνοις μὲν πάντα ἀπαρτήσασιν p. 92.
ἀπὸ τῆς ὕλης καὶ τῆς σωματικῆς φύσεως, ἀκόλουθον ἦν
καὶ τὸν νοῦν τούτων ἀναρτᾶν. Ὁ δ' ἡμέτερος [[i]νοῦς] σω-
[784] μάτων καὶ ἑτέρων θεωρὸς οὐσιῶν, [k]που τοίνυν κειμένας κατα-
λήψεται αὐτάς. Ἔξω [l]δὲ ὄντων ὕλης οὐδαμοῦ ἂν εἴη
ταῦτα. Δῆλον οὖν, ὡς νοερὰ καὶ [m]νοήσει συναχθήσεται.
Καὶ τοίνυν εἰ νοερὰ [n]εἰς τὸν νοῦν, καὶ τὸ νοητὸν καὶ [o]ἑαυτὸν
θεωρήσει, νοῶν τὰ νοητά. [p]Καὶ χωρῶν εἰς [q]ἑαυτὸν, νοεῖ διὰ

[y] τοῦ αὐτοῦ] τῶν αὐτοῦ V. A. E.

[z] οὐσῶν τὸ] οὐσιῶν τε Holsten.

[a] αἰσθησ.] ἡ αἴσθησις V. A.

[b] Delevi articulum, quem ante αἰσθητὸν et νοητὸν male inserunt codd. Apud Cant. quoque ante νοητὸν deest. HEEREN.

[c] νοητὸν] τὸ νοητὸν V. A.

[d] ἐν sensu postulante addidi. Desideratur illud quoque ap. Holsten. HEEREN.

[e] οὐδαμῇ jam Cant. in marg. rescripserat pro εἰ δὲ μὴ, quod male tenent codd. HEEREN.

[f] ἐδόκει] καὶ ἐδόκει V. A.

[g] Ἡ γὰρ] εἰ γὰρ V.

[h] ἐκείνοις] εἰ ἐκείνοις V. P. A.

[i] Supplevi νοῦς, quod salvo sensu vix abesse potest. HEEREN.

[k] Male hic habet Cant. Ποῦ τοίνυν κειμένας καταλήψεται αὐτὰς ἔξω δεόντων ὕλης; οὐδαμοῦ ἂν εἴη ταῦτα. Sed priora pro interrogatione accipere vetat particula δέ. Clara sunt omnia modo pro ποῦ legas που, *alicubi*. Post δῆλον addidi οὖν ut nexus constaret. HEEREN.

[l] δεόντων] δὲ ὄντων V. A. E.

[m] νοάσει] νοάσει ? V. νοήσει A. E.

[n] εἰς τὸν νοῦν positum hic est pro ἐν τῷ νοΐ, quo sensu εἰς interdum poni constat ex lexicographis. HEEREN.

[o] ἑαυτῶν] ἑαυτὸν V. A.

[p] χωρῶν] καὶ χωρῶν V. P.

[q] αὐτὸν] ἑαυτὸν V. In marg. A. add. eadem manu: καὶ χωρῶν εἰς

τὸ εἰς ἐκεῖνα [r]χωρεῖν. Εἰ δὲ πολλὰ [s]καὶ τὰ νοητὰ, (πολλὰ γὰρ ὁ νοῦς νοεῖ καὶ οὐχ ἓν,) πολλὰ ἂν εἴη [t]ἐξ ἀνάγκης καὶ αὐτός. [u]Κεῖται δὲ πρὸ τῶν πολλῶν τὸ ἕν, ὥστε ἀνάγκη πρὸ τοῦ νοῦ εἶναι τὸ ἕν.

6 Ἀρχύτου ἐκ τοῦ περὶ Νοῦ καὶ Αἴσθησιος.

[a]Αἴσθασις μὲν ἐν σώματι γίγνεται, [b]νόος δ' ἐν ψυχᾷ. Τὸ μὲν γὰρ ἀρχὰ τῶν [c]αἰσθατῶν ὑπάρχει, τὸ δὲ τῶν νοατῶν. Πλάθεος μὲν γὰρ μέτρον ἀριθμὸς, μάκεος δὲ πούς, [d]ῥοπᾶς δὲ καὶ σταθμᾶς ζυγὸν, ὀρθότατος δὲ καὶ εὐθύτατος κανὼν καὶ σταθμὰ, [e]ὀρθὰ γωνία. Οὕτως δὲ καὶ τῶν μὲν σωμάτων [f]αἴσθασις μέτρον, τῶν δὲ νοατῶν νόος ἀρχὰ καὶ μέτρον ἐστί.
[786] Καὶ ὁ μὲν νόος ἀρχὰ νοατῶν τε [g]καὶ φύσει [h]πράτων· [i]ἁ δὲ [k]αἴσθασις [αἰσθατῶν καὶ φύσει δευτέρων]. Ὁ μὲν γὰρ ἁμῖν ἐστὶν ἀρχὰ τᾶς ψυχᾶς, ἁ δὲ τοῦ σώματος. Καὶ ὁ μὲν νόος τῶν [m]τιμιωτάτων ἐστὶ κριτὰς, ἁ δ' αἴσθασις τῶν

(sic) ἑαυτὸν νοεῖ, διὰ τὸ εἰς ἐκεῖνα χωρεῖν. Εἰ δὲ πολλὰ τὰ νοητὰ etc.

r χωρεῖς] χωρεῖν V.

s καὶ ante τὰ deest V.

t Male hic inserit Cant. [cum A. et Holst.] καὶ, quod deest in cod. V. In proximis πρὸ rescripsi loco πρός. Repetit enim hic scriptor, quod in initio loci posuerat. HEEREN. πρὸ Holst.

u Κεῖται—τὸ ἕν deest V.

6.

a Αἴσθησις] Αἴσθασις A.

b νοῦς] νόος V. A. E.

c αἰσθητῶν] αἰσθατῶν V. A. αἰσθήσεων P.

d ῥόπου—σταθμὸν] ῥοπᾶς—σταθμᾶς V. A.

e ὀρθαγωνία] ὀρθὰ γωνία A.

f αἴσθασις] αἴσθησις A.

g καὶ sensu jubente addidi. HEEREN.

h πρῶτον] πράτων ed. Heeren.

i Legitur apud Cant. nullo sensu: ἁ δὲ αἴσθασις ἁμῖνον μὲν γάρ ἐστιν ἀρχὰ τ. ψ. quæ corrupta simul et mutilata esse, nemo facile dubitaverit. Neque tamen quid exciderit difficile intellectu est. Docet enim illud membrorum sibi oppositorum ratio. Nam cum mens dicatur principium intelligibilium et natura sua primum, sequitur ut sensus esse debeat principium sensibilium et natura sua secundum. Uncis itaque inclusa quæ desiderantur inserui; simulque proxima ordine verborum restituto, et vestigiis antiquæ lectionis insistens, emendavi, rescribendo: ὁ (scil. νοῦς) μὲν γὰρ ἁμῖν ἐντι ἀρχὰ etc. HEEREN.

k αἴσθησις etc.] αἴσθασις, ἁμῖν· τὸ μὲν γάρ ἐστιν etc. V. A.

m τιμιωτάτων] τιμαιετάτων V. A. τιμιετάτον E. f. l. τιμαεστάτων.

χρησιμωτάτων. Ἁ μὲν γὰρ αἴσθασις τῶ σώματος [n]ἕνεκεν [o]συνέστακε, καὶ τὰς ἐς τοῦτο [p]λειτουργίας· ὁ δὲ νόος καὶ [q]τᾶς ἐς ταῦτα [r]πολυφραδμοσύνας. Καὶ ὁ μὲν νόος ἐστὶν ἀρχὰ τᾶς ἐπιστήμας, ἁ δ' αἴσθασις τᾶς δόξας· ἁ μὲν γὰρ ἔχει τὰν ἐκ τῶν [s]αἰσθατῶν ἐνέργειαν, ὁ δὲ τὰν ἐκ τῶν νοατῶν. Τυγχάνοντι δὲ τὰ μὲν [t]αἰσθατὰ τῶν πραγμάτων κινάσιος μεταλαμβάνοντα κοινὰ ἐόντα, τὰ δὲ [u]νοατὰ στάσιος καὶ ἰδιότατος. Παραπλασίως δὲ καὶ ἁ αἴσθασις καὶ ὁ νόος ἔχοντι· ἁ μὲν γὰρ αἴσθασις τῷ αἰσθατῷ, τὸ δ' αἰσθατὸν καὶ κινεῖται καὶ μεταβάλλει καὶ οὐδέποτε ἐν ταυτῷ ἀτρεμεῖ· διὸ καὶ μᾶλλον καὶ ἧττον καὶ βέλτιον καὶ χεῖρον γίνεται [v]ὁρῆν· ὁ δὲ νόος τῷ νοατῷ, τὸ δὲ νοατὸν ἀκίνατον ἐξ
[788] οὐσίας· διὸ οὔτε μᾶλλον, οὔτε ἧττον, οὔτε βέλτιον, οὔτε χεῖρόν ἐστιν νοεῖν τὸ νοατόν. [x]Καὶ καθάπερ νόος τὸ πρᾶτον βλέπει καὶ τὸ παράδειγμα, οὕτως ἁ αἴσθασις τὰν εἰκόνα καὶ τὸ δεύτερον. Ὁ μὲν γὰρ νόος οὐκ [y]ἄνθρωπον [z]ἁπλῶς, ἁ δ' αἴσθασις ἁπλῶς τὰν τῶ [a]ἁλίω σφαῖραν, ἢ [b]τὰς χειροτεχνῶν . . . Ἔτι μὲν νόος ἀμερὴς καὶ [c]ἀδιαίρετος, καθάπερ μονὰς καὶ στιγμή· παραπλησίως δὲ καὶ τὸ νοατόν. Τὸ γὰρ εἶδος οὔτε πέρας σώματός ἐστιν οὔτε ὅρος, ἀλλὰ μόνον τύπωσις τῶ ὄντος, [d]ᾇ ὄν ἐστιν, ἁ δ' αἴσθασις μεριστὰ καὶ

[n] ἕνεκεν] ἕνεκε A.
[o] συνέστηκε] συνέστακε V. A.
[p] λειτουργείας] –γίας A.
[q] τᾶς ἐς ταῦτα] τὰν ἐς ταύτας A. Cant.
[r] πολυφραδμ.] πολυφραγμ. A.
[s] αἰσθατῶν] αἰσθατᾶς A.
[t] αἰσθητὰ] αἴσθατα V.
[u] νοητὰ στάσεως] ἔνθα τὰς στάσιος V. A. E.
[v] ὁρῆν Cant. A. ὁρᾶν Heeren.
[x] Καὶ, quod nexus sermonis postulat, addidi. HEEREN.
[y] ἄνθρωπον] ἀνθρώπων V. et A. sine acc.
[z] Verba ἁπλῶς ἁ δ' αἴσθασις desunt V.
[a] ἡλίω] ἁλίω V. A.
[b] τὰς χειροτεχνατῶν] τᾶς χειροτεχνατῶν A. τὰς χειροτεχνῶν Heeren.
ib. Post χειροτεχνῶν excidit ἐργασίας, *opera artificum*, vel simile verbum. HEEREN.
[c] αὐταίρετος] ἀδιαίρετος V. A.
[d] ᾗ ὅ] ᾗ ὂν V. A. P.
ib. ᾇ ὄν, *quatenus ens est*, edidi pro ᾗ ὂν ap. Cant. [A.]. HEEREN.

διαιρετά. Τῶν γὰρ ὄντων [e] ἐστὶ τὰ μὲν αἰσθητὰ, τὰ δὲ δοξαστὰ, τὰ δὲ ἐπιστατὰ, τὰ δὲ νοατά. Καὶ τὰ μὲν σώματα, [f] ὧν ἐστί τις ἀντιτυπία, αἰσθατά· δοξαστὰ δὲ τὰ μετέχοντα τῶν [g] εἰδέων ὡς αἱ εἰκόνες, οἷον ὁ τὶς ἄνθρωπος τῷ ἀνθρώπῳ, καὶ [h] τὸ τὶ τρίγωνον τῷ τριγώνῳ· ἐπιστατὰ δὲ, τὰ τοῖς εἴδεσι συμβεβηκότα ἐξ ἀνάγκας, ὡς ἐν [i] γαμετρίᾳ τὰ τοῖς σχήμασι· νοατὰ δὲ [k] αὐτὰ τὰ εἴδεα, καὶ αἱ ἀρχαὶ τῶν ἐπιστατῶν· οἷον [l] αὐτὸς ὁ κύκλος, καὶ τρίγωνον, καὶ σφαῖρα. Τυγχάνοντι δὲ καὶ ἐν ἁμῖν αὐτοῖς κατὰ ψυχὰν
[790] [ll] γνώμιες τέτταρες, νόος, ἐπιστάμα, δόξα, αἴσθασις· ὧν αἱ p. 93.
μὲν δύο τῷ λόγῳ ἀρχαί ἐντι, οἷον νόος καὶ αἴσθασις, τὰ δὲ δύο τέλη, οἷον ἐπιστάμα καὶ δόξα. Τὸ δ' ὅμοιον ἀεὶ τῷ ὁμοίῳ γνωστικὸν, [m] ὅθεν φανερὸν, ὅτι ὁ μὲν νόος ἐν ἁμῖν τῶν νοατῶν γνωστικὸς, ἁ δὲ ἐπιστάμα τῶν ἐπιστατῶν, [n] ἁ δὲ δόξα τῶν δοξαστῶν, [o] ἁ δὲ αἴσθασις τῶν αἰσθατῶν.

7

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ, Ἀναξαγόρας, Πλάτων, Ξενοκράτης, Κλεάνθης, θύραθεν εἰσκρίνεσθαι τὸν νοῦν.

[a] ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ, καὶ Ἐμπεδοκλῆς, καὶ Δημόκριτος, ταυτὸν νοῦς καὶ [b] ψυχὴ, καθ' οὓς οὐδὲν ἂν εἴη [c] ζῶον ἄλογον κυρίως.

[e] ἔστι] ἐπὶ A.

[f] ὡς] ὧν V. A.

[g] ἰδέων] εἰδέων V.

[h] Post τὸ addidi τὶ, quod sensus simul et præcedens ὁ τὶς ἄνθρωπος postulat. Distinguit nempe Archytas triangulum vel hominem datum a triangulorum et hominum specie. HEEREN.

[i] γεωμετρία] γαμετρία V. A.

[k] καὶ ante αὐτὰ deest V. A. E.

[l] ὁ ante αὐτὸς deest V. A.

[ll] γνώμιες] γνώσιες Dindorf. T. L. G. t. 2. p. 680 D.

[m] ὅθεν φανερὸν] ὅθεν deest A. Cant. nescio unde sumpserit Heerenius.

[n] ἁ δὲ δόξα τῶν δοξαστῶν om. A. et Cant. casu fortasse, ea enim verba versio Latina reddidit.

[o] ἁ δὲ etc.] ἁ δὲ αἴσθασις τῶν αἰσθατῶν V. P. A. (αἰσθῶν A.)

7.

[a] *Parmenidem* animam et mentem pro eodem habuisse auctor est Diog. IX. 22. HEEREN.

[b] ψυχὴ] ψυχὴν A.

[c] ζώων] ζῶον A.

8 Ἰαμβλίχου ἐκ τοῦ περὶ Ψυχῆς.

Πάλιν τοίνυν περὶ τοῦ νοῦ καὶ πασῶν τῶν κρειττόνων [792²] δυνάμεων τῆς ψυχῆς οἱ μὲν Στωϊκοὶ λέγουσιν μὴ εὐθὺς ἐμφύεσθαι τὸν λόγον, ὕστερον δὲ συναθροίζεσθαι ἀπὸ τῶν αἰσθήσεων καὶ φαντασιῶν περὶ δεκατέσσαρα ἔτη.

Οἱ δ' ἀπὸ Πλάτωνος καὶ Πυθαγόρου, παρεῖναι μὲν καὶ ἐν τοῖς ἀρτιγενέσι τὸν λόγον φασὶ, ἐπισκοτεῖσθαί γε μὴν ἐν τοῖς ἔξωθεν, καὶ μὴ ἐνεργεῖν τὴν [a] οἰκείαν ἐνέργειαν, ἀλλ' ἡσυχάζειν. Ἤδη τοίνυν περὶ τοῦ νοῦ πολλοὶ μὲν Περιπατητικοὶ [b] τὸν ἐκ σπέρματος καὶ [c] τὸν ἀπὸ τῆς φύσεως ἄλλον νοῦν ὑποθέμενοι, [[d] τὸν μὲν] ὡς αὐτίκα μάλα ἀποβλαστάνοντα ἀπὸ τῆς πρώτης γενέσεως, [τὸν δὲ] καὶ χωριστὸν καὶ θύραθεν ἐπικαλούμενον ὕστερον παραγίγνεσθαι λέγουσιν ὀψιαίτατα, ἐπειδὰν τελειωθῇ μὲν [e] ὁ κατὰ δύναμιν νοῦς· ἐπιτηδείως δὲ [f] μετέχειν τῆς κατ' ἐνέργειαν νοήσεως.

Πολλοὶ δὲ αὐτῶν τῶν Πλατωνικῶν καὶ τὸν νοῦν τῆς ψυχῆς ἅμα τῇ πρώτῃ εἰσόδῳ αὐτῆς εἰς τὸ σῶμα συνεισάγουσιν, οὐδὲ εἶναι ὅλως ἑτέραν μὲν αὐτὴν, ἕτερον δὲ αὐτῆς τὸν νοῦν.

Κεφ. μα'.

ΠΕΡΙ ΨΥΧΗΣ.

1

[794] ΘΑΛΗΣ ἀπεφήνατο πρῶτος τὴν ψυχὴν [a] ἀεικίνητον ἢ αὐτοκίνητον.

8.

[a] εἰκείαν] οἰκείαν V. A.

[b] τὸν ἐκ σπέρματος] τῶν ἐκ σπερμάτων V. A.

[c] τὸν] τῶν Cant.

[d] Exciderunt apud nostrum verba τὸν μὲν et τὸν δὲ, quæ sensu flagitante uncis inclusa addidi. Expressit ea jam in versione Cant. HEEREN.

[e] ὁ ante κατά deest V.

[f] μετέχειν] δὲ μετέχειν V. A.

1.

[a] ἀκίνητον] ἀεικίνητον V. A. P. Plut. Plac. IV. 2.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ ἀριθμὸν [b] αὑτὸν κινοῦντα, τὸν δ' ἀριθμὸν ἀντὶ [c] τοῦ νοῦ [cc] παραλαμβάνει.

Ὁμοίως δὲ καὶ [d] ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ.

[796] [e] ἈΛΚΜΑΙΩΝ φύσιν αὐτοκίνητον [f] κατ' ἀΐδιον κίνησιν, καὶ διὰ τοῦτο ἀθάνατον [g] αὐτὴν καὶ [h] προσεμφερῆ τοῖς θείοις ὑπολαμβάνει.

ΔΙΚΑΙΑΡΧΟΣ ἁρμονίαν τῶν τεττάρων στοιχείων.

ἈΣΚΛΗΠΙΑΔΗΣ ὁ ἰατρὸς, [i] συγγυμνασίαν τῶν [k] αἰσθήσεων.

[l] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ [m] ἐντελέχειαν πρώτην σώματος φυσικοῦ, ὀργανικοῦ, [n] δυνάμει ζωὴν ἔχοντος· τὴν δὲ ἐντελέχειαν ἀκουστέον ἀντὶ τοῦ εἴδους καὶ τῆς ἐνεργείας.

ἈΝΑΞΙΜΕΝΗΣ, Ἀναξαγόρας, Ἀρχέλαος, Διογένης [o] ἀερώδη.

ΟἹ ΣΤΩΙΚΟΙ πνεῦμα νοερὸν, θερμόν.

[b] αὑτὸν edidi ex Plut. pro αὐτὴν quod cum Cant. habent codd. nullo sensu. HEEREN.

[c] τοῦ νοῦ] τούτου V. A.

[cc] παραλαμβάνει] —βάνειν A.

[d] Ξεναγόρας] Ξενοκράτης V. A. E. Ἀναξαγόρας P.

ib. Plut. de Procreat. Animæ Op. II. p. 1012. Ξενοκράτης, τὴν ψυχῆς οὐσίαν ἀριθμὸν αὐτὸν ὑφ' ἑαυτοῦ κινούμενον ἀποφηνάμενος. HEEREN.

[e] Tribuit hanc Alcmæoni sententiam Aristot. de Anima I. 2. Ἀλκμαίων——φησὶ αὐτὴν ἀθάνατον εἶναι, διὰ τὸ ἐοικέναι τοῖς ἀθανάτοις. Τοῦτο δ' ὑπάρχειν αὐτῇ ὡς ἀεὶ κινουμένῃ, κινεῖσθαι δὲ καὶ τὰ θεῖα ἅπαντα συνεχῶς ἀεὶ, ὡς σελήνην, ἥλιον, ἀστέρας, καὶ τὸν ὅλον οὐρανόν. Patet simul ex his quomodo explicandum sit Laërtii illud VIII. 83. Ἔφη δὲ καὶ τὴν ψυχὴν ἀθάνατον, καὶ κινεῖσθαι αὐτὴν συνεχῶς ὡς τὸν ἥλιον, in quo frustra hæret Bruck. I. p. 1133. Nempe quod anima ita ut sol ad cœlestia pertinet, quæ per se ipsa moventur, ponere potuit Alcmæon, animam solis instar moveri. HEEREN.

[f] κατὰ] καὶ A.

[g] αὐτὸν] αὐτὴν A. V. E.

[h] προσεμφερῆ] —φερεῖ A.

[i] συγγυμνασίαν] γυμνασίαν A.V.E.

[k] αἰσθήσεων] ἀθλήσεων A.

[l] Ἀριστοτέλης] Ante h. v. exhibet A. in rubrica, Πόσα καὶ τίνα περὶ ψυχῆς προβλήματα· deinde in atramento, περὶ οὐσίας· περὶ δυνάμεως (δυνάμεων Cant.)· περὶ ἐνεργειῶν· περὶ ἔργων· περὶ μέτρου· περὶ καθόδου· περὶ διακληρώσεως· περὶ τοῦ ἐν τῷ σώματι βίου· (περὶ κρίσεως add. A.) περὶ ἀποκαταστάσεως· περὶ πολυμερίας· περὶ μετεμψυχώσεως. Et similiter fere Cant.

ib. Legitur hæc animæ definitio, simulque copiose explicatur de Anim. II. 1. HEEREN.

[m] ἐντελέχειαν] ἐνδελέχειαν A.

[n] δύναμιν] δυνάμειν A. δυνάμει V. E.

[o] ἀεροειδῆ] ἀερώδη V. A.

ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ δὲ καὶ [p]Πήγασος, πυρώδη.

ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ πυρῶδες σύγκριμα, [q]ἐκ τῶν λόγῳ θεωρητῶν, σφαιρικὰς μὲν ἐχόντων τὰς ἰδέας, πυρίνην δὲ τὴν δύναμιν, ὅπερ σῶμα εἶναι.

ἩΡΑΚΛΕΙΔΗΣ φωτοειδῆ τὴν ψυχὴν ὡρίσατο.

ΛΕΥΚΙΠΠΟΣ ἐκ πυρὸς εἶναι τὴν [r]ψυχήν.

ΔΙΟΓΕΝΗΣ ὁ Ἀπολλωνιάτης ἐξ [s]ἀέρος εἶναι τὴν ψυχήν.

[798] [t]ἽΠΠΩΝ ἐξ ὕδατος τὴν ψυχήν.

ΞΕΝΑΡΧΟΣ ὁ Περιπατητικὸς, καί τινες ἕτεροι τῆς αὐτῆς αἱρέσεως, τὴν κατὰ τὸ εἶδος τελειότητα, καὶ [u]ἐντελέχειαν, καθ' ἑαυτὴν οὖσαν ἅμα, καὶ [x]μετὰ τοῦ σώματος συντεταγμένην.

ἘΠΙΚΟΥΡΟΣ κρᾶμα ἐκ τεττάρων, ἐκ ποιοῦ [y]πυρώδους, ἐκ ποιοῦ ἀερώδους, ἐκ ποιοῦ πνευματικοῦ, ἐκ [z]τετάρτου τινὸς ἀκατονομάστου, τοῦτο δ' ἦν [a]αὐτῷ τὸ αἰσθητικόν· ὧν τὸ μὲν πνεῦμα κίνησιν, τὸν δὲ ἀέρα ἠρεμίαν, [b]τὸ δὲ θερμὸν τὴν φαινομένην θερμότητα τοῦ σώματος, τὸ δ' ἀκατονόμαστον p. 94.
τὴν ἐν ἡμῖν [c]ἐμποιεῖν αἴσθησιν, ἐν οὐδενὶ γὰρ τῶν ὀνομαζομένων [d]στοιχείων εἶναι αἴσθησιν.

p Πήγαθος] Πήγασος V. A. E. Ἵππασος conj. Wyttenbach. *Leucippus* Cant. in vers.

q Cant. habet corrupte ἐκ τῶν λόγων θεωρικῶν, pro quo codd. V. A. θεωρητικῶν. Attamen cum Plut. legendum esse ἐκ τῶν λόγῳ θεωρητῶν, plane dubitare nequit. Sunt enim τὰ λόγῳ θεωρητὰ, Atomi, quibus omnia orta esse docuit Democritus. Cf. supra p. 306. Confirmat plane hæc Arist. de Anim. I. 2. Δημόκριτος ταυτὸ εἶναι ψυχὴν καὶ νοῦν. Τοῦτο δὲ εἶναι ἐκ τῶν πρώτων καὶ ἀδιαιρέτων σώματων· κινητικὸν δὲ, διὰ μακρομέρειαν καὶ τὸ σχῆμα· τῶν δὲ σχημάτων εὐκινητότατον τὸ σφαιροειδὲς λέγει. Τοιοῦτον δ' εἶναι τόν τε νοῦν καὶ τὸ πῦρ. HEEREN. θεωρητικῶν V. E. θεωρατικῶν A.

r ἀνεφήνατο post ψυχὴν deest V. A. E.

s Post ἀέρος add. εἶναι A.

t Ἵππων ἐξ ὕδατος τὴν ψυχὴν desunt V. teste Heeren. Habet A. nisi quod ibi $\overset{\omega\nu}{\pi\pi}$ sine Ἱ initiali.

u ἐντελέχειαν] ἐνδελέχειαν A.

x μετὰ] κατὰ A.

y Post πυρώδους add. ἔκτινος ἀερώδους V. ἐκ πυροῦ ἀερώδους (sic) A.

z τετάρτου] τεττάρου A.

a αὐτῷ] αὐτὴ A. Cant.

b τὸν] τὸ V. A.

c ἐμποιεῖ] ἐμποιεῖν V.

d Post στοιχείων add. εἶναι V. A.

Ἑρμοῦ. [Patrit. p. 41 b.]

Ψυχὴ τοίνυν ἐστὶν οὐσία ἀΐδιος νοητικὴ νόημα ἔχουσα τὸν ἑαυτῆς λόγον.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου [p. 247.]

Ἡ γὰρ ἀχρώματός τε καὶ ἀσχημάτιστος, καὶ [a] ἀναφὴς, οὐσία ὄντως ψυχῆς.

3 Ἑρμοῦ. [Patrit. p. 40 b.]

Ἔστι τοίνυν [a] ἡ ψυχὴ ἀσώματος οὐσία· εἰ γὰр ἔχει
[800] σῶμα οὐκ [b] ἔτι ἔσται [c] αὑτῆς σωστική. Πᾶν γὰρ σῶμα δεῖται τοῦ εἶναι, δεῖται καὶ ζωῆς τῆς ἐν τάξει κειμένης. Παντὶ γὰρ τῷ γένεσιν ἔχοντι καὶ μεταβολὴν [d] δεῖ ἐπακολουθεῖν. Τὸ γὰρ γιγνόμενον γίγνεται ἐν μεγέθει, γιγνόμενον [e] γὰρ αὔξην ἔχει· πάντι δὲ τῷ αὐξανομένῳ ἐπακολουθεῖ μείωσις, μειώσει φθορά. [f] Μετειληφὸς δὲ εἴδους ζωῆς, ζῇ, καὶ κοινωνεῖ τοῦ εἶναι κατὰ τὴν ψυχήν. Ἡ δὲ αἰτία ἑτέρῳ τοῦ εἶναι αὐτὴ πρώτη ὄν ἐστι. Τὸ δὲ εἶναι νῦν λέγω, [g] τὸ ἐν λόγῳ γίνεσθαι, καὶ μετέχειν ζωῆς νοερᾶς. Παρέχει δὲ ἡ ψυχὴ ζωὴν νοεράν. Καλεῖται δὲ ζῷον μὲν διὰ τὴν ζωὴν, λογικὸν δὲ διὰ τὸ νοερὸν, θνητὸν δὲ διὰ τὸ σῶμα· ψυχὴ ἄρα ἀσώματος, ἀμετάπτωτον ἔχουσα τὴν δύναμιν. [h] Πῶς γὰρ

2.

[a] ἀναφανὴς] ἀναφὴς V. P. A.

3.

Ex his et quæ proxime sequuntur Hermetis locis, Cant. tantum prima et ultima verba dedit. Integra tamen leguntur in codd. V. A. E. ex quibus omissa supplevi, ut et apud Patrit. HEEREN.

[a] ἡ ante ψυχὴ deest V. A.

[b] οὐκ ἔσται μετ' αὐτῆς] οὐκ ἔτι ἔσται αὐτῆς V. A. P.

[c] αὑτῆς] ἑαυτῆς A.

[d] δεῖ ἐπακ.] δεῖ ἐπακολουθεῖν V. A. E. P.

[e] γὰρ bene hic addit Patrit. Statim tamen post παντὶ nexus sententiarum postulat δὲ pro γάρ. HEEREN.

[f] Μετειληφὸς] μετειληφὼς V. A.

ib. Hactenus Cant. Quæ jam sequuntur supplevi ex codd. V. A. E. κατὰ ante τὴν ψυχὴν revocavi ex Patritio. HEEREN.

[g] τὸ ἐν λόγῳ γίνεσθαι καὶ μετέχειν] τῷ ἐν λόγῳ γενέσθαι καὶ μετέχει A.

[h] Quæ hic integra sunt in codd. V. A. E. ap. Patrit. minus plena sic leguntur: Πῶς γὰρ οἷόν τέ ἐστι λέγειν ζῷον μὴ οὔσης τῆς δια-

οἷόν τέ ἐστι λέγειν ζῷον νοερὸν, μὴ οὔσης οὐσίας τῆς καὶ παρεχούσης ζωήν; Ἀλλ' οὐδὲ λογικὸν οἷόν τέ ἐστιν εἰπεῖν, μὴ οὔσης τῆς διανοητικῆς οὐσίας, τῆς καὶ παρεχούσης νοερὰν ζωήν. Ἐν πᾶσι δὲ οὐκ ἀφικνεῖται τὸ νοερὸν διὰ τὴν τοῦ σώματος σύστασιν πρὸς τὴν ἁρμονίαν. Ἐὰν γὰρ ὑπερέχῃ ἐν τῇ συστάσει τὸ θερμὸν, κοῦφος καὶ ἔνθερμος γίνεται, ἐὰν δὲ τὸ ψυχρὸν, βαρὺς καὶ νωχελὴς γίνεται· φύσις γὰρ ἁρ-
[802] μόζει τὴν τοῦ σώματος σύστασιν πρὸς τὴν ἁρμονίαν. Εἴδη δὲ τῆς ἁρμονίας τρία· τὸ κατὰ τὸ θερμὸν, καὶ τὸ κατὰ [i]τὸ ψυχρὸν, καὶ τὸ κατὰ τὸ μέσον. Ἁρμόζει δὲ κατὰ τὸν ἐπικρατήσαντα ἀστέρα τῆς [k]συγκράσεως τῶν ἀστέρων. Παραλαβοῦσα δὲ ψυχὴ καθὼς εἵμαρται, τούτῳ [l]παρέχει ζωὴν τῷ τῆς φύσεως ἔργῳ. Ἡ φύσις τοίνυν ὁμοιοῖ τὴν ἁρμονίαν τοῦ σώματος τῇ τῶν ἀστέρων συγκράσει, καὶ ἑνοῖ τὰ πολυμιγῆ πρὸς τὴν τῶν ἄστρων ἁρμονίαν, ὥστε ἔχειν πρὸς ἄλληλα συμπάθειαν. Τέλος γὰρ τῆς τῶν ἀστέρων ἁρμονίας τὸ γεννᾶν συμπάθειαν καθ' εἱμαρμένην αὐτῶν.

4 Τοῦ αὐτοῦ. [Patrit. p. 41.] p. 94.

Ψυχὴ τοίνυν ἐστὶν, ὦ Ἄμμων, οὐσία αὐτοτελὴς, ἐν ἀρχῇ 18
ἑλομένη βίον τὸν καθ' εἱμαρμένην, καὶ [a]ἐπεσπάσατο ἑαυτῇ
λόγον ὅμοιον τῇ ὕλῃ, ἔχοντα θυμὸν καὶ ἐπιθυμίαν. Καὶ ὁ 20
μὲν θυμὸς ὑπάρχει ὕλη. Οὗτος, ἐὰν ἕξιν ποιήσῃ πρὸς τὸ τῆς ψυχῆς νόημα, γίνεται ἀνδρεία, καὶ οὐ [b]παράγεται ὑπὸ

νοητικῆς οὐσίας· τῆς καὶ παρεχούσης τὴν νοερὰν ζωήν. HEEREN.

[i] τὸ ψυχρὸν] τὸ om. A.

[k] συγκράσεως edidi ex Patrit. pro inaudito συγκρατήσεως in codd. Idem statim bene habet καθὼς εἵμαρται, *ut fato constitutum est*, pro καθὼς εἴργασται in codd. HEEREN.

[l] παρέχει] παρέχην A.

4.

Apud Patrit. hæc continuo junguntur prioribus, nexu sententiarum non repugnante. In codd. tamen separantur, adjecto in marg. Τοῦ αὐτοῦ. Cant. prima tantum et ultima verba edidit. HEEREN.

[a] ἐπεσπᾶτο] ἐπεσπάσατο V. A. P.

[b] παράγεται ὑπὸ bene cod. E. cum Patrit. pro παράγεται ἀπὸ in codd. V. A. HEEREN. ὑπὸ in A. clarissime.

[804] δειλίας. Ἡ δὲ ἐπιθυμία [c] παρέχεται. Αὕτη ἐὰν ἕξιν ποιήσῃ πρὸς τὸν τῆς ψυχῆς λογισμὸν, γίνεται σωφροσύνη, καὶ οὐ κινεῖται ὑπὸ ἡδονῆς· ἀναπληροῖ γὰρ ὁ λογισμὸς τὸ ἐνδέον τῆς ἐπιθυμίας. Ὅταν δὲ ἀμφότερα ὁμονοήσῃ, καὶ ἴσην ἕξιν ποιήσῃ, καὶ [d] ἔχηται ἀμφότερα τοῦ τῆς ψυχῆς λογισμοῦ, γίνεται δικαιοσύνη. Ἡ γὰρ ἴση ἕξις αὐτῶν ἀφαιρεῖ μὲν τὴν ὑπερβολὴν τοῦ θυμοῦ, ἐπανισοῖ δὲ τὸ ἐνδέον τῆς ἐπιθυμίας. Ἀρχὴ δὲ τούτων ἡ διανοητικὴ οὐσία, καθ' αὑτὴν [e] ἑαυτῇ οὖσα, ἐν τῷ αὐτῆς περινοητικῷ λόγῳ, κράτος ἔχουσα τὸν ἑαυτῆς λόγον. [f] Ἄγει δὲ καὶ ἡγεμονεύει ἡ οὐσία ὥσπερ ἄρχων. Ὁ δὲ λόγος [g] αὐτῆς ὥσπερ σύμβουλος ὁ περινοητικός. Λόγος τοίνυν τῆς οὐσίας ἐστὶ γνῶσις τῶν λογισμῶν, τῶν παρεχόντων εἰκασμὸν λογισμοῦ τῷ ἀλόγῳ. Ἀμυδρὸν μὲν ὡς πρὸς [h] λογισμὸν, λογισμὸν δὲ ὡς πρὸς τὸ ἄλογον, καθάπερ ἠχὼ πρὸς φωνὴν, καὶ τὸ τῆς σελήνης λαμπρὸν πρὸς ἥλιον. Ἥρμοσται δὲ θυμὸς καὶ ἐπιθυμία πρός τινα λογισμὸν, καὶ ἀνθέλκει ἄλληλα, καὶ ἐπίσταται ἐν ἑαυτοῖς κυκλικὴν διάνοιαν.

5 Τοῦ αὐτοῦ. [Patrit. p. 41.]

[806] Ψυχὴ πᾶσα [a] ἀθάνατος καὶ ἀεικίνητος. [b] Ἔφημεν γὰρ

[c] In παρέχεται corruptela latet, ac manca videtur esse oratio. Ponit scriptor mentem sibi assumere iram et concupiscentiam; quarum altera si rationi pareat, fieri fortitudinem; sin minus, ignaviam; altera si pareat, continentiam, sin minus, libidinem. Quibus positis patet verba hæc ἡ δὲ ἐπιθυμία παρέχεται alterum esse membrum, oppositum priori καὶ ὁ μὲν θυμὸς ὑπάρχει ὕλη. Judicent lectores num auctor scripserit, ἡ δὲ ἐπιθυμία ὕλη ὑπάρχει καὶ αὐτή. Αὕτη etc. Certe αὐτὴ facile omitti potuit sequente αὕτη. Patrit. pro παρέχεται edidit παράγεται, nexu sermonis aperte repugnante. HEEREN. Mox ποιήσηται A.

[d] ἔχηται habet cod. E. pro ἔχη τε in codd. V. A. HEEREN. ἔχηται A.

[e] ἑαυτὴ] ἑαυτὴν A.

[f] Ἄγει emendavi hic pro ἄρχει, quod sequente ἄρχων ferri prorsus nequit. HEEREN.

[g] αὐτῆς, revocavi ex Patrit. pro αὐτῶν in codd. HEEREN.

[h] λογισμὸν semel tantum in A.

5.

[a] ἀθάνατος deest ap. Patrit. Mox post σωμάτων addit ille εἶναι. HEEREN.

[b] Ἔφη μὲν] ἔφημεν V. A.

ἐν τοῖς γενικοῖς κινήσεις τὰς μὲν ὑπὸ τῶν ἐνεργειῶν, τὰς δὲ ὑπὸ τῶν σωμάτων. Φαμὲν δὲ τὴν ψυχὴν [c] ἐξ οὐσίας τινὸς οὐχ ὕλης γεγενῆσθαι, [d] ἀσώματον οὖσαν, καὶ αὐτῆς ἀσωμάτου οὔσης. Πᾶν γὰρ τὸ [e] γινόμενον ἀνάγκη ἔκ τινος γεγενῆσθαι. [f] Ὅσων μὲν οὖν τῇ γενέσει φθορὰ ἐπακολουθεῖ, τούτοις δύο κινήσεις ἐπακολουθεῖν ἀνάγκη, τήν τε [g] ψυχῆς ὑφ᾽ ἧς κινεῖται, καὶ τὴν τοῦ σώματος ὑφ᾽ ἧς αὔξεται καὶ φθίνει· ἔτι δὲ καὶ [h] ἀναλυθέντος ἀναλύεται. Ταύτην [i] ὁρίζομαι τὴν κίνησιν τῶν φθαρτῶν σωμάτων. Ἡ δὲ ψυχὴ ἀεικίνητος, ὅτι ἀεὶ αὐτὴ κινεῖται, καὶ ἄλλοις κίνησιν ἐνεργεῖ. Κατὰ τοῦτον οὖν τὸν λόγον ἐστὶ ψυχὴ πᾶσα ἀθάνατος καὶ ἀεικίνητος, ἔχουσα κίνησιν τὴν αὐτῆς ἐνέργειαν. Ἰδέαι δὲ ψυχῶν, θεία, ἀνθρωπίνη, ἄλογος. Ἡ μὲν οὖν θεία, τοῦ θείου σώματος, [k] ἐν ᾧ ἡ αὐτῆς ἐνέργεια. Ἐν μὲν γὰρ αὐτῷ κινεῖται, καὶ [l] ἑαυτὸ κινεῖ. Ἐπὰν γὰρ θνητῶν ζώων ἀπαλλαγῇ, χωρισθεῖσα τῶν ἀλόγων ἑαυτῆς μερῶν, ἐξελθοῦσα εἰς τὸ θεῖον σῶμα, ὡς ἀεικίνητος [m] ἐν ἑαυτῷ κινεῖται, συμπερι-
[808] φερομένη τῷ παντί. Ἡ δὲ ἀνθρωπίνη ἔχει μὲν [n] καί τι τοῦ θείου, συνῆπται δὲ αὐτῇ καὶ τὰ ἄλογα, ἥτε ἐπιθυμία καὶ ὁ θυμός. Καὶ αὗται μὲν ἀθάνατοι, καθότι καὶ [o] αὐταὶ ἐνέργειαι τυγχάνουσιν· αἱ ἐνέργειαι δὲ θνητῶν σωμάτων. Διὸ τοῦ μὲν θείου μέρους τῆς ψυχῆς, οὔσης ἐν τῷ θείῳ σώματι, πόρρω τυγχάνουσιν οὖσαι, ἐπειδὰν δὲ εἰσελθῇ τοῦτο

c ἐξ οὐσίας] ἐξουσίαν V.

d ἀσώματον] ἀσώματος A.

e γινόμενον] γενόμενον A.

f Ὅσων recte habet Patrit. pro ὅσον. HEEREN.

g ψυχῆς] ψυχὴν A.

h Pro ἀναλυθέντος, quod ad σώματος referendum est, Patrit. et cod. E. [et A.] male habent ἀναλυθέντα. HEEREN.

i ὁρίζομεν τὴν κίνησιν] ὁρίζομαι τ. κ. τὸν A.

k ἐν ᾧ quod omittunt codd. addidi ex Patrit. HEEREN. ἡ item om. A.

l ἑαυτὴν] ἑαυτὸ A.

m Pro ἐν αὐτῷ habet Patrit. ἐν ἑαυτῇ. HEEREN. ἑαυτῷ A.

n καί τι] καὶ τὸ A.

o αὐταὶ correxi ex Patrit. pro αὗται αἱ. HEEREN.

εἰς θνητὸν σῶμα, κἀκεῖνα ἐπιφοιτᾷ, καὶ τῇ παρουσίᾳ αὐτῶν γίνεται ἀεὶ ψυχὴ ἀνθρωπίνη. Ἡ δὲ τῶν ἀλόγων συνέστηκεν ἐκ θυμοῦ τε καὶ ἐπιθυμίας. Διόπερ καὶ ἄλογα ἐκλήθη τὰ ζῶα ταῦτα, στερήσει [p] τοῦ λόγου τῆς ψυχῆς. [q] Τετάρτην δὲ νόει τὴν τῶν ἀψύχων, ἥτις ἔξωθεν οὖσα τῶν σωμάτων ἐνεργεῖ κινοῦσα. Αὕτη δ᾽ ἂν εἴη ἐν τῷ θείῳ σώματι κινουμένη, καὶ ὥσπερ κατὰ πάροδον ταῦτα κινοῦσα.

6 Τοῦ αὐτοῦ. [Patrit. p. 41 b.]

Ψυχὴ τοίνυν ἐστὶν ἀΐδιος νοητικὴ [a] οὐσία, νόημα ἔχουσα τὸν ἑαυτῆς λόγον, [b] συννοοῦσα δὲ, διάνοιαν τῆς ἁρμονίας ἐπισπᾶται. Ἀπαλλαγεῖσα δὲ τοῦ φυσικοῦ σώματος, αὐτὴ καθ᾽ αὑτὴν μένει, αὐτὴ ἑαυτῆς οὖσα ἐν τῷ νοητῷ κόσμῳ.
[810] Ἄρχει δὲ τοῦ ἑαυτῆς λόγου, φέρουσα ὁμοίαν κίνησιν [c] ἐν τῷ ἑαυτῆς νοήματι, ὀνόματι ζωὴν, τῷ εἰς ζωὴν ἐρχομένῳ. Τοῦτο γὰρ ἴδιον ψυχῆς, τὸ παρέχειν ἑτέροις ὅμοιον τῇ ἰδιότητι αὐτῆς. Δύο τοίνυν εἰσὶ ζωαὶ καὶ δύο κινήσεις. Μία μὲν ἡ κατ᾽ [d] οὐσίαν, ἑτέρα δὲ ἡ κατὰ φύσιν σώματος. Καὶ ἡ μὲν γενικωτέρα, [e] ἡ δὲ μερικωτέρα. Καὶ ἡ κατ᾽ οὐσίαν ἐστὶν αὐτεξούσιος· ἡ δὲ ἀναγκαστική. Πᾶν γὰρ τὸ κινούμενον τῇ τοῦ κινοῦντος ἀνάγκῃ ὑποτέτακται. Ἡ δὲ κινοῦσα κίνησις τῷ τῆς νοητικῆς οὐσίας ἔρωτι ᾠκείωται. Εἴη γὰρ ἂν ψυχὴ ἀσώματος, ἀμέτοχος οὐσία τοῦ φυσικοῦ σώματος. Εἰ γὰρ ἔχει σῶμα, οὔτε λόγον ἔχει, οὔτε νόησιν. Πᾶν γὰρ σῶμα ἀνόητον· μεταλαβὸν δὲ οὐσίας τὸ εἶναι ζῶον ἔμπνουν

[p] τοῦ λόγου bene habet Patrit. pro τοῦ ἀλόγου in codd. quod sensui aperte repugnat. HEEREN.

[q] Τετάρτην] τέτταρον A.

6.

[a] οὐσία] οὖσα A.

[b] Pro συννοοῦσα quod cum Patrit. habent codd. Cant. male edidit συνοῦσα. HEEREN.

[c] τῷ ἑαυτῆς] ἐν ἑαυτῆς V. ἐν τῷ ἑαυτῆς A. E.

[d] Post οὐσίαν Patrit. inserit αὐτῆς. HEEREN.

[e] Verba ἡ δὲ μερικωτέρα, quæ salvo sensu abesse nequeunt, supplevi ex Patrit. Desunt enim in codd. HEEREN.

ἔσχε. Καὶ τὸ μὲν πνεῦμα τοῦ σώματος, ὁ δὲ λόγος τῆς οὐσίας τοῦ καλοῦ θεωρητικός ἐστι. Τὸ δὲ αἰσθητικὸν πνεῦμα τῶν φαινομένων κριτικόν ἐστι. Διήρηται δὲ εἰς τὰς ὀργανικὰς αἰσθήσεις, καὶ ἔστι τι μέρος αὐτοῦ πνευματικὴ ὅρασις, καὶ πνεῦμα ἀκουστικὸν, καὶ ὀσφρητικὸν, καὶ γευστικὸν, καὶ ἁπτικόν. Τοῦτο τὸ πνεῦμα [f]ἀναγόμενον ὑπὸ διανοίας κρίνει τὸ αἰσθητικὸν, εἰ δὲ μὴ, φαντάζεται μόνον. Τοῦ γὰρ σώματός ἐστι, καὶ δεκτικὸν πάντων. Ὁ δὲ [g]λόγος τῆς οὐσίας ἐστὶ [h]τὸ φρονοῦν. Συνυπάρχει δὲ τῷ λόγῳ ἡ τῶν
[812] τιμίων γνῶσις, τῷ δὲ πνεύματι ἡ δόξα. Τὸ μὲν γὰρ ἀπὸ τοῦ περιέχοντος κόσμου τὴν [i]ἐνέργειαν ἔχει, ἡ δὲ ἀφ᾽ ἑαυτῆς.

7 Περὶ κινήσεως καὶ ἀφθαρσίας ψυχῆς.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἀκίνητον τὴν ψυχὴν, πάσης κινήσεως προηγουμένην, τῆς δὲ κατὰ συμβεβηκὸς μετέχειν, καθάπερ [a]τὰ σχήματα, καὶ τὰ πέρατα, [b]καὶ καθάπαξ τὰ περὶ [c]τοῖς σώμασιν εἴδη.

ΠΛΑΤΩΝ ἄφθαρτον καὶ [d]ἀεικίνητον· λέγει γοῦν ἐν Φαίδωνι· [p. 70.] Εἰπόντος [e]δὴ τοῦ Σωκράτους ταῦτα, ὑπολαβὼν ὁ Κέβης ἔφη, ὦ Σώκρατες, τὰ μὲν ἄλλα ἔμοιγε δοκεῖ λέγεσθαι καλῶς, τὰ δὲ περὶ τῆς ψυχῆς πολλὴν ἀπιστίαν παρέχει τοῖς ἀνθρώποις μὴ ἐπειδὰν ἀπαλλαγῇ [f]τοῦ σώματος, οὐδαμοῦ ἐστι, ἀλλ᾽ ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ διαφθείρεταί τε p. 95.
καὶ ἀπόλλυται ᾗ ἂν ὁ ἄνθρωπος ἀποθάνῃ, εὐθὺς ἀπαλλαττομένη τοῦ σώματος καὶ ἐκβαίνουσα ὥσπερ πνεῦμα ἢ καπνὸς διασκεδασθεῖσα οἴχεται διιπταμένη, καὶ οὐδὲν ἔτι

f ἀναγόμενον ὑπὸ] ἀνάγον γενόμενον A.
g λόγος] λόγον A.
h φρονοῦν] τὸ φρονοῦν V. A.
i Post ἐνέργειαν add. ἔχει V. A. ἀνέχει P.

7.
a Ante σχημ. add. τὰ V. A.
b καθ᾽ ἅπαξ] καὶ καθάπαξ V. A.
c τοῖς] τῆς A.
d ἀκίνητον] ἀεικίνητον V. A. P.
e δὲ] δὴ V. A.
f τοῦ om. A.

οὐδαμοῦ ᾖ. Ἐπεὶ εἴπερ εἴη ποῦ αὐτὴ καθ' αὑτὴν συνηθροισμένη καὶ ἀπηλλαγμένη τούτων τῶν κακῶν (ὧν) νῦν σὺ διῆλθες, [g] πολλὰ ἂν ἐλπὶς εἴη καὶ καλή, ὦ Σώκρατες, ὡς ἀληθῆ ἐστιν ἃ σὺ λέγεις· ἀλλὰ τοῦτο δὴ ἴσως οὐκ ὀλίγης παραμυθίας δεῖται καὶ πίστεως, ὡς ἔστι τε ἡ ψυχὴ ἀποθανόντος τοῦ ἀνθρώπου, καί τινα δύναμιν ἔχει καὶ φρόνησιν. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη ὁ Σωκράτης, ὦ Κέβης· ἀλλὰ τί δὴ ποιῶμεν; Ἢ περὶ αὐτῶν τούτων βούλει διαμυθολογῶμεν, εἴτε εἰκὸς οὕτως ἔχειν, εἴτε μή; Ἐγὼ γοῦν, ἔφη ὁ Κέβης, ἡδέως ἂν [h] ἀκούσαιμ' ἥντινα δόξαν ἔχεις περὶ αὐτῶν.

8 Ἐν ταυτῷ [p. 70.]

Παλαιὸς μὲν οὖν ἔστι τις λόγος οὗτος οὗ μεμνήμεθα, ὡς εἰσὶν ἐνθένδε ἀφικόμεναι ἐκεῖ καὶ πάλιν γε δεῦρο ἀφικνοῦνται καὶ γίγνονται ἐκ τῶν τεθνεώτων. Καὶ εἰ τοῦθ' οὕτως ἔχει, πάλιν γίγνεσθαι ἐκ τῶν ἀποθανόντων τοὺς ζῶντας, ἄλλο τι [a] ᾖ ἐὰν ἡμῶν αἱ ψυχαὶ ἐκεῖ. Οὐ γὰρ ἄν που πάλιν [b] ἐγίγνοντο μὴ οὖσαι· καὶ τοῦτο ἱκανὸν τεκμήριον τοῦ ταῦτ' εἶναι, εἰ τῷ ὄντι φανερὸν γένοιτο, ὅτι οὐδαμόθεν ἄλλοθεν γίγνονται οἱ ζῶντες ἢ ἐκ τῶν τεθνεώτων. Εἰ δὲ μὴ ἔστι τοῦτο, ἄλλου [c] ἀρχύτου δέοι λόγου. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη ὁ Κέβης. Μὴ τοίνυν κατ' ἀνθρώπων εἶδος σκόπει μόνον τοῦτο εἰ βούλει ῥᾷον μαθεῖν, ἀλλὰ καὶ κατὰ ζώων πάντων καὶ φυτῶν, καὶ ξυλλήβδην ὅσα περιέχει [d] γένεσιν, περὶ πάντων ἴδωμεν, ἆρα οὑτωσὶ γίγνεται ἅπαντα οὐκ ἄλλοθεν ἢ ἐκ τῶν ἐναντίων τὰ ἐναντία, ὅσοις τυγχάνει ὂν τοιοῦτόν τι, οἷον τὸ καλὸν τῷ αἰσχρῷ ἐναντίον που, καὶ δίκαιον ἀδίκῳ, καὶ ἄλλα δὴ μύρια, οὕτως [e] ἔσχε. Τοῦτο οὖν σκεψώμεθα, ἆρα ἀναγκαῖον,

[g] πολλὸν A.

[h] ἀκουσαίμην τινα A. qui supra ἔφη λέγει ὁ.

8.

[a] ᾖ ἐὰν] ἦς ἐὰν A. ᾖ εἶεν vel εἶεν libri Platonis.

[b] ἐγίγνωντο A.

[c] ἄν του Plato.

[d] γένεσις A.

[e] ἔχε A.

ὅσοις ἔστι τι ἐναντίον, μηδαμόθεν ἄλλοθεν αὐτὸ γίγνεσθαι, ἢ ἐκ [f]τοῦ αὐτῷ ἐναντίου; οἷον ὅταν μεῖζόν τι γίγνηται, ἀνάγκη που ἐξ ἐλάττονος ὄντος πρότερον, ἔπειτα μεῖζόν τι γίγνεσθαι. Ναί. Οὐκοῦν κἂν ἔλαττον [g]γίγνηται ἐκ μείζονος ὄντος πρότερον ὕστερον ἔλαττον γενήσεται. Ἔστιν, ἔφη, οὕτως. Καὶ μὴν ἐξ ἰσχυροτέρου γε τὸ ἀσθενέστερον, καὶ ἐκ βραδυτέρου τὸ θᾶττον; Πάνυ γε. [h]Τί δ', ἄν τι χεῖρον γίγνηται, οὐκ ἐξ ἀμείνονος, καὶ ἐὰν δικαιότερον οὐκ ἐξ ἀδικωτέρου; Πῶς γὰρ οὔ; Ἱκανῶς οὖν, ἔφη, ἔχομεν τοῦτο, ὅτι πάντα οὕτω γίγνεται ἐξ ἐναντίων τὰ ἐναντία πράγματα. Πάνυ γε. Τί οὖν, ἔφη, τῷ ζῆν ἐστι τί ἐναντίον, ὥσπερ [i]τῷ ἐγρηγορέναι τὸ καθεύδειν; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τί τὸ τεθνάναι, ἔφη; οὐκοῦν ἐξ ἀλλήλων τε γίγνεται ταῦτα εἴπερ ἐναντία ἐστι, καὶ αἱ γενέσεις εἰσὶν αὐτοῖν μεταξὺ δύο δυοῖν ὄντων; Πῶς γὰρ οὔ; Τὴν μὲν τοίνυν ἑτέραν συζυγίαν ὧν νῦν [k]δὴ ἔλεγον, ἐγώ σοι, ἔφη, ἐρῶ, ὁ Σωκράτης, καὶ αὐτὴν, καὶ τὰς γενέσεις· σὺ δέ μοι τὴν ἑτέραν. Λέγω δὲ τὸ μὲν καθεύδειν, τὸ δὲ [l]ἐγρηγορέναι, καὶ ἐκ τοῦ καθεύδειν τὸ ἐγρηγορέναι γίγνεσθαι, καὶ ἐκ τοῦ ἐγρηγορέναι τὸ καθεύδειν, καὶ τὰς γενέσεις αὐτῶν τὴν μὲν καταδαρθάνειν εἶναι, τὴν δὲ ἀνεγείρεσθαι. Ἱκανῶς σοι ἔφην, ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν. Λέγε δή καὶ σύ μοι, ἔφη, οὕτω περὶ ζωῆς καὶ θανάτου. Οὐκ ἐναντίον μὲν φὴς [m]τῷ ζῆν τὸ τεθνάναι εἶναι; Ἔγωγε. Γίγνεσθαι δὲ p. 96.
ἐξ ἀλλήλων; Ναί. Ἐξ οὖν τοῦ ζῶντος τί τὸ γιγνόμενον; Τὸ τεθνηκὸς, ἔφη,—ὅτι τὸ ζῆν. Ἐκ τῶν τεθνεώτων ἄρα, ὦ Κέβης, τὰ ζῶντά τε καὶ οἱ ζῶντες γίγνονται. Φαίνεται, ἔφη. Εἰσὶν ἄρα, ἔφη, αἱ ψυχαὶ ἡμῶν ἐν Ἅιδου. Ἔοικεν. Οὐκ οὖν καὶ [n]τοῖν γενέοιν τοῖν περὶ ταῦτα, ἥ γ' ἑτέρα

[f] τῷ αὐτοῦ A.

[g] γίγνηται—ἔλαττον om. A. qui mox ἰσχυρότερόν.

[h] Ἡ A.

[i] τὸ vulg.

[k] Sic A. διέλεγον Cant.

[l] Sic A. ἐγρηγορηκέναι Cant. Mox τοῦ ἐγ. A.

[m] τὸ A.

[n] τὴν γένεσιν A.

σαφὴς οὖσα τυγχάνει. Τὸ γὰρ ἀποθνήσκειν σαφὲς δήπου, ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Πῶς οὖν, ἦδ᾽ ὃς, ποιήσομεν; (οὐκ ἀνταποδώσομεν) τὴν ἐναντίαν γένεσιν, ἀλλὰ ταύτῃ χωλὴ ἔσται ἡ φύσις; ἢ ἀνάγκη ὑποδοῦναι τῷ ἀποθνήσκειν ἐναντίαν γένεσιν; Πάντως που, ἔφη. Τίνα ταύτην; Τὸ ἀναβιώσκεσθαι. Οὐκ οὖν, ἦδ᾽ ὃς, εἴπερ ἔστι τὸ ἀναβιώσκεσθαι, ἐκ τῶν τεθνεώτων . . . [o]γεγονέναι οὐδὲν ἧττον ἢ τοὺς τεθνεῶτας ἐκ τῶν ζώντων. Τούτου δὲ ὄντος, ἱκανόν που ἐδόκει τεκμήριον εἶναι ὅτι ἀναγκαῖον τὰς τῶν τεθνεώτων ψυχὰς εἶναί που, ὅθεν δὴ πάλιν γίγνεσθαι. Δοκεῖ μοι, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἐκ τῶν ὁμολογημένων ἀναγκαῖον οὕτως ἔχειν.

9 Ἐν ταυτῷ [p. 78.]

Ἆρα οὖν τῷ συντεθέντι τε καὶ συνθέτῳ ὄντι φύσει προσήκει τοῦτο πάσχειν διαιρεθῆναι ταύτῃ ᾗπερ συνετέθη· εἰ δέ τι τυγχάνει ὂν ἀσύνθετον, τούτῳ μόνῳ προσήκει [a]μὴ πάσχειν ταῦτα [b]εἴπερ τῳ ἄλλῳ; Δοκεῖ μοι, ἔφη, οὕτως ἔχειν, ὁ Κέβης. Οὐκ οὖν ἅπερ ἀεὶ κατὰ ταῦτα καὶ ὡσαύτως ἔχει, ταῦτα μάλιστα εἰκὸς εἶναι τὰ ἀσύνθετα· τὰ δ᾽ ἄλλοτ᾽ ἄλλως καὶ μηδέποτε κατὰ ταῦτα σύνθετα; Ἔμοιγε δοκεῖ οὕτως.—Θῶμεν οὖν βούλει, ἔφη, δύο εἴδη τῶν ὄντων, τὸ μὲν ὁρατὸν, τὸ δ᾽ ἀειδές. Θῶμεν, ἔφη. Καὶ τὸ μὲν, ἀειδὲς κατὰ ταυτὰ ἔχον, τὸ δὲ ὁρατὸν μηδέποτε κατὰ ταυτά. Καὶ τοῦτο δὴ, ἔφη, θῶμεν. Φέρε δὴ, ἦ δ᾽ ὃς, ἄλλο τι ἡμῶν αὐτῶν, ἢ τὸ μὲν σῶμά ἐστιν, τὸ δὲ ψυχή; Οὐδὲν ἄλλο, ἔφη. Ποτέρῳ οὖν ὁμοιότερον τῷ εἴδει φαμὲν ἂν εἶναι καὶ ξυγγενέστερον τὸ σῶμα; Παντὶ, ἔφη, τοῦτό γε δῆλον ὅτι τῷ ὁρατῷ. Τί δὲ ἡ ψυχὴ, ὁρατὸν ἢ ἀειδές; Οὐχ ὑπ᾽ ἀνθρώπων γε, ἔφη, ὦ Σώκρατες. Ἀλλὰ μὴν ἡμεῖς γε τὰ ὁρατὰ καὶ τὰ μὴ τῇ τῶν ἀνθρώπων φύσει ἐλέγομεν, ἢ ἄλλῃ

o γέγονε A.

9.

a Sic A. τοῦτο Cant. b ἥπερ A.

τινὶ οἵῃ; Τῇ τῶν ἀνθρώπων. Τί οὖν περὶ ψυχῆς λέγομεν; ὁρατὸν [c]ἢ ἀόρατον εἶναι; Οὐχ ὁρατόν. Ἀειδὲς ἄρα; Ναί. Ὁμοιότερον [d]ἄρα ψυχὴ σώματός ἐστι τῷ ἀειδεῖ, [e]τὸ δὲ τῷ ὁρατῷ; Πᾶσα ἀνάγκη, ὦ Σώκρατες. Οὐκ οὖν καὶ τόδε [f]πάλαι ἐλέγομεν, ὅτι ἡ ψυχὴ, ὅταν μὲν τῷ σώματι προσχρῆται εἰς τὸ σκοπεῖν τι ἢ διὰ τοῦ ὁρᾶν, ἢ διὰ τοῦ ἀκούειν, ἢ δι' ἄλλης τινὸς αἰσθήσεως· τοῦτο γάρ ἐστι τὸ διὰ τοῦ σώματος τὸ δι' αἰσθήσεως σκοπεῖν [g]τι· τὸ μὲν ἕλκεται ὑπὸ τοῦ σώματος εἰς τὰ οὐδέποτε κατὰ ταυτὰ ἔχοντα, καὶ αὕτη πλανᾶται, καὶ ταράττεται, καὶ ἰλιγγιᾷ, ὥσπερ μεθύουσα, ἅτε τοιούτων ἐφαπτομένη; Πάνυ γε. Ὅταν δέ [h]γε αὐτὴ καθ' αὑτὴν σκοπῇ, ἐκεῖσε οἴχεται εἰς τὸ καθαρόν τε καὶ ἀεὶ ὂν καὶ ἀθάνατον καὶ ὡσαύτως ἔχον, καὶ [i]συγγενὴς αὐτοῦ οὖσα ἀεὶ μετ' ἐκείνου τε γίγνεται ὅταν περ αὐτὴ καθ' αὑτὴν γένηται, καὶ ἐξῇ αὐτῇ, καὶ πέπαυταί τε τοῦ πλάνου p. 97.
καὶ περὶ ἐκεῖνα ἀεὶ κατὰ ταὐτα καὶ ὡσαύτως ἔχει, ἅτε τοιούτων ἐφαπτομένη; καὶ τοῦτο [k]αὐτῆς τὸ πάθημα φρόνησις κέκληται; Παντάπασιν, ἔφη, καλῶς καὶ ἀληθῆ λέγεις, ὦ Σώκρατες. Ποτέρῳ οὖν αὖ σοι δοκεῖ τῷ εἴδει, καὶ ἐκ τῶν πρόσθεν καὶ ἐκ τῶν νῦν λεγομένων, ψυχὴ ὁμοιότερον εἶναι καὶ ξυγγενέστερον; [l]Πᾶς ἂν, ἔμοι γε δοκεῖ, ἦ δ' ὃς, συγχωρῆσαι, ὦ Σώκρατες, ἐκ ταύτης τῆς μεθόδου καὶ ὁ δυσμαθέστατος, ὅτι ὅλῳ καὶ παντὶ ὁμοιοτερόν ἐστι ψυχὴ τῷ ἀεὶ ὡσαύτως ἔχοντι μᾶλλον, ἢ τῷ μή. Τί δὲ τὸ σῶμα; Τῷ ἑτέρῳ. Ὅρα δὲ καὶ τῇδε· ὅτι ἐπειδὰν ἐν τῷ αὐτῷ ὦσι ψυχὴ καὶ σῶμα, τῷ μὲν δουλεύειν καὶ ἄρχεσθαι ἡ φύσις προστάττει, τῇ δὲ ἄρχειν καὶ δεσπόζειν· καὶ κατὰ ταῦτα

c ἢ ἀόρ. add. A.
d ἅμα A.
e τῶδε A.
f πάλαι om. A.
g τι add. A.
h γε add. A.
i συγγενὲς (η above) αὐτῇ ο. ἀ. μή τε ἐκείνου τε A. infra καὶ ante ὡσαύτως add. A.
k Sic A. αὐτοῦ Cant.
l Πᾶσαι Cant. πᾶσα A. πᾶς ἂν Plat.

αὖ πότερόν σοι δοκεῖ ὅμοιον τῷ θείῳ εἶναι, ἢ πότερον τῷ θνητῷ; ἢ οὐ δοκεῖ σοι τὸ μὲν θεῖον οἷον ἄρχειν τε καὶ ἡγεμονεύειν πεφυκέναι, τὸ δὲ θνητὸν ἄρχεσθαί τε καὶ δουλεύειν; Ἔοικε. [m]Ποτέρῳ οὖν ἡ ψυχὴ ἔοικε; [n]Δηλαδὴ, ὦ Σώκρατες, ὅτι ἡ μὲν ψυχὴ τῷ θείῳ, τὸ δὲ σῶμα τῷ θνητῷ. Σκόπει [o]δὴ, ἔφη, ὦ Κέβης, εἰ ἐκ πάντων τῶν εἰρημένων τάδε [p]ἡμῖν ξυμβαίνει, τῷ μὲν θείῳ καὶ ἀθανάτῳ καὶ νοητῷ καὶ [q]μονοειδεῖ καὶ ἀδιαλύτῳ, ἀεὶ ὡσαύτως κατὰ ταυτὰ ἔχοντι ἑαυτῷ ὁμοιότερον εἶναι ψυχὴ, τῷ δ' ἀνθρωπίνῳ καὶ θνητῷ καὶ ἀνοήτῳ καὶ πολυειδεῖ καὶ διαλύτῳ καὶ μηδέποτε κατὰ ταυτὰ ἔχοντι ἑαυτῷ ὁμοιότερον αὖ εἶναι σῶμα. Ἔχομέν τι παρὰ ταῦτα λέγειν ἀλλ', ὦ φίλε Κέβης, ὡς οὐχ οὕτως ἔχει; Οὐκ ἔχομεν. Τί οὖν, οὕτως ἐχόντων, ἆρ' οὐχὶ σώματι μὲν ταχὺ διαλύεσθαι προσήκει, ψυχῇ δὲ αὖ τὸ παράπαν ἀδιαλύτῳ εἶναι, ἢ ἐγγύς τι τούτου; Πῶς γὰρ οὔ; Ἐννοεῖς οὖν, ἔφη, ὅτι ἐπειδὰν ἀποθάνῃ ὁ ἄνθρωπος, τὸ μὲν ὁρατὸν αὐτοῦ σῶμα καὶ ἐν ὁρατῷ κείμενον, ὃ δὴ νεκρὸν καλοῦμεν, ὃ προσήκει διαλύεσθαι καὶ διαπίπτειν καὶ διαπνεῖσθαι, οὐκ εὐθὺς τούτων οὐδὲν πέπονθεν, ἀλλ' ἐπιεικῶς συχνὸν ἐπιμένει χρόνον· ἐὰν γάρ τις [r]καὶ χαριέντως ἔχων τὸ σῶμα τελευτήσῃ, καὶ ἐν τοιαύτῃ ὥρᾳ, καὶ πάνυ μάλα. Συμπεσὸν γὰρ τὸ σῶμα καὶ ταριχευθὲν, ὥσπερ οἱ ἐν Αἰγύπτῳ ταριχευθέντες, ὀλίγου ὅλον μένει ἀμήχανον [s]ὅσον χρόνον· ἔνια δὲ μέρη τοῦ σώματος καὶ ἐὰν σαπῇ, ὀστᾶ τε καὶ νεῦρα καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα, ὁμοίως, ὡς ἔπος εἰπεῖν, ἀθάνατά ἐστιν. Ἢ οὔ; Ναί. Ἡ δὲ ψυχὴ ἄρα, τὸ ἀειδὲς τὸ εἰς τὸν τοιοῦτον τόπον [t]ἕτερον οἰχόμενον, γενναῖον καὶ καθαρὸν καὶ ἀειδῆ, εἰς Ἅιδου, ὡς ἀληθῶς, παρὰ τὸν

[m] Sic A. Πότερα Cant.
[n] Δηλαδὴ om. Cant.
[o] δὲ Cant.
[p] Sic A. ξ. εἰμῖν Cant.
[q] Post μονοειδεῖ p. 97, 23. ed. Cant. desunt omnia usque ad art. 14.
[r] κεχαριέντως A.
[s] ὅλον A.
[t] ἑτέρας A.

ἀγαθὸν καὶ φρόνιμον θεὸν, οἷ, ἂν θεὸς ἐθέλῃ, αὐτίκα καὶ τῇ ἐμῇ ψυχῇ ἰτέον. Αὕτη δὲ ἡμῖν ἡ τοιαύτη καὶ οὕτως πεφυκυῖα, ἀπαλλαττομένη τοῦ σώματος, εὐθὺς διαπεφύσηται καὶ ἀπόλωλεν, ὥς φασιν οἱ πολλοὶ ἄνθρωποι; Πολλοῦ γε δεῖ, ὦ φίλε Κέβης καὶ Σιμμία.

10 Πλάτωνος ἐκ τοῦ [a]Κρατύλου [p. 399 D.]

Οἶμαι τοιοῦτόν τι νοεῖν τοὺς τὴν ψυχὴν ὀνομάσαντας, ὡς τοῦτο ἄρα ὅταν παρῇ τῷ σώματι, αἴτιόν ἐστι τοῦ ζῆν αὐτῷ, τὴν τοῦ ἀναπνεῖν δύναμιν παρέχον καὶ ἀναψύχον· ἅμα δὲ ἐκλείποντος τοῦ ἀναψύχοντος, τὸ σῶμα ἀπόλλυται καὶ τελευτᾷ· ὅθεν δή μοι δοκοῦσιν ψυχὴν αὐτὸ καλέσαι.

11 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου [p. 245.]

Ψυχὴ πᾶσα ἀθάνατος. Τὸ γὰρ ἀεικίνητον ἀθάνατον· τὸ δ' ἄλλο κινοῦν, καὶ ὑπ' ἄλλου κινούμενον, παῦλαν ἔχον ζωῆς παῦλαν ἔχει κινήσεως. Μόνον δὴ τὸ [aa]αὑτὸ κινοῦν, ἅτε οὐκ ἀπολεῖπον ἑαυτὸ, οὔποτε λήγει κινούμενον, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ὅσα κινεῖται, τοῦτο γὰρ πηγὴ καὶ ἀρχὴ κινήσεως. Ἀρχὴ δὲ ἀγέννητον· ἐξ ἀρχῆς γὰρ ἀνάγκη πᾶν τὸ γιγνόμενον γίγνεσθαι, αὐτὴν δὲ μηδ' ἐξ ἑνός. Εἰ γὰρ ἔκ του ἀρχὴ γίγνοιτο, οὐκ ἂν ἐξ ἀρχῆς γίγνοιτο. Ἐπεὶ δὲ ἀγέννητόν ἐστι, καὶ ἄφθορον αὐτὸ εἶναι ἀνάγκη. Ἀρχῆς γὰρ δὴ ἀπολλομένης, οὔτε αὐτή ποτε ἔκ του, οὔτε ἄλλο ἐξ ἐκείνης γενήσεται, εἴπερ ἐξ ἀρχῆς δεῖ τὰ πάντα γίγνεσθαι. Οὕτω δὴ κινήσεως μὲν ἀρχὴ τὸ αὐτὸ κινοῦν· τοῦτο [a]δ' οὔτε ἀπόλλυσθαι οὔτε γίγνεσθαι δυνατὸν, ἢ πάντα τε οὐρανὸν πᾶσάν τε γένεσιν συμπεσοῦσαν [b]στῆναι, καὶ μήποτε αὖθις ἔχειν ὅθεν κινηθέντα γενήσεται. Ἀθανάτου δὲ πεφασμένου [c]τοῦ ὑφ' ἑαυτοῦ κινουμένου, ψυχῆς οὐσίαν τε καὶ λόγον

10.

[a] Κρατύλλου A.

11.

[aa] αὐτὸ A. qui add. αὐτὸ in marg.

[a] δ' οὖν οὔτ' A.

[b] συστῆναι A.

[c] τὸ A.

τοῦτον αὐτόν τις λέγων οὐχ [d]αἰσχυνεῖται. Πᾶν γὰρ σῶμα ᾧ μὲν ἔξωθεν τὸ κινεῖσθαι, ἄψυχον· ᾧ δὲ ἔνδοθεν αὐτὸ ἐξ αὑτοῦ, ἔμψυχον, ὡς ταύτης οὔσης φύσεως ψυχῆς. Εἰ δ' ἔστι τοῦτο οὕτως, μὴ ἄλλο τι εἶναι τὸ αὐτὸ αὑτὸ κινοῦν ἢ ψυχήν, ἐξ ἀνάγκης ἀγέννητόν τε καὶ ἀθάνατον ψυχὴ ἂν εἴη. Περὶ μὲν οὖν ἀθανασίας αὐτῆς ἱκανῶς· περὶ δὲ τῆς ἰδέας αὐτῆς ὧδε λεκτέον· οἷον μέν ἐστι πάντῃ πάντως θείας εἶναι καὶ μακρᾶς διηγήσεως· ᾧ δὲ ἔοικεν, ἀνθρωπίνης τε καὶ ἐλάττονος. Ταύτῃ οὖν λέγομεν. Ἐοικέτω δὲ ξυμφύτῳ δυνάμει ὑποπτέρου ζεύγους τε καὶ ἡνιόχου.

12 Ἡροδότου ἱστορία β'. [c. 123.]

Πρῶτοι δὲ καὶ τόνδε τὸν λόγον Αἰγύπτιοί εἰσιν οἱ εἰπόντες ὡς ἀνθρώπου ψυχὴ ἀθάνατόν ἐστι· τοῦ δὲ σώματος καταφθίνοντος εἰς ἄλλο ζῶον αἰεὶ γινόμενον ἐσδύεται· ἐπὰν δὲ πάντα περιέλθῃ τὰ χερσαῖα καὶ τὰ θαλάσσια καὶ τὰ πετεινὰ αὖθις ἐς ἀνθρώπου σῶμα γενόμενον ἐσδύνειν· τὴν p. 98.
[e]περιήλυσιν δὲ αὐτῇ γίνεσθαι ἐν τρισχιλίοισιν ἔτεσι. τούτῳ τῷ λόγῳ εἰσὶν οἳ Ἑλλήνων ἐχρήσαντο οἱ μὲν πρότερον, οἱ δὲ ὕστερον.

13 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 91.]

Πότερον οὖν, ἔφη, πάντας τοὺς ἔμπροσθεν λόγους οὐκ ἀποδέχεσθε, ἢ τοὺς μέν, τοὺς δ' οὔ; Τοὺς μέν, ἐφάτην, τοὺς δ' οὔ. Τί οὖν, ἦδ' ὅς, περὶ ἐκείνου τοῦ λόγου λέγετε, ἐν ᾧ ἔφαμεν τὴν μάθησιν ἀνάμνησιν εἶναι; καὶ τούτου οὕτως ἔχοντος, ἀναγκαίως ἔχειν ἄλλό τι πρότερον ἡμῶν εἶναι τὴν ψυχήν, πρὶν ἐν τῷ σώματι ἐντεθῆναι. Ἐγὼ μέν, ἔφη [a]ὁ Κέβης, καὶ τότε θαυμαστῶς ἐπείσθην ὑπ' αὐτοῦ, καὶ νῦν ἐμμένω ὡς οὐδενὶ λόγῳ. Καὶ μήν, ἔφη ὁ Σιμμίας, καὶ αὐτὸς οὕτως ἔχω, καὶ πάνυ γε ἂν θαυμάσαιμι [b]εἴ μοι περὶ

[d] αἰσχύνηται A.
[e] περίκλησιν δὲ αὐτῇ A.

13.
[a] ὧ A.
[b] ἐμοὶ A.

γε τούτου ἄλλα ποτὲ ἔτι δόξειεν. Καὶ ὁ Σωκράτης· Ἀλλ᾽ ἀνάγκη σοι, ἔφη, ὦ ξένε Θηβαῖε, ἄλλο δόξαι ἄν περ [b]μείνῃ ἥδε ἡ οἴησις, τὸ ἁρμονίαν [c]μὲν εἶναι σύνθετον πρᾶγμα, ψυχὴν δὲ ἁρμονίαν τινὰ ἐκ τῶν κατὰ τὸ σῶμα ἐντεταμένων ξυγκεῖσθαι. Οὐ γάρ που ἀποδέξῃ γε σαυτοῦ λέγοντος ὡς πρότερον ἦν ἁρμονία ξυγκειμένη, πρὶν ἐκεῖνο εἶναι ἐξ ὧν ἔδει αὐτὴν [d]συντεθῆναι. Ἦ ἀποδέξῃ; [e]Οὐδαμῶς, ἔφη, ὦ Σώκρατες. Αἰσθάνῃ οὖν, ἦδ᾽ ὃς, ὅτι ταῦτά σοι ξυμβαίνει λέγειν, ὅταν φῇς μὲν εἶναι τὴν ψυχὴν πρὶν καὶ εἰς ἀνθρώπου εἶδος καὶ σῶμα ἀφικέσθαι, εἶναι δ᾽ αὐτὴν ξυγκειμένην ἐκ τῶν οὐδέπω ὄντων; οὐ γὰρ δὴ ἁρμονία γέ σοι τοιοῦτόν ἐστιν ᾧ ἀπεικάζεις· ἀλλὰ πρότερον καὶ ἡ λύρα καὶ αἱ χορδαὶ καὶ οἱ φθόγγοι ἔτι ἀνάρμοστοι ὄντες γίγνονται, τελευταῖον δὲ πάντων ξυνίσταται ἡ ἁρμονία καὶ πρῶτον ἀπόλλυται. Οὗτος οὖν σοι ὁ λόγος ἐκείνῳ τῷ λόγῳ πῶς [f]ξυνᾴσεται; Οὐδαμῶς, ἔφη ὁ Σιμμίας. Καὶ μὴν, ἦδ᾽ ὃς, πρέπει γε, εἴπέρ τῳ ἄλλῳ λόγῳ, ξυνῳδῷ εἶναι καὶ τῷ περὶ ἁρμονίας. Πρέπει γὰρ, ἔφη ὁ Σιμμίας. Οὗτος τοίνυν, ἔφη, σοι οὐ ξυνῳδός· ἀλλ᾽ ὅρα πότερον αἱρεῖ τῶν λόγων, τὴν μάθησιν, ἀνάμνησιν εἶναι, ἢ ψυχὴν, ἁρμονίαν. Πολὺ μᾶλλον ἐκεῖνον, ἔφη, ὦ Σώκρατες. [g]Ὅδε μὲν γάρ μοι γέγονεν ἄνευ ἀποδείξεως, μετὰ [h]εἰκότος τινὸς καὶ εὐπρεπείας· ὅθεν καὶ τοῖς πολλοῖς δοκεῖ ἀνθρώποις· ἐγὼ δὲ τοῖς διὰ τῶν εἰκότων τὰς ἀποδείξεις ποιουμένοις λόγοις ξύνοιδα οὖσιν ἀλαζόσι, καὶ ἄν τις αὐτοὺς μὴ [i]φυλάττηται εὖ μάλα ἐξαπατῶσι καὶ ἐν γεωμετρίᾳ καὶ τοῖς ἄλλοις πᾶσιν. Ὁ δὲ περὶ τῆς ἀναμνήσεως καὶ μαθήσεως λόγος δι᾽ ὑποδείξεως ἀξίας ἀποδέξασθαι εἴρηται. Ἐρρήθη γάρ που οὕτως ἡμῶν εἶναι ἡ

[b] μοίνη ἦσε ἡ οἴσις A.
[c] μὲν εἶναι—ἁρμονίαν om. A.
[d] συντεθεῖναι A.
[e] Οὐδαμοῦ A.
[f] ξυνενέσεται A.
[g] Ὧδε A.
[h] εἰκότως A.
[i] φυλάττοιται A.

ψυχὴ, καὶ πρὶν ἢ εἰς σῶμα ἀφικέσθαι, οὕτως αὐτῆς ἔστιν ἡ οὐσία ἔχουσα τὴν ἐπωνυμίαν τὴν τοῦ ὃ ἔστιν. Ἐγὼ δὲ ταύτην, ὡς ἐμαυτὸν πείθω, ἱκανῶς τε καὶ ὀρθῶς ἀποδέδειγμαι. Ἀνάγκη οὖν μοι, ὡς ἔοικε, διὰ ταῦτα μήτε ὡς ἐμαυτοῦ μήτε ὡς ἄλλου ἀποδέχεσθαι, λέγοντος ὡς ψυχή ἐστιν ἁρμονία. Τί δὲ, ἦδ' ὃς, ὦ Σιμμία, τὶ δὲ δοκεῖ σοι [s]ἁρμονίᾳ, ἢ ἄλλῃ τινὶ συνθέσει προσήκειν, ἄλλως πως ἔχει, ἢ ὡς ἂν ἐκεῖνα ἔχῃ ἐξ ὧν ἂν [t]συγκέηται; Οὐδαμῶς. Οὐδὲ μὴν ποιεῖν τι, ὡς ἐγῷμαι, οὐδέ τι πάσχειν ἄλλο παρ' ὃ ἂν ἐκεῖνα ἢ ποιῇ ἢ πάσχῃ. Συνέφη. Οὐκ ἄρα ἡγεῖσθαί γε προσῆκε ἁρμονία τούτων ἐξ ὧν ἂν συντεθῇ, ἀλλ' ἕπεσθαι. Συνεδόκει. Πολλοῦ ἄρα δεῖ ἐναντία γε ἁρμονία κινηθῆναι ἂν ἢ φθέγξασθαι ἤ τι ἄλλο ἐναντιωθῆναι τοῖς αὑτῆς μέρεσι. Πολλοῦ μέντοι, ἔφη. Τί δὲ οὐχ οὕτως ἁρμονία πέφυκεν εἶναι ἑκάστη ἁρμονία ὡς ἂν ἁρμοσθῇ; Οὐ μανθάνω, ἔφη. Ἦ οὐχὶ, ἦ δ' ὃς, ἐὰν μὲν μᾶλλον ἁρμοσθῇ καὶ ἐπὶ πλέον, εἴπερ ἐνδέχεται τοῦτο γίγνεσθαι, μᾶλλόν τε ἂν ἁρμονία εἴη καὶ [u]πλείων· εἰ δ' ἧττόν τε καὶ ἐπὶ ἔλαττον, ἥττων τε καὶ ἐλάττων; Πάνυ γε. Εἰ οὖν ἔστι τοῦτο περὶ ψυχὴν ὥστε κατὰ [v]τὸ σμικρότατον μᾶλλον ἑτέραν ἑτέρας ψυχὴν ἐπὶ πλέον καὶ μᾶλλον, ἢ ἐπὶ ἔλαττον καὶ ἧττον [x]αὐτὸ τοῦτ' εἶναι ψυχήν; Οὐδ' ὁπωστιοῦν, ἔφη. Φέρε δὴ, ἔφη, πρὸς [y]Διὸς, λέγεται ψυχὴ ἡ μὲν νοῦν τε καὶ ἀρετὴν ἔχειν καὶ εἶναι ἀγαθὴ, ἡ δ' ἄνοιάν τε καὶ μοχθηρίαν καὶ εἶναι κακή· καὶ ταῦτα ἀληθῶς λέγεται; Ἀληθῶς μέντοι. Τῶν οὖν τιθεμένων ψυχὴν ἁρμονίαν εἶναι τί τις [z]φήσει ταῦτα ὄντα εἶναι ἐν ταῖς ψυχαῖς, τήν τε ἀρετὴν καὶ τὴν κακίαν; Πότερα ἁρμονίαν αὖ τιν' ἄλλην καὶ ἀναρμοστίαν; καὶ τὴν

[s] ἁρμονίᾳ τί δὲ A.

[t] σύγκηται A. qui mox οὐδ' ὅτι πάσχειν.

[u] πλεῖον A.

[v] τὸ add. A.

[x] αὐτότ' Cant.

[y] Sic A. Δία—οὖν—ἢ—ἢ—ἀγαθὴν—κακὴν Cant.

[z] φύσει A.

μὲν ἡρμόσθαι τὴν ἀγαθὴν, καὶ ἔχειν ἐν αὐτῇ τῇ ἁρμονίᾳ οὔσῃ ἄλλην ἁρμονίαν, τὴν [a]δὲ ἀνάρμοστον αὐτήν τε εἶναι καὶ οὐκ ἔχειν ἐν αὐτῇ ἄλλην; Οὐκ ἔχω ἔγωγε, φησὶν ὁ Σιμμίας, εἰπεῖν· δῆλον δὲ ὅτι τοιαῦτ' ἄττ' ἂν λέγοι ὁ ἐκεῖνο ὑποθέμενος. Ἀλλὰ [b]προωμολόγηται, ἔφη, μηδὲν μᾶλλον μηδ' ἧττον ἑτέραν ἑτέρας ψυχὴν ψυχῆς εἶναι. Τοῦτο δ' ἐστι τὸ ὁμολόγημα μηδὲν μᾶλλον μηδ' ἐπὶ πλέον μηδὲ ἧττον, μηδ' ἐπὶ ἔλαττον ἑτέραν ἑτέρας [c]ἁρμονίαν ἁρμονίας εἶναι; ἦ γάρ; Πάνυ γε. Τὴν δέ γε μηδὲν μᾶλλον μηδὲ ἧττον ἁρμονίαν οὖσαν, μηδὲ μᾶλλον μηδὲ ἧττον ἡρμόσθαι. Ἔστιν οὕτως; Ἔστιν. Εἰ δὲ μήτε μᾶλλον μήτε ἧττον ἡρμοσμένη ἐστιν, ὅτι πλέον ἢ ἔλαττον ἁρμονίας μετέχει, ἢ τὸ ἴσον; [[d]τὸ ἴσον.] Οὐκ οὖν ψυχὴ οὐδὲ μᾶλλον οὐδὲ ἧττον [e]ἄλλη ἄλλης αὐτὸ τοῦτο ψυχή ἐστιν, οὐδὲ δὴ μᾶλλον οὐδὲ ἧττον [f]ἥρμοσται; Οὕτω. [g]Τοῦτο δέ γε πεπονθυῖα οὐδὲν πλέον ἀναρμοστίας, οὐδὲ ἁρμονίας (μετέχοι) ἄν. Οὐ γὰρ οὖν. Τοῦτο δ' [h]αὖ πεπονθυῖα, ἆρ' ἄν τι πλέον κακίας ἢ ἀρετῆς p. 98.
[i]μετέχοι ἑτέρα ἑτέρας, εἴπερ ἡ μὲν κακία [k]ἀναρμοστία, ἡ δὲ ἀρετὴ ἁρμονία εἴη. Οὐδὲν πλέον. Μᾶλλον δέ γε πού, ὦ Σιμμία, κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον κακίας οὐδεμία ψυχὴ μεθέξει, εἴπερ ἁρμονία ἐστιν· ἁρμονία γὰρ δή που παντελῶς αὐτὸ τοῦτο οὖσα [l]ἁρμονία ἀναρμοστίας οὔποτ' ἂν [m]μετάσχοι. Οὐ μέντοι. Οὐδέ γε δήπου ψυχὴ, οὖσα παντελῶς ψυχὴ, κακίας. Πῶς γὰρ ἔκ τε τῶν προειρημένων; Ἐκ τούτου ἄρα τοῦ λόγου ἡμῖν πᾶσαι ψυχαὶ πάντων ζώων ὁμοίως ἀγαθαὶ ἔσονται, εἴπερ ὁμοίως ψυχαὶ πεφύκασιν αὐτὸ τοῦτο εἶναι

[a] τε A.
[b] προομολογεῖται Cant. προσωμ. A.
[c] A. habet tantum ἁρμονίαν. Cant. tantum ἁρμονίας.
[d] Om. A. Cant.
[e] ἄλλη—ἧττον ex A.
[f] ἥρμοσθαι A.
[g] Τοῦτο A.
[h] Sic A. ἂν Cant.
[i] Sic A. μετέχει Cant. sine ἑτέρα.
[k] ἀναρμοστίας A.
[l] h. v. add. A.
[m] Sic A. μετέχοι Cant.

ψυχαί. Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη, ὦ Σώκρατες. Ἦ καὶ καλῶς δοκεῖ, ἦδ᾽ ὅς, οὕτω λέγεσθαι, καὶ πάσχειν ἂν ταῦτα ὁ λόγος, [n] εἰ ὀρθὴ ἡ ὑπόθεσις ἦν, τὸ ψυχὴν ἁρμονίαν εἶναι. Οὐδ᾽ ὁπωστιοῦν, ἔφη. Τί δὲ, ἦδ᾽ ὅς, τῶν ἐν ἀνθρώπῳ πάντων, ἔσθ᾽ ὅτι ἄλλο λέγεις ἀρχὴν ἢ ψυχὴν, ἄλλως τε καὶ φρόνιμον; Οὐκ ἔγωγε. Πότερον συγχωροῦσαν τοῖς κατὰ τὸ σῶμα παθήμασιν, ἢ καὶ ἐναντιουμένην; λέγω δὲ τὸ τοιόνδε· οἷον καύματος ἐνόντος καὶ δίψους, ἐπὶ τοὐναντίον ἕλκειν τὸ μὴ πίνειν, καὶ πείνης ἐνούσης, ἐπὶ τὸ μὴ ἐσθίειν, καὶ ἄλλα που μυρία [o] ἐροῦμεν ἐναντιουμένην τὴν ψυχὴν τοῖς κατὰ τὸ σῶμα, ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν αὖ ὡμολογήσαμεν ἐν τοῖς πρόσθεν μήποτε ταύτην ἁρμονίαν γε οὖσαν ἐναντία ᾄδειν οἷς ἐπιτείνοιτο, καὶ χαλῷτο, καὶ ψάλλοιτο, καὶ ἄλλο ὁτιοῦν πάθος [p] πάσχοι [q] ἐκεῖνα ἐξ ὧν τυγχάνει οὖσα, ἀλλ᾽ ἕπεσθαι ἐκείνοις, καὶ οὔποτ᾽ ἂν ἡγεμονεύειν; Ὡμολογήσαμεν, ἔφη. Πῶς γὰρ οὔ; Τί οὖν νῦν; Οὐ πᾶν τοὐναντίον φαίνεται ἡμῖν ἐργαζομένη, ἡγεμονεύουσά τε ἐκείνων πάντων, ἐξ ὧν φησί τις αὐτὴν εἶναι, καὶ ἐναντιουμένη [r] ὀλίγου πάντα διὰ παντὸς τοῦ βίου, καὶ δεσπόζουσα πάντας τρόπους, τὰ μὲν χαλεπώτερον κολάζουσα καὶ μετ᾽ ἀλγηδόνων, τά τε κατὰ τὴν γυμναστικὴν καὶ [s] τὴν ἰατρικὴν, τὰ δὲ πρᾳότερον, καὶ τὰ μὲν ἀπειλοῦσα τὰ δὲ νουθετοῦσα ταῖς ἐπιθυμίαις καὶ ὀργαῖς καὶ φόβοις, ὡς ἄλλη οὖσα ἄλλῳ πράγματι διαλεγομένη, οἷόν που καὶ Ὅμηρος ἐν Ὀδυσσείᾳ πεποίηκεν, οὗ [t] λέγει τὸν Ὀδυσσέα,

στῆθος δὲ πλήξας κραδίην ἠνίπαπε μύθῳ,
τέτλαθι δὴ κραδίη καὶ κύντερον ἄλλο ποτ᾽ ἔτλης.

Ἆρ᾽ οἴει αὐτὸν ταῦτα ποιῆσαι διανοούμενον ὡς ἁρμονίας

[n] Sic A. ἢ Cant.
[o] ἐρουμένην τὴν A.
[p] πάσχει Cant.
[q] ἐκεῖνος A.
[r] ὅλη ποῦ A.
[s] τὴν om. A.
[t] Sic A. λέγειν Cant.

αὐτῆς οὔσης, καὶ οἵας ἄγεσθαι ὑπὸ τῶν τοῦ σώματος παθημάτων, ἀλλ' οὐχ οἵας ἄγειν τε ταύτας καὶ δεσπόζειν, καὶ οὔσης αὐτῆς πολὺ θειοτέρου τινὸς ἢ καθ' ἁρμονίαν; Νὴ Δία, ὦ Σώκρατες, ἔμοιγε δοκεῖ. Οὐκ ἄρ', ὦ ἄριστε, ἡμῖν οὐδαμῆ καλῶς ἔχει ψυχὴν ἁρμονίαν τινα φάναι [s]εἶναι· οὔτε γὰρ ἄν, ὡς ἔοικεν, Ὁμήρῳ θειῷ ποιητῇ ὁμολογοῦμεν, οὔτε αὐτοὶ ἡμῖν αὐτοῖς. Ἔχει οὕτως, ἔφη. [t]Εἶεν δή, ἦδ' ὅς, ὦ Σώκρατες, τὰ μὲν Ἁρμονίας ἡμῖν τῆς Θηβαϊκῆς ἵλεά πως, ὡς ἔοικε, μετρίως γέγονε· τί δὲ δὴ τὰ Κάδμου, ἔφη, ὦ Κέβης, πῶς ἱλασόμεθα, καὶ τίνι λόγῳ; Σύ μοι δοκεῖς, ἔφη ὁ Κέβης, ἐξευρήσειν.

14 Ἐν ταυτῷ [p. 95.]

Ὁ οὖν Σωκράτης συχνὸν χρόνον ἐπισχὼν καὶ πρὸς αὑτόν τι σκεψάμενος, Οὐ φαῦλον πρᾶγμα, ἔφη, ὦ Κέβης, ζητεῖς· ὅλως γὰρ δὴ περὶ γενέσεως καὶ φθορᾶς τὴν αἰτίαν διαπραγματεύσασθαι. Ἐγὼ οὖν [a]σοι δίειμι περὶ αὐτῶν ἂν βούλῃ τά γ' ἐμὰ πάθη· ἔπειτα ἐάν τι σοι χρήσιμον φαίνηται p. 99. ὧν ἂν λέγω, πρὸς τὴν [b]πειθὼ περὶ ὧν λέγεις χρήσῃ. Ἀλλὰ μήν, ἔφη ὁ Κέβης, βούλομαί γε. Ἄκουε τοίνυν, ὡς ἐροῦντος. Ἐγὼ γάρ, ἔφη, ὦ Κέβης, νέος ὢν θαυμαστῶς ὡς ἐπεθύμησα ταύτης τῆς σοφίας, ἣν δὴ καλοῦσι περὶ φύσεως ἱστορίαν· ὑπερήφανον γάρ μοι ἐδόκει εἰδέναι εἶναι τὰς αἰτίας ἑκάστου διὰ τὶ γίγνεται ἕκαστον, καὶ διὰ τὶ ἀπόλλυται, καὶ διὰ τὶ ἔστι· καὶ πολλάκις ἄνω κάτω μετέβαλλον, σκοπῶν πρῶτον τὰ τοιάδε· Ἆρ' ἐπειδὰν τὸ θερμὸν καὶ τὸ ψυχρὸν σηπεδόνα τινα λάβῃ, ὥς τινες ἔλεγον, τότε δὴ τὰ ζῶα συστρέφεται; καὶ πότερον τὸ αἷμά ἐστιν ᾧ φρονοῦμεν, ἢ ὁ ἀήρ, ἢ τὸ πῦρ; ἢ τούτων μὲν οὐδέν, ὁ δὲ ἐγκέφαλός ἐστιν ὁ τὰς αἰσθήσεις παρέχων, τοῦ ἀκούειν καὶ τοῦ ὁρᾶν καὶ ὀσφραί-

[s] εἶναι add. A.
[t] Ἐν δὲ Cant. ἓν δὴ A.

14.
[a] σοι add. A.
[b] Sic A. πυθῶ Cant. Mox l. cc. συντρέφεται Plato.

νεσθαι, ἐκ τούτων δὲ γίγνοιτο μνήμη καὶ δόξα, ἐκ δὲ μνήμης καὶ δόξης λαβούσης τὸ ἠρεμεῖν κατὰ ταῦτα γίγνεσθαι ἐπιστήμην· καὶ αὖ τούτων τὰς φθορὰς σκοπῶν, καὶ τὰ περὶ τὸν οὐρανόν τε καὶ τὴν γῆν πάθη, τελευτῶν οὕτως ἐμαυτῷ ἔδοξα πρὸς ταύτην τὴν σκέψιν ἀφυὴς εἶναι, ὡς οὐδὲν χρῆμα.

15 Πλάτωνος [Φαιδ. p. 99.]

[814] Τὸ γὰρ μὴ διελέσθαι οἷόν τε εἶναι ὅτι ἄλλο μέν τι ἐστὶ τὸ αἴτιον τῷ ὄντι, ἄλλο δὲ ἐκεῖνο ἄνευ οὗ τὸ αἴτιον οὐκ ἂν ποτ' [a] εἴη αἴτιον, ὃ δή μοι φαίνονται ψηλαφῶντες οἱ πολλοὶ, ὥσπερ ἐν σκότει, ἀλλοτρίῳ ὀνόματι προσχρώμενοι, ὡς αἴτιον αὐτὸ προσαγορεύειν. Διὸ δὴ καὶ ὁ μέν τις δίνην περιτιθεὶς τῇ γῇ ὑπὸ τοῦ οὐρανοῦ μένειν δὴ [b] ποιεῖ τὴν γῆν· ὁ δὲ ὥσπερ καρδόπῳ πλατείᾳ βάθρον τὸν ἀέρα ὑπερείδει· [c] τὴν δὲ τοῦ ὡς οἷόν τε βέλτιστα αὐτοῦ [d] τεθῆναι δύναμιν, οὕτω νῦν κεῖσθαι, ταύτην οὔτε ζητοῦσιν, οὔτε τινα οἴονται δαιμονίαν ἰσχὺν ἔχειν· ἀλλὰ ἡγοῦνται τούτου ἄν ποτε Ἄτλαντα ἰσχυρότερον καὶ ἀθανατώτερον, καὶ μᾶλλον ἅπαντα συνέχοντα ἐξευρεῖν, καὶ ὡς ἀληθῶς τὸ ἀγαθὸν καὶ δέον συνιδεῖν καὶ συνδέειν οὐδὲν [e] οἴονται. Ἐγὼ μὲν οὖν τῆς τοιαύτης αἰτίας [f] ὅπη ποτὲ ἔχει μαθητὴς [g] ὁτουοῦν ἥδιστ' ἂν γενοίμην. Ἐπειδὴ δὲ ταύτης ἐστερήθην, καὶ οὔτ' αὐτὸς εὑρεῖν οὔτε παρ' ἄλλου μαθεῖν οἷός τε ἐγενόμην, τὸν δεύτερον πλοῦν ἐπὶ τὴν τῆς αἰτίας ζήτησιν ᾗ πεπραγμάτευμαι, βούλη σοι, ἔφη, ἐπίδειξιν ποιήσωμαι, ὦ Κέβης; Ὑπερφυῶς μὲν οὖν, ἔφη, ὡς βούλομαι. Ἔδοξε τοίνυν μοι, ἦδ' ὃς, μετὰ ταῦτα, ἐπειδὴ [i] ἀπείρηκα τὰ ὄντα σκοπῶν, δεῖν εὐλαβηθῆναι μὴ πάθοιμι

15.

[a] εἶναι A.

[b] ποιεῖν A.

[c] Seqq. usque ad ἀληθῆ ὄντα om. Cant.

[d] τιθ$\overset{\eta}{\epsilon}$ῖναι A.

[e] οἴεται A.

[f] ὅπο A.

[g] οὕτω οὖν A.

[i] ἀπειρήκει A.

ὅπερ οἱ [k]τὸν ἥλιον ἐκλείποντα θεωροῦντες καὶ σκοπούμενοι πάσχουσι· διαφθείρονται γάρ που ἔνιοι τὰ ὄμματα, ἐὰν μὴ ἐν ὕδατι ἤ τινι τοιούτῳ σκοπῶνται τὴν εἰκόνα αὐτοῦ. Τοιοῦτόν τι καὶ ἐγὼ διενοήθην, καὶ ἔδεισα μὴ παντάπασι τὴν ψυχὴν τυφλωθείην, βλέπων πρὸς τὰ πράγματα τοῖς ὄμμασι, καὶ ἑκάστῃ τῶν αἰσθήσεων ἐπιχειρῶν ἅπτεσθαι αὐτῶν. Ἔδοξε δέ μοι χρῆναι, εἰς τοὺς λόγους καταφυγόντα, ἐν ἐκείνοις σκοπεῖν τῶν ὄντων τὴν ἀλήθειαν. Ἴσως μὲν οὖν, [l]ὡς εἰκάζω, τρόπον τινα οὐκ ἔοικεν. Οὐ γὰρ πάνυ συγχωρῶ, τὸν εὐλόγοις σκοπούμενον τὰ ὄντα ἐν εἰκόσι μᾶλλον σκοπεῖν ἢ τὸν ἐν τοῖς ἔργοις. Ἀλλ' οὖν δὴ ταύτῃ γε ὥρμησα, καὶ ὑποθέμενος ἑκάστοτε λόγον ὃν [m]ἂν κρίνω ἐρρωμενέστατον εἶναι, ἃ μὲν ἄν μοι δοκῇ τούτῳ συμφωνεῖν τίθημι ὡς ἀληθῆ ὄντα, καὶ περὶ αἰτίας καὶ περὶ τῶν ἄλλων πάντων· ἃ δ' ἂν μή, ὡς οὐκ ἀληθῆ. Βούλομαι δέ σοι σαφέστερον εἰπεῖν ἃ λέγω· οἶμαι γάρ σε νῦν οὐ μανθάνειν. Οὐ μὰ τὸν Δί', ἔφη ὁ Κέβης, οὐ σφόδρα.

16 Ἐν ταυτῷ [p. 105.]

Ἀποκρίνου δή, ἦδ' ὅς, ᾧ ἄν τι ἐγγένηται σώματι ζῶν ἔσται; Ὧι ἂν ψυχή, ἔφη. Οὐκοῦν ἀεὶ τοῦτο οὕτως ἔχει; Πῶς γὰρ οὐχί, ἦδ' ὅς. Ἡ ψυχὴ ἄρα ὅτι ἂν αὐτὴ κατάσχῃ ἀεὶ ἥκει ἐπ' ἐκεῖνο φέρουσα ζωήν; Ἥκει μέντοι, ἔφη. Πότερον δέ ἐστι [a]ζωῇ ἐναντίον ἢ οὐδέν; Ἔστιν, ἔφη. Τί; Θάνατος. Οὐκ οὖν ψυχὴ τὸ ἐναντίον, ᾧ αὐτὴ ἐπιφέρει ἀεί, οὐ μήποτε [b]δέξηται ὡς ἐκ τῶν πρόσθεν ὡμολόγηται; Καὶ [c]μάλα σφόδρα, ἔφη, ὁ Κέβης. Τί οὖν; τὸ μὴ δεχόμενον τὴν τοῦ ἀρτίου ἰδέαν, τί [d]νῦν δὴ ὀνομάζομεν; Ἀνάρτιον, ἔφη.

[k] τῶν A.
[l] ὢ A.
[m] ἀνακρίνω A.

16.

[a] καὶ ζωῇ Cant. καὶ om. A.
[b] Sic A. δόξῃ Cant.
[c] μάλιστα Cant.
[d] δὴ νῦν A.

Τὸ δὲ δίκαιον μὴ δεχόμενον, καὶ ὃ ἂν μουσικὸν μὴ δέχηται; Ἄμουσον, ἔφη, τὸ δὲ ἄδικον. Εἶεν· ὃ δὲ ἂν θάνατον μὴ δέχηται, [e] τί καλοῦμεν; Ἀθάνατον, ἔφη. Οὐκ οὖν ψυχὴ οὐ δέχεται θάνατον; Οὔ. Ἀθάνατον ἄρα ψυχή; Ἀθάνατον. Εἶεν, ἔφη· τοῦτο μὲν δὴ ἀποδεδεῖχθαι φῶμεν, ἢ πῶς δοκεῖ; Καὶ μάλα γε ἱκανῶς, ὦ Σώκρατες. Τί οὖν, ἦδ' ὅς, ὦ Κέβης; Εἰ τῷ [f] ἀναρτίῳ ἀναγκαῖον ἦν ἀνωλέθρῳ εἶναι, ἄλλο τι ἢ τὰ τρία ἀνώλεθρα ἂν ἦν; [g] Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν εἰ καὶ τὸ θερμὸν ἀναγκαῖον ἦν ἀνώλεθρον εἶναι, ὁπότε τις ἐπὶ χιόνα θερμὸν [h] ἐπάγει, ὑπεξῄει ἂν ἡ χιὼν μένουσα [i] ἄτηκτος· οὐ γὰρ ἂν ἀπώλετό γε, [k] οὐδ' αὖ ὑπομένουσα ἐδέξατ' ἂν τὴν θερμότητα. [l] Ἀληθῆ, ἔφη, λέγεις. Ὡς δ' αὔτως, οἶμαι, κἂν ἦ τὸ ψυχρὸν ἀνώλεθρον ἦν, ὁπότε ἐπὶ τὸ πῦρ ψυχρόν τι [m] ἐπῄει, οὔποτ' ἂν [n] ἀποσβέννυτο, οὐδ' ἀπόλλυτο, ἀλλὰ p. 100.
σῶον ἂν ἀπελθὸν ᾤχετο. Ἀνάγκη, ἔφη. [Οὐκ] οὖν καὶ ὧδε, ἔφη, ἀνάγκη περὶ τοῦ [o] ἀθανάτου. Εἰ μὲν τὸ ἀθάνατον καὶ ἀνώλεθρόν ἐστι, ἀδύνατον [p] ψυχῇ, ὅταν ὁ θάνατος ἐπ' αὐτὴν ἴῃ, ἀπόλλυσθαι. Θάνατον μὲν γὰρ δὴ ἐκ τῶν προειρημένων οὐ δέξεται, οὐδ' ἔσται τεθνηκυῖα, ὥσπερ τὰ τρία οὐκ ἔσται ἔφαμεν ἄρτιον, οὐδὲ γοῦν τὸ περιττὸν, οὐδὲ δὴ τὸ πῦρ ψυχρὸν, οὐδέ γε ἡ ἐν τῷ πυρὶ θερμότης· ἀλλὰ τὶ κωλύει, φαίη ἄν τις, ἄρτιον μὲν τὸ περιττὸν μὴ γίγνεσθαι, ἐπιόντος τοῦ ἀρτίου, ὥσπερ ὡμολόγηται, ἀπολλυμένου δ' αὐτοῦ ἀντ' ἐκείνου ἄρτιον γεγονέναι. Τῷ ταῦτα λέγοντι οὐκ ἂν ἔχοιμεν διαμάχεσθαι, ὅτι οὐκ ἀπόλλυται· τὸ γὰρ ἀνάρτιον οὐκ ἀνώλεθρόν ἐστι, [q] ἐπεὶ εἰ τοῦτο ὡμολόγητο ἡμῖν,

[e] τι—δέχεται om. Cant.
[f] ἀρτίῳ Cant.
[g] Πῶς—ἦν om. A.
[h] Sic A. μετάγει Cant.
[i] ἄτεκτος A. i. e. ἄτηκτος. ἄτεγκτος Cant.
[k] οὐ γὰρ ὑπ. A.
[l] Ἀληθῶς A.
[m] Sic A. ἐποίῃ Cant.
[n] ἐπεσβέννυτο Cant. ἀποσβ. A. qui mox ἀπελθών.
[o] θανάτου A.
[p] ψυχὴ A. ψυχὴν Cant.
[q] Sic A. ἐπὶ τοῦτο ὁμολογεῖτο Cant. Supra ἔχωμεν A.

ῥᾳδίως ἂν διεμαχώμεθα· ὅτι ἐπελθόντος τοῦ ἀρτίου τὸ περιττὸν καὶ τὰ τρία οἴχεται ἀπιόντα· καὶ περὶ πυρὸς καὶ θερμοῦ καὶ τῶν ἄλλων, οὕτως ἂν διεμαχώμεθα ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκοῦν καὶ νῦν περὶ τοῦ [r] ἀθανάτου, εἰ μὲν ἡμῖν ὁμολογεῖται καὶ ἀνώλεθρον εἶναι, ψυχὴ ἂν εἴη πρὸς [s] τῷ ἀθάνατος εἶναι καὶ ἀνώλεθρος· εἰ δὲ μὴ, ἄλλου ἂν [t] δέοι λόγου. Ἀλλ᾽ οὐδὲν δὴ, ἔφη, τούτου γε ἕνεκα· σχολῇ γὰρ ἄν τι ἄλλο φθορὰν μὴ δέχοιτο· εἰ τό τε ἀθάνατον ἀΐδιον ὂν φθορὰν [u] δέξεται. Ὁ δέ γε θεὸς, οἶμαι, ἔφη ὁ Σωκράτης, καὶ αὐτὸ τὸ τῆς ζωῆς εἶδος, καὶ εἴ τι ἄλλο ἀθάνατόν ἐστι, παρὰ πάντων ἂν ὁμολογηθείη μηδέποτε ἀπόλλυσθαι. Παρὰ πάντων μέντοι νὴ Δί᾽, ἔφη, ἀνθρώπων τέ γε, καὶ ἔτι μᾶλλον, ὡς ἐγῷμαι, παρὰ θεῶν. Ὁπότε δὴ τὸ ἀθάνατον καὶ ἀδιάφθορόν ἐστιν, ἄλλο τι ἡ ψυχὴ εἰ ἀθάνατος τυγχάνει οὖσα καὶ ἀνώλεθρος ἂν εἴη. Πολλὴ ἀνάγκη. Ἐπιόντος ἆρα θανάτου ἐπὶ τὸν ἄνθρωπον, τὸ μὲν θνητὸν, ὡς ἔοικεν, αὐτοῦ ἀποθνήσκει, τὸ δ᾽ ἀθάνατον σῶον καὶ ἀδιάφθορον οἴχεται ἀπιὸν, [x] ὑπεκχωρῆσαν τῷ θανάτῳ. Φαίνεται. Παντὸς μᾶλλον ἄρα, ἔφη, ὦ Κέβης, ἔσονται ἡμῶν αἱ ψυχαὶ ἐν Ἅιδου.

17 Ἐκ τῶν Πορφυρίου πρὸς τὰ νοητὰ Ἀφορμῶν.

Ἡ [a] μὲν ψυχὴ τῆς ἀμερίστου καὶ περὶ τὰ [b] σώματα μεριστῆς οὐσίας μέσον τι· ὁ δὲ νοῦς ἀμέριστος οὐσία μόνον, [c] τὰ δὲ σώματα μεριστὰ μόνον. Αἱ δὲ ποιότητες καὶ τὰ ἔνυλα εἴδη περὶ τὰ σώματα μεριστά.

[r] θανάτου A.

[s] τὸ ἀθάνατον Cant. τὸ ἀθάνατος A.

[t] δέῃ A.

[u] δέξηται A.

[x] Sic A. ὑποχ. Cant.

17.

Desumta hæc sunt et quæ proxime sequuntur, ex Porphyrii gradibus. Exstant in Porphyrii Opusculis ab Holstenio publicatis Romæ 1630. HEEREN. p. 220. ed. Cantab. Ἐν τῷ Πορφ. A.

[a] μὲν γὰρ] γὰρ deest V. A.

[b] σώματα] σώματι V.

[c] τὰ δὲ—μόνον om. Holsten.

18 Ἐν ταυτῷ.

Ψυχὴ καταδεῖται πρὸς σῶμα τῇ ἐπιστροφῇ τῇ πρὸς τὰ πάθη τὰ ἀπ' αὐτοῦ· καὶ λύεται πάλιν διὰ τῆς ἀπ' αὐτοῦ ἀπαθείας.

19 Ἐν ταυτῷ.

[816] Ἡ ψυχὴ ἔχει μὲν πάντων τοὺς λόγους, [a] ἐνεργεῖ δὲ κατ' αὐτοὺς, ἢ ὑπ' ἄλλου εἰς τὴν προχείρησιν ἐκκαλουμένη, ἢ ἑαυτὴν εἰς [b] αὐτοὺς ἐπιστρέφουσα εἰς τὸ εἴσω. Καὶ ὑπ' ἄλλου μὲν [c] ἐκκαλουμένη ὡς πρὸς τὰ ἔξω τὰς αἰσθήσεις [d] ἀποδίδωσιν· [e] εἰς δὲ ἑαυτὴν [f] εἰσιοῦσα, πρὸς τὸν νοῦν ἐν ταῖς νοήσεσι [g] γίγνεται, καὶ [h] οὔτε αἴσθησις ἔξωθεν, οὔτε νόησις ἄλλη. [i] Ἔτι δὲ ὡς τῷ ζώῳ οὐκ ἄνευ πάθους τῶν αἰσθητικῶν ὀργάνων αἱ αἰσθήσεις, οὕτω καὶ [k] αἱ νοήσεις οὐκ ἄνευ φαντασίας· ἵν' ᾖ τὸ ἀνάλογον, ὡς [l] τύπος [m] παρακολούθημα ζώου αἰσθητικοῦ, οὕτω τὸ φάντασμα ψυχῆς ζώου ἑπόμενον νοήσει. p. 101.

18.

Legitur ap. Holsten. [p. 221.] Ultima verba plena simul et correcta edidi ex Holsten. Nam in codd. Stob. legitur τὰ πάθη τὰ ὑπ' αὐτοῦ, καὶ λύεται διὰ τῆς ἀπαθείας. HEEREN.

19.

Legitur ap. Holsten. p. 66. HEEREN. p. 225. ed. Cantab.

[a] ἐνέργεια] ἐνεργεῖ A. V.

[b] ἑαυτοὺς ἐπιστρέφουσιν] αὐτοὺς ἐπιστρέφουσα V. A. P.

[c] ἐκκαλουμένη jubente sensu edidi pro ἐκκαλουμένου, pertinet enim ad ψυχή. Holsten. male habet ἐπικαλουμένη. HEEREN.

[d] ἀποδίδωσιν] εἰσάγειν δίδωσιν Holsten.

[e] Habet Holsten. εἰς δὲ ἑαυτὴν εἰσδῦσα, ὡς ἐν ταῖς νοήσεσι γίγνεται. In quibus εἰσδῦσα lectioni codd. εἰσιοῦσα fere prætulerim. Cætera autem apud eum manca esse, facile patet. HEEREN.

[f] εἰσιοῦσα] εἰσιοῦσαν A.

[g] γίγνεται] γίγνεσθαι V.

[h] Pro iis quæ jam habet Stob. aliter exstat ap. Holsten. οὔτε οὖν αἰσθήσεις ἔξω φαντασίας, οὔτε αἱ νοήσεις, εἴπη τις· ὡς τῷ ζώῳ οὐκ ἄνευ πάθους τῶν αἰσθητικῶν ὀργάνων αἱ αἰσθήσεις, οὕτω καὶ αἱ νοήσεις οὐκ ἄνευ φαντασίας. Εἰ μὴ τὸ ἀνάλογον ὡς τύπος παρακολούθημα ζώου αἰσθητικοῦ κ. τ. λ. HEEREN.

[i] Ἔτι] Sic Heeren. Vulgo ποτέ.

[k] αἱ νοήσεις] ἐνοήσεις A.

[l] τύπος] ὁ τύπος V. A. E.

[m] Post παρακολούθημα add. ζώου V. A.

20 Ἐν ταυτῷ.

[818] [a]Ἡ ψυχὴ οὐσία ἀμεγέθης, ἄϋλος, ἄφθαρτος, ἐν ζωῇ, παρ' ἑαυτῆς [b]ἐχούσῃ τὸ ζῆν, κεκτημένη τὸ εἶναι.

21 Ἐν ταυτῷ.

Ἄλλο τὸ πάσχειν τῶν σωμάτων, ἄλλο τῶν ἀσωμάτων. [a]Τῶν μὲν γὰρ σωμάτων σὺν τροπῇ τὸ πάσχειν· τῆς δὲ ψυχῆς αἱ οἰκειώσεις καὶ τὰ πάθη ἐνέργειαι, οὐδὲν ἐοικυῖαι θερμάνσεσι καὶ ψύξεσι σωμάτων. Δι' ὃ εἴπερ τὸ πάσχειν [b]τῶν σωμάτων [c]ἀεὶ σὺν τροπῇ, ἀπαθῆ ῥητέον παντελῶς τὰ ἀσώματα. Τὰ μὲν γὰρ ὕλης κεχωρισμένα καὶ σωμάτων, [d]ἐνεργείαις ἦν τὰ αὐτά· τὰ δὲ ὕλῃ πλησιάζοντα καὶ σώμασιν, αὐτὰ μὲν ἀπαθῆ, τὰ δὲ ἐφ' [e]ὧν θεωρεῖται, [f]πάσχει. Ὅταν γὰρ τὸ ζῶον αἰσθάνηται, ἔοικεν ἡ ψυχὴ μὲν ἁρμονίᾳ χωριστῇ, ἐξ αὑτῆς τὰς χορδὰς [g]κινούσῃ ἡρμοσμένας· [h]τῇ δὲ ἐν ταῖς χορδαῖς ἁρμονίᾳ ἀχωρίστῳ τὸ σῶμα. Τὸ δ' αἴτιον
[820] τοῦ [i]κινῆσαι τὸ ζῶον διὰ τὸ εἶναι ἔμψυχον, [k]ἀνάλογον τῷ μουσικῷ διὰ τὸ εἶναι ἐναρμόνιον, τὰ δὲ πληγέντα σώματα διὰ [l]πάθος αἰσθητικὸν ταῖς ἡρμοσμέναις χορδαῖς· καὶ γὰρ ἐκεῖ [m]οὔθ' ἡ ἁρμονία πέπονθεν [n]ἡ χωριστὴ, ἀλλ' ἡ χορδή. Καὶ κινεῖ μὲν ὁ μουσικὸς κατὰ τὴν ἐν αὐτῷ ἁρμονίαν· οὐ

20.

[a] Verba Ἡ ψυχὴ—εἶναι desunt V.

[b] ἐχούσης] –σῃ A.

21.

[a] Τὸ μὲν γὰρ τῶν ἀσωμάτων] τῶν μὲν γὰρ σωμάτων V. A. E.

[b] τῶν σωμάτων ἀεὶ] Sic ed. Heeren. πάντως A. Cant.

[c] ἀεὶ male omisit Holsten. qui pro παντελῶς habet πάντα. HEEREN.

[d] ἐνεργείᾳ] ἐνεργείαις V. A.

[e] ὧν] ὧ A.

[f] πάσχει] πάσχειν A.

[g] κινοῦσιν] κινοῦσα V. A.

ib. κινούσῃ quod ad ἁρμονίᾳ refertur, edidi ex Holsten. pro κινοῦσιν ap. Cant. HEEREN.

[h] Verba τῇ δὲ ἐν ταῖς χορδαῖς ἁρμονίᾳ ἀχωρίστῳ τὸ σῶμα, supplevi ex Holstenio. Nam ap. Cant. et in codd. post ἡρμοσμένας nullo sensu tantum additur ἁρμονία, ἀχωρίστῳ. HEEREN.

[i] κινεῖσθαι] κινῆσαι V. A.

[k] ἀνάλογον] ἀνάλογον δὲ Holsten.

[l] πάθους] πάθος V. A.

[m] οὔθ'] οὐχ Holsten.

[n] ἡ χωριστὴ] ἡ χωριστὴν V. Mox κινῇ A.

μὴν ἐκινήθη ἂν ἡ χορδὴ μουσικῶς, εἰ καὶ ὁ μουσικὸς ἐβούλετο, μὴ τῆς ἁρμονίας τοῦτο λεγούσης.

22 Ἐν ταυτῷ.

[a] Τῆς οὐσίας ἧς ἐν ζωῇ τὸ εἶναι, καὶ ἧς τὰ πάθη [b] ζῶα, ταύτης καὶ ὁ θάνατος ἐν [c] ποιᾷ ζωῇ κεῖται, οὐκ ἐν [d] ζωῆς καθάπαξ στερήσει, [e] ὅτι μηδὲ τὸ πάθος ἦν ὁδὸς εἰς τὴν [f] παντελῆ ἀζωΐαν ἐπ᾽ αὐτῆς.

23 Ἐν ταυτῷ.

Οὐ διὰ τὸ πλῆθος τῶν σωμάτων δεῖ νομίζειν [a] πλῆθος
[822] τῶν ψυχῶν γενέσθαι, πρὸ δὲ τῶν σωμάτων εἶναι καὶ [b] πολλὰς καὶ μίαν, οὔτε τῆς μιᾶς ὅλης κωλυούσης τὰς πολλὰς ἐν ἑαυτῇ εἶναι, οὔτε τῶν πολλῶν τὴν μίαν εἰς αὐτὰς μεριζουσῶν. Διέστησαν γὰρ, οὐκ ἀποκοπεῖσαι, οὐδὲ ἀποκερματίσασαι εἰς ἑαυτὰς τὴν ὅλην, καὶ πάρεισιν ἀλλήλαις, οὐ συγκεχυμέναι, οὐδὲ σωρὸν ποιοῦσαι τὴν ὅλην. Οὔτε γὰρ πέρασίν εἰσι διειλημμέναι, οὔτε πάλιν ἀλλήλαις συγκεχυμέναι, ὥσπερ οὐδὲ ἐπιστῆμαι συνεχύθησαν αἱ πολλαὶ ἐν ψυχῇ μιᾷ, καὶ πάλιν οὐκ [c] ἔγκεινται, ὡς τὰ σώματα, τῇ ψυχῇ ἑτερουσίως, ἀλλὰ τῆς ψυχῆς ποιαὶ ἦσαν ἐνέργειαι[d]. Ἀπειροδύναμος [e] γὰρ ἡ τῆς ψυχῆς φύσις, καὶ καθ᾽ ἕκαστον

22.

Apud Holst. legitur p. 71. HEEREN. p. 228. ed. Cantab.

[a] Τῆς οὐσίας ἡ ζωὴ] ἧς οὐσίας ἐν ζωῇ τὸ εἶναι V. A.

[b] θῶα] ζῶα V. A. ζωαὶ Holsten.

[c] ποιῷ] ποιᾷ V. A.

[d] ζωῆς καθάπαξ] Sic Holsten. ζωῇ καθάπερ A. Cant.

[e] Plenius Holsten. ὅτι μηδὲ πάθος ἢ ὁδός ἐστι πάντη πρὸς τὸ μὴ ζῆν, ἡ ἀζωΐα ἢ ἐν αὐτῇ; HEEREN.

[f] τέλη] παντελῆ V. A. E.

23.

Codd. V. A. E. in marg. τοῦ αὐτοῦ. Leguntur in Holsten. ed. p. 95. HEEREN. p. 246. ed. Cantab.

[a] Ante πλῆθος Holsten. male hic inserit τό; ut et mox καὶ ante οὔτε. HEEREN.

[b] πολλὰς] πολλὰ V. Mox εἰς αὐτὰς A. Cant.

[c] ἔγκεινται] ἔγκειται A. Holsten. Mox ἑτεροουσίως Holsten.

[d] Novum hic ap. Cant. incipit ἀποσπασμάτιον. Codd. tamen V. A. E. recte hæc jungunt præcedentibus, omisso tamen γὰρ, quod nexu sermonis jubente ex Holsten. supplevi. HEEREN.

[e] γὰρ om. A. Cant. Mox φύσιν A.

τὸ τυχὸν αὐτῆς, [f]ψυχὴ, καὶ [g]πᾶσαι, μία· καὶ πάλιν [h]ἡ ὅλη ἄλλη παρὰ πάσας. Ὡς γὰρ τὰ σώματα ἐπ' ἄπειρον τεμνόμενα οὐ καταλήγει εἰς [i]ἀσώματα, κατ' ὄγκον [k]λαμβανόντων τῶν τμημάτων τὴν διαφορὰν, οὕτως [l]ψυχὴ, [m]οὖσα [n]ζωτικὸν ἐπ' ἄπειρον, κατὰ τὰ εἴδη συνείληπται, παραλλαγὰς ἔχουσα [o]εἰδικὰς, [p]καὶ ἡ ὅλη σὺν ταύταις οὖσα,
[824] [q]καὶ ἄνευ τούτων. [r]Εἰ γὰρ ἐπ' αὐτῆς οἷον [s]τομὴ, ἑτερότης ἦν μενούσης τῆς [t]ταυτότητος. Εἰ δ' [u]ἐπὶ τῶν σωμάτων, ἐφ' ὧν ἡ ἑτερότης ἐκράτει μᾶλλον τῆς ταυτότητος, οὐδὲν ἐπεισελθὸν [x]ἀσώματον διέκοψε τὴν ἕνωσιν, μένει δὲ [y]πάντα ἡνωμένα μὲν κατὰ τὴν οὐσίαν, ταῖς δὲ ποιότησι καὶ τοῖς ἄλλοις εἴδεσι διειλημμένα, τί χρὴ [z]ὑπονοεῖν ἐπὶ τῆς [a]εἰδικῆς ἀσωμάτου ζωῆς, ἐφ' ἧς ἡ ταυτότης μᾶλλον κεκράτηκε τῆς ἑτερότητος, καὶ οὐδὲν ὑπόκειται ἀλλοῖον παρὰ τὸ εἶδος, ἀφ' ἧς καὶ τοῖς σώμασιν [b]ἡ ἑνότης, οὐδὲ σῶμα [c]ξυμπεσὸν ἀπο-

[f] ψυχὴ καὶ] ψυχὴ δὲ V. A.

[g] πᾶσα] αἱ πᾶσαι Holsten.

[h] ἡ ὅλη, ἄλλη] Male Cant. [cum A.] inverso ordine legit ἡ ἄλλη, ὅλη. HEEREN.

[i] Pro ἀσώματα Holst. habet ἀσώματον. HEEREN.

[k] λαμβανόντων] μόνον λαμβάνοντα Holsten.

[l] ψυχὴ] αὐτὴ V.

[m] οὖσα] εἶδος οὖσα Holsten. qui mox ἄπειρα.

[n] ζωτικὸν] ζωτικὴ A. E.

[o] εἰδητικὰς] εἰδικὰς A. Holsten.

[p] καὶ ὅλη] καὶ ἡ ὅλη V. A. Holsten.

[q] καὶ] ἢ Holsten.

[r] Insigniter hæc in Cant. ed. corrupta simul et mutila sunt. Habet illa: Εἰ γὰρ ἐπ' αὐτῆς οἷον το μὴ ἑτερότης σημαινούσης τῆς ταυτότητος, οὐδὲν ἐπεισελθὸν etc. In prioribus οἷον τομὴ, et mox ἦν μενούσης pro σημαινούσης restitui ex Holsten. Verba autem Cantero omissa εἰ δ' ἐπὶ τῶν σωμάτων, ἐφ' ὧν ἡ ἑτερότης ἐκράτει μᾶλλον τῆς ταυτότητος, supplevi ex codd. V. A. HEEREN.

[s] τομὴ, ἑτερότης ἦν μενούσης] τὸ μὴ ἑτερόντης σημαινούσης A.

[t] Post ταυτότητος add. εἰ δὲ ἐφ' ὧν σωμάτων, ἐφ' ὧν ἡ ἑτερότης ἐκράτει μᾶλλον τῆς ταυτότητος οὐδὲν etc. V. A.

[u] ἐπὶ τῶν] ἐφ' ὧν A.

[x] ἀσώματον] ἀσώματων A.

[y] τὰ ante πάντα et mox μὲν desunt V. A.

[z] Ante ὑπονοεῖν Holst. inserit καὶ λέγειν καὶ ὑπ. HEEREN.

[a] ἰδικῆς] εἰδικῆς P. A.

[b] ἡ om. Holsten.

[c] σώματαμπεσὸν] ξυμπεσὸν V. σῶμα συμπεσὸν A. E. δίκης E.

ib. Holsten. habet ξυνεμπεσὸν, eodem sensu. HEEREN.

κόπτει τὴν ἕνωσιν, καίπερ πρὸς τὰς ἐνεργείας ἐν πολλοῖς [d]ἐμποδίζον αὐτῇ. Δι' αὐτὴν ἡ [e]ταυτότης πάντα ποιεῖ καὶ εὑρίσκει, [f]διὰ [g]τῆς ἐπ' ἄπειρον [h]εἰδικῆς ἐνεργείας· τοῦ τυ- p. 102. χόντος μέρους πάντα δυναμένου, ὅταν σωμάτων καθαρεύῃ, ὡς τὸ τυχὸν μέρος τοῦ [i]σπέρματος, τὴν τοῦ παντὸς σπέρματος ἔχει δύναμιν. Ὥσπερ δὲ κρατηθὲν [j]ἐν ὕλῃ [k]τὸ σπέρμα, καθ' ἕκαστον ὧν [l]ἠδύνατο [m]λόγων ἐν τοῖς μέρεσι τῆς [n]ὕλης κρατεῖται· καὶ [o]πάλιν συναχθὲν εἰς τὴν [p]τοῦ σπέρματος δύναμιν, καθ' ἕκαστον τῶν μερῶν ἔχει τὴν πᾶσαν [826] δύναμιν, οὕτω καὶ ψυχῆς ἀΰλου τὸ ὡς μέρος ἐπινοούμενον τῆς πάσης ψυχῆς ἔχει τὴν δύναμιν. Τὸ δὲ πρὸς [q]ὕλην ῥέψαν [r]κεκράτηται μὲν [s]καθ' ὃ εἶδος ῥέψαν ἐπιτηδείως ἔσχε προσομιλεῖν [t]ἐνύλῳ· ἔχει δὲ τὴν τῆς ὅλης δύναμιν ἤδη, καὶ ἐντυγχάνει οὔσῃ ἐν ἑαυτῷ, ὅταν ὑπὸ τοῦ ἐνύλου [u]ἀποστὰν, ἐν ἑαυτῷ γένηται. [x]Ἐπεὶ δὲ πρὸς μὲν [y]ὕλην ῥέπον ἴσχει ἀπο-

d ἐμποδίζον. αὐτὴ δὲ δι' ἁ. Holsten.

e Post ταυτότης male ap. Cant. inseritur αὐτῆς, ex terminatione proximi verbi ortum, quod recte omittit cod. A. HEEREN. αὐτῆς Holsten. habet.

f διὰ ἄπειρον] διὰ τῆς ἐπ' ἄπειρον V. A.

g τῆς Cant. omissum, supplet cod. V. HEEREN.

h εἰδητικῆς] εἰδικῆς Holsten.

i σπέρματος] σώματος V.

j ἐν ὅλῃ] ἐν ὕλῃ V. A.

k τὸ] τι A.

l ἠδύνατο] ἐδύνατο A.

m λόγων] λέγων V. A.

n ὅλης] ὕλης V. A.

o πάλιν] πᾶν Holsten.

p Ad τοῦ σπέρματος vel supplendum vel saltem subintelligendum est τοῦ ὅλου σπερμ. HEEREN. τοῦ om. Holsten.

q ὕλην] ὕλῃ A.

r κεκράτηται]· κρατῆσαι Holsten.

s Vult, si quid video, Porphyrius, animam quæ corpori vel materiæ jungitur, etsi ei subjiciatur, retinere tamen vim animæ propriam, atque a corporis vinculis liberare sese posse. καθ' ὃ εἶδος ῥέψαν dictum est pro κατὰ τοῦτο τὸ εἶδος καθ' ὃ ῥέψαν, *secundum eam speciem cui sese jungit.*—ἐνΰλῳ ex codd. V. A. pro ἐν ὅλῳ.—Holsten. omnem h. l. mutilatum, nec ullo, quantum video, sensu sic edidit: τὸ δὲ πρὸς ὕλην ῥέψαν, κρατῆσαι μὲν, καθὸ εἶδος ἔρρεψε, καὶ ἐπιτηδείως ἔσχε προσομιλεῖν ἀΰλῳ εἴδει, εἰ καὶ ἐντυγχάνει οὔσῃ ἐν αὐτῷ etc. HEEREN.

t ἐν ὅλῳ] ἐνύλῳ V. A.

u ὑποστὰν] ἀποστὰν V. A.

x Restitui h. l. ex Holsten. Nam Cant. et cum eo codd. nullo prorsus sensu habent: Ἐπεὶ

ρίαν ἁπάντων καὶ τῆς οἰκείας δυνάμεως κένωσιν, εἰς δὲ τὸν νοῦν ἀναγομένη τὸ πλῆρες ἑαυτῆς κατὰ τὴν δύναμιν ἔχειν τῆς πάσης ηὑρίσκετο, τὴν μὲν εἰκότως πενίαν, τὴν δὲ κόρον, [z] οἱ τοῦτο πρῶτον γνόντες τῆς ψυχῆς τὸ πάθος ᾐνίξαντο.

24 Ἐκ τῶν Πορφυρίου περὶ τῶν τῆς ψυχῆς δυνάμεων.

Τὰς τῆς ψυχῆς δυνάμεις ὑπογράψαι πρόκειται, καὶ πρότερόν γε ἐπεξελθὼν τῇ ἱστορίᾳ [a] τῇ τε παρὰ τοῖς παλαιοῖς καὶ τῇ ὕστερον ἐπικριθείσῃ παρὰ τοῖς διδασκάλοις.
[828] Ἀρίστων ἀντιληπτικὴν δύναμιν τῆς ψυχῆς [b] θέμενος ταύτην διαιρεῖ εἰς δύο, [c] τὸ μέν τοι μέρος φάσκων μετά τινος τῶν αἰσθητηρίων ὡς τὰ πολλὰ κινεῖσθαι, ὃ αἰσθητικὸν καλεῖ, ἀρχὴν καὶ πηγὴν ὑπάρχον τῶν κατὰ μέρος αἰσθήσεων, τὸ δὲ ἀεὶ καθ' ἑαυτὸ καὶ χωρὶς ὀργάνων, ὃ ἐπὶ μὲν τῶν [d] ἀλόγων οὐκ [e] ὠνομάσθαι, (ἢ γὰρ ὅλως οὐκ εἶναι ἐν αὐτοῖς, ἢ τελέως ἀσθενὲς καὶ ἀμυδρὸν ἄγαν,) ἐν δὲ τοῖς λογικοῖς, [f] ἐν οἷς δὴ μάλιστα ἢ μόνοις φαίνεται, νοῦν προσαγορεύεσθαι. [g] Ἔφη
[830] δὲ ἄνευ ὀργάνων τὸν νοῦν ἐνεργεῖν, τὴν αἰσθητικὴν δὲ καὶ μετ' ὀργάνου. [h] Πῶς οὖν ἡ ἄνευ ὀργάνου, οὐχ ἡ αὐτὴ ἔσται τῷ

δὲ πρὸς μὲν ὕλην ῥέπουσιν ἀπορία ἁπάντων, καὶ τ. οἰκ. δ. κένωσις. HEER.

y ὕλην] ὕλη V. A. E.

z οἱ τοῦτο πρῶτον recte Holsten. pro ὅπου τὸ πρῶτον κ. τ. λ. ap. Cant. et in codd. HEEREN.

24.

a τῇ τε—τῇ ὕ. ἐπικριθείσῃ] τά τε ὕ. ἐπικριθέντα leg. suspicatur Heerenius.

b θέμενος] θέματος V. A.

c τὸ μέν τοι] τὶ μέντοι V. A.

d ἀλόγων, quod statim opponitur τοῖς λογικοῖς, rescripsi pro ἄλλων. HEEREN.

e ὀνομάσθαι] ὠνομάσθαι Heeren. ὠνόμασται V. A.

f Turbato verborum ordine habet Cant. et cum eo codd. ἐν οἷς δὴ μάλιστα μόνοις νοῦν φαίνεται προσαγορεύεσθαι, omisso simul ἢ quod salvo sensu abesse nequit. HEEREN.

g Ἔφη δὲ ἄνευ ὀργάνου οὐχ ἡ αὐτὴ ἔσται τῷ] Add. ἔφη δὲ ἄνευ ὀργάνων τὸν νοῦν ἐνεργεῖν, τὴν αἰσθητικὴν καὶ μετ' ὀργάνου. Πῶς οὖν ἄνευ ὀργάνου οὐχ ἡ αὐτὴ etc. V. A. E. P.

h Πῶς οὖν] Vix dubitaverim pro Πῶς οὖν ἡ ἄνευ ὀργάνου levi mutatione, vel nulla fere, si litteris majusculis hæc scripseris, legendum esse, Πῶς οὖν ἡ μετ' ὀργάνου etc. HEEREN.

νῷ; εἴγε [i]ὑφ᾽ ἓν γένος, τὸ τῆς ἀντιληπτικῆς, τέτακται [k]καὶ τὸ μετ᾽ ὀργάνου ἐνεργοῦν μέρος, καὶ τὸ ἄνευ ὀργάνου· ἢ ὅτι ἡ μὲν τῆς μορφῆς τῶν ὄντων ἀντιλαμβάνεται, ἡ δὲ τῆς οὐσίας; Αἴσθησις γὰρ οὐσίας οὐκ ἀντιληπτικὴ, ἀλλὰ [l]μορφῆς καὶ [m]πλάσεως, ὅτι δὲ ἄνθρωπος ἢ ἵππος, ἄλλου ἡ ἀντίληψις. Διάφορον οὖν τῆς ἀντιλήψεως τὸ κίνημα, ἡ μὲν γὰρ [n]τυπουμένη ἔοικεν ἡ τῆς αἰσθητικῆς, καὶ ἔξω [o]ἑλκομένη ἐπὶ μορφὴν, ἡ δὲ ἀφισταμένη τυπώσεως. Οἱ μὲν οὖν διῄρουν, καὶ τὸ μὲν ἄνευ φαντασίας διεξοδικὸν, ἀπὸ τοῦ νοῦ ἠρτημένον, διάνοιάν τε καὶ νοῦν προσηγόρευον, τὸ δὲ μετὰ φαντασιας ἢ αἰσθήσεως τὴν διέξοδον ἔχον, δοξαστικόν. [p]Οἱ
[832] δὲ μίαν μὲν τὴν οὐσίαν λογικὴν ἐτίθεντο, διαφόρους δὲ τὰς ἐνεργειας. Τοιαύτης δε οὔσης τῆς διαφορᾶς, ὑφ᾽ ἓν τίθεσθαι τὰς δυνάμεις μήποτε ἄτοπον ᾖ, (οὐ γὰρ ἐκ μιᾶς ἥ γε νόησις οὐσίας ὁρμᾶται καὶ ἡ αἴσθησις, καὶ [q]ἀντίληψιν [r]εἴτις λέγει τὴν τοῦ νοῦ ἐνέργειαν ὁμωνύμως ἐρεῖ.) Καὶ [s]δεῖ ἄλλην μὲν θέσθαι τὴν τοῦ νοῦ δύναμιν, καὶ ἑτερογενῆ, μεθ᾽ ἣν τὴν τῆς διανοίας, [[t]πάντας τοὺς ἐφ᾽ ἑκατέρας,] ἀλλὰ τὴν μὲν ἀθρόαν ἐνέργειαν, τὴν δὲ [u]ἐν διεξόδῳ· ἄλλην δὲ [x]πάντη τὴν αἰσθητικὴν, ἧς τὸ [y]μέν τι μετὰ προσχρήσεως ὀργάνων, τὸ δὲ

[i] ὑφ᾽ ἓν] ὑφ᾽ ἑνὶ V. A.

[k] καὶ τὸ] τὸ om. A. V. E.

[l] Post μορφῆς add. καὶ πλάσεως· ὅτι δὲ ἄνθρωπος ἢ ἵππος, ἄλλου ἡ ἀντίληψις. Διάφορον οὖν τῆς ἀντιλήψεως V. A. E.

[m] Periisse videntur nonnulla post πλάσεως, sine quibus quæ sequuntur cum prioribus vix cohærent. Secundum sententiarum enim nexum merito exspectaveris ὁ νοῦς δὲ οὐσίας ἐστὶ ἀντιληπτικὸς, quæ in exemplo de homine et equo vix latere possunt; vel si in iis laterent, male tamen ἄλλου dictum foret pro τοῦ νοῦ. HEER.

[n] τυπούμενον] –μένη V. A. E.

[o] ἑλκομένη] ἑλκομένης V. A. E.

[p] Οὐδὲ μίαν] οἱ δὲ μίαν V. A.

[q] ἀντίληψιν] –ληψις V. A. E.

[r] εἴ τις] ἥτις A. E.

[s] δεῖ quod sensus flagitat, edidi pro εἰς quod cum Cant. habent codd. HEEREN.

[t] Corrupta enim esse verba πάντας τοὺς ἐφ᾽ ἑκατέρας quilibet videt; quid tamen rescribendum sit aliis divinandum relinquo, verbaque uncis inclusi. HEEREN.

[u] διεξόδῳ] ἐν διεξόδῳ V. A. E.

[x] πάντη] πάντως V.

[y] μέν τοι] μέν τι V. A. E.

ἄνευ προσχρήσεως, τοῦ μὲν μετ᾽ ὀργάνων αἰσθητικοῦ καλουμένου, τοῦ δὲ ἄνευ [z] τούτων φανταστικοῦ, τὸ δέ τι οὐχ ἧττον τοῦ αὐτοῦ γένους· ὑπερβεβηκὸς δὲ τὸ διεξοδεῦον τὸ ἀθρόον, τούτων δοξαστικὸν καλούμενον ἐπιστάσεως οὔσης· [a] πρότερον τῆς διανοίας εἶδος τὸ [b] τοιοῦτο ἢ τὸ ἄλλο, τὸ ὑπερβεβηκὸς μὲν τὸ αἰσθητικὸν καὶ φανταστικὸν, ὑποβεβηκὸς δὲ τὸ νοητικόν.

25 Ἐν ταὐτῷ. p. 103.

Νουμήνιος δὲ τὴν [a] συγκαταθετικὴν δύναμιν παραδεκτικὴν
[834] ἐνεργειῶν [b] φήσας εἶναι, σύμπτωμα αὐτῆς φησὶν εἶναι τὸ φανταστικὸν, οὐ μὴν ἔργον τε καὶ ἀποτέλεσμα, ἀλλὰ παρακολούθημα· τῶν ἀπὸ τῆς Στοᾶς τὴν αἴσθησιν οὐκ ἐν τῇ φαντασίᾳ ἱστάντων μόνον, ἀλλὰ τὴν οὐσίαν ἀναρτώντων ἀπὸ τῆς [c] συγκαταθέσεως. Αἰσθητικὴ γὰρ φαντασία συγκατάθεσίς ἐστιν, ἢ αἴσθησις τῆς συγκαταθέσεως καθ᾽ ὁρμὴν οὔσης. Λογγῖνος δὲ μηδὲ εἶναι ὅλως συγκαταθετικὴν δύναμιν ὑπονοεῖ. Κατὰ μέντοι τοὺς πρεσβυτέρους καὶ τοὺς ἀπὸ τῆς Ἀκαδημίας ἡ αἴσθησις [d] ἀπὸ τῆς αἰσθητηρίου φαντασίας ψιλὴ τίθεται, καὶ διὰ τοῦτο οὐδὲ [e] καταρχὰς μέτοχος ἰδιώματος, ὅτι μηδὲ [f] συγκαταθέσεως μέτοχος. Κἂν ἤδε μετὰ συγκαταθέσεως συγκατακειμένη φαντασία δι᾽ [g] αἰσθητηρίου [h] εἴη αἴσθησις, οὐ πάντως καὶ ἀρετῆς μέτοχος ἡ αἴσθησις ἔσται, εἰ μὴ συγκατάθεσις εἴη τῶν ἐφ᾽ ἡμῖν.

z τούτου] τούτων V. A.

a πρότερον] πότερον V. A. E.

b τοιοῦτο et ἄλλο] τοιοῦτον et ἄλλον A.

25.

a συγκαταθετικὴν] καταθετικὴν V.

b φθήσας] φήσας V. A. E.

c Post συγκαταθέσεως add. αἰσθητικὴ γὰρ φαντασία, συγκατάθεσίς ἐστιν ἢ αἴσθησις, τῆς συγκαταθέσεως καθ᾽ ὁρμὴν etc. V. A. E. P.

d αἰσθητέρου] ἀπὸ τῆς αἰσθητηρίου V. A.

e καταρχὰς] κατ᾽ ἀρετὰς V. A. E.

f Post συγκαταθέσεως add. μέτοχος κ᾽ ἂν ἤδε μετὰ συγκαταθέσεως, συγκατακειμένη etc. V. A. E.

g αἰσθητέρου] αἰσθητηρίου V. A.

h εἴη] Sic Heeren. tanquam ex V. A. Atqui A. habet ἡ cum Cant.

[i]Διαπεφώνηται δὲ οὐ τὰ περὶ τούτων μόνον τοῖς παλαιοῖς, [836] ἀλλὰ καὶ ἐξ ἀρχῆς τὰ περὶ τῶν μερῶν τῆς ψυχῆς· καὶ ὅλως τί τὸ μέρος, καὶ τίς ἡ δύναμις, καὶ τίνι ταῦτα διενήνοχεν; Αὐτίκα οἱ μὲν ἀπὸ τῆς [k]στοᾶς ὀκταμερῆ τὴν ψυχὴν θέντες, καὶ πέντε μὲν μέρη τὰ αἰσθητικὰ λαβόντες, ἕκτον δὲ τὸ φωνητικὸν, καὶ ἕβδομον τὸ σπερματικὸν, καὶ λοιπὸν τὸ ἡγεμονικὸν ὡς ἂν ἄρχοντος χώραν ἔχειν ὑπετίθεντο, τὰ δὲ ἄλλα μέρη ἐν ὑπηρέτου τάξει ἀπεδίδοσαν, ὥστε τὸ αὐτὸ ἐξ ἄρχοντος καὶ ἀρχομένων συνεστάναι.

Παρὰ δὲ Πλάτωνι καὶ [l]Ἀριστοτέλει ἐν τοῖς Ἠθικοῖς τριμερὴς ἡ ψυχὴ λέγεται εἶναι, καὶ κεκράτηκε τοῦτο παρὰ τοῖς πολλοῖς, ἀγνοοῦσιν ὡς ἡ διαίρεσις τῆς συστάσεως ἕνεκα τῶν ἀρετῶν παρείληπται· οὐ γὰρ ἁπλῶς εἰς σύλληψιν πάντων τῶν μερῶν. Τὸ γὰρ φανταστικὸν καὶ αἰσθητικὸν [m]καὶ τὸ νοερὸν καὶ φυσικὸν οὐ δήπου ἐν τῇ διαιρέσει ταύτῃ [n]περιληφθήσεται. Ἄλλοι δὲ, ὧν καὶ Νουμήνιος, οὐ τρία μέρη ψυχῆς μιᾶς, ἢ δύο γε, τὸ λογικὸν καὶ ἄλογον, ἀλλὰ δύο ψυχὰς ἔχειν ἡμᾶς οἴονται, ὥσπερ καὶ ἄλλοι, τὴν μὲν [o]λογικὴν, τὴν δὲ ἄλογον· ὧν πάλιν οἱ μὲν ἄμφω ἀθανάτους, οἱ δὲ τὴν λογικὴν ἀθάνατον. Τὴν δὲ ἄλογον οὐ κατὰ τὰς ἐνεργείας μόνον [p]ἀφίστασθαι τῆς ποιᾶς κινήσεως, ἀλλὰ καὶ κατ᾽ οὐσίαν διαλύεσθαι. Τοῖς δὲ ἐδόκει, δύο ψυχῶν εἰς ταυτὸ συμπλακεισῶν ἀλλήλαις, διπλασίας εἶναι τὰς [838] κινήσεις, ὁμοιουμένων ἀλλήλαις ἐκ τοῦ ἀπολαύειν [q]ἑκατέραν τῶν τῆς ἑτέρας παθημάτων κατὰ τὴν ἕνωσιν. Ῥητέον δὲ ὡς

[i] Διαπεφώνηται] Sejungere videtur A. a præcedentibus, lemmate ἐν ταυτῷ posito.

[k] στοᾶς] στωᾶς A.

[l] Respicit ad ea quæ Aristoteles docet in Ethicis VI. 2. HEEREN.

[m] καὶ pro κατὰ quod cum Cant. habent codd. ipse jam Cant. in marg. emendaverat. HEEREN.

[n] παραληφθ.] περιληφθήσεται V. A.

[o] λογικὴν] λόξην V.

[p] ἀφίστασθαι] ἀφίσταται V.

[q] ἑκατέραν] ἑκάτερον V. A.

δύναμις μέρους διήνεγκεν, ὅτι τὸ μὲν μέρος ἐκβέβηκε κατὰ γένος τὸν χαρακτῆρα τοῦ ἄλλου μέρους, αἱ δὲ δυνάμεις περὶ τὸ αὐτὸ στρέφονται γένος. Δι' ὃ τὰ μὲν μέρη παρῃτεῖτο [r]Ἀριστοτέλης ἐπὶ τῆς ψυχῆς, [s]τὰς δὲ δυνάμεις οὐκέτι. Τὸ γὰρ [t]ἑτερομερὲς εὐθὺς ὑποκειμένου παραλλαγὴν εἰσάγειν, τὸ δὲ ἑτεροδύναμον καὶ περὶ [u]ἓν ὑποκείμενον ἐνίστασθαι. Λογγῖνος δὲ οὐδὲ τὸ ζῷον πολυμερὲς εἶναι, ἀλλ' ἀμερές, πολυδύναμον δέ, [x]κατὰ τὸ τοῦ Πλάτωνος ἐν τοῖς σώμασι πολυμερῆ φάσκοντος τὴν ψυχὴν γίγνεσθαι, καθ' ἑαυτὴν οὖσαν ἀμερῆ. [y]Εἰ δὲ [z]οὐ πολυμερής, οὐ διὰ τοῦτο καὶ μονοδύναμος, ἐνδέχεσθαι γὰρ ἣν ἀμερὲς δυνάμεις πλείους ἔχειν. Διακριτέον οὖν τάχα ἐκ τοῦ πολλοῦ ταράχου, [a]θέντας ὅρον γνώσεως μερικῆς διαφορᾶς καὶ ἀδιαφορίας, καὶ πάλιν [b]δυνάμεως πρὸς μέρη καὶ πρὸς ἀλλήλας, [c]ἐπανωτέρω οὐσιῶν, εἰ καὶ πλείους ἐν ἑνὶ εἶεν. Ἐκ τούτου
[840] γὰρ γνώριμον ἔσται, [d]εἰ καὶ ἡ ψυχὴ ἐν [e]ζώῳ οὖσα πολυμερής, ἢ μόνον πολυδύναμος· καὶ [f]πότερον συγχωρητέον τοῖς μίαν μὲν ψυχὴν εἰς τὸν ἄνθρωπον κατακλείουσι, πολυμερῆ
δὲ [g]ταύτην, ἢ καθ' αὑτήν, ἢ καὶ ἐν τούτῳ, λέγουσιν γίγνε- p. 104.
σθαι· ἢ πλειόνων ψυχῶν ἡ σύνοδος, καὶ ἐῴκει ὁ ἄνθρωπος μάλιστα χορῷ συνᾴδοντι, καὶ κατὰ τοῦτο ἔχοντι τὸ ἓν κατὰ

r Ἀριστοτέλους] –τελης V. A.

s τὰς δυναμ.] τὰς δὲ δυνάμεις V. A.

t ἑτερομερὲς, *quod plures partes habet*, rescripsi pro ἑτερόμενον. In proximis εἰσάγειν, quod sequens ἐνίστασθαι postulat, dedi pro εἰσάγει. HEEREN.

u ἓν ὑποκείμενον] ἐνυποκειμένου A.

x κατὰ, sensu jubente inserui. HEEREN.

y Εἰ δὲ] οὐδὲ A. Cant. Mutavit Heerenius.

z ὁ πολυμ.] οὐ πολυμερὴς V. A.

a θέντας ὅρον, *termino posito*, bene jam in marg. dedit Cant. pro θέντα σάρον, quod nullo sensu habet Cant. et cum eo codd. addita tamen corruptelæ notula. HEEREN. σαρὸν A.

b δυνάμεων] Sic tacite Heerenius. δυνάμεως A. Cant.

c ἐπανοτέρω] ἐπανοτέρων V. ἐπανωτέρω A.

d εἰ] ἡ A.

e ζώῳ] σώῳ V.

f πότερον] πρότερον A.

g ταύτῃ ἢ] ταύτην ἢ V. A.

τὴν τῶν συμπληρούντων τὸ [h]ὅλον συμφωνίαν, ἢ ἑνὸς ἦν κατ' οὐσίαν τὸ διάφορον πλῆθος. Ῥητέον οὖν, ὡς δύναμις, καὶ μέρος, καὶ κατασκευὴ [i]ἐπὶ τῆς ψυχῆς [j]ταύτῃ διενήνοχε· μέρος μὲν γάρ ἐστιν, ὃ καὶ τῷ ὑποκειμένῳ, καὶ τῷ εἴδει, καὶ ταῖς ἐνεργείαις ἄλλου μέρους διαφέρει· κατασκευὴ δὲ ἡ πρὸς ὃ πέφυκε τῶν μερῶν οἰκεία ἐπιτηδειότης· δύναμις δὲ τῆς κατασκευῆς ἕξις ἀφ' ἧς ἐνεργεῖν δύναται, [k]καθ' ὃ κατεσκεύασται ἕκαστον. Ἔνιοι δὲ τὴν αὐτὴν ἔφασαν εἶναι κατασκευήν τε καὶ δύναμιν. Διαφέρει δὲ μέρους δύναμις, [l]ὅτι αἱ δυνάμεις ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ καὶ ἑνὸς ὑποκειμένου ὅλου πλείους θεωροῦνται, οὐκ ἐν ἄλλῳ καὶ ἐν ἄλλῳ [m]περατουμέναι τῷ ποσῷ τῆς ὑποκειμένης οὐσίας, τὰ δὲ μέρη [n]ἀπολαμβάνει ἑαυτοῖς ποσόν τι τῆς οὐσίας, καὶ περιγράφει [o]ἀλλοῖόν τι μόριον αὐτῆς. Αὐτίκα τοῦ μήλου αἱ μὲν δυνάμεις πᾶσαι ἐν ἑνὶ, τὰ δὲ μέρη ἄλλα ἀλλαχοῦ [p]κεχώρισται· [842] ἐφάπτεται γὰρ ἡ μὲν τοῦ μέρους ἔννοια ποσοῦ, ὡς πρὸς τὴν τοῦ ὅλου κατασκευὴν [q]ὁλικωτέραν ποσότητα [r]ἀπολαμβάνοντος· [s]ἡ δὲ τῆς δυνάμεως τοῦ ὅλου τὴν ἐπίνοιαν ἀπείληφε. Διόπερ ἀμερεῖς μὲν αἱ δυνάμεις, καὶ δι' ὅλου κεχωρηκυῖαι, τὰ δὲ μέρη [t]ἠλλοίωται [u]μερισμοῦ, ἔχοντα ἀντὶ [v]ὅλου ποσότητα. Πῶς οὖν ἀμερὴς ἡ ψυχὴ καὶ πάλιν τριμερής; [x]Οἱ μὲν οὖν

[h] ὅλον] ὅλων A.

[i] ἐπὶ τῆς] τὸ τῆς A.

[j] ταύτῃ rescripsi pro ταύτης. HEEREN.

[k] καθ' ὃ κατασκεύασθαι] καθὸ κατεσκεύασται V. A. κατεσκεύεσθαι P.

[l] Inserui hic verba ὅτι αἱ δυνάμεις, quæ sensus flagitat, et quæ ob homoioteleuton facile excidere potuerunt. HEEREN.

[m] παραιτούμενα] περαιτούμεναι V. E. περατούμεναι A. Cant. in marg.

[n] ἀπολαμβάνειν ἑαυτοῖς] ὑπολαμβάνειν ἑαυτῆς V. A. ἀπολαμβάνει ἑ. Heeren.

[o] ἀλλ' οἷον] ἀλλοῖον V. A.

[p] κεχώριστον] κεχώρισται V. A.

[q] ὁλικωτέραν, *magis integram quantitatem*, Cant. bene in marg. emendavit pro ὀλιγωτέραν. HEEREN.

[r] ἀπολαμβάνοντος] λαμβάνον V. A.

[s] ἡ δὲ] ὁ δὲ A.

[t] ἠλλ.] ἀλλοίωται A.

[u] μερισμοῦ ἔχοντα] μερισμοῦ, μερισμοῦ ἔχοντα V.

[v] τοῦ ὅλου] τοῦ om. A. Mox τριημερὴς A.

[x] Οἱ μὲν] ἡ μὲν A. V.

τὰ μέρη τῆς ψυχῆς [y]κατὰ τὸ ποσὸν ἀκούσαντες, εἰκότως ἀποροῦσι, πῶς [z]καὶ ἀμερὴς καὶ τριμερής; καὶ λύουσι, φάσκοντες, κατὰ μὲν ἴδιον λόγον, καὶ καθ' ἑαυτὴν, εἶναι ἀμερῆ, τριμερῆ δὲ καθ' ὅσον ἐν σώματι [a]γενομένη μεριστῷ ὄντι ἄλλο καὶ ἄλλο μέρος ἐπέχει τοῦ σώματος εἰς τὰς διαφόρους αὐτῆς ἐνεργείας. Οὐ γὰρ δὴ αὕτη κεφαλὴν ἔχει, καὶ θώρακα, [b]καὶ τρίτον τὸ ἧπαρ, ἀλλ' αἱ [c]διὰ τούτων διάφοροι ἐνέργειαι, διὰ [d]μερισμῶν καὶ μερῶν γιγνόμεναι διαφόρων τοῦ σώματος, ἀπ' ἐκείνων αὐτῇ τῶν μερῶν μερισμὸν [e]ἐπανέθησαν. Νικόλαος δὲ οὐκ ἠξίου τὰ μέρη τῆς ψυχῆς κατὰ τὸ ποσὸν λαμβάνειν, ἀλλὰ μᾶλλον κατὰ τὸ ποιὸν, ὥσπερ καὶ τέχνης καὶ φιλοσοφίας, ἐπὶ μὲν γὰρ τοῦ ποσοῦ τὸ ὅλον ἐκ τῶν μερῶν συμπληροῦται, καὶ γίγνεται ὡς κατὰ
[844] τὴν πρὸς ἕτερον ἀντεξέτασιν πλέον ἢ ἔλαττον, ἢ μικρότερον ἢ μεῖζον, προστιθεμένου μέρους ἢ ἀφαιρουμένου. Ψυχῆς δὲ [f]οὐχ οὕτως [g]λέγομεν εἶναι μέρη· οὐ γὰρ [h]δὴ τὸ ποσὸν αὐτῆς ὑπὸ τούτων συμπληροῦται, οὔτε γὰρ μέγεθός ἐστιν· [i]οὔτε τι ἔχει πλῆθος, ἀλλ' ὡς τέχνης μέρη. Διαφέρει δὲ καὶ τούτων, τέχνη μὲν γὰρ [k]ἀπόντος μέρους οὐκ ἂν εἴη ὁλόκληρος

[y] κατὰ τὸ ποσὸν *secundum quantitatem* rescripsi pro καὶ τὸ ποσὸν, ap. Cant. HEEREN.

[z] γὰρ ante καὶ deest V. A.

[a] γενομένη etc.] γενομένῳ μεριστῷ, οὔτι ἄλλο καὶ V. A.

[b] καὶ τρίτον τὸ ἧπαρ, *ac tertio loco jecur,* satis certa ni fallor emendatione rescripsi pro καὶ τοῦτο τὸ ἧπαρ, quod Cant. habet. Codd. V. A. τοῦ ποτ' ἧπαρ nullo sensu. In proximis verba ἀλλ' αἱ plane interiere ap. Cant. Codd. V. A. supplent ἅμ' αἱ, ex quo veram lectionem restitui. HEEREN. αμ' A.

[c] διὰ τούτων διάφοροι ἐνέργειαι om. A.

[d] μερισμῶν, *per divisiones,* rescripsi pro μεριστῶν quod Cant. habet cum codd. HEEREN.

[e] ἐπανέθεσαν] ἐπανέθησαν V. A.

[f] οὐχ, quod sensus flagitat, bene hic servavit cod. P. HEEREN.

[g] λέγωμεν] λέγομεν V. A.

[h] δὴ om. A.

[i] οὔτε τι rescripsi pro οὔτι τε.— In proximis nullo sensu habet Cant. et codd. τέχνης μὲν γὰρ ἀπό τι μέρος, pro quo rescripsi τέχνη μὲν γὰρ ἀπόντος μέρους. *Artem, si partem ejus demseris, non amplius integram esse.* HEEREN.

[k] ἀπὸ] f. ἀπὸν pro ἀπὸ Cant. in marg.

οὐδὲ τελεία, ψυχὴ δὲ πᾶσα τελεία ἐστὶ, καὶ τὸ πᾶν ζῶον οὐ κομισάμενον τὸ κατὰ φύσιν τέλος ἀτελές ἐστιν. Ἀκούει τοίνυν Νικόλαος τὰ μέρη τῆς ψυχῆς, ὡς [l] δυνάμεις τοῦ ἔχοντος· τὸ γὰρ ζῶον, καὶ ὅλως τὸ ἔμψυχον, τῷ ψυχὴν [m] ἔχειν πολλὰ δύναται, οἷον ζῆν, [n] αἰσθάνεσθαι, κινεῖσθαι, νοεῖν, ὀρέγεσθαι, ὧν πάντων αἰτία καὶ ἀρχὴ ἡ ψυχή. Ταύτας οὖν τὰς δυνάμεις, ἀφ' ὧν λέγεται τὸ ἔμψυχον ταῦτα δρᾶν [o] ἢ πάσχειν, μέρη τῆς ψυχῆς τίθενται ὡς εἴρηται. Οὐδὲν [p] γὰρ κωλύει αὐτῆς ἀμεροῦς οὔσης μεριστῶς δέχεσθαι τὰς [q] ἀπ' αὐτῆς τῶν ἐνεργειῶν ἐνδόσεις. [r] Μεριστὸν οὖν τὸ ζῶον, εἰς τὴν ἐπίνοιαν αὐτοῦ καὶ τοῦ σώματος παραλαμβανομένου, ἀφ' οὗ καὶ [s] αἱ ζωτικαὶ ἐνέργειαι, κατὰ ψυχῆς [t] ἔνδοσιν δεχόμεναι τὴν εἰς μέρη, τῶν διαφόρων ἐνεργειῶν κατὰ τάξιν, καὶ τῇ ψυχῇ τὰ μέρη ἔχειν προσανέθησαν.
[846] Καὶ [u] μήποτε διττῶς ἐπινοουμένης τῆς ψυχῆς, καὶ ἐχούσης
τὴν ζωὴν, τήν τε [x] καθ' αὑτὴν, καὶ τὴν κατὰ σχέσιν, ἐν [y] τῇ p. 105.
κατὰ σχέσιν ζωῇ ὑφίσταται τὰ μέρη. [z] Ὡς γὰρ πυρῷ σπαρέντι ἐν τῇ πρὸς τὴν γένεσιν [a] σχέσει ὑφίσταται τὰ μέρη,

l δυνάμεις] δύναμις V. A.

m ἔχει] ἔχειν V. A.

n αἰσθάνεσθαι] καὶ αἰσθάνεσθαι V.

o καὶ πάσχειν] ἢ πάσχειν V. A.

p γὰρ addidi ut nexus constaret. HEEREN.

q ἀπ' αὐτῆς] ἐπ' αὐτῆς V.

r Μεριττὸν οὖν] μεριστὸν ὂν V. A.

s αἱ edidi sensu jubente, quod ob sequens καὶ facile interire poterat. In proximis δεχόμεναι Cant. jam in marg. emendaverat pro ἐχόμεναι, quod confirmant, quæ modo præcesserant. Vult enim scriptor: *cum vires vitales per totum corpus singulasque ejus partes divisæ sint, male inde ortam esse opinionem, animam ipsam divisam esse, cum illa per se simplex sit, etsi functiones ejus divisionem admittant.* Illustratur hoc statim exemplo. *Spica etsi per se dividi nequeat, nisi spicam eam esse desinere velis, tamen singula grana vim totius continent, ita ut seminata integram iterum spicam producere possint.* HEEREN.

t ἔνδοσιν ἐχόμεναι] ἔνδον συνεχόμεναι A.

u μήποτε] Heeren. tacite δήποτε.

x καθ' αὑτὴν] κατ' αὐτὴν A.

y τῇ] τῇδε A.

z Ὡς γὰρ—μέρη deest ob homoiotel. V.

a σχέσιν] σχέσει A.

τοῦ στάχυος [b] ὅλου οὐκ ὄντος μεριστοῦ, ἐν δὲ μεριστῷ [c] θεωρούμενα, ἀφ' οὗ πάλιν ἐπάνεισιν εἰς τὸ ἀμέριστον, οὕτω καὶ ψυχῇ ἀμερίστῳ [d] οὔσῃ ἐν τῇ σπορᾷ παρυφίσταται τὰ μέρη.

26 Ἐν ταυτῷ.

Συμβαλλόμενον ἑξῆς [a] ἂν εἴη ἐπισκέψασθαι πρὸς τὸ γνῶναι τίνες διὰ τὴν ψυχὴν ζῶα [b] προβέβληνται [c] ὡς δι' αὐτὴν, καὶ τίνες διὰ τὴν μετ' αὐτὴν, καὶ τίνες διὰ τὸ ζῶον; Οὕτως γὰρ καὶ αἱ [d] ὑποστάσεις πρόδηλοι, καὶ τίνες αἱ ἀνάγκαι εἰς τὴν καθ' αὑτὴν ἐπάνοδον ἔσονται τῶν ἐν μέρεσι τοῦ σώματος μέρη ψυχῆς κατακλειόντων.

27 [a] Ἰσάρας Πυθαγορείου Λευκάνας. Ἐκ τοῦ περὶ Ἀνθρώπων φύσεως.

Φύσις ἀνθρώπω κανών μοι δοκεῖ νόμω τε καὶ δίκας ἦμεν, [848] καὶ οἴκω τε καὶ πόλιος. Ἴχνια γὰρ ἐν αὐτῷ στιβαζόμενος εὕροιτό κα [b] τις καὶ μαστευόμενος. Νόμος γὰρ ἐν αὐτῷ καὶ δίκα, [c] ἃ τᾶς ψυχᾶς ἐστι διακόσμασις. Τριχθαδία γὰρ ὑπάρχοισα ἐπὶ τριχθαδίοις ἔργοις συνέστακε. [d] Γνώμαν γὰρ καὶ φρόνασιν [e] ἐργαζόμενος ὁ νόος, καὶ ἀλκὰν

[b] ὅλου] τοῦ λόγου V. A. P.
[c] θεωρουμένα] θεωρουμένῳ V. A.
[d] οὔσῃ] αὕτη V. A. αὐτὴ P.

26.

[a] ἂν om. A.
[b] προσβέβληνται] προβέβληνται V. A.
[c] ὡς δι' αὐτὴν μετ' αὐτὴν καὶ τίνες διὰ τὸ ζ.] ὡς δι' αὐτὴν, καὶ τίνες διὰ τὴν μετ' αὐτὴν, καὶ τίνες διὰ ζῶον οὕτω γὰρ etc. V. A.
[d] ὑποστάσεις] ἀποστάσεις A.

27.

[a] Ἰσάρας] Sic A. Αἰσάρας Πυθαγόρου λευκάνας Cant. marg. et in marg. versionis Latinæ, *Aresæ Pythag.* Ἀρέσαν ἐκ τῶν Λευκανῶν citat Jamblichus Vit. Pythag. c. 36. p. 214. ed. Kust. *Aresas Lucanus ex his qui proxime Pythagoræ successerunt* verba sunt Salmasii in Epict. et Simplic. p. 169.
[b] Male ante τις Cant. et codd. inserunt καὶ, quod delevimus. HEEREN. Pro καὶ reponendum κα.
[c] ἅ τᾶς] αὐτὰς A.
[d] Proxima sic leguntur ap. Cant. γνώμαν καὶ φρόνασιν [φρόνησιν A.] ἐργαζομέναν [ην A.], καὶ ἀρκὰν, καὶ ἀλκὰν, καὶ δύναμιν, καὶ ἔρωτα, καὶ φιλοφροσύναν, ἅ ἐπιθυμία.—Codd. nihil præsidii offerunt, nisi quod in V. A. deest καὶ ἀρκάν. Tractavit h. l. Sal-

καὶ δύναμιν ἁ θύμωσις, καὶ ἔρωτα καὶ φιλοφροσύναν ἁ ἐπιθυμία. Καὶ οὕτω συντέτακται ταῦτα [f] ποτ' ἄλλαλα
[850] πάντα, ὥστε αὐτᾶς τὸ μὲν κράτιστον ἀγέεσθαι, τὸ δὲ χεῖρον ἄρχεσθαι, τὸ δὲ μέσον μέσαν [g] ἐπέχεν τάξιν, καὶ ἄρχεν καὶ ἄρχεσθαι. Ταῦτα δ' οὕτως ἐμάσατο κατὰ λόγον ὁ θεὸς ἔν τε ἐκτυπώσει καὶ ἐξεργασίᾳ [h] τῷ ἀνθρωπίνῳ σκάνεος, ὅτι μόνον ἄνθρωπον [i] ἐνοήσατο νόμῳ τε καὶ δίκας ἐπιδέκτορα γενέσθαι, καὶ οὐδὲν [j] ἄλλο τῶν θνατῶν [k] ζώων. Οὔτε γὰρ ἐξ ἑνὸς σύσταμα κοινωνίας γένοιτο [l] ἂν, οὔτε μὰν ἐκ πλειόνων, ὁμοίων δὲ τούτων· ἀνάγκα γὰρ, ἐπεὶ τὰ πράγματα διαφέροντά ἐντι, καὶ τὰς ἐν ἁμῖν μοίρας τᾶς ψυχᾶς διαφόρους ἦμεν, ὥσπερ καὶ ἐπὶ τοῦ [m] σώματος [n] ὁράσιος, καὶ ἀκοᾶς, καὶ γεύσιος, καὶ ὀσφράσιος, οὐ γὰρ πάντα ποτὶ πάντα τὰν αὐτὰν ἔχει συναρμογάν· [o] οὔτε μὰν ἐκ πλειόνων μὲν καὶ ἀνομοίων, τῶν τυχόντων μάντοιγε, [p] ἀλλὰ [q] τῶν ποττὰν τῷ

masius l. c. qui ita rescribi jubet: γνώμαν καὶ φρόνασιν ἐργαζομένας ὁ λογισμὸς, ἀλκὰν καὶ δύναμιν ὁ θυμὸς, ἔρωτα καὶ φιλοφροσύναν ἁ ἐπιθυμία. Recte quidem quoad sensum; attamen in verbis passim a vero aberravit. Ponit enim tres animæ partes Aresas; τὸν νοῦν, τὴν θύμωσιν, et τὴν ἐπιθυμίαν, quæ nomina in sequentibus expressa invenies; pro quibus præter ἐπιθυμίαν Salmasius male ponit τὸν θυμὸν, et τὸν λογισμόν. Ex tribus autem hisce partibus provenire tres animæ virtutes principes, ex mente prudentiam et intelligentiam, ex ira fortitudinem ac robur, ex cupiditate denique amorem atque humanitatem. Hisce positis facile sese lectoribus probabit lectio a nobis vulgata. Nam in ἐργαζομέναν latet ἐργαζόμενος ὁ νόος. In proximis καὶ ἀλκὰν καὶ ἀρκὰν καὶ δύναμιν recte καὶ ἀρκὰν omittunt codd. V. A. utpote male bis scriptum; post δύναμιν vero inserendum est ἁ θύμωσις, quod prioris similitudine periit; reliqua jam sana erunt. HEEREN.

[e] ἐργαζομέναν] –μένην V. A. καὶ ἀρκὰν deest V. A. P. ἀκὰν E.

[f] ποτ' ἄλλα] ποθάλλαλα V. A.

[g] ἐπέχειν] ἐπέχεν Salmas.

[h] τῶν ἀνθρωπίνων] τῷ ἀνθρωπίνῳ V. A. E.

[i] ἐνενοήσατο] ἐνοήσατο V. A. E.

[j] ἄλλο] ἄλλα V. A.

[k] Post ζώων majorem distinctionem posui et statim inserui γὰρ, nova enim hic periodus incipit. HEEREN.

[l] ἂν] Sic Heeren. ἦν A. Cant.

[m] αἵματος] σώματος V. A. E. P.

[n] Ante ὁράσιος Salmas. inserit ἅψιος.

[o] οὐδὲ A. Cant.

[p] ἀλλὰ τῶν ποττὰν] ἀλλὰ ποτὰν τὸ ὅλῳ A.

[q] τῶν ποττὰν] τὰν ποττὰν V.

ὅλω συστάματος ἐκπλήρωσιν, καὶ σύνταξιν, καὶ συναρμο-
γὰν [r] *τυχόντων.* Οὐ *μόνον δὲ ἐκ πλειόνων καὶ ἀνομοίων,*
καὶ τῶν [s] *εἰς τὸ ὅλον καὶ τελεὸν τυχόντων, ἀλλὰ καὶ αὐτῶν*
τούτων οὐκ εἰκαίων καὶ ὡς ἔτυχε συνταχθέντων, ἀλλὰ μετά
[852] *τινος νόμω καὶ ἔμφρονος ἐπιστασίας.* [t] Αἵ *τε γὰρ τὰν ἴσαν*
ἐφέροντο μοῖραν καὶ δυνάμιος καὶ τιμᾶς, ἀνόμοια ἐόντα, καὶ
τὰ μὲν χερείονα, τὰ δὲ κάρρονα, τὰ δὲ μέσα, [u] *οὐκ ἂν δύναιτο*
ἁ κατὰ ψυχὰν τῶν μερέων κοινωνία [x] *συναρμοσθῆμεν· αἱ δὲ*
τὰν ἀνίσαν, μὴ τὰν κάρρονα [y] *δὲ τὰ μείζονα μοῖραν ἐφέρετο,*
ἀλλὰ τὰν χείρονα, πολλὰ ἀφροσύνα καὶ [z] *ἀταξία περὶ τὰν*
ψυχὰν [a] *ὑπάρχεν·* [b] *αἵ τε τὰν κάρρονα μὲν τὰ μείζονα, τὰν*
[c] *χερείονα δὲ τὰ μείονα, μὴ ποτὶ λόγον δὲ ἕκαστον τούτων,*
οὐκ ἂν [d] *δύναιτο ὁμόνοια καὶ φιλία καὶ δικαιότας ἦμεν*
περὶ τὰν ψυχάν, ἐπεὶ [e] *ὧν ἕκαστον ἐν ποτὶ λόγον συντέ-*
τακται τὸν ἁρμόζοντα, τὸ τοιοῦτον φαμὶ ἐγὼ δικαιότατα
[854] *ἦμεν.* Καὶ *μὰν* [f] *ὁμόνοιά τις καὶ ὁμοφροσύνα* [g] *ὀπαδεῖ τᾷ*
τοιαύτᾳ διατάξει. Τὸ *δὲ τοιοῦτον δικαίως* [h] *κα λέγοιτο*
εὐνομία ἦμεν τᾶς ψυχᾶς, ἅτις ἐκ [i] *τῶ ἄρχεν μὲν* [j] *τὸ κάρρον,*
ἄρχεσθαι δὲ τὸ χερεῖον κράτος ἐπιφέροιτο τᾶς ἀρετᾶς, καὶ

[r] Post *τυχόντων* sensu jubente majori interpunctione distinxi. HEEREN. *τευχόντων* A. Cant.

[s] *εἰς*] *ἐς* V.

[t] Αἵ *τε*] *αἷται* V. Mox *χείρονα* A.

[u] *οὐκ ἀδύνατον*] *οὐκ ἂν ἐδύνατο* Valckenær. ad Theocrit. II. 46. *οὐκ ἂν δύναιτο* ed. Heeren. Mox *ψυχῇ* A.

[x] *εὐνομασθῆναι μὲν αἴτε τὰν ἴσαν*] Pro quibus *συναρμοσθῆμεν* Valckerius l. c. Tum *αἱ δὲ τὰν ἀνίσαν* Heerenius.

[y] *τὰ δὲ μειζ.*] *δέ, τὰ μείζονα* etc. V. A.

[z] *ἀταξίαν*] *ἀταξία* A. V.

[a] *ὑπάρχεν*] *ὑπάρχειν* V. A. E.

[b] *οὔτε τὰ κάρρονα μὲν τὰ μείζονα, τὰ χερείονα δὲ τὰ μείονα*] Pro *οὔτε* sermonis ordo flagitat *αἵ τε*, ut et *τὰν κάρρονα* et *τὰν χερείονα*, nempe *μοῖραν*, pro *τὰ κάρρονα* et *τὰ χείρονα*. HEEREN.

[c] *χείρονα*] *χερείονα* V. E.

[d] *δύνατος ὁμόνια*] *δύνατο ὁμόνοια* V. A. E.

[e] *ὧν*] *ὧν* V. A.

[f] *ὁμονία*] *ὁμονοία* V. A. E.

[g] *ἀποδεῖ*] *ὅπα δεῖ* V. A. *ὀπαδεῖ* E. P.

[h] *καὶ*] Iterum reponendum *κα*.

[i] *τῶν*] *τῶ* Heeren.

[j] *τὸν καρρ.*] *τὸ κάρρον* V. A. E. Mox *τὰς ἀρετὰς* Heeren. cum V.

[k]φιλία δὲ καὶ ἔρως, καὶ [l]φιλοφροσύνα σύμφυλος καὶ συγ-
γενὴς, [m]ἐκ τούτων ἐξεβλάστασε τῶν μερέων. Συμπείθει
μὲν γὰρ [n]ὁ νόος ὁραυγούμενος, [o]ἐρᾶται δὲ ἁ ἐπιθυμία, ἁ δὲ
θύμωσις [p]ἐμπιπλαμένα μένεος, ἔχθρᾳ ζέουσα, φίλα γίνεται
τᾷ ἐπιθυμίᾳ. Ἁρμόσας γὰρ ὁ νόος τὸ ἁδὺ τῷ λυπηρῷ, p. 106.
[q]συγκατακερώμενος, καὶ τὸ σύντονον καὶ σφοδρὸν τῷ κούφῳ
μέρει τᾶς ψυχᾶς καὶ διαχυτικῷ, ἕκαστόν τε ἑκάστω
πράγματος τὰν σύμφυλον καὶ [r]συγγενέα προμάθειαν [s]δια-
μεμέρισται, ὁ μὲν νόος ὁραυγούμενος καὶ στιβαζόμενος
[856] τὰ πράγματα, ἁ δὲ θύμωσις [t]ὁρμὰν [u]καὶ ἀλκὰν ποτι-
φερόμενα τοῖς [x]ὁραυγαθεῖσιν· ἁ δὲ ἐπιθυμία φιλοστοργίᾳ
συγγενὴς [y]ἐᾶσα, ἐφαρμόζει τῷ νόῳ, [z]ἴδιον περιποιουμένα
τὸ ἁδὺ, καὶ τὸ σύννοον ἀποδιδοῦσα τῷ [a]συνόλῳ μέρει [b]τᾶς
ψυχᾶς. Ὧνπερ ἕκατι δοκέει μοι καὶ ὁ βίος ὁ κατ᾽ ἀν-
θρώπων ἄριστος ἦμεν, ὄκκα τὸ ἁδὺ [c]τῷ σπουδαίῳ συγκατα-
κραθῇ, καὶ ἁδονὰ [d]τᾷ ἀρετᾷ. Ποθαρμόξασθαι δ᾽ αὐτὰ ὁ
νόος δύναται, παιδεύσιος καὶ ἀρετᾶς ἐπήρατος γενόμενος.

[k] φιλία δὲ] φιλία τε Heeren.

[l] φιλοφροσύνας σύμφιλος] καὶ φιλοφροσύνα V. A. P. σύμφυλος V.

ib. Pro καὶ φιλοφροσύνας codd. V. A. habent καὶ φιλοφροσύνα, sed veram puto lectionem vulgatam, si modo deleveris καὶ a librario male intrusum. Vult enim scriptor *amorem germanum esse*, (egregie cod. V. σύμφυλον pro σύμφιλον) *et consanguinem amicitiæ seu benevolentiæ*, φιλοφροσύνης. HEEREN.

[m] ἐκ τούτων] ἐτούτων A.

[n] ὁ νόμος] ὁ νόος V. A.

[o] ἄραται] ἐρᾶται V. A.

[p] ἐμπιπλαμένα μένος] ἐμπιπλαμένα μένεος V. A. E.

[q] συγκατακερώμενος, ex συγκατακεράω, *admisceo*, dedi pro συγκατακρεόμενος, quod nihili est. Codd. V. A. συγκατακρεώμενος. HEEREN.

[r] συγγένεα] –νεαν A.

[s] διαμέρισται] διαμεμέρισται V. A. E. P.

[t] ὁρμᾶν] ὁρμὰν A.

[u] ἡ ἀλκὰν] καὶ ἀλκὰν V. A.

[x] ὁραγαθεῖσιν] –γασθεῖσιν A. –γαυθεισ. P.

[y] ἐᾶσσα] ἐᾶσα A. E.

[z] ἴδιον] ἥδιον V. ἅδιον A.

[a] συνόλα] συνόλῳ V. A.

[b] τῆς ψυχῆς] τᾶς ψυχᾶς V. A.

[c] τῷ σπουδαίῳ συγκραθῇ] τῷ σπουδαὶ συγκατακεκραθῇ V. συγκατακραθῇ A. E.

[d] τοῦ ἀρ.] τᾷ ἀρετᾷ V. A. E.

28 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 34.]

Τὴν δὲ δὴ ψυχὴν, οὐχ ὡς νῦν ὑστέραν ἐπιχειροῦμεν λέγειν, οὕτως ἐμηχανήσατο καὶ ὁ θεὸς νεωτέραν· οὐ γὰρ ἂν ἄρχεσθαι ὁ θεὸς πρεσβύτερον ἀπὸ νεωτέρου συνέρξας εἴασεν· ἀλλά πως ἡμεῖς πολὺ μετέχοντες τοῦ προστυχόντος τε καὶ εἰκῇ ταύτῃ πῃ καὶ λέγομεν, ὁ δὲ καὶ γενέσει καὶ ἀρετῇ [προτέραν] [a] καὶ πρεσβυτέραν ψυχὴν σώματος, ὡς δεσπότιν καὶ ἄρξουσαν ἀρξομένου, συνεστήσατο ἐκ τῶνδέ τε καὶ τοιῷδε τρόπῳ· τῆς ἀμερίστου καὶ ἀεὶ κατὰ ταυτὰ ἐχούσης οὐσίας, καὶ τῆς αὖ περὶ τὰ σώματα γιγνομένης μεριστῆς, τρίτον ἐξ ἀμφοῖν ἐν μέσῳ συνεκεράσατο οὐσίας εἶδος, τῆς τε ταυτοῦ φύσεως αὖ πέρι καὶ τῆς τοῦ ἑτέρου, καὶ κατὰ ταυτὰ ξυνέστησεν ἐν μέσῳ τοῦ τε ἀμεροῦς αὐτῶν, καὶ τοῦ κατὰ τὰ σώματα μεριστοῦ. Καὶ τρία λαβὼν αὖ τὰ ὄντα, συνεκεράσατο εἰς μίαν πάντα ἰδέαν, τὴν θατέρου φύσιν δύσμικτον οὖσαν εἰς ταυτὸν ξυναρμόττων βίᾳ. Μιγνὺς δὲ μετὰ τῆς οὐσίας, καὶ ἐκ τριῶν ποιησάμενος ἓν, πάλιν ὅλον [b] τοῦτο μοίρας ὅσας [c] προσῆκε διένειμεν, ἑκάστην δὲ ἔκ τε ταυτοῦ καὶ θατέρου καὶ τῆς οὐσίας μεμιγμένην.—[p. 37.] Καὶ τὸ μὲν δὴ σῶμα ὁρατὸν οὐρανοῦ γέγονεν, αὐτὴ δὲ, ἀόρατος μὲν, λογισμοῦ δὲ μετέχουσα καὶ ἁρμονίας ψυχὴ τῶν νοητῶν ἀεί τε ὄντων, ὑπὸ τοῦ ἀρίστου ἀρίστη γενομένη τῶν γεννηθέντων. [d] Ἅτε οὖν ἐκ τῆς ταυτοῦ καὶ τῆς θατέρου φύσεως, ἔκ τε οὐσίας τριῶν τούτων συγκραθεῖσα μοιρῶν, καὶ ἀνάλογον μερισθεῖσα καὶ ξυνδεθεῖσα, αὐτή τε ἀνακυκλουμένη πρὸς ἑαυτὴν, ὅταν οὐσίαν σκεδαστὴν ἔχοντός τινος ἐφάπτηται, καὶ ὅταν ἀμέριστον, λέγῃ διὰ πάσης ἑαυτῆς κινουμένη, ὅτῳ τ' ἄν τι ταυτὸν ᾖ καὶ ὅτου ἂν ἕτερον, πρὸς [e] ὅ τι τε μάλιστα

28.

[a] καὶ om. Cant. habet A. excidit ex utroque προτέραν. Mox A. ἀρξουμένου.

[b] τούτῳ A.

[c] προσῶκε A.

[d] ἅτερος ἐκ A.

[e] ὅτε τι A.

καὶ ὅπῃ καὶ ὅπως καὶ ὁπότε ξυμβαίνει κατὰ τὰ γιγνόμενα τε πρὸς ἕκαστον ἕκαστά τε εἶναι καὶ πάσχειν, καὶ πρὸς τὰ κατὰ ταὐτὰ ἔχοντα ἀεί. Λόγος δὲ ὁ κατὰ ταὐτὸν ἀληθὴς γιγνόμενος, περί τε θάτερον [f] ὢν, καὶ περὶ τὸ ταὐτὸν ἐν τῷ κινουμένῳ ὑφ' αὑτοῦ φερόμενος ἄνευ φθόγγου καὶ ἠχῆς, ὅταν μὲν περὶ τὸ αἰσθητὸν γίγνηται καὶ [g] ὁ τοῦ θατέρου κύκλος ὀρθὸς ἐὼν, εἰς πᾶσαν αὐτοῦ τὴν ψυχὴν διαγγείλῃ, δόξαι καὶ πίστεις γίγνονται βέβαιοι καὶ ἀληθεῖς· ὅταν δὲ [h] αὖ περὶ τὸ λογικὸν ᾖ, καὶ ὁ τοῦ ταὐτοῦ κύκλος εὔτροχος ὢν αὐτὰ μηνύσῃ, νοῦς ἐπιστήμη τε ἐξ ἀνάγκης ἀποτελεῖται. Τούτω δὲ ἐν ᾧ τῶν ὄντων ἐγγίγνεσθον, ἄν ποτε τις αὐτὸ ἄλλο πλὴν ψυχὴν εἴπῃ, πᾶν μᾶλλον ἢ τἀληθὲς ἐρεῖ.

29 Πλάτωνος Πολιτείας ι'. [p. 610.]

Οὐκοῦν, ὁπότε μηδ' ὑφ' ἑνὸς ἀπόλλυται κακοῦ, μήτε οἰκείου μήτε ἀλλοτρίου, δῆλον ὅτι ἀνάγκη αὐτὸ ἀεὶ ὂν εἶναι· εἰ δ' ἀεὶ ὂν, ἀθάνατον. Ἀνάγκη, ἔφη. Τοῦτο μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, οὕτως ἐχέτω. Εἰ δ' ἔχει, ἐννοεῖς ὅτι ἀεὶ ἂν εἶεν αἱ αὐταί. Οὔτε γὰρ ἄν που ἐλάττους γένοιντο, μηδεμιᾶς ἀπολλυμένης, οὔτε αὖ πλείους. Εἰ γὰρ ὁτιοῦν τῶν ἀθανάτων πλέον [i] γίγνοιτο, οἶσθ' ὅτι ἐκ τοῦ θνητοῦ ἂν [i] γίγνοιτο, καὶ πάντα ἂν εἴη τελευτῶντα ἀθάνατα. Ἀληθῆ λέγεις. Ἀλλ', ἦν δ' ἐγὼ, μήτε τοῦτο οἰόμεθα, ὁ γὰρ λόγος οὐκ ἐάσει, μήτε γε αὖ τῇ ἀληθεστάτῃ φύσει τοιοῦτον εἶναι ψυχὴν, ὥστε πολλῆς ποικιλίας καὶ ἀνομοιότητός τε καὶ διαφορᾶς γέμειν αὐτὸ πρὸς αὑτό. Πῶς λέγεις; ἔφη. Οὐ ῥᾴδιον, ἦν δ' ἐγὼ, ἀΐδιον εἶναι, σύνθετόν τε ἐκ πολλῶν, καὶ μὴ τῇ καλλίστῃ κεχρημένον συνθέσει, ὡς νῦν ἡμῖν ἐφάνη ἡ ψυχή. Οὐκ οὖν εἰκός γε. Ὅτι μὲν τοίνυν ἀθάνατον ψυχὴ καὶ ὁ ἄρτι λόγος καὶ οἱ ἄλλοι ἀναγκάσειαν ἄν.

[f] ὢν om. A.
[g] ὁ om. A.
[h] οὗ A.
[i] γίγνοιντο A.

30 Πλάτωνος Πολιτείας δ'. [p. 436.]

[a]Τόδε δὲ ἤδη χαλεπὸν, εἰ τῷ αὐτῷ τούτῳ ἕκαστα πράττομεν, ἢ τρισὶν οὖσιν ἄλλο ἄλλῳ· μανθάνομεν μὲν ἑτέρῳ, 35
θυμούμεθα δὲ ἄλλῳ τῶν ἐν ἡμῖν, ἐπιθυμοῦμεν δ' [b]αὖ τρίτῳ τινι τῶν περὶ τὴν τροφήν τε καὶ γέννησιν ἡδονῶν, καὶ ὅσα τούτων ἀδελφά· ἢ ὅλῃ τῇ ψυχῇ καθ' ἕκαστον αὐτῶν πράττομεν, ὅταν ὁρμήσωμεν. Ταῦτ' ἔσται τὰ χαλεπὰ διορίσασθαι ἀξίως λόγου. Καὶ ἐμοὶ δοκεῖ, ἔφη.

[p. 439.] Τοῦ διψῶντος ἡ ψυχὴ, καθ' ὅσον διψᾷ, οὐ βούλεταί τι ἄλλο ἢ πιεῖν, καὶ τούτου ὀρέγεται, καὶ ἐπὶ τοῦτο ὁρμᾷ. Δῆλον δή. Οὐκοῦν εἴποτέ τι αὐτὴν ἀνθέλκει διψῶσαν, ἕτερόν τι ἂν ἐν αὐτῇ εἴη αὐτοῦ τοῦ διψῶντος, καὶ ἄγοντος, ὥσπερ θηρίον, ἐπὶ τὸ πιεῖν. Οὐ γὰρ δὴ, φαμὲν, τό γε αὐτὸ τῷ αὐτῷ ἑαυτοῦ περὶ τὸ αὐτὸ ἅμα τἀναντία πράττοι. Οὐ γὰρ οὖν. Ὥσπερ γε, οἶμαι, τοῦ τοξότου οὐ καλῶς ἔχει λέγειν, ὅτι αὐτοῦ ἅμα αἱ χεῖρες τὸ τόξον ἀπωθοῦνταί τε καὶ προσέλκονται, ἀλλ' ὅτι ἄλλη μὲν ἡ ἀπωθοῦσα χεὶρ, ἑτέρα δὲ ἡ προσαγομένη. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. [c]Πότερον δὴ φῶμεν τινὰς ἔστιν ὅτε διψῶντας οὐκ ἐθέλειν [d]πιεῖν; Καὶ μάλα γ', ἔφη, πολλοὺς καὶ πολλάκις. Τί οὖν, ἔφην ἐγὼ, φαίη τις ἂν τούτων πέρι; οὐκ ἐνεῖναι μὲν ἐν τῇ ψυχῇ αὐτῶν τὸ κελεῦον, ἐνεῖναι δὲ τὸ κωλύον πιεῖν, ἄλλο ὂν καὶ κρατοῦν τοῦ κελεύοντος; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Ἆρ' οὖν οὐ τὸ μὲν κωλύον τὰ τοιαῦτα ἐγγίγνεται, ὅταν ἐγγένηται, ἐκ λογισμοῦ, τὰ δὲ ἄγοντα καὶ ἕλκοντα διὰ παθημάτων τε καὶ νοσημάτων παραγίγνεται; Φαίνεται. Οὐ δὴ ἀλόγως, ἦν δ' ἐγὼ, [e]ἀξιώσομεν αὐτὰ διττά τε καὶ ἕτερα ἀλλήλων εἶναι, τὸ μὲν ᾧ λογίζεται λογιστικὸν [f]προσαγορεύοντες τῆς ψυχῆς,

30.

a τὸ δὲ] τόγε δὲ A. et mox τὸ αὐτὸ τοῦτο. et inf. μανθάνωμεν μὲν ἕτεροι.

b ἂν τρίτων A.

c Πρότερον A.

d ποιεῖν A.

e ἀξιώσωμεν A.

f προσαγορεύεται A.

τὸ δὲ ᾧ ἐρᾷ τε καὶ πεινῇ καὶ διψῇ καὶ περὶ τὰς ἄλλας ἐπιθυμίας ἐπτόηται, ἀλόγιστόν τε καὶ ἐπιθυμητικὸν, πληρώσεών τινων καὶ ἡδονῶν [g] ἑταῖρον. Οὐκ, ἀλλ' εἰκότως, ἔφη, ἡγοίμεθ' ἂν οὕτως. Ταῦτα μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγὼ, δύο ἡμῖν ὡρίσθω εἴδη ἐν ψυχῇ ἐνόντα· τὸ δὲ δὴ τοῦ θυμοῦ καὶ ᾧ θυμούμεθα πότερον [h] τρίτον ἢ τούτων ποτέρῳ ἂν εἴη ὁμοφυές; Ἴσως, ἔφη, τῷ ἑτέρῳ, τῷ ἐπιθυμητικῷ. Ἀλλ', ἦν δ' ἐγὼ, ποτὲ ἀκούσας τι πιστεύω [i] τούτῳ, ὡς ἄρα Λεόντιος ὁ Ἀγλαΐωνος ἀνιὼν ἐκ Πειραιέως ὑπὸ τὸ Βόρειον τεῖχος ἐντὸς αἰσθόμενος νεκροὺς παρὰ τῷ δημίῳ κειμένους, ἅμα μὲν ἰδεῖν [k] ἐπιθυμοῖ, ἅμα δὲ δυσχεραίνοι καὶ ἀποτρέποι ἑαυτὸν, καὶ τέως μὲν μάχοιτο καὶ παρακαλύπτοιτο, κρατούμενος [l] δ' οὖν ὑπὸ τῆς ἐπιθυμίας, διελκύσας τοὺς ὀφθαλμοὺς, προσδραμὼν πρὸς τοὺς νεκροὺς, ἰδοὺ ὑμῖν, ἔφη, ὦ κακοδαίμονες, [m] ἐμπλήσθητε τοῦ καλοῦ θεάματος. Ἤκουσα, ἔφη, καὶ αὐτός. Οὗτος μέντοι, ἔφην, ὁ λόγος σημαίνει τὴν ὀργὴν πολεμεῖν ἐνίοτε ταῖς ἐπιθυμίαις, [n] ὡς ἄλλο ὂν ἄλλῳ. Σημαίνει γὰρ, ἔφη.

31 Ἐν ταυτῷ [p. 441.]

[858] Ἆρα οὖν ἕτερον ὂν καὶ τοῦτο, ἢ λογιστικόν τι εἶδος, ὥστε μὴ τρία ἀλλὰ δύο εἴδη εἶναι ἐν τῇ ψυχῇ, λογιστικὸν καὶ ἐπιθυμητικόν; ἢ καθάπερ ἐν τῇ πόλει ξυνεῖχεν αὐτὴν τρία ὄντα γένη, χρηματιστικὸν, ἐπικουρητικὸν, βουλευτικὸν, οὕτω καὶ ἐν ψυχῇ τρίτον τοῦτό ἐστι τὸ θυμοειδὲς, ἐπίκουρον ὂν τῷ λογιστικῷ φύσει, ἐὰν μὴ ὑπὸ κακῆς τροφῆς διαφθαρῇ; Ἀνάγκη, ἔφη, τρίτον. Ναὶ, ἦν δ' ἐγὼ, ἄν γε τοῦ λογιστικοῦ ἄλλό τι ὥσπερ τοῦ ἐπιθυμητικοῦ ἐφάνη ἕτερον ὄν. Ἀλλ' οὐ χαλεπὸν, ἔφη, φανῆναι· καὶ γὰρ ἐν τοῖς παιδίοις

[g] ἕτερον A.
[h] τρίτον om. A.
[i] τοῦτο A.
[k] ἐπιθυμίους A. et mox δυσχεραίνει.
[l] ὁ A.
[m] ἐπλήσθητε A. Cant.
[n] ὡς om. A.

τοῦτο [a]ὃν ἄν τις ἴδοι, ὅτι θυμοῦ μὲν εὐθὺς γενόμενα μεστά ἐστιν, λογισμοῦ δὲ ἔνιοι μὲν ἔμοι γε δοκοῦσιν οὐδέποτέ γε μεταλαμβάνειν, οἱ δὲ πολλοὶ ὀψέ ποτε. Ναὶ μὰ Δία, ἦν δ' ἐγὼ, καλῶς γε εἶπες. Ἔτι δὲ ἐν τοῖς θηρίοις ἄν τις ἴδοι ὃ λέγεις, ὅτι οὕτως ἔχει. Πρὸς δὲ τούτοις, καὶ ἃ ἄνω που ἐκεῖ εἴπομεν, τὸ τοῦ Ὁμήρου μαρτυρήσει, τὸ,

στῆθος δὲ πλήξας κραδίην ἠνίπαπε μύθῳ. p. 107.

Ἐνταῦθα γὰρ δὴ σαφῶς ὡς ἕτερον ἑτέρῳ ἐπιπλῆττον πεποίηκεν Ὅμηρος τὸ ἀναλογισάμενον περὶ τοῦ βελτίονός τε καὶ χείρονος τῷ ἀλογίστως θυμουμένῳ. Κομιδῇ, ἔφη, ὀρθῶς λέγεις.

32 [a]Iamblichi de anima.

ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ μὲν οὖν τὰ μάλιστα δοκοῦντα τῇ ψυχῇ [b]ὑπάρχειν εἰς τριὰ τὰ κυριώτατα γένη ἀναγαγὼν, κίνησίν τε καὶ γνῶσιν καὶ λεπτότητα οὐσίας, ἣν ἐνίοτε καὶ [c]ἀσώματον ὑπόστασιν [d]ἐπονομάζει, ἐς ταῦτα [e]τὰ τρία τὰς καθ' ἕκαστα διωρισμένας ἐπαναφέρει δόξας, πέρας τῶν ἀπείρων ἀνευρὼν οὕτω, καὶ σαφῆ καὶ σύντομον περίληψιν[f]. Ἐγὼ δὲ [g]ὁρῶ ἐν τούτοις τοῖς ὅροις πολὺ μὲν τὸ ὁμώνυμον καὶ συγκεχυμένον, (οὐ γὰρ ὡσαύτως [h]αἱ κατὰ μεταβολὴν καὶ αἱ κατὰ ζωὴν θεωροῦνται κινήσεις, ἢ καὶ μορφωτικαὶ ἢ ἄμορφοι γνώσεις, [i]ἢ αἱ τοῦ ἀέρος, ἢ αἱ τῶν καθ' αὑτὰ ἀσωμάτων καθαρότητες τῆς οὐσίας,) πολὺ δὲ καὶ τὸ ἀτελὲς

31.

[a] ὃν A. γε Plato. Infra ἔστι δὲ A. Cant.

32.

[a] Ita Canteri margo. Ἀριστοτέλους A.

[b] ὑπάρχειν] ὑπάρχει A.

[c] ἀσώματον] ἀσωμάτων A.

[d] ἐπονομάζει] ὀνομάζει A.

[e] τρία] τὰ τρία V. A.

[f] Respicit ad verba Aristotelis de Anim. I. 2. Op. I. p. 479. ubi philosophus, cum varias de anima opiniones proposuisset, ὁρίζονται δὲ πάντες, inquit, τὴν ψυχὴν τρισὶν ὡς εἰπεῖν, κινήσει, αἰσθήσει, τῷ ἀσωμάτῳ, qua tamen divisione omnia omnium placita et accurate distingui et plane comprehendi, negat Iamblichus. HEEREN.

[g] ὁρῶ] ὁρῶν V. A.

[h] Ante κατὰ add. αἱ V. A.

[i] ἢ αἱ] καὶ αἱ V. Supra ἄμορροι A.

[k] αὐτῶν καὶ ἐνδεές· οὐ γὰρ ἔνεστι πάντα περιλαβεῖν τὰ γένη τῆς δόξης ἐν τοῖς τρισὶ τούτοις ὅροις.

[860] Τινὲς εἰς τὰς τῶν τεσσάρων στοιχείων ἀρχὰς τὴν οὐσίαν τῆς ψυχῆς ἐπαναφέρουσιν[1]. Εἶναι μὲν γὰρ τὰ πρῶτα σώματα ἄτομα, πρὸ τῶν τεσσάρων στοιχείων στοιχειωδέστερα· εἰλικρινῆ δὲ ὄντα, καὶ πεπληρωμένα πάντη καθαρᾶς πρώτης οὐσίας, μὴ δέχεσθαι μηδ' ὁπωστινοῦν εἰς αὐτὰ διαίρεσιν. Ταῦτα τοίνυν ἄπειρα ἔχειν σχήματα, ἐν δὲ αὐτῶν εἶναι τὸ σφαιροειδὲς, ἀπὸ δὴ τῶν σφαιροειδῶν [m] ἀτόμων εἶναι τὴν ψυχήν.

Ὡς δὲ τῶν Ἀριστοτελικῶν τινες ὑφηγοῦνται, εἶδός ἐστι τὸ περὶ τοῖς σώμασιν, ἡ ποιότης ἁπλῆ, ἀσώματος, ἡ ποιότης οὐσιώδης, τελεία, ᾗ παράκειται δόξα, οὐ παραδοθεῖσα μὲν, δυναμένη δὲ πιθανῶς λέγεσθαι αἵρεσις, [n] ἤτε συνδρομὴν τῶν ὅλων ποιοτήτων, καὶ τὸ ἐν αὐτῶν κεφάλαιον, [o] εἴτε τὸ ἐπιγιγνόμενον ἢ τὸ προϋπάρχον, τιθεμένη τὴν ψυχήν.

Μετὰ δὴ ταῦτα τοὺς εἰς μαθηματικὴν οὐσίαν ἐντιθέντας
[862] τὴν οὐσίαν τῆς ψυχῆς [p] καταλέγω [q] διευκρινημένως. Ἔστι [r] δὴ

[k] αὐτῶν] αἱ τῶν V.

[1] Respicit hic ad Democritum, Empedoclem, et reliquos atomorum defensores. Cf. Arist. de Anim. I. 2. Versus quibus Empedocles animam ad elementa referebat, servavit Aristoteles l. c. Γαίῃ μὲν γὰρ γαῖαν ὀπώπαμεν (*cernimus, intelligimus*) ὕδατι δ' ὕδωρ, Αἰθέρι δ' αἰθέρα δῖον, ἀτὰρ πυρὶ πῦρ ἀΐδηλον, Στοργῇ δὲ στοργὴν, νεῖκος δέ τε νείκεϊ λυγρῷ. Nam ea quoque quæ de elementis ante elementa seu de principiis adjiciuntur, Empedoclis sunt. Cf. supra p. 348. Ἐμπεδοκλῆς ἔφη πρὸ τῶν τεσσάρων στοιχείων θραύσματα ἐλάχιστα, οἱονεὶ στοιχεῖα πρὸ τῶν στοιχείων, ὁμοιομερῆ. HEEREN. p. 33, 17. Cant.

[m] αὐτῶν] ἀτόμων V. E. αὐτὸ μὲν A.

[n] Levi mutatione locum hunc sanavi, rescribendo pro ἤτε συνδρομὴ quod cum Cant. tenent codd. nullo sensu, ἤτε συνδρομήν. Nam ἤτε, quod ab δόξα pendet, referendum est iterum ad ultimum τιθεμένη τὴν ψυχήν. HEEREN.

[o] ἥ τε] εἴ τε V. A.

[p] καταλέγωμεν εὐκριμένως] καταλέγω δὲ εὐκρινημένως V. E. καταλέγω διευκρινημένως A. καταλέγωσιν P.

[q] εὐκρινῶς *clare, aperte* rescripsi pro εὐκριμένως. HEEREN.

[r] δὲ] δὴ A.

γένος [s]ἕν τι αὐτῆς τὸ σχῆμα, πέρας ὂν διαστάσεως, καὶ αὐτὴ διάστασις. Ἐν αὐτοῖς μὲν [t]οὖν τούτοις [u]Σεβῆρος ὁ Πλατωνικὸς [v]αὐτὴν ἀφωρίσατο. Ἐν [x]ἰδέᾳ δὲ τοῦ πάντη διαστατοῦ Σπεύσιππος. Ἐν αἰτίᾳ δὲ ἣ τῇ ἑνώσει τούτων, ἄλλος ἄν τις [y]καθαρώτερον αὐτὴν [z]προστήσαιτο τελεώτατα. Πάλιν τοίνυν ὁ ἀριθμὸς ἐν ἑτέρῳ [a]γένει κεῖται. Ἀλλὰ καὶ τοῦτον ἁπλῶς μὲν οὕτως ἔνιοι τῶν Πυθαγορείων τῇ ψυχῇ συναρμόζουσιν. Ὡς δ' [b]αὐτοκινητὸν Ξενοκράτης, ὡς δὲ λόγους [c]περιέχουσαν Μοδέρατος ὁ Πυθαγόρειος, ὡς δὲ [d]κριτικὸν κοσμουργοῦ θεοῦ ὄργανον, Ἵππασος, ὁ ἀκουσματικὸς τῶν Πυθαγορείων.

[864] [e]Ὡς δ' Ἀριστοτέλης ἱστορεῖ, Πλάτων ἐκ τῆς τοῦ ἑνὸς ἰδέας, καὶ τοῦ πρώτου μήκους καὶ [f]βάθους, αὐτὸ τοῦτο ζωὴν προϋποτιθέμενος, καὶ τὸ μὲν ἓν νοῦν, τὴν δὲ δυάδα ἐπιστήμην, δόξαν δὲ [g]τὸν τοῦ ἐπιπέδου ἀριθμὸν, τὸν δὲ τοῦ στερεοῦ τὴν αἴσθησιν διοριζόμενος.

Ἔτι τοίνυν τὴν ἁρμονίαν ἴδωμεν, οὐ τὴν ἐν σώμασιν ἐνι-

[s] ἔτι] ἕν τι V. A. E.

[t] οὖν deest V. A.

[u] Σεβῆρος] Σευῆρος A.

[v] αὐτὴν ἀφωρίσατο om. Heeren.

[x] Post ἰδέᾳ add. δὲ V. A.

[y] καθαρώτερον] καθαρωτέραν Heeren.

[z] προσήσαιτο τελεωτέραν] προστήσαιτο τελεώταταν V. —λεώτατα A.

[a] γένη] γένει V. A. E.

[b] Ad αὐτοκίνητον subintelligendum est ἀριθμὸν, sic enim definivit Xenocrates animam. Cf. Plut. de Animæ Procreatione Op. II. p. 1012. Ξενοκράτης τῆς ψυχῆς τὴν οὐσίαν ἀριθμὸν αὐτὸν ὑφ' ἑαυτοῦ κινούμενον ἀποφηνάμενος. HEEREN.

[c] Si περιέχουσαν vera lectio est, subintelligendum foret ψυχήν. Legendum tamen potius videtur περιέχοντα nempe ἀριθμὸν, *numerum certas rationes comprehendentem.* HEEREN.

[d] κρικὸν] κριτικὸν V. A. E. P.

[e] Respicit ad verba Aristotelis de Anima I. 2. Op. I. p. 479. Τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον ἐν τῷ Τιμαίῳ Πλάτων ——αὐτὸ μὲν τὸ ζῶον ἐκ τῆς ἑνὸς ἰδέας, καὶ τοῦ πρώτου μήκους καὶ πλάτους καὶ βάθους· τὰ δ' ἄλλα ὁμοιοτρόπως. Ἔτι δὲ καὶ ἄλλως, νοῦν μὲν τὸ ἕν, ἐπιστήμην δὲ τὰ δύο· μοναχῶς γὰρ ἐφ' ἕν· τὸν δὲ τοῦ ἐπιπέδου ἀριθμὸν δόξαν· αἴσθησιν δὲ τοῦ στερεοῦ. Oritur inde suspicio apud nostrum post μήκους inserendum esse καὶ πλάτους, quod salvo sensu abesse nequit. HEEREN.

[f] βάθους] βάρους V.

[g] τὴν] τὸν A.

δρυμένην, [h] ἀλλ' ἥτις ἐστὶ μαθηματική. Ταύτην τοίνυν, ὡς μὲν ἁπλῶς εἰπεῖν, τὴν τὰ διαφέροντα ὁπωσοῦν σύμμετρα καὶ προσήγορα ἀπεργαζομένην, ἀναφέρει εἰς τὴν ψυχὴν Μοδέρατος· τὴν δ' ὡς ἐν οὐσίαις καὶ ζωαῖς, καὶ [i] γενέσει τούτων, μεσότητα καὶ σύνδεσιν ὁ [k] Τιμαῖος αὐτῇ ἀνατίθησι, τὴν δὲ ὡς ἐν λόγοις τοῖς κατ' οὐσίαν προϋπάρχουσιν, [l] Πλω- p. 108.
τῖνος, καὶ Πορφύριος, καὶ Ἀμέλιος παραδεδώκασι, τὴν δὲ συνδιαπλεκομένην τῷ κόσμῳ, καὶ ἀχώριστον τοῦ οὐρανοῦ, [m] πολλοὶ δή τινες τῶν Πλατωνικῶν [n] καὶ Πυθαγορείων προκρίνουσιν.

[866] [o] Ἴθι δὴ οὖν ἐπὶ τὴν καθ' αὑτὴν ἀσώματον οὐσίαν [p] ἐπανίωμεν, διακρίνοντες καὶ ἐπ' αὐτῆς ἐν τάξει τὰς περὶ ψυχῆς πάσας δόξας. [q] Εἰσὶ δή τινες, οἳ πᾶσαν τὴν τοιαύτην οὐσίαν ὁμοιομερῆ καὶ τὴν αὐτὴν καὶ μίαν ἀποφαίνονται, ὡς καὶ [r] ἐν ὁτῳοῦν αὐτῆς μέρει εἶναι τὰ ὅλα· οἵτινες καὶ ἐν τῇ μεριστῇ ψυχῇ τὸν νοητὸν κόσμον καὶ θεοὺς καὶ δαίμονας καὶ τἀγαθὸν, καὶ πάντα τὰ πρεσβύτερα ἐν αὐτῇ ἐνιδρύουσι, καὶ ἐν πᾶσιν ὡσαύτως πάντα εἶναι ἀποφαίνονται, οἰκείως μέντοι κατὰ τὴν αὐτῶν οὐσίαν [s] ἐν ἑκάστοις. Καὶ ταύτης τῆς δόξης ἀναμφισβητήτως μέν ἐστι Νουμήνιος, οὐ πάντη δὲ ὁμολογουμένως Πλωτῖνος, ἀστάτως δὲ ἐν αὐτῇ φέρεται

[h] ἀλλ' ἥ τίς ἐστι θαυμαστικὴ] ἀλλ' ὅτις ἐστὶ μαθηματικὴ V. ἀλλ' ὅστις ἐστὶ μαθηματικὸς A.

[i] γενέσεις] γενέσει V. A.

[k] Disputat de hisce Timæus in libro de Anima Mundi inter Platonis Opera T. III. p. 99. HEEREN.

[l] Plotini amplissimam de anima disputationem invenies in quarta Enneade p. 360. etc. Porphyrius suam de anima sententiam proposuit in *gradibus* vel ἀφορμαῖς πρὸς τὰ νοητὰ, ex quibus plures nobis locos ipse Stobæus servavit supra fr. 17; Amelii vero scripta periere. HEEREN.

[m] πολλοὶ] πολὺ V.

[n] Πυθαγορείων] καὶ Πυθαγορίων V.

[o] ἴθι] ἴσθι A.

[p] ἐπάνωμεν] ἐπανίωμεν V. A. P.

[q] Εἰσὶ τινὲς] εἰσὶ δή τινες V. A.

[r] ἐν ὁτῳοῦν αὐτῆς] Sic Heeren. ἐντωοῦν αὐτῶν A. Cant.

[s] ἐν ἑκάστοις καὶ ταύτης] ἐν ἑκάστῃ κατὰ ταύτης V. ἐν ἑκάστης κατὰ ταύτης A.

Ἀμέλιος, Πορφύριος δὲ ἐνδοιάζει περὶ αὐτὴν, πῇ μὲν διατεταγμένως αὐτῆς ἀφιστάμενος, πῇ δὲ [t]συνακολουθῶν αὐτῇ, ὡς παραδοθείσῃ ἄνωθεν. Κατὰ δὴ ταύτην νοῦ καὶ θεῶν καὶ τῶν κρειττόνων γενῶν οὐδὲν ἡ ψυχὴ διενήνοχε κατά [u]γε τὴν ὅλην οὐσίαν.

[x]Ἀλλὰ μὴν ἥγε πρὸς ταύτην ἀνθισταμένη δόξα χωρίζει μὲν τὴν ψυχὴν, ὡς ἀπὸ νοῦ γενομένην δευτέραν, καθ' ἑτέραν ὑπόστασιν, (τὸ δὲ [y]μετὰ νοῦ αὐτῆς ἐξηγεῖται ὡς ἐξηρτημένον ἀπὸ τοῦ νοῦ, μετὰ τοῦ κατ' ἰδίαν ὑφεστηκέναι αὐτοτελῶς,) [z]χωρίζει δὲ αὐτὴν καὶ ἀπὸ τῶν κρειττόνων γενῶν
[868] ὅλων, ἴδιον δὲ αὐτῇ τῆς οὐσίας ὅρον ἀπονέμει, ἤτοι τὸ μέσον τῶν μεριστῶν καὶ ἀμερίστων σωμάτων γενῶν, ἢ τὸ πλήρωμα τῶν καθόλου λόγων, [a]καὶ τὴν μετὰ τὰς ἰδέας ὑπηρεσίαν τῆς δημιουργίας, ἢ ζωὴν παρ' ἑαυτῆς ἔχουσαν τὸ ζῆν, τὴν ἀπὸ τοῦ νοητοῦ προσελθοῦσαν ἢ τῶν αὐτῶν γενῶν, [b]ἢ ὅλου [c]τοῦ ὄντως ὄντος πρόοδον εἰς ὑποδεεστέραν οὐσίαν.

Περὶ δὲ ταύτας τὰς δόξας [d]ὅ τε Πλάτων αὐτὸς καὶ ὁ Πυθαγόρας, ὅ τε Ἀριστοτέλης, καὶ [e]ἀρχαῖοι πάντες, ὧν ὀνόματα [f]μεγάλως ἐπὶ σοφίᾳ ὑμνεῖται, τελέως ἐπιστρέφονται, εἴ τις αὐτῶν τὰς δόξας ἀνιχνεύοι μετ' ἐπιστήμης· ἡμεῖς [g]τε [h]περὶ αὐτὰς τὴν μετ' ἀληθείας [i]πραγματείαν πᾶσαν πειρασόμεθα ἐνστήσασθαι.

[t] συνακολουθῶν] –λουθεῖν V. A.

[u] γε om. Heeren.

[x] Ἀλλὰ] A præcedentibus sejungere videtur A.

[y] μὲν οὖν] μετὰ νοῦ V. μετὰ νοῦν A.

[z] χωρίζει in margine emendavit Cant. pro μερίζει, neque ita legendum esse dubitari potest ex antecedentibus, ubi habes χωρίζει μὲν, cui jam opponitur χωρίζει δέ. HEEREN.

[a] καὶ τὴν] ἢ τὴν V. A.

[b] ἢ ὅλου] ἢ addidit Heeren.

[c] τοῦ ὄντος] τοῦ ὄντως, ὄντος A. et nescio an V.

[d] ὅ τε Πλατ.] ὅτι Πλατ. V.

[e] ἀρχαῖον πᾶν] ἀρχαῖοι πάντες V. A. P.

[f] μεγάλως] Sic Heeren. μεγάλα A. Cant.

[g] τε] δὲ Heeren. qui mox om. τὴν.

[h] περὶ ante αὐτὰς om. A.

[i] Post πραγματ. add. πᾶσαν V. A.

[k]Τινὲς δὲ τῶν [l]φυσικῶν [m]σύνοδον τῶν ἐναντίων συνυφαίνουσιν, οἷον θερμοῦ καὶ ψυχροῦ, [n]ξηροῦ καὶ ὑγροῦ. Καὶ γὰρ τὸ ζῆν [o]ἀπὸ τοῦ [p]ἀναζεῖν ὑπὸ τοῦ θερμοῦ, καὶ τὴν ψυχὴν [q]ἀπὸ τοῦ ἀναψύχεσθαι ὑπὸ τοῦ ψυχροῦ ὠνομάσθαι ἀποφαίνονται, καὶ ἅμα ἐπ' ἀμφοτέρων [r]καὶ τὸν ἀναπνεόμενον ἀέρα ψυχὴν νομίζουσιν, ὥσπερ Ἀριστοτέλης [s]μὲν [870] ἐν τοῖς Ὀρφικοῖς ἔπεσι φησι λέγεσθαι τὴν ψυχὴν [ὡς] [t]εἰσιέναι ἐκ τοῦ ὅλου ἀναπνεόντων ἡμῶν φερομένην ὑπὸ τῶν ἀνέμων. Ἔοικέ γε μὴν [u]αὐτὸς ὁ Ὀρφεὺς χωρὶς ὑπολαμβάνειν εἶναι καὶ μίαν τὴν ψυχήν, ἀφ' ἧς πολλὰς μὲν εἶναι διαιρέσεις, πολλὰς δὲ καὶ μέσας ἐπιπνοίας καθήκειν ἐπὶ τὰς μεριστὰς ψυχὰς ἀπὸ τῆς ὅλης ψυχῆς.

Τινὲς μὲν τῶν Ἀριστοτελικῶν αἰθέριον σῶμα τὴν ψυχὴν τίθενται· ἕτεροι δὲ [x]τελειότητα αὐτὴν ἀφορίζονται κατ' οὐσίαν τοῦ θείου σώματος, ἣν [y]ἐντελέχειαν καλεῖ Ἀριστοτέλης, ὥσπερ δὴ ἐν ἐνίοις Θεόφραστος, ἢ τὸ ἀπογεννώμενον ἀπὸ τῶν θειοτέρων [z]γενῶν ὅλων, [a]ὥσπερ ἄν τις νεωτερίσειεν ἐν

[k] Præcedentibus hæc jungit A.

[l] De hisce physicorum, i. e. Empedoclis, Parmenidis, Ionicorum et omnino qui elementa principia rerum putabant, de anima placitis, copiose disputat Arist. de Anima I. 5. ψυχροῦ, quod sensus flagitat, addidi. HEEREN.

[m] σύνοδον] συνόδων A.

[n] ξυρὸν] ξηροῦ V. A.

[o] ἀπὸ] ὑπὸ A.

[p] ἀναζεῖν] ἀναζῆν V. A. E.

[q] ὑπὸ] ἀπὸ Lobeck. Aglaoph. p. 756. et sic ed. Cant. ὑπὸ A.

[r] καὶ τὸν] ἢ τὸν V. A.

[s] μὲν παρὰ Ὀρφέως] Exciderunt tum apud Cant. tum in codd. verba παρὰ Ὀρφέως, quæ tamen et sequentia flagitant, ubi Orphei nomen repetitur, et Aristotelis locus, quem ante oculos habuit Iamblichus, inserenda esse, docet. Exstat ille de Anima I. 5. Op. I. p. 485. Τοῦτο δὲ πέπονθε, καὶ ὁ ἐν τοῖς Ὀρφικοῖς καλουμένοις ἔπεσι λόγος· φησὶ γὰρ τὴν ψυχὴν ἐκ τοῦ ὅλου εἰσιέναι, ἀναπνεόντων φερομένην ὑπὸ τῶν ἀνέμων. Patet jam inde apud Stob. recte in marg. emendatum esse εἰσιέναι pro ὡς εἰσὶν, cum E. HEEREN. Reposui Ὀρφικοῖς pro Φυσικοῖς ex Aristot.

[t] εἰσὶν] εἰσιέναι E. εἰσὶν ἐν A.

[u] αὐτὸς] οὗτος A. E.

[x] τελειότητα] τελειωτάτως A.

[y] ἐντελέχειαν] ἐνδελέχειαν A.

[z] ὅλων] γενῶν ὅλων V. A.

[a] Verba ὥσπερ ἄν τις νεωτερίσειεν ἐν ταῖς ἐπινοίαις, corrupta videntur, nec ea expedio. Nam quamvis vel priora sana esse dixeris, (eodem sensu ut infra [p. 882. = 110, 16. Cant.] τάχα ἄν τις ἐπινοήσειε καινό-

ταῖς ἐπινοίαις, ἢ τὸ συγκεκραμένον τοῖς σώμασιν, ὥσπερ οἱ Στωϊκοὶ λέγουσιν· ἢ τὸ τῇ φύσει συμμεμιγμένον, ἢ τὸ τοῦ σώματος ὂν, ὥσπερ τὸ ἐμψυχῶσθαι· [b]αὐτῇ δὲ μὴ παρὸν τῇ ψυχῇ ὥσπερ ὑπάρχον, οἷα δὴ λέγεται περὶ ψυχῆς παρὰ [c]Δικαιάρχῳ τῷ [d]Μεσσηνίῳ.

33 Ἐν ταυτῷ. Περὶ δυνάμεως ψυχῆς. p. 109.

[872] Πλάτων μὲν οὖν οὐχ ὡς ἑτέρας τὰς δυνάμεις [a]ἐν ἑτέρᾳ τῇ ψυχῇ ἐνεῖναι ἡγεῖται, συμφύτους δ' αὐτὰς, καὶ κατὰ μίαν ἰδέαν [b]συνυφεστηκέναι λέγει διὰ τὴν σύνθετον οὐσίαν τῆς ψυχῆς. Ἀριστοτέλης δὲ ὡσαύτως ἁπλῆν οὐσίαν, ἀσώ-

τερον) ultima tamen ἐν ταῖς ἐπινοίαις quæ otiosa sunt, suspecta manent. Vertit Cant. *ut recentiores quidam volunt;* qui adeo legisse videtur ὥσπερ τῶν νεωτέρων τινὲς ἐπινοοῦσι. HEEREN.

b αὐτὴ] αὐτῇ V. αὐτῆ̈ A.

c Disputationem, ad quem hic respexit Iamblichus, servavit Cicero Quæst. Tusc. I. 10. *Dicæarchus autem in eo sermone, quem Corinthi habitum tribus libris exponit,——nihil omnino esse animam, et hoc esse nomen totum inane, frustraque animalia et animantes appellari: neque in homine inesse animum, vel animam, neque in bestia; vimque omnem eam, qua vel agamus quid, vel sentiamus, in omnibus corporibus vivis æqualiter esse fusam, nec separabilem a corpore esse, quippe quæ nulla sit, nec sit quidquam nisi corpus unum et simplex, ita figuratum, ut temperatione naturæ vigeat et sentiat.* Quæ si cum Iamblichi nostri verbis contuleris, merito non corrupta modo, sed mutila quoque ea esse, suspicaberis. Primum ἢ τὸ τῇ φύσει συμμεμιγμένον, quod dicit Cicero, *ita figuratum ut temperatione naturæ vigeat et sentiat,* bene se habet. In proximis ἢ τὸ τοῦ σώματος ὂν si Ciceronem audias, excidisse intelliges ἀχώριστον, *nec separabilem a corpore esse.* Post hæc lacuna esse videtur; nam verba ὥσπερ τὸ ἐμψυχῶσθαι nihil habent ad quod referantur. Latet in iis procul dubio illud Ciceronis, *vim vitalem in omnibus corporibus vivis æqualiter esse fusam;* ipsa tamen verba restitui nequeunt. Nam in codd. nihil præsidii. In proximis αὐτῇ pro αὐτὴ bene quidem exhibere videntur codd. V. A. attamen vel sic de integritate loci difficile est pronuntiare, cum verba hæc aperte pendeant ex antecedentibus, quæ mutila sunt. Sensus esse videtur *vim vitalem* (τὸ ἐμψυχῶσθαι) inesse corpori, non autem adesse animæ, ut aliquid ipsi proprium ac per se subsistens, (ὑπάρχον). HEEREN.

d Μεσσηνίᾳ] Μεσσηνίῳ V. E. Μυσσηνίῳ A.

33.

a ἐν om. A.

b συνεφεστηκέναι] συνυφεστηκέναι V. συνηφεστηκέναι A. Mox ἀσύνθετον Wyttenbach.

ματον, εἴδους [c] τελεσιουργοῦ, τὴν τῆς ψυχῆς [d] ὑποθέμενος, οὐ ποιεῖ τὰς δυνάμεις [e] ὡς ἐν συνθέτῳ τινὶ τῇ ψυχῇ παρούσας.
[874] Ἀλλὰ μὴν οἵγε ἀπὸ Χρυσίππου καὶ Ζήνωνος φιλόσοφοι, καὶ πάντες ὅσοι σῶμα τὴν ψυχὴν νοοῦσι, τὰς μὲν δυνάμεις [f] ὡς ἐν τῷ ὑποκειμένῳ ποιότητας συμβιβάζουσι, [g] τὴν δὲ ψυχὴν ὡς οὐσίαν προϋποκειμένην ταῖς δυνάμεσι προτιθέασιν, ἐκ δ' ἀμφοτέρων τούτων σύνθετον φύσιν ἐξ ἀνομοίων συνάγουσιν. [h] Ταῦτα τοίνυν αἱ δυνάμεις αὐτῆς τῆς ψυχῆς καθ' αὑτὴν, ἢ τοῦ ἔχοντος τοῦ κοινοῦ μετὰ τοῦ σώματος θεωρουμένου ζώου. [i] Καθ' οὓς [k] μὲν ἡ ψυχὴ διττὴν ζωὴν [l] ζῇ, καθ' αὑτήν τε καὶ [m] μετὰ τοῦ σώματος, ἄλλως μὲν πάρεισι τῇ ψυχῇ, ἄλλως δὲ τῷ κοινῷ ζώῳ, [n] ὡς κατὰ Πλάτωνα καὶ Πυθαγόραν· καθ' οὓς [o] δὲ μία ζωὴ τῆς ψυχῆς ἐστιν, ἡ τοῦ συνθέτου, συγκεκραμένης τῆς ψυχῆς [p] τῷ σώματι, ὡς οἱ Στωϊκοὶ λέγουσιν, ἢ [q] δούσης ὅλης τὴν ἑαυτῆς ζωὴν εἰς τὸ κοινὸν ζῶον, ὡς οἱ Περιπατητικοὶ διϊσχυρίζονται, κατὰ τούτους εἷς ἐστιν ὁ τρόπος τῆς παρουσίας [r] αὐτῶν [s] ὃ ἐν τῷ μετέχεσθαι ἢ ἐν τῷ [t] κεκρᾶσθαι τῷ ὅλῳ ζώῳ.

Πῶς οὖν διακρίνονται; Κατὰ μὲν τοὺς Στωϊκοὺς [u] ἔνιαι
[876] μὲν τῇ διαφορότητι τῶν ὑποκειμένων σωμάτων· πνεύματα γὰρ ἀπὸ τοῦ ἡγεμονικοῦ φασὶν οὗτοι διατείνειν [x] ἄλλα εἰς

c τελεσιουργὸν] –ουργοῦ V. A.
d ὑποθέμενος] ὑποτιθέμενος Heeren.
e ἐν τῷ] ὡς ἐν τῷ V. A.
f ἐν τῷ] ὡς ἐν τῷ A.
g τὴν ψυχὴν] τὴν δὲ ψυχὴν V. A.
h Αὗται τοίνυν αἱ δυνάμεις ἢ] Sic Heeren. ταῦτα τοίνυν αἱ δυνάμεις A. Cant.
i Καθ' οὓς] καθ' ἃς V. A. E.
k μὲν οὖν] οὖν tacite addidit Heeren.
l ζῆν] ζῇ V. A. E.
m κατὰ τοῦ σ.] μετὰ τοῦ σώματος V. A. μετὰ τὸ σωμ. P.
n ὡς tacite addidit Heeren.
o δὲ μία] καὶ μία V. A.
p τὰ σώματα] τῷ σώματι A. V.
q δούσης] δοΰσης A.
r Pro αὐτῶν, nempe τῶν ψυχῶν, malim αὐτῆς, cum ψυχῆς antea præcesserit. HEEREN.
s ὃ ἐν] ἢ ἐν E.
t κερᾶσθαι] κεκράσθαι V. A. E.
u ἔνιοι] ἔνιαι V. ἔνιοι (αι) A.
x ἄλλα εἰς ἄλλα jubente sensu rescripsi pro ἄλλα καὶ ἄλλα. HEEREN.

ἄλλα, τὰ μὲν εἰς ὀφθαλμοὺς, τὰ δὲ εἰς ὦτα, τὰ δὲ εἰς ἄλλα αἰσθητήρια· [y]ἔνιαι δὲ ἰδιότητι ποιότητος περὶ τὸ αὐτὸ ὑποκείμενον. Ὥσπερ γὰρ τὸ μῆλον ἐν τῷ αὐτῷ σώματι τὴν γλυκύτητα ἔχει καὶ τὴν εὐωδίαν, οὕτω καὶ τὸ ἡγεμονικὸν ἐν ταὐτῷ φαντασίαν, συγκατάθεσιν, ὁρμὴν, λόγον συνείληφε. Κατὰ δὲ τοὺς Ἀριστοτελικοὺς καὶ πάντας ὅσοι ἀμέριστον τὴν ψυχὴν [z]διανοοῦνται, [a]κατὰ μὲν τὴν οὐσίαν αἱ δυνάμεις, κατὰ δὲ εἴδη ὧν δύνανται ποιεῖν. [b]Κατὰ δὲ Πλάτωνα, ἄλλως μὲν λέγεται ἡ ψυχὴ τριμερὴς, ὡς ἂν ἑτέραις οὐσίαις τριπλῆ ζωῆς παραλλάττουσα, ἄλλως δὲ πολυδύναμος, οὐκέτι κατ' [c]οὐσίαν ζωῆς διαφέρουσα, ἐν ταὐτῷ δὲ πολλαῖς ἰδιότησι διακρινομένη. Καὶ ὅλως μέρος δυνάμεως ταύτῃ διενήνοχεν, [d]ᾗ τὸ μὲν μέρος οὐσίας ἑτερότητα, ἡ δὲ δύναμις ἐν ταὐτῷ γεννητικὴν ἢ ποιητικὴν [e]διάκρισιν παρίστησιν.

y ἔνιοι] ἔνιαι V. A.

z διανοῦνται] διανοοῦνται V. A.

a μετὰ] κατὰ V.

ib. Verba hæc corrupta sunt, forte et mutila, neque quid rescribendum sit facile dixeris. Vertit Cant. *juxta naturam vires, juxta firmas functiones;* qui quid legerit, aut voluerit, non intelligo. Patet opposita sibi esse, κατὰ μὲν οὐσίαν et κατὰ δὲ εἴδη; sed obscura maxime sunt verba ὧν δύνανται ποιεῖν, et difficile omnino de loco nostro est judicium, cum quos ex Peripateticis ante oculos habuerit, ignoremus. Judicium itaque sit apud lectores num forte Iamblichus plenius sic scripserit: κατὰ μὲν τὴν οὐσίαν ἀμέρισται αἱ δυνάμεις, κατὰ δὲ εἴδη μερισταὶ καθ' ἃ δύναται ποιεῖν. *Secundum naturam animæ vires quidem individuas esse, dividi tamen posse secundum species, animalium scilicet, quibus junctæ sunt animæ, cum in aliis liberum earum usum habeant, in aliis minus, ut in brutis.* HEEREN.

b Vult Iamblichus, si quid video, Platonem cum tres animas ponat, triplicem quoque iis vitam pro naturæ varietate tribuere; ac sic animam apud eum tripartitam vocari; alio tamen sensu πολυδύναμον, quia vires ejus non in singularum partium vita fundum habeant, sed potius communes omnium qualitates putandæ sint. HEEREN.

c οὐσίας] οὐσίαν V. A.

d ᾗ quod a ταύτῃ pendet, rescripsi pro ἥ. HEEREN.

e Post διάκρισιν add. παρίστησιν V. A.

34 Ἐν ταυτῷ. Περὶ πλήθους δυνάμεων.

[878] Οἱ ἀπὸ [a] Ζήνωνος ὀκταμερῆ τὴν ψυχὴν [b] διαδοξάζουσι, [c] περὶ τὰς δυνάμεις εἶναι πλείονας, [d] ὥσπερ ἐν τῷ ἡγεμονικῷ [e] ἐνυπαρχουσῶν φαντασίας, [f] συγκαταθέσεως, ὁρμῆς, λόγου. Οἱ δὲ περὶ Πλάτωνα, καὶ Ἀρχύτας, καὶ οἱ λοιποὶ [g] Πυθαγόρειοι, τὴν ψυχὴν τριμερῆ ἀποφαίνονται, διαιροῦντες εἰς λογισμὸν, [h] καὶ θυμὸν, καὶ ἐπιθυμίαν· ταῦτα γὰρ εἶναι χρήσιμα πρὸς τὴν τῶν ἀρετῶν σύστασιν. Δυνάμεις δὲ τῆς ψυχῆς ἀναλογίζονται φύσιν, καὶ φαντασίαν, καὶ αἴσθησιν, καὶ δόξαν, καὶ κινητικὴν σωμάτων διάνοιαν, καὶ ὄρεξιν [i] καλῶν καὶ ἀγαθῶν, καὶ νοήσεις. [k] Ἀριστοτέλης δὲ εἰς πέντε αὐτὰς διαιρεῖ, φύσιν, αἴσθησιν, κίνησιν [l] κατὰ τόπον, ὄρεξιν, διανόησιν.

35 [a] Περὶ τῶν κατ' οὐσίαν τῆς ψυχῆς καὶ τῶν προστιθεμένων αὐτῇ δυνάμεων. Ἐν ταυτῷ.
[880]

ΠΛΩΤΙΝΟΣ αὐτῆς ἀφαιρεῖ τὰς ἀλόγους δυνάμεις, τὰς αἰσθήσεις, τὰς φαντασίας, τὰς μνήμας, τοὺς λογισμούς· p. 110.
μόνον δὲ τὸν καθαρὸν λογισμὸν εἰς τὴν καθαρὰν οὐσίαν αὐτῆς ἀνατείνει, ὡς [b] ἔχοντα [c] συμφυῆ δύναμιν πρὸς αὐτὴν τὴν τῆς οὐσίας ἰδέαν.

34.

a τοῦ Ζήνωνος] τοῦ deest V. A.

b διαδοξάζουσιν] δοξάζουσιν Heeren.

c περὶ] ἐν ἑνὶ δὲ Heeren.

d ὡς] ὥσπερ V. A.

e ἐν ὑπάρχουσι φαντασίας σὺν μεταθέσεως] ἐνυπαρχουσῶν φαντασίας συγκαταθέσεως V. A.

f συγκαταθέσεως] Post h. v. seq. in A. tanquam lemma rubris litteris, ἑρμῆς λόγου. ubi teste Heerenio V. habet ὁρμῆς λόγου, unde ipse edidit καὶ ὁρμῆς καὶ λόγου, citato Diog. VII. 159. Ἡγεμονικὸν δὲ εἶναι τὸ κυριώτατον τῆς ψυχῆς, ἐν ᾧ αἱ φαντασίαι καὶ αἱ ὁρμαὶ γίνονται, καὶ ὅθεν ὁ λόγος ἀναπέμπεται. Vid. supra p. 374, 5.

g Πυθαγόρειοι] Πυθαγόριοι A.

h καὶ θυμὸν deest V.

i κακῶν] καλῶν V. A.

k Claris verbis Aristoteles hæc docet de Anim. II. 3. Quam noster φύσιν vocat, Aristoteles ibi appellat θρεπτικὴν, *nutritivam*. HEEREN.

l κατὰ τόπον] καὶ τόπον A.

35.

a Περὶ τῆς οὐσίας mavult Heeren.

b ἔχουσα] ἔχοντα V. A. P.

ib. Plotinus copiose de hisce disputat Ennead. IV. l. 3. HEER.

c συμφυῆ] σύμμυῆ A.

[d]Οἱ δὲ περὶ ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΝ [[e]Πλατωνικοὶ] πάντα ταῦτα τὰ εἴδη τῶν δυνάμεων εἰς τὴν οὐσίαν αὐτῆς συνάγουσιν.

Ὁ δὲ ΠΛΑΤΩΝ καὶ αὐτὰς ἑαυτῶν ποιεῖ, καὶ τῶν ζώων, [f]καθ' ἑκατέραν ζωὴν διοριζόμενος ἑκάτερον.

Οἱ δὲ περὶ ΠΟΡΦΥΡΙΟΝ καὶ ΠΛΩΤΙΝΟΝ ἑκάστῳ μέρει τοῦ παντὸς τὰς οἰκείας δυνάμεις [g]προβαλέσθαι ὑπὸ τῆς ψυχῆς ἀποφαίνονται, καὶ [h]ἀφίεσθαι μὲν καὶ μηκέτι εἶναι τὰς ζωὰς τὰς ὁπωσοῦν προβληθείσας [[i]οἱ περὶ Πορφύριον καὶ Πλωτῖνον Πλατωνικοὶ] ἀφορίζονται, παραπλησίως [k]τοῖς ἀπὸ τοῦ σπέρματος [l]φυομένοις, ὁπόταν εἰς
[882] [m]ἑαυτὸ ἀναδραμῇ τὸ σπέρμα. Εἶναι δὲ καὶ ταύτας ἐν τῷ παντὶ, καὶ μὴ ἀπόλλυσθαι, τάχα ἄν τις [n]ἐπινοήσειε καινότερον, οὐκ ἀπιθάνως.

36 Ἐν ταυτῷ. Περὶ τῶν ἐνεργειῶν τῆς ψυχῆς.

Τίς οὖν ἀνήκοός ἐστι τῆς Περιπατητικῆς δόξης, ἣ τὴν ψυχὴν ἀκίνητον μὲν εἶναί φησιν, [a]αἰτίαν δὲ κινήσεων; Εἰ δὴ καὶ [b]ἀνενέργητόν ἐστι τὸ ἀκίνητον, ἔσται καὶ χορηγὸν τῶν ἐνεργειῶν τὸ τῆς [c]ψυχῆς [cc]ἀνενέργητον. Εἰ δ', ὡς ἔνιοι

[d] Οἱ περὶ] οἱ δὲ περὶ V. A.

[e] Alieno loco insertum videtur Πλατωνικοὶ, adeoque uncis a me inclusum est. HEEREN.

[f] καθ' ἑτέραν] καθ' ἑτέραν ἑτέραν ζωὴν V.

ib. καθ' ἑκατέραν in marg. emendavit Cant. pro καθ' ἑτέραν. HEEREN.

[g] Προβαλέσθαι] προβάλλεσθαι A.

[h] ἀμφίεσθαι] ἀφίεσθαι V. A.

[i] Verba οἱ περὶ Πορφύριον καὶ Πλωτῖνον Πλατωνικοὶ aperte otiosa sunt, cum ipsa philosophorum nomina modo præcesserint, atque a marg. in contextum immigrasse videntur; quare ea uncis inclusi. HEEREN.

[k] τῆς] τοῖς V. A. E. P.

ib. Locum Porphyrii ad quem respexerit, supra servatum habes ab ipso Stobæo fr. 23. Plotinum autem de hisce disputantem invenies Ennead. III. 8. HEEREN.

[l] φυομένης] -μένοις A. E. P.

[m] ἑαυτὸν] ἑαυτὸ A.

[n] ἐπινοήσειε] ἐπινοήσει P.

36.

[a] αἰτίαν] αἰτία A. qui μὲν ponit post ἀκίνητον.

[b] ἐνέργειτον etc.] ἀνενέργητόν [ἐνενέργητον A.] ἐστι καὶ τὸ ἀκίνητον ἔσται καὶ χορηγὸν V. A.

[c] ψυχῆς om. A.

[cc] ἀνενέργειτον] ἀνενέργητον V. A.

λέγουσι, τέλος, καὶ συνοχὴ, καὶ ἕνωσις, καὶ μόνιμος [d] αἰτία τῶν κινήσεών ἐστιν ἡ ἐνέργεια, καὶ ταύτην ἐν ἑαυτῇ συνείληφεν ἡ κατ' Ἀριστοτέλην ἀκίνητος ἐντελέχεια τῆς ψυχῆς, [e] ἔσται ἀπὸ τῆς τελειοτάτης ἐνεργείας προϊοῦσα [[f] ἀπὸ τῆς ψυχῆς], ἡ ἐν τοῖς καθ' ἕκαστα τῶν ζώων ἔργοις ἀπεργασία. Αὕτη τοίνυν κατά τε Πλάτωνα πολλοῦ [g] δεῖ ἡ αὐτὴ εἶναι τῇ συμφύτῳ τῆς ψυχῆς οὐσίᾳ καὶ ζωῇ. Δῆλον γὰρ ὅτι δίδοται μὲν εἰς τὸ κοινὸν, ἀλλ' ἐπεὶ μεταβολὴ καὶ διαίρεσις καὶ [h] παράτασις παρὰ τὸ σῶμα, καὶ κατὰ χρόνον καὶ τόπον διάστασις ἐπισυμπίπτει, ὧν οὐδέν ἐστιν ἐν τῇ καθ' αὑτὴν ἀσωμάτῳ ζωῇ, φανερὸν [i] δὴ καὶ τοῦτο γέγονεν, ὡς
[884] οὐδὲν ὑπάρχει κατὰ Πλάτωνα τῶν τοῦ συνθέτου ζώου κινημάτων ἴδιον αὐτῆς τῆς ψυχῆς. Οὐκοῦν, ὥσπερ ζωὴ κατ' αὐτὸν [k] ἦ διττὴ, ἡ μὲν χωριστὴ τοῦ σώματος, ἡ δὲ κοινὴ μετ' αὐτοῦ, οὕτως καὶ ἐνεργήματα μὲν ἴδια ἔσται τῆς ψυχῆς, τὰ δὲ κοινὰ καὶ τοῦ ἔχοντος. Καὶ τούτων τὰ μὲν ἀπὸ τῆς ψυχῆς προκατάρχοντα, τὰ δὲ ἀπὸ τῶν τοῦ σώματος παθημάτων ἐγειρόμενα, τὰ δὲ ἐξ ἀμφοῖν ἐπίσης ἀνακινούμενα· πάντα δὲ ὡς ἀπ' αἰτίας τῆς ψυχῆς ὡρμημένα. Ὥσπερ δὴ [l] καὶ τῆς κατὰ τὴν ναῦν φορᾶς κοινῆς οὔσης πρὸς τὸν κυβερνήτην καὶ τὸν ἄνεμον, τὰ μὲν ἄλλα τοιαῦτά ἐστιν, ὡς ἄνευ αὐτῶν μὴ γίγνεσθαι τὴν κίνησιν, ὁ δὲ κυβερνήτης καὶ ὁ ἄνεμος τὴν κυριωτάτην αἰτίαν περιέχουσιν ἐν [m] ἑαυτοῖς τῆς φορᾶς, οὕτως ἄρα καὶ ἡ ψυχὴ αὐτή τε [n] ὅλῳ χρῆται τῷ σώματι, καὶ τὰ ἔργα μεταχειρίζεται, ὡς ὄργανον ἢ ὄχημα

[d] αἰτία] οὐσία A. E.

[e] Verba ἔσται—ψυχῆς desunt in V.

[f] Verba ἀπὸ τῆς ψυχῆς, plane hic otiosa, facile pro glossemate agnosces præcedentis τῆς τελειοτάτης ἐνεργείας, quare ea uncinis inclusi. HEEREN.

[g] δὴ] δεῖ V. A. E.

[h] παράστασις] παράτασις V. A.

[i] δὴ] δὲ A.

[k] ἦ] Sic Heeren. ἡ A. Cant.

[l] ἐν τῆς] καὶ τῆς V. A.

[m] ἑαυτῆς] ἑαυτοῖς V. A, E.

[n] ὅλῳ] ὅλη V. A. E.

τὸ [o] σῶμα περιέχουσα· ἔχει δὲ καὶ καθ' [p] αὑτὴν οἰκείας κινήσεις, ὅσαι [q] τοῦ συνθέτου ζώου [r] ἀπολυόμεναι, [αὐταὶ καθ' αὑτὰς ἀπόλυτοι,] τὰς κατ' [s] οὐσίαν ζωὰς τῆς ψυχῆς ἐνεργοῦσιν, οἷαι [t] δή εἰσιν αἱ τῶν ἐνθουσιασμῶν καὶ τῶν ἀΰλων νοήσεων, καὶ συλλήβδην ἐκείνων, καθ' ἃς τοῖς θεοῖς συναπτόμεθα. Οὐ μὴν ἔτι τε τούτοις συγχωροῦσιν οἱ σῶμα τὴν ψυχὴν ὑπολαμβάνοντες, οἷον οἱ Στωϊκοὶ καὶ ἄλλοι
[886] πλείονες· οὐδ' ὅσοι συγκεκρᾶσθαι αὐτὴν εἰς τὴν γένεσιν οἴονται, ὥσπερ οἱ πλεῖστοι τῶν φυσικῶν· οὐδὲ ὅσοι βλάστημα [x] αὐτὴν ἀπὸ τῶν σωμάτων ποιοῦσιν [y] ἐν ἁρμονίας εἴδει οὖσαν. [z] Πάντες γὰρ οὗτοι σωματοειδεῖς τὰς κινήσεις αὐτῇ ἀποδιδόασιν.

37 Περὶ τῶν ἔργων τῆς ψυχῆς. Ἐν ταὐτῷ. p. 111.

Πότερον οὖν πασῶν τῶν ψυχῶν τὰ αὐτὰ ἔργα ἀποτελεῖται, [a] ἢ τὰ μὲν τῶν ὅλων τελεώτερα, τὰ δὲ τῶν ἄλλων ὡς ἕκασται διειλήχασι τὴν προσήκουσαν ἑαυταῖς τάξιν; Ὡς μὲν [b] οὖν οἱ Στωϊκοὶ λέγουσιν, εἷς τέ ἐστιν ὁ λόγος, καὶ ἡ αὐτὴ πάντως διανόησις, καὶ τὰ κατορθώματα ἴσα, καὶ [c] αἱ αὐταὶ ἀρεταὶ [d] τῶν τε μεριστῶν καὶ τῶν ὅλων. [e] Καί που Πλωτῖνος καὶ Ἀμέλιος ἐπὶ ταύτης εἰσὶ τῆς δόξης.

[o] σῶκα] σῶμα V. ζῶον A. E.

[p] αὑτὴν] αὐτὸν A.

[q] τοῦ συνθέτου ζώου ἀπολυόμεναι, *quæ non pendent ab animæ et corporis conjunctione,* bene jam in versione expressit Cant. pro τὸ σύνθετον ζῷον ἀπολ. quod nullo sensu habent codd. Verba autem αὐταὶ καθ' αὐταὶ ἀπόλυτοι otiosa ac merito suspecta sunt, quare ea uncis inclusi. HEEREN.

[r] ἀπολυόμεναι] ἀπολλυόμεναι V. A. E. Mox ἀπόλλυτοι A.

[s] Post οὐσίαν add. ζωὰς τῆς V. A. E. P.

[t] δὴ] δὲ A.

[x] αὐτὴν] αὐτὸν A.

[y] ἐναρμονίας una voce V.

[z] Πάντα] Sic A. Cant. πάντας V. πάντες ed. Heeren.

37.

[a] ἢ τὰ μὲν] ἢ τὸ μὲν V. Mox ἕκασται tacite Heeren. ἕκαστοι A. Cant.

[b] οὖν addidi ut nexus constaret. HEEREN.

[c] αἱ om. A.

[d] τῶν μεριστῶν] τῶν τε μεριστῶν V. A.

[e] Καὶ Πλωτῖνος] Καί που Πλωτ. V. A.

Ἐνίοτε γὰρ ὡς ἄλλην τὴν μεριστὴν ψυχὴν παρὰ τὴν ὅλην, [f]ἐνίοτε δὲ αὐτὴν πρὸς ἐκείνην εἶναι ἀφορίζονται.

Ὡς δ' ἂν εἴποι Πορφύριος, πάντῃ κεχώρισται τὰ τῆς ὅλης ψυχῆς παρὰ τὴν μεριστὴν ἐνεργήματα. Γένοιτο δὲ
[888] καὶ ἄλλη δόξα οὐκ ἀπόβλητος, ἡ κατὰ γένη καὶ εἴδη τῶν ψυχῶν· ἄλλα μὲν τὰ τῶν ὅλων παντελῆ, ἄλλα δὲ [g]τὰ τῶν θείων ψυχῶν ἄχραντα καὶ ἄϋλα, ἕτερα δὲ τὰ τῶν [h]δαιμονίων δραστήρια, τὰ δὲ τῶν ἡρωϊκῶν μεγάλα, τὰ δὲ τῶν ἐν τοῖς ζώοις καὶ τοῖς ἀνθρώποις θνητοειδῆ, καὶ τὰ ἄλλα ὡσαύτως ἔργα διαιρουμένη. Τούτων δὴ διωρισμένων, καὶ τὰ ἐχόμενα τούτων τὴν ὁμοίαν λήψεται διάκρισιν.

Οἱ μὲν γὰρ μίαν καὶ τὴν αὐτὴν πανταχοῦ ψυχὴν διατείνοντες, ἤτοι [i]γένει ἢ εἴδει, ὡς δοκεῖ [k]Πλωτίνῳ, [l]ἢ καὶ ἀριθμῷ, ὡς νεανιεύεται οὐκ ὀλιγάκις Ἀμέλιος, εἶναι αὐτὴν ἐροῦσιν [m]ἅπερ [n]ἐνεργεῖν. Οἱ δ' ἀσφαλέστερον τούτων διαταττόμενοι, καὶ προόδους πρώτας, καὶ δευτέρας, καὶ τρίτας οὐσιῶν τῆς ψυχῆς διϊσχυριζόμενοι προχωρεῖν εἰς τὸ πρόσω, οἵους ἄν τις [o]θείη [p]τοὺς [q]καινῶς μὲν ἀπταίστως δὲ [r]ἀντιλαμβανομένους τῶν λόγων, τὰ μὲν τῶν ὅλων ψυχῶν καὶ θείων καὶ ἀΰλων ἐνεργήματα ἐροῦσιν οὗτοι πάντως δήπου καὶ εἰς οὐσίαν ἀποτελευτᾶν· τὰ δὲ τῶν μεριστῶν, [s]καὶ κρατουμένων ἐν ἑνὶ εἴδει, καὶ διαιρουμένων περὶ τοῖς [t]σώμα-

[f] ἐνίοτε Cant. in marg. rescripsit pro μίαν. HEEREN.

[g] τοῦ θείων] τῶν θείων V. P. τὰ τῶν θείων A.

[h] δαιμόνων] δαιμονίων V. A.

[i] γένει ἢ εἴδει] γένη ἢ εἴδη A.

[k] Expresse hoc contendit Plotinus in commentario de essentia animæ Ennead. IV. l. 2. HEEREN.

[l] καὶ ἀριθμῷ] ἢ καὶ ἀριθμῷ V. A. E.

[m] ἅπαν] ἅπερ V. A. E.

[n] ἐνεργεῖν] Heerenius dedit ἐνεργεῖ.

[o] θείη] θείους V.

[p] κατὰ τοὺς] κατὰ, quod sensus flagitat, addidi. HEEREN. Male, opinor.

[q] καινῶς] κενῶς V. A. E.

[r] Post ἀντιλαμβανομένους add. τῶν λόγων V. A. E.

[s] καὶ om. A. qui item om. ἐν ἑνὶ ε. κ. διαιρουμένων.

[t] Post σώμασιν add. οὐδαμῶς συγχωρήσουσιν εὐθὺς εἶναι ταῦθ' ἅπερ ἐνεργοῦσι V. A. E.

[890] σιν, οὐδαμῶς συγχωρήσουσιν εὐθὺς εἶναι ταῦθ' ἅπερ ἐνεργοῦσι. Κατὰ δὴ τὴν αὐτὴν μέθοδον προΐτω καὶ ἡ συγγενὴς πρὸς ταύτην διαίρεσις. Λέγω δὴ προσπεφυκέναι [u] μὲν ταῖς δυνάμεσι τὰ ἔργα ἐκείνων τῶν ψυχῶν τῶν [x] αὐτοτελῶν καὶ μονοειδῶν καὶ χωριστῶν ἀπὸ τῆς ὕλης, ὡς ἂν φαίη ἡ νεωστὶ [y] πορευθεῖσα ἥδε αἵρεσις, ἐοικέναι δὲ ταῖς τῶν καρπῶν ἀπογεννήσεσιν ἐπὶ τῶν ἀτελεστέρων καὶ [z] περὶ γῆν ἀπομεριζομένων. [a] Ἐπὶ δὴ τούτοις δεῖ νοεῖν ὡς οἱ μὲν Στωϊκοὶ πάσας τῆς ὁποιασοῦν ψυχῆς τὰς [b] ἐνεργείας συμμιγνύουσιν τοῖς διοικουμένοις καὶ ἀψύχοις, οἱ δ' ἀπὸ Πλάτωνος οὐ πάσας. Εἶναι μὲν γάρ τινας δυνάμεις τῆς ψυχῆς [c] αἳ τοῦ σώματος, ὡς ὕλης, ἐφάπτονται, ὡς τὴν αἰσθητικὴν καὶ ὁρμητικήν, [d] καθαρωτέρας δὲ τούτων τὰς [e] μηδὲν σώματι προσχρωμένας, ὡς τὴν νοεράν. Τὰ μὲν οὖν τῶν σωματοειδῶν δυνάμεων ἔργα κατ' οὐσίαν μὲν Πλάτων οὐ συνάπτει τοῖς σώμασιν, [f] κατ'
[892] ἐπιστροφὴν δὲ κοινωνεῖν φησὶ, τὰ δὲ τῶν χωριστῶν ἀπολύει πάντη τοῦ κατατείνεσθαι εἰς τὰ σώματα. Ἤδη [g] τοίνυν καὶ τὰ μὲν τῶν ὅλων καὶ θειοτέρων ἔργα ἄμικτα εἶναι διὰ τὴν καθαρότητα αὐτῶν τῆς οὐσίας, τὰ δὲ τῶν ἐνύλων καὶ μεριστῶν μηκέθ' ὡσαύτως εἶναι ἄχραντα· καὶ τὰ μὲν τῶν ἀνιουσῶν καὶ ἀπολυομένων τῆς γενέσεως ἀφίεσθαι [h] τὸ λοιπὸν τῶν σωμάτων· τὰ δὲ τῶν κατιουσῶν συμπλέκεσθαι αὐτοῖς πολυειδῶς καὶ συνυφαίνεσθαι. Καὶ τὰ μὲν τῶν [i] ἐποχουμένων τοῖς αὐτοειδέσι πνεύμασι, καὶ δι' αὐτῶν τιθε-

[u] Ante ταῖς add. μὲν V. A. P.
[x] αὐτοτελῶν] ἀποτελῶν A.
[y] παρεβρεθεῖσα] πορευθεῖσα V. A. E. παραβρυθεῖσα ed. Heeren.
[z] περὶ] ἐπὶ A. P.
[a] Ἐπὶ δὴ, cod. P. pro ἐπειδὴ. Cant. in marg. ἐπὶ δὲ. HEEREN.
[b] ἐνεργείας] τὰς ἐνέργειας V. A.
[c] καὶ τοῦ] αἳ τοῦ V. A. E. Cant. marg.
[d] καὶ προτέρας μὲν] καὶ πρότερον μὲν A. V. καθαρωτέρας δὲ ed. Heeren. cum Canteri marg.
[e] μηδὲν] μηδενὶ A.
[f] Post ἐπιστροφὴν add. δὲ V. A.
[g] τοίνυν κατὰ] οὖν καὶ τὰ Heerenius.
[h] τὸν λοιπὸν] τὸ λοιπὸν V. A.
[i] ἐποχουμένων] τῶν ἐποχουμ. V. A.

μένων εὐκόλως ἅπερ ἂν ἕλωσιν ἄνωθεν, ἀπραγμόνως ἐκφαίνειν τὰ σφῶν ἔργα· τὰ δὲ τοῖς στερεωτέροις σώμασιν [k] ἐνσπειρόμενα καὶ κατεχόμενα, ἐν αὐτοῖς ἀναπίμπλασθαι ἀμωσγέπως τῆς τούτων φύσεως. Καὶ τὰ μὲν τῶν ὅλων ἐπιστρέφειν εἰς ἑαυτὰ τὰ διοικούμενα, τὰ δὲ τῶν διῃρημένων p. 112. αὐτὰ ἐπιστρέφεσθαι πρὸς ταῦτα ὧν ἐπιμελοῦνται. Κατ' ἄλλην τοίνυν ἀρχὴν τῆς τῶν αὐτῶν διακρίσεως, ἡ μὲν [l] Περιπατητικῶν δόξα τοῦ ζώου μόνως καὶ τοῦ συνθέτου τίθεται τὰ ἔργα τῆς ψυχῆς. Πλάτων δὲ τῆς ψυχῆς αὐτὰ [m] πρώτως προτάττει, εἶθ' οὕτως εἰς τὸ κοινὸν [n] τίθησιν. [o] Πλάτων δὲ καὶ [p] Πυθαγόρας ὑπερφυῆ τὴν οὐσίαν αὐτῆς καὶ γεννητι- [894] κὴν τῆς φύσεως προτάττοντες, πρεσβύτερα αὐτῇ καὶ τιμιώτερα πρὸ τῆς φύσεως τὰ ἔργα διδόασιν· ἄρχεσθαί τε αὐτὴν οὐ ποιοῦσιν ἀπὸ τῆς φύσεως, αὐτὴν δὲ ἀφ' αὑτῆς καὶ περὶ [q] αὑτὴν ἐξηγεῖσθαι τῶν οἰκείων ἐνεργειῶν ὑπολαμβάνουσιν, ὅσα τέ ἐστιν ἐν αὐτῇ καλὰ καὶ σπουδαῖα κινήματα τῆς φύσεως ὑπερέχοντα, καθ' αὑτὰ [r] ἐξαιροῦσιν.

Ἤδη τοίνυν καὶ ἐν αὐτοῖς τοῖς Πλατωνικοῖς πολλοὶ [s] διαστασιάζουσιν· οἱ μὲν εἰς μίαν σύνταξιν καὶ μίαν ἰδέαν τὰ εἴδη καὶ τὰ μόρια τῆς ζωῆς καὶ τὰ ἐνεργήματα συνάγοντες, ὥσπερ

[k] Post ἐνσπειρόμενα add. καὶ κατεχόμενα V. A. Supra ἔργα om. A.

[l] Περιπατητικῶν] –τικὴ V. A.

[m] πρῶτα] πρώτως V. A.

[n] δίδωσι] τίθησιν A. E. Supra προτάσσει A.

[o] Πλάτων καὶ] Πλάτων δὲ καὶ V. A.

ib. Platonis nomen, cum modo adfuerit, non inmerito suspectum est Cantero, qui illud in versione omisit. Attamen quæ sequuntur aperte Platonica sunt, nihil enim continent quam consequentiam ex iis quæ modo de Platone dixerat Iamblichus. Locus itaque sanus videtur, si mecum post Πλάτων inserueris ὡς καί. Ceterum sententiam hanc ipsam copiose a Platone in Phædone expositam esse, nemo ignorat. HEEREN.

[p] Post Πυθάγορας add. ὑπερφυῆ τὴν οὐσίαν αὐτῆς καὶ γεννητικὴν τῆς φύσεως προτάττοντες, (προστάποντες E.) πρεσβύτερα etc. V. A. E. P.

[q] αὐτὴν] ἑαυτὴν A.

[r] ἐξαιροῦσιν] ἐξαίρουσιν A.

[s] διαστάζουσιν] διαστασιάζουσιν V. A. E.

Πλωτῖνός τε καὶ Πορφύριος· οἱ δὲ [t] εἰς μάχην ταῦτα [u] κατατείνοντες, ὥσπερ Νουμήνιος· οἱ δὲ ἐκ μαχομένων αὐτὰ συναρμόζοντες, ὥσπερ οἱ περὶ Ἀττικὸν καὶ [x] Πλούταρχον. Καὶ οὗτοι μὲν προϋποκειμένων τῶν ἀτάκτων καὶ πλημμελῶν κινημάτων [y] ἐπεισιέναι φασὶν ὕστερα τὰ κατακοσμοῦντα αὐτὰ καὶ διατάττοντα, καὶ τὴν συμφωνίαν ἀπ' ἀμφοτέρων οὕτως [z] συνυφαίνουσι· κατὰ μὲν Πλωτῖνον τῆς πρώτης ἑτερότητος, κατ' [a] Ἐμπεδοκλέα δὲ τῆς πρώτης ἀπὸ τοῦ θεοῦ φυγῆς, καθ' [b] Ἡράκλειτον δὲ τῆς ἐν τῷ μεταβάλλεσθαι
[896] ἀναπαύλης, κατὰ δὲ τοὺς Γνωστικοὺς, παρανοίας ἢ παρεκβάσεως, κατ' Ἀλβῖνον δὲ τῆς τοῦ αὐτεξουσίου διημαρτημένης κρίσεως αἰτίας γιγνομένης τῶν καταγωγῶν [c] ἐνεργημάτων. Τῶν δ' αὖ διϊσταμένων πρὸς τούτους, καὶ ἀπὸ τῶν ἔξωθεν προσφυομένων προστιθέντων [d] ὁπωσοῦν τῇ ψυχῇ τὸ [e] κακὸν, ἀπὸ μὲν τῆς ὕλης Νουμηνίου καὶ Κρονίου πολ-

[t] εἰς] ὡς A.

[u] κατατείνοντες] κατατείναντες ed. Heeren.

[x] Πλούταρχον] Plutarchi sententiam copiose explicatam invenies in disputatione de Animæ Generat. Op. II. p. 1059. etc. HEEREN.

[y] ἐπεισιέναι] ἐπισιέναι A.

[z] συνυφαίνουσι] συμφαίνουσι V. A. E. Seqq. sejungit A.

[a] Empedocles nempe animarum in corpora migrationem, cum eas ut delictorum pœnas luerent, iis inditas putaret, *exsilium* vocabat. Cf. Plut. de Exsil. Op. II. p. 607. qui et ipsos Empedoclis versus servavit: Ἔστιν (sic leg. pro ἔστι τῆς) ἀνάγκης χρῆμα, θεῶν ψήφισμα παλαιὸν, Εὖτέ τις ἀμπλακίῃσι φόνῳ φίλα γυῖα μιαίνῃ Δαίμων, (οἵτε μακραίωνες λελόγχασι βίοιο,) Τρίς μιν μύριας ὥρας ἀπὸ μακάρων ἀλάλησθαι. Τὴν καὶ ἐγὼ νῦν εἰμι **φυγὰς θεόθεν** καὶ ἀλήτης. Pro δαίμων v. 3. male ap. Plut. legitur δαίμονες. HEEREN.

[b] Post Ἡράκλειτον add. δὲ A.

ib. Obscura hæc Heracliti sententia a nemine alio explicatur. Constat tamen ex Diog. IX. s. 7. etc. eum omnia mutationi subjecta atque ex ea orta posuisse; nec eum aliter de anima statuisse, cum eam τὸ ἀεὶ ῥέον et τὸ ἀεὶ κινούμενον vocaret, testis est Arist. de Anim. I. 2. Cum itaque conjunctionem ejus cum corpore ἀναπαύλην ἀπὸ τῆς μεταβολῆς vocaret, seu potius illam ex hac ortam esse contenderet, non aliter ac Empedocles ad pœnas luendas corpori eam inclusam esse, posuisse videtur. Cf. infra p. [906.]. HEEREN.

[c] ἐνεργημάτων] τῶν ἐνερ. Heerenius de suo.

[d] ὁπωσοῦν] ὁποσοῦν A. V. E.

[e] καλὸν] κακὸν V. A. E. P.

λάκις· ἀπὸ δὲ τῶν σωμάτων αὐτῶν τούτων, ἔστιν ὅτε καὶ Ἁρποκρατίωνος· ἀπὸ δὲ τῆς φύσεως καὶ τῆς ἀλόγου ζωῆς Πλωτίνου καὶ Πορφυρίου ὡς τὰ πολλά. Κατὰ δὲ Ἀριστοτέλην εἴδεσι ζωῆς καὶ ἄλλοις ὅροις ταῦτα χωρὶς ἀπὸ τῶν ἀνθρωπίνων διακέκριται. Κατὰ δ' [f] αὖ τοὺς Στωϊκοὺς ἀτελέστερα ἀεὶ ἀπομερίζεται τὰ τοιαῦτα τῆς ζωῆς ἐνεργήματα, καὶ ὅσῳ ἂν ᾖ προϊόντα προσωτέρω τῆς ἀλογίας,
[898] [g] τοσῷδε μᾶλλον ἐπὶ τὸ ἀτελέστερον ἀποφέρεται τὰ καταδεέστερα τῶν πρεσβυτέρων. Ὡς δ' ἐγώ τινων ἀκήκοα Πλατωνικῶν, οἷον Πορφυρίου καὶ ἄλλων πολλῶν, ἀφομοιοῦται ἀλλήλοις τὰ μὲν [h] ἀνθρώπεια τοῖς θηρίοις, τὰ δὲ τῶν ζώων τοῖς [i] ἀνθρωπείοις, ἐφ' ὅσον πέφυκε τὰ διακεκριμένα καθ' ἑτέρας οὐσίας ὁμοιοῦσθαι πρὸς ἄλληλα.

38 Περὶ [a] μέτρων ψυχῆς. Ἐν ταὐτῷ.

Οἱ μὲν δὴ μίαν οὐσίαν τῆς ψυχῆς ἀριθμῷ τιθέμενοι, πληθύοντες δὲ αὐτὴν, [b] ἢ, ὡς Ἀμέλιος οἴεται, [c] σχέσεσι καὶ κατατάξεσιν, ἢ, ὡς οἱ Ὀρφικοὶ λέγουσιν, ἐπιπνοίαις ἀπὸ τῆς ὅλης, ἔπειτα [d] ἀναχέοντες ἀπὸ τοῦ πλήθους τῆς ὅλης ἐπὶ τὴν μίαν ψυχὴν [e] ἀποθεμένας τὰς σχέσεις καὶ τὰς εἰς ἕτερον κατατάξεις, [f] καὶ ἀναλύοντες ἀπὸ τῆς εἰς τὰ μετα-
[900] λαβόντα διαιρέσεως, ἀπολυομένης τῆς τῶν μετασχόντων

[f] αὐτοὺς] αὖ τοὺς V. A. E.
[g] τόσῳ καὶ] τοσῷ δὲ V. A.
[h] ἀνθρώπεια] –πια A.
[i] ἀνθρωπείοις] –πίοις A. E.

38.

[a] μέτρων] μέτρου Cant.
[b] ἢ quod alterum ἢ postulat, inserui. HEEREN.
[c] σχέσει καὶ κατὰ τάξιν] σχέσεσι καὶ κατατάξεσιν V. A.
[d] ἀνασχέοντες] ἀναχέοντες A. ἀναστοιχειοῦντες, *in elementa sua resolventes*, Lobeck. Aglaoph. p. 756.
[e] Canterus pro ἀποθεμένας voluisse videtur ἀποθέμενοι, *dum tollunt multarum habitus ad unam referunt;* attamen vel sic merito exspectaveris aut ἀπὸ τοῦ πλήθους τῶν ὅλων, aut ἀπὸ τοῦ πλήθους, ἐπὶ τὴν μίαν τῆς ὅλης ψυχὴν κ. τ. λ.—In reliquis pro inaudito ἀποδιαλήψεως legendum videtur ἀπολήψεως, *animam universalem liberant a divisione in ea quæ ejus participant,* τὰ μετασχόντα, (animantia nempe,) *quod illa nihil ab ipsis patitur.* HEEREN. ἀποθεμένης Lobeck.
[f] καὶ] ἢ V. A. E.

ἀποδιαλήψεως, τηροῦσιν αὐτὴν ὅλην πανταχοῦ τὴν αὐτήν, [g]μίαν οὐσίαν τε αὐτῇ διδόασι καθ' ἓν πεπερασμένην. Οἱ δ' ἐν ἀπείροις κόσμοις, ὥσπερ δὴ οἱ περὶ Δημόκριτον καὶ Ἐπίκουρον νομίζουσιν, ἀπὸ τῶν ἀπείρων ἀτόμων κατὰ συντυχίαν συνερχομένων συνίστασθαι [[h]ἀπὸ τῶν τοιῶνδε στοιχείων] τὰς ψυχὰς ἡγούμενοι, ἀπείρους αὐτὰς εἶναι [i]ἑπομένως p. 113 ταῖς οἰκείαις [k]ὑποθέσεσιν ἀποφαίνονται. Καὶ οἱ μὲν ἐκ σπερμάτων αὐτὰς γεννῶντες, ἑκάστου δυναμένου πολλὰ σπείρειν, καὶ τοῦδε προϊόντος ἀεὶ καὶ οὐδαμῇ ἱσταμένου, κατὰ τὴν [l]γέννησιν καὶ ἐν τῷ γίγνεσθαι ἀεὶ τὸ [m]ἄπειρον ἀπολείπουσιν. Οἱ δὲ κατὰ μεταβολὴν ἐξ ἑνὸς ζώου φθειρομένου [n]πολλὰ ζῶα καὶ πολλὰς ζωὰς παράγοντες, ἐν τῷ μεταβάλλειν συνεχῶς, καὶ μηδέποτε ἐπιλείπειν τὴν ἐκ τῆς μεταβολῆς διαδεχομένην [o]ἀειγενεσίαν, [p]ταύτῃ τὸ [pp]ἀπέραντον πλῆθος τῶν ψυχῶν ἐπινοοῦσιν, [[q]ἐν τῷ ἀεὶ [r]πλεῖον γίγνεσθαι]. Οἱ δὲ τῆς φύσεως τὴν ψυχὴν μὴ διακρίνοντες, πάλιν δὴ καὶ οὗτοι κατὰ διαίρεσιν τὸ ἄπειρον τῶν ψυχῶν γίγνεσθαι προσομολογοῦσιν, ἐπειδὴ καὶ ἕκαστον
[902] τῶν φυομένων [s]δένδρων μεριζόμενον ταυτόν ἐστι τῷ ὅλῳ, καὶ τῶν ἴσων [t]αὐτῷ φαίνεται γεννητικὸν εἶναι. Οἱ δ' ἀπὸ Πλάτωνος ἀγεννήτους καὶ ἀφθάρτους αὐτὰς προστησάμενοι,

g Post μίαν add. οὐσίαν V. A.

h Verba ἀπὸ τῶν τοιῶνδε στοιχείων, quæ otiosa sunt et sensum turbant, ejicienda videntur. HEEREN.

i ἑπομένως] –μένους A. E.

k ὑποθέσεσιν] ὑποσχέσεσιν A. E.

l γέννησιν] γένεσιν ed. Heeren.

m ἄπειρον recte Cant. in marg. emendavit pro ἄπορον. HEEREN.

n πολλὸν ζῶον] πολλὰ ζῶα V. A. P. Ante πολλὰ Heeren. inseruit καί.

o ἀειγενεσίαν] ἀειγεννησίαν V.

p ταύτην] ταύτῃ A. V.

pp ἀπέρατον] ἀπείραντον V. ἀπέραντον A. E.

q Verba ἐν τῷ ἀεὶ πλείους γίγνεσθαι, quæ et otiosa sunt et sensum turbant, merito pro glossemate habueris. Neglexit ea jam in versione Canterus. HEEREN.

r πλεῖον A. Cant. πλείους Heeren.

s δένδρων] Sic Heeren. δένδρον A. Cant.

t αὐτῶν] αὐτῷ V. A. E.

ἑστάναι ἀεὶ κατὰ τὴν [u] αὐτὴν συμμετρίαν [x] ἀφορίζονται, οὔτε γὰρ [y] προστίθεσθαί τι αὐταῖς ἀπὸ τῆς γενέσεως, οὔτε ἀφαιρεῖσθαι ἀπ' αὐτῶν [z] μεθιστάμενον εἰς τὰ ἀπολλύμενα. Τοῦτο δὴ τὸ μέτρον οἱ μὲν περὶ Πλωτῖνον εἰς τὸν τέλεον ἀριθμὸν ὡς οἰκεῖον προβιβάζουσιν.

39

[a] Πλωτῖνος μὲν καὶ Πορφύριος καὶ Ἀμέλιος ἀπὸ τῆς ὑπὲρ τὸν οὐρανὸν ψυχῆς [b] καὶ πάσας [c] ἐπίσης εἰσοικίζουσιν εἰς τὰ σώματα. Πολὺ δὲ διαφερόντως ἔοικεν ὁ Τίμαιος τὴν πρώτην ὑπόστασιν τῶν ψυχῶν ποιεῖν τὸν δημιουργὸν διασπείροντα περὶ πάντα μὲν τὰ κρείττονα γένη, καθ' ὅλον δὲ τὸν οὐρανόν, εἰς [d] ὅλα τε τὰ στοιχεῖα τοῦ παντός. Ἔσται δὴ οὖν καὶ ἡ σπορὰ ἡ δημιουργικὴ τῶν ψυχῶν διαιρουμένη περὶ τὰς θείας δημιουργίας, καὶ ἡ πρώτη τῶν ψυχῶν πρόοδος συνυφισταμένη μεθ' ἑαυτῆς ἔχουσα τὰ δεχόμενα τὰς ψυχάς· ἡ μὲν ὅλη τὸν ὅλον κόσμον· αἱ δὲ τῶν [e] ἐμφα-
[904] νῶν θεῶν, τὰς κατ' οὐρανὸν σφαίρας· αἱ δὲ τῶν στοιχείων, αὐτὰ τὰ στοιχεῖα μεθ' ὧν καὶ [f] αἱ ψυχαὶ συνεκληρώθησαν καθ' ἑκάστην τοιαύτην λῆξιν, ἀφ' ὧν δὴ αἱ κάθοδοι γίγνονται τῶν ψυχῶν ἄλλαι ἀπ' ἄλλων διακληρώσεων, [g] ὡς βούλεται ἐνδείκνυσθαι σαφῶς ἡ τοῦ Τιμαίου διάταξις. Ἄλλη τοίνυν αἵρεσις τῶν [h] Πλατωνικῶν, οὐ κατὰ τοὺς δημιουργικοὺς κλήρους, οὐδὲ κατὰ τὰς διαιρέσεις τῶν [i] κρειττόνων γενῶν, οἷον

[u] αὐτὰν] αὐτὴν A.

[x] ἀναφορίζονται] ἀφορίζονται V. A.

[y] προστίθεσθαι] προτίθεσθαι A.

[z] μεθιστάμενον] μεθιστάμενα V. A. –μεναν E.

39.

[a] Πλωτῖνος] Deest lemma A. Canterus in versione Latina, *De descensu animarum.*

[b] καὶ πάσας] καὶ delevit Heerenius.

[c] ἐπίσως] ἐπίσης V. A. E.

[d] ὅλα τε] Sic Heeren. ὅλα δὲ A. Cant.

[e] Post ἐμφανῶν add. θεῶν V. A.

[f] αἱ ψυχαὶ] Sic Heeren. αἱ om. A. Cant.

[g] Ante βούλεται add. ὡς V. A. P.

[h] Πλωτινικῶν] Πλατωνικῶν V. A. Πλατωτινικῶν E.

[i] Post κρειττόνων add. γενῶν V. A.

θεῶν, ἀγγέλων, δαιμόνων, ἡρώων, οὐδὲ κατὰ τὰς νομὰς τοῦ παντὸς διακρίνει τὰς ἀπὸ τῶν διαφερόντων τόπων καταβάσεις τῶν ψυχῶν· [k]τιθεμένη δὲ τὴν ψυχὴν ἀεὶ εἶναι ἐν σώματι, ὥσπερ ἡ Ἐρατοσθένους, καὶ Πτολεμαίου τοῦ [l]Πλατωνικοῦ, καὶ ἄλλων, ἀπὸ σωμάτων αὐτὴν [m]λεπτοτέρων εἰς τὰ ὀστρεώδη πάλιν εἰσοικίζει σώματα. Διατρίβειν μὲν γὰρ αὐτὴν εἰς [n]μοῖράν τινα τοῦ αἰσθητοῦ, καθήκειν γε μὴν εἰς τὸ στερεὸν σῶμα ἄλλοτε [o]ἀπ' ἄλλων τοῦ παντὸς τόπων. Καὶ
[906] τούτους Ἡρακλείδην μὲν τὸν Ποντικὸν ἀφορίζειν περὶ [p]τὸν γαλαξίαν, ἄλλους δὲ καθ' ὅλας τοῦ οὐρανοῦ τὰς σφαίρας, ἀφ' ὧν δὴ δεῦρο κατιέναι τὰς ψυχάς· τοὺς [q]δὲ περὶ σελήνην ἢ ἐν τῷ ὑπὸ σελήνην ἀέρι λέγειν αὐτὰς κατοικεῖν, καὶ ἀπ' αὐτῶν κάτω χωρεῖν [r]εἰς τὴν περίγειον γένεσιν, τοὺς δὲ ἀπὸ σωμάτων ἀεὶ στερεῶν πίπτειν εἰς ἕτερα σώματα διϊσχυρίζεσθαι. Ἀπὸ μὲν δὴ τοσούτων καὶ οὕτω διαφερόντων μερῶν γίγνεσθαι διαφερούσας τὰς τῇδε καθόδους, αὐτοὺς δὲ τοὺς τρόπους διΐστασθαι πολυειδῶς. Ἡράκλειτος μὲν γὰρ [s]ἀμοιβὰς ἀναγκαίας τίθεται ἐκ τῶν ἐναντίων, [t]ὁδόν τε ἄνω καὶ κάτω διαπορεύεσθαι τὰς ψυχὰς ὑπείληφε, καὶ τὸ μὲν p. 114.
τοῖς αὐτοῖς [u]ἐπιμένειν κάματον εἶναι, τὸ δὲ μεταβάλλειν φέρειν ἀνάπαυσιν. Οἱ δὲ περὶ Ταῦρον Πλατωνικοὶ [x]πέμπεσθαι τὰς ψυχὰς ὑπὸ θεῶν εἰς γῆν λέγουσιν, οἱ μὲν [y]ἑπομένως τῷ Τιμαίῳ παραδιδόντες ὅτι εἰς τελείωσιν τοῦ

k τιθεμένη] Sic Heeren. τιθεμένην A. Cant.

l Πλατωικοῦ] Πλατωνικοῦ V. A.

m λεπτέρων] λεπτοτέρων V. A. E. An leg. λεπτοδέρμων?

n μοίραν] μόραν A.

o ἐπ' ἄλλων] ἀπ' ἄλλων V. A.

p τὴν] τὸν A.

q Ante περὶ add. δὲ V. A.

r εἰς τὸν] εἰς τὴν A.

s ἀμοιβὰς] ἀμειβὰς A.

t ὀδόντες] ὁδόν τε Heeren. citato Diog. Laërt. IX. 8. καὶ τὴν μεταβολὴν ὁδὸν ἄνω κάτω.

u ἐπιμένει] ἐπιμένειν V. A. Supra ἐν τοῖς Heeren.

x πέμπεσθαι] πέμπουσι V. A. E. Mox θν̄ A. cum θεῶν in marg.

y ἑπόμενοι] ἑπομένως V. A.

παντὸς, ὥστε εἶναι [z] καὶ ἐν τῷ κόσμῳ τοσαῦτα ζῶα, ὅσα εἰσὶν ἐν τῷ νοητῷ· οἱ δὲ εἰς [a] εὐθείας ζωῆς ἐπίδειξιν τὸ τέλος ἀναφέροντες τῆς καθόδου. Ταύτην γὰρ εἶναι τὴν βούλησιν [908] τῶν θεῶν, θεοὺς ἐκφαίνεσθαι [b] διὰ τῶν ψυχῶν· προέρχονται γὰρ εἰς ἐμφανὲς οἱ θεοὶ καὶ ἐπιδείκνυνται διὰ τῶν ψυχῶν καθαρᾶς καὶ ἀχράντου ζωῆς. Κατ' ἄλλην τοίνυν διαίρεσιν οἱ μὲν ἑκούσιοι τρόποι νοοῦνται τῆς καθόδου, ἢ ἑλομένης αὐτῆς τῆς ψυχῆς τὴν διοίκησιν τῶν περὶ γῆν, ἢ πειθαρχούσης τοῖς κρείττοσιν, οἱ δὲ ἀκούσιοι, βιαζομένης ἐπὶ τὸ χεῖρον ἕλκεσθαι.

40 Περὶ διαφορᾶς καθόδου τῶν ψυχῶν. Ἐν ταυτῷ.

Οὐχ ἡ αὐτή ἐστι πασῶν τῶν ψυχῶν κοινωνία πρὸς τὰ σώματα, ἀλλ' ἡ μὲν ὅλη, ὥσπερ καὶ Πλωτίνῳ δοκεῖ, προσιὸν [a] αὐτῇ τὸ σῶμα ἔχει [b] ἐν ἑαυτῇ, ἀλλ' οὐκ αὐτὴ [c] πρόσεισι τῷ σώματι, οὐδὲ περιέχεται ὑπ' αὐτοῦ· αἱ δὲ μερισταὶ προσέρχονται τοῖς σώμασι, καὶ τῶν σωμάτων γίγνονται, καὶ ἤδη κρατουμένων τῶν σωμάτων ὑπὸ τῆς τοῦ παντὸς φύσεως, εἰσοικίζονται εἰς αὐτά. Καὶ αἱ μὲν τῶν θεῶν θεῖα σώματα, νοῦν μιμούμενα, ἐπιστρέφουσι πρὸς τὴν ἑαυτῶν νοερὰν οὐσίαν· αἱ δὲ τῶν ἄλλων θείων γενεῶν, ὡς ἕκασται ἐτάχθησαν, οὕτω κατευθύνουσιν ἑαυτῶν τὰ [d] ὀχήματα. [e] Ἔτι γε μὴν αἱ καθαραὶ ψυχαὶ καὶ τέλειαι

[z] καὶ om. Heeren.

[a] εὐθείας] θείας Lobeck. Aglaoph. p. 1095.

[b] διὰ τῶν ψυχῶν—ἐπιδείκνυνται exciderunt ex ed. Heeren.

40.

[a] ἑαυτῇ] αὐτῇ Heeren. Mox ἔχειν A.

[b] ἐν ἑαυτῇ] ἐν αὐτῇ V.

[c] πρόσεισι, *accedit*, rescripsi pro πρόεισι. Disputat de animarum in corpora descensu Plotinus Ennead. IV. l. 3. HEEREN.

[d] ὀχήματα recte jam Cant. in marg. conjecerat pro σχήματα. Nempe quod anima corpus regens aurigæ comparatur, corpora ipsa vocantur vehicula, ὀχήματα. Fundum comparationis constat esse apud Platonem in Phædro Op. III. p. 246. etc. in qua exornanda mire sibi placent Neoplatonici. HEEREN.

[e] Ἔτι μὲν] ἔτι γε μὴν V. A. Mox καθὼς A.

καθαρῶς [f] *εἰσοικίζονται εἰς τὰ σώματα, ἄνευ παθημάτων,*
[910] *καὶ τῆς στερήσεως τοῦ νοεῖν· αἱ δ' ἐναντίαι ἐναντίως. Ἀττικῷ [δὲ* [g] *καὶ ἄλλοις τισὶ] Πλατωνικοῖς οὐ συνδοκεῖ,* [h] *καθ' ἕνα δὲ τρόπον συντεύξεως τὰς ὅλας ψυχὰς τοῖς σώμασι συνάγουσιν, ὡσαύτως ἀεὶ μὲν καὶ ἐπὶ πάσης ἐνσωματώσεως τῶν ψυχῶν προϋποτιθέντες τὴν ἄλογον καὶ πλημμελῆ καὶ ἔνυλον ψυχὴν, ἐν αὐτῇ δὲ κατακοσμουμένῃ τὴν κοινωνίαν* [i] *τῆς λογικῆς ἐπεισάγοντες. Οἶμαι τοίνυν καὶ τὰ* [k] *τέλη διάφορα ὄντα καὶ τοὺς τρόπους* [l] *τῆς καθόδου τῶν ψυχῶν ποιεῖν διαφέροντας. Ἡ μὲν γὰρ ἐπὶ σωτηρίᾳ καὶ καθάρσει καὶ τελειότητι τῶν τῇδε κατιοῦσα ἄχραντον ποιεῖται καὶ τὴν κάθοδον· ἡ δὲ* [m] *διὰ γυμνασίαν καὶ ἐπανόρθωσιν τῶν οἰκείων ἠθῶν ἐπιστρεφομένη περὶ τὰ σώματα οὐκ ἀπαθής ἐστι παντελῶς, οὐδὲ ἀφεῖται ἀπόλυτος καθ' ἑαυτήν· ἡ δὲ ἐπὶ δίκῃ καὶ κρίσει δεῦρο κατερχομένη συρομένη πως ἔοικε καὶ συνελαυνομένῃ*[n]. *[Τινὲς δὲ τῶν νεωτέρων οὐχ οὕτως]* [o] *διακρίνουσιν, οὐκ ἔχοντες δὲ σκοπὸν τῆς διαφορότητος, εἰς ταὐτὸ συγχέουσι τὰς ἐνσωματώσεις τῶν ὅλων,*

[f] *οἰκίζονται*] *εἰσοικίζονται* V. A.

[g] Verba *δὲ καὶ ἄλλοις τισὶ* necessario supplenda videntur, nam apud Cant. [et A.] male exstat *Ἀττικῷ ἢ Πλατωνικοῖς*, quod ferri nequit, cum ipse Atticus Platonis assecla fuerit. HEEREN. *ἀττϊκῶ* A.

[h] *καθ' ἕνα δὲ τρόπον* rescripsi pro *καθ' ἓν δὲ πρῶτον* ap. Cant. [et A.] *τρόπον* jam in marg. conjecerat Cant. HEEREN.

[i] *τῆς λογικῆς ἐπεισαγάγοντες*] *τῆς λογικοῖς* (*τῆς λογικῆς* A.) *ἐπεισάγοντες* V. A.

[k] *τέλη*] *τέλει* V.

[l] *τῆς καθόδου*] *τῶν καθόδων* A.

[m] *δι' ἀμνησίαν*] *διὰ γυμνασίαν* V. A. E.

[n] Post *συνελαυνομένῃ* vacuo spatio relicto lacuna indicatur in codd. Exciderunt nempe nomina philosophorum, de quibus in sequentibus sermo est. Satis tamen hisce ipsis indicatur loqui Iamblichum de recentioribus Platonicis, ex quibus Cronium, Amelium et Harpocrationem commemorat; oppositam eos sententiam, cunctas nempe animas ad pœnas luendas corporibus immitti, fovere tradens. Quare verba quæ uncis inclusi, *τινὲς δὲ τῶν νεωτέρων οὐχ οὕτως* excidisse, vix dubitaveris. HEEREN.

[o] *διακρίνουσιν* etc.] *Διακρίνουσϊν οὐκ ἔχοντες δὲ σκοπὸν* V. E. A.

κακάς τε εἶναι [p] πάσας διϊσχυρίζονται, καὶ διαφερόντως οἱ [912] περὶ Κρόνιόν τε καὶ Νουμήνιον, καὶ Ἁρποκρατίωνα. Δεῖ δέ που καὶ τοὺς βίους τῶν ψυχῶν κατανοεῖν πρὶν ἐλθεῖν εἰς σῶμα, ὡς ἄρα καὶ οὗτοι πολλὴν ἔχουσιν ἐν [q] ἑαυτοῖς διάστασιν· ἀπὸ δὲ διαφόρων τρόπων ζωῆς, διάφορον ποιοῦνται [r] ἑαυτῶν καὶ τὴν πρώτην σύνοδον. Οἵτε γὰρ [s] νεοτελεῖς καὶ πολυθεάμονες τῶν ὄντων, οἵτε συνοπαδοὶ καὶ συγγενεῖς τῶν θεῶν, οἵτε παντελεῖς καὶ ὁλόκληρα τὰ εἴδη τῆς ψυχῆς περιέχοντες, [t] πάντες ἀπαθεῖς καὶ ἀκήρατοι ἐμφύονται πρώτως εἰς τὰ σώματα. Οἱ δὲ ἀπὸ τῶν [u] ἐπιθυμιῶν ἅδην ἀναπεπλησμένοι, καὶ ἄλλων παθῶν μεστοὶ, μετὰ παθῶν συνέρχονται πρώτως τοῖς σώμασι.

41 Ἐν ταυτῷ.

Κατὰ [a] δ' Ἱπποκράτην, [b] τὸν τῶν Ἀσκληπιαδῶν, ὅταν πλασθῇ τὸ σπέρμα, (τότε γὰρ ἐπιτηδείως [c] ἔχειν αὐτὸ μεταλαμβάνειν ζωῆς·) κατὰ δὲ Πορφύριον ἐν τῇ πρώτῃ ἀπογεννήσει τοῦ τικτομένου [d] πρώτως ἡ κατ' ἐνέργειαν ζωοποιΐα p. 115. καὶ παρουσία τῆς ψυχῆς φύεται. Γένοιτο δ' ἂν καὶ ἄλλη τις δόξα, οὐδέπω [e] καὶ νῦν ῥηθεῖσα, ἡ λέγουσα πλείονας μὲν [914] εἶναι τὰς [f] δυνάμεις καὶ τὰς οὐσίας τῆς ψυχῆς, [g] κατὰ

p πάσας διισχυρίζονται] πάντας διισχυρίζοντας A.

q ἑαυτοῖς] ἑαυταῖς A.

r ἑαυτῶν καὶ τὴν] αὐτῶν τὴν Heeren. Supra διάφον A.

s Post νεοτελεῖς add. καὶ πολυθεάμονες τῶν ὄντων. ὅτι (οἵτε A. E.) συνοπαδοὶ καὶ συγγενεῖς τῶν θεῶν οἵτε παντελεῖς καὶ ὁλόκληρα etc. V. A. E. P.

t πάντες] πάντε A. cum ἴσως πάντες in marg.

u ἐπιθυμιῶν ἅδην] ἐπιθυμίαδὴν A.

41.

a μὲν rescripsi pro δὲ, quod stare nequit, nisi forte nonnulla jam præcesserint, quæ interiere. Hippocrates de hisce disputat in commentario περὶ γονῆς. HEEREN. κατὰ δι' ὑποκράτην A. Ante h. v. fere certum est nonnulla intercidisse.

b τὸν τῶν] τὸ τῶν V. A.

c ἔχει] ἔχειν V. A.

d πρώτως] πρῶτος A.

e καὶ νῦν] εἰς τὰ νῦν Heerenius.

f δυνάμεις—οὐσίας] οὐσίας—δυνάμεις A.

g κατὰ καιρὸν] κατὰ καιροὺς V. A. E.

καιροὺς δὲ ἄλλοτε ἄλλως, [h]εἴπερ ἂν ἐπιτηδείως [i]ἔχῃ τὸ γιγνόμενον σῶμα, τὰ μὲν πρῶτα τῆς φύσεως μεταλαμβάνειν, ἔπειτα τῆς αἰσθήσεως, εἶτα τῆς ὁρμητικῆς ζωῆς, καὶ τότε δὴ τῆς λογικῆς ψυχῆς, ἐπὶ δὲ τῷ τέλει τῆς νοερᾶς· τοσαῦτα [k]γὰρ καὶ (ἡ) κατὰ τοὺς χρόνους συμφυομένη κοινωνία τῶν ψυχῶν πρὸς τὰ σώματα) δέχεται δοξάσματα. Ἀλλὰ μὴν ἔν γε τῷ [l]τρόπῳ τῆς εἰσόδου τῶν ψυχῶν, καθ' ὃν ἐπιζητοῦμεν πῶς εἰσκρίνεται, μία μέν ἐστι τριπλῆ δόξα, ἡ ἕλκουσα ἀπὸ τῶν ἐκτὸς τὴν ψυχὴν ἐν τῇ καλουμένῃ συλλήψει, ἢ [m]διὰ προθυμίαν τοῦ γεννῶντος διὰ τὴν ἀναπνοὴν, ἢ διὰ προθυμίαν τῆς [n]ὑποδεχομένης [o]μητρὸς, ὅταν αὐτὴ ἐπιτηδείως [p]ἔχῃ πρὸς τὴν [q]κράτησιν, ἢ διὰ [r]συμπάθειαν ἀμφοῖν, ὅταν κοινῇ [s]συμπνέοντα ἀμφότερα ἑλκτικὴν [t]ἔχῃ τὴν ἰδιότητα, [u]συγκινουμένης καὶ τῆς φύσεως. Ἡ δὲ κατ' ἀνάγκην εἰσδύνειν ποιεῖ τὴν αὐτοκίνητον εἰς τὸ ὀργανικὸν σῶμα, ἤτοι ἀπὸ τοῦ παντὸς, ἢ τῆς ὅλης ψυχῆς, ἢ τῆς δημιουργίας πάσης.

Οἱ δὲ καθαρώτεροι τῶν Πλατωνικῶν, ὥσπερ δὴ οἱ περὶ
[916] Πλωτῖνον, ἄρχεσθαι μὲν τῆς κινήσεως τὸ ὀργανικὸν σῶμά φασιν [x]ἀπὸ τούτων τῶν μερῶν, δουλεῦον εἰς τὴν γένεσιν ταῖς χρωμέναις αὐτῷ δυνάμεσιν, αὐτὰς δὲ [y]τὰς δυνάμεις ἀπο-

h ἥπερ] εἴπερ V. A. E.
i ἔχει] ἔχῃ V. A.
k γὰρ inseruit Heeren.
l τρόπῳ] Sic Heeren. τόπῳ A. Cant.
m διὰ προθυμίαν] διὰ τὴν πρ. Heeren. Tum τοῦ γεννῶντος—προθυμίαν om. A.
n ὑποδεχομένης] δεχομένης A.
o Male habet Cant. [et A.] μήτρας. Legendum enim esse μητρὸς docet tum præcedens γεννῶντος, cui opponitur, tum sequens διὰ συμπάθειαν ἀμφοῖν, quod de matre, non de utero, accipiendum esse, quilibet videt. HEEREN.
p ἔχει] ἔχῃ V. A.
q κατάστασιν] κράτησιν V. A. E. ἐγκράτησιν ed. Heeren.
r συμπάθειαν] —θείας A.
s συμπνέοντα] συμπλέοντα A.
t ἔχῃ] ἔχει V. A. E.
u συγκινουμένης] συγκρινομένης ed. Heeren. tanquam ex V. in quo tamen legi videtur συγκρινουμένης.
x ὑπὸ τούτων] ἀπὸ τούτων V. A. E. P.
y Ante δυνάμεις add. τὰς V. A.

λύτους εἶναι τῶν μεριστῶν σωμάτων διϊσχυρίζονται. Ἤδη τοίνυν [z] καὶ ἡ χρῆσις τοῦ σώματος πολλῆς δεῖται διακρίσεως. Οἱ μὲν γὰρ προσεοικέναι αὐτὴν λέγουσιν ὡς [a] κυβερνήσει, ἧς καὶ ἀπόλλυσθαι χωρὶς δύναται ὁ κυβερνήτης[b], οἱ δὲ ὀχήματος ἐπιβάσει κοινὴν πορείαν καὶ διακομιδὴν ἡνιοχούσῃ [c] προσοικειοῦσιν αὐτὴν, ὡς μᾶλλον ἁρμόζουσαν· οἱ δὲ συνεργείᾳ ἀπ᾽ ἀμφοτέρων ἰσομοιρούσῃ, ἢ συννεύσει καὶ ῥοπῇ πρὸς τὸ σῶμα, ἐπικρατείᾳ τοῦ σώματος ἀποδιδόασιν αὐτῆς τὴν ὁμοιότητα.

42

Περὶ τῆς κοινωνίας τῆς πρὸς τοὺς θεοὺς τῶν ψυχῶν γέγονέ τις [a] διαμφισβήτησις, τῶν μὲν λεγόντων ἀδύνατον μίγνυσθαι θεοὺς ταῖς κατεχομέναις ψυχαῖς ἐν τῷ σώματι, τῶν δὲ διατεινομένων μίαν εἶναι κοινὴν πολιτείαν τῶν καθαρῶν ψυχῶν πρὸς τοὺς θεοὺς, καὶ εἰ ὅτι μάλιστα ἐν τοῖς σώμασι διατρίβουσιν, οἱ δὲ οὐδὲν τούτων συγχωροῦσιν, ὡς δὲ [918] μέρος τὴν ψυχήν φασιν εἶναι ἐν ὅλῳ τῷ ζώῳ, οἱ δὲ ὡς τέχνην ἐμπεφυκέναι τοῖς ὀργάνοις, ὥσπερ εἰ ἦν ἔμψυχος οἴαξ[b], οἱ δὲ μόνοις δαίμοσιν ἢ καὶ ἥρωσιν ὑποτιθέασιν αὐτὴν εἰς κοινὴν συνουσίαν. [Καὶ] [c] ἄλλοι μὲν, οἱ βελτίονες κρι-

z καὶ ἡ] καὶ om. Heeren.

a Verba κυβερνήσει—δύναται ὁ om. A.

b Disputat de hac imagine inprimis Plotin. Enn. IV. 3. p. 387. Λέγεται δὲ οὕτως ἐν σώματι εἶναι ἡ ψυχὴ, ὡς ὁ κυβερνήτης ἐν τῇ νηΐ, πρὸς μὲν τὸ χωριστὴν δύνασθαι εἶναι τὴν ψυχὴν, καλῶς εἴρηται. Patet inde ad κυβέρνησις vel supplendum vel subintelligendum esse νηὸς, ad quod sequens ἧς referendum est. HEEREN.

c προσοικειοῦσιν] προσοικοῦσιν V. προσοιχοῦσιν A. E. P.

42.

Junguntur hæc apud Cant. et in codd. prioribus. Rectius tamen hic novi fragmenti initium poni, facile docent quæ in iis continentur, in quibus de animarum cum Deo communione, ac de modo quo eo perveniant, sermo est. HEEREN.

a διαμφισβήτησις] ἀμφισβήτησις V.

b Explicat hæc Plotin. l. c. p. 388. Ἀλλ᾽ ἄρα οὕτω φατέον, ὡς ἡ τέχνη ἐν τοῖς ὀργάνοις; οἷον ἐν τῷ οἴακι, οἱονεὶ ἔμψυχος ὁ οἴαξ ἦν, ὥστε κυβερνητικὴν εἶναι ἔνδον τὴν κινοῦσαν τεχνικῶς. HEEREN.

c ἄλλοι] Sejungere videtur A. a præcedentibus signo :· posito, et

νόμενοι κατὰ Πλάτωνα, καθάρσει καὶ ἀναγωγῇ καὶ τελειώσει τῆς ψυχῆς· ἄλλοι δὲ οἱ χείρονες τοῖς ἐναντίως τούτων ἀντιδιαστελλόμενοι.

Κατὰ δὲ τοὺς Στωϊκοὺς τῇ κοινωνίᾳ καὶ τῷ καλῷ τῷ τῆς φύσεως ἐξηρτημένῳ· κατὰ δὲ τοὺς Περιπατητικοὺς, τῇ κατὰ φύσιν τε συμμετρίᾳ, καὶ [d]τῇ ὑπὲρ [e]τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν [f]νοερᾷ ζωῇ προτιμώμενοι· [g]κατὰ δὲ Ἥριλλον ἐπι-
[920] στήμῃ· κατὰ δὲ Ἀρίστωνα ἀδιαφορίᾳ· κατὰ δὲ Δημόκριτον [h]εὐσχημοσύνῃ· κατὰ δὲ τοὺς ἄλλους μέρει τινὶ τοῦ καλοῦ· ἢ τῇ [i]ἀοχλησίᾳ καθ' [k]Ἱερώνυμον ἢ ἄλλοις τισὶ τρόποις διαγωγῆς τὸ αἱρετὸν ἔχοντες, ἀφ' ὧν οἱ κατὰ μέρος φύονται [l]βίοι ἄπειροι περὶ τὴν γένεσιν διαιρούμενοι, περὶ ὧν οὐδὲν δεῖ πολυπραγμονεῖν, ἀλλὰ εἰς τὸ ἄπειρον αὐτοὺς [m]μεθιέντας, χαίρειν ἐᾶν.

43 Περὶ θανάτου. Ἐν ταυτῷ.

Ἐπειδὰν μετὰ τὸν τῆδε βίον ἡ τελευτὴ [a]συμπίπτῃ, τί p. 116.
ποτε συμβαῖνόν ἐστι; Πότερον, ὥσπερ ἐν τῇ γενέσει προϋπῆρχεν ἢ [b]συνυφίστατο ἢ ὑστέρα πως ἐπεγίγνετο τοῖς σώμασιν ἡ ψυχὴ κατὰ τὰς διαφόρους αἱρέσεις, οὕτω καὶ

similiter mox ante ἄλλοι δὲ et κατὰ δὲ sæpius. Illud καὶ tacite inseruit Heeren.

d τῇ] τὴν A.

e τῇ ἀνθρωπίνῃ φύσει] τὴν ἀνθρωπίνην φύσιν V. A.

f νοερᾷ] νοερὰν A.

g μετὰ δὲ Ἥριλον] κατὰ δὲ Ἥριλον V. A.

h εὐσχημοσύνῃ hæc Democriti eadem est, quam vulgo εὐθυμίαν vocare solebat. Cic. l. c. V. 8. *Democriti securitas, quæ est animi quædam tranquillitas, quam appellant* εὐθυμίαν. Variis tamen nominibus eum illam insignivisse, testis est Diog. IX. 45. καλεῖ δ' αὐτὴν καὶ εὐεστὼ, καὶ πολλοῖς ἄλλοις ὀνόμασι, inter quæ adeo εὐσχημοσύνης quoque nomen fuerit. HEEREN.

i ἀνοχλησία] ἀοχλησίᾳ V. A.

k De Hieronymi sententia cf. Cic. l. c. V. 5. *Prætereo multos, in his doctum hominem et suavem, Hieronymum; quem jam cur Peripateticum appellem, nescio; summum enim bonum exposuit vacuitatem doloris.* Potius enim eum ad Stoicorum sententiam accedere, innuit Cicero. HEEREN.

l βίοι] βίον A. E.

m μεθέντας] μεθιέντας A. V.

43.

a συμπίπτει] συμπίπτῃ A.

b συνεφίστατο] συνυφίστατο V. A.

ἐν τῷ ἀποθνήσκειν προφθείρεται [c]τοῦ σώματος, ἢ συναπόλλυται αὐτῷ, ἢ καὶ διαμένει καθ' ἑαυτὴν μετὰ τὴν ἐνθένδε ἔξοδον; Τὸ μὲν οὖν πᾶν κεφάλαιον τοιοῦτον· μέρη δ' αὐτοῦ καὶ ἡ κατὰ τὰ εἴδη διαίρεσις δέχεται πολλὰς τοιαύτας ἀμφισβητήσεις, ἆρά γε πνιγμῷ τῶν ἀρτηριῶν [d]ἀποκλειο-
[922] μένων τοῦ δέχεσθαι τὸ ἔκτος πνεῦμα, ἢ ἐκλυομένου τοῦ τόνου καὶ [e]παριεμένου τοῦ θερμοῦ ἢ ἐναποσβεννυμένου πως [f]εἰς τὰ εἴσω τὰ ζῶντα πρότερον εἰσαῦθις ἀποθνήσκει. Ἀλλ' εἰ οὕτως γίγνεται ὁ θάνατος, [g]προαναιρεῖται ἢ συναναιρεῖται ἡ ψυχὴ τῷ σώματι, καθάπερ Κουρνοῦτος οἴεται. Εἰ δὲ, ὡς [h]δύναμις ὑποκειμένου, ὥσπερ δὴ ἁρμονία λύρας, ἢ τελειότης, προαφίσταται τοῦ σώματος ἐν τῷ ἀποθνήσκειν ἡ ψυχὴ, προφθείρεται μὲν οὐδαμῶς, οὐδὲ γὰρ διὰ κινήσεως πρόεισιν εἰς τὸ μὴ εἶναι, ἀλλ' ἐξαίφνης εἰς τὸ μὴ εἶναι μεθίσταται ἀχρόνως καὶ ἄνευ φθορᾶς, [i]ὥσπερ δὴ καί ἐστιν ὅτε ἐστὶν ἀθρόως, οἷον ἀστραπῆς ἐλλαμπούσης. Ἔσται δὴ οὖν τὸ μὲν ζῆν [k]τῷ ζώῳ, ἀπὸ τοῦ ἔχειν τὸ τῆς ζωῆς εἶδος· τὸ δὲ καλούμενον ἀποθνήσκειν, ἀπὸ τοῦ μὴ παρεῖναι αὐτὸ ἢ μὴ ἔχεσθαι· ἧς πολλοὶ Περιπατητικοὶ δόξης προεστή-
[924] κασιν. Εἰ δὲ [l]παρέσπαρται μὲν καὶ ἔνεστιν ἡ ψυχὴ τῷ

[c] τοῦ σώματος] τῷ σώματι V. A.

[d] ὑποκλειομένων] ἀποκλειομένων V. A.

[e] περιομένου] περιεμένου V. E. παριεμένου A.

[f] Verba εἰς τὰ εἴσω dicta sunt pro ἐν τοῖς ἐντός. HEEREN.

[g] προσαναιρεῖται] προαναιρεῖται ἢ συναναιρεῖται V. A. P.

[h] δύναμις] δυνάμεῖς A.

[i] Verba ὥσπερ δὴ καὶ ἔστι ὅτ' ἐστὶ, explicant illud quod modo præcesserat, οὐ διὰ κινήσεως. Vult scriptor, si anima sit harmonia, eam in morte subito esse desinere, ita ut nullam antea mutationem subeat, sed in ipso interitu talis adhuc sit, qualis fuerit, cum existeret. Ante oculos forte hic habuit Aristoxenum, quem sententiam, a Platone (Phæd. p. 91.) refutatam, fovisse, auctor est Cic. Qu. Tusc. I. 10. HEEREN. Mox nescio an melius ἐκλαμπούσης.

[k] τῷ ζώῳ, *vita competit animali*, rescripsi pro τὰ ζῶα, quod cum Cant. nullo sensu tenent codd. HEEREN.

[l] προσπᾶται] παρέσπαρται V. E. προέσπαρται A.

ib. Respicit hic Iamblichus ad atomorum defensores ac maxime

σώματι, καθάπερ ἐν ἀσκῷ πνεῦμα, [m]περιεχομένη, ἢ [n]συμμιγνυμένη πρὸς αὐτὸ, καὶ ἐγκινουμένη ὥσπερ τὰ ἐν τῷ ἀέρι [o]ξύσματα διὰ τῶν θυρίδων φαινόμενα, δῆλόν που τοῦτο ὅτι ἔξεισιν μὲν ἀπὸ τοῦ [p]σώματος, ἐν δὲ τῷ ἐκβαίνειν διαφορεῖται καὶ διασκεδάννυται, ὥσπερ Δημόκριτος καὶ Ἐπίκουρος ἀποφαίνονται[q].

Τοὺς δὲ περὶ Πλωτῖνον τῆς στάσεως [r]προϊσταμένους ἐκείνης τῆς χωριζούσης αὐτὰς ἀπὸ τοῦ λόγου, ἢ καὶ [s]ἀφιείσης εἰς τὴν γένεσιν, ἢ καὶ [t]ἀφαιρούσης ἀπὸ τῆς διανοίας, ἀφ᾽ ἧς πάλιν διττῆς δόξης γίγνεται διάκρισις. Ἤτοι γὰρ λύεται ἑκάστη δύναμις ἄλογος εἰς τὴν ὅλην ζωὴν τοῦ παντὸς ἀφ᾽ ἧς ἀπεμερίσθη, [u]ἢ καὶ ὅτι μάλιστα μένει [x]ἀμετάβλητος, ὥσπερ ἡγεῖται Πορφύριος· ἢ καὶ χωρισθεῖσα ἀπὸ τῆς διανοίας ἡ ὅλη ἄλογος ζωὴ [y]μένει, [z]καὶ αὐτὴ διασωζομένη ἐν τῷ κόσμῳ, ὥσπερ [a]οἱ παλαιότατοι τῶν ἱερέων ἀπο-
[926] φαίνονται. Κατὰ τὰ αὐτὰ δὴ οὖν καὶ περὶ τῶν μέσων οὐσιῶν ψυχῆς τε καὶ σώματος πολὺ διαφερόντως διατάτ-

Epicurum, qui animam per corpus *disseminatam* esse contendit. Cf. Diog. X. 63. ὅτι ἡ ψυχὴ σῶμά ἐστι λεπτομερὲς, παρ᾽ ὅλον τὸ σῶμα **παρεσπαρμένον**· et cf. ibid. s. 66. 67. ubi quoque ejus de interitu animæ sententia exponitur. Cf. Lucret. III. 418. etc. HEEREN.

m περιεχόμενον] –χομένη V. A. E.

n συμπνιγομένη] συμμιγνυμένη V. A.

o ξύμπαντα] ξύσματα V. A. E. ξυάσματα P.

p Post σώματος add. ἐν δὲ τῷ ἐκβαίνειν διαφορεῖται καὶ διασκεδάννυται, ὥσπερ Δημόκριτος καὶ Ἐπίκουρος V. A. E.

q Post ἀποφαίνονται lacuna esse videtur; accusativi enim qui sequuntur, nihil habent a quo pendeant; lineolis quoque additis indicat eam cod. V. Quid tamen supplendum sit, incertum est. Respicere videtur ad ea, quæ Plotin. Ennead. p. 889. tradit; ubi de animarum ratione destitutarum et rationalium, quas corpori magis adesse quam inesse putat, varietate disserit. HEEREN.

r προϊσταμένους] –νης V.

s ἀμφιείσης] ἀφιείσης A.

t ἀφαιρούσης] –ρούσας V. A.

u ἢ καὶ] ᾗ καὶ edere voluit Heerenius, qui statim ὅτι delet.

x ἀμετάβλητος] ἀδιάβλητος A. E.

y μένει] μένη A.

z Verba καὶ αὐτὴ διασωζομένη desunt V. διασώζεται ed. Heeren.

a καὶ ante οἱ deest V. A. E.

τονται. Οἱ μὲν γὰρ εὐθὺς [c]αὐτὴν τὴν ψυχὴν αὐτῷ τῷ σώματι τῷ ὀργανικῷ συνοικίζουσιν, ὥσπερ οἱ πλεῖστοι τῶν Πλατωνικῶν· οἱ δὲ μεταξὺ τῆς τε ἀσωμάτου ψυχῆς [d]καὶ τῆς ἀγγελιώδους αἰθέρια καὶ οὐράνια [e]καὶ πνευματικὰ [f]περιβλήματα, [g]περιαμπέχοντα τὴν νοερὰν ζωὴν, προβεβλῆσθαι μὲν αὐτῆς φρουρᾶς [h]ἕνεκεν [λέγουσι], [i]ὑπηρετεῖν δὲ αὐτῇ καθάπερ ὀχήματα, συμμέτρως δ' αὖ καὶ πρὸς τὸ στερεὸν σῶμα συμβιβάζειν [k]μέσοις τισὶ κοινοῖς συνδέσμοις αὐτὴν συνάπτοντα.

44 Ἑρμοῦ τρισμεγίστου ἐκ τῆς ἱερᾶς βίβλου τῆς ἐπικαλουμένης Κόρης κόσμου [Patrit. p. 27 b.]

Ταῦτα [a]εἰποῦσα Ἶσις ἐγχεῖ ποτὸν Ὥρῳ γλυκὺ τὸ πρῶ-
[928] τον ἀμβροσίας, ὃ αἱ ψυχαὶ λαμβάνειν ἔθος [b]ἔχουσιν ἀπὸ θεῶν, καὶ οὕτως τοῦ ἱερωτάτου λόγου [c]ἄρχεται. Ἐπικειμένου, τέκνον Ὧρε, τῇ τῶν ὑποκειμένων φύσει πάσῃ τοῦ [d]πολυστεφοῦς οὐρανοῦ, καὶ κατ' οὐδένα τόπον στερουμένου τινὸς ὧν νῦν ὁ σύμπας ἔχει κόσμος, ἀνάγκη πᾶσα [e]ὑπὸ τῶν ὑπερκειμένων συγκεκοσμῆσθαι καὶ πεπληρῶσθαι φύσιν πᾶσαν τὴν ὑποκειμένην· οὐ γὰρ δήπου [f]δυνατὰ κοσμῆσαι τὰ κάτω τὸν ὕπερθεν διάκοσμον. Ἀνάγκη τοίνυν τοῖς [g]κρείτ-

[c] αὐτὴν om. Heeren.
[d] καὶ τοῦ] καὶ τῆς V. A.
[e] Ante πνευματ. add. καὶ V. A.
[f] καὶ ante περιβλ. deest V. A.
[g] περιαπέχοντα] περιαμπέχοντα V. καὶ πνευματικὰ περιβλήματα περιαμπέχοντα A.
[h] Post ἕνεκεν inserui λέγουσι, quod sensus flagitat. HEEREN.
[i] ὑπηρετεῖν δὲ αὐτὴν καθάπερ ὀχήματι] ὑπηρετεῖν δὲ αὐτῇ καθάπερ ὀχήματα V. A.
[k] μέσως τισὶ κοινοῖς] μέσοις τισὶ κοινοῖς V. A.

44.

[a] Post εἰποῦσα add. ἴσις V. A. E. Mox γλυκὺ tacite Heeren. γλυκὺν A. Cant.
[b] ἔχουσιν ἀπὸ θεῶν] Sic Heeren. cum Patritio. ἀπὸ om. A. Cant. Pro ἔχουσιν in A. ἔχουσαι.
[c] ἄρχεται] ἄρχεται Ἶσις A. Cant.
[d] πολυστέφου] πολυστέρους A. E.
ib. πολυστεφοῦς, *cæli stellis ornati,* quarum ordinibus velut coronis cinctum est. Male codd. V. A. E. πολυστέρους. HEEREN. πολυαστέρου habet Lobeck. Aglaoph. p. 462. n. o.
[e] ὑπὸ] ὑπὲρ A.
[f] δυνατὰ] διὰ τὰ A.
[g] κρείττουσιν] κρείττοσι V. A.

τοσι μυστηρίοις εἴκειν τὰ ἐλάσσονα. Κρείσσων [h]δὲ τῶν ὑποκειμένων ἢ τῶν μετεώρων ἐστὶ διάταξις, καὶ τῷ παντὶ ἀσφαλής τε καὶ [i]θνητῷ οὐχ ὑποπίπτουσα διανοίᾳ. Ἔνθεν p. 117. ἐστέναξε τὰ κάτω, [k]φόβον ἔχοντα, τὴν περικαλλῆ καὶ εἰς ἀεὶ διαμονὴν τῶν ἐπικειμένων. Ἦν γὰρ ἄξιον θεωρίας ὁμοῦ καὶ ἀγωνίας ὁρᾶν οὐρανοῦ κάλλος, θεῷ [l]καταφανταζόμενον τῷ ἔτι ἀγνώστῳ, πλουσίαν τε νυκτὸς σεμνότητα, ἐλάττονι μὲν ἡλίου ὀξεῖ δὲ [m]προφορουμένην φωτὶ, τῶν τε ἄλλων κατὰ [930] μέρος κινουμένων ἐν οὐρανῷ μυστηρίων τακταῖς χρόνων κινήσεσι καὶ περιόδοις διά τινων κρυπτῶν [n]ἀπορροιῶν τὰ κάτω [o]συγκοσμούντων καὶ συναυξανόντων. Καὶ οὗτος φόβος μὲν ἐπάλληλος, ζητήσεις τε [p]ἄληκτοι, καὶ ἕως ὁ τῶν συμπάντων οὐκ ἐβούλετο τεχνίτης ἀγνωσία κατεῖχε τὰ σύμπαντα· ὅτε δὲ ἔκρινεν αὐτὸν ὅστις [q]ἐστὶ δηλῶσαι, ἔρωτας [r]ἐνεθουσίασε θεοῖς, καὶ [s]αὐγὴν [t]ἣν εἶχεν ἐν στέρνοις πλείονα ταῖς [u]τούτων ἐχαρίσατο διανοίαις· ἵνα πρῶτον μὲν ζητεῖν θελήσωσιν, εἶτα ἐπιθυμήσωσιν εὑρεῖν, εἶτα καὶ κατορθῶσαι δυνηθῶσι. Τοῦτο δ' ἄν, ὦ τέκνον, ἀξιοθαύμαστον, Ὧρε, οὐκ ἂν ἐπὶ θνητῆς σπορᾶς ἐγεγόνει, οὐδὲ γὰρ ἦν οὐδέπω, ψυχῆς δὲ, τὴν συμπάθειαν ἐχούσης [x]τοῖς οὐρανοῦ μυστηρίοις. Τοῦτο δ' ἦν [y]ὁ πάντα νοῶν Ἑρμῆς· ὃς καὶ εἶδε τὰ σύμπαντα, καὶ ἰδὼν κατενόησε, καὶ κατανοήσας ἴσχυσε [z]δη-

[h] δὲ] δὴ A.
[i] θνητῶν] θνητῷ A.
[k] φόβῳ] φόβον V. A.
[l] καταφανταζούμενον] –ζόμενον V. A.
[m] προφορουμένην] προσφορ. A.
[n] ἀποριῶν] ἀπορροιῶν V. A.
[o] κοσμούντων] συγκοσμούντων V. A. E.
[p] ἄληκτοι] ἄλεκτοι V. A.
[q] καὶ δηλῶσαι] ἐστὶ δηλ. V. A. E.
[r] ἐνεθουσία] ἐνεθουσίασε V. ἀνεθουσ. A.
[s] αὐγὴν] αὐτὴν A. Cant. qui αὐγὴν em. in marg.
[t] ἢ] ἣν A.
[u] τούτων] τούτῳ A. E.
[x] τοῖς] τῆς A.
[y] ὁ πάντα νοῶν, sic rescripsi pro ὁ πάντα νοῦς quod cum Cant. tenent codd. Erunt forte qui malint, ὁ τοῦ παντὸς νοῦς, quod tamen, quoad sensum, ad idem rediret. HEEREN. πάντων νοῦς Patrit. *universi mente* Cant.
[z] δηλῶσαι add. τε V. A. E.

λῶσαί τε καὶ δεῖξαι. Καὶ γὰρ ἃ ἐνόησεν, ἐχάραξε· καὶ χαράξας ἔκρυψε τὰ πλεῖστα· σιγήσας ἀσφαλῶς [a]ἢ λαλήσας, ἵνα ζητῇ ταῦτα πᾶς αἰὼν ὁ μεταγενέστερος κόσμου· καὶ οὕτως τοὺς συγγενεῖς θεοὺς δορυφορεῖν [[b]κε-
[932] λεύσας] ἀνέβαινεν εἰς ἄστρα. Ἀλλ' ἦν αὐτῷ διάδοχος ὁ Τὰτ, υἱὸς ὁμοῦ καὶ παραλήπτωρ τῶν μαθημάτων [c]τούτων. Οὐκ εἰς μακρὰν δὲ καὶ [d]Ἀσκληπιὸς ὁ Ἰμούθης, [e]Πανὸς καὶ Ἡφαιστοβούλης, ἄλλοι τε, ὅσοι τῆς οὐρανίου θεωρίας πιστὴν ἀκρίβειαν ἔμελλον βουλομένης τῆς πάντων βασιλίδος ἱστορῆσαι προνοίας. Ἑρμῆς μὲν οὖν ἀπελογεῖτο τῷ περιέχοντι, ὡς οὐδὲ τῷ παιδὶ παρέδωκεν ὁλοτελῆ θεωρίαν, διὰ [f]τὸ ἔτι τῆς ἡλικίας [g]νεοειδές· ἐμοὶ δὲ τῆς ἀνατολῆς γενομένης, τοῖς πάντα βλέπουσι ὀφθαλμοῖς τὰ τῆς ἀνατολῆς θεωρήσαντι ἀειδῆ, καὶ ἐπισκοποῦντι, βραδέως μὲν, ἀλλ' οὖν ἦλθεν ἡ ἀκριβὴς διάγνωσις πλησίον τῶν Ὀσίριδος κρυφίων ἀποθέσθαι τὰ ἱερὰ τῶν κοσμικῶν στοιχείων σύμβολα. [h]Ἐπικατευξάμενος δὲ, καὶ τοὺς λόγους [i]τούσδε εἰπὼν, εἰς οὐρανὸν ἀπῆλθεν. Ἀλλ' οὐ καθῆκον ἀτελῆ τὴν ἐπαγγελίαν, ὦ τέκνον, ταύτην μὲν καταλεῖψαι, εἰπεῖν δὲ ὅσα τὰς βί-
[934] βλους κατατιθέμενος [k]ἐξεῖπεν Ἑρμῆς. Ἐξεῖπε γὰρ οὕτως· [l]Ὦ ἱεραὶ βίβλοι τῶν ἀφθάρτων αἳ [m]τετεύχατε τῶν ἐμοῦ

[a] καὶ λαλήσας] ἢ λαλήσας V. A. E.

[b] [κελεύσας] quod vel ipsum, vel simile verbum excidit, uncis inclusum addidi. HEEREN.

[c] τούτων om. A.

[d] ὁ ante Ἀσκλ. deest V. A.

[e] Πανὸς καὶ Ἡφαιστοβούλης] Sic Heeren. cum Patritio. Vid. Jablonski Panth. Ægypt. p. 193—196. T. III. Voc. Ægypt. p. 94. σπανὸς καὶ Ἡφαίστου βουλαῖς A. Cant.

[f] τὸ ἐπὶ] τὸ ἔτι V. A. Mox νεοειδὲς Patrit. et infra θεωρῆσαι τὰ ἀειδῆ.

[g] θεοειδές· ἐγὼ δὲ τ. ἀ. γενόμενος τ. π. ὀ. τ. τ. ἀ. θεωρῆσαί τι ἀεὶ δεῖ καὶ ἐπισκοτοῦντι] νεοειδές· ἐμοὶ—γενομένης—θεωρήσαντι ἀειδῆ καὶ ἐπισκοποῦντι ed. Heeren. ἀνατολῆς—τὰ τῆς om. A. Mox ἀειδεῖ A.

[h] Male habet Cant. et cum eo codd. ἐπικατευξάμενον et εἰπόντα. HEEREN. Qui nescio quare dederit τούτους pro τούσδε. Patritius ἐπικατευξάμενος et εἰπών.

[i] τούσδε εἰπόντα] τούσδε εἰπόντας V. A.

[k] ἐξεῖπεν] ἐξειπεῖν V. A. E.

[l] Nullo sensu edidit Cant. Ὦ

χειρῶν τῶν τῆς ἀφθαρσίας φαρμάκων, [χορείας ἐπικρατῷ] ἀσαπεῖς διὰ παντὸς αἰῶνος καὶ ἄφθαρτοι διαμείνατε χρόνῳ, ἀθεώρητοί τε καὶ [n] ἀνευρετοὶ γιγνόμεναι παντὶ τῷ τὰ τῆς γῆς ταύτης παροδεύειν μέλλοντι [o] πεδία, [p] ἄχρις οὗ γέρων οὐρανὸς συστήματα [q] ὑμῶν ἄξια τεκνώσηται, ἃς ψυχὰς ὁ δημιουργὸς προσηγόρευσε. Τοσαῦτα εἰπὼν [r] τὰς βίβλους, καὶ τοῖς ἑαυτοῦ κατευξάμενος ἔργοις, ἰδίαις [s] τεμενίζεται ζώναις, ἱκανὸς δὲ ὁ μέσος [t] ἥρκει χρόνος, καὶ ἐκέκρυπτο. Καὶ ἡ Φύσις, ὦ τέκνον, ἐτύγχανε στεῖρα, ἕως [u] αὐτοὶ οἱ ἤδη τὸν οὐρανὸν περιπολεῖν κελευσθέντες, [x] τῷ πάντων θεῷ βασιλεῖ προσελθόντες, τὴν τῶν ὄντων ἡσυχίαν ἀπήγγειλαν, καὶ ὅτι δέον ἐστὶ συγκοσμηθῆναι τὰ σύμπαντα, καὶ [y] τοῦτο ὅτι οὐχ ἑτέρου τινός ἐστι ἔργον ἢ αὐτοῦ· καὶ δεόμεθά σου, ἔλεγον, τὰ νῦν ὄντα, καὶ ὧν ὕστερον ἔχει χρείαν διασκέψαι. Ταῦτα εἰπόντων ἐμειδίασεν ὁ θεὸς, καὶ εἶπε Φύσιν εἶναι, καὶ θῆλυ p. 118.
[z] πάγκαλον χρῆμα ἐκ τῆς φωνῆς αὐτοῦ προῆλθεν, [a] ὃ καὶ
[936] θεωρήσαντες οἱ θεοὶ κατεπλάγησαν. [b] Καὶ ταύτην φύσεως

ἱεραὶ βίβλοι τῶν ἀφθάρτων αἱ τετεύχατε μου χείρονας [τῷ add. A.] τῆς ἀφθαρσίας φαρμάκω χορείας [φαρμακωχωρείας A.] ἐπικρατῷ, ἀσαπεῖς παντὸς αἰῶνος καὶ ἄφθαρτοι διαμείνατε χρόνους. Reliqua, etsi in codd. nihil præsidii est, facile restituuntur; sed hæreo in χορείας ἐπικρατῷ, quod quo pertineat, non assequor. HEEREN.

m τετεύχατε] τετεύχαται V.

n ἀνεεύρετοι] ἀνεύρετοι V. P. ἀνεύρητοι A. Mox γῆς tacite add. Heeren.

o πεδία] πε^(αι)δία A. παιδίας Patrit. tum ὁ γέρων Heeren. Mox τεκνώσεται A.

p ἀχρὶς οὖν] ἄχρις οὗ V. A.

q ἡμῶν] ὑμνῶν V. ὑμῶν A.

r τοὺς βίβλους καὶ τοῖς ἑαυτῷ κατεξάμενος ἔργοις ἰδίαις τε μενίζεται ζώναις] τὰς βίβλους καὶ τοῖς ἑαυτοῦ κατευξάμενος ἔργοις, ἰδίαις τεμενίζεται ζώναις V. A.

s τελαμωνίζει, i. e. *fasciis involvit*, rescripsi pro τεμενίζεται, ac distinctione mutata, ut sensus constaret, ante ἐκέκρυπτο inserui καί. HEEREN.

t ἥρκει] Sic Heeren. ἤργει A. Cant.

u αὐτοὶ οἱ ἤδη etc.] αὐτὴ ἡ Ἥση περιπολεῖν τ. οὐρ. κελευσθέντες etc. V. αὐτὴ ὑΐ ἥση π. A.

x τῷ] τῶν A.

y τοῦτο οὐχ] τοῦτο ὅτι οὐχ V. A.

z πόμαλλον] πάγκαλον A. E.

a ὅ] ᾧ V.

b Καὶ φύσεως] καὶ ταύτην φύσεως V. A. καὶ φύσιν πόματι Patrit.

πόματι ἐτίμησεν ὁ θεὸς ὁ προπάτωρ, καὶ [c] αὐτῇ [d] προσέταξεν εἶναι γεννητικὴ, καὶ ταῦτα ἔτι εἰς τὸ περιέχον [e] ἀτενίσας, ἐφώνησεν· Ἔστω πεπληρωμένος [f] ὁ οὐρανὸς ἅπασιν, ἀήρ τε καὶ αἰθήρ. [g] Εἶπεν ὁ θεὸς, καὶ ἦν. Ἡ δὲ Φύσις ἑαυτῇ λαλήσασα, ἔγνω ὡς μὴ δέον αὐτὴν ἐστὶ παρακοῦσαι τῆς τοῦ πατρὸς ἐντολῆς, καὶ καλὴν Πόνῳ [h] συνελθοῦσα θυγατέρα ἐποίησεν, ἣν Εὕρεσιν ἐκάλεσε. [i] Τῇ δὲ ὁ θεὸς ἐχαρίσατο εἶναι, καὶ χαρισάμενος διέκρινε [k] τὰ ἤδη γεγονότα, καὶ ἐπλήρωσεν αὐτὰ μυστηρίων, καὶ τῇ [l] Εὑρέσει τὸ κατὰ [m] τούτων ἐχαρίσατο ἡγεμονικόν. Αὐτὸς δὲ [n] οὐκέτι βουλόμενος ἀργὸν τὸν ὑπεράνω κόσμον εἶναι, ἀλλὰ πνευμάτων πληρῶσαι δοκιμάσας τοῦτον, ὡς μὴ τὰ [o] κατὰ μέρος ἀκίνητα καὶ ἀργὰ μένῃ, οὕτως [p] εἰς ταῦτα ἤρξατο, τεχνιτείαις ὡς πρὸς τὴν τοῦ ἰδίου ἔργου γένεσιν χρησάμενος ἱεραῖς. Πνεῦμα γὰρ ὅσον ἀρκετὸν ἀπὸ τοῦ ἰδίου λαβὼν, καὶ νοερῶς [q] τοῦτο πυρὶ μίξας, [r] ἀγνώστως τισὶν ἑτέραις ὕλαις ἐκέρασε· καὶ ταῦτα
[938] ἑκάτερον ἑκατέρῳ μετά τινων ἐπιφωνήσεων κρυπτῶν ἑνώσας, τὸ πᾶν οὕτως εὖ μάλα διεκίνησε κρᾶμα, ἕως ἐπεγέλασέ τις ὕλη [s] τῷ μίγματι λεπτοτέρα [t] τε καὶ καθαρωτέρα μᾶλλον

c ταύτης] ταύτην Patrit. αὐτῇ Heeren. qui mox γεννητικὴ ubi γεννητικὴν A. Cant.

d προέταξεν] προσέταξεν V. A. P.

e ἀτενήσας ἐφώνησεν] ἀτενίσας φώνησεν V. A.

f οὐρανὸς] ὁ οὐρανὸς V. A.

g Ex Mosaico illo Gen. I. 3. *Dixit deus, fiat lux et facta est,* hæc adumbrata esse, merito suspicaberis. Allegoria autem quæ statim sequitur, cum Natura cum Labore Inventionem procreasse dicitur, Platonicæ fabulæ de ortu Amoris in Convivio Op. I. p. 195. etc. imitatio esse videtur. HEEREN.

h συνελθοῦσα] συνελθοῦσαν V. A. E.

i Τί δὲ] τῇ δὲ V. A. E. P.

k τὰ εἴδη] τὰ ἤδη V. Cant. marg. τὰ εἴδη γ. διέκρινε A.

l Εὑρέσει] εὑρέσει τούτων A. Cant.

m τοῦτο] τούτων V. A.

n οὐκέτι] οὐ Heeren.

o κατὰ] κακὰ A.

p In εἰς ταῦτα corruptela latet. Legendum forte εἰσαῦθις, *iterum* cœpit res producere. In proximis ὡς rescripsi pro οὔσαις quod ex terminatione præcedentis verbi natum videtur. HEEREN.

q τούτῳ πῦρ] τοῦτο πυρὶ V. A. E.

r ἄγνωστος] ἀγνώστως V. A. E.

s τῷ μίγματι] τὸ μίγμ. V.

t τε καὶ] τε om. A.

καὶ διαφανεστέρα ἢ ἐξ ὧν ἐγένετο, διειδὴς δὲ ἦν αὕτη, ἣν δὴ καὶ μόνος ὁ τεχνίτης ἑώρα. Ἐπειδὴ δὲ [u] οὔτε ὡς ἐκ πυρὸς καιομένη διετήκετο, οὔτε μὴν ὡς ἐκ πνεύματος τελεσιουργηθεῖσα ἔψυχεν, ἀλλά τινα [x] ἰδιογενῆ καὶ οἰκείαν εἶχε τὴν τοῦ κράματος σύστασιν, ἰδιότυπόν τε καὶ ἰδιοσύγκριτον, (ἣν δὴ καὶ ἀπὸ τοῦ εὐφημοτέρου ὀνόματος, καὶ τῆς καθ' ὁμοιότητα ἐνεργείας, ψύχωσιν ὁ θεὸς ἐκάλεσε τὴν σύστασιν,) ἐξ οὗ δὴ ἐπιπάγου μυριάδας [y] ψυχῶν ἱκανὰς ἐδημιούργησε, τὸ παρ' [z] αὐτοῦ τοῦ κράματος ἐπανθοῦν πρὸς ὃ θέλει πλάσσων εὐτάκτως τε καὶ συμμέτρως, μετ' ἐμπειρίας καὶ λόγου τοῦ καθήκοντος, ὡς μηδέ τι διαφέρειν ἑαυτὰς ἑαυτῶν ἦν ἀναγκαῖον, ἐπειδήπερ τὸ ἐκ τῆς [a] κινήσεως τοῦ θεοῦ ἐξατμιζόμενον ἄνθος οὐκ ἦν ἑαυτῷ ὅμοιον, ἀλλὰ μεῖζον καὶ πληρέστερον ἦν τοῦ δευτέρου τὸ πρῶτον, καὶ τῷ παντὶ καθαρώτερον, τὸ δεύτερον δὲ ἱκανῶς μὲν ἦν τοῦ πρώτου [b] δεύτερον, πολλῷ δὲ τοῦ τρίτου μεῖζον. Καὶ οὕτως ἄχρι βαθμῶν ἑξήκοντα ὁ πᾶς ἀπήρτιστο ἀριθμὸς, πλὴν ὅτι γε πάσας ἀϊδίους
[940] εἶναι νομοτεθήσας ἔταξεν, ὡς ἂν ἐκ μιᾶς [c] οὐσίας, ἧς μόνος [d] αὐτὸς εἴδη τελειῶ. Ταῖς δὲ καὶ τμήματα καὶ [e] ταμιεῖα ἐν μεταρσίῳ διέταξε τῆς ἄνω φύσεως [[f] οὐρανοῦ], ὅπως τόν

[u] οὔτε ἐκ] οὔτε ὡς ἐκ V. A. P.

[x] διογενῆ] ἰδιογενῆ V. A. Mox ἰδιοσύγκρατον Patrit.

[y] ψυχῶν] Figmenta hæc de animarum creatione, variisque pro temperationis varietate gradibus, adumbrata sunt ex iis, quæ Plato in Timæo Op. III. p. 41. disputat. HEEREN.

[z] αὐτοῦ] αὐτοῦ τοῦ V. A.

[a] κινήσεως] Melius forte leges κράσεως. HEEREN.

[b] Ante δεύτερον et μεῖζον male inseritur τὸ ap. Cant. [et A.] quod delevi. Imitatur illud Platonis l. c. Ταῦτ' εἶπε (ὁ θεὸς) καὶ πάλιν ἐπὶ τὸν πρότερον κρατῆρα, ἐν ᾧ τὴν τοῦ παντὸς ψυχὴν κεραννὺς ἔμισγε, τὰ τῶν πρόσθεν ὑπόλοιπα κατεχεῖτο μίσγων, τρόπον μέν τινα τὸν αὐτὸν, ἀκήρατα δ' οὐκέτι κατὰ ταυτὰ ὡσαύτως, ἀλλὰ δεύτερα καὶ τρίτα. HEEREN.

[c] οὐσίας om. A.

[d] αὐτὸς εἴδη] αὐτὸς ἤδη V. A.

[e] ταμεῖα] τμεῖα V. A.

[f] [οὐρανοῦ] ex glossemate ortum videtur, nam τὸ μετάρσιον τῆς ἄνω φύσεως ipsum est cœlum. Cæterum hæc quoque ex Platone l. c. deducta sunt, qui animas per stellas disseminatas esse fingit. HEEREN.

τε κύλινδρον [g]περιστροβῶσι τάξει τινὶ καὶ οἰκονομίᾳ καθηκούσῃ, καὶ τὸν πατέρα τέρπωσιν. Οὕτως δὴ καὶ ἐν τῇ περικαλλεῖ τοῦ αἰθέρος στάσει καὶ τὰς τῶν ἤδη ὄντων μεταπεμψάμενος φύσεις, [h]ὦ, φησὶ, πνεύματος ἐμοῦ καὶ μερίμνης ἐμῆς, ψυχαὶ, καλὰ τέκνα, ἃ ταῖς ἐμαυτοῦ μαιωσάμενος χερσὶν [i]ἤδη τῷ 'μῷ καθιερῶ κόσμῳ, [k]λόγων ἐμῶν ὡς νόμων τούτων ἐπακούσατε, καὶ τόπου μηδενὸς ἄλλου θίγητε, πλὴν τοῦ διαταγέντος ὑμῖν ὑπὸ τῆς ἐμῆς γνώμης. [l]Εὐσταθησάσαις μὲν οὖν ὑμῖν οὐρανός τε [n]μένει πάλιν ὁμοίως καὶ ὁ διαταγεὶς ἀστερισμὸς, θρόνοι τε ἀρετῆς πεπληρωμένοι· εἰ δέ τι νεώτερον παρὰ τἀμὰ [o]πράξετε βουλεύματα, ἱερὸν ὑμῖν ὀμνύω πνεῦμα, καὶ κρᾶμα τοῦτ' ἀφ' οὗπερ ὑμᾶς ἐγέννησα, ψυχοποιούς τε ταύτας μου τὰς χεῖρας, [p]ὡς οὐκ εἰς μακρὰν [q]δεσμὸν καὶ κολάσεις ὑμῖν τεχνιτεύσω. Τοσαῦτα εἰπὼν ὁ θεὸς, ὁ κἀμοῦ κύριος, τὰ λοιπὰ τῶν στοιχείων συγγενῆ μίξας, ὕδωρ καὶ γῆν, καί τινας ὁμοίως κρυπτοὺς ἐπειπὼν λόγους, δυνατοὺς μὲν, οὐ τοῖς πρώτοις δ' ὁμοίους, [r]εὖ τε
[942^{2}] κινήσας, καὶ [s]ζωοποιὸν ἐνθουσιάσας τῷ κράματι, ἐπιπλέοντα ὁμοίως [t]ἐπίπαγον, εὐβαφῆ [u]τε καὶ εὐπαγῆ γενόμενον, ἔλαβε, καὶ ἐκ τούτου τὰ ἀνθρωποειδῆ τῶν ζώων διέπλασε. p. 119.
Τὸ δὲ τοῦ μίγματος λείψανον ταῖς ἤδη [x]προκοψάσαις

g περιστρυβῶσι] περιστροβῶσι V. A.

h ὦ, φησι] Sic P. ὡς φῆ Cant. ὡς φῆς A. Imitatur demiurgi apud Plat. ad animas exhortationem l. c. p. 41. HEEREN. οὕτως φησὶ Patrit.

i καὶ ante ἤδη deest V. A.

k λόγων ἐμῶν] λόγον ἐμὸν V.

l Εὐσταθησάσαι] –σάσαις V. A. E.

n Ante μένει Cant. male inserit καὶ, quod delent codd. V. A. HEEREN. habet A. diserte.

o πράξαιτε, ἱερὸν etc.] πράξητε βουλεύματα, ἱερὸν etc. V. A. Dedi πράξετε cum Patrit.

p ὡς om. A.

q δεσμοὺς] δεσμὸν V. A.

r εὖ τε κινήσας] Sic Heeren. εὐτεκεῖν ἴσας A. Cant. αὐτὰ κινήσας Cant. marg.

s ζωοποιὸν] –εῖν A.

t ἐπίπαγον] ἐπιπαίον V. ἐπὶ πάγον A.

u τε καὶ] τε om. A.

x Post προκοψάσαις add. ψυχαῖς V. A. E. δὲ post ψυχαῖς om. A.

ψυχαῖς ἔδωκε, ψυχαῖς ταύταις ταῖς εἰς χωρία θεῶν καὶ τοὺς ἐγγὺς ἄστρων τόπους καὶ ἱεροὺς δαίμονας [y] μετακεκλημέναις· πλάσσετε, λέγων, ὦ τέκνα, τῆς ἐμῆς φύσεως γεννήματα, δέχεσθε τῆς ἐμῆς τέχνης τὰ λείψανα, καὶ ἑκάστη τῇ ἑαυτῆς φύσει πλασσέτω τι παραπλήσιον. Παραθήσομαι δέ τι καὶ ταῦθ' ὑμῖν παραδείγματα, (καὶ λαβὼν εὖ καὶ καλῶς τὸν ζωδιακὸν, συμφώνως [z] ταῖς ψυχικαῖς κινήσεσι, διέταξε κόσμον, πρὸς τοῖς ἀνθρωποειδέσι τῶν ζωδιακῶν τὰ ἑξῆς [a] ἀπαρτίσας οἷον ζωδίοις,) καὶ τὰς πανούργους ἐχαρισάμην δυνάμεις καὶ πάντεχνον πνεῦμα γεννητικὸν τῶν εἰς ἀεὶ μελλόντων ἔσεσθαι καθολικῶς πάντων. Καὶ ἀπέστη ὑποσχόμενος τοῖς ὁρατοῖς ἔργοις αὐτῶν τὸ ὁρατὸν πνεῦμα ἐπιζεῦξαι, οὐσίαν τε [b] ὁμοιογονίας ἑκάστῳ, ὅπως [c] αὐτῷ ἕτερα γεννᾷ ὅμοια, [d] αὐτά τε οὐκ ἔτι ἀνάγκην ἔχουσιν ἄλλο τι ποιεῖν παρ' ἃ ἔφθησαν ἐργάσασθαι.

Τί οὖν, ὦ τεκοῦσα, ἐποίησαν αἱ ψυχαί;

Καὶ εἶπεν Ἶσις, τὸ κεκερασμένον, ὦ τέκνον Ὧρε, τῆς ὕλης
[944] λαβόμεναι, κατενόουν πρῶτον, καὶ τὸ τοῦ πατρὸς προσεκύνουν κρᾶμα, καὶ [e] ὁπόθεν ἦν συμπεπλεγμένον ἐπεζήτουν. Τὸ δὲ ἦν αὐταῖς οὐκ εὔπορον ἐπιγνῶναι. Ἔνθεν δὴ καὶ ὅτι ἐπεζήτησαν ἐφοβοῦντο [f] μὴ τῷ τοῦ πατρὸς ὑποπέσωσι χόλῳ, καὶ ἐπὶ τὸ πράττειν τὰ προσταχθέντα ἐτράπησαν. Ἔνθεν ἐκ μὲν τῆς [g] ἀνωτέρω ὕλης, τῇ ὑπερβολῇ κοῦφον ἐχούσης τὸν [h] ἐπίπαγον, τὸ τῶν ὀρνέων γένος [i] ἐμόρφουν· ἐν τούτῳ δ' ἡμιπαγοῦς ἤδη τοῦ κράματος γενομένου, καὶ ἤδη τὴν στερεὰν

[y] μετακεκλημέναις pro μετακεκλημένας dedit Heeren. cum Patrit.

[z] ψυχικαῖς] ταῖς ψυχαῖς V. A.

[a] ἀπαρτήσας] ἀπαρτίσας V. A. E. P.

[b] ὁμοιογενίας ὅπως] ὁμοιογονίας ἑκάστω, ὅπως V. A.

[c] αὐτῷ] Sic Heeren. αὐτῷ αὐτοῖς A. Cant.

[d] αὐτά τε οἰκέτι ἀνάγκῃ] αὐτάγε οὐκέτι ἀνάγκην V. A. Mox παρ' om. A.

[e] πόθεν ἢ] ὁπόθεν ἦν V. A.

[f] μὴ τοῦ] μὴ τῷ τοῦ V. A.

[g] ἀνωτέραν] ἀνωτέρω V. A. P.

[h] ἐπίπαγον] ἐπὶ πάγον A. qui supra ἐχούσῃ.

[i] εὐμορφοῦν] ἐμόρφουν A.

πῆξιν λαβόντος, τὸ τῶν τετραπόδων [j]γένος ἔπλασσον· τὸ [k]δὲ ἧττον κοῦφον καὶ ἑτέρας [l]ὑγρᾶς οὐσίας δεόμενον εἰς διάνηξιν, τὸ τῶν ἰχθύων· ψυχροῦ δὲ τοῦ λοιποῦ καὶ ἤδη κατωφεροῦς ὑπάρχοντος, [m]τὴν τῶν ἑρπετῶν αἱ ψυχαὶ φύσιν ἐκαινούργουν. Αὗταί τε, ὦ τέκνον, ὥς τι πράξασαι ἤδη καὶ περίεργον ὡπλίζοντο τόλμαν, καὶ παρὰ τὰ διατεταγμένα ἐποίουν, καὶ ἤδη τῶν ἰδίων τμημάτων καὶ ταμιείων [n]προήρχοντο, καὶ ἐφ' ἑνὸς [o]οὐκ ἔτι ἤθελον τόπου μένειν, ἀεὶ δὲ ἐκινοῦντο, καὶ τὸ ἔτι ἐπὶ μιᾶς μονῆς [p]εἶναι θάνατον ἡγοῦντο. Τοῦτο μὲν οὖν φησὶν, ὦ τέκνον, Ἑρμῆς [[q]ὡς κάμοῦ λέγων] καὶ τὸν τῶν ὅλων κύριον καὶ θεὸν οὐκ ἐλάνθανεν ὃ πράσσουσιν, κόλασιν δ' αὐταῖς ἐπεζήτει καὶ δεσμὸν, ὃν τλημόνως ὑπομενοῦσι. Καὶ δὴ καὶ ἔδοξε τῷ πάντων ἡγεμόνι καὶ
[946] δεσπότῃ [r]τὸ τῶν ἀνθρώπων [s]σύστημα τεχνίσασθαι, ὅπως ἐν τούτῳ τὸ τῶν ψυχῶν διαπαντὸς γένος κολάζηται. Τότε [t]δὲ μεταπεμψάμενος ἐμέ φησιν Ἑρμῆς, εἶπεν· Ὦ ψυχῆς ἐμῆ ψυχὴ, καὶ νοῦς ἱερὸς ἐμοῦ νοῦ, ἄχρι ποῦ στυγνὴ φύσις ἡ τῶν ὑποκειμένων ὁρᾶται; Ἄχρι [u]ποῦ τὰ ἤδη γεγονότα ἀργὰ μένει, καὶ ἀνεγκωμίαστα; Ἀλλ' ἄγε δή μοι τοὺς ἐν οὐρανῷ θεοὺς πάντας ἤδη, εἶπεν ὁ θεὸς, ὦ τέκνον, ὥς [x]φησιν Ἑρμῆς. Οἱ δ' [y]ὡς ἦλθον πρὸς ἐπίταγμα, ἀπίδετε, εἶπεν

j Ante ἔπλασσον add. γένος V. A.

k δὲ] δὴ A.

l ὑγρασίας ὑγίας] ὑγρασίας οὐσίας A. ὑγρασίας sine οὐσίας ed. Heeren. qui et leg. proponit ὑγρᾶς οὐσίας. Hoc prætuli.

m τῆς] τὴν A.

n προέρχοντο] προήρχοντο V. A.

o οὐκ ἔτι] ἔτι deest V. A.

p αἴγε] εἶναι V. A. μονῆς Heeren. pro μόνης.

q Verba ὡς κάμοῦ λέγων corrupta sunt, sed codd. nihil præsidii offerunt. Legendum forte ὡς κἀμοὶ ἔλεγεν, *ut mihi dixit*. Pro ἐλάνθανεν, quod ad ψυχαὶ pertinet, non male suspicaberis ἐλάνθανον. HEEREN. λέγῶν A. κἀμοὶ λέγων Patrit.

r τῆς τῶν] τὸν τῶν V.

ib. τὸ] τῷ A. E.

s σύστημα rescripsi pro συστήματι. In proximis Platonis iterum verba ante oculos habuisse videtur, quibus ille deum animas alloquentem ponit: Ὦ θεοὶ θεῶν etc. p. 41. l. c. HEEREN. σύστημα Patrit.

t δὲ] δὴ A.

u ποτὲ τὰ εἴδη] που τὰ ἤδη A.

x φησὶ Ἑρμῆς] φησὶν ὁ Ἑρμῆς V.

y ἦλθον] ὡς ἦλθον ed. Heeren.

εἰς τὴν γῆν, καὶ [z]πάντα τὰ χαμαί. Οἱ δὲ ἐν τάχει καὶ εἶδον καὶ ἐνόησαν ἃ ἐβούλετο [a]ὁ δυνάστης. Καὶ εἰπόντι ὑπὲρ τῆς τῶν ἀνθρώπων γενέσεως [b]συνέθεντο εἴ τι παρ' ἑνὸς ἑκάστου [c]τις δυνατός ἐστι παρασχεῖν τοῖς μέλλουσι γίγνεσθαι. Ἔλεγεν Ἥλιος, ἐπιπλέον λάμψω. [e]Ὑπισχνεῖτο Σελήνη, τὸν μετὰ [f]τὸν ἥλιον δρόμον φωτίσαι· ἔλεγε καὶ προπεπαιδοποιηκέναι Φόβον, [g]καὶ Σιγὴν, καὶ Ὕπνον, καὶ τὴν μέλλουσαν [h]αὐτοῖς ἔσεσθαι ἀνωφελῆ Μνήμην[i]. [k]Κρόνος ἀπήγγειλεν ἤδη πατὴρ γεγονέναι [l]καὶ Δίκης καὶ Ἀνάγκης. Ζεὺς ἔλεγεν ὡς μὴ παντάπασι πολεμῆσαι τὸ φῦλον [m]τὸ ἐσόμενον ἤδη αὐτοῖς, καὶ [n]Τύχην, καὶ Ἐλπίδα, καὶ Εἰρήνην γεγέννηκα. Ἄρης Ἀγωνίας [o]ἔλεγεν ἤδη, καὶ Ὀργῆς, καὶ
Ἔριδος [p]πατὴρ εἶναι. Ἀφροδίτη οὐκ ἐμέλλησεν, [q]ἀλλὰ καὶ p. 120.
εἶπεν, ἐγὼ δὲ Πόθον αὐτοῖς, ὦ δέσποτα, καὶ Ἡδονὴν ἐπι-
[948] ζεύξω, καὶ Γέλωτα· ὡς μὴ χαλεπωτάτην αἱ συγγενεῖς ψυχαὶ τὴν καταδίκην ὑπομένουσαι ἐπιπλέον [r]κολάζωνται. Ἐτέρπετο, ὦ τέκνον, ἐπιπλέον, Ἀφροδίτης [s]ταῦτα λεγούσης. Ἐγὼ δὲ, εἶπεν Ἑρμῆς, [t]καὶ ποιήσω τὴν τῶν ἀνθρώπων φύσιν

[z] πάντας] πάντα V. A. E.

[a] ὁ addidit Heeren. tanquam ex codd. Certe deest A. Habet Patrit.

[b] συνέθεντο] συνήσθεντο V. συνήσθοντο A.

[c] τις] Sic Heeren. τι A. Cant.

[e] Ὑπισχνεῖτο] ἠπισχνεῖτο A.

[f] Ante ἥλιον add. τὸν V. A. E.

[g] καὶ σιγὴν om. Heeren.

[h] αὐτῆς εἴσεσθαι] αὐτοῖς ἔσεσθαι V. A. E.

[i] Quæ sequuntur allegoriæ magna ex parte adumbratæ sunt ex Hesiodi de donis Pandoræ datis fabula. Cf. Ἔργ. v. 84. Si ἀνωφελῆ vera est lectio, memoriæ epitheton illud ideo tributum videtur, quod animæ nullam status, antequam in corpora immigraverint, reminiscentiam habent. Malim tamen μεγωφελῆ, ut sit imitatio Platonici illius dicti in Critia, Op. III. p. 108. ubi memoriam utilissimam deam vocat philosophus. HEEREN.

[k] Κρόνος] κρόνον A.

[l] καὶ om. Heeren.

[m] τὸ ἐσόμενον] τῶν ἐσομένων V. A.

[n] Ante τύχην add. καὶ V. A.

[o] Post ἔλεγεν add. εἶναι A.

[p] πατὴρ εἶναι] εἶναι om. A.

[q] Post ἀλλὰ add. καὶ A. qui supra ἐμέλησεν.

[r] κολάζωνται] κολάζονται A.

[s] τάδε] ταῦτα V. A.

[t] καὶ om. Heeren.

[v] εὐφυῆ, καὶ Σοφίαν αὐτοῖς, καὶ Σωφροσύνην, καὶ Πειθὼ, καὶ Ἀλήθειαν ἀναθήσω, καὶ οὐ [u] παύσομαι τῇ Εὑρέσει συνὼν, ἀλλὰ καὶ τῶν [x] ὑπὸ ζωδίων τῶν ἐμῶν γινομένων ἀνθρώπων εἰσαεὶ τὸν θνητὸν βίον [y] ὠφελήσω. Ζώδια γάρ [z] τινα ἐμοὶ ἀνέθηκεν ὁ πατὴρ καὶ δημιουργὸς ἔμφρονά γε καὶ νοερὰ, καὶ τότε πλέον, ὅταν καὶ ἐπικειμένη αὐτοῖς τῶν ἀστέρων κίνησις σύμφωνον ἔχῃ τὴν ἑνὸς ἑκάστου φυσικὴν ἐνέργειαν. Ἔχαιρεν ὁ θεὸς, ὁ δεσπότης κόσμου, ταῦτα ἀκούσας· καὶ προσέταξε γίγνεσθαι φῦλον [a] τὸ ἀνθρώπων. Ἐγὼ, φησὶν Ἑρμῆς, ἐπεζήτουν ὕλην, τίνι δέον ἐστὶ χρήσασθαι, καὶ παρεκάλουν τὸν μόναρχον. Ὁ δὲ ταῖς ψυχαῖς προσέταξε τοῦ κράματος τὸ λείψανον δοῦναι· καὶ λαβὼν, εὗρον αὐτὸ παντελῶς ξηρόν. Ἔνθεν πολλῷ [b] πλείονι τοῦ δέοντος ἐχρησάμην κατὰ μίξιν ὕδατι, ὡς τὴν τῆς ὕλης σύστασιν νεαροποιήσασθαι, ὡς ἔκλυτον παντάπασιν καὶ ἀσθενὲς καὶ [c] ἀδύνατον τὸ πλασσόμενον εἶναι, ὡς μὴ πρὸς [d] τῷ συνετὸν εἶναι ἔτι καὶ δυνάμεως ᾖ πεπληρωμένον. Ἔπλασα, καὶ καλὸν ὑπῆρχε, καὶ ἐτερπόμην [e] βλέπων μου τὸ ἔργον, καὶ κάτωθεν ἐπεκα-
[950] λεσάμην τὸν μόναρχον θεωρῆσαι. Ὁ δὲ καὶ εἶδε, καὶ ἐχάρη, καὶ τὰς ψυχὰς ἐκέλευσεν ἐνσωματισθῆναι. Αἱ δὲ τότε πρῶτον στυγνάσασαι, κατακρίτους ἑαυτὰς μαθοῦσαι [f] . . . . . ἐθαύμασα οὖν καὶ τοὺς τῶν ψυχῶν λόγους. Πρόσεχε, τέκνον Ὧρε, κρυπτῆς γὰρ ἐπακούεις θεωρίας, ἧς ὁ

[v] εὐφυῆ, *ingeniosam*, rescripsi pro ἔφη. HEEREN.

[u] παύσομαι] παύσωμαι A.

[x] ὑποζωδίων] ὑποζωμίων V.

[y] ὠφέλησω] ὠφελήσων V.

[z] τινὰ, quod sensus flagitat, dedi pro τά. HEEREN.

[a] τῶν] τὸ A. δὲ post ἐγὼ om. A.

[b] πλείονι] πλεῖον V.

[c] ἀδύναμον] ἀδύνατον V. A.

[d] τὸ] τῷ A.

[e] βλέπων] βλέπον A.

[f] Pauca hic excidisse, res ipsa docet, etsi in codd. nullum lacunæ signum additur. Supplendum videtur πολλὰ ὠδύροντο, *multum conquestæ sunt*, nempe quod in corpora invitæ includerentur. HEEREN.

μὲν προπάτωρ [g]Καμῆφις ἔτυχεν ἐπακούσας παρὰ Ἑρμοῦ τοῦ πάντων ἔργων ὑπομνηματογράφου, [[h]ἐγὼ δὲ] παρὰ τοῦ πάντων [i]προγενεστέρου Καμήφεως, ὅποτ' ἐμὲ καὶ [k]τῷ τελείῳ μέλανι ἐτίμησε· νῦν δὲ αὐτὸς [l]σὺ παρ' ἐμοῦ. Ὅτε γὰρ, ὦ θαυμαστὲ παῖ μεγαλόδοξε, ἔμελλον ἐγκατακλείεσθαι τοῖς σώμασιν, αἱ μέν [m]γε αὐτῶν αὐτὸ μόνον ὠδύροντο καὶ ἐστέναζον, [n]καὶ ὅνπερ τρόπον τῶν [ἐν δέσμοις] γεγονότων θηρίων τὰ ἐλεύθερα δουλεύειν πονηρῶς [o]μελλήσει τῆς συνήθους [p]τε καὶ φίλης ἀποσπώμενα ἐρημίας, μάχεσθαι [q]καὶ στα-
[952] σιάζειν, [r]καὶ οὐχ [s]ὁμονοεῖν πρὸς τοὺς κρατήσαντας αὐτῶν, ἀλλὰ καὶ ἐὰν τύχῃ περιγενόμενα, θανάτῳ παραδώσουσι [t]τοὺς αὐτοῖς ἐπιβάλλοντας· αἱ δὲ [u]πλέον ἔτριζον, δίκην ἀσπίδων· ὀξὺ δὲ κωκύσασα ἑτέρα, καὶ [x]πρὸ τῶν λόγων ἱκανὰ κλαύσασα, καὶ πολλάκις ἄνω τε καὶ κάτω τοὺς ὡς ἔτυχεν ἔχουσα [y]μεταφέρουσα ὀφθαλμοὺς, Οὐρανὲ, τῆς ἡμετέρας, εἶπεν, ἀρχὴ γενέσεως, αἰθήρ τε καὶ ἀὴρ, καὶ τοῦ

[g] Καμήφης] Καμῆφις A. Vid. Jablonski Panth. Ægypt. T. I. p. 96.

[h] ἐγὼ δὲ] Hæc verba addidit Heeren. et sic voluisse Canterum patet ex ejus versione Latina.

[i] προγενέστερον] –στέρου V. A. Post ὅποτε add. με V. A. E. μὲν P.

[k] τὸ τέλειον μέλαν accipit Cant. de atramento seu scriptione qua libri Hermetici consignati erant, vertit enim *cum atramento consignavit;* quod in turgido hoc dicendi genere, quod affectat noster, ferri forte potest. Quo posito, sensus esse videtur: *cum me librorum illorum communicatione dignum haberet.* HEEREN.

[l] συμπαρεμοῦ] σὺ παρ' ἐμοῦ V. A. E. Patrit. qui mox σώμασιν αἱ ψυχαὶ, αἱ μὲν αὐτῶν.

[m] γε] Sic Heeren. γὰρ A. Cant.

[n] Legitur apud Cant. [et A.] nullo sensu: καὶ ὅνπερ τρόπον τῶν γεγονότων θηρίων τὰ ἐλεύθερα, δούλοις πονηρῶν μελλήσει etc. Vult scriptor: *animas corporibus inclusas repugnare ferarum instar, quæ in captivitatem venerunt.* Patet itaque ante τῶν γεγονότων aliquid excidisse, v. c. ἐν δέσμοις, quod supplevi, nisi corruptelam in eo latere ponas, ac restituas ἑαλωκότων vel simile verbum. Pro δούλοις autem rescribendum erat δουλεύειν, *servire.* HEEREN.

[o] μελλήσει] μελήσει A.

[p] τε om. A. V.

[q] καὶ] δὲ καὶ Heeren.

[r] Verba καὶ οὐ—στασιάζειν desunt V.

[s] ὁμονοεῖν] ὀνοεῖν A.

[t] τοὺς] τοῖς A. Cant.

[u] πλέον] παλαιῶν V. A.

[x] πρὸς τὸν] πρὸ τῶν V. A. P.

[y] φέρουσα] μεταφέρουσα V. A.

μονάρχου θεοῦ χεῖρές τε καὶ ἱερὸν πνεῦμα, περιλαμπῆ τε, ὀφθαλμοὶ θεῶν, ἄστρα, καὶ φῶς ἡλίου καὶ σελήνης ἀκοπίαστον, τὰ τῆς ἡμετέρας ἀρχῆς σύντροφα, ὧν ἁπάντων ἀποσπώμενα, [z] ἐνάθλια πάσχομεν· πλέον [a] δὲ ὅτι ἀπὸ μεγάλων τε καὶ [b] λαμπρῶν, καὶ τοῦ ἱεροῦ περιχύματος, καὶ πλουσίου πόλου, καὶ [c] ἀπὸ τῆς μακαρίας μετὰ θεῶν πολιτείας εἰς ἄτιμα καὶ ταπεινὰ οὕτως ἐγκατειρχθησόμεθα [d] σκηνώματα. Τί ταῖς δυστήναις ἡμῖν ἀπρεπὲς οὕτως πέπρακται; τί τῶν κολάσεων τούτων ἄξιον; [e] ὅσαι τὰς δειλαίας ἡμᾶς ἁμαρτίαι περιμένουσιν; [f] ὅσα διὰ τὰ πονηρὰ τῶν ἐλπίδων πράξομεν, ἵνα τῷ ὑδαρεῖ καὶ ταχὺ διαλύτῳ σώματι [g] πορίζωμεν τὰ ἐπιτήδεια; [h] ὀφθαλμοὶ γὰρ οὐκέτι τὰς τοῦ θεοῦ ψυχὰς χωρήσουσιν, ὀλίγως καὶ παντελῶς μικρὸν τοῖς τοιούτοις ὑγροῖς κύκλοις τὸν ἑαυτῶν πρόγονον οὐρανὸν ὁρῶντες, στενάζομεν, ἔστι δ' ὅτε καὶ οὐ [i] βλέψομεν, p. 121.
[ἔνθ' Ὀρφεύς·[k]

[954] [l] Τῷ λαμπρῷ βλέπομεν, τοῖς δ' ὄμμασιν οὐδὲν ὁρῶμεν,]

ἄθλιαι γὰρ κατεκρίθημεν, καὶ τὸ βλέπειν [m] ἡμῖν οὐκ ἀντι-

[z] ὡς ἐνάθλια] ὡς deest V.A.E. ὡς ἂν ἄθλια Heeren. ὣς ἐνάθλια Patrit.

[a] δ' ὅτι] οὐδ' ὅτι V. A. E.

[b] λαμπραὶ] λαμπρὸν V. λαμπρῶν A.

[c] ἀπὸ Heeren. tanquam ex V. ἐπὶ A. Cant. Mox ἐγκατηρχθησόμεθα A.

[d] σκηνώματι] σκηνώματα V. A.

[e] καὶ τὰς] ὃ καὶ τὰς V. A. P.

ib. ὅσαι—ἁμαρτίαι edidi sensu jubente pro ὃ καὶ—ἁμαρτίας. HEEREN.

[f] ὅσα] ὅσαι V. A.

[g] ὁρίζομεν] πορίζωμεν V. A.

[h] Nullo sensu habet Cant. Ὀφθαλμοὶ τὰς οὐκέτι τοῦ θεοῦ ψυχὰς χωρίσουσιν, ὀλίγοι καὶ παντελῶς μικρὸν τῶν ἐν τούτοις ὑγρῶν καὶ κύκλων τὸν ἑαυτῶν πρόγονον οὐρανὸν ὁρῶσαι, στενάζομεν (στενάξωμεν A.) ἀεί. Pro τὰς rescripsi γὰρ quod nexus flagitat, χωρήσουσιν, i. e. *percipient,* præbent codd. V. A. Reliqua emendavi de meo, cum codd. nihil suppeditent. HEEREN.

[i] βλέψομεν] βλέψωμεν A.

[k] Versum hunc Orphicum male hic ex margine in contextum immigrasse, vix dubitaveris; impeditur enim eo oratio, quæ sine eo bene procedit. Perverse præterea hic citatur; sensus enim, si quid video, is est, *non proprie oculum, sed lucem visum nobis afferre.* Exstat ap. Gesner. p. 404. HEEREN. p. 504. Herman.

[l] τῷ λαμπρῷ] τὸ λαμπρὸν A. E.

[m] ἐμῖν] ἡμῖν A. P.

κρὺς [n]*ἐχαρίσθη, ὅτι χωρὶς τοῦ φωτὸς ἡμῖν τὸ ὁρᾶν οὐκ ἐδόθη.* [o]*Ὀπαὶ τοίνυν καὶ οὐκ ἔτι εἰσὶν ὀφθαλμοί. Ὡς δὲ καὶ τῶν συγγενῶν* [p]*φυσώντων ἐν ἀέρι πνευμάτων ἀκοῦσαι* [q]*τλημόνως οἴσομεν, ὅτι μὴ* [r]*συμπνέομεν αὐτοῖς. Οἶκος ἡμᾶς ἀντὶ τοῦ μεταρσίου κόσμου τούτου ὁ βραχὺς περιμένει καρδίας ὄγκος.* [s]*Σὺ δ' ἀπολύσας ἡμᾶς ἀφ' ὧν εἰς οἷα* [t]*κατέβημεν, ἀπολεῖ τὸ λυπεῖσθαι,* [u]*δέσποτα, καὶ πάτερ, καὶ ποιητά,* [x]*εἰ ταχέως οὕτως* [y]*σῶν ἔργων ἠμέλησας, διάταξον ἡμῖν τινας ὅρους, ἔτι κἂν* [z]*βραχέων ἡμᾶς ἀξίωσον λόγων, ἕως ἔτι δι' ὅλου τοῦ περιφανοῦς ἔχομεν βλέπειν κόσμου. Ἐπέτυχον, τέκνον Ὧρε, αἱ ψυχαὶ τάδε εἰποῦσαι,*
[956] *παρῆν γὰρ καὶ* [a]*μόναρχος, καὶ τάδε ἐπὶ τοῦ τῆς ἀληθείας καθίσας θρόνου ταῖς δεηθείσαις ἐφώνησεν· Ἔρως ὑμῶν, ψυχαὶ, δεσπόσει καὶ Ἀνάγκη, οἵδε γὰρ μετ' ἐμὲ πάντων* [b]*δεσπόται τε καὶ ταξιάρχοι. Ψυχαὶ* [c]*δ' ὅσαι τὴν ἀγήρατόν μου σκηπτουχίαν* [d]*θεραπεύετε, ἴστε ὡς ἕως μὲν ἀναμάρτητοί ἐστε, τὰ τοῦ* [e]*οὐρανοῦ οἰκήσετε χωρία· εἰ δ' ἄρα τις* [f]*ὑμῶν τινος* [g]*ἐγγίσει μέμψις, θνητοῖς καὶ αὐταὶ προσμεμοιρασμένον χῶρον* [h]*σπλάγχνοις καταδικασθεῖσαι* [i]*ἐνοικήσετε. Κἂν μὲν ᾖν ὑμῶν μέτρια τὰ* [k]*αἰτιάματα, τὸν ἐπίκηρον* [l]*τῶν σαρκῶν σύνδεσμον καταλιποῦσαι, πάλιν* [m]*ἀστέ-*

n *ἐχωρίσθη*] Cant. in marg. *ἐχαρίσθη*.
o Τόποι] *ὀπαὶ* Heerenius.
p *φυσσώντων*] *φυσόντων* V.
q *τλήμονας*] *τλημόνως* V. A.
r *σύμπεμεν*] *συμπνέομεν* V. A. E. *σύνεσμεν* Cant. marg.
s Σὺ rescripsi pro Ἀεί. HEEREN.
t *κατέβηκεν*] *–βημεν* V. A. E.
u *δέσποτι*] *δέσποτα* V. A. E.
x *καὶ ταχέως*] *εἰ ταχέως* A.
y *σῶν*] *τῶν σῶν* Heeren.
z *κᾂν βραχέῳ*] *κἂν βραχέων* V.A.E.
a *μόναρχος*] *ὁ μ.* Heeren.
b Post *δέσποται* add. *τε* V. A.
c *δὲ ὅσαι*] *καὶ ὅσαι* V.
d *θεραπεύετε*] *θεραπεύεται* (ε supra) A.
e *ἀνθρώπου*] *οὐρανοῦ* V. A. E.
f *ἡμῶν*] *ὑμῶν* V. P.
g *ἔγγεισι*] *ἐγγίσει* A. V. E. P.
h *σπλάγχνῳ*] *σπλάγχνοις* V. A.
i *ἐνοικήσεται*] *–σεται* (ε supra) V. E. A.
k *αἰτιάματα*] *αἰτιώματα* V. A.
l *τὸν σαρκὸν* A.
m *ἀστένακτον τὸν ἐπ' αὐτὸν*] *ἀστένακτοι τὸν ἑαυτῶν* V. A.

νακτοι τὸν ἑαυτῶν οὐρανὸν ἀσπάσεσθε· εἰ δ' ἄρα τινῶν μειζόνων ἁμαρτημάτων ἔσεσθε ποιητικαὶ, οὐ μετὰ τέλους καθήκοντος τῶν πλασμάτων [n]προελθοῦσαι, οὐρανὸν μὲν οὐκ ἔτι οἰκήσετε, οὐδ' αὖ σώματα ἀνθρώπων, ζῶα δ' ἄλογα [o]μεταπλανώμεναι τὸ λοιπὸν διατελέσετε. Τάδε εἰπὼν, ὦ τέκνον Ὧρε, [p]πάσαις αὐταῖς ἐχαρίσατο πνεύματα, καὶ πάλιν ἐφώνησεν· [q]Ἀλλ' οὐδὲ εἰκῆ καὶ ὡς ἔτυχεν [r]ἐνομοθέτησα τὰς [s]διαβολὰς ὑμῶν, [t]ἀλλ' ὡς ἐπὶ τὸ χεῖρον, εἴ τι [u]διαπράξετε ἄσχημον, οὕτως ἐπὶ τὸ βέλτιον, εἴ τι [x]βουλεύεσθε τῆς ἑαυτῶν γενέσεως ἄξιον. Ἐγὼ [y]γὰρ, καὶ οὔτις ἕτερος, ἐπόπτης αὐτὸς καὶ ἐπίσκοπος ἔσομαι. Ἐπίγνωτε
[958] δ' οὖν ὡς διὰ τὰ πρόσθεν πραχθέντα ὑμῖν κόλασιν ταύτην [z]ὑπομένετε τὴν ἐνσωμάτωσιν. [a]Ἡ τοίνυν διαφορὰ τῆς [b]παλιγγενεσίας ὑμῖν ἔσται [c]ἡ τῶν σωμάτων, ὡς ἔφην, διαφορὰ, εὐεργεσία δὲ καὶ πρόσθεν εὐδαιμονία, ἡ διάλυσις. Τυφλωθήσεται δ' ὑμῶν ἡ φρόνησις, ἐάν τι ἀνάξιον ἐμοῦ δόξητε πράσσειν, [d]ὥστε φρονεῖν τὰ ἐναντία, καὶ τὴν μὲν κόλασιν ὡς εὐεργεσίαν [e]ὑπομένειν, τὴν δὲ εἰς τὰ βελτίονα [f]μεταβολὴν ἀτιμίαν τε καὶ ὕβριν. Αἱ δικαιότεραι δ' ὑμῶν, καὶ τὴν εἰς τὸ θεῖον μεταβολὴν ἐκδεχόμεναι, εἰς μὲν ἀνθρώπους βασιλεῖς δίκαιοι, φιλόσοφοι γνήσιοι, κτίσται καὶ

[n] προσελθοῦσαι] προελθοῦσαι V. A. E.

[o] μεταπλανώμενα λοιπὸν A. τὸ add. Heeren.

[p] πάσαις αὐτὸ ἐχαρίσατο τὸ πνεύματι] πάσαις αὐταῖς ἐχαρίσατο πνεύματα V. A. E. P.

[q] ἀλλ' οὐδὲ] Sic Cant. in marg. ἄλλους δὲ A. Cant.

[r] ἐνομοθέτησα] –τησε V. A.

[s] διαβολὰς] Sic A. διαβουλὰς Cant. καταβολὰς *pensiones, præmia*, conj. Heeren.

[t] ἀλλ' ὡς] Sic Cant. in marg. ἄλλως vulg.

[u] διαπράξητε] διαπράξετε A.

[x] βουλεύετε] βουλεύεσθε V. A.

[y] γὰρ om. A.

[z] ὑπομένετε καὶ] ὑπομένετε τὴν A. ὑπομένεται τὴν V. E.

[a] Καὶ τοίνυν] Ἡ τοίνυν V. A. E.

[b] παλιγγενεσίας] παλιγκαινεσίας A.

[c] Ante σωμάτων add. ἡ τῶν V. A.

[d] ὡς τὸ] ὥστε V. A. P.

[e] ὑπομένον] –μένειν V. P. –μένει P.

[f] Post μεταβολὴν add. ἀτιμίαν (–μίας P.) τε καὶ ὕβριν (ὕβριως P.) αἱ δικαιότεραι δ' ὑμῶν, καὶ (ἔτι P.) τὴν εἰς τὸ θεῖον μεταβολὴν ἐκδεχόμεναι etc. V. A. μεταβολὴν om. Heeren.

νομοθέται, μάντεις [g] οἱ ἀληθεῖς, ῥιζοτόμοι γνήσιοι, ἄριστοι
προφῆται θεῶν, μουσικοὶ ἔμπειροι, ἀστρονόμοι νοεροὶ, οἰωνο-
σκόποι [h] σοφοὶ, ἀκριβεῖς θύται, καὶ ὁπόσοι ἐστὲ καλῶν
κἀγαθῶν ἄξιαι· εἰς δὲ πτηνὰ, [i] ἀετοὶ, διότι οὐδὲν τῶν ὁμο-
γενῶν οὔτε [k] ἐκσοβήσουσιν, οὔτε θοινήσονται, ἀλλ' οὐδὲ πλη-
σίον τούτων ζῶον ἕτερον ἀσθενέστερόν τι [l] αὐτοῦ ἀδικεῖν ἀφε-
θήσεται, ἐνδικωτέρα γὰρ [m] ἡ τῶν ἀετῶν φύσις [n] μετελεύσεται·
εἰς δὲ τετράποδα, λέοντες, ἰσχυρὸν γὰρ τὸ ζῶον, καὶ φύσεως
[960] *ἔτυχεν ἀκοιμήτου τρόπῳ τινὶ, καὶ φθαρτῷ σώματι τὴν ἀθά-*
νατον γυμναζόμενον φύσιν· οὔτε γὰρ [o] κάμνουσιν, οὔτε κοι-
μῶνται· εἰς δὲ ἑρπετὰ, δράκοντες, δυνατὸν ὅτι τὸ ζῶον, καὶ
μακρόβιον, ἄκακόν τε, καὶ φιλάνθρωπον [p] ὁπωστιοῦν, καὶ
τιθασευθήσεται, καὶ ἰὸν οὐχ ἕξει, ἐάσει δὲ καὶ [q] γηρά-
σαν, καθάπερ φύσις ἡ θεῶν· ἐν δὲ νηχοῦσι δελφῖνες· συμ-
παθήσουσι γὰρ καὶ τοῖς εἰς πέλαγος ἐμπίπτουσιν οὗτοι,
καὶ τὰ μὲν ἔμπνοα διακομιοῦσιν εἰς γῆν, τῶν δὲ τελευτη- p. 122.
σάντων οὐδ' ὅλως ποτὲ ἅψονται, καίτοι φιλοβρωτοτάτου
πάντων ἐσομένου τοῦ τῶν ἐνύδρων γένους. Τοσαῦτα ὁ θεὸς
εἰπὼν ἄφθαρτος νοῦς γίγνεται. Τούτων οὕτως γενομένων,
τέκνον Ὧρε, ἰσχυρότατόν [r] τι ἀπὸ γῆς ἀνίσταται πνεῦμα,

[g] *ἡ ἀληθεῖς*] *οἱ ἀληθεῖς* V. A.

[h] *σαφεῖς*] *σοφοὶ* V.

[i] *αἰετοὶ*] *ἀετοὶ* A. et sic infra.

[k] *ἐκβοήσουσιν*] *ἐκσοβήσουσιν* Cant. in marg.

[l] *αὐτοῦ*] *αὐτοῖς* A.

[m] *ἡ τῶν ἀρετῶν*] *οἱ τῶν ἀετῶν* A.

[n] Si *μετελεύσεται* sincera lectio est, *ἐνδικώτερα* [sic Patrit.] neutraliter accepto, jungendum erat: *ἡ τῶν αἰετῶν φύσις μετελεύσεται τὰ ἐνδικώτερα*, i. e. *justitiam colet*. Ordo tamen verborum flagitare potius videtur ut *ἐνδικωτέρα* jungatur cum *φύσις*, quo posito *μετελεύσεται* vel plane redundat, vel legendum est *γενήσεται* vel simile verbum. HEEREN.

[o] *κάμνουσι*] *κάμνωσιν* V.

[p] *οὕτως ὥστε οὖν* facili conjectura restitui pro *οὕτως τε οὖν*.—Quæ tamen sequuntur *ἐάσει δὲ καὶ γηράσαν καθάπερ φύσις ἡ θεῶν* corrupta sunt, nec a Cant. in versione expressa. Si *ἐάσει* verteris *omittet*, adeoque *perdet*, sensus foret *serpentes cum senescunt virus suum amittere*; sed restant ultima verba *καθάπερ φύσις ἡ θεῶν*, quæ non expedio. HEEREN. Mihi leg. videtur *ὁπωστιοῦν*.

[q] *γηράσαν*] *γηράσας* V. A. *γηράσκειν* Patrit.

[r] *τε*] *τι* V.

ἀκατάληπτον μὲν [s] περιοχῇ σώματος, δυνάμει δὲ φρονήσεως
[962] ὑπάρχον, [t] ὃ καίπερ [u] εἰδὼς ὑπὲρ ὧν ἐπυνθάνετο, τὸ [x] σῶμα μὲν [y] καὶ τύπον ἀνδρὸς πειρικείμενον, καὶ καλὸν καὶ σεμνοπρεπὲς ὂν, ὑπερβολῇ δὲ ἄγριον καὶ πλῆρες φόβου, [z] ἤδη δὲ παραυτίκα τὰς ψυχὰς εἰσιούσας εἰς τὰ πλάσματα θεωρήσας, [a] τίνες, ἔλεγεν, οὗτοι καλοῦνται, [b] ὦ Ἑρμῆ, θεῶν ὑπομνηματόγραφε; Εἰπόντος δὲ, ἄνθρωποι, Ὦ Ἑρμῆ, ἔφη, τολμηρὸν ἔργον ποιῆσαι τὸν ἄνθρωπον, περίεργον ὀφθαλμοῖς, καὶ [c] λάλου γλώσσης, ἀκουστικὸν μᾶλλον εἶναι καὶ [d] τῶν αὐτῷ μὴ προσηκόντων, [e] λιχνὸν ὀσφρήσει, καὶ μέχρι πάντων [f] τῷ τῆς ἁφῆς ἁπτικῷ μέλλοντα [g] καταχρᾶσθαι. Τοῦτον ἀμέριμνον καταλεῖψαι κέκρικας, ὦ γενεσιουργὲ, τὸν ὁρᾶν μέλλοντα τολμηρῶς τῆς φύσεως τὰ καλὰ μυστήρια; ἄλυπον ἐᾶσαι θέλεις τοῦτον, καὶ μέχρι [h] τῶν πέραν γῆς [i] τὰς ἑαυτοῦ μελλήσοντα πέμπειν ἐπινοίας; Ῥίζας φυτῶν [k] ἀνασκάψουσιν ἄνθρωποι, καὶ ποιότητα ἐξετάσουσι χυλῶν, λίθων φύσεις ἐπισκοπήσουσι, καὶ διὰ [l] μέσον [m] ἀνατεμοῦσι τὰ

[s] περιοχῇ] περιοχῆς V. A.

[t] Habet Cant. ὃ καίπερ εἶδος ὑπὲρ ὧν ἐπυνθάνετο τὸ σῶμα, καὶ τύπον ἀνδρὸς περικείμενον, καὶ καλὸν καὶ σεμνοπρεπὲς ὂν, ὑπ. δὲ ἀγρ. κ. πλ. φόβου, ὃ δὴ παραυτίκα τὰς ψυχὰς εἰσιούσας εἰς τὰ πλάσματα θεωρῆσαι, ἄν τινες etc. HEEREN.

[u] εἶδος] εἰδὼς Cant. in marg. εἶδός A.

[x] Post τὸ σῶμα add. μὲν V. A. P.

[y] κατὰ τύπον] Sic Heeren. καὶ τύπον A. Cant.

[z] ὃ δὴ—θεωρήσαι ἂν] ἤδη δὲ—θεωρήσας Heerenius.

[a] ἄν τινες] ἄν τις A. E. tum ἔλεγον A. Cant.

[b] Post ὦ Ἑρμῆ add. θεῶν ὑπομνηματόγραφοι (–ογράφοι A.) (ὑπόμνημα τὸ σαφὲς P.) εἰπόντος δὲ ἄνθρωποι ἔφης· ἔφη ὦ Ἑρμῆ τολμηρὸν etc. V. A. E.

[c] λάλον γλώσσῃ rescripsi pro λάλου γλώσσης, et statim μέλλοντα pro μᾶλλον ap. Cant. HEEREN.

[d] τῶν αὐτῷ] τῷ αὐτῷ V. A.

[e] λιχνὸν] λίχνων V. λίχνου (ω supra) A.

[f] τῷ] τὸ A.

[g] καταχρᾶσαι] καταχρᾶσθαι A. E.

[h] τῶν] τὰ Heeren.

[i] τὰς ἑαυτοῦ rescripsi pro τὰ σεαυτοῦ, pertinet enim ad ἐπινοίας. HEEREN.

[k] ἀναγκάμψουσι] ἀνασκάψουσιν V. A. E. Cant. in marg.

[l] μέσων] μέσον V. A.

[m] ἀνατεμοῦσι] Sic Heeren. ἀνατέμνουσι A. Cant. Tum τὰ ἄλογα τῶν ζώων A.

ἄλογα τῶν ζώων οὐ μόνον, ἀλλὰ καὶ ἑαυτοὺς, ὡς ἐγένοντο ἐξετάζειν θέλοντες, τολμηρὰς [n]ἐκτενοῦσι χεῖρας καὶ μέχρι θαλάσσης, καὶ τὰς αὐτοφυεῖς ὕλας τέμνοντες, [o]μέχρι καὶ τῶν [p]πέραν [q]διαπορθμεύσουσιν ἀλλήλους ἐπὶ ζήτησιν, καὶ
[964] τίς ἐνδοτέρω τῶν ἱερῶν ἀδύτων φύσις ὑπάρχει, τὰ μέχρις ἄνω διώξουσι, παρατηρῆσαι βουλόμενοι τίς [r]οὐρανοῦ καθέστηκε κίνησις. Ἔτι μέτρια ταῦτα. Λείπει γὰρ οὐδὲν ἔτι πλὴν γῆς [s]τόπος ἔσχατος. Ἀλλὰ καὶ [t]τούτων τὴν ἐσχάτην [u]τῷ θέλειν [x]ἐρευνήσουσι νύκτα. Μηδὲν οὖν ἐμπόδιον ἔχουσιν οὗτοι, ἀλλὰ τῷ τῆς [y]ἀλυπίας ἀγαθῷ μυηθῶσι, καὶ τοῖς χαλεποῖς μὴ βιασθέντες τοῦ φόβου κέντροις ἀμερίμνῳ βίῳ [z]τρυφήσουσιν; [a]εἶτα οὐ καὶ μέχρις οὐρανοῦ περίεργον [b]ὁπλισθήσονται τόλμαν; οὗτοι οὐκ ἀμερίμνους ἐκτενοῦσιν [c]ἐπὶ καὶ τὰ στοιχεῖα [d]τὰς ψυχὰς αὐτῶν; Δίδαξον ἐντεῦθεν ἐρᾶν [e]τοῦ τι βουλεύεσθαι, ἵν' ἔχωσι καὶ τῆς ἀποτυχίας τὸ χαλεπὸν φοβηθῆναι, ἵνα τῷ τῆς λύπης δακνηρῷ δαμασθῶσι, τῶν ἐλπιζομένων ἀποτυχόντες. [g]Χρεοκοπείσθω τῶν ψυχῶν αὐτῶν τὸ περίεργον ἐπιθυμίαις, καὶ φόβοις, καὶ λύπαις καὶ [h]ἐλπίσι πλάνοις. Ἐπάλληλοι τὰς ψυχὰς αὐτῶν ἔρωτες νεμέσθωσαν, ἐλπίδες, ποικίλαι ἐπιθυμίαι, ποτὲ μὲν

[n] ἐκτενοῦσι] Sic Heeren. ἐκτείνουσι A. Cant.

[o] μέχρι καὶ] μέχρι δὲ V.

[p] πέραν] πέρα A.

[q] διαπορθμεύσουσιν ἀλλήλων ἐπὶ ζήτησιν] Sic Heeren. διαπορθμεύουσιν, ἀλλήλους ἐπιζήτησιν Cant. –μεύονται A.

[r] οὐρανοῦ pro οὖν Cant. in marg.

[s] τόπος ἔσχατος] τόποι ἔσχατοι Heeren.

[t] τοῦτον] τούτων V. A.

[u] τῷ θέλειν] τῷ τέλει Heeren.

[x] ἐρευνήσιν] ἐρευνήσουσι V. A.

[y] ἀλυπίας] ἀληθείας V. A. E.

[z] τριφόσωσιν] τριφήσωσιν V. τρυφήσωσιν A. E.

[a] εἶτα οὐ μέχρι] εἶτα οὖ καὶ μέχρις V. A. E.

[b] ὁπλισθήσεται] ὁπλισθήσονται Heeren.

[c] ἐπεὶ καὶ τὰ] ἐπὶ τὰ Heeren.

[d] τᾶς ψυχᾶς] τὰς ψυχὰς V. A.

[e] τοῦτο] τοῦ τι V. A. P.

ib. ἐρᾶν τοῦτο] ἐρᾶν τοῦ τι A. ἐρᾶν τε καὶ Heeren.

[g] Χρεοκοπιεῖσθω] χρεωκοπείσθω V. A.

[h] ἐλπίσι πλάνοις, *irrita spe,* edidi pro ἐλπίσι πλάνης. HEEREN. Mox ἔρωντες A.

ἐπιτυγχάνουσαι, ποτὲ δὲ [i]ἀποτυχοῦσαι, ἵνα αὐτοῖς καὶ τῆς ἐπιτυχίας ἡδὺ δέλεαρ ᾖ εἰς ἄθλησιν τελειοτέρων κακῶν· [966] βαρείτω πυρετὸς αὐτούς, ἵνα [k]ἐκκακήσαντες κολάσωσι τὴν ἐπιθυμίαν. Λυπῇ, τέκνον Ὧρε, τάδε ἑρμηνευούσης [l]σοι τῆς τεκούσης; Οὐ θαυμάζεις, οὐ [m]καταπλήσσῃ, πῶς ὁ τάλας ἄνθρωπος [n]ἐβαρύνθη; Τὸ δεινότερον ἐπάκουσον.

Ἐτέρπετο Μώμου ταῦτα λέγοντος Ἑρμῆς, ἐλέγετο γὰρ οἰκείως αὐτῷ τὰ εἰρημένα, καὶ ταῦτα ἔπραττεν, ὅσα περ εἰρήκει, [o]λέγων· Μῶμε, ἀλλ᾽ οὐκ [p]ἐναργὴς γενήσεται πνεύματος θείου φύσις ἡ τοῦ περιέχοντος. [q]Εἶπε γὰρ εἶναί [r]με ταμίαν καὶ [s]προνοήτην ὁ τῶν συμπάντων δεσπότης.—[t]Ἐπόπτηρ τοίνυν ταγῆς [u]ἔσται τῶν ὅλων ὀξυδερκὴς θεὸς Ἀδράστεια, [x]καί τι κρυπτὸν ὄργανον ἐγὼ τεχνάσομαι, ἀπλανοῦς καὶ ἀπαραβάτου θεωρίας ἐχόμενον· ᾧ τὰ ἐπὶ γῆς [y]ἀναγκαίως δουλαγωγηθήσεται πάντα τὰ ἀπὸ γενέσεως ἄχρι φθορᾶς [z]ἐσχάτης, ἔχον τὴν ἀποτελουμένων πῆξιν· πεισθήσεται δὲ τῷ ὀργάνῳ τούτῳ καὶ τὰ ἐπὶ γῆς ἄλλα πάντα. [a]Εἶπεν Ἑρμῆς [[b]ἐγὼ δὲ] ταῦτα τῷ Μώμῳ, καὶ ἤδη τὸ ὄργανον ἐκινεῖτο. Ταῦτα δὲ ὡς ἐγένετο καὶ [c]ἐνεσωματίσθη- p. 123.

i ἀποτυχοῦσαι] Cant. et codd. corrupte habent ἀπευκτοῦσαι. HEEREN. Mox καὶ τοῖς A.

k ἐκκακήσαντες κλάσωσι] ἐκκακίσαντες κολάσωσι V. A. κολάσουσι E.

l σοὶ] σε A.

m καταπλήσσῃ] καταπλήσσεις A.

n ἐβαρήθη] ἐβαρύνθη A.

o λέγω] λέγων V. A.

p ἐναργῆ] ἐναργὴς Heeren.

q Εἶπε] εἴπερ A.

r μετὰ μίαν] με ταμίαν Cant. in marg.

s προνοητικὴν] προνοητὴν V. A.

t Ἐποπτὴρ τοίνυν ταγῆς ἔσται τῶν ὅλων, *summus inspector imperii totius mundi*, restitui pro ἐποπτετῆρα τοίνυν τὰ γῆς τῶν ὅλων ap. Cant. HEEREN.

u Ante τῶν ὅλων add. ἔσται V. A. P.

x καί τι] καί τοι V.

y ἀναγκαίως om. Heeren.

z ἐσχάτης deest V.

a Εἶπεν] εἶπον V.

b [ἐγὼ δὲ] vel corruptum vel plane ejiciendum est; colloquuntur enim Hermes et Momus. Vertit Cant. *quæ cum dixisset Hermes, Momo placuerunt*, qui quid legerit, non video. HEEREN.

c ἐνεσωματίσθησαν] ἐνεμβατισθῆσαν V. A.

σαν αἱ ψυχαὶ, καὶ [d]ἐπαίνου ὑπὲρ τῶν γενομένων αὐτὸς ἔτυχεν, πάλιν ὁ μόναρχος σύγκλητον τῶν θεῶν ἐποίησε [968] συνέδριον, καὶ οἱ θεοὶ παρῆσαν, καὶ πάλιν αὐτὸς ταῦτα οὕτως ἐφώνησε· Θεοὶ, λέγων, ὅσοι τῆς κορυφαίας, ὅσοι καὶ ἀφθάρτου φύσεως τετεύχατε, οἳ [e]τὸν μέγαν αἰῶνα διέπειν εἰς ἀεὶ κεκλήρωσθε, οἷς αὐτὰ ἑαυτοῖς ἀντιπαραδίδοντα οὐδέποτε κοπιάσει τὰ σύμπαντα, μέχρι πότε τῆς ἀνεπιγνώστου ταύτης δεσπόσομεν ἡγεμονίας; μέχρι πότε ἀθεώρητα γενήσεται ταῦτα ἡλίῳ καὶ σελήνῃ; Ἕκαστος [f]ἡμῶν ἐφ᾽ ἑαυτῷ γεννάτω· ἀπαλείψωμεν τῷ δύνασθαι τὴν [g]ἔτι [h]ἀργὴν σύστασιν ταύτην, ἄπιστος τοῖς μεταγενεστέροις μῦθος δὲ [i]δοξάτω χάος εἶναι· ἔργων ἅπτεσθε μεγάλων, ἐγὼ δ᾽ αὐτὸς ἄρξομαι πρῶτος. Εἶπε· καὶ εὐθέως κοσμικῶς τῆς ἔτι μελαίνης [k]ἑνώσεως διάστασις ἐγένετο· καὶ ἐφάνη μὲν [l]οὐρανὸς ἄνω, συγκεκοσμημένος τοῖς ἑαυτοῦ μυστηρίοις πᾶσι· κραδαινομένη ἔτι γῆ, ἡλίου λάμψαντος, ἐπάγη, καὶ ἐφάνη πᾶσι [ll]τοῖς περὶ αὐτὴν [m]συγκεκοσμημένοις καλοῖς. Καλὰ γὰρ τῷ θεῷ καὶ τὰ θνητοῖς εἶναι νομιζόμενα φαῦλα, ὅτι δὴ τοῖς τοῦ θεοῦ νόμοις δουλεύειν ἐποιήθη. Ἔχαιρε δὲ ὁ θεὸς, ὁρῶν ἤδη ἑαυτοῦ τὰ ἔργα κινούμενα· πληρώσας δὲ τὰς ἰσοστασίας χεῖρας τῷ περιέχοντι τῶν ἐκ τῆς φύσεως ὑπαρχόντων, καὶ τὰς δράκας καρτερῶς [n]σφίγξας, λάβε, εἶπεν, ὦ ἱερὰ [o]γῆ, λάβε, πάντιμε, καὶ εἶναι γεννήτειρα μέλλουσα πάντων, καὶ μηδενὶ ἐντεῦθεν λείπεσθαι δόκει. Εἶπεν ὁ θεὸς,
[970] καὶ τὰς χεῖρας, οἵας δεῖ θεὸν ἔχειν, ἁπλώσας, πάντα

d ἔπαινον] ἐπαίνου V. A. E. Mox ἔτυχον A.

e τὴν] τὸν V. A. E.

f ἡμῶν] ὑμῶν A.

g αἰτίαν] ἔτι V. A.

h ἀργὴν] ἀργὸν A.

i δοξασάτω] δοξάτω V. A. E. P.

k Ante ἑνώσεως add. μελένης (sic) V. A. μελαίνης Heeren.

l ὁ ante οὐρ. deest V. A.

ll Verba τοῖς συγκεκ. desunt ob homoiotel. V.

m Post συγκεκοσμ. add. καλοῖς V. A. E.

n σφήξας] σφίγξας V. A.

o Post γῆ add. λάβε πάντιμε κ. εἶναι etc. V. A.

ἀφῆκεν [p]ἐν τῇ τῶν ὄντων συστάσει. Καὶ ἄγνωστα μὲν ἦν κατ' ἀρχὰς παντάπασι. Νεωστὶ γὰρ αἱ ψυχαὶ καθειρχθεῖσαι, καὶ τὴν ἀτιμίαν μὴ φέρουσαι, τοῖς ἐν οὐρανῷ θεοῖς [q]ἐφιλονείκουν τῆς ἑαυτῶν εὐγενείας περικρατοῦσαι, καὶ ἀντιλαμβανόμεναι, ὡς καὶ αὐταὶ τοῦ αὐτοῦ ἔτυχον δημιουργοῦ, ἐστασίαζον, καὶ τοῖς [r]λειπομένοις ἀνθρώποις ὀργάνοις χρώμεναι, ἐποίουν αὐτοὺς ἑαυτοῖς ἐπιτίθεσθαι, καὶ ἀντιτάσσεσθαι, καὶ πολεμεῖν ἀλλήλοις. Καὶ οὕτως ἡ μὲν ἰσχὺς κατὰ τῆς ἀσθενείας μέγα ἠδύνατο, ὥστε οἱ ἰσχυροὶ τοὺς ἀδυνάτους καὶ ἔκαιον καὶ ἐφόνευον, καὶ κατὰ τῶν ἱερῶν τοῦτο μὲν ζῶντας τοῦτο δὲ [s]καὶ νεκροὺς ἔρριπτον [[t]κατὰ τῶν ἀδύτων,] ἕως [u]ἀγανακτήσαντα τὰ στοιχεῖα τῷ μονάρχῳ θεῷ ἐντυχεῖν ἐδοκίμαζον [x]ὑπὲρ τῆς τῶν ἀνθρώπων ἀγρίου πολιτείας. Πολλοῦ δὲ ἤδη γενομένου τοῦ κακοῦ, τὰ στοιχεῖα τῷ ποιήσαντι [y]αὐτὰ τῷ θεῷ προσελθόντα, τοιούτοις λόγοις [z]ὑπὲρ μέμψεως ἐχρήσαντο. Καὶ δὴ καὶ εἶχε τὴν τοῦ λέγειν ἐξουσίαν τὸ πῦρ πρῶτον. Δέσποτα δὲ, ἔλεγε, καὶ τοῦ [a]καινοῦ τούτου κόσμου τεχνίτα, καὶ [b]κρυπτὸν ἐν θεοῖς καὶ σεβαστὸν ὄνομα μέχρι νῦν ἅπασιν ἀνθρώποις, μέχρι πότε, ὦ δαῖμον, ἄθεον καταλεῖψαι [c]τὸν θνητῶν βίον [d]προαίρεσιν ἔχεις;
[972] Ἀνάτειλον ἤδη σεαυτὸν χρηματίζοντι τῷ κόσμῳ, καὶ τοῦ βίου τὸ ἄγριον μύησον εἰρήνῃ· [dd]χάρισαι νόμους τῷ βίῳ, χάρισαι νυκτὶ χρησμούς· πλήρωσον καλῶν ἐλπίδων [e]πάντα· φοβεί-

[p] ἐν τῇ] ἐν γῇ A.
[q] ἐφιλονείκουν] –νίκουν A.
[r] λοιπομένοις] λειπομ. V. A.
[s] καὶ om. Heeren.
[t] Verba κατὰ τῶν ἀδύτων merito pro glossemate habueris, cum κατὰ τῶν ἱερῶν jam præcesserit. HEEREN.
[u] ἀγανακθήσονται] ἀγανακτήσαντα V. A.
[x] ὑπὲρ] περὶ V. A. qui in marg. ὑπὲρ eadem manu.
[y] τὰ αὐτὰ θεῷ] αὐτὰ τῷ θεῷ V. A. E.
[z] ὑπὲρ] περὶ Heeren.
[a] καινοῦ om. A.
[b] κρυπτὸν] κριπτὸν V.
[c] τῶν θνητῶν] τὸν θνητὸν V. A.
[d] πρὸς αἵρεσιν] προαίρεσιν, *propositum*, Heeren.
[dd] χάρισαι] χάρισον A. Cant.
[e] πάντα] πάντας V.

σθωσαν ἄνθρωποι τὴν ἀπὸ θεῶν ἐκδικίαν, καὶ οὐδεὶς [f]ἁμαρτήσει· ἐπαξίους ἁμαρτημάτων μισθοὺς ἂν ἀπολάβωσι, [g]φυλάξονται [h]οἱ πολλοὶ τὸ ἀδικεῖν· φοβηθήσονται ὅρκους, καὶ οὐδὲ εἷς ἔτι [i]ἀνόσιον φρονήσει· μαθέτωσαν εὐεργετηθέντες εὐχαριστῆσαι, ἵνα χαῖρον παρὰ λοιβαῖς [[k]παρὰ θυσίαις] ὑπηρετήσω τὸ πῦρ, ἵν' εὐώδεις [l]ἀτμοὺς ἀπ' ἐσχάρας [m]προπέμψωσι. [n]Μιαίνομαι γάρ, ὦ δέσποτα, μέχρι νῦν, καὶ ὑπὸ τῆς τῶν γενομένων ἀνθρώπων ἀθέου τόλμης σάρκας ἀναγκάζομαι τήκειν, οὐκ ἐῶσί τε μένειν εἰς ὃ πέφυκα, παραχαράσσοντες οὐ καθηκόντως τὸ ἄφθαρτον. Ὁ δὲ [o]ἀὴρ καὶ αὐτός, θολοῦμαι, ὦ δέσποτα, ἔλεγε, καὶ ἀπὸ τῶν νεκρῶν p. 124. *σωμάτων ἀναθυμιάσεως νοσώδης τέ εἰμι καὶ ὑγιεινὸς οὐκ ἔτι ἐφορῶ τε ἄνωθεν [p]ὅσα μὴ θέμις ὁρᾶν. Ὕδωρ ἑξῆς, ὦ παῖ μεγαλόψυχε, τὴν τοῦ λέγειν εἶχεν ἐξουσίαν, καὶ ἔλεγεν οὕτως· Πάτερ, καὶ θαυμαστὲ ποιητὰ πάντων, [q]αὐτόγενε* [974] *δαῖμον, καὶ τῆς διά σε πάντα γεννώσης ποιητὰ φύσεως, ἤδη ποτέ, ὦ δαῖμον, ἀεὶ ῥεῖθρα ποταμῶν καθαρὰ πρόσταξον εἶναι· ἢ γὰρ [r]ἀπολούουσι ποταμοὶ καὶ θάλασσαι τοὺς φονεύσαντας, ἢ δέχονται τοὺς φονευθέντας. Γῆ παρῆν [s]περίλυπος ἑξῆς, [t]καὶ ἄρξασα τοῦ ἀπολόγου, ὦ παῖ μεγαλόδοξε, οὕτως λέγειν ἤρξατο· Βασιλεῦ, καὶ τῶν οὐρανίων*

[f] ἁμαρτήσει] ἐκαρτήσει A. Cant. ἁμαρτήσει Cant. in marg.

[g] φύλαξον] φυλάξονται A.

[h] οἱ λοιποὶ] οἱ πολλοὶ A. E.

[i] ἀνόητον] ἀνόσιον V. A. P.

[k] Verba παρὰ θυσίαις vel pro glossemate habenda sunt, vel legendum παρὰ λοιβαῖς τε καὶ παρὰ θυσίαις, *in libationibus et sacrificiis*. HEEREN.

[l] αὐτὰρ] ἀτμοὺς V. καπνοὺς A. αὐγὰς Cant. in marg.

[m] προπέμψω σοι] προπέμψωσι A.

[n] Μαίνομαι] μιαίνομαι Cant. in marg.

[o] ἀνὴρ] ἀὴρ V. A. E. Cant. in marg.

[p] ὅσα μὴ θέμις, *quæ nefas est videre*, rescripsi pro ὅσα με θέμις ex codd. V. A. HEEREN. ὅσα μεθέμην A. Supra οὐχὶ ὑγιεινὸς Patrit.

[q] αὐτο·γενέων δαίμον] αὐτόγενε δαίμων V. A. et infra δαίμων A. et supra p. 415.

[r] ἀπολούουσι] ἀπολύουσι A. E.

[s] περίλοιπος] περίλυπος V. A. E.

[t] καὶ ἄρξασα τοῦ ἀπολόγου] Sic Heeren. pro καὶ τάξομαι τῆς ἀπὸ τῶν λόγων.

πρύτανι, καὶ [u]δέσποτα ἀψίδων, [x]στοιχείων ἡμῶν [y]ἡγεμὼν, πάτερ τῶν σοι παρεστώτων, ἐξ ὧν αὐξήσεως καὶ μειώσεως ἀρχὴν ἔχει [z]τὰ πάντα, εἰς ἃ καὶ πάλιν καταλήγοντα ἀναγκαίως ὀφειλόμενον τέλος ἔχει, ἀλόγιστος, ὦ πολυτίμητε, καὶ ἄθεος [a]ἀπ' ἀνθρώπων ἐπ' ἐμὲ χορὸς ἔπεστι. Χωρῶ δ' ἐγὼ καὶ φύσιν πάντων. Αὕτη γὰρ, ὡς σὺ προσέταξας, καὶ φέρω πάντα, καὶ τὰ φονευθέντα [b]δέχομαι. Ἀτιμοῦμαι δὲ ἤδη. [c]Ὁ ἐπὶ πάντων, ὁ ἐπιχθόνιός σου κόσμος πεπληρωμένος, θεὸν οὐκ ἔχει. Πάντα γὰρ, [d]ὃ φοβηθῶσιν οὐκ ἔχοντες, παρανομοῦσι, καὶ κατ' ἐμῶν, ὦ κύριε, τενόντων πάσῃ πονηρᾷ τέχνῃ καταπίπτουσι. Καταβρέχομαι δὲ πᾶσα διαφθειρομένη σωμάτων χυλοῖς. Ἐντεῦθεν, κύριε, καὶ τοὺς οὐκ ἀξίους ἀναγκάζομαι χωρεῖν. Χωρῆσαι θέλω, μεθ' ὧν φέρω πάντων καὶ θεόν. Χαρίσαι τῇ γῇ κἂν οὐ σεαυτὸν, οὐ γάρ σε χωρεῖν ὑπομένω, [e]σαυτοῦ τινὰ ἱερὰν ἀπόρροιαν. Στοιχείων τιμιωτέραν τῶν ἄλλων τὴν γῆν
[976] [f]μεταποίησον. Μόνῃ γὰρ αὐχεῖν τῶν ἀπό σου πρέπει τὰ πάντα παρεχούσῃ.

[g]Τοσαῦτα μὲν τὰ στοιχεῖα [h]εἶπον· ὁ δὲ θεὸς ἱερᾶς ἐν τῷ λέγειν φωνῆς τὰ σύμπαντα πληρώσας, Πορεύεσθε, εἶπεν, ἱερὰ καὶ [i]μεγάλου πατρὸς ἄξια τέκνα, καὶ κατὰ μηδένα τρόπον νεωτερίζειν ἐπιχειρεῖτε, μηδὲ [k]ἀργὸν τῆς ἐξ αὐτῶν ὑπηρεσίας [l]τὸν σύμπαντά μου κόσμον [m]καταλείπετε. Ἑτέρα

[u] δεσπότη] δέσποτα V. A. P.
[x] Post στοιχείων add. ἡμῶν V. A.
[y] ἡγεμὼν om. Heeren.
[z] τὰ ante πάντα deest V. A.
[a] ἀπ' ἀνθρώπων] ἀπ' delet Heeren. et mox καὶ ante φύσιν.
[b] δεχόμενον] δέχομαι V. A. E.
[c] Ὁ ἐπὶ πάντων] ὁ γὰρ πάντων Heeren. ἡ ἀπὸ πάντων ὁ ἐπιχ. Patrit.
[d] ἃ] ὃ V. A. E.
[e] ταυτοῦ] σαυτοῦ V. A. σαυτοῦ δὲ Patrit.
[f] μετεποίησαν] μεταποίησον Heeren. μετεποίησον Patrit.
[g] Post Τοσαῦτα add. μὲν V. A. P.
[h] εἶπον] εἶπεν A.
[i] μεγάλη] μεγάλου V. A.
[k] ἀργὸν] ἀργεῖν V.
[l] τὰ σύμπαντα] τὸν σύμπαντα V. A.
[m] καταλείπετε] καταλείπητε V. A.

γὰρ ἐν ὑμῖν τις ἤδη τῆς ἐμῆς ἀπόρροια φύσεως, [n]ὃς δὴ καὶ ὅσιος ἔσται τῶν πραττομένων ἐπόπτης, καὶ [o]ζώντων μὲν κριτὴς ἀμεθόδευτος, φρικτὸς δ' οὐ μόνον ἀλλὰ καὶ τιμωρὸς τῶν ὑπὸ γῆν τύραννος. Καὶ ἑκάστῳ δὲ τῶν [p]ἀνθρώπων ἀκολουθήσει διὰ γένους μισθὸς ἐπάξιος.

Καὶ οὕτως ἐπαύσαντο τῆς ἐντυχίας τὰ στοιχεῖα, τοῦ δεσπότου κελεύσαντος, καὶ ἐχεμυθίαν εἶχον· καὶ ἕκαστον αὐτῶν τῆς ἰδίας ἐξουσίας ἐκράτει καὶ ἐδέσποζε. Καὶ ἐκ τούτου εἶπεν Ὧρος, ὦ τεκοῦσα, πῶς οὖν τὴν τοῦ θεοῦ ἀπόρροιαν ἔχειν εὐτύχησεν ἡ γῆ; Καὶ εἶπεν Ἶσις, παραιτοῦμαι γένεσιν ἱστορεῖν· οὐ γὰρ θεμιτὸν σῆς σπορᾶς καταλέγειν ἀρχὴν, ὦ μεγαλοσθενὲς Ὧρε, ὡς μήποτε ὕστερον εἰς ἀνθρώπους [q]ἀθανάτων ἔλθῃ γένεσις θεῶν· πλὴν ὅτι ὁ μόναρχος θεὸς ὁ τῶν συμπάντων κοσμοποιητὴς καὶ τεχνίτης [r]τὸν μέγιστόν σου πρὸς ὀλίγον ἐχαρίσατο πατέρα Ὄσιριν, καὶ
[978] τὴν [s]μεγίστην θεὰν Ἶσιν, ἵνα τῶν πάντων [t]δεομένῳ κόσμῳ [u]βοηθοὶ γένωνται. Οὗτοι βίου τὸν βίον ἐπλήρωσαν· οὗτοι τὸ τῆς [x]ἀλληλοφονίας ἔπαυσαν ἄγριον· τεμένη προγόνοις θεοῖς αὐτοὶ καὶ θυσίας καθιέρωσαν· [y]νόμους οὗτοι καὶ τροφὰς θνητοῖς καὶ σκέπην ἐχαρίσαντο· οὗτοι τὰ κρυπτὰ, φησὶν Ἑρμῆς, τῶν ἐμῶν ἐπιγνώσονται γραμμάτων [z]πάντα καὶ διακρινοῦσι, καὶ τινὰ μὲν αὐτοὶ [a]κατασχῶσιν, ἃ δὲ καὶ πρὸς [b]εὐεργεσίας θνητῶν φθάνει, στήλαις καὶ ὀβελίσκοις

[n] ὡς] ὃς V. A.

[o] Post ζώντων add. μὲν V. A. P.

[p] ἄνθρωπον] –πων V. A. Mox ἐπαύσατο A.

[q] Post ἀθανάτων add. ἔλθῃ γένεσις θεῶν. πλὴν ὅτι ὁ μόναρχος θεός. ὁ τῶν συμπάντων κοσμοποιητὴς etc. V. A. Supra δήποτε Cant. marg. pro μήποτε.

[r] τι τὸν μέγιστον] τί τῶν μέγιστον A. τι om. Heeren.

[s] μεγίστη] –στην A.

[t] δεομένῳ] δεομένων A.

[u] βοηθὸν] βοηθοὶ V. A.

[x] Suspicari posses ἀλληλοφαγίας, ut supra in fragm. Moschionis p. [242.] sed præfero nostrum. cf. Wess. ad Diod. p. 17. HEEREN.

[y] Νόμον] νόμους V. A.

[z] πάντων] πάντα A.

[a] κατεσχῶσιν] κατασχῶσιν V. κατέχωσιν A. E.

[b] εὐεργεσίας] εὐεργεσίαν V.

χαράξουσιν· οὗτοι πρῶτοι δείξαντες δικαστήρια, εὐνομίας τὰ σύμπαντα καὶ δικαιοσύνης ἐπλήρωσαν· οὗτοι δεξιᾶς καὶ πίστεως ἀρχηγέται γενόμενοι, καὶ τὸν μέγιστον θεὸν Ὅρκον εἰσηγάγοντο εἰς τὸν βίον· οὗτοι τοὺς παυσαμένους τοῦ ζῆν, ὡς δέον ἐστὶν, ἐδίδαξαν περιστέλλειν· οὗτοι τὸ τοῦ θανάτου ζητήσαντες ἄγριον, ἔγνωσαν, ὡς τοῦ ἔξωθεν πνεύματος p. 125. φιλυποστρόφου τυγχάνοντος εἰς τὰ τῶν ἀνθρώπων πλάσματα, ἐὰν ὑστερήσῃ ποτὲ ἀνάκτησιν οὐκ [c] ἔχον, ἐργάζεται λειποθυμίας· οὗτοι τὸ περιέχον ὅτι δαιμόνων ἐπληρώθη παρ' Ἑρμοῦ μαθόντες, κρυπταῖς στήλαις ἐχάραξαν· οὗτοι μόνοι τὰς κρυπτὰς νομοθεσίας τοῦ θεοῦ παρ' Ἑρμοῦ μαθόντες, τεχνῶν καὶ ἐπιστημῶν καὶ ἐπιτηδευμάτων ἁπάντων εἰσηγηταὶ τοῖς ἀνθρώποις ἐγένοντο καὶ νομοθέται· οὗτοι παρ' Ἑρμοῦ μαθόντες ὡς τὰ κάτω συμπαθεῖν τοῖς ἄνω ὑπὸ [d] τοῦ δημιουργοῦ διετάγη, τὰς [e] προκαθέτους τοῖς ἐν οὐρανῷ μυστηρίοις
[980] ἱεροποιΐας ἀνέστησαν ἐν γῇ· οὗτοι τὸ φθόριμον τῶν σωμάτων [f] ἐπιγνόντες τὸ ἐν ἅπασι τέλειον τῶν προφητῶν ἐτεχνάσαντο, ὡς μήποτε ὁ μέλλων θεοῖς προσάγειν χεῖρας προφήτης ἀγνοῇ τι τῶν ὄντων· ἵνα φιλοσοφία μὲν καὶ μαγεία ψυχὴν τρέφῃ, σώζῃ δ' ὅταν τι πάσχῃ ἰατρικὴ σῶμα. Ταῦτα πάντα ποιήσαντες, ὦ τέκνον, Ὄσιρίς τε κἀγὼ, τὸν κόσμον πληρέστατον ἰδόντες, ἀπῃτούμεθα λοιπὸν ὑπὸ τῶν τὸν οὐρανὸν κατοικούντων, ἀλλ' οὐκ ἦν ἀνελθεῖν, πρὶν ἐπικαλέσασθαι τὸν μόναρχον, ἵνα δὴ καὶ τῆς θεωρίας ταύτης πλῆρες τὸ περιέχον γένηται, αὐτοί τε εὐπαράδεκτον [g] εὐτυχήσωμεν τὴν ἀνάβασιν. Χαίρει γὰρ ὕμνοις ὁ θεός, ὦ τεκοῦσα, εἶπεν Ὧρος, κἀμοὶ χάρισαι τὴν τοῦ ὕμνου ἐπίγνωσιν, ὡς μὴ ἀμαθὴς ὑπάρχω. Καὶ [h] εἶπεν Ἶσις, πρόσεχε, παῖ.

[c] ἔχον nempe τὸ πνεῦμα, rescripsi pro ἔχουσαν. HEEREN.
[d] τοῦ om. Heeren.
[e] προκαθέτους] προσκαθέτους A.
[f] ἐπιγνῶντες] ἐπιγνόντες V. A. E.
[g] εὐτυχήσωμεν] εὐτυχήσομεν sic V.
[h] εἶπεν] εἶν A.

45 Ἐν ταυτῷ.

Σὺ δὲ, ὦ παῖ μεγαλόψυχε, εἴ τι θέλεις ἕτερον, [a] ἐπερώτα. Καὶ εἶπεν Ὧρος, Ὦ πολυτίμητε μῆτερ, εἰδῆσαι θέλω, πῶς γίγνονται βασιλικαὶ ψυχαί; Καὶ εἶπεν Ἶσις, ἡ γιγνομένη, τέκνον Ὧρε, περὶ τὰς βασιλικὰς ψυχὰς διαφορὰ, τοιαύτη τίς ἐστιν. Ἐπεὶ γὰρ τόποι τέσσαρές εἰσιν ἐν τῷ παντὶ, [b] οἵτινες ἀπαραβάτῳ νόμῳ καὶ προστασίᾳ ὑπο-
[982] πίπτουσιν, ὅ τε οὐρανὸς, καὶ [c] αἰθὴρ, καὶ ὁ ἀὴρ, καὶ [d] ἡ ἱερωτάτη γῆ· καὶ ἄνω μὲν, ὦ τέκνον, ἐν οὐρανῷ θεοὶ κατοικοῦσιν, ὧν ἄρχει μετὰ καὶ τῶν ἄλλων πάντων ὁ τῶν ὅλων δημιουργός· ἐν δὲ τῷ αἰθέρι ἀστέρες, ὧν ἄρχει ὁ μέγας φωστὴρ ἥλιος· ἐν δὲ τῷ ἀέρι ψυχαὶ [e] μόναι, ὧν ἄρχει σελήνη· ἐπὶ δὲ τῆς γῆς ἄνθρωποι καὶ τὰ λοιπὰ ζῶα, ὧν ἄρχει ὁ κατὰ [f] καιρὸν γενόμενος βασιλεύς. Γεννῶσι γὰρ, ὦ τέκνον, βασιλεῖς οἱ θεοὶ ἐπαξίους τῆς ἐπιγείου γονῆς, καί εἰσιν οἱ ἄρχοντες τοῦ βασιλέως ἀπόρροιαι, ὧν [g] ὁ μᾶλλον ἐκείνῳ πλησίον, [h] ἐκεῖνος καὶ [i] τῶν ἄλλων βασιλικώτερος. Ὁ μὲν γὰρ ἥλιος, καθὸ ἐγγιόν ἐστι τοῦ θεοῦ τῆς σελήνης, ἐπιμείζων καὶ [k] δυναμικώτερος, ᾧ δευτερεύει ἡ σελήνη καὶ κατὰ τάξιν καὶ κατὰ δύναμιν. Καὶ ὁ μὲν βασιλεὺς τῶν μὲν ἄλλων θεῶν ἐστιν ἔσχατος, πρῶτος δὲ ἀνθρώπων· καὶ μέχρις ὅτου ἐπὶ γῆς ἐστι, τῆς μὲν ἀληθοῦς θειότητος ἀπήλλακται, ἔχει δὲ ἐξαίρετόν τι παρ' ἀνθρώποις, ὃ ὅμοιόν ἐστι τῷ θεῷ. Ἡ γὰρ εἰς αὐτὸν καταπεμπομένη ψυχὴ, ἐξ ἐκείνου ἐστὶ τοῦ χωρίου ὃ ὑπεράνω κεῖται ἐκείνων, ἀφ' ὧν εἰς τοὺς [l] ἄλλους

45.

[a] ἐπερώτα] ἐπερώτω A.
[b] εἴτινες] οἵτινες V. A.
[c] αἰθὴρ] ὁ αἰθὴρ Heeren.
[d] ἡ om. A.
[e] μόναι] δὲ μόναι V. δαϊμόνων A. cum δὲ μόναι in marg.
[f] καιρὸν] καιρὸς A.
[g] ὁ] οἱ A.
[h] οὗτος] ἐκεῖνος V. A.
[i] ὁ ante τῶν deest V. A.
[k] δυναμικώτερον] —τερος V. A.
[l] Post ἄλλους add. καταπέμπονται ἀνθρώπους καταπ. etc. V. A. E.

καταπέμπονται ἀνθρώπους. Καταπέμπονται δὲ ἐκεῖθεν [m]εἰς τὸ βασιλεύειν διὰ δύο ταῦτα αἱ ψυχαί, ὦ τέκνον. Αἱ γὰρ καλῶς καὶ ἀμέμπτως δραμοῦσαι τὸν ἴδιον αἰῶνα, [984] καὶ μέλλουσαι ἀποθεοῦσθαι, ἵνα κἂν τῷ βασιλεύειν τὴν τῶν [n]θεῶν προγυμνασθῶσιν ἐξουσίαν· αἱ [o]δὲ θεῖαι τινὲς ἤδη οὖσαι, καὶ ἐπὶ μικρῷ τινι παραθεμιστεύσασαι τὸν ἔνθεον γνώμονα, ἵνα μὴ κόλασιν μὲν ἐν τῷ σεσωματίσθαι ὑπομένωσι δι' ἀδοξίαν καὶ φύσιν, μηθὲν δὲ ὅμοιον τοῖς ἄλλοις [p]πάσχωσιν ἐνσωματισθεῖσαι, ἀλλ' ὅπερ εἶχον λελυμέναι, τοῦτο καὶ δεθεῖσαι [q]ἔχωσιν. Αἱ μέντοι περὶ τὰ [r]ἤθη τῶν βασιλευόντων γιγνόμεναι διαφοραὶ, οὐκ ἐν τῇ τῆς ψυχῆς κρίσει κρίνονται, πᾶσαι γὰρ θεῖαι· ἀλλ' ἐν τῇ τῶν δορυφορησάντων [s]αὐτῇ καταστάσει ἀγγέλων καὶ δαιμόνων. Αἱ p. 126. γὰρ τοιαῦται καὶ ἐπὶ τοιαῦτα κατερχόμεναι, δίχα προπομπῆς καὶ δορυφορίας οὐ κατέρχονται. Οἶδε γὰρ ἡ ἄνω δίκη τὴν ἀξίαν [t]ἑκάστῃ νέμειν, κἂν ἐκ τῆς εὐημερούσης χώρας ἀπωθῶνται. Ὅταν οὖν οἱ κατάγοντες αὐτὴν ἄγγελοι καὶ δαίμονες, τέκνον Ὧρε, πολεμικοὶ ὦσι, τούτων περικρατεῖν τῆς γνώμης ἡ ψυχὴ ἔχει, ἣ [u]ἐπιλαθομένη τῶν ἑαυτῆς ἔργων, μᾶλλον δὲ [x]μεμνημένη τούτων μέχρι τῶν τῆς ἑτέρας συνοδίας προσγεγονότων· ὅταν δὲ εἰρηνικοὶ, τότε καὶ αὐτὴ τὸν ἴδιον δρόμον [y]εἰρηνοποιεῖται· ὅταν δὲ δικαστικοὶ, τότε καὶ αὐτὴ δικάζει· ὅταν δὲ μουσικοὶ, τότε καὶ αὐτὴ

[m] εἰς τὸ] ὡς τὸ A.

[n] θεῶν om. A.

[o] δὲ, sensu postulante, addidi. HEEREN. et mox post μηθὲν.

[p] πάσχωσιν] Sic Heeren. vulgo πάσχουσιν.

[q] ἔχουσιν] ἔχωσιν V. A.

[r] ἤθη] ἤδη V. A.

[s] αὐτῇ καταστάσει, *in conditione angelorum qui eam comitantur*, edidi pro αὐτῆς τὴν κατάστασιν, quod nullo sensu cum Cant. habent codd. HEEREN. αὐτῆσ A.

[t] ἑκάστῃ] ἑκάστο A. et mox εὐημερούσῃ χ. ἀποθ.

[u] ἐπιλαθομένους] ἐπιλαθομένη V. A.

[x] μεμνημένοι] μεμνημένη V. A.

[y] Post εἰρηνοπ. add. ὅταν δὲ δικαστικοὶ, τότε καὶ αὐτὴ δικάζει V. A. P.

ᾄδει· ὅταν δὲ φιλαληθεῖς, τότε καὶ αὐτὴ φιλοσοφεῖ. Ὡς
[986] γὰρ ἐξ [z] ἀνάγκης αἱ ψυχαὶ αὗται τῆς τῶν καταγόντων περικρατοῦσι γνώμης, πίπτουσι γὰρ εἰς τὴν ἀνθρωπότητα, τῆς μὲν ἰδίας φύσεως ἐπιλαθόμενοι, [zz] καὶ παρόσον μακρὰν αὐτῆς [a] ἀπέστησαν, [b] μέμνηνται δὲ τῆς τῶν κατακλεισάντων αὐτὰς διαθέσεως. Καλῶς, εἶπεν Ὧρος, ἅπαντα μοι [[c] ἐδήλωσας] ὦ τεκοῦσα· πῶς δὲ εὐγενεῖς γίγνονται ψυχαὶ οὐδέπω μοι διηγήσω.

Ὃν τρόπον ἐπὶ γῆς, ὦ τέκνον Ὧρε, εἰσί τινες πολιτεῖαι διαφέρουσαι ἀλλήλων, οὕτως καὶ ἐπὶ τῶν ψυχῶν ἐστί. Καὶ αὗται γὰρ τόπους ἔχουσιν, ὅθεν ὁρμῶσι, καὶ ἡ ἀπὸ τοῦ ἐνδοξοτέρου τόπου ὁρμηκυῖα, εὐγενεστέρα ἐστὶ τῆς μὴ οὕτως ἐχούσης. Ὅνπερ γὰρ τρόπον ἐπ' ἀνθρώποις ὁ ἐλεύθερος εὐγενέστερος εἶναι δοκεῖ δούλου· (τὸ γὰρ ἐν ταῖς ψυχαῖς ὑπερέχον καὶ βασιλικὸν δουλοποιεῖ τὸ ὑπερεχόμενον ἐξ ἀνάγκης·) [d] οὕτω δὴ ὦ τέκνον, καὶ . . πῶς ἀρρενικαὶ καὶ θηλυκαὶ γίγνονται ψυχαί; Αἱ ψυχαὶ [e] ὦ τέκνον Ὧρε, ὁμοφυεῖς εἰσιν ἑαυταῖς, καθάπερ ἐξ ἑνὸς οὖσαι χωρίου, ἐν ᾧ αὐτὰς [f] διατυπεῦται ὁ δημιουργὸς, καὶ οὔτε εἰσὶν ἄρρενες οὔτε θήλειαι. Ἡ γὰρ τοιαύτη διάθεσις ἐπὶ σωμάτων γίγνεται, καὶ οὐκ ἐπὶ ἀσωμάτων. Ἡ δὲ διαφορὰ τοῦ τὰς μὲν βρι-
[988] μωδεστέρας εἶναι, τὰς δὲ εὐαφεῖς, ὁ ἀήρ ἐστι, τέκνον Ὧρε,

[z] ἀνάγκως] ἐξ ἀνάγης sic V. P. ἐξανάγκης A.

[zz] καὶ] αἱ A.

[a] ἐπέστησαν] ἀπέστησαν V. A.

[b] μέμνηται] μέμνηνται Heeren.

[c] [ἐδήλωσας] vel simile verbum hic excidisse, res ipsa docet; quare illud uncis inclusum addidi. HEEREN.

[d] οὕτω καὶ] Mancam hic esse orationem jam in Cant. edit. notatur. In codd. tamen nihil præsidii est, qui lacunam ne quidem indicant. Excidisse videntur pauca, v. c. οὕτως καὶ ταῦτα ἔχει. Πῶς δὲ ἔφη ἀρρενικαὶ etc. HEEREN. Illud καὶ dedit Heeren. de suo. Libri præbent οὕτω δή. Pergit A. ὦ τέκνον καὶ ἀρρενικαὶ καὶ θηλυκαὶ γίνονται ψυχαί ⁝. Tum rubris litteris, tamquam lemma, habet: πῶς ἀρρενικαὶ καὶ θηλυκαὶ γίνονται: deinde, αἱ ψυχαὶ, τέκνον κ. τ. λ.

[e] ὦ om. V.

[f] διατυποῦσαι] –ποῦται V. A. E.

ἐν ᾧ πάντα γίγνεται. Ἀὴρ δὲ ψυχῆς ἐστιν αὐτὸ τὸ σῶμα ὃ περιβέβληται, ὅπερ [g]στοιχεῖον ἐστὶ φύραμα γῆς, καὶ ὕδατος, καὶ ἀέρος, καὶ πυρός. Ἐπεὶ οὖν τὸ μὲν τῶν θηλειῶν σύγκριμα πλεονάζει μὲν [h]τῷ ὑγρῷ καὶ ψυχρῷ, λείπεται δὲ τῷ ξηρῷ καὶ θερμῷ, παρὰ τοῦτο ἡ εἰς τοιοῦτον πλάσμα συγκλειομένη ψυχὴ δίυγρος γίγνεται, καὶ τρυφερὰ, ὥσπερ ἐπὶ τῶν ἀρρένων τὸ ἐναντίον ἐστὶ γιγνόμενον εὑρεῖν. Ἐπὶ γὰρ τούτοις πλεονάζει μὲν τὸ ξηρὸν καὶ [i]τὸ θερμὸν, λείπεται δὲ τὸ ψυχρὸν καὶ τὸ ὑγρόν· διὰ τοῦτο [k]αἱ ἐν τοιούτοις σώμασι ψυχαὶ τραχεῖαι καὶ [l]ἐργατικώτεραί εἰσιν.

[m]Πῶς γίγνονται αἱ ψυχαὶ συνεταὶ, ὦ τεκοῦσα; Καὶ ἀπεκρίθη [n]Ἶσις· Τὸ ὁρατικὸν, ὦ τέκνον, περιβέβληται χιτῶσιν. Ὅταν οὗτοι οἱ χιτῶνες πυκνοὶ ὦσι καὶ παχεῖς, [o]ἀμβλυωπεῖ ὁ ὀφθαλμὸς, ἐὰν δὲ ἀραιοὶ καὶ λεπτοὶ, τότε ὀξυωπέστατα βλέπουσιν. Οὕτως καὶ ἐπὶ τῆς ψυχῆς. Ἔχει γὰρ καὶ αὐτὴ ἴδια περιβόλαια ἀσώματα, καθὸ καὶ αὐτὴ ἀσώματός ἐστι. Τὰ δὲ περιβόλαια ταῦτα [p]ἀέρες εἰσὶν, [q]οἱ ἐν ἡμῖν. Ὅταν οὗτοι ὦσι λεπτοὶ καὶ ἀραιοὶ καὶ διαυγεῖς, τότε συνετὴ ἡ ψυχή ἐστιν· ὅταν δὲ τοὐναντίον
[990] πυκνοὶ καὶ παχεῖς καὶ τεθολωμένοι, [r]τότε ὡς ἐν χειμῶνι ἐπὶ μακρὸν οὐ βλέπει, ἀλλὰ ταῦτα ὅσα [s]παρὰ ποσὶν κεῖται. Καὶ εἶπεν Ὧρος· διὰ τίνα οὖν αἰτίαν, ὦ τεκοῦσα, οἱ ἔξω

[g] στοιχείων rescripsi pro στοιχεῖον. HEEREN.

[h] Post τῷ ὑγρῷ add. καὶ ψυχρῷ V. A. P.

[i] τὸ ante θερμὸν deest V.

[k] καὶ ἐν] αἱ ἐν V. A.

[l] ἐνεργητικωτέραι] ἐργατικώτεραι V. A. P.

[m] Πῶς—Ἶσις] Hæc rubris litteris exarata exhibet A.

[n] Post Ἶσις add. πῶς γίνονται αἱ ψυχαί; V. A.

[o] ἀμβλυωπεῖ, quod sensus flagitat, rescripsi pro ὀξυωπεῖ [ὀξυοπεῖ A.] quod cum Cant. habet codd. HEEREN. ἀμβλυωπεῖ Cant. in marg.

[p] ἀέρες] Sic Heeren. tamquam ex V. A. ἄρες̈ A. ἄρες Cant.

[q] ὁ ἐν] οἱ ἐν V. A.

[r] Ante ὡς add. τότε V. A. P.

[s] παρὰ ποσὶν] Sic Cant. in marg. παρὰ πᾶσιν vulgo.

τῆς ἱερωτάτης ἡμῶν χώρας ἄνθρωποι ταῖς διανοίαις [t] οὐκ
ὄντως εἰσὶ συνετοὶ, ὡς οἱ ἡμέτεροι; Καὶ εἶπεν Ἶσις· ἡ γῆ μέσον
τοῦ παντὸς ὑπτία [u] κεῖται, καὶ κεῖται ὥσπερ ἄνθρωπος, οὐρανὸν
βλέπουσα, [x] μεμερισμένη δὲ, [y] καὶ ὅσα μέλη ὁ [z] ἄνθρωπος p. 127.
μελίζεται· [a] ἐμβλέπει δ' οὐρανῷ καθάπερ πατρὶ ἰδίῳ, ὅπως
ταῖς ἐκείνου μεταβολαῖς καὶ [b] αὐτὴ τὰ ἴδια [c] συμμετα-
βάλλῃ. Καὶ πρὸς μὲν τῷ νότῳ τοῦ παντὸς κειμένην ἔχει
τὴν κεφαλὴν, πρὸς δὲ τῷ ἀπηλιώτῃ τὸν δεξιὸν ὦμον, [πρὸς
δὲ λιβὶ τὸν εὐώνυμον [d]], ὑπὸ [e] τῆς ἄρκτου τοὺς πόδας, [τὸν
μὲν δεξιὸν ὑπὸ τὴν οὐρὰν,] τὸν δὲ εὐώνυμον ὑπὸ τὴν κεφαλὴν
τῆς ἄρκτου· τοὺς δὲ μηροὺς ἐν τοῖς μετὰ τὴν ἄρκτον· τὰ δὲ
μέσα ἐν τοῖς μέσοις. Καὶ τούτου σημεῖόν ἐστι, τὸ τοὺς μὲν
[992] νοτιαίους τῶν ἀνθρώπων, καὶ ἐπὶ τῇ κορυφῇ οἰκοῦντας,
[f] εὐκορύφους τε καὶ καλλίτριχας· τοὺς δὲ ἀπηλιωτικοὺς
πρὸς μάχην προχείρους εἶναι καὶ [g] τοξικούς· αἰτία γὰρ
τούτων ἡ δεξιὰ χεὶρ ἐστί· [h] τοὺς δὲ ἐν τῷ λιβὶ, ἀσφαλεῖς
εἶναι καὶ ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ἀριστερομάχους· καὶ ὅσον
ἄλλοι τῷ δεξιῷ μέρει ἐνεργοῦσιν, αὐτοὺς τῷ εὐωνύμῳ προστι-

[t] οὐκ ὄντως] οὐχ οὕτως ed. Heeren. et mox μέσῳ pro μέσον.

[u] Post κεῖται add. καὶ κεῖται ὥσπερ etc. V. A.

[x] μεμερισμένον] –μένη V. A.

[y] καὶ ὅσα μέλη ἄνθρωπος] καὶ ὅσα ὅσα μέλη ὁ ἄνθρωπος A. ὅσα μέλη καὶ ἄνθρωπος Heeren.

[z] Ante ἄνθρωπος add. ὁ V. A. E.

[a] ἐμβλέπει δ' οὐρανῷ et συμμεταβάλλει pro βλέπει δ' ἐν οὐρανῷ et συνμεταβάλοι habet cod. V. HEEREN.

[b] αὐτὴ] αὕτη V. A.

[c] συμμεταβάλοι] συμμεταβάλλῃ V. A.

[d] Quæ sequuntur manca sunt in codd. non minus quam ap. Cant. Primo post δεξιὸν ὦμον omnino supplendum est πρὸς δὲ λιβὶ τὸν εὐώνυμον, quod docent quæ mox sequuntur τοὺς δὲ ἐν τῷ λιβὶ etc. In sequentibus primum ὑπὸ τῆς ἄρκτου edidi pro ὑπὸ τοὺς ἄρκτους (leg. saltem ὑπὸ **τὰς** ἄρκτους) sed de *ursa majori* tantum sermonem esse, sequentia docent. Post τοὺς πόδας autem, cum statim sequitur τὸν δὲ εὐώνυμον ὑπὸ τὴν κεφαλὴν, necessario supplenda erant, τὸν δὲ δεξιὸν ὑπὸ τὴν οὐράν. HEEREN.

[e] τοὺς ἄρκτου] τὰς ἄρκτους A. P.

[f] Post εὐκορύφους add. τε V.

[g] τοξικοὺς] τοξιανοὺς V. A. E. P.

[h] τὰς] τοὺς V. A.

θεμένους· τοὺς δὲ ὑπὸ τὴν ἄρκτον [i]πρωτεύοντας τοὺς πόδας καὶ [k]ἄλλως εὐκνήμους· τοὺς δὲ μετὰ τούτους καὶ μικρῷ πόρρω [l]κατὰ τὸ νῦν Ἰταλικὸν κλίμα, καὶ τὸ ἑλλαδικὸν, πάντες δὲ οὗτοι [m]καλλίμηροί εἰσι, καὶ [n]εὐπωγωνότεροι, ὥστε τῇ τοῦ κάλλους τῶν [o]μερῶν τούτων ὑπερβολῇ καὶ τοὺς ἐνταῦθα ἀνθρώπους καταβαίνειν πρὸς τὴν τῶν ἀρρένων ὁμιλίαν. Πάντα δὲ [p]ταῦτα τὰ [q]μέρη πρὸς τὰ ἄλλα ἀργὰ ὄντα, ἀργοτέρους ἤνεγκε καὶ τοὺς [r]ἐπ' αὐτῶν ἀνθρώπους. [s]Ἐπειδὴ δὲ ἐν τῷ μέσῳ τῆς [t]γῆς κεῖται ἡ τῶν προγόνων [u]ἡμῖν ἱερωτάτη χώρα, τὸ δὲ μέσον τοῦ ἀνθρωπίνου σώματος μόνης τῆς καρδίας ἐστὶ σηκὸς, τῆς δὲ ψυχῆς ὁρμητήριόν ἐστι καρδία, παρὰ ταύτην τὴν αἰτίαν, ὦ τέκνον, [x]οἱ ἐνταῦθα [994] ἄνθρωποι τὰ μὲν ἄλλα ἔχουσιν οὐχ ἧττον ὅσα καὶ πάντες, ἐξαίρετον δὲ τῶν πάντων νοερώτεροί εἰσι καὶ σώφρονες, ὡς ἂν ἐπὶ καρδίας [y]γεννάμενοι καὶ τραφέντες. [z]Ἄλλως τε ὁ μὲν νότος, ὦ παῖ, δεκτικὸς [a]ὢν τῶν ἐκ τοῦ περιέχοντος συνισταμένων νεφῶν, [b]αὐτίκα γοῦν καὶ διὰ τὴν οὕτως αὐτῶν [c]γενομένην ἐκεῖ κατακομιδὴν, ἐκεῖθεν ῥεῖν λέγουσιν [d]ὡς τὸν ἡμέτερον, [e]πυκνουμένης ἐκεῖ τῆς [f]πάχνης· ὅπου δ' ἂν ἐμπέσῃ

[i] πρωτεύοντας τοὺς πόδας rescripsi pro πρός τινα τοὺς πόδας ap. Cant. Pro εὐπωγωνότεροι malim fere εὐπυγώτεροι, [ότεροι] *natibus præstantes*, quod jam vidit Barth. Adv. p. 808. HEEREN.

[k] ἄλλως] Sic Heeren. ἄλλους A. Cant.

[l] κατὰ τὸ νῦν] Sic Heeren. κατὰ om. A. Cant. Mox κλῆμα A.

[m] καλλίμηρος] καλλίμοιροι (η sup.) (sic) A.

[n] εὐπωγωνότεροι] εὐπωγονέστεροι V.

[o] μερῶν] μηρῶν A.

[p] ταῦτα] ταῦτα τὰ A.

[q] μέρη, *partes*, terræ scilicet, rescripsi pro μέλη. HEEREN.

[r] ἐπ' αὐτῶν] Sic Heeren. ἀπ' αὐτῆς A. Cant.

[s] Ἐπειδὴ] ἐπεὶ Heeren.

[t] Post γῆς add. κεῖται V. A.

[u] ἡμῖν] ἡμῶν Heeren.

[x] οἱ ἐνταῦθα] οἱ addidit Heeren.

[y] γενάμενοι] γεννάμενοι Heeren.

[z] Ἄλλος] ἄλλως V. A.

[a] ὄντων] ὢν τῶν V. A.

[b] αὐτίκα γοῦν καὶ] αὐτίκα γε Heeren.

[c] γενομένων] –μένην V.

[d] καὶ τὴν] καὶ τὸν A. ὡς pro καὶ Cant. in marg. καὶ τὸν ἡ. ποταμὸν Patrit.

[e] πυκνουμένης ἐκεῖ τῆς πάχνης, *pruina illic condensata*, bene codd. V. A. pro πολυομένης ἐκεῖ τῆς τέχνης·

νεφέλη, τὸν ἐπικείμενον ἤχλυσεν ἀέρα, καὶ τρόπον τινὰ καπνοῦ [g]κατεκόμισε, καπνὸς δὲ ἡ ἀχλὺς οὐ μόνον [h]ὀμμάτων ἐστὶν ἐμπόδιον, ἀλλὰ καὶ νοῦ. Ὁ δὲ ἀπηλιώτης, ὦ μεγαλόδοξε Ὧρε, τῇ [i]συνεχεῖ τοῦ ἡλίου ἀνατολῇ θορυβούμενος καὶ ἐκθερμαινόμενος, ὁμοίως δὲ καὶ ὁ ἀντικείμενος τούτῳ λὶψ μετέχων τῶν αὐτῶν κατὰ δυσμὰς, οὐδεμίαν εἰλικρινῆ ἐπίστασιν ποιοῦνται [k]τῶν παρ' αὐτοῖς [l]γεννωμένων ἀνθρώπων. Ὁ δὲ βορέας τῇ συμφώνῳ ψυχρίᾳ ἀποπήσσει μετὰ τῶν σωμάτων καὶ τὸν νοῦν τῶν [m]ὑπ' αὐτὸν ἀνθρώπων. Τὸ δὲ μέσον τούτων εἰλικρινὲς ὂν καὶ ἀτάραχον, [n]ἑαυτῷ [o]προλέγει καὶ τοῖς ἐν αὐτῷ πᾶσι. Τῇ γὰρ συνεχεῖ ἀμεριμνίᾳ γεννᾷ καὶ κοσμεῖ καὶ παιδεύει, καὶ μόνον τοῖς τοσούτοις ἐρίζει, καὶ [p]νικᾷ, καὶ [q]ἐπισταμένως τὴν ἰδίαν νίκην ὥσπερ σατράπης ἀγαθὸς [r]τοῖς νενικημένοις ἐπιδίδωσι.

[996] Καὶ τοῦτό μοι, κυρία μῆτερ, ἔκθου· παρὰ ποίαν αἰτίαν, ἔτι ζώντων ἀνθρώπων ἐν ταῖς μακραῖς νόσοις καὶ ὁ λόγος [s]καὶ αὐτὸς ὁ λογισμὸς καὶ αὐτὴ ἡ ψυχὴ ἔσθ' ὅτε βλάπτεται; Καὶ ἀπεκρίθη Ἶσις· τῶν ζώντων, ὦ τέκνον, τὰ μὲν ᾠκείωται πρὸς τὸ πῦρ, τὰ δὲ πρὸς τὸ ὕδωρ, τὰ δὲ πρὸς ἀέρα, τὰ δὲ πρὸς γῆν, τὰ δὲ πρὸς τούτων δύο ἢ τρία, τὰ δὲ καὶ πρὸς τὰ ὅλα. Πάλιν [t]αὖ τὰ μὲν [u]ἀπηλλοτρίωται

qui iidem recte modo antea exhibent γενομένην pro γενομένων. HEEREN. πολυομένης diserte A.

[f] τέχνης] πάχνης V. A.

[g] κατεκόμησε] –μισε V. A.

[h] ὀμμάτων] Sic Cant. in marg. ὀνομάτων A. Cant.

[i] συνεχῆ] συνεχεῖ A.

[k] Ante παρ' add. τῶν V. A.

[l] γενομένων] γενώμένων A.

[m] ὑπ' αὐτῶν] ὑπ' αὐτὸν V. A.

[n] καὶ αὐτῷ] ἑαυτῷ V. A. P.

[o] προλέγει] Legendum forte προνοεῖ, *et sibi prospicit et aliis*. HEER.

[p] νικεῖ] νικᾷ V. A.

[q] ἐπιστάμενον] Emendavi ἐπισταμένως *scite, perite*. Σατράπης omnino hic dictum est pro *imperatore* ac *victore*. HEEREN.

[r] τοῖς] καὶ τοῖς ed. Heeren. νενικημένοις καὶ A.

[s] καὶ αὐτὸς ὁ λογισμὸς om. Heeren.

[t] αὖ τὰ Cant. in marg. pro αὐτά.

[u] ἀπηλλωτρίωται] ἀπηλλοτρίωται V. A.

τοῦ πυρὸς, τὰ δὲ τοῦ ὕδατος, τὰ δὲ τῆς γῆς, τὰ δὲ τοῦ ἀέρος, τὰ δὲ δύο τούτων, τὰ δὲ τριῶν, τὰ δὲ τῶν ὅλων. Οἷον ἀκρὶς μὲν, ὦ τέκνον, καὶ πᾶσα μυῖα φεύγει τὸ πῦρ· ἀετὸς καὶ κίρκος, καὶ ὅσα [x]ὑψιπετέστερά ἐστιν τῶν ὀρνέων, φεύγει τὸ ὕδωρ· ἰχθύες ἀέρα καὶ γῆν· ὄφις τὸν ἀέρα τὸν εἰλικρινῆ ἀποστρέφεται. Φιλοῦσι [y]δὲ τὴν μὲν γῆν οἱ [z]ὄφεις, καὶ ὅσα ἕρπει· τὸ δὲ ὕδωρ τὰ [a]νηκτὰ πάντα· τὸν δὲ ἀέρα, τὰ πτηνὰ, [b]ἐν ᾧ καὶ πολιτεύεται, τὸ δὲ πῦρ, ὅσα ὑπερπετῆ ἐστι, καὶ ἐγγὺς τὴν [c]δίαιταν ἔχει. Οὐ μὴν ἀλλὰ καί τινα p. 128.
τῶν ζώων φιλεῖ τὸ πῦρ· [d]οἷον αἱ σαλαμάνδραι, ἐν γὰρ τῷ πυρὶ καὶ φωλεύουσιν. Ἕκαστον γὰρ τῶν στοιχείων περιβολή ἐστι τῶν σωμάτων. Πᾶσα οὖν ψυχὴ ἐν τῷ σώματι οὖσα βαρεῖται καὶ θλίβεται τοῖς τέτταρσι τούτοις. Καὶ
[998] γὰρ εἰκός ἐστι καὶ ταύτην τισὶ μὲν τούτων τέρπεσθαι, τισὶ δὲ ἄχθεσθαι. Διὰ τοῦτο οὖν οὐκ ἔχει αὐτῆς τὴν ἀκροτάτην εὐδαιμονίαν· ἀλλ' ὡς ἂν φύσει θεία οὖσα, κἀν τούτοις οὖσα μάχεται καὶ νοεῖ, ἀλλ' οὐχ [e]ὅσα ἂν ἐνόησεν, ἀσύνδετος οὖσα σωμάτων. Ἐὰν μέντοι καὶ ταῦτα σάλον λάβῃ καὶ ταραχὴν, ἤτοι ἀπὸ νόσου [f]ἢ φόβου, τότε καὶ αὐτὴ ὥσπερ ἐν βυθῷ ἄνθρωπος ἐπικυμαίνεται, καὶ οὐδὲν [g]ἑστάμενον φέρει.

46 Περὶ τῆς τῶν ψυχῶν διαγωγῆς μετὰ τὴν ἀπὸ τοῦ σώματος ἔξοδον. Χρησμός.

Σῶμα λυθὲν, ψυχήν τε λιπὸν [a]καὶ γαῖα γενηθὲν
οὐκ ἔτι πρὸς [b]βιότοιο παλίνδρομον οἶδε κέλευθον,

[x] ὑψιπέτερα] Sic A. Cant. Dedi ὑψιπετέστερα.
[y] καὶ τὴν] δὲ τὴν V. A. γὰρ τὴν Cant. in marg.
[z] ὄφεις] ὄφις V.
[a] νηκτὰ] κινητὰ V. A. P.
[b] ἐν ᾧ] Sic Heeren. ἐν οἷς A. Cant.
[c] δίαιταν] Post h. v. ἔχει addidit Heeren.
[d] ὧν] οἷον V. A.
[e] ὅσα ἂν rescripsi pro ὅσα ἃ. HEEREN.
[f] καὶ φόβου] ἢ φόβου V. A.
[g] ἑστάμενον] ἐνστάμενον A.

46.

[a] καὶ ἀγεννηθὲν] καὶ γῆ γεννηθὲν Grotius. καὶ γαῖα γενηθὲν Heeren.
[b] βιότοιο] βιότιον A.

ἀλλὰ τὸ μὲν λυθέν ἐστι [c]κόνις, ψυχὴ δὲ πρὸς αἴθραν
σκίδναται, ὁππόθεν ἦλθε, μετήορος [d]αἰθέρ' ἐς ἁπλοῦν.
[1000] [e]Ἄλλος δ' ἐξ ἄλλου [f]γεννώμενος ἠδ' [g]ἀναβλαστῶν,
[h]ψυχοῦται γονίμου φύσεως ἀροτρεύμασι [i]καινοῖς.

47 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Ἀξιόχου [p. 371.]

Εἰ δὲ καὶ ἕτερον βούλει λόγον ἀκοῦσαι, ὃν ἐμοὶ ἤγγειλε Γωβρύης, ἀνὴρ μάγος, ὃς ἔφη κατὰ τὴν Ξέρξου διάβασιν τὸν πάππον αὐτῷ καὶ ὁμώνυμον πεμφθέντα εἰς Δῆλον, ὅπως τηρήσειε τὴν νῆσον ἄσυλον ἐν ᾗ δύο θεοὶ ἐγένοντο, ἐκ τινῶν χαλκέων δέλτων, ἃς Ὑπερβορέων ἐκόμισαν Ὦπις καὶ Ἑκάεργος, ἐκμεμαθηκέναι τε κατὰ τὴν τοῦ σώματος λύσιν τὴν ψυχὴν εἰς τὸν ἄδηλον χωρεῖν τόπον καὶ τὴν ὑπόγειον οἴκησιν, ἐν ᾗ βασίλεια Πλούτωνος οὐχ ἥττω τῶν Διὸς, ἅτε τῆς γῆς μὲν ἐχούσης τὰ μέσα τοῦ κόσμου, τοῦ πόλου δὲ ὄντος σφαιροειδοῦς· οὗ τὸ μὲν ἕτερον ἡμισφαίριον θεοὶ ἔλαχον οὐράνιοι, τὸ δὲ ἕτερον οἱ ὑπένερθεν· οἱ μὲν ἀδελφοὶ ὄντες, οἱ δὲ ἀδελφῶν παῖδες. Τὰ δὲ προπύλαια τοῖς εἰς Πλούτωνος [a]ὁδοῦσι σιδηροῖς τείχεσι καὶ κλεισὶ διωχύρωται. Ταῦτα δὲ ἀνοίξαντα ποταμὸς Ἀχέρων ἐνδέχεται, μεθ' ὃν Κώκυτος· οὓς χρὴ πορθμευθέντες ἀχθῆναι ἐπὶ Μίνω καὶ Ῥαδάμανθυν ἐν πεδίῳ ᾧ κλήζεται ἀληθείας. Καθέζονταί δὲ δικασταὶ, ἀνακρίνοντες τῶν ἀφικνουμένων ἕκαστον τίνα βίον βεβίωκε, καὶ τισιν ἐπιτηδεύμασιν [b]ἐνῳκίσθη τῷ σώματι. Ψεύσασθαι δὲ ἀμήχανον. Οἷς μὲν οὖν ἐν τῷ ζῆν δαίμων ἀγαθὸς ἐπέπνευσεν, εἰς τὸν τῶν εὐσεβῶν χῶρον λογίζονται· ἔνθα ἄφθο-

[c] κενῆς, ἡ δὲ πρὸς] κενὴ κόνις, ἡ δὲ Grotius. κόνις, ψυχὴ δὲ Heeren.

[d] εἰς αἰθέρα πλοῦς] εἰς αἰθέρ' ἁπλοῦν V. A. αἰθέρ' ἐς ἁπλοῦν Grotius.

[e] Ἄλλο] ἄλλος V. A. E.

ib. Ἄλλο δ' ἐξ ἄλλου γεννώμενος ἠδ' ἐναβλαστῶν] ἄλλος δ' ἐξ ἄλλου γεννώμενος ἠδ' ἀναβλαστῶν Wakefield. ad Lucret. III. 860. Sic dudum Grotius.

[f] γεννώμενος] γεννάμενος A.

[g] ἐναβλ.] ἀναβλαστῶν A.

[h] ψυχοῦνται] ψυχοῦται V. A.

[i] κενοῖς] καινοῖς V. A.

47.

[a] ὁδοῦσι] Sic A. an ὁδεύουσι? τῆς —ὁδοῦ Plat.

[b] ἐν ᾧ κίσθω A.

νοι μὲν ὧραι παγκάρπου γονῆς βρύουσι, πηγαὶ δὲ ὑδάτων, παντοῖοι δὲ λειμῶνες εὐάνθεσι ποικίλοις ἐαριζόμενοι, διατριβαὶ δὲ ποιητῶν, καὶ θέατρα φιλοσόφων, καὶ ἐγκύκλιοι χοροὶ, καὶ μουσικὰ ἀκούσματα, συμπόσιά τε εὐμενῆ, καὶ εἰλαπίναι ἀποχορήγητοι, καὶ ἀκήρατος [b] ἀλυπία, καὶ ἡδεῖα δίαιτα. Οὔτε γὰρ χεῖμα σφοδρὸν οὔτε θάλπος ἐγγίνεται, ἀλλ' εὔκρατος ἀὴρ χεῖται ἁπαλαῖσιν ἀκτῖσιν ἡλίου ἀνακινούμενος· καὶ τοῖς ἐνταῦθα μεμυημένοις ἐστί τις προεδρία· καὶ τὰς ὁσίους ἁγιστείας κἀκεῖ συντελοῦσι. Πῶς οὖν οὐ σοὶ πρώτῳ μέτεστι τῆς τιμῆς ὄντι γεννήτῃ τῶν θεῶν; καὶ γὰρ τοὺς περὶ Ἡρακλέα καὶ Διόνυσον κατιόντας εἰς Ἅιδην, πρότερον ἐνθάδε λόγος μυηθῆναι, καὶ τὸ θάρσος τῆς ἐκεῖσε πορείας παρὰ τῆς Ἐλευσινίας ἐναύσασθαι. Ὅσοις δὲ τὸ ζῆν διὰ κακουργημάτων [c] ἠλάθη, ἄγονται πρὸς Ἐρινύων εἰς Ἔρεβος καὶ χάος διὰ Ταρτάρου· ἔνθα χῶρος ἀσεβῶν, καὶ Δαναΐδων ὑδρεῖαι ἀτελεῖς, καὶ Ταντάλου δίψος, καὶ Τιτύου σπλάγχνα [d] αἰωνίως ἐσθιόμενα καὶ γεννώμενα, καὶ Σισύφου πέτρος ἀνήνυτος· οὗ τὰ τέρματα αὖθις ἄρχεται τῶν πόνων. Ἔνθα θηρσὶ περιλιχμώμενοι, καὶ δασὶν ἐπιμόνως πυρούμενοι Ποινῶν, καὶ πᾶσαν αἰκίαν αἰκιζόμενοι, ἀϊδίοις τιμωρίαις τρύχονται.

48 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ. [Patrit. p. 10.]

Οὐκ ἤκουσας ἐν τοῖς γενικοῖς, ὅτι ἀπὸ μιᾶς ψυχῆς, τῆς 32
τοῦ παντὸς, πᾶσαι αἱ ψυχαί εἰσιν αὗται, [a] αἱ ἐν τῷ παντὶ
κόσμῳ κυλινδούμεναι, ὥσπερ [b] ἀπονενεμημέναι; Τούτων τοί- 35
νυν τῶν ψυχῶν πολλαὶ αἱ μεταβολαὶ, τῶν μὲν εἰς τὸ εὐτυχέστερον, τῶν δὲ εἰς τὸ ἐναντίον. Αἱ μὲν γὰρ ἑρπετώδεις

[b] ἀλυπεία A. Supra l. αὐτοχ. cum Plat.
[c] ἠλᾶσθη A.
[d] αἰώνιος A.

48.

[a] αἱ ἐν] αἱ addidit Heeren. αὔται ἐν Patrit.
[b] ἀπονενεμηκυῖαι; *divisæ, distributæ*, dedi ex Patrit. pro ἀπονενεμηκέναι. HEEREN. Infra μεταβάλλονται Patrit. et τῶν ἐνύδρων.

οὖσαι εἰς ἔνυδρα μεταβάλλουσιν, αἱ δὲ ἔνυδροι εἰς χερσαῖα, [1002] αἱ δὲ χερσαῖαι εἰς πετεινά, αἱ δὲ ἀέριαι εἰς ἀνθρώπους, αἱ δὲ [bb]ἀνθρώπιναι ἀρχὴν ἀθανασίας ἴσχουσιν εἰς δαίμονας μεταβάλλουσαι, εἶτ' ἂν οὕτως εἰς τὸν τῶν θεῶν [c]χορόν· χοροὶ δὲ δύο θεῶν, ὁ μὲν τῶν πλανωμένων, ὁ δὲ τῶν ἀπλανῶν. Καὶ αὕτη ψυχῆς ἡ τελειοτάτη δόξα. Ψυχὴ δὲ εἰς [cc]ἀνθρώπους ἐλθοῦσα, ἐὰν κακὴ [d]μείνῃ, οὔποτε τεύξεται ἀθανασίας, παλίσσυτος δὲ τὴν ὁδὸν ὑποστρέψει τὴν ἐπὶ τὰ ἑρπετά. Καὶ αὕτη καταδίκη ψυχῆς κακῆς. Κακία δὲ ψυχῆς κακῆς [e]ἀγνωσία. Ψυχὴ γὰρ μηδὲν ἐπιγνοῦσα τῶν ὄντων, μηδὲ τὴν τούτων φύσιν, μηδὲ τὸ ἀγαθόν, τυφλώττουσα δὲ [f]ἐντινάσσει τοῖς σωματικοῖς πάθεσι, καὶ [g]ἡ κακοδαίμων ἀγνοήσασα ἑαυτὴν [h]δουλεύει σώμασιν ἀλλοκότοις καὶ μοχθηροῖς, ὥσπερ φορτίον βαστάζουσα τὸ σῶμα, καὶ οὐ κατάρχουσα ἀλλ' ἀρχομένη. Αὕτη [i]καταδίκη ψυχῆς.

49 Τοῦ αὐτοῦ. [Patrit. p. 11 b.]

Ψυχὴ δὲ ἀνθρωπίνη πᾶσα μὲν [a]οὐ, ἡ δ' εὐσεβής, δαιμονία τίς ἐστι καὶ θεία. Καὶ ἡ τοιαύτη καὶ [b]μετὰ τὸ ἀπαλλα- p. 129. [1004] γῆναι τοῦ σώματος, τὸν τῆς εὐσεβείας ἀγῶνα ἀγωνισαμένη, (ἀγὼν δὲ εὐσεβείας, τὸ γνῶναι τὸ θεῖον, καὶ μηδένα [c]ἀνθρώπων ἀδικῆσαι,) ὅλη νοῦς γίγνεται. Ἡ δὲ [d]ἀσεβὴς ψυχὴ μένει ἐπὶ τῆς ἰδίας οὐσίας ὑφ' ἑαυτῆς κολαζομένη, καὶ

bb ἀνθρώπειαι τῆς ἀθανασίας ἔχουσαι ε. δ. μεταβάλλονται, εἶθ' οὕτως εἰς τῶν ἀπλανῶν θεῶν χορὸν χορεύουσι. Patrit.

c χῶρον, χῶροι] χῶρον χῶρον A.

ib. χορὸν et χοροὶ bene habet Patrit. pro χῶρον et χῶροι ap. Cant. HEEREN.

cc ἀνθρώπου σῶμα εἰσελ. Patrit.

d μείνῃ] μένῃ V. Mox οὔτε γεύσεται ἀ. οὔτε τοῦ ἀγαθοῦ μεταλαμβάνει. Παλίσυρτος δ. τ. ὁ. ὑποστρέφει τὴν εἰς Patrit.

e Ante ἀγνωσία add. κακῆς A. ubi ἀγνοσία.

f ἐντινάσσει intransitive, pro *impingit*, ut recte vertit Patrit. subintellecto ἑαυτήν. HEEREN.

g ἡ om. Heeren.

h δουλεύσει] δουλεύει V. A. E.

i καταδίκη] κατὰ A. κακία Patrit.

49.

a οὐ deest A. sed cum ∴ . Dedit Heeren. ex E. οὐ πᾶσα μὲν Patrit.

b Post μετὰ add. τὸ V. E. μετὸ A.

c ἀνθρώπων om. A.

d ἀσεβὴς] ἀσεβοῦς V. A.

γήϊνον σῶμα ζητοῦσα εἰσελθεῖν, [c] εἰς ἀνθρώπινον δὲ, ἄλλο γὰρ σῶμα οὐ χωρεῖ ἀνθρωπίνην ψυχὴν, οὐδὲ θέμις ἐστὶν εἰς ἀλόγου ζώου σῶμα ψυχὴν ἀνθρωπίνην καταπεσεῖν· θεοῦ [f] γὰρ νόμος οὗτος, [g] φυλάσσειν ψυχὴν ἀνθρωπίνην ἀπὸ τῆς τοιαύτης ὕβρεως.

50 Πορφυρίου ἐκ τῶν περὶ Στυγός.

Τοῦ δὲ [a] Ἀπολλοδώρου ἐν τῷ [b] εἰκοστῷ [c] περὶ τῶν θεῶν [d] συγγράμματι, ὅ ἐστι περὶ τοῦ Ἅιδου, τάδε περὶ τῆς Στυγὸς λεγόμενα [e] εὕρομεν·—[ee] ἀρκτέον γὰρ ἀπὸ τούτων, τῆς τε
[1006] [f] ἐκ τῶν ὀνομάτων [g] παρεμφάσεως οὐ καταφρονητέον. Ἐκ γὰρ τοιούτων ὁρμώμενοι [h] πιθανῶς καὶ τοὺς ἐν Ἅιδου νομιζομένους ποταμοὺς κατωνομάκασιν· Ἀχέροντα μὲν διὰ τὰ ἄχη, ὡς καὶ [i] Μελανιππίδης ἐν Περσεφόνῃ·

Καλεῖται δ' ἐν κόλποισι γαίας
[k] ἄχεα προχέων Ἀχέρων.

[l] Ἐπεὶ καὶ [m] Λικύμνιός φησι·

[c] εἰς om. Heeren. γήϊνον σῶμα ζ. εἰς ὃ εἰσέλθῃ ἀνθρώπειον Patrit.

[f] ὁ νόμος] γὰρ νόμος V. A. P.

[g] φυλάσσει] φυλάσσειν V. A.

50.

[a] Ἀπολλοδώρου] Vide Apollodori Fragmenta apud Heynium T. I. p. 391. Τοῦ δὴ Ἀπ. A. Cant.

[b] εἰκόστῳ] κ̄ῳ A.

[c] τοῖς περὶ] τοῖς deest V. A.

[d] συγγράμμασι] –ματι V. A. E.

[e] εὕρωμεν] εὕρομεν V. A.

[ee] Quæ sequuntur ἀρκτέον etc. si ea jam pro Apollodori verbis accipias, nihil habent ex quo pendeant. Recte itaque judicat Heynius, vel hic nonnulla excidisse, vel ea quæ sequuntur usque ad κατωνομάκασι Porphyrii adhuc verba esse, parentheseos loco habenda. Attamen vel sic vix patet quomodo ab iis quæ sequuntur Porphyrius initium exscribendi facere potuisset. Præfero itaque prius, atque ante ἀρκτέον nonnulla periisse puto, in quibus se de Styge, ac reliquis locorum inferorum fluviis eorumque nominibus verba facturum esse, promiserat. HEEREN.

[f] ἐκ τῶν] ἐκ om. Heeren.

[g] παρεκφάσεως] παρεμφάσεως V. A.

[h] πιθανῶς rescripsi pro πιθανῶν. HEEREN.

[i] Μελανιππίδης] Vid. Fragm. Bergk. p. 848.

[k] ἀχαιοῖσι] ἀχεοῖσι V. A. E. ἄχεα Grotius.

[l] Ἐπεὶ καὶ Λικυμῖοι] ἐπεὶ καὶ Λικύμνιος V. A. ἔτι καὶ Λικύμνιος Galeus Diss. de Script. Myth. p. 28.

[m] Vide Bergkium p. 839. Ex Euripidis Licymnio hæc petita existimat Valckenærius Diatr. Eurip. p. 17.

Μυρίαις [n]παγαῖς δακρύων Ἀχέρων [o]ἀχέων τε βρύει.

Καὶ πάλιν·

Ἀχέρων ἄχεα πορθμεύει βροτοῖσι.

[1008] Ἀχέρων δὲ καὶ Ἀχερουσία λίμνη ταυτὸν, ὡς [p]ὁ [q]Σοφοκλῆς ἐν Πολυξένῃ [r]τὴν τοῦ Ἀχιλλέως ψυχὴν εἰσάγει λέγουσαν,

[s]Ἀκτὰς ἀπαιῶνάς τε καὶ [t]μελαμβαθεῖς
[u]λιποῦσα λίμνης ἦλθον ἠχούσης γόους
Ἀχέροντος ὀξυπλῆγας ἄρσενας χοάς.

[x][Ἀκ]τὰς τῶν νεκρῶν λέγων παιῶν' οὐκ ἐχούσας, ἄρσενας δὲ [1010] [χοὰς] τὰς οὐδὲν ἐκτρεφούσας. Θήλεα μὲν γὰρ τὰ καρποφόρα, [z]ἄρσενα δὲ τὰ [a]ἄκαρπα [b]ἐλέγοντο, [[c]διὰ] τὸ μὲν τὸ σπέρμα παρέχειν μόνον, τὴν δὲ καὶ ἐκτρέφειν. [d]Ὅθεν καὶ

n πάσαις] παγαῖς Grotius.

o ἀχέων τε] Ἀχέρων τε V. δακρύων ἀχέων τε A.

p καὶ] ὁ V. A. E.

q Σοφοκλῆς] n. 469. Dindorf.

r τὴν τοῦ] τὴν addidit Heeren.

s ὧ τὰς] ᾧ τὰς Grotius. ἀκτὰς ex Jacobsii et Heynii Excurs. IX. ad Æn. VI. p. 803. em. ed. Heeren.

t μελαμβαφεῖς] μελαμβαθεῖς V. A.

u λιποῦσα λίμνης] Hos duos versus pessime se habentes trajectione vocum et levi mutatione sanasse mihi videor. Sic enim habebant: λιποῦσα λίμνης Ἀχέροντος ὀξυπλῆγας ἠχοῦσα [ἐχούσας A.] γόους ἦλθον ἄρσενας χοάς. GROTIUS. qui dedit λίμνας ἠχούσας γόοις—ὀξυπλῆγος.

x Nullo sensu habet Cant. et codd. τὰς τῶν νεκρῶν λέγων παιῶν' οὐκ ἐχούσας· ἄρσενας δὲ τὰς οὐδὲν ἐκτρεφούσας, unde suspicatur Heyn. post νεκρῶν lacunam esse. Sed sensus sanus erit si pro τὰς legeris ἀκτὰς, quod res ipsa postulat, cum supra ἀκταὶ Acherontis dictæ essent ἀπαιῶνες. In proximis vero ante τὰς supplevi χοὰς, eandem ob causam. Sunt vero χοαὶ non modo *inferiæ*, sed *ipsa* quoque *sepulcra*, ubi illæ offeruntur, adeoque omnino defunctorum sedes. HEEREN.

z Post ἄρσενα add. δὲ V. A.

a ἄγονα] ἄκαρπα A.

b λέγονται] ἐλέγοντο V. A.

c Supplevi διὰ et edidi παρέχειν pro παρέχον. Plenior oratio erat, notante jam Heynio: διὰ τὸ μὲν ἄρρεν τὸ σπέρμα παρέχειν μόνον, τὴν δὲ θήλειαν καὶ ἐκτρέφειν. HEEREN.

d Respicit ad Od. ε΄. 467. et forte ad Hesiod. Scut. Herc. v. 395.—ᾧ τε πόσις καὶ βρῶσις θῆλυς ἐέρση, ubi cf. Græv. lect. Hes. c. 19.—Hesych. θῆλυς ἐέρση, ἡ δρόσος, θάλλειν τὰ φυτὰ ποιοῦσα καὶ θρεπτική. Ubi cf. interpp. HEEREN.

θῆλυς ἐέρσῃ, ἡ πολύγονος καὶ τροφίμη. Διαπεραιοῦσθαι δὲ ὑπὸ τῶν ἀπογινομένων [e] τὸν Ἀχέροντά φασιν εἰκότως. Ὁ γὰρ μετηλλαχὼς [f] πάντα τὰ τοῦ ζῆν ἄχη σχεδὸν ὑπερῆρται, καὶ ἔστιν ἐν [g] ἀπονίᾳ καὶ ἀλυπίᾳ πάσῃ. [h] Γοργύραν δὲ τοῦ Ἀχέροντος γυναῖκα προσανέπλασαν, ἀπὸ τοῦ [i] γοργὰ φαίνεσθαι τοῖς πολλοῖς τὰ ἐν Ἅιδου· καθὸ [k] δὴ καὶ αὐτοῦ τούτου τιθήνην ὁ Σώφρων Μορμολύκαν [l] ὠνόμασε.

[m] Ταῦτ' εἰπὼν περὶ τοῦ Ἀχέροντος Ἀπολλόδωρος, ἐπάγει περὶ τῆς Στυγὸς αὐταῖς λέξεσι τάδε· Στύγα δὲ δεινήν τινα καὶ φοβερὰν ὑποστησάμενοι δαίμονα, θεῶν [n] ὅρκον, ἐν Ἅιδου τε ταύτην κατῴκισαν, καὶ τῆς προσηγορίας ταύτης ἠξίωσαν,
[1012] ἀπὸ τοῦ στυγνάζειν τοῖς πένθεσι, καὶ στύγεσθαι τὰ ἐν Ἅιδου. Ὅρκον δὲ τῶν θεῶν δι' ἐναντιότητα. Ἡ μὲν γὰρ τῶν ὄντων τε καὶ ζώντων [o] φθαρτικὴν ἔχει δύναμιν, ὅσον ἐφ' ἑαυτῇ, οἱ δὲ τῇ τε προαιρέσει καὶ τῷ τρόπῳ διεστήκασι.

Τοσαῦτα περὶ τῆς Στυγὸς εἰπὼν ἐπάγει· Κωκυτὸν δὲ [p] ποταμὸν ἀνέπλασαν ἀπὸ τοῦ κωκύειν, ὅς ἐστι Στυγὸς καὶ [q] στυγνάσεως ἀπορρώξ. Τοιούτου δέ ἐστι γένους καὶ ὁ Πυριφλεγέθων. Εἴρηται γὰρ ἀπὸ τοῦ πυρὶ φλέγεσθαι τοὺς τελευτῶντας, ὡς Ὅμηρός φησι·

[r] Οὐ γὰρ ἔτι σάρκας τε καὶ ὀστέα ἶνες ἔχουσιν,
ἀλλὰ τὰ μέν τε πυρὸς κρατερὸν μένος αἰθομένοιο

e τὸν] τῶν A. ubi mox τὰ τὸ ζῆν. Supra θήλης A.

f πάντα τὰ τοῦ ζῆν ἄχη σχεδὸν ὑπερῆρται, *omnia vitæ incommoda superavit*, rescripsi monente Heynio pro π. τ. τῷ [τὸ A.] ζ. ἄχ. σχ. ὑπερήρηται. Pro τοῦ ζῆν suspicari quoque posses ἐν τῷ ζῆν. HEEREN. ὑπερῆρε Heynius.

g ἀπονίᾳ] ἀπονοίᾳ A.

h Habet hanc fabulam Apollod. I. 5. 3. HEEREN.

i γοργῶς] γοργὰ V. E. γορτὰ A.

k δὴ] δὴν A.

l ὠνόμασε] ἐκάλεσε (sed in marg. ὠνόμασε) V.

m Ταῦτά τε εἰπὼν] ταῦτ' εἰπὼν V. A.

n ὅρκον] ὅρον V.

o φθαρτικὴν] φθαρτὴν V. A.

p ποταμὸν] ποταμο͂ν (ω superscr.) A.

q Ante oculos habuit Homer. Od. κ'. 514. 515. HEEREN.

r Οὐ γὰρ] Hom. Odyss. λ'. 218. Supra περιφλεγέθων A.

δαμνᾷ, [s]ἐπεί κεν πρῶτα [t]λίπῃ λεῦκ' ὀστέα θυμὸς,
ψυχὴ δ' ἠΰτ' ὄνειρος ἀποπταμένη πεπότηται.

Ὑποτίθεται γὰρ τὰς ψυχὰς τοῖς εἰδώλοις τοῖς ἐν τοῖς κατόπτροις φαινομένοις ὁμοίας, καὶ τοῖς διὰ τῶν ὑδάτων συνισταμένοις, ἃ καθάπαξ ἡμῖν [u]ἐξείκασται καὶ τὰς κινήσεις μιμεῖται, [x]στερεμνιώδη δ' ὑπόστασιν οὐδεμίαν [y]ἔχει εἰς ἀντίληψιν καὶ ἁφήν· ὅθεν αὐτὰς "βροτῶν [z]εἴδωλα καμόντων" [a]λέγει.

51 Ἐν ταυτῷ. p. 130.

[1014] [a]Οἱ πλείους δὲ ὕδωρ ἱστόρησαν τὴν Στύγα ἐπίγειον, φύσιν [b]ἔχον ἀμύνεσθαι τοὺς κατ' αὐτοῦ ψευδῶς ὀμόσαι τολμήσαντας. Διαβόητον μὲν τοίνυν Στυγὸς ὕδωρ κατὰ τὴν [c]Ἀρκαδίαν οἱ ἱστορικοὶ ἀναγεγράφασιν, ὧν ἐστι καὶ [d]Ἡρόδοτος, [e]ὃς ἐν τῇ ἑκτῇ τὰ κατὰ Κλεομένην ἀφηγούμενος γράφει ταῦτα· Ἐντεῦθεν δὲ ἀφικόμενος εἰς τὴν Ἀρκαδίαν, νεώτερα ἔπρησσε πράγματα, συνιστὰς [f]τοὺς

[s] ἐπείκε] ἐπείκεν V. A.
[t] λίπῃ] λίπει sic V. λείπῃ A.
[u] ἐξείκαστον] ἐξείκασται V. A.
[x] στερεμνίαν] στερεμνιώδη V. A.
[y] ἔχειν] ἔχει Heeren. quasi ex V. A. Atqui A. clare habet ἔχειν.
[z] εἴδωλα καμνόντων] εἴδωλον καμόντων V. A.
[a] λέγει] λέγεις V.

51.

Recte judicat Heyn. sequentia non amplius Apollodori sed Porphyrii verba esse. HEEREN. Contra Valckenærius omnia quæ leguntur pp. 130—133. ed. Cant. ex Apollodori opere a Porphyrio transcripta existimabat. Vide eum ad Herodot. VI. 74.
[a] Pro οἱ πάντες vel legendum est οἱ πλείους, quod voluisse videtur Cant. vertens *Plerique,* vel ἅπαντες. HEEREN.
[b] ἔχον] ἔχων A.
[c] ἀκρασίαν] Ἀρκαδίαν V. A. E.
[d] Leguntur hæc ap. Herod. L. VI. c. 74. Evanuerunt ap. Stob. Ionicæ dialecti vestigia, forte ab ipso Porphyrio de industria deleta. Apud Herod. post προσάγων additur σφι, ἦ μὲν ἕψεσθαι σφέας αὐτῷ τῇ ἂν ἐξηγῆται. Mox ἀγινεῖν bene habet Stob. pro ἀγινέων in ed. Herod. Adscribimus reliqua quæ Porphyrius omisit: ἐν δὲ ταύτῃ τῇ πόλει λέγεται εἶναι ὑπὸ τῶν Ἀρκάδων τὸ Στυγὸς ὕδωρ· καὶ δὴ καὶ ἔστι τοιόνδε τι· ὕδωρ ὀλίγον φαινόμενον ἐκ πέτρης στάζει ἐς ἄγκος, τὸ δὲ ἄγκος αἱμασιῆς τις περιθέει κύκλος· ἡ δὲ Νώνακρις ἐν ᾗ ἡ πηγὴ αὕτη τυγχανει ἐοῦσα, πόλις ἐστὶ τῆς Ἀρκαδίης πρὸς Φενεῷ. HEEREN.
[e] ὃς] ὡς V. A.
[f] τοὺς] τὰς V. A.

Ἀρκάδας ἐπὶ τῇ Σπάρτῃ, ἄλλους τε ὅρκους προσάγων, καὶ δὴ καὶ ἐς Νώνακριν πόλιν πρόθυμος ἦν τῶν Ἀρκάδων τοὺς [g]προεστῶτας ἀγινεῖν, [h]ἐξορκῶν τὸ Στυγὸς ὕδωρ. [i]Καλλί-
[1016] μαχος δ' ἐν τῷ [k]περὶ Νυμφῶν συγγράμματι καὶ τὸ ἰδίωμα τοῦ ὕδατος ἀφηγεῖται, λέγων οὕτω· Στὺξ ἐν [l]Νωνάκρι κρήνῃ τῆς Ἀρκαδίας, ἧς ὕδωρ ἐστὶ τὸ διακόπτον πάντα τὰ [m]ἀγγεῖα, πλὴν τῶν κερατίνων.

52 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπειδὴ περὶ τοῦ Στυγὸς ὕδατος ὁ λόγος ἐστὶ, [a]δηλῶσαι σοι βούλομαι καὶ ἑτέραν ἱστορίαν περὶ τοῦ αὐτοῦ. Φίλων γὰρ ὁ Ἡρακλεώτης [b]ἐν τῷ πρὸς [c]Νύμφιν περὶ θαυμασίων [d]ἐν Σκύθαις φησὶν ὄνους γίγνεσθαι κέρατα ἔχοντας, ταῦτα δὲ τὰ κέρατα δύνασθαι τοῦτο τὸ ὕδωρ διαφέρειν· καὶ Ἀλε-
[1018] ξάνδρῳ τῷ [e]Μακεδόνι ἐνεχθῆναι ὑπὸ Σωπάτρου κέρας [f]τοιοῦτον, ὃ καὶ [g]ἀνατεθῆναι ἐν Δελφοῖς, ἐφ' οὗ καὶ ἐπιγεγράφθαι,

[h]Σοὶ τόδ' Ἀλέξανδρος Μακεδὼν κέρας ἄνθετο, Παιὰν,
κάνθωνος Σκυθικοῦ, χρῆμά τι δαιμόνιον·

[g] προεστῶτας] προστάτας A.
[h] ἐξορκῶν] ἐξ ὅρκων V. A.
[i] Post Καλλιμ. add. δὲ A.
[k] περὶ Νυμφῶν] Stare non potest περὶ Νυμφῶν, quale Callimachi scriptum nusquam commemoratur: ostendit Antigonus (Παραδοξ. c. 174.) esse decerpta ex illa quam vocat ἐκλογῇ τῶν παραδόξων c. 144. cui titulum fuisse Θαύματα vel Θαυμάσια e Suida constat: idcirco refingendum existimo περὶ Θαυμάτων vel Θαυμασίων. Venerat etiam in mentem posse legi περὶ Λιμνῶν vel περὶ Ὑδάτων. HEMSTERHUS. ad Callimachi fragm. Bentl. LXXV. 32. p. 451.
[l] Νωνακρίνῃ] νωνάκρινῃ A. Νωνάκρι κρήνῃ Heeren. qui mox addidit ἧς ante ὕδωρ.
[m] ἐγεῖα] ἀγγεῖα V. A. E.

52.

[a] Post δηλῶσαι add. σοὶ A.
[b] ἐν τῷ] ἐν τῇ A.
[c] Νύμφην] Νύμφιν Heerenius, secutus Jonsium Script. Hist. Philos. II. 13.
[d] ἐν Σκυθίᾳ] ἐν Σκύθαις V. ἐν σκυθ' A.
[e] Ante Μακεδόνι add. τῷ V. A.
[f] τοιοῦτον] τοιούτῳ A.
[g] ἀναθεῖναι] ἀνατεθεῖναι V. ἀνατεθῆναι A.
[h] Σοὶ] Τοι V.

ὃ Στυγὸς [i]ἀχράντῳ [k]Λουσήϊδος οὐκ ἐδαμάσθη
ῥεύματι, [l]βάσταξεν δ' ὕδατος ἠνορέην.

53 Ἐν ταυτῷ.

Περὶ μὲν δὴ τῶν θεῶν εἰρήσθω τοσαῦτα. Λοιπὸν δὲ τὰ περὶ [a]τῶν ψυχῶν, ὅπως Ὅμηρος διέταξε, [b]τῶν ἐν Ἅιδου διαλαβόντες, καὶ περὶ μὲν τῶν τιμωρουμένων ἀφηγησάμενοι, συνάπτοιμεν ἂν τὸν λόγον ἐπὶ τὴν Στύγα, ἣν ἐπὶ [c]τιμωρίαν, καθ' Ὅμηρον, τῶν ἁμαρτανόντων τετάχθαι δαιμόνων ὑπειλήφαμεν. [d]Πληρώσας γὰρ [e]δὴ πάντα θεῶν, καὶ τοῖς τόποις ἀφορίσας [f]τὰς βασιλείας, πάλιν τῶν ψυχῶν ἃς [1020] ἀθανάτους εἶναι [g]νενόμικε, τόπους τρεῖς εἶναι ὑπείληφεν· ἕνα μὲν τὸν ἐπίγειον κατὰ τὴν οἰκουμένην ταύτην, καθ' ἣν τὰ ζῶα καὶ οἱ ἄνθρωποι διατρίβουσιν· ἕτερον δὲ τοῖς δικαίοις ἀφωρισμένον παρὰ τὸν Ὠκεανὸν, ὃν Ἠλύσιον καλεῖ πεδίον, καὶ ζῶντας ἔτι εἰς αὐτόν [h]φησιν ἐκπέμπεσθαι. [i]Δηλοῖ δὲ ἐπὶ τοῦ Μενελάου [j]τὸ τοιοῦτον λέγων·[k]

Σοὶ δ' οὐ θέσφατόν [l]ἐστι, διοτρεφὲς ὦ Μενέλαε,
Ἄργει ἐν ἱπποβότῳ θανέειν καὶ πότμον ἐπισπεῖν·
ἀλλά σ' ἐς Ἠλύσιον πεδίον καὶ πείρατα γαίης
ἀθάνατοι πέμψουσιν, ὅθι ξανθὸς Ῥαδάμανθυς·
τῇ περ ῥηΐστη βιοτὴ πέλει ἀνθρώποισιν,
οὐ νιφετὸς, [m]οὔτ' ἄρ χειμὼν πολὺς, οὔτε ποτ' ὄμβρος·

[i] ἀχράντῳ] ἀχράντου A. Cant.
[k] Λουσήϊδος] Λουσκίδος V.
[l] βάσταξεν] βάσταζεν A. E.

53.

[a] τῶν ante ψυχῶν om. A.
[b] τῶν] τὸν A.
[c] τιμωρίαν] τιμωρίην A. Cant.
[d] Πληρώτας] κληρώσας A.
[e] Ante δὴ add. γὰρ V. A.
[f] Regna deorum nempe. Respicit enim ad illud Homeri Il. ό. 185. etc. ubi Neptunus quomodo mundi imperium inter Jovem Haden ac ipsum divisum sit, enarrat. HEEREN.
[g] νόμικε] νενόμικε V. A.
[h] φασὶν] φησὶν V. αὐτὴν φησὶν A.
[i] Δῆλον] δηλοῖ V. A.
[j] τότε λέγον] τότοι τὸ λέγων V. τὸ τοιοῦτον λέγων A. οὕτω λέγων E.
[k] Versus Homeri exstant. Od. δ'. 561. etc. HEEREN.
[l] ἐξ] ἐστὶ V. A. E. διατρεφὲς A.
[m] οὔτ' ἄρ'] οὐ γὰρ V. A.

ἀλλ' [n]αἰεὶ Ζεφύροιο λιγὺ πνείοντος ἀήτας
Ὠκεανὸς ἀνίησιν, ἀναψύχειν [ἀνθρώπους].

Τούτοις μὲν οὖν καὶ [o]τὰ σώματα παρεῖναι. Τρίτον δὲ τόπον λέγει ὃν ψυχῶν τοῦ σώματος τούτου ἀπολυθεισῶν ὑπείληφεν εἶναι τὸν ἐν Ἅιδου, ταύτας δὲ εὐθὺς μὲν χωρεῖν εἰς Ἅιδου, διατρίβειν δὲ, τὰς μὲν τῶν ἀτάφων, ἔξω τοῦ Ἀχέροντος, κατὰ τὰ ἄλση καὶ [p]τὸν λειμῶνα τῆς Περσεφόνης, ἔσω
[1022] [q]περᾶσαι κωλυομένας· τὰς δὲ τῶν ταφέντων χωρεῖν ἐντὸς, εἰ μὴ εἶεν κολάσεως ἄξιαι, εἰ δὲ μὴ, κἂν ταφῇ τὰ σώματα, [r]ὁμοίως εἴργεσθαι [s]τῶν ἔνδον. Τὰς τοίνυν ἐκτὸς μνήμης μετέχειν τῶν αὐταῖς βεβιωμένων· τὰς δὲ τὸν ποταμὸν ὑπερβαινούσας ἐπιλανθάνεσθαι τῶν [ss]λογισμῶν [t]τῶν περὶ τὰ ἀνθρώπινα μεθείσας. Διὸ καὶ τῶν [u]ἀδίκων ἐκτὸς εἶναι τὰ κολαστήρια, διὰ τοῦ λογισμοῦ καὶ τῆς μνήμης τῶν βεβιωμένων τὰς κολάσεις ἐχόντων. Φαντασίας γὰρ λαμ- p. 131.
βάνειν τῶν δεινῶν, [x]ὅσα ἐν τῷ βίῳ δεδράκασι, καὶ κολάζεσθαι, τῆς ἁμαρτίας παρεστώσης [y]αὐτοῖς κατὰ λογισμὸν, καὶ τιμωρούσης διὰ τῶν [z]ἀφωρισμένων ταῖς ἁμαρτίαις κολάσεων, ὅθεν τὰς μέν τινας τῶν ψυχῶν λίθους βαστάζειν δοκούσας, καὶ ὑπὸ τοῦ θλίβεσθαι τιμωρεῖσθαι, [a]τὰς δὲ δίψης καὶ λιμοῦ [b]αἰωνίου φαντασίας λαμβανούσας, τὰς δ' ἄλλου τινὸς ὧν ἐν τῷ θνητῷ βίῳ [c]ἐπεφρίκεσαν. Εἶναι

[n] αἰεὶ] ἀεὶ A. Mox edidit Heerenius λιγυπνείοντας ex vulgaribus Homeri libris, cum mss. et Cant. exhibeant λιγὺ πνείοντος. Infra idem addidit ἀνθρώπους tacite.

[o] τὸ σῶμα] τὰ σώματα V. A.

[p] τὴν λειμῶνα] τὸν λειμῶνα V. A.

[q] περάσαι κωλυομένας· δὲ etc.] περασαιην λυομένας· τὰς δὲ etc. V. E. περάσαιην, λυομένας A.

[r] Pro ὁμοίως melius forte leges ὅμως, *tamen a trajectu prohibentur.* HEEREN.

[s] τοῦ] τῶν A. E. Tum ἔνδων A.

[ss] λογισμῶν τῶν περὶ] λογισμῶν τῶν πρὶν Valckenær.

[t] Ante περὶ add. μὲν V. τῶν A.

[u] Ante ἀδίκων add. τῶν V. A.

[x] ὅσων] ὅσα V. A.

[y] αὐτοὺς] αὐτοῖς V. A. E.

[z] ἀφωρισμῶν] ἀφορισμένων A. V. E.

[a] τάς τε] τὰς δὲ Heeren.

[b] αἰωνίου deest V.

[c] ἐπεφρίκασαν] –κεσαν V. A.

γὰρ καὶ κριτὴν, [d] ἐκτὸς τοῦ ποταμοῦ διατρίβοντα, [e] Μίνω, ὃν κατ᾽ ἀξίαν τῶν ἁμαρτημάτων κολάζειν, τοῖς μὲν [f] τὸν ἔξω τοῦ ποταμοῦ τόπον ἀφορίσαντα ἐπὶ τὴν δίκην, τοῖς δὲ περᾶσαι τὸν ποταμὸν ἐπιτρέψαντα, ὃς ἀνάπαυσις [g] ἦν ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνηνύτων κακῶν, διὰ τὴν λήθην. Τιμωρεῖσθαι
[1024] δὲ ἐκτὸς ὄντα καὶ τὸν [h] Ἡρακλέα τοὺς ἀδίκους, φαντασίας φοβερὰς ἐμποιοῦντα τοῦ βάλλοντος καὶ τοξεύοντος, ὥσπερ ζῶν ἠμύνετο, ἀμυνομένου καὶ ἐν ᾅδου τοὺς ἀξίους κολάσεως. Οὐ [i] γὰρ δὴ καὶ οὗτος τῶν κολαζομένων ἐστὶν, ὡς Ἀριστάρχῳ ἐδόκει, ἀλλὰ τῶν κολαζόντων. Τῶν δ᾽ ἐντὸς τοῦ ποταμοῦ, καὶ ἀφῃρημένων τὸν λογισμὸν τὸν ἀνθρώπινον, [k] μόνος ὁ Τειρεσίας καὶ τοῦτον ἔχει παρόντα· οἱ δὲ ἄλλοι ἀλλήλους μὲν γιγνώσκουσι, [l] κατ᾽ ἰδιότητα φρονήσεως ἣν ἐν Ἅιδου κέκτηνται, τοὺς δ᾽ ἀνθρώπους οὐκέτι· οὐδ᾽ ἂν φθέγξαιντο περὶ τῶν ἀνθρωπίνων τοῖς ζῶσιν ἔτι ἀνθρώποις, εἰ μὴ ἀτμοῦ μεταλάβοιεν [m] αἵματος, καὶ τούτῳ φρενωθεῖεν τὰ ἀνθρώπινα, ἃ δὴ οἱ ἔξω καὶ μὴ πιόντες τοῦ αἵματος φρονοῦσι, κατάστασιν ἔχοντες τῆς ἐξ [n] αἱμοποσίας τῶν θνητῶν ταῖς ψυχαῖς γιγνομένης [o] γνωρίσεως. Τειρεσίας δὲ ἔχει μὲν λογισμὸν τῶν ἀνθρωπίνων, μαντεύεται δὲ οὐδ᾽ αὐτὸς περὶ τῶν εἱμαρμένων τοῖς ζῶσι πρὶν πιεῖν τοῦ αἵματος. Οἴεται γὰρ καὶ Ὅμηρος, καθὰ καὶ πλεῖστοι τῶν μετ᾽ αὐτὸν ὑπέλαβον, ἐν τῷ αἵματι εἶναι τοῖς [p] ἀνθρώποις τὴν περὶ τὰ θνητὰ φρόνησιν,

[d] ἐκτὸς τοῦ] ἐκ τούτου V. A.

[e] Μίνωος] Μινῶον V. μένωον A. i.e. Μίνω ὃν.

[f] τὸν—τόπον] τῶν—τόπων A.

[g] Ante ταῖς add. ἦν V. A.

[h] Ἡρακλῆν] Ἡρακλέα V. A. De seqq. vid. Od. λ΄. 600.

[i] γὰρ δὲ] γὰρ δὴ V. A.

[k] μόνον] μόνος V. A.

[l] κατ᾽] Sic Heeren. tanquam ex A.V. Atqui A. diserte habet καί.

[m] Post αἵματος add. καὶ τούτῳ (τούτων A. E.) φρενωθεῖεν τὰ ἀνθρώπινα· ἃ δὴ οἱ ἔξω καὶ μὴ πιόντες τοῦ αἵματος φρονοῦσι κατάστασιν etc. V. A. E.

[n] αἱματοποσίας] αἱμαποσίας V. E. P. αἱμοποσίας A.

[o] γνωρήσεως] γνωρίσ. A.

[p] Ante ἀνθρώποις add. τοῖς V. A.

ἐπεὶ καὶ τῶν μετ' αὐτὸν πολλοὶ [q]τοῦτο πιστοῦνται, δεικνύντες [r]ὅτι καὶ [s]ὑποθερμανθὲν ὑπὸ πυρετοῦ καὶ χολῆς ἀφραί-
[1026] νειν [t]ποιεῖ, καὶ ἀνοηταίνειν. Ἐμπεδοκλῆς τε [u]οὕτω φαίνεται, ὡς ὀργάνου [x]πρὸς σύνεσιν τοῦ αἵματος [y]ὄντος, λέγων·

Αἵματος ἐν πελάγεσσι [z]τεθραμμένη ἀντιθρώοντος,
τῇ τε νόημα μάλιστα [a]κυκλίσκεται ἀνθρώποισιν,
αἷμα γὰρ ἀνθρώποις περικάρδιόν ἐστι νόημα.

Τῶν δὲ ὑπὲρ τὸν ποταμὸν διατριβουσῶν ψυχῶν [b]πρῶται γυναῖκές εἰσι τεταγμέναι· λέγω δὲ [c]πρώτας τὰς πλησιαζούσας [d]τοῖς ἔξω· ἐνδοτάτω δὲ αἱ τῶν ἀνδρῶν· καὶ λοιπὸν οἱ περὶ τὸν Αἴδην θεοί. Διὸ καὶ πρῶται αἱ γυναῖκες πέμπονται, εἶτ' οἱ ἄνδρες, καὶ τούτων οἱ τίμιοι ὕστεροι. Τὰ μὲν οὖν κατὰ τοὺς ἀνθρώπους οὕτως αὐτῷ διατέτακται· ὑποθέμενος δὲ τοὺς κοσμικοὺς θεοὺς, ὧν τὰ γένη διηριθμήκαμεν, οὐ πάντη ἀπαθεῖς, [e]καλέσας κατὰ παλαιὰν συνήθειαν [ὧν τὰ γένη ἐξεθήκαμεν], κατ' αὐτὸν μεγάλου δαί-
[1028] μονος ὄντος, ὃν καλεῖ Δία, καὶ οἷον ἄρχοντος τῶν ἄχρις οὐρανοῦ φθανόντων, ὑποθέμενος οὖν τούτους, καθάπερ καὶ λέγονται, ἐμπαθεῖς, καὶ διὰ τοῦτο καὶ ἐπιθυμίας μετέχοντας, καὶ ὀργῆς, καὶ μίσους, καὶ ἔχθρας, καὶ ὑφ' εἱμαρμένην ὄντας, εἰκότως καὶ ἁμαρτάνειν οἴεται, καὶ ψεύδεσθαι, καὶ ὀμνύναι, καὶ εὐορκεῖν, ἢ τοὐναντίον τινὰς πλημμελεῖν εἰς

[q] τούτων] τοῦτο V. A.

[r] ὅπερ] ὅτι Heeren.

[s] ὑποθερμανθὲν] ὑπερθερμανθὲν Valckenær.

[t] ποιεῖν καὶ νοητέειν] ποιεῖ καὶ ἀνοηταίνειν V. A. E.

[u] οὕτω φαίνεται] αὐτοῦ μέμνηται conj. Valckenær.

[x] προσύνεσιν] πρὸς σύνεσιν V A.

[y] οὕτως] ὄντος V. ὄντως A.

[z] τετραμμένου] τετραμμένα A. V. E. τεθραμμένη Grotius. Tum ἀντιθρῶντος A. Cant. ἀντιθροῶντος Grotius e ms. et sic P. ap. Heeren.

[a] κικλήσκεται] Sic A. Cant. κυκλίσκεται V.

[b] πρῶτα] πρῶται V. A.

[c] πρώτας τὰς] τὰς addidit Heeren.

[d] ταῖς] τοῖς A.

[e] καλέσας] θεοὺς δὲ καλέσας Heeren. Verba uncis inclusa ex superioribus male repetita censet Heeren. qui statim delet κατ' αὐτὸν et pro ὅσον τόσον reponit ὄντος ὄν. In hoc consentit Valckenær.

τοὺς ὅρκους. Διὸ καὶ τούτων κολάσεις ὑποτίθεται, οὐ μέντοι ἀναμεμιγμένας τοῖς ἀνθρωπίνοις κολαστηρίοις, [f]ἀλλ' ἅτε μείζονας ὄντας, μείζονος καὶ τιμωρίας πειρᾶσθαι, ἀδικήσαντας. Διὸ τῶν μὲν ἀνθρωπίνων ψυχῶν ἐν ᾅδου τὰ κολαστήρια· τῶν δ' εἰρημένων θεῶν ὑπὸ τὸν ᾅδην, ἐν τῇ Κρόνου ἐπικρατείᾳ, κατὰ τὸν Τάρταρον. Διὸ καὶ τῶν [g]Τιτάνων χῶρος [h]οὗτος κέκληται, ἀπὸ τῶν ἐν αὐτῷ τίσιν p. 132. διδόντων θεῶν παρὰ τοῖς τιμωροῖς θεοῖς. Ἔνθα ὑποτίθεται
[1030] καὶ τὴν Στύγα, αὐτήν τε τὴν δαίμονα, καὶ τὴν πηγὴν τῶν ὑδάτων αὐτῆς. Τὸν γὰρ Κωκυτὸν καὶ [i]τὸν Τιταρήσιον [k]Στυγὸς ἀπορροὴν εἶναι, ἀλλ' οὐ [l]πηγήν. Εἶναι δὲ ταύτην ἐπὶ τιμωριῶν ἀπαραίτητον [m]ἔχουσαν δυνάμιν, καὶ φοβερωτάτην· καὶ ὅλως ὅπερ ἡ [n]Ἐρινὺς ταῖς ἀδίκοις ψυχαῖς, τοῦτο τὴν Στύγα τοῖς ἀδικήσασι δαίμοσιν. Ὅτι δ' οἱ ἄταφοι ἔξω τοῦ ποταμοῦ διατρίβουσιν, εἴδωλον φέροντες τοῦ σώματος καὶ τῶν [o]ἁμαρτημάτων τοῦ σώματος, δηλοῖ τὰ τοιαῦτα[p]·

Ἦλθε δ' ἐπὶ ψυχὴ Πατροκλῆος δειλοῖο
πάντ' αὐτῷ μέγεθός τε καὶ ὄμματα κάλ' εἰκυῖα,
καὶ φωνήν· καὶ [q]τοῖα περὶ χροῒ εἵματα [r]ἕστο.

Εἶτα λέγει·

Θάπτε με, ὅττι τάχιστα πύλας ἀΐδαο περήσω.

[f] ἄλλα τε κίζοντας] ἀλλ' ἀτενίζοντας V. A. E. ἀλλ' ἅτε μείζονας P.
ib. Corrupte habet Cant. ἀλλά τε κίζοντας ὄντας, qui tamen veram lectionem ἀλλ' ἅτε μείζονας ὄντας jam in marg. reposuit. Mira est codd. V. A. lectio ἀλλ' ἀτενίζοντας, quæ tamen commodum sensum non fundit. HEEREN.
[g] τινῶν] Τιτάνων V. A. E. Cant. in marg.
[h] οὗτος] Sic A. Cant. οὕτως V. οὕτω Heeren.
[i] τὴν Τιταρήσιον] τὸν Τιταρ. A.
[k] Στυγὸς ἀπορροὴν] Στυγὸς addidit Heeren. om. A. Cant.
[l] πηγὴν] πηγὰς V. A.
[m] ἔχουσαν δύναμιν] ἔχουσα δύσιν V.
[n] Ἐριννὺς] Ἐρινὺς A.
[o] ἁμαρτημάτων] Heerenius dedit εἱμάτων, tacite.
[p] Hom. Il. ψ'. 65.
[q] τοῖα] τοῖς A.
[r] ἕστο] ἕστω sic V. A. E. HEEREN. ἕστο plane A.

[s] Εἴρηται δὲ, ὅτι τὰ ἔνδον τοῦ ποταμοῦ [t] Ἀΐδα προσαγορεύει. Καλεῖται δὲ καὶ τὰ ἔξω ποταμοῦ, ὡς ἐδείκνυμεν, ἐν Ἅιδου δόμοι·

Ἀλλ' αὔτως ἀλάλημαι [u] ἀν' εὐρυπυλὲς ἄϊδος δῶ.

[1032] Τί οὖν πάσχουσί φησιν·

Τῆλέ με εἴργουσι ψυχαὶ, εἴδωλα καμόντων,
οὐδέ [x] μέ πως μίσγεσθαι ὑπὲρ ποταμοῖο ἐῶσιν.

Ὅτι δὲ ὑπερβᾶσαι τὸν ποταμὸν οὔτε γνωρίζουσι τοὺς ζῶντας, οὔτε [y] ἐξουσίαν ἔχουσι τούτοις ἐπιφαίνεσθαι, ἐὰν μὴ πεμφθῶσιν, ἐπάγει·

Καί μοι δὸς τὴν χεῖρ', ὀλοφύρομαι, οὐ γὰρ ἔτ' αὖτις
[z] νίσομαι ἐξ ἀΐδαο, ἐπὴν με πυρὸς [a] λελάχητε.

Φαίνεται οὖν ἡ ἄταφος μεμνημένη τῶν [b] κατὰ τὸν βίον, καὶ

[s] In iis quæ hic sequuntur aperte ap. Cant. et in codd. turbatus est verborum et sententiarum ordo. Legitur ibi: Εἴρηται δὲ ὅτι τὰ ἔνδον τοῦ ποταμοῦ ἀΐδα προσαγορεύει· Οὐδέ μέ πως (τὰ ἔπω— A.) μίσγεσθαι ὑπὲρ ποταμοῖο ἐῶσι. Καλεῖται δὲ καὶ τὰ ἔξω τοῦ ποταμοῦ ὡς ἐνδείκνυμεν (ἐδείκνυμεν A.) ἐν ᾅδου δόμοι· τί οὖν πάσχουσί φησιν. Ἀλλ' αὔτως ἀλάλημαι ἀν' εὐρυπυλὲς (εὐρηπελὲς A.) Ἀΐδος δῶ. In quæ si accuratius inquiras, facile videbis versum οὐδέ μέ πως μίσγεσθαι ὑπὲρ ποταμοῖο ἐῶσι alienam plane sedem occupasse. Neque enim probat id quod probare deberet, regionem trans fluvium Homero Haden appellari; neque omnino probationem ejus hic exspectabis, cum ea jam supra a se exposita esse, dicat Porphyrius. Versu autem hoc remoto optime procedit oratio. Nec minus in sequentibus perversum locum obtinuerunt verba τί οὖν πάσχουσί φησιν· nam versus qui sequitur continet probationem ejus quod præcesserat, regionem cis fluvium quoque Haden appellari. Patroclis enim anima, quæ flumen nondum trajecerat, tamen ita de se queritur: ἀλλ' αὔτως ἀλάλημαι ἀν' εὐρυπυλὲς Ἀΐδος δῶ. Vix itaque dubium superesset, recte a me restitutum esse sententiarum et verborum ordinem, cum verba τὶ οὖν πάσχουσί φησιν post illa collocarem, ac hisce subjungerem versus, qui aperte ad ea pertinent: τῆλέ με εἴργουσι ψυχαὶ εἴδωλα καμόντων, Οὐδέ μέ πως μίσγεσθαι ὑπὲρ ποταμοῖο ἐῶσιν. HEEREN.

[t] Ἀΐδα] Ἀΐδου V. A. Mox ἐν ante ᾅδου om. Heeren.

[u] ἀνευροπυλὲς] ἀνευρυπελὲς V. εὐρηπελὲς A.

[x] μέ πῶς] τὰ ἔπω V. E. οὐδὲ τὰ ἐπωμίσγεσθαι A.

[y] ἐξουσίας] Sic A. Cant. ἐξουσίαν Heeren.

[z] νίσσομαι ἐξ] νίσομαι δ' ἐξ A.

[a] λελάχητε] —χηται V. A.

[b] τῶν] τὸ V. τῶ A. E.

γλιχομένη αὐτοῦ, καὶ διὰ τοῦτο ὀδυρομένη· οὕτω δεινὴ ἡ κόλασις τοῖς οὕτω δι' αἰῶνος κολαζομένοις· οὕτω καὶ Ἐλπήνωρ [c] ὀδύρεται·

> [d] Ἆσέ με δαίμονος αἶσα κακὴ καὶ ἀθέσφατος [e] ὕπνος.

[f] Καὶ εἰπὼν ἃ πέπονθεν, ἀξιοῖ ταφῆναι, ἱκετεύων καὶ δεόμενος·

> Νῦν δέ [g] σε τῶν ὄπιθεν γουνάζομαι οὐ παρεόντων,
> μή μ' [h] ἄκλαυτον ἄθαπτον ἰὼν ὄπιθεν καταλείπειν,
> νοσφισθεὶς, [i] μήτοι τι θεῶν μήνιμα γένωμαι.

54 Ἐν ταυτῷ.

Τὰ μὲν οὖν [k] ἀνθρώπινα καὶ ὅλως τοὺς ζῶντας ἀγνοοῦσιν, ἀλλήλους δὲ ἴσασιν. Εἰ γὰρ μὴ τοῦτ' εἶχον, πῶς ἂν ἦλθον σὺν Ἀγαμέμνονι [l] πάντες οἵ ἅμα ἀνηρημένοι; Πῶς δὲ [m] συν-
[1034] ελάλει Πάτροκλος καὶ Αἴας καὶ Ἀντίλοχος; Πῶς δ' εἴργουσι τοὺς [n] ἀτάφους μὴ πέραν τοῦ ποταμοῦ διελθεῖν; Λέγει [o] δὲ,

> [p] Τῆλέ με εἴργουσι ψυχαὶ, εἴδωλα καμόντων.

Συναποτέθειται δ' αὐτοῖς ἅμα τῇ μνήμῃ καὶ τὰ [q] γνωρίσματα τῶν περὶ τὸ σῶμα [r] οἰκείων, ὃ καὶ δῆλον ὅτι διὰ φαντασίας τὰ περὶ τὸ σῶμα δείκνυσι. Διὰ γὰρ μνήμης

[c] ὀδύρεται] –ρετο V.
[d] Ἆσε] Od. λ'. 61. Mox μαίμονος A.
[e] οἶνος] ὕπνος V. A. E.
[f] καὶ ἃ] καὶ εἰπὼν V. A.
[g] σε τῶν ὄπιθεν] σ' ἐγὼν ὀπίσθεν V. A.
[h] ἄκλαυστον] ἄκλαυτον V. A.
[i] τοι τι] τί τοι V. A. Mox μήνυμα A.
[k] ἀνθρώπεια] ἀνθρώπινα V. A.
[l] πάντες ἀνειρημένοι] πάντες οἵ ἅμα ἀνηρημένοι V. A.
[m] συνελάλει, *inter se collocuti sunt*, rescripsi pro συνεκάλει. Cf. Od. λ'. 466, etc. Expresserat illud jam in versione Cant. Posses tamen suspicari scripsisse Porphyrium, πῶς δὲ συνεκάλει Πάτροκλος καὶ Αἴαν καὶ Ἀντίλοχον, una enim ap. Hom. apparent Ulyssi. HEEREN.
[n] ἀτάφους] τάφους V. A.
[o] δὲ] γὰρ ed. Heeren.
[p] Τῆλε] Τῇ δὲ V. A.
[q] γνωρίματα] γνωρίσματα VA.
[r] εἰκείων] οἰκείων V. A.

ἡ φαντασία, ὡς [s] Πλάτων ἐν Φιλήβῳ φησί· μνήμης δὲ ἀφῃρημένης, ἧρται καὶ τὸ φαντασιούμενον, οὗ συνεκλείποντος καὶ [t] τὰ πάθη τὰ περὶ τὸ σῶμα τῆς ψυχῆς [u] συνεξῆρται. Τούτων δὲ [x] ἐκλελοιπότων καὶ ἡ κόλασις τῆς ψυχῆς πέπαυται, νοερᾶς μόνον οὔσης περὶ αὐτὴν καταστάσεως, καὶ παρὰ τῷ φρονίμῳ θεῷ διατριβούσης [y].

Πρὸς δὲ τὰ εἰρημένα ἴσως ἄν τις ἀπορήσειε, πῶς, εἰ μὴ ἀλλήλας ἀγνοοῦσιν, [z] ἔφη,

[a] ταὶ δὲ σκιαὶ ἀΐσσουσι.

[1036] [c] Πρὸς ὃ ῥητέον, ὅτι σκιαὶ ἀΐσσουσι πρὸς [d] τούτους πρὸς ὧν καὶ τὴν μνήμην ἀφῄρηνται. Πρὸς οὖν τὰ θνητά εἰσι σκιαὶ, [e] διὰ τὴν ἀσωματίαν καὶ ἀμνημοσύνην αὐτῶν, ὥς που καὶ πρὸς τὴν [f] παχύτητα τοῦ σώματος ἡ ψυχὴ [g] παραβαλλομένη καπνῷ ὡμοίωται [h].

Ψυχὴ δ' [i] ἠΰτε καπνὸς
ᾤχετο [k] τετριγυῖα.

Εἰ δὴ τοῖς οἰκείοις ἐντυγχάνοντες οὔτε ὁρῶσιν αὐτοὺς, οὔτε προσδιαλέγονται, [l] ἀνενεργητοὶ δ' εἰσὶν αἰσθητικὴν ἐνέργειαν,

[s] Respicit ad ea quæ Plat. in Phileb. Op. II. p. 39. disputat. HEEREN.

[t] Post τὰ πάθη add. τὰ περὶ τὸ σῶμα V. A. P.

[u] συνεξήρτηται] συνεξήρηται V. συνεξῆρται—ψυχῆς om. A. συνεξῆρται ed. Heeren.

[x] ἐκλιπόντων] ἐκλελοιπότων V.P.A.

[y] Ante oculos habet Platonem in Phædone Op. I. p. 63. Ἐγὼ γὰρ, ἔφη, ὦ Σιμμία τε καὶ Κέβης, εἰ μὲν μὴ ᾤμην ἥξειν πρῶτον μὲν παρὰ θεοὺς ἄλλους σοφούς τε καὶ ἀγαθοὺς etc. quare non amplius in hisce argutandum. HEEREN.

[z] ἔφη] Od. κ'. 495.

[a] τὰς δὲ σκιὰς] ταὶ δὲ σκιαὶ A. V.

[c] Πρὸς ὃ] πρὸς ἃ ed. Heeren. qui ante σκιαὶ mox inseruit αἱ.

[d] τούτους] τούτοις A.

[e] καὶ ante διὰ deest V. A. E.

[f] ταχύτητα] παχύτητα V. A. Cant. in marg.

[g] παραλαμβανομένη] παραβαλλομένη V. A. Mox ὁμοίωται A.

[h] Hom. Il. ψ'. 100.

[i] ἠΰτε] αὖτε V. E. ἄντε A.

[k] τετριγυῖα] τετρηγυῖα V. A.

[l] ἀνήγητοι] ἀνενέργηται V. A.

πρὸς αὐτοὺς ἐοικότες [m]εἶεν ταῖς σκιαῖς· ἤγουν [n]Ἀντίκλεια·

> [o]Ἡ δ' ἀκέουσ' ἧσται σχεδὸν αἵματος, οὐδὲ ὃν υἱὸν p. 133.
> ἔτλη ἐς ἄντα ἰδεῖν, οὐδὲ προτιμυθήσασθαι.

Τὸ δ' αἷμα, ὡς ἔφημεν, ὁλκὸν Ὅμηρος [p]ἡγεῖται τῆς [q]φανταστικῆς καὶ μνημονικῆς ψυχῆς, ἧς καὶ ὁ λογισμὸς, συναγερμὸς ὢν μνήμης διὰ φαντασιῶν εἰς τὰ καθόλου κρίματα κεφαλαιουμένης. Ἄλλο δ' ἦν τὸ διανοητικὸν, [r]εἰς ὃ ἀνα-
[1038] τρέχει [s]ἡ ψυχὴ ἔσω τοῦ Ἀχέροντος [t]γενομένη, ὃν Κωκυτὸς πληροῖ καὶ Πυριφλεγέθων, ἐκ πέτρας ῥέοντες, καὶ Στυγείων φόβων ἀπόρροιαι. Ἀποστέλλονται δὲ εἰς τοὺς ἀτμοὺς τοῦ αἵματος ὑπὸ Περσεφόνης· ἀδύνατον γὰρ ἐλθεῖν χωρὶς τοῦ πεμφθῆναι πρὸς τῶν ἐφεστώτων. Διὸ καὶ ἐπεύχεται[u]

> Ἰφθίμῳ τ' Ἀΐδῃ καὶ ἐπαινῇ Περσεφονείῃ.

Ἡ δὲ ἀποστέλλει πρώτας τὰς γυναῖκας, ὡς ἂν πλησίον [x]οἰκούσας τοῦ Ἀχέροντος, καὶ [y]ἡττωμένας τῆς ἀνδρικῆς ψυχῆς. Αἱ γὰρ δὴ τῶν ἀνδρῶν ἐν τῷ ἀκραιφνεῖ σκότῳ [z]διάγουσι, πόρρω τοῦ ποταμοῦ καὶ [a]τῶν κολαζομένων [b]ὄντων. Ὧν πάντων πολλῆς [c]θεοσοφίας γεμόντων, ἡμεῖς ἐπιτρέχομεν, διὰ τὸ μὴ νῦν περὶ τούτων εἶναι τὴν πρόθεσιν, χάριν δὲ καὶ τῆς κατὰ [d]τὴν Στύγα ἐξηγήσεως ἀναγκαίως [e]παρειλῆφθαι.

m ἢ ἐν] εἶεν Cant. in marg.

n Ἀντίκλεια] Ἀντικλέα V. A. ἤγουν Ἀντίκλεια ponenda videntur post ἡ δ'.

ib. Od. λ'. 141.

o Ἡ δὲ κλαίουσα ἔστη σχεδὸν αἵματος, οὐδ' ἑὸν υἱὸν Ἔγνω ἐς ἄντα ἰδεῖν οὐδὲ προτιμηθήσασθαι V. A. E.

p ἡγεῖται] ἡγεῖτο Heerenius.

q Post φανταστικῆς add. καὶ μνημονικῆς V. A.

r εἰς δὲ] εἰς ὃ V. A.

s Ψυχὴ ἔξω] ἡ ψυχὴ ἔσω Heerenius. Seqq. spectant Od. κ'. 513. sq.

t γενόμενον] -μένη V. A. E.

u Od. λ'. 47.

x οἰκούσας] οἰκοῦντας V.

y ἡττωμένης τῆς ἀνδρικῶς φωνῆς] ἡττωμένης τῆς ἀνδρικῆς ψυχῆς V. A. E. ἡττωμένας τῶν ἀνδρικῶν ψυχῶν ed. Heeren.

z διάγουσι] Sic Cant. in marg. διὰ τοὺς A. Cant.

a Ante τῶν add. καὶ V. A. E.

b ὄντας] ὄντων Heeren.

c θεοσοφίας] φιλοσοφίας A.

d Ante Στυγὰ add. τὴν V. A.

e παρειλῆφθαι] -λεῖφθαι E.

55 [a] Πορφυρίου ἐκ τῶν πρὸς τὰ [b] νοητὰ ἀφορμῶν.

Ὥσπερ τὸ ἐπὶ γῆς εἶναι [c] ψυχῇ ἐστι, οὐ τὸ γῆς ἐπιβαίνειν ὡς τὰ σώματα, [d] τὸ δὲ προεστάναι σώματος ὃ γῆς
[1040] [e] ἐπιβαίνει, οὕτω καὶ ἐν Ἀΐδου εἶναί ἐστι [f] ψυχῇ, ὅταν [g] προεστήκῃ εἰδώλου φύσιν μὲν ἔχοντος εἶναι [h] ἐν τόπῳ, [i] σκότει δὲ τὴν ὑπόστασιν κεκτημένου· ὥστε εἰ ὁ ᾅδης [k] ὑπόγειός ἐστι τόπος σκοτεινὸς, ἡ ψυχὴ, καίπερ οὐκ ἀποσπωμένη τοῦ ὄντος, ἐν Ἀΐδου γίγνεται ἐφελκομένη τὸ εἴδωλον. Ἐξελθούσῃ γὰρ αὐτῇ τοῦ στερεοῦ σώματος τὸ πνεῦμα [l] συνομαρτεῖ, ὃ ἐκ τῶν σφαιρῶν συνελέξατο. Ἐκ δὲ τῆς πρὸς τὸ σῶμα προσπαθείας τὸν λόγον [m] ἔχουσα τὸν μερικὸν προβεβλημένον, καθ' ὃν σχέσιν ἔσχε πρὸς τὸ τοιὸν σῶμα ἐν τῷ βιοῦν, ἐκ τῆς προσπαθείας ἐναπομόργνυται τύπος τῆς φαντασίας εἰς τὸ πνεῦμα, καὶ οὕτως ἐφέλκεται τὸ εἴδωλον. Ἐν Ἀΐδου δὲ λέγεται, ὅτι τῆς [n] ἀειδοῦς φύσεως ἐτύγχανε τὸ πνεῦμα, καὶ σκοτεινῆς. Ἐπεὶ δὲ διήκει τὸ βαρὺ πνεῦμα καὶ ἔνυγρον ἄχρι τῶν ὑπογείων τόπων, οὕτω καὶ αὕτη λέγεται χωρεῖν ὑπὸ γῆν· οὐχ ὅτι ἡ αὐτὴ οὐσία μεταβαίνει τόπους, καὶ ἐν τόποις γίγνεται, ἀλλ' ὅτι τῶν πεφυκότων σωμάτων τόπους
[1042] μεταβαίνειν, καὶ εἰληχέναι [o] τόπους, σχέσεις ἀναδέχεται, δεχομένων αὐτὴν κατὰ τὰς ἐπιτηδειότητας τῶν [p] τοιούτων σωμάτων ἐκ τῆς κατ' αὐτὴν ποιᾶς διαθέσεως· ὡς γὰρ ἂν

54.

[a] Πορφυρίου] Ap. Holsten. p. 76 = 232. ed. Cant.

[b] νοήματα A. Cant.

[c] ψυχῇ ἐστι, οὐ τὸ] Sic Heeren. cum Holsten. ψυχή ἐστιν, οὕτω A. Cant.

[d] τῷ] τὸ V. A. E.

[e] ὑπερβαίνει] ἐπιβαίνει V. Holst. ἐπιβαίνειvει A.

[f] ψυχῇ Holst. Heeren. ψυχὴ A. Cant. ψυχῆς malit Heeren.

[g] προεστήκει] προεστήκοι A.

[h] ἐν τῷ σκότει] ἐν τόπῳ σκότει δὲ etc. V. A. E. Holst.

[i] σκότει δὲ] σκοτώδη δὲ ed. Heeren. qui in annot. præferret σκοτώδει.

[k] ὁ ante ὑπόγειος deest V. A. Holst.

[l] συνομαρτεῖ] συναμαρτεῖ V. A.

[m] ἐχούσῃ] ἐχούσης Holst. ἔχουσα ed. Heeren.

[n] αΐδους] ἀείδους V. A. E.

[o] τόπους] τόπου V. A. E.

[p] τοιούτων om. Heeren.

διετέθη, εὑρίσκει σῶμα τάξει καὶ τοῖς οἰκείοις [q]διωρισμένον. Διὸ καθαρώτερον μὲν διακειμένῃ σύμφυτον τὸ ἐγγὺς τοῦ ἀΰλου [r]σῶμα, ὅπερ ἐστὶ τὸ αἰθέριον· προελθούσῃ δὲ ἐκ λόγου εἰς φαντασίας προβολὴν, σύμφυτον τὸ [s]ἡλιοειδές· [t]θηλυνθείσῃ δὲ καὶ παθαινομένῃ, πρὸς τὸ εἶδος παράκειται τὸ σεληνοειδές· [u]πεσούσης δὲ εἰς [x]σώματα, ὅταν κατὰ τὸ αὐτῆς ἄμορφον στῇ εἶδος ἐξ ὑγρῶν ἀναθυμιάσεων συνεστηκότα, ἄγνοια ἕπεται τοῦ ὄντος τελεία, καὶ σκότωσις, [y]καὶ νηπιότης. Καὶ μὴν καὶ ἐν τῇ ἐξόδῳ [z]ἔτι κατὰ τὴν δίυγρον ἀναθυμίασιν τὸ πνεῦμα [a]ἔχουσα τεθολωμένον, σκιὰν ἐφέλκεται καὶ βαρεῖται, χωρεῖν σπεύδοντος τοῦ τοιούτου πνεύματος εἰς μυχὸν τῆς γῆς φύσει, ἂν μὴ ἄλλη τις αὐτὸ αἰτία ἀνθέλκῃ. Ὥσπερ οὖν τὸ γεῶδες ὄστρεον περικειμένῃ ἀνάγκη ἐπὶ γῆς ἐνίσχεσθαι, οὕτω καὶ ὑγρὸν πνεῦμα ἐφελκομένῃ εἴδωλον περικεῖσθαι ἀνάγκη. Ὑγρὸν δὲ ἐφέλκεται, ὅταν συνεχῶς [b]μελετήσῃ ὁμιλεῖν τῇ φύσει ἧς ἐν ὑγρῷ τὸ ἔργον, p. 134. καὶ ὑπόγειον μᾶλλον. Ὅταν δὲ μελετήσῃ ἀφίστασθαι
[1044] φύσεως, αὐγὴ ξηρὰ γίγνεται, ἄσκιος καὶ ἀνέφελος. Ὑγρότης γὰρ ἐν ἀέρι νέφος [c]συνίστησι· ξηρότης δὲ ἀπὸ τῆς ἀτμίδος αὐγὴν ξηρὰν [d]ὑφίστησιν.

56 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 63.]

Ἐγὼ γὰρ, ἔφη, ὦ Σιμμία τε καὶ Κέβης, εἰ μὲν μὴ ᾤμην ἥξειν πρῶτον μὲν παρὰ θεοὺς ἄλλους σοφούς τε καὶ ἀγαθοὺς, ἔπειτα παρ᾽ ἀνθρώπους τετελευτηκότας ἀμείνους τῶν ἐνθάδε, ἠδίκουν ἂν, οὐκ ἀγανακτῶν τῷ θανάτῳ· νῦν δὲ,

[q] διωρισμένοι] –μένον V. A. μένειν E.
[r] σῶμα] σώματος A.
[s] ὑλοειδὲς] ἡλιοειδὲς V. A.
[t] θηλυνθείσῃ] λυθυνθείσῃ V. A. E.
[u] Post πεσούσης add. δὲ V. A. E.
[x] σώματος] σώματα V. A.
[y] Ante νηπιότης add. καὶ V. A.
[z] ἔτι] ἔστι V. A.
[a] ἔχουσι] ἐχούσῃ V. A. ἔχουσα Cant. in marg.
[b] μελετήσῃ] μελετήσει A. Holst. et sic Holst. infra.
[c] συνίστῃ] συνίστησι V. A. Holst.
[d] ὑφίστησιν] Sic Heeren. ἀφίστησιν V. A. E. ὑφίστασιν Holst. Cant.

εὖ ἴστε, παρ᾽ ἄνδρας τε ἐλπίζω ἀφίξεσθαι ἀγαθούς· καὶ τοῦτο μὲν οὐκ ἂν πάνυ [a] διισχυρισαίμην· τὸ μέντοι παρὰ θεοὺς δεσπότας πάνυ ἀγαθοὺς ἥξειν, εὖ ἴστε ὅτι εἴπερ τι ἄλλο τῶν τοιούτων, διισχυρισαίμην ἂν καὶ τοῦτο. Ὥστε διὰ ταῦτα οὐχ ὁμοίως ἀγανακτῶ, ἀλλὰ καὶ εὔελπίς εἰμι [b] εἶναί τι τοῖς τετελευτηκόσι· καὶ ὥσπέρ γε καὶ πάλαι λέγεται, πολὺ ἄμεινον τοῖς ἀγαθοῖς ἢ τοῖς κακοῖς.

Ἐν ταυτῷ. [p. 80.]

57 Ἡ δὲ ψυχὴ ἄρα τὸ ἀειδὲς, τὸ εἰς τοιοῦτον τόπον ἕτερον οἰχόμενον, γενναῖον καὶ καθαρὸν καὶ ἀειδῆ, εἰς Ἅιδου, ὡς ἀληθῶς, παρὰ τὸν ἀγαθὸν καὶ φρόνιμον θεὸν, οἷ, ἂν θεὸς ἐθέλῃ, αὐτίκα τῇ ἐμῇ ψυχῇ ἰτέον· αὕτη τε δὴ ἡμῖν ἡ τοιαύτη καὶ οὕτως πεφυκυῖα, ἀπαλλαττομένη τοῦ σώματος, εὐθὺς διαπεφύσηται καὶ ἀπόλωλεν, ὥς φασιν οἱ πολλοὶ ἄνθρωποι; Πολλοῦ γε δεῖ, ὦ φίλε Κέβης τε καὶ Σιμμία· ἀλλὰ πολλῷ μᾶλλον ὧδε ἔχει· ἐὰν μὲν καθαρὰ ἀπαλλάττηται, μηδὲν τοῦ σώματος συνεφέλκουσα, ἅτε οὐδὲν κοινωνοῦσα αὐτῷ ἐν τῷ βίῳ ἑκοῦσα εἶναι, ἀλλὰ φεύγουσα αὐτὸ, καὶ συνηθροισμένη αὐτὴ εἰς αὑτὴν, ἅτε μελετῶσα ἀεὶ τοῦτο· τοῦτο δὲ οὐδὲν ἄλλο ἐστὶν ἢ ὀρθῶς φιλοσοφοῦσα, καὶ τῷ ὄντι τεθνάναι μελετῶσα ῥᾳδίως· ἢ οὐ τοῦτ᾽ ἂν εἴη μελέτη θανάτου; Παντάπασί γε. Οὐκ οὖν οὕτω μὲν ἔχουσα, εἰς τὸ ὅμοιον αὐτῇ τὸ ἀειδὲς [c] ἀπέρχεται, τὸ θεῖόν τε καὶ ἀθάνατον καὶ φρόνιμον; οἷ ἀφικομένῃ ὑπάρχει [d] αὐτῇ εὐδαίμονι εἶναι, πλάνης καὶ ἀνοίας καὶ φόβων καὶ ἀγρίων ἐρώτων καὶ τῶν ἄλλων κακῶν τῶν ἀνθρωπείων ἀπηλλαγμένῃ· ὥσπερ δὲ λέγεται κατὰ τῶν μεμυημένων, ὡς ἀληθῶς τὸ λοιπὸν μετὰ θεῶν διάγουσα; Οὕτω φῶμεν, ὦ Κέβης, [e] ἢ ἄλλως; Οὕτω νὴ Δία, ἔφη ὁ Κέβης. Ἐὰν δέ γε, οἶμαι,

55.
[a] διισχυρισάμην A.
[b] εἶναί τι om. A. Cant.
[c] ἔρχεται A.
[d] αὐτὴ εὐδαίμων A. Cant.
[e] ἢ ἄλλως—Κέβης om. A.

μεμιασμένη καὶ ἀκάθαρτος τοῦ σώματος ἀπαλλάττηται, ἅτε τῷ σώματι ἀεὶ ξυνοῦσα, καὶ τοῦτο θεραπεύουσα καὶ ἐρῶσα, καὶ γεγοητευμένη ὑπ' αὐτοῦ, ὑπό [e]τε τῶν ἐπιθυμιῶν καὶ ἡδονῶν, ὥστε μηδὲν ἄλλο δοκεῖν εἶναι ἀληθὲς ἀλλ' ἢ τὸ σωματοειδὲς, οὗ τις ἂν ἅψαιτο καὶ ἴδοι καὶ πίοι καὶ φάγοι καὶ πρὸς τὰ ἀφροδίσια χρήσαιτο· τὸ δὲ τοῖς ὄμμασι σκοτῶδες καὶ ἀειδὲς, νοητὸν δὲ καὶ φιλοσοφίᾳ αἱρετὸν, τὸ δὲ εἰθισμένον μισεῖν τε καὶ τρέμειν καὶ φεύγειν· οὕτω δὴ ἔχουσαν, οἴει ψυχὴν αὐτὴν καθ' αὑτὴν εἰλικρινῆ ἀπαλλάξασθαι; Οὐδ' ὁπωστιοῦν, ἔφη. Ἀλλὰ διειλημμένην γε οἶμαι ὑπὸ τοῦ σωματοειδοῦς, ὅ αὐτῃ ὁμολογίᾳ τε καὶ συνουσίᾳ τοῦ σώματος διὰ τὸ ἀεὶ ξυνεῖναι καὶ διὰ τὴν [ee]πολλὴν μελέτην ἦν ἐποίησε ξύμφυτον. Πάνυ γε. Ἐμβριθὲς δέ γε, ὦ φίλε, τοῦτο οἴεσθαι χρὴ εἶναι, καὶ βαρὺ καὶ γεῶδες καὶ ὁρατόν· [f]ὃ δὴ καὶ ἔχουσα ἡ τοιαύτη ψυχὴ βαρύνεταί τε καὶ ἕλκεται p. 135.
πάλιν εἰς τὸν ὁρατὸν τόπον, φόβῳ τοῦ ἀειδοῦς δὲ καὶ [g]Ἅιδου, ὥσπερ λέγεται, περὶ τὰ μνήματά τε καὶ τοὺς τάφους κυλινδουμένη· περὶ ἃ δὴ καὶ ὤφθη καὶ ἄττα ψυχῶν σκιοειδῆ φάσματα, οἷα παρέχονται αἱ τοιαῦται ψυχαὶ εἴδωλα, αἱ μὴ καθαρῶς ἀπολυθεῖσαι ἀλλὰ τοῦ ὁρατοῦ μετέχουσαι· διὸ καὶ ὁρῶνται. Εἰκός γε, ὦ Σώκρατες. Εἰκὸς μέντοι γε, ὦ Κέβης, καὶ οὔ τι γε τὰς τῶν ἀγαθῶν ταύτας εἶναι, ἀλλὰ τὰς τῶν φαύλων, αἳ περὶ τὰ τοιαῦτα ἀναγκάζονται πλανᾶσθαι, δίκην τίνουσαι [[h]τῆς προτέρας τροφῆς, κακῆς οὔσης. Καὶ μέχρι γε τούτου πλανῶνται ἕως ἂν τῇ τοῦ ξυνεπακολουθοῦντος τοῦ σωματοειδοῦς] ἐπιθυμίᾳ πάλιν ἐνδεθῶσιν εἰς σῶμα. Ἐνδοῦνται δὲ, ὥσπερ εἰκὸς, εἰς τοιαῦτα ἤθη ὁποῖα ἄττ' ἂν μεμελετηκυῖαι τύχωσιν ἐν τῷ βίῳ. Τὰ ποῖα δὴ ταῦτα λέγεις, ὦ Σώκρατες; Οἷον τοὺς μὲν γαστριμαργίας

[e] γε A.
[ee] πολλὴν ἐκείνην Cant.
[f] ὃ δὴ—ὁρατὸν om. A.
[g] ἄλλου A. Infra κυλινδουμένους Cant.
[h] [ ] om. A. Cant.

τε καὶ ὕβρεις καὶ φιλοποσίας μεμελετηκότας, καὶ μὴ διευλαβουμένους, εἰς τὰ τῶν ὄνων γένη καὶ τῶν τοιούτων θηρίων εἰκὸς ἐνδύεσθαι· ἢ οὐκ οἴει; Πάνυ μὲν οὖν εἰκὸς λέγεις. Τοὺς δέ γε ἀδικίας τε καὶ τυραννίδας καὶ ἔρεις πάσας προτετιμηκότας, εἰς τὰ τῶν λύκων τε καὶ ἱεράκων καὶ ἰκτίνων γένη· ἢ ποῖ ἂν ἄλλ' ὅσα φαμὲν τὰς τοιαύτας ἰέναι; Ἀμέλει, ἔφη ὁ Κέβης, εἰς τὰ τοιαῦτα. Οὐκ ἦν, ἢ δ' ὅς, δηλαδὴ καὶ τὰ ἄλλα, ἢ ἂν ἕκαστα ἐοικότα τὰς τῶν αὐτῶν ὁμοιότητας τῆς μελέτης. Δῆλον δὴ, ἔφη. Πῶς δ' οὔ; Οὐκοῦν εὐδαιμονέστατοι, ἔφη, καὶ τούτων εἰσὶ, καὶ εἰς βέλτιστον τόπον ἰόντες, οἱ τὴν δημοτικήν τε καὶ πολιτικὴν ἀρετὴν ἐπιτετηδευκότες, ἣν δὴ καλοῦσι σωφροσύνην καὶ δικαιοσύνην, ἐξ ἔθους τε καὶ μελέτης γεγονυῖαν, ἄνευ φιλοσοφίας τε καὶ νοῦ; Πῆ δὴ εὐδαιμονέστατοι; Ὅτι τούτοις εἰκός ἐστιν εἰς τὸ τοιοῦτον πάλιν ἀφικνεῖσθαι πολιτικὸν καὶ ἥμερον γένος, ἤ που μελιττῶν ἢ σφηκῶν ἢ μυρμήκων, ἢ καὶ εἰς ταὐτόν τε πάλιν τὸ ἀνθρώπινον γένος, καὶ γίγνεσθαι ἐξ αὐτῶν ἄνδρας μετρίους. Εἰκός. Εἰς δέ γε [a] θεῶν γένος, μὴ φιλοσοφήσαντι καὶ παντελῶς καθαρῷ ἀπιόντι, οὐ θέμις ἀφικνεῖσθαι ἄλλῳ ἢ τῷ φιλομαθεῖ.

58 Ἐν ταὐτῷ [p. 107.]

Ἀλλὰ [a] τό γ' ἔφη, ὦ ἄνδρες, δίκαιον διανοηθῆναι, ὅτι, εἴπερ ἡ ψυχὴ [b] ἀθάνατος, ἐπιμελείας δὴ δεῖται, οὐχ ὑπὲρ τοῦ χρόνου τούτου μόνον, ἐν ᾧ καλοῦμεν τὸ ζῆν, ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ παντός· καὶ ὁ κίνδυνος νῦν [c] δὲ καὶ δόξειεν [d] ἂν δεινὸς εἶναι, εἴ τις αὐτῆς [e] ἀμελήσει. Εἰ μὲν γὰρ ἦν ὁ θάνατος τοῦ παντὸς ἀπαλλαγὴ, [f] ἕρμαιον ἦν τοῖς [g] κακῶς ἀποθανοῦσι τοῦ τε σώματος ἅμα ἀπηλλάχθαι, καὶ τῆς αὐτῶν

[a] ὧν Cant. ὦ A.

58.

[a] τόδε γ' Plat.
[b] ἀθάνατός ἐστιν, Plat.
[c] δὴ Plat.
[d] ἂν μάλιστα δεινὸς Plat.
[e] ἀμελήσειεν Plat.
[f] ἕρμαιον ἂν ἦν Plat.
[g] κακοῖς Plat.

κακίας, μετὰ τῆς ψυχῆς· νῦν δὲ, ἐπειδὴ ἀθάνατος φαίνεται οὖσα, οὐδεμία ἂν εἴη αὐτῇ ἄλλη ἀποφυγὴ κακῶν, οὐδὲ σωτηρία, πλὴν τοῦ ὡς βελτίστην τε καὶ φρονιμωτάτην γενέσθαι. Οὐδὲν γὰρ ἄλλο ἔχουσα εἰς Ἅιδου ἡ ψυχὴ ἔρχεται, πλὴν τῆς παιδείας τε καὶ τροφῆς· ἃ δὴ καὶ λέγεται μέγιστα ὠφελεῖν ἢ βλάπτειν τὸν [h]τελευτήσαντα εὐθὺς ἐν ἀρχῇ τῆς ἐκεῖσε πορείας. Λέγεται δὲ οὕτως, ὡς ἄρα τελευτήσαντα ἕκαστον ὁ ἑκάστου δαίμων, ὥσπερ ζῶντα εἰλήχει,[i] οὕτως ἄγειν ἐπιχειρεῖ εἰς δή τινα τόπον, [k]οἷ δὴ τοὺς [l]συλλεγέντας διαδικασαμένους εἰς Ἅιδου πορεύεσθαι, μετὰ ἡγεμόνος ἐκείνου ᾧ δὴ προστέτακται τοὺς ἐνθένδε ἐκεῖσε πορεῦσαι. Τυχόντας δ' [m]ἐκεῖνον δὴ τυχεῖν, καὶ μείναντας ὃν χρὴ χρόνον, ἄλλος δεῦρο p. 136. πάλιν ἡγεμὼν κομίζει, ἐν πολλαῖς χρόνου καὶ μακραῖς περιόδοις. Ἔστι δὲ ἄρα ἡ πορεία οὐχ ὡς ὁ Αἰσχύλου [n]Τήλεφος λέγει. Ἐκεῖνος μὲν γὰρ [o]οἶμον ἁπλῆν [oo]εἰσὶν εἰς Ἅιδου φέρειν· ἡ δ' οὔτε ἁπλῆ οὔτε μία φαίνεταί μοι εἶναι. Οὐδὲν γὰρ ἂν [p]ἡγεμόνων ἔδει· οὐ γάρ που τὶς ἂν [q]ἁμάρτοι [r]οὐδ' ὁμόσαι, μιᾶς [s]οὔσης ὁδοῦ. Νῦν δὲ ἔοικε σχίσεις τε καὶ περιόδους πολλὰς ἔχειν· ἀπὸ τῶν [t]θυσιῶν τε καὶ νομίμων τῶν ἐνθάδε τεκμαιρόμενος λέγω. Ἡ μὲν οὖν κοσμία τε καὶ φρόνιμος ψυχὴ ἕπεταί τε καὶ οὐκ ἀγνοεῖ τὰ παρόντα· ἡ δὲ ἐπιθυμητικῶς τοῦ σώματος ἔχουσα, ὅπερ ἐν τῷ [u]ἔμπροσθεν εἶπον, περὶ ἐκεῖνο πολὺν χρόνον ἐπτοημένη, καὶ περὶ [x]τὸν ὁρατὸν τόπον [y]ἀλλὰ ἀντιτείνασα καὶ πολλὰ παθοῦσα, βίᾳ καὶ μόλις ὑπὸ τοῦ προστεταγμένου δαίμονος [z]οἴχεται ἀγομένη. [a]Ἀφικομένη δὲ

[h] τελευτήσαντα—ἕκαστον om. A.
[i] οὗτος Plat.
[k] οἷ δεῖ τοὺς Plat.
[l] ξυλλεγέντας Plat.
[m] ἐκεῖ ὧν δεῖ τυχεῖν Plat.
[n] Τήφελος A.
[o] οἶμον—οὐδὲν γὰρ om. A.
[oo] φησὶν Plat.
[p] ἡγεμὼν A.
[q] διαμάρτοι Plat.
[r] οὐδαμόσε Plat.
[s] ὁδοῦ οὔσης Plat.
[t] ὁσίων Plat.
[u] πρόσθεν Plat.
[x] τὸ A.
[y] πολλὰ Plat.
[z] εἴχεται A.
[a] ἀφικομένην Plat. om. Cant.

ὅθι περ [b]ἄλλαι, τὴν μὲν ἀκάθαρτον καί τι πεποιηκυῖαν τοιοῦτον, ἢ φόνων ἀδίκων ἡμμένην, ἢ ἄλλα ἄττα τοιαῦτα εἰργασμένην, ἃ τούτων ἀδελφά τε καὶ ἀδελφῶν ψυχῶν ἔργα τυγχάνει ὄντα, ταύτην μὲν ἅπας φεύγει τε καὶ [c]ὑποκρύπτεται, καὶ οὔτε ξυνέμπορος οὔτε ἡγεμὼν ἐθέλει γίγνεσθαι· αὐτὴ δὲ πλανᾶται ἐν πάσῃ ἐχομένη ἀπορίᾳ, ἕως ἂν δή τινες χρόνοι γένωνται· ὧν [d]ἐλθόντων, ὑπ' ἀνάγκης φέρεται εἰς τὴν [dd]αὐτῇ πρέπουσαν οἴκησιν. Ἡ δὲ καθαρῶς τε καὶ μετρίως τὸν βίον διεξελθοῦσα, καὶ ξυνεμπόρων καὶ ἡγεμόνων θεῶν τυχοῦσα, ᾤκησε τὸν αὐτῇ ἑκάστῃ τόπον προσήκοντα. Εἰσὶ δὲ πολλοὶ καὶ θαυμαστοὶ τῆς γῆς τόποι· καὶ αὐτή, οὔτε οἵα οὔτε [e]αὔτη δοξάζεται ὑπὸ τῶν περὶ γῆς εἰωθότων λέγειν, ὡς ἐγὼ ὑπὸ [f]δέ τινος πέπεισμαι. Καὶ ὁ Σιμμίας, Πῶς ταῦτα, ἔφη, λέγεις, ὦ Σώκρατες; περὶ γάρ τοι [g]γῆς καὶ αὐτὸς πολλὰ δὴ ἀκήκοα· οὐ μέντοι ταῦτα ἅ σε πείθει· ἡδέως [h]οὖν ἀκούσαιμι. Ἀλλὰ [i]μέντοι, ὦ Σιμμία, οὐχ ἡ Γλαύκου τέχνη γέ μοι δοκεῖ εἶναι διηγήσασθαι ἅ [k]τε ἐστίν· ὡς μέντοι ἀληθῆ, χαλεπώτερόν μοι φαίνεται ἢ κατὰ τὴν Γλαύκου τέχνην. Καὶ ἅμα μὲν ἐγὼ ἴσως οὐδ' ἂν οἷός τε εἴην, ἅμα δέ, εἰ καὶ ἠπιστάμην, ὁ βίος μοι δοκεῖ ὁ ἐμός, ὦ Σιμμία, τῷ [l]μήκει οὐκ ἐξαρκεῖν. Τὴν μέντοι ἰδέαν [m]τῆς γῆς, οἵαν πέπεισμαι εἶναι, καὶ τοὺς τόπους αὐτῆς, οὐδέν με [n]λέγειν κωλύει. Ἀλλ', ἔφη [o]Σιμμίας, καὶ ταῦτα ἀρκεῖ. Πέπεισμαι τοίνυν, ἦ δ' ὅς, ἐγώ, ὡς πρῶτον μέν, [p]γῆ ἔστιν ἐν μέσῳ [q]τοῦ οὐρανοῦ περιφερὴς οὖσα, μηδὲν αὐτῇ δεῖν μήτε

[b] αἱ ἄλλαι Plat.
[c] ὑπεκτρέπεται Plat.
[d] ἐξελθόντων Plat.
[dd] αὐτὴν suprasc. ῇ A.
[e] ὅση Plat.
[f] δὲ om. Plat.
[g] τῆς γῆς Plat.
[h] ἂν οὖν Plat.
[i] μέντι A.
[k] γ' Plat.
[l] μήκει τοῦ λόγου οὐκ Plat.
[m] τοῖς γῆς A.
[n] κωλύει λέγειν Plat.
[o] ὁ Σιμμία. Plat.
[p] εἰ Plat. γῆς Cant.
[q] τῷ οὐρανῷ Plat.

ἀέρος πρὸς τὸ μὴ πεσεῖν, μήτε ἄλλης ἀνάγκης μηδεμιᾶς τοιαύτης· ἀλλὰ [r] ἱκανὴν εἶναι αὐτὴν ἴσχειν τὴν ὁμοιότητα τοῦ οὐρανοῦ αὐτοῦ [s] αὐτῷ πάντῃ, καὶ τῆς γῆς αὐτῆς [t] τὴν [ἰσορροπίαν] ἰσόρροπον γὰρ πρᾶγμα, ὁμοίου τινὸς ἐν μέσῳ τεθὲν, οὐχ [u] ἕξιν ἄλλον οὐδ' ἧττον οὐδαμόσε κλιθῆναι· ὁμοίως δ' ἔχον, ἀκλινὲς μένει. Πρῶτον [x] μὲν, ἦ δ' ὃς, τοῦτο πέπεισμαι. Καὶ ὀρθῶς γε, ἔφη ὁ Σιμμίας. Ἔτι τοίνυν, ἔφη, [y] πᾶν μέγα τι εἶναι αὐτό· καὶ ἡμᾶς οἰκεῖν τοὺς μέχρι Ἡρακλείων στηλῶν ἀπὸ Φάσιδος ἐν [z] μικρῷ τινὶ μορίῳ, ὥσπερ [a] ἐπὶ τέλμα μύρμηκας ἢ βατράχους, περὶ τὴν θάλατταν οἰκοῦντας, p. 137. καὶ ἄλλους ἄλλοθι πολλοὺς ἐν πολλοῖς τοιούτοις τόποις [b] οἰκεῖν. Εἶναι γὰρ πανταχῇ περὶ τὴν γῆν πολλὰ κοῖλα καὶ παντοδαπὰ καὶ τὰς ἰδέας καὶ τὰ μεγέθη· εἰς ἃ ξυνερρυηκέναι τό τε ὕδωρ καὶ τὴν ὁμίχλην καὶ τὸν ἀέρα· αὐτὴν δὲ τὴν γῆν καθαρὰν ἐν καθαρῷ κεῖσθαι τῷ οὐρανῷ, ἐν ᾧπέρ ἐστι τὰ ἄστρα, ὃν δὴ αἰθέρα ὀνομάζειν τοὺς πολλοὺς [c] τοὺς περὶ [d] ταῦθ' εἰωθότων λέγειν· [e] ὃν δὴ ὑποστάθμην ταῦτα εἶναι, καὶ ξυρρεῖν ἀεὶ εἰς τὰ κοῖλα τῆς γῆς. Ἡμᾶς οὖν οἰκοῦντας ἐν τοῖς κοίλοις αὐτῆς λεληθέναι, καὶ οἴεσθαι ἄνω [f] ἐπὶ γῆς οἰκεῖν· ὥσπερ ἂν εἴ τις ἐν μέσῳ τῷ πυθμένι τοῦ πελάγους οἰκῶν [g] οἴοιτο ἐπὶ τῆς θαλάττης οἰκεῖν, καὶ διὰ τοῦ ὕδατος ὁρῶν τὸν ἥλιον καὶ τὰ ἄλλα ἄστρα τὴν θάλατταν [h] ἡγοῖτο οὐρανὸν εἶναι, διὰ δὲ βραδυτῆτά τε καὶ ἀσθένειαν, μηδεπώποτε ἐπὶ τὰ ἄκρα τῆς θαλάττης ἀφιγμένος μηδὲ ἑωρακὼς εἴη, ἐκδὺς καὶ ἀνακύψας ἐκ τῆς

[r] ἱκανήν γε εἶναι Plat.
[s] ἑαυτῷ Plat.
[t] ἰσορροπίαν om. A. Cant.
[u] ἕξει μᾶλλον Plat.
[x] μὲν δὴ Plat.
[y] πάμμεγά τι Plat.
[z] σμικρῷ Plat.
[a] περὶ Plat.
[b] εἰκεῖν A.
[c] τῶν Plat.
[d] τὰ τοιαῦτα Plat.
[e] οὗ Plat.
[f] ἐπὶ τῆς γῆς Plat.
[g] οἴοιτό τε Plat.
[h] ἡγεῖτο A.

θαλάττης εἰς τὸν ἐνθάδε τόπον, [i]ὅσον καθαρώτερος καὶ καλλίων τυγχάνει ὢν τοῦ παρὰ σφίσι, μηδὲ ἄλλου ἀκηκοὼς εἴη τοῦ ἑωρακότος· ταὐτὸν [k]δὲ τοῦτο καὶ ἡμᾶς πεπονθέναι. Οἰκοῦντας γὰρ ἔν τινι κοίλῳ τῆς γῆς οἴεσθαι ἐπάνω αὐτῆς οἰκεῖν, καὶ τὸν ἀέρα οὐρανὸν καλεῖν, ὡς διὰ τούτου, [l]ὄντος, τὰ ἄστρα χωροῦντα· τὸ δὲ εἶναι ταὐτὸν, ὑπ᾽ ἀσθενείας καὶ βραδυτῆτος οὐχ οἵους τε εἶναι ἡμᾶς διεξελθεῖν ἐπ᾽ ἔσχατον [m]ἀέρα. Ἐπεὶ, εἴ τις αὐτοῦ ἐπ᾽ ἄκρα ἔλθοι, ἢ πτηνὸς [n]γενάμενος ἀνάπτοιτο, [o]κατιδεῖν ἀνακύψαντα, ὥσπερ [p]οἱ ἐνθάδε οἱ ἐκ τῆς θαλάττης ἰχθύες ἀνακύπτοντες ὁρῶσι τὰ ἐνθάδε, οὕτως ἄν τινα καὶ τὰ ἐκεῖ κατιδεῖν· καὶ, εἰ ἡ φύσις ἱκανὴ [q]ἦν ἀνασχέσθαι [r]θεωροῦσαι, γνῶναι ἂν ὅτι ἐκεῖνός ἐστιν ὁ [s]ἀληθῶς οὐρανὸς καὶ τὸ ἀληθινὸν φῶς καὶ ἡ ὡς ἀληθῶς γῆ. Ἥδε μὲν γὰρ ἡ γῆ καὶ οἱ λίθοι, καὶ ἅπας ὁ τόπος ὁ ἐνθάδε, διεφθαρμένα ἐστὶ καὶ καταβεβρωμένα, ὥσπερ τὰ ἐν τῇ θαλάττῃ ὑπὸ τῆς ἅλμης· καὶ οὔτε φύεται ἄξιον [t]λόγου οὐδὲν ἐν τῇ θαλάττῃ, οὔτε τέλειον, ὡς ἔπος εἰπεῖν, οὐδέν ἐστι· σήραγγες δὲ καὶ ἄμμος, καὶ πηλὸς ἀμήχανος καὶ [u]βόρβοροί εἰσιν, ὅπου [x]ἂν ἡ γῆ ᾖ· καὶ πρὸς τὰ [y]παρ᾽ ἡμῖν πολὺ ἂν ἔτι πλέον φανείη διαφέρειν. Εἰ γὰρ [z]δὴ καὶ μῦθον λέγειν καλὸν, ἄξιον ἀκοῦσαι, ὦ Σιμμία, οἷα τυγχάνει τὰ ἐπὶ [a]γῆς ὑπὸ [b]τῶν οὐρανῶν ὄντα. Ἀλλὰ μὴν, ἔφη ὁ Σιμμίας, ὦ Σώκρατες, ἡμεῖς γε τούτου τοῦ μύθου ἡδέως ἂν ἀκούσαιμεν. Λέγεται τοίνυν, ἔφη, ὦ ἑταῖρε,

[i] ὅσῳ Plat. καθαρότερος A.
[k] δὴ Plat.
[l] οὐρανοῦ ὄντος Plat.
[m] τὸν ἀέρα Plat.
[n] γενόμενος Plat.
[o] κατιδεῖν ἂν Plat.
[p] οἱ om. Plat.
[q] εἴη Plat.
[r] θεωροῦσα Plat.
[s] ἀληθινὸς Plat.
[t] λόγον A. Mox οὐτελεῖον A.
[u] φόρφοροί A.
[x] ἂν καὶ Plat.
[y] ἡμῖν κάλλη κρίνεσθαι οὐδ᾽ ὁπωστιοῦν ἄξια. Ἐκεῖνα δὲ αὖ τῶν παρ᾽ ἡμῖν πολὺ Plat.
[z] δεῖ Plat.
[a] τῆς γῆς Plat.
[b] τῷ οὐρανῷ Plat. τῶν οὐρανῶν A.

πρῶτον μὲν εἶναι τοιαύτη ἡ γῆ αὐτὴ ἰδεῖν, [c]εἴ τις ἄνωθεν θεῷτο, ὥσπερ αἱ δωδεκάσκυτοι σφαῖραι, ποικίλη, χρώμασι [d]διειλημμένη· ὧν καὶ τὰ ἐνθάδε εἶναι [e]χρώματα, οἷς δὴ οἱ γραφεῖς καταχρῶνται. Ἐκεῖ δὲ πᾶσαν τὴν γῆν ἐκ τοιούτων εἶναι, καὶ πολὺ ἔτι ἐκ λαμπροτέρων καὶ καθαρωτέρων ἢ τούτων, τὴν μὲν γὰρ ἁλουργῆ εἶναι καὶ θαυμαστὴν τὸ κάλλος, τὴν δὲ χρυσοειδῆ· τὴν δὲ ὅση λευκὴ, γύψου ἢ χιόνος λευκοτέραν, καὶ ἐκ τῶν ἄλλων χρωμάτων συγκειμένην ὡσαύτως, καὶ ἔτι πλειόνων [f]καλλιόνων ἢ ὅσα ἡμεῖς ἑωράκαμεν. Καὶ γὰρ [g]αὐτὸς ταῦτα τὰ κοῖλα αὐτῆς, ὕδατός τε καὶ ἀέρος [h]ἔκπλεα ὄντα, χρώματός τι εἶδος [i]παρὰ τὸ εἶδος [k]παρέχεται, στίλβοντα ἐν τῇ τῶν ἄλλων χρωμάτων ποικιλίᾳ· ὥστε ἕν τι αὐτῆς εἶδος ξυνεχὲς ποικίλον φαντάζεσθαι. Ἐν δὲ [l]τοιαύτῃ οὔσῃ [m]τοιαῦτα ἀνὰ λόγον τὰ φυόμενα φύε- p. 138.
σθαι, δένδρα τε καὶ ἄνθη, καὶ τοὺς καρπούς· καὶ αὖ τὰ ὄρη ὡσαύτως καὶ τοὺς λίθους ἔχειν ἀνὰ τὸν [n]αὐτοῦ λόγον τὴν τελειότητα καὶ τὴν [o]διαφωνίαν, καὶ τὰ χρώματα καλλίω· ὧν καὶ τὰ ἐνθάδε λιθίδια εἶναι ταῦτα [p]ἀγαπώμενα μόρια, σάρδιά τε καὶ ἰάσπιδας καὶ σμαράγδους, καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα· ἐκεῖ δὲ οὐδὲν [q]ὃ μὴ τοιοῦτον εἶναι, καὶ ἔτι τούτων καλλίω. Τὸ δ' αἴτιον τούτου εἶναι, ὅτι ἐκεῖνοι οἱ λίθοι καθαροί εἰσι, καὶ οὐ [r]κατεδηδομένοι, [s]οὔτε διεφθαρμένοι, ὥσπερ οἱ ἐνθάδε, ὑπὸ σηπεδόνος καὶ ἅλμης, [t]ὑπὸ τῶν δεῦρο ξυνερρυηκότων, [u]καὶ λίθοις καὶ γῇ καὶ τοῖς ἄλλοις ζώοις τε

[c] ἢ A.
[d] διειλημμένη Plat. ποικίλη χ. δὲ εἰλημμένη A. ποικίλοις χ. διειλημμένην Cant.
[e] χρώματα ὥσπερ δείγματα, οἷς Plat.
[f] καὶ καλλιόνων Plat.
[g] αὐτὰ Plat.
[h] ἔμπλεα Plat.
[i] παρὰ τὸ εἶδος om. Plat.
[k] παρέχεσθαι Plat.
[l] ταύτῃ Plat.
[m] τοιαύτῃ Plat.
[n] αὐτὸν Plat.
[o] διαφάνειαν Plat.
[p] τὰ ἀγαπώμενα Plat.
[q] ὅ, τι οὐ Plat.
[r] κατεδηδεσμένοι Plat.
[s] οὐδὲ Plat.
[t] καὶ ὑπὸ Plat.
[u] ἃ καὶ Plat.

καὶ φυτοῖς αἴσχη τε καὶ νόσους παρέχει. Τὴν δὲ γῆν αὐτὴν κεκοσμῆσθαι τούτοις τε ἅπασι, καὶ ἔτι χρυσῷ τε καὶ ἀργύρῳ, καὶ τοῖς ἄλλοις αὖ τοῖς τοιούτοις. Ἐκφανῆ γὰρ [x]αὐτοὺς πεφυκέναι, ὄντα πολλὰ [y]πλήθη καὶ μεγάλα, καὶ [z]πολλαχοῦ τῆς γῆς· ὥστε αὐτὴν ἰδεῖν εἶναι θέαμα [a]εὐδαιμόνων. Ζῶα δ' ἐπ' αὐτῆς εἶναι ἄλλα τε πολλὰ καὶ ἀνθρώπους, τοὺς μὲν ἐν [b]μεσογαίᾳ οἰκοῦντας, τοὺς δὲ περὶ τὸν ἀέρα, ὥσπερ ἡμεῖς περὶ τὴν θάλατταν· τοὺς δὲ ἐν [c]νήσοις, ἃς [d]περιρρεῖν [e]πρὸς τὸν ἀέρα, πρὸς τῇ ἠπείρῳ οὔσας· καὶ ἑνὶ λόγῳ, ὅπερ ἡμῖν τὸ ὕδωρ καὶ ἡ θάλαττά ἐστι πρὸς τὴν ἡμετέραν χρείαν, τοῦτο ἐκεῖ τὸν ἀέρα· ὃ δὲ ἡμῖν ἀήρ, [f]ἐκείνοις τὸν αἰθέρα. τὰς δὲ ὥρας [g]αὐτῆς κρᾶσιν [h]ἔχει τοιαύτην, ὥσπερ ἐκείνους [i]ἀνόσους εἶναι, καὶ χρόνον τε ζῆν πολὺ πλείω τῶν ἐνθάδε, καὶ ὄψει καὶ ἀκοῇ καὶ φρονήσει καὶ πᾶσι τοῖς τοιούτοις ἡμῶν ἀφεστάναι τῇ αὐτῇ ἀποστάσει, ᾗπερ ἀήρ τε ὕδατος ἀφέστηκε, καὶ αἰθὴρ ἀέρος, πρὸς καθαρότητα. Καὶ δὴ καὶ θεῶν ἄλση τε καὶ ἱερὰ αὐτοῖς εἶναι· ἐν οἷς τῷ ὄντι οἰκητὰς θεοὺς εἶναι, καὶ φήμας [k]καὶ μαντείας καὶ αἰσθήσεις τῶν θεῶν, καὶ τοιαύτας συνουσίας γίγνεσθαι αὐτοῖς πρὸς αὐτούς· καὶ τόν γε ἥλιον καὶ σελήνην καὶ ἄστρα ὁρᾶσθαι ὑπ' αὐτῶν οἷα τυγχάνει ὄντα, καὶ τὴν ἄλλην εὐδαιμονίαν τούτων ἀκόλουθον εἶναι. Καὶ ὅλην μὲν δὴ τὴν γῆν οὕτω πεφυκέναι, καὶ τὰ περὶ τὴν γῆν· τόπους δ' ἐν αὐτῇ εἶναι [l]καὶ τὰ [m]ἔγκοιλα αὐτῆς, κύκλῳ περὶ ὅλην, πολλούς· τοὺς μὲν βαθυτέρους καὶ [n]ἀναπεπταμένους μᾶλλον ἢ ἐν ᾧ

[x] αὐτὰ Plat.
[y] πλήθει Plat.
[z] πανταχοῦ Plat.
[a] εὐδαιμόνων θεατῶν Plat. εὐδαιδόνων A. Mox αὐτοῖς Cant.
[b] μεσογείᾳ Plat. οἰκοῦντας om. Cant.
[c] νόσοις A.
[d] περιρρεῖ A.
[e] πρὸς om. Plat. sine acc. A.
[f] τοῦτο ἐκείνοις Plat.
[g] αὐτοῖς Plat. αὐτὰς Cant.
[h] ἔχειν Plat. Cant.
[i] ἀνίσους A.
[k] τε καὶ Plat.
[l] κατὰ Plat.
[m] ἔγκυκλα A.
[n] ἀναπεπταμένους Plat. ἀναπεπλασμένους Cant. ἀναπεπλαμένους A.

ἡμεῖς οἰκοῦμεν· τοὺς δὲ βαθυτέρους ὄντας, τὸ χάσμα αὐτοὺς ἔλαττον ἔχειν τοῦ παρ' ἡμῖν τόπου. Ἔστι δ' οὓς καὶ βραχυτέρους τῷ βάθει τοῦ ἐνθάδε εἶναι καὶ πλατυτέρους. Τούτους δὲ πάντας ὑπὸ γῆν εἰς [o]ἄλληλα συντετρῆσθαί τε πολλαχῇ, καὶ τὰ [p]στενώτερα καὶ εὐρύτερα, καὶ διεξόδους ἔχειν· ᾗ πολὺ μὲν ὕδωρ ῥεῖν ἐξ ἀλλήλων εἰς ἀλλήλους, ὥσπερ εἰς κρατῆρας, καὶ [q]ἀεννάων ποταμῶν ἀμήχανα μεγέθη ὑπὸ τὴν γῆν, καὶ θερμῶν ὑδάτων καὶ ψυχρῶν· πολὺ δὲ [r]πυρὸς, καὶ πυρὸς μεγάλους ποταμοὺς, [s]πολλὰ δὲ ὑγροῦ πηλοῦ, καὶ καθαρωτέρου καὶ [t]βορβορωδεστέρου· ὥσπερ ἐν Σικελίᾳ οἱ πρὸ τοῦ ῥύακος πηλοῦ ῥέοντες ποταμοὶ καὶ αὐτὸς ὁ ῥύαξ· ὧν δὴ καὶ ἑκάστους [u]τόπους πληροῦσθαι, [x]ὡς ἂν ἑκάστοις τύχῃ ἑκάστοτε [y]περιρροὴ γιγνομένη· ταῦτα δὲ πάντα κινεῖν ἄνω καὶ κάτω, ὥσπερ αἰώραν τινὰ ἐνοῦσαν ἐν τῇ γῇ. Ἔστι δὲ αὕτη ἡ αἰώρα διὰ φύσιν τοιάνδε τινά· [z]ἕν τι τῶν χασμάτων τῆς γῆς ἄλλως τε μέγιστον τυγχάνει ὂν, καὶ διαμπερὲς τετρημένον δι' ὅλης τῆς γῆς, τοῦτο ὅπερ p. 139. Ὅμηρος εἶπε, λέγων αὐτὸ,

[a]Τῆλε μάλ', ἧχι βάθιστον ὑπὸ χθονός ἐστι βέρεθρον.

Ὃ καὶ ἄλλοθι καὶ ἐκεῖνος καὶ ἄλλοι πολλοὶ τῶν ποιητῶν Τάρταρον κεκλήκασιν. Εἰς γὰρ τοῦτο τὸ χάσμα [b]συρρέουσί τε πάντες οἱ ποταμοὶ, καὶ ἐκ τούτου πάλιν πάντες ἐκρέουσι. Γίγνονται δὲ ἕκαστοι τοιοῦτοι, δι' οἵας ἂν καὶ τῆς γῆς ῥέωσιν. Ἡ δ' αἰτία ἐστὶ τοῦ ἐκρεῖν τε ἐντεῦθεν καὶ εἰσρεῖν πάντα τὰ ῥεύματα, ὅτι πυθμένα οὐκ ἔχει οὐδὲ βάσιν τὸ ὑγρὸν τοῦτο. Αἰωρεῖται δὲ καὶ κυμαίνει ἄνω καὶ κάτω,

[o] ἀλλήλους Plat.
[p] στενότερα Cant. Mox ἢ A. Cant.
[q] ἀενάων Plat.
[r] πῦρ Plat.
[s] πολλοὺς Plat.
[t] βορβοδεστέρου A.
[u] τοὺς τόπους Plat.
[x] ὧν Plat.
[y] ἡ περιρροὴ Plat.
[z] ἐν τῇ A.
[a] Τηλεμαχ' A.
[b] ξυρρέουσι Plat.

καὶ ὁ ἀὴρ καὶ τὸ πνεῦμα τὸ περὶ [c]αὐτὸν ταὐτὸν ποιεῖ. Ξυνέπεται γὰρ [d]αὐτὸ καὶ ὅταν εἰς τὸ ἐπέκεινα τῆς γῆς ὁρμήσῃ, καὶ ὅταν εἰς τὸ [e]ἔπειτα δέ. Καὶ ὥσπερ [f]ἐπὶ τῶν ἀναπνεόντων ἀεὶ ἐκπνεῖ τε καὶ ἀναπνεῖ [g]τὸ πνεῦμα ῥέον, δεινούς τινας ἀνέμους καὶ ἀμηχάνους παρέχεται, καὶ εἰσιὸν καὶ ἐξιόν. Ὅταν [h]δὲ οὖν ὑποχωρήσῃ τὸ ὕδωρ εἰς τὸν τόπον [i]τὸ δὴ κάτω καλούμενον, [k]τοῖς κατ' ἐκεῖνα τὰ [l]ῥεύματα τῆς γῆς εἰσρεῖ [m]καὶ πληροῖ αὐτά, ὥσπερ [n]ἐπαντλοῦντες· ὅταν τε αὖ ἐκεῖθεν ἀπολίπῃ, δεῦρο [o]δὴ ὁρμήσῃ, τὰ ἐνθάδε πληροῖ αὖθις· τὰ δὲ πληρωθέντα ῥεῖ διὰ τῶν ὀχετῶν καὶ διὰ τῆς γῆς, καὶ εἰς τοὺς τόπους ἕκαστα ἀφικνούμενα, εἰς [p]οὓς ἕκαστος ὁδοποιεῖται, [q]θάλαττάν τε καὶ λίμνας καὶ ποταμοὺς καὶ κρήνας ποιεῖ. Ἐντεῦθεν δὲ [r]πάλιν κατὰ τῆς γῆς, τὰ μὲν μακροτέρους τόπους περιελθόντα καὶ πλείους, τὰ δὲ ἐλάττους καὶ βραχυτέρους, πάλιν εἰς τὸν Τάρταρον ἐμβάλλει· τὰ μὲν πολὺ κατωτέρω [s]ἐπηντλεῖτο, τὰ δὲ ὀλίγον· πάντα δὲ ὑποκάτω εἰσρεῖ τῆς [t]ἐκροῆς. Καὶ ἔνια μὲν κατ' ἀντικρὺ [u]ᾗ ἐξέπεσεν, ἔνια δὲ κατὰ τὸ αὐτὸ μέρος· ἔστι δὲ ἃ παντάπασι κύκλῳ περιελθόντα, ἢ ἅπαξ ἢ καὶ πλεονάκις περιελιχθέντα περὶ τὴν γῆν, ὥσπερ οἱ ὄφεις, εἰς τὸ δυνατὸν κάτω καθέντα, πάλιν ἐμβάλλει· δυνατὸν δ' ἐστιν ἑκατέρωσε μέχρι τοῦ μέσου καθιέναι, [y]πέρα δ' οὔ· ἅπαντες γὰρ ἀμφοτέροις τοῖς ῥεύμασι τὸ ἑκατέρωθεν γίγνεται

[c] αὐτὸ Plat. ξυνέπεται—ὅταν εἰς τὸ om. Cant.
[d] αὐτῷ Plat.
[e] ἐπὶ τάδε Plat.
[f] ἐπὶ om. Plat.
[g] ῥέον τὸ πνεῦμα, οὕτω καὶ ἐκεῖ ξυναιωρούμενον τῷ ὑγρῷ τὸ πνεῦμα δεινούς Plat.
[h] τε οὖν ὁρμῆσαν Plat. τε οὖν ὑποχωρήσει Cant.
[i] τὸν Plat.
[k] τῆς A.
[l] ῥεύματα διὰ Plat.
[m] τε καὶ Plat.
[n] οἱ ἐπαντλοῦντες Plat.
[o] δὲ Plat.
[p] ἃς ἑκάστοις ὁδοποίηται A.
[q] θαλάττας Plat.
[r] πάλιν δυόμενα Plat.
[s] ᾗ ἐπηντλεῖτο Plat.
[t] ἐρροῆς A.
[u] ᾗ εἰσρεῖ ἐξέπεσεν Plat.
[y] παρᾶ A.

μέρος. Τὰ μὲν [z]δὴ ἄλλα πολλά τε καὶ μεγάλα καὶ παντοδαπὰ ῥεύματά ἐστι· τυγχάνει δ' ἄρα ὄντα ἐν τούτοις τοῖς πολλοῖς [a]τέτταρα ῥεύματα, ὧν τὸ μὲν μέγιστον καὶ ἐξωτάτω ῥέον [b]τὰ περὶ κύκλῳ, ὁ καλούμενος Ὠκεανός ἐστι· τούτου δὲ κατ' ἀντικρὺ καὶ ἐναντίως ῥέων, Ἀχέρων· ὃς δι' ἐρήμων τε τόπων ῥεῖ ἄλλων, καὶ δὴ καὶ ὑπὸ γῆν ῥέων, εἰς τὴν λίμνην ἀφικνεῖται τὴν [c]Ἀχερουσιάδα, οὗ αἱ τῶν τετελευτηκότων ψυχαὶ τῶν πολλῶν ἀφικνοῦνται· καί τινας εἱμαρμένους χρόνους μείνασαι, αἱ μὲν [d]μακροτέρους, πάλιν ἐκπέμπονται εἰς τὰς τῶν ζώων γενέσεις. Τρίτος δὲ ποταμὸς τούτων κατὰ [e]μέσον ἐκβάλλει, καὶ ἐγγὺς τῆς ἐκβολῆς ἐκπίπτει εἰς τόπον μέγαν, πυρὶ πολλῷ καιόμενον, καὶ λίμνην ποιεῖ μείζω τῆς παρ' ἡμῖν θαλάσσης, ζέουσαν ὕδατος καὶ πηλοῦ. Ἐντεῦθεν δὲ χωρεῖ κύκλῳ θολερὸς καὶ πηλώδης· περιελιττόμενος δὲ τῇ γῇ, ἄλλοσέ τε ἀφικνεῖται, καὶ παρ' ἔσχατα τῆς [f]Ἀχερουσίας λίμνης, οὐ [g]συμμιγνύμενος τῷ ὕδατι· περιελιχθεὶς δὲ πολλάκις ὑπὸ [h]γῆς, ἐμβάλλει κατωτέρω τοῦ Ταρτάρου. Οὗτος δ' ἐστὶν ὃν [i]ὀνομάζουσι Πυριφλεγέθοντα· οὗ καὶ οἱ ῥύακες ἀποσπάσματα ἀναφυσῶσιν, ὅπῃ ἂν τύχωσι τῆς γῆς. Τούτου δ' αὖ κατ' ἀντικρὺ ὁ [k]τάρταρος ἐκπίπτει εἰς τόπον πρῶτον δεινόν τε καὶ ἄγριον, p. 140.
ὡς λέγεται, [l]χρῶμα ἔχοντα ὅλον οἷον ὁ [m]κύανος· ὃν δὴ ἐπονομάζουσι Στύγιον, καὶ τὴν λίμνην ποιεῖ ὁ ποταμὸς ἐμβάλλων, Στύγα. Ὁ δ' ἐμπεσὼν ἐνταῦθα, καὶ δεινὰς δυνάμεις λαβὼν ἐν τῷ ὕδατι, δὺς κατὰ τῆς γῆς, περιελιττόμενος χωρεῖ ἐναντίως τῷ Πυριφλεγέθοντι, καὶ ἀπαντᾷ ἐν

[z] μὲν οὖν Plat.
[a] τέτταρ' ἄττα Plat.
[b] τὰ om. Plat.
[c] Ἀχερασιάδα A. ἀχερουσίδα Cant.
[d] μακροτέρους, αἱ δὲ βραχυτέρους, πάλιν Plat. Supra χρόνους om. A. Cant.
[e] μέσεις A. μέσου Cant.
[f] Ἀχερουσιάδος Plat.
[g] ξυμμιγνύμενος Plat.
[h] γῆν A. qui mox κατωτέρου.
[i] ἔτι ἐπονομάζουσι Plat. ὀνομ. A. Mox ὅπῃ ἂν τύχωσι om. Cant.
[k] τέταρτος Plat.
[l] χρῶμα δὲ Plat.
[m] κύαμος A. κυάνειος Cant.

τῇ [n] Ἀχερουσίᾳ λίμνῃ ἐξ ἐναντίας· καὶ οὐδὲ τὸ τούτου ὕδωρ οὐδενὶ μίγνυται, ἀλλὰ καὶ [o] οὗτος κύκλῳ περιελθὼν ἐμβάλλει εἰς τὸν Τάρταρον, ἐναντίως τῷ Πυριφλεγέθοντι. Ὄνομα δὲ τούτῳ ἐστὶν, ὡς οἱ ποιηταὶ λέγουσι, Κωκυτός. Τούτων δὲ οὕτω πεφυκότων, ἐπειδὰν ἀφίκωνται οἱ τετελευτηκότες εἰς τὸν τόπον οἷ ὁ δαίμων ἕκαστον κομίζει, πρῶτον μὲν διεδικάσαντο οἵ τε καλῶς καὶ [q] ὁσίως βιώσαντες, καὶ οἱ μή. Καὶ οἳ μὲν ἂν δόξωσι μέσως βεβιωκέναι, πορευθέντες ἐπὶ τὸν Ἀχέροντα, ἀναβάντες ἃ δὴ αὐτοῖς ὀχήματά ἐστιν, ἐπὶ τούτων ἀφικνοῦνται εἰς τὴν λίμνην· καὶ ἐκεῖ οἰκοῦσί τε, καὶ καθαιρόμενοι, τῶν τε ἀδικημάτων διδόντες δίκας, ἀπολύονται, εἴ τίς τι ἠδίκησε, τῶν τε εὐεργεσιῶν [r] τιμὰς φέρονται κατὰ τὴν ἀξίαν ἕκαστος. Οἳ δ' ἂν δόξωσιν ἀνιάτως ἔχειν διὰ τὰ μεγέθη τῶν ἁμαρτημάτων, ἢ ἱεροσυλίας πολλὰς καὶ μεγάλας, ἢ φόνους ἀδίκους καὶ παρανόμους πολλοὺς [s] ἐξεργασάμενοι, καὶ ἄλλα ὅσα [t] τοιαῦτα τυγχάνει ὄντα, τούτους [u] δὲ προσήκουσα μοῖρα ῥίπτει εἰς τὸν Τάρταρον, ὅθεν οὔποτε ἐκβαίνουσιν· οἳ δ' ἂν ἰάσιμα μὲν, μεγάλα δὲ δόξωσιν ἡμαρτηκέναι ἁμαρτήματα, οἷον πρὸς πατέρα ἢ μητέρα [x] βίαιόν τι ὑπὸ σιγῆς πράξαντες, καὶ μεταμέλον αὐτοῖς τὸν ἄλλον βίον βιῶσιν, ἢ [y] ἀνδροφόνοι τοιούτῳ τινὶ ἄλλῳ τρόπῳ [z] γένωνται, τούτους δὲ ἐμπεσεῖν μὲν εἰς τὸν Τάρταρον ἀνάγκη, ἐμπεσόντας δὲ αὐτοὺς, καὶ ἐνιαυτὸν ἐκεῖ γενομένους, ἐκβάλλει τὸ [a] ῥεῦμα, τοὺς μὲν ἀνδροφόνους, κατὰ τὸν Κωκυτὸν, τοὺς δὲ [b] πατραλοίας, κατὰ τὸν Πυριφλεγέθοντα.

[n] Ἀχερουσιάδι Plat.
[o] οὗτοι A.
[q] ὁσίως καὶ δικαίως βιώσαντες Plat.
[r] τιμαὶ A.
[s] ἐξειργασμένοι, ἢ Plat.
[t] τυγχάνει ὄντα τοιαῦτα Plat.
[u] δὲ ἡ προσήκουσα Plat.
[x] ὑπ' ὀργῆς βίαιόν τι Plat.
[y] ἀνδροφόνω A.
[z] γένονται A.
[a] κῦμα Plat.
[b] πατραλοίας καὶ μητραλοίας Plat.

Ἐπειδὰν δὲ φερόμενοι γένωνται κατὰ τὴν λίμνην τὴν Ἀχερουσιάδα, ἐνταῦθα βοῶσί τε καὶ καλοῦσιν, οἱ μὲν, οὓς ἀπέκτειναν, οἱ δὲ, οὓς ὕβρισαν· καλέσαντες δ' ἱκετεύουσι, καὶ δέονται ἐᾶσαι σφᾶς ἐκβῆναι εἰς τὴν λίμνην καὶ δέξασθαι. Καὶ ἐὰν μὲν πείσωσιν, ἀποβαίνουσί τε καὶ λήγουσι τῶν κακῶν· εἰ δὲ μὴ, φέρονται αὖθις εἰς τὸν Τάρταρον, καὶ ἐκεῖθεν πάλιν εἰς τοὺς ποταμούς· καὶ ταῦτα πάσχοντες οὐ πρότερον παύονται, πρὶν ἂν πείσωσιν οὓς ἠδίκησαν. Αὕτη γὰρ ἡ δίκη ὑπὸ τῶν δικαστῶν αὐτοῖς [c]ἐτάχθη. Οἳ δὲ δὴ ἂν δόξωσι διαφερόντως πρὸς τὸ ὁσίως βιῶναι, οὗτοί εἰσιν οἱ τῶνδε μὲν τῶν [d]τόπων ἐν τῇ γῇ ἐλευθερούμενοί τε καὶ ἀπαλλαττόμενοι, ὥσπερ [e]δὲ σωτηρίαν, ἄνω δὲ εἰς τὴν καθαρὰν οἴκησιν ἀφικνούμενοι, καὶ ἐπὶ τῆς γῆς οἰκιζόμενοι. Τούτων δὲ αὐτῶν [f]οἱ φιλοσοφίᾳ ἱκανῶς καθηράμενοι, ἄνευ τε σωμάτων ζῶσι τοπαράπαν εἰς τὸν ἔπειτα χρόνον, καὶ εἰς οἰκήσεις ἔτι τούτων καλλίους ἀφικνοῦνται· ἃς οὔτε ῥᾴδιον δηλῶσαι, οὔτε ὁ χρόνος ἱκανὸς ἐν τῷ παρόντι. Ἀλλὰ τούτων [g]μὲν χρὴ ἕνεκα ὧν διεληλύθαμεν, ὦ Σιμμία, [h]πᾶν ποιεῖν, ὥστε ἀρετῆς καὶ φρονήσεως ἐν τῷ βίῳ μετασχεῖν. Καλὸν γὰρ τὸ ἆθλον, καὶ ἡ ἐλπὶς μεγάλη. Τὸ μὲν οὖν ταῦτα διϊσχυρίσασθαι οὕτως ἔχειν, ὡς ἐγὼ διελήλυθα, οὐ πρέπει [i]νοῦν ἔχοντι ἀνδρί. Ὅτι μέντοι ἢ ταῦτ' ἔστιν, ἢ τοιαῦτ' ἄττα, περὶ τὰς ψυχὰς ἡμῶν καὶ τὰς οἰκήσεις, ἐπείπερ [k]ἀθάνατος p. 141.
ἡ ψυχὴ φαίνεται οὖσα, τοῦτο καὶ πρέπειν [l]μοὶ δοκεῖ, καὶ ἄξιον κινδυνεῦσαι, [m]οἰομένῳ οὕτως ἔχειν. Καλὸς γὰρ ὁ κίνδυνος, καὶ χρὴ τὰ τοιαῦτα ὥσπερ ἐπᾴδειν ἑαυτῷ.

[c] ἐτάθη A. Supra εἰς τοὺς—πρὶν om. Cant.
[d] τόπων τῶν Plat.
[e] δεσμωτηρίων Plat.
[f] ἡ A.
[g] δὴ ἕνεκα χρὴ Plat.
[h] πάντα Plat. Mox μετέχειν Cant.
[i] οὖν A.
[k] ἀθάνατόν γε Plat.
[l] ἐμοὶ Plat.
[m] οἰωμένῳ A.

59 Πορφυρίου.

Ἡ δὲ τῆς ψυχῆς διαμονὴ καὶ ἀϊδιότης [a]ἐν τοῖς μάλιστα τῶν Πυθαγορικῶν δογμάτων γνώριμόν ἐστι πᾶσι καὶ περι-[1046] βόητον, ὅνγε πρὸς τὸν εἰπόντα [b]ἔδοξα κατὰ τοὺς ὕπνους ἰδεῖν τεθνεῶτα τὸν πατέρα, [c]φασὶν εἰπεῖν, "οὐκ ἔδοξας, ἀλλ' εἶδες·" τῶν δὲ [d]παραγγελμάτων ἓν εἶναι, συνδεῖν ὁσημέραι τὸ [e]στρωματόδεσμον, ὡς [f]ἀποδημίαν οὖσαν τὴν τελευτὴν, καὶ δεῖν ἀεὶ [g]συνεσκευασμένους ἡμᾶς τὸν καιρὸν περιμένειν τῆς ἐκεῖ πορείας· τὸν δὲ ἀναιροῦντα δικαίως πρὸς τὸ [h]ἀποθνῆσκον τοῦτον τὸν λόγον ἔχειν, ὃν ὁ γεννῶν ἔχει πρὸς τὸ [k]γεννώμενον. Ἑκατέραν γὰρ εἶναι τῆς ψυχῆς μεταβολὴν, τὴν μὲν εἰς σῶμα γένεσιν, τὴν δὲ ἀπὸ σώματος θάνατον προσαγορευομένην.

60 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὰ δὲ [l]παρ' Ὁμήρῳ περὶ τῆς Κίρκης λεγόμενα, θαυμαστὴν ἔχει [m]τῶν περὶ [n]ψυχὴν θεωρίαν. Λέγεται γὰρ οὕτως·

Οἱ δὲ συῶν μὲν ἔχον κεφαλὰς φωνήν τε τρίχας τε
καὶ δέμας· αὐτὰρ νοῦς ἦν [p]ἔμπεδος ὡς τὸ πάρος περ.

[1048] Ἔστι τοίνυν ὁ μῦθος αἴνιγμα τῶν περὶ ψυχῆς ὑπό τε Πυθαγόρου λεγομένων καὶ Πλάτωνος, ὡς ἄφθαρτος οὖσα τὴν φύσιν καὶ ἀΐδιος, [q]οὔ τι μὴν ἀπαθὴς [r]οὐδὲ ἀμετάβλητος, ἐν

59.

[a] ἐν τοῖς μάλιστα] ἓν μάλιστα Heeren.
[b] δόξα] ἔδοξα V. A.
[c] φασὶ] φησὶν A.
[d] παρακελευσμάτων ἓν εἶναι] παραγγελμάτων ἐνεῖναι V. A.
[e] στρωματόδεσμον] Sic Cant. in marg. στρῶμα τὸν δεσμὸν A. Cant.
[f] ἀποδημίαν οὖσαν τὴν τελευτὴν] Heerenius tacite edidit ἀποδημίας οὔσης τῆς τελευτῆς.
[g] Post συνεσκευασμένους add. ἡμᾶς V. A.
[h] ἀποθνήσκον] –θνήσκειν V.
[k] γεννάμενον] γεννώμενον V. γενοίμενον A.

60.

[l] παρ' Ὁμήρῳ] παρ' Ὁμήρου A. Cant. παρ' Ὅμηρον Heeren.
[m] τῶν] τὴν A. Cant. Mutavit Heeren. qui mox λέγει οὖν pro λέγεται γὰρ οὕτως. Seqq. sunt Od. κ'. 239.
[n] ψυχῆς] ψυχὴν V. A.
[p] ἔμπεδος] ἔμποδος A.
[q] οὔτι] οὔτε Heeren.
[r] οὐδὲ] καὶ A.

ταῖς λεγομέναις φθοραῖς καὶ [s]τελευταῖς μεταβολὴν ἴσχει καὶ μετακόσμησιν εἰς ἕτερα σωμάτων εἴδη, καθ' ἡδονὴν διώκουσα τὸ πρόσφορον καὶ οἰκεῖον ὁμοιότητι καὶ συνηθείᾳ βίου διαίτης· ἔνθα δὴ τὸ μετὰ παιδείας ἑκάστῳ καὶ φιλοσοφίας ὄφελος ἂν [t]μνημονεύουσα τῶν καλῶν ἡ ψυχὴ καὶ δυσχεραίνουσα τὰς αἰσχρὰς καὶ παρανόμους ἡδονὰς δύνηται κρατεῖν καὶ [u]προσέχειν αὑτῇ καὶ φυλάττειν, μὴ λάθῃ θηρίον γενομένη καὶ στέρξασα σώματος [x]οὐκ εὐφυοῦς, οὐδὲ καθαροῦ πρὸς ἀρετὴν, φύσιν ἄμουσον [y]καὶ ἄλογον, καὶ τὸ ἐπιθυμοῦν ἢ θυμούμενον μᾶλλον ἢ τὸ φρόνιμον [z]αὔξαντος καὶ τρέφοντος. Αὐτῆς γὰρ τῆς μετακοσμήσεως εἱμαρμένη καὶ φύσις ὑπὸ Ἐμπεδοκλέους δαίμων ἀνηγόρευται,

[1050] Σαρκῶν [a]ἀλλογνῶτι περιστέλλουσα [b]χιτῶνι,

καὶ [c]μεταμπίσχουσα τὰς ψυχάς. Ὅμηρος δὲ τὴν [d]ἐν κύκλῳ περίοδον καὶ περιφορὰν [e]παλιγγενεσίας Κίρκην προσηγόρευκεν, ἡλίου παῖδα, τοῦ πᾶσαν φθορὰν γενέσει, καὶ γένεσιν αὖ πάλιν φθορᾷ συνάπτοντος ἀεὶ καὶ [f]συνείροντος. Αἰαίη δὲ νῆσος ἡ δεχομένη τὸν ἀποθνήσκοντα μοῖρα [g]καὶ χώρα τοῦ περιέχοντος, εἰς ἣν ἐμπεσοῦσαι πρῶτον αἱ ψυχαὶ πλανῶνται, καὶ ξενοπαθοῦσι, καὶ ὀλοφύρονται, καὶ οὐκ ἴσασιν ὅπῃ [h]ζόφος,

Οὐδ' ὅπῃ ἠέλιος [i]φαεσίμβροτος εἶσ' ὑπὸ γαῖαν.

[s] τελευταίαν] τελευταῖς V. A. E. Mox πρόσφονον A.

[t] μνημόνευσα] μνημονεύουσα V. A. E.

[u] προσέχειν αὐτῆς] Rescripsi προσέχειν αὑτῇ, *ut ad se ipsa attendat.* HEEREN.

[x] οὐκ ἀφυοῦς] οὐκ εὐφυοῦς Heeren. in notis, qui in contextu omisit οὐκ, retinuit ἀφυοῦς.

[y] καὶ λόγον] καὶ ἄλογον V. A. ἄλογον Cant. in marg.

[z] αὔξοντος κ. στρέφοντος] αὔξαντος καὶ τρέφοντος V. A.

[a] ἀλλόγνωτι] ἀλλοιχῶτι V. ἀλλöγλῶτι A. ἀλλογνῶτι Plutarch. II. p. 998 C.

[b] χιτῶνι] χιτῶνα A.

[c] μετ' ἀμπέχουσα] μεταμπίσχουσα V. A.

[d] ἐκύκλω] ἐν κύκλῳ V. A.

[e] παλιγγενεσίας] παλινγγενεσίας A.

[f] συνείροντος] συνείργοντος A.

[g] καὶ χώρα] δὲ χώρα V. A.

[h] ζόφος] ζείφός V. A. Vid. Od. κ'. 190.

[i] φαεσίμβροτος] φαεσίβροτος A.

Ποθοῦσαι δὲ καθ' ἡδονὰς τὴν συνήθη καὶ σύντροφον ἐν σαρκὶ καὶ μετὰ σαρκὸς δίαιταν, [k]ἐμπίπτουσι αὖθις εἰς τὸν κυκεῶνα τῆς γενέσεως, μιγνύσης εἰς τὸ αὐτὸ καὶ κυκώσης [l]ὡς ἀληθῶς ἀΐδια καὶ θνητὰ, καὶ φρόνιμα καὶ παθητὰ, καὶ ὀλύμπια καὶ [m]γηγενῆ, θελγόμενα καὶ μαλασσόμενα ταῖς ἀγούσαις αὖθις ἐπὶ τὴν γένεσιν ἡδοναῖς, ἐν ᾧ δὴ μάλιστα [n]πολλῆς μὲν εὐτυχίας αἱ ψυχαὶ δέονται πολλῆς δὲ σωφροσύνης, ὅπως μὴ τοῖς κακίστοις [o]ἐπισπώμεναι καὶ συν-
[1052] ενδοῦσαι μέρεσιν ἢ πάθεσιν αὐτῶν, κακοδαίμονα καὶ θηριώδη βίον ἀμείψωσιν. Ἡ γὰρ λεγομένη καὶ νομιζομένη τῶν ἐν Αἴδου τρίοδος ἐνταῦθά που τέτακται περὶ τὰ τῆς ψυχῆς p. 142.
σχιζομένη μέρη, τὸ [p]λογιστικὸν καὶ θυμοειδὲς καὶ ἐπιθυμητικὸν, ὧν ἕκαστον [q]ἀρχὴν ἐξ αὐτοῦ καὶ ῥοπὴν ἐπὶ τὸν οἰκεῖον βίον ἐνδίδωσι. Καὶ οὐκ ἔτι ταῦτα [r]μῦθος οὐδὲ ποίησις, ἀλλ' ἀλήθεια, καὶ [s]φυσικὸς λόγος. Ὧν μὲν γὰρ [t]ἐν τῇ μεταβολῇ καὶ γενέσει τὸ ἐπιθυμητικὸν ἐξανθοῦν ἐπικρατεῖ καὶ δυναστεύει, τούτοις [u]εἰς νωθῆ καὶ σώματα καὶ βίους θολεροὺς καὶ ἀκαθάρτους ὑπὸ φιληδονίας καὶ γαστριμαργίας φησὶ γενέσθαι τὴν μεταβολήν. Ὅταν δὲ φιλονοεικίαις σκληραῖς καὶ φοινικαῖς ὠμότησιν ἔκ τινος διαφορᾶς ἢ δυσμενείας ἐξηγριωμένον ἔχουσα παντάπασιν ἡ ψυχὴ τὸ

[k] ἐμπίπτουσα] ἐμπίπτουσι Cant. in marg.

[l] ὡς] ἕως A.

[m] ἀγενῆ] γηγενῆ P. A. E. Cant. in marg.

[n] Post πολλῆς add. μὲν V. A. E. P.

[o] ἐπισπόμεναι κ. συνδοῦσαι μ. καὶ π. αὐτοῦ κ.] ἐπισπωμέναι καὶ συνενδοῦσαι μέρεσιν ἢ πάθεσιν αὐτῶν κακοδαίμονα etc. V. A.

[p] λογιστικὸν] λογικὸν A. Supra σχιζομένη Heeren. σχιζόμενα A. Cant.

[q] ἐκ αὐτοῦ] ἐξ ἑαυτοῦ V. ἀρχὴν A.

[r] μῦθος] μύθοι ed. Heeren.

[s] φυσικός τε] τε deest V. A.

[t] ἐκ τῇ] ἐν τῇ V. A.

[u] ἴσον ὠθῆ καὶ] εἰς νωθῆ καὶ A. V.

ib. εἰς νωθῆ σώματα, *in corpora ignava*, bene exhibent codd. V. A. E. pro ἴσον ὠθῆ ap. Cant. qui tamen in marg. non male quoque conjicit εἰς ὀνώδη, *in asinorum corpora*. HEEREN. Et sane ὀνώδης habent Photius et Suidas in v. Κηφισόδωρος, ubi Harpocrationis libri plerique νωθής. Conf. Platonis verba in Phæd. p. 81 E. εἰς τὰ τῶν ὄνων γένη—ἐνδύεσθαι.

θυμοειδὲς εἰς δευτέραν γένεσιν ἀφίκηται, πλήρης οὖσα προσφάτου πικρίας καὶ [x]βαρυφροσύνης, ἔρριψεν ἑαυτὴν εἰς λύκου φύσιν ἢ [y]λέοντος· ὥσπερ ὄργανον ἀμυντικὸν τὸ σῶμα τῷ κρατοῦντι προϊεμένη πάθει καὶ περιαρμόσασα. Διὸ [z]δεῖ μάλιστα περὶ τὸν θάνατον, ὥσπερ ἐν [a]τελετῇ, καθαρεύοντα, παντὸς ἀπέχειν πάθους [b]φαύλου τὴν ψυχὴν, καὶ πᾶσαν ἐπιθυμίαν χαλεπὴν κοιμήσαντα, καὶ φθόνους, καὶ δυσμενείας, καὶ ὀργὰς ἀπωτάτω τιθέμενον [c]τοὺς φρονοῦντας ἐκ-
[1054] βαίνειν τοῦ σώματος. Οὗτος ὁ χρυσόρραπις Ἑρμῆς ἀληθῶς [d], ὁ λόγος [e]ἐντυγχάνων καὶ δεικνύων ἐναργῶς τὸ καλὸν, [f]ἢ παντάπασιν εἴργει καὶ ἀπέχει τοῦ κυκεῶνος, ἢ [g]πιοῦσαν ἐν [h]ἀνθρωπίνῳ βίῳ καὶ ἤθει [i]διαφυλάσσει πλεῖστον χρόνον, ὡς [k]ἀνυστόν ἐστι.

61 Τοῦ αὐτοῦ.

Πάλιν αἰνιττόμενος ὅτι ταῖς τῶν [a]εὐσεβῶς βεβιωκότων ψυχαῖς μετὰ τὴν τελευτὴν οἰκεῖός ἐστι τόπος ὁ περὶ τὴν σελήνην, ὑπεδήλωσεν, εἰπών·

[b]Ἀλλά σ' ἐς ἠλύσιον πεδίον καὶ πείρατα γαίης
[c]ἀθάνατοι πέμψουσιν, ὅθι ξανθὸς Ῥαδάμανθυς.

[x] *βαρυφροσύνης, ægritudinis,* edidi pro *βαρυφρόνης* quod cum Cant. tenent codd. HEEREN. Mox *αὐτὴν* A.

[y] λέοντα] λέοντος V. A.

[z] δεῖ sensu jubente edidi pro δή. HEEREN. post Cant. in marg.

[a] τελετῇ] τελευτῇ V. A.

[b] *φαύλου*, quod ad *πάθους* pertinet, ut statim *χαλεπὴν* ad *ἐπιθυμίαν,* rescripsi pro *φαύλην.* HEEREN.

[c] τοῦ φρονοῦν] τοῦ φρονοῦντος V. P. A.

ib. τοὺς φρονοῦντας ἐκβαίνειν τοῦ σώματος, *decet veros sapientes excedere ex vita,* edidi pro τοῦ φρονοῦν ἐ. τ. σ. Confirmant hæc codd. V. A. qui habent τοῦ φρονοῦντος. HEEREN.

[d] Alludit ad verba Ulyssis Od. κ'. 227. Ἔνθά μοι Ἑρμείας χρυσόρραπις ἀντεβόλησεν. HEEREN.

[e] ὃς tacite addidit Heeren. et sic mox ἀπέχει pro ἀνέχει.

[f] καὶ παντάπασιν] ἢ παντάπασιν V. A.

[g] πιοῦσαν] Sic Cant. in marg. ποιοῦσαν vulg.

[h] ἀνθρωπίνῳ] ἀνθρώπῳ V. ἐνανθρωπίῳ A.

[i] διαφυλάσσει τει] διαφυλάττει (οι) A.

[k] ἀνυστὸν] ἀνιστὸν V.

61.

[a] εὐσεβῶν] εὐσεβῶς V. ἀσεβῶς A. E.

[b] Ἀλλά σ'] Odyss. δ'. 563.

[c] ἀθάνατοι] -τον V. A.

[d]Ἠλύσιον μὲν πεδίον εἰκότως [e]προσειπὼν τὴν τῆς σελήνης ἐπιφάνειαν ὑφ' ἡλίου καταλαμπομένην, ὅτ' αὔξεται ἡλίου αὐγαῖς, ὥς φησι Τιμόθεος. Πέρατα δὲ γῆς τὰ ἄκρα τῆς νυκτὸς, ἣν σκιὰν τῆς γῆς εἶναι λέγουσιν οἱ μαθηματικοὶ,
[1056] πολλάκις ἐπιψαύουσαν τῆς σελήνης, ὡς τοῦτο τῆς γῆς πέρας ἐχούσης, οὗ τῇ σκιᾷ μακρότερον οὐκ ἐξικνεῖται.

62 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 42.]

Πρῶτον μὲν οὖν αἴσθησιν ἀναγκαῖον [a]εἴη μίαν πᾶσιν ἐκ βιαίων παθημάτων σύμφυτον γίγνεσθαι· δεύτερον δὲ, ἡδονῇ καὶ λύπῃ μεμιγμένον ἔρωτα· πρὸς δὲ τούτοις, φόβον τε καὶ θυμὸν, ὅσα τε ἑπόμενα αὐτοῖς, καὶ ὁπόσα ἐναντίως πέφυκε διεστηκότα. Ὧν εἰ μὲν [b]κρατήσοιεν δίκῃ βιώσοιντο, κρατηθέντες δὲ ἀδικίᾳ. Καὶ ὁ μὲν εὖ τὸν προσήκοντα χρόνον βιοὺς, πάλιν εἰς τὴν τοῦ ξυννόμου πορευθεὶς οἴκησιν ἄστρου, βίον εὐδαίμονα ἕξοι· σφαλεὶς δὲ, τοῦτον εἰς γυναικὸς φύσιν ἐν τῇ δευτέρᾳ γενέσει μεταβάλλοι· μὴ παυόμενός τε ἐν τούτοις ἔτι κακίας τρόπον, ὃν κακύνοιτο, κατὰ τὴν ὁμοιότητα τῆς τοῦ τρόπου γενέσεως, εἴς τινα τοιαύτην ἀεὶ μεταβάλλοι θήρειον φύσιν. Ἀλλάττων τε οὐ πρότερον πόνων λήξοι, πρὶν τῇ ταὐτοῦ καὶ ὁμοίου περιόδῳ τῇ ἐν [c]αὐτῷ ξυνεπισπώμενος τὸν πολὺν ὄχλον, καὶ ὕστερον προσφύντα ἐκ πυρὸς καὶ ὕδατος καὶ ἀέρος καὶ γῆς θορυβώδη καὶ ἄλλον ὄντα λόγῳ κρατήσας, εἰς τὸ τῆς πρώτης καὶ ἀρίστης ἀφίκοιτο εἶδος ἕξεως.

63 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Γοργίου [p. 523.]

Ἄκουε δὴ, [a]φησὶ, μάλα [b]καλοῦ λόγου, ὃν σὺ μὲν ἡγήσῃ μῦθον, ὡς [c]ἐγῷμαι, ἐγὼ δὲ λόγον. Ὡς ἀληθῆ γὰρ ὄντα

[d] Post Ἠλύσιον add. μὲν V. A.
[e] προσειπὼν] προειπὼν A.

60.

[a] εἷς] εἴη A.
[b] κρατήσοι ἐν Cant.
[c] ταὐτῷ A.

61.

[a] φασὶ Plat.
[b] καὶ οὐ A.
[c] ἐγὼ οἶμαι Plat.

σοι λέξω ἃ μέλλω λέγειν. Ὥσπερ γὰρ Ὅμηρος λέγει, [d]διενείμαντο τὴν ἀρχὴν ὁ Ζεὺς καὶ ὁ Ποσειδῶν καὶ ὁ Πλούτων, ἐπειδὴ παρὰ τοῦ πατρὸς παρέλαβον. Ἦν οὖν νόμος ὅδε p. 143. περὶ ἀνθρώπων ἐπὶ Κρόνου, καὶ ἀεὶ καὶ νῦν ἔτι ἐστὶν ἐν θεοῖς, τῶν ἀνθρώπων τὸν μὲν δικαίως τὸν βίον διελθόντα καὶ ὁσίως, ἐπειδὰν [e]δὲ τελευτήσῃ, [f]ὡς μακάρων νήσους ἀπιόντα οἰκεῖν ἐν πάσῃ εὐδαιμονίᾳ ἐκτὸς κακῶν, τὸν δὲ ἀδίκως καὶ ἀθέως, εἰς τὸ [g]τίσεως τε καὶ δίκης δεσμωτήριον, ὃ δὴ Τάρταρον καλοῦσιν, ἰέναι. Τούτων δὲ δικασταὶ ἐπὶ Κρόνου, καὶ ἔτι νεωστὶ τοῦ Διὸς τὴν ἀρχὴν ἔχοντος, ζῶντες ἦσαν ζώντων, ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ δικάζοντες ᾗ μέλλοιεν τελευτᾶν. Κακῶς οὖν αἱ δίκαι ἐκρίνοντο. Ὅ τε οὖν Πλούτων καὶ [h]ἐπιμεληταὶ ἐκ μακάρων νήσων ἰόντες ἔλεγον πρὸς τὸν Δία, ὅτι φοιτῷεν [i]σφίσιν ἄνθρωποι ἑκατέρωσε ἀνάξιοι. Εἶπεν οὖν ὁ Ζεὺς, Ἀλλ' ἐγὼ, ἔφη, παύσω τοῦτο γιγνόμενον. Νῦν μὲν γὰρ κακῶς αἱ δίκαι δικάζονται· ἀμπεχόμενοι γὰρ, ἔφη, οἱ κρινόμενοι [k]κρίνονται. Πολλοὶ οὖν, ἦ δ' ὃς, ψυχὰς πονηρὰς ἔχοντες, [l]ἠμφιεσμένοι εἰσὶ σώματά τε καλὰ καὶ γένη καὶ πλούτους, καὶ ἐπειδὰν ἡ κρίσις ᾖ, ἔρχονται αὐτοῖς πολλοὶ μάρτυρες, μαρτυρήσοντες ὡς δικαίως βεβιώκασιν. Οἱ οὖν δικασταὶ ὑπό τε τούτων ἐκπλήττονται, καὶ ἅμα καὶ αὐτοὶ ἀμπεχόμενοι δικάζουσι, [m]πρὸς τῆς ψυχῆς τῆς αὑτῶν [n]ὀφθαλμοὺς καὶ ὦτα καὶ ὅλον τὸ σῶμα προκεκαλυμμένοι. Ταῦτα [o]δὲ αὐτοῖς πάντα [p]ἔμπροσθεν γίγνεται, καὶ τὰ αὑτῶν [q]ἀμφιάσματα καὶ τὰ τῶν κρινομένων. Πρῶτον μὲν οὖν, ἔφη, παυστέον ἐστὶ προειδότας αὐτοὺς τὸν θάνατον· νῦν

[d] διενήμαντο A.
[e] δὲ om. Plat.
[f] εἰς Plat.
[g] τῆς τίσεως Plat.
[h] οἱ ἐπιμεληταὶ Plat.
[i] σφιν Plat.
[k] κρίνονται· ζῶντες γὰρ κρίνονται. Πολλοὶ Plat.
[l] ἐμφιεσμένοι A.
[m] πρὸ Plat.
[n] ὀφθαλμούς τι καὶ Plat.
[o] δὴ Plat.
[p] ἐπίπροσθεν Plat.
[q] ἀμφιέσματα Plat.

γὰρ προΐστασι. Τοῦτο [r]μὲν δὴ καὶ εἴρηται τῷ Προμηθεῖ, ὅπως ἂν παύσῃ [s]αὐτῶν. Ἔπειτα γυμνοὺς κριτέον ἁπάντων τούτων· τεθνεῶτας γὰρ [t]δὴ κρίνεσθαι. Καὶ τὸν κριτὴν δεῖ γυμνὸν εἶναι, τεθνεῶτα, αὐτῇ τῇ ψυχῇ αὐτὴν τὴν ψυχὴν θεωροῦντα ἐξαίφνης ἀποθανόντος ἑκάστου, ἔρημον πάντων τῶν συγγενῶν καὶ καταλιπόντα ἐπὶ τῆς γῆς πάντα ἐκεῖνον τὸν κόσμον, ἵνα δικαία ἡ κρίσις ᾖ. Ἐγὼ μὲν οὖν, [u]ἐγνωκὼς πρότερος ἢ ὑμεῖς, ἐποιησάμην δικαστὰς υἱεῖς [x]ἐμαυτοῦ, Μίνω τε καὶ Ῥαδάμανθυν, ἕνα δὲ ἐκ τῆς Εὐρώπης, Αἰακόν. Οὗτοι οὖν ἐπειδὰν τελευτήσωσι, δικάσουσιν ἐν τῷ λειμῶνι, [y]ἐν τριόδῳ, ἐξ ἧς [z]ἐφέρετον [a]τῶν ὁδῶν, ἡ μὲν εἰς μακάρων νήσους, ἡ δ' εἰς Τάρταρον· καὶ [b]τοὺς μὲν ἐκ τῆς Ἀσίας Ῥαδάμανθυς κρινεῖ, τοὺς δὲ ἐκ τῆς Εὐρώπης Αἰακός· Μίνῳ δὲ πρεσβεῖα δώσω, ἐπιδιακρίνειν, ἐὰν ἀπόρρητόν τι ᾖ τῷ ἑτέρω, ἵνα ὡς [c]δικαιοτάτη [f]ᾖ κρίσις περὶ τῆς πορείας [ff]τοῖς ἀνθρώποις.

64 Πλάτωνος Πολιτείας ι'. [p. 614.]

Ἀλλ' οὐ [a]μέντοι σοὶ, ἦν δ' ἐγὼ, Ἀλκίνου γε ἀπόλογον ἐρῶ, ἀλλ' [b]ἀλκίμου μὲν ἀνδρὸς, Ἠρὸς τοῦ Ἀρμενίου, τὸ γένος [c]Παμφύλου· ὅς ποτε ἐν πολέμῳ τελευτήσας, ἀναιρεθέντων δεκαταίων τῶν νεκρῶν, ἤδη διεφθαρμένων, ὑγιὴς μὲν ἀνῃρέθη, κομισθεὶς δὲ οἴκαδε, μέλλων θάπτεσθαι, δωδεκαταῖος ἐπὶ τῇ [d]πυρᾷ κείμενος ἀνεβίω, ἀναβιοὺς δ' ἔλεγεν ἃ ἐκεῖ ἴδοι. Ἔφη δέ· ἐπειδὴ [e]οὖν ἐκβῆναι τὴν ψυχὴν,

[r] μὲν οὖν καὶ δὴ Plat.
[s] αὐτὸ [αὐτῶν] Plat.
[t] δεῖ Plat.
[u] ταῦτα ἐγνωκὼς Plat.
[x] ἐμαυτοῦ, δύο μὲν ἐκ τῆς Ἀσίας, Μίνω Plat.
[y] ἐν τῇ τριόδῳ Plat. ἐν τριάδως A.
[z] φέρετον Plat.
[a] τὼ ὁδὼ Plat.
[b] τοῦ A.
[c] δικαιωτάτη A.
[f] ἡ κρίσις ᾖ περὶ Plat.
[ff] τῆς ἀνθρωπίνης Cant. qui om. τὶ post ἀπόρρητον.

62.

[a] μέντι A.
[b] ἀλκίνου A.
[c] Παμφίλου A.
[d] πυρῷ A.
[e] οὖ Plat.

πορεύεσθαι μετὰ πολλῶν, καὶ ἀφικνεῖσθαι σφᾶς εἰς τόπον τινὰ δαιμόνιον, ἐν ᾧ τῆς [f]τε γῆς δύο εἶναι χάσματα ἐχομένω ἀλλήλοιν, καὶ τοῦ οὐρανοῦ αὖ ἐν τῷ ἄνω, ἀλλὰ κατ' ἀντικρύ. [g]Δικαστὰς μεταξὺ τούτων καθῆσθαι· οὓς ἐπειδὴ [h]δικάσειαν, τοὺς μὲν δικαίους κελεύειν πορεύεσθαι τὴν εἰς δεξιάν τε καὶ ἄνω διὰ τοῦ οὐρανοῦ, σημεῖα [i]περιαστράψαντας τῶν δεδικασμένων ἐν τῷ πρόσθεν· τοὺς δὲ ἀδίκους, τὴν εἰς ἀριστεράν τε καὶ κάτω, ἔχοντας καὶ τούτους ἐν τῷ ὄπισθεν σημεῖα πάντων ὧν ἔπραξαν. Ἑαυτοῦ δὲ προσελθόντος εἰπεῖν ὅτι δέοι αὐτὸν ἄγγελον ἀνθρώποις γενέσθαι τῶν ἐκεῖ, καὶ διακελεύοιντό οἱ ἀκούειν τε καὶ θεᾶσθαι πάντα τὰ ἐν τῷ τόπῳ. Ὁρᾶν δὴ ταύτῃ μὲν καθ' ἑκάτερον τὸ χάσμα τοῦ οὐρανοῦ τε καὶ τῆς γῆς ἀπιούσας τὰς ψυχὰς, ἐπειδὴ [k]αὐταῖς δικασθείη· κατὰ δὲ [l]τὼ ἑτέρω, ἐκ μὲν τοῦ ἀνιέναι ἐκ τῆς γῆς μεστὰς αὐχμοῦ τε καὶ κόνεως· ἐκ δὲ τοῦ [m]ἑτέρου, καταβαίνειν ἑτέρας ἐκ τοῦ οὐρανοῦ καθαράς· καὶ τὰς ἀεὶ ἀφικνουμένας, ὥσπερ ἐκ πολλῆς πορείας φαίνεσθαι ἥκειν, καὶ ἀσμένας εἰς τὸν λειμῶνα ἀπιούσας οἷον ἐν πανηγύρει [o]κατασκηνοῦσαι, καὶ ἀσπάζεσθαί τε ἀλλήλας, ὅσαι [p]γνώριμοι, καὶ πυνθάνεσθαι τάς τε ἐκ τῆς γῆς [q]οἰκούσας παρὰ τῶν ἑτέρων τὰ ἐκεῖ, [r]τὰς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ, τὰ παρ' ἐκείναις. Διηγεῖσθαι δὲ ἀλλήλαις, τὰς μὲν, ὀδυρομένας τε καὶ κλαιούσας, ἀναμιμνησκομένας ὅσα τε καὶ [s]οἷ πάθοιεν καὶ ἴδοιεν ἐν τῇ ὑπὸ γῆς πορείᾳ· (εἶναι δὲ τὴν πορείαν [t]χιλίετιν·) τὰς δ' αὖ ἐκ τοῦ οὐρανοῦ εὐπαθείας διηγεῖσθαι καὶ θέας ἀμηχάνους τὸ κάλλος. Τὰ μὲν οὖν

f γε Plat.
g δικαστὰς δὲ Plat.
h διαδικάσειαν Plat.
i περιάψαντας Plat.
k αὐτοῦ δικασθεῖεν Plat.
l τῷ ἑτέρῳ A.
m ἑτέρους A.
o κατασκηνᾶσθαι Plat.
p γνώριμαι Plat.
q ἡκούσας Plat.
r καὶ τὰς Plat.
s οἷα Plat.
t χιλιετῆ Plat.

πολλὰ, ὦ Γλαύκων, πολλοῦ χρόνου διηγήσασθαι· τὸ δ' οὖν κεφάλαιον ἔφη τόδε εἶναι, ὅσα πώποτε τινὰ ἠδίκησαν, καὶ [u]ὅσους ἕκαστος, ὑπὲρ [x]ἁπόντων δίκην δεδωκέναι ἐν μέρει, ὑπὲρ ἑκάστου δεκάκις. Τοῦτο δ' εἶναι κατὰ ἑκατονταετηρίδα ἑκάστην, ὡς βίου ὄντος τοσούτου [y]ἀνθρωπίνου· ἵνα δεκαπλάσιον τὸ ἔκτισμα τοῦ ἀδικήματος ἐκτίνοιεν· καὶ οἷον εἴ τινες [z]πολλοῖς θανάτων ἦσαν αἴτιοι, ἢ πόλεις προδόντες ἢ στρατόπεδα, καὶ εἰς δουλείας ἐμβεβληκότες, ἤ τινος ἄλλης κακουχίας μεταίτιοι, πάντων τούτων δεκαπλασίας [b]ἀλγηδόνας κομίσαιντο· καὶ αὖ εἴ τινας εὐεργεσίας [c]εὐεργετηκότες, καὶ δίκαιοι καὶ [d]ὅσιοι γεγονότες εἶεν, κατὰ ταὐτὰ τὴν ἀξίαν κομίζοιντο. Τῶν δὲ εὐθὺς γενομένων, καὶ [e]ὀλίγων χρόνων βιούντων πέρι ἄλλα ἔλεγεν οὐκ ἄξια μνήμης. Εἰς δὲ θεοὺς ἀσεβείας τε καὶ εὐσεβείας, καὶ γονέας, καὶ αὐτόχειρας φόνου, μείζους ἔτι τοὺς μισθοὺς διηγεῖτο. Ἔφη γὰρ [f]δὴ παραγενέσθαι ἐρωτωμένῳ ἑτέρῳ ὑπὸ ἑτέρου [g]ὅπου εἴη Ἀρδιαῖος ὁ μέγας. Ὁ δὲ Ἀρδιαῖος οὗτος τῆς [h]Παμφυλίας ἔν τινι πόλει τύραννος ἐγεγόνει, ἤδη χιλιοστὸν ἔτος εἰς ἐκεῖνον τὸν χρόνον· γέροντά τε πατέρα ἀποκτείνας, καὶ πρεσβύτερον ἀδελφὸν, [i]ἄλλα τε πολλὰ καὶ ἀνόσια εἰργασμένος, ὡς [k]ἔλεγεν. Ἔφη οὖν τὸν ἐρωτώμενον εἰπεῖν, Οὐχ ἥκει, φάναι, οὐδ' ἂν [l]ἥξῃ δεῦρο. Ἐθεασάμεθα γὰρ οὖν δὴ καὶ τοῦτο τῶν δεινῶν θεαμάτων. Ἐπειδὴ ἐγγὺς τοῦ στομίου ἦμεν μέλλοντες ἀνιέναι, καὶ τἆλλα πάντα πεπονθότες, [m]ἐκεῖνον τότε κατείδομεν ἐξαίφνης, καὶ ἄλλους σχεδόν τι αὐτῶν τοὺς πλείστους τυράννους. Ἦσαν

[u] ὅσου A. Tum ἕκαστοι Plat.
[x] ἁπάντων Plat.
[y] τοῦ ἀνθρωπίνου Plat.
[z] ἐς πολλοῖς A. πολλῶν Plat.
[b] ἀλγηδόνας ὑπὲρ ἑκάστου κομ. Plat.
[c] εὐηργετηκότες Plat.
[d] ὅσοι A.
[e] ὀλίγου χρόνου Plat.
[f] δεῖ ῆ A. ubi in marg. ἴσως ὀκτώ.
[g] ὅπου ἂν εἴη Plat.
[h] Παμφιλίας A.
[i] καὶ ἄλλα δὴ πολλά τε Plat.
[k] ἐλέγετο Plat.
[l] ἥξοι Plat. Mox μέλλοντας A.
[m] ἐκεῖνόν τε Plat.

δὲ καὶ ἰδιῶται τινὲς τῶν μεγάλα ἡμαρτηκότων· οὓς οἰομένους ἤδη ἀναβήσεσθαι οὐκ ἐδέχετο τὸ στόμιον, ἀλλ᾽ ἐμυκᾶτο, ὁπότε τὶς τῶν [n]ὄντως ἀνιάτως ἐχόντων εἰς πονηρίαν, ἢ [o]μὴν ἱκανῶς δεδωκὼς δίκην, [p]ἐπιχειρεῖν ἀνιέναι. [pp]Ἐνταῦθά ἄνδρες, ἔφη, ἄγριοι, [q]διάπυροι ἰδεῖν, παρεστῶτες καὶ καταμανθάνοντες τὸ [r]θέμα, τοὺς μὲν ἰδίᾳ λαβόντες ἦγον, τὸν δὲ Ἀρδιαῖον καὶ ἄλλους συμποδίσαντες χεῖράς τε καὶ πόδας καὶ κεφαλὴν, [s]καταβαλλόντες καὶ ἐκδείραντες, εἷλκον παρὰ τὴν ὁδὸν ἐκτὸς ἐπ᾽ [t]ἀσπαλάθων κάμπτοντες, καὶ τοῖς ἀεὶ [u]παριοῦσι σημαίνοντες ὧν [x]ἕνεκά τι, καὶ ὅτι εἰς τὸν Τάρταρον [y]ἐκπεσούμενοι ἄγοιντο. Ἔνθα δὴ [z]φόβων πολλῶν καὶ παντοδαπῶν σφίσι γεγονότων τοῦτον ὑπερβάλλειν [a]μὴ γένοιτο ἑκάστῳ τὸ φθέγμα ὅτε ἀναβαίνοι καὶ ἀσμενέστατα [b]σιγήσαντος ἀναβῆναι. Καὶ τὰς μὲν δὴ δίκας τε καὶ τιμωρίας, τοιαύτας τινὰς εἶναι· καὶ αὖ τὰς εὐεργεσίας [c]ταύτας ἀντιστρόφους. Ἐπειδὴ δὲ τοῖς ἐν τῷ λειμῶνι ἑκάστοις ἑπτὰ [d]ἡμέραι γένοιντο, [e]ἀναστάντες ἐντεῦθεν, δεῖν τῇ ὀγδόῃ πορεύεσθαι, καὶ ἀφικνεῖσθαι τεταρταίους. Ὅθεν καθορᾶν ἄνωθεν διὰ παντὸς τοῦ οὐρανοῦ καὶ γῆς τεταμένον φῶς [f]εὐθὺς, οἷον κίονα, μάλιστα τῇ Ἴριδι [g]προσφερῆ, λαμπρότερον δὲ καὶ καθαρώτερον. Εἰς ὃ ἀφικέσθαι [h]προελθόντες ἡμερησίαν ὁδόν· καὶ ἰδεῖν αὐτόθι κατὰ μέσον τὸ φῶς ἐκ τοῦ οὐρανοῦ τὰ ἄκρα [i]αὐτοῦ τῶν δεσμῶν τεταμένα.

n οὕτως Plat.
o μὴ Plat.
p ἐπιχειροῖ Plat.
pp ἐνταῦθα δὴ Plat.
q καὶ διάπυροι Plat.
r φθέγμα Plat.
s καταβαλόντες Plat.
t ἀσπλάθρων κατάμπτοντες A.
u περιοῦσι A.
x τε ταῦτα ὑπομένοιεν, καὶ Plat.
y ἐμπεσούμενοι Plat.
z φόβων, ἔφη Plat. φόβον A.
a μὲν A.
b ἕκαστον σιγήσαντος Plat. σιγήγαντες A.
c ταύταις Plat.
d ἡμέρας A.
e ἀναστάντας Plat.
f εὐθὺ Plat.
g προσφερὲς Plat.
h προελθόντας ἡμερησίαν Plat.
i τῶν δεσμῶν αὐτοῦ Plat. ἀ. τ. δυσμῶν A.

65 [[a]Iamblichi de Anima.] p. 143.

Πλωτῖνος δὲ καὶ οἱ πλεῖστοι τῶν Πλατωνικῶν ἀπόθεσιν τῶν παθῶν καὶ τῶν [b]μορφωτικῶν διαγνώσεων, δόξης τε πάσης ὑπεροψίαν τε καὶ τῶν ἐνύλων διανοήσεων [c]ἀπόστασιν, πλήρωσίν τε ἀπὸ νοῦ καὶ τοῦ ὄντος, ἀφομοίωσίν τε τοῦ κατανοουμένου πρὸς τὸ [e]κατανοοῦν τὴν τελεωτάτην κάθαρσιν
[1058] ὑπολαμβάνουσιν. Ἔνιοι δὲ καὶ τούτων πολλάκις ἀποφαίνονται περὶ τὴν ἄλογον ψυχὴν, καὶ τὸν δοξαστικὸν λόγον [f]ἐφίεσθαι τὴν κάθαρσιν· τὸν δὲ λόγον αὐτὸν τὸν οὐσιώδη καὶ τὸν νοῦν τῆς ψυχῆς ἀεὶ ὑπερέχειν τοῦ κόσμου, καὶ συνῆφθαι τοῖς νοητοῖς αὐτὸν, καὶ οὐδέποτε [g]δεῖσθαι τελειώσεως καὶ ἀπολύσεως τῶν περιττῶν. Ἀλλὰ δὴ τὸ μετὰ τοῦτο διελώμεθα, ὑπὸ τίνων ἕκαστα τούτων ἐπιτελεῖται, τὸ τῆς κρίσεως λέγω, τὸ τῆς δίκης ἔργον, τὸ τῆς καθάρσεως; Ὡς μὲν δὴ οἱ πλεῖστοι [h]Πυθαγόρειοι καὶ Πλατωνικοὶ λέγουσιν, ὑπ' αὐτῶν τῶν μεριστῶν ψυχῶν· ὡς δὲ οἱ ἀκριβέστεροι ἐν αὐτοῖς, ὑπὸ τῶν καθολικωτέρων καὶ τελειοτέρων ψυχῶν, καὶ τῆς μιᾶς καὶ ὅλης ψυχῆς, καὶ τῆς τάξεως τοῦ παντὸς, καὶ τοῦ νοῦ τοῦ βασιλεύοντος, καὶ τῆς ὅλης διακοσμήσεως· ὡς δὲ οἱ ἀρχαιότεροι διατείνονται,
[1060] ὑπὸ [i]τῶν ἐμφανῶν θεῶν, καὶ μάλιστα δὴ πάντων ἡλίου, τῶν τε δημιουργικῶν αἰτιῶν τῶν ἀφανῶν, τῶν τε κρειττόνων γενῶν πάντων, ἡρώων φημὶ, καὶ δαιμόνων, καὶ ἀγγέλων καὶ θεῶν, ἐξηγουμένων αὐτῶν τῆς ὅλης συστάσεως. Τί ποτε

63.

[a] Iamblichi de Anima] Sic Canterus in marg. cui Græca verba desunt. Πλωτίνου καὶ ἑτέρων A.

[b] Post μορφωτικῶν add. ὑποθέσεων sic V.

[c] ἀπόστασιν] ἀπότασιν Heeren.

[e] κατανοοῦν] κατὰ νοῦν A.

[f] ἐμφύεσθαι] ἐφίεσθαι V. A. E.

[g] ἔσεσθαι] ἔδεσθαι V. A. δεῖσθαι ed. Heeren.

[h] Πυθαγόρειοι] Πυθαγόριοι A. et sic infra.

[i] τῶν] ὑπὸ τῶν Heeren.

οὖν αὐτῶν ἐστι τὸ τέλος, οὗ ἕνεκα πρώτως [k] αὐτῶν ὑφεστήκασι; Κρίσεως μὲν, ἄμικτος καθαρότης τῶν ἀγαθῶν, χωριστή τε αὐτῶν τῶν καλῶν τελεότης, ἀφεστηκυῖα τὸ παράπαν ἀπὸ [l] τῶν ἀτελῶν, ὑπερβολή τε [m] ἐξῃρημένη τῶν κρειττόνων αὐτὴ ἑαυτῇ, πρὸς ἣν οὐδὲν δύναται συντάττεσθαι τῶν χειρόνων. Οὐδέποτε [n] δὲ κατὰ ταῦτα τοῖς παλαιοτέροις ἀρέσκει τὰ κεφάλαια αὐτῆς, ἄλλοις δ' ἂν ἴσως εὐταξία καὶ διάστασις τοῦ χείρονος ἀπὸ τοῦ βελτίονος, καὶ τὰ τοιαῦτα μᾶλλον ἂν δόξειεν εἶναι κυριώτερα [o] τῆς ὠφελείας αὐτῆς αἴτια. Δίκης [p] δ' ἂν εἴη τὸ δέον ἐν τῷ τὰ βελτίονα τῶν χειρόνων ἐπικρατεῖν, καὶ ἐν τῷ τὸ [q] κακὸν [r] κωλύειν, καὶ ἀνατρέπειν, καὶ [s] ἀφανίζειν τὸ παράπαν, καὶ ἐν τῷ τὴν ἀνάλογον καὶ κατ' ἀξίαν [t] ἰσότητα τοῖς πᾶσιν ἀπεργάζεσθαι. Πρὸς δὴ ταῦτα [u] τὰ δοκοῦντα τοῖς πρεσβυτέροις,
[1062] [x] οἱ μὲν τὴν κατ' ἀριθμὸν ἰσότητα [y] ἢ πολλαπλασίωσιν, οἱ p. 1
δὲ τὸ ἀντιπάσχειν τὰ αὐτὰ ἅπερ οἱ δράσαντες προηδίκησαν, οἱ δὲ τὴν ἀπαλλαγὴν τῆς κακίας, οἱ δὲ ἄλλο τι τοιοῦτον ὑποτίθενται [z] ἀπ' αὐτῆς τὸ λυσιτελοῦν, καὶ περὶ [a] ταύτας τὰς αἱρέσεις ἑλίσσονται οἱ πολλοὶ Πλατωνικοὶ καὶ Πυθαγόρειοι. Καὶ μὴν τῆς γε καθάρσεως, ἀφαίρεσις τῶν ἀλλοτρίων, ἀπόδοσις τῆς οἰκείας οὐσίας, τελειότης, [aa] ἀποπλήρωσις, αὐτάρκεια, [b] ἄνοδος ἐπὶ τὴν γεννησαμένην αἰτίαν, συναφὴ πρὸς τὰ ὅλα τῶν μερῶν, δόσις ἀπὸ τῶν ὅλων εἰς τὰ μεριστὰ

k αὐτῶν, scil. τῶν ἔργων, *ob quæ opera illa omnino susciperent.* HEEREN. Mox χωριστὴ δὲ A.
l Ante ἀτελῶν add. τῶν V. A.
m ἐξῃρημένης] –μένη V. A.
n δὲ κατὰ] δὲ addidit Heeren.
o ὠφελείας] τῆς ὠφελ. V. A.
p κἂν] δ' ἂν V. A. E.
q καλὸν] κακὸν Canter. in marg.
r κωλύειν] κολούειν V.
s ἀφανίζειν] ἀφανίζων A.
t ἀνισότητα] ἰσότητα V. A. P.
u τὰ δοκοῦντα] τὰ add. Heeren.
x οἶμαι] οἱ μὲν Cant. in marg.
y καὶ πολλ] ἢ πολλ. V. A.
z ἀπ' αὐτῆς nempe τῆς δίκης, *alia commoda quæ inde redundant.* HEEREN.
a Post ταύτας add. τὰς V. A.
aa ἀποπλήρωσις] ἀναπλήρωσις Heeren. tacite. Supra οἰκίας A.
b ἄνοδος] ἄνωδος V. Mox τὰ om. Heeren.

δυνάμεως, καὶ ζωῆς, καὶ ἐνεργείας, καὶ τὰ τοιαῦτα, νοείσθω, ὡς πάντων [c]χρησιμώτατα. Οἱ δὲ οὐ [d]πείθονται τοῖς ἀρχαιοτέροις ταῦτα προστησαμένοις αὐτῆς τὰ [e]ὄντως συμφέροντα, [f]λύσιν δὲ ἀπὸ σώματος, καὶ ἀπαλλαγὴν τῶν καταδεσμῶν, καὶ φθορᾶς ἐλευθέρωσιν, καὶ γενέσεως ἄφεσιν, καὶ τὰ τοιαῦτα σμικρὰ [g]τέλη προΐστανται αὐτῆς, ὡς τὰ προέχοντα τῶν ὅλων, ἐν οἷς εἰσὶν [h]οἱ πολλοὶ Πλατωνικοὶ, καὶ Πυθαγόρειοι, ἄλλοι κατ᾽ ἄλλας αἱρέσεις διεστηκότες.

[i]Ἔτι δὲ τὰ πέρατα τῶν τριῶν τούτων διελώμεθα, μέχρι πόσου δή τινος ἀποτελευτᾷ αὐτῶν ἕκαστον. Κρίνονται μὲν δὴ [j]μέχρι τοῦδε αἱ ψυχαὶ, [k]μέχρις ὅσον συντάττονται εἰς [l]τὴν γένεσιν, καὶ [m]τοῦ παντὸς οὐκ ἀφίστανται, καὶ συμ-
[1064] μίγνυνταί πως πρὸς τὰ διαφέροντα. Αἱ δὲ ἀφέμεναι ἀπόλυτοι καὶ ἀμιγεῖς, καὶ ἀδέσποτοι παντελῶς, καὶ αὐταὶ [n]ἑαυτῶν οὖσαι, καὶ πεπληρωμέναι τῶν θεῶν, [o]ὁμοῦ καὶ τῆς κρίσεως παντάπασιν ἀπελύθησαν. Οὐ μὴν ἔτι γε τοῖς ἀρχαιοτέροις περὶ τοῦδε συμφωνοῦσιν οἱ Πλατωνικοὶ καὶ Πυθαγόρειοι, πάσας δὲ αὐτὰς ὑπάγουσιν ὑπὸ τὴν κρίσιν. Ὡσαύτως [p]δὴ οὖν καὶ περὶ τῆς δίκης, οἱ μὲν παλαιότεροι τὰς ἀχράντους ψυχὰς, καὶ τὰς ὁμονοητικῶς συναφθείσας τοῖς θεοῖς, ἐντεῦθεν ἤδη τοῖς θεοῖς ἐντιθέασι, καὶ ἐκβαινούσας τῶν σωμάτων ἄνευ τῆς δίκης ἀνάγουσιν εἰς τοὺς θεούς· οἱ δὲ Πλατωνικοὶ πάσας μετὰ τὴν δίκην εἰς τὴν οὐσίαν ἀπὸ τῆς γενέσεως ἀπολύουσι. Γένοιτο δ᾽ ἂν [q]καὶ περὶ τῆς καθάρ-

[c] χρησιμωτάτη] χρησιμώτατα V. A.
[d] πείθονται] πείθοντες ed. Heeren.
[e] ὄντα] ὄντως V. A. E.
[f] Post λύσιν add. δὲ V. A.
[g] τέλει] τέλη V. A.
[h] οἱ om. Heeren.
[i] ἔτι] ἔτι δὲ A. ὅτι δὲ V.
[j] μεχρὶ τοῦδε αἱ ψυχαὶ] Hæc verba om. Heeren.
[k] μέχρι] μέχρις V. A.
[l] τὴν γένεσιν] τὴν deest V. A.
[m] τοῦ] τὰ A.
[n] ἑαυτῶν] αἱαυτῶν V. A. E.
[o] ὁμοίως] ὁμοῦ V. A.
[p] δὴ οὖν καὶ] μὲν οὖν Heeren.
[q] καὶ περὶ] καὶ om. Heeren. qui mox add. γὰρ post Οἱ.

σεως ἡ αὐτὴ ἀμφισβήτησις. Οἱ γὰρ αὐτοὶ μὲν ἄνδρες καὶ [r]ταύτης ὑπερέχειν φασὶ τὰς ψυχὰς ὅσαι θεοῖς [s]συνάπτονται. Οἱ δ' ἄλλοι πάλιν οἱ μὲν περιόδους τῆς ψυχῆς περικοσμίους καθάρσεως εἶναι διατάττονται, ὥσπερ [t]τινὲς Πλατωνικοί· οἱ δὲ καὶ τούτων αὐτὴν ὑπερέχουσαν προτάττουσιν, ὥσπερ δὴ λέγει Πλωτῖνος.

67 Ἐν ταυτῷ.

[a]Περὶ τῆς ἐπικαρπίας τῶν ψυχῶν, ἣν κομίζονται εἰσαῦθις, ἐπειδὰν ἐξέλθωσι τοῦ σώματος, εἰς ἀγγέλους [aa]δὲ καὶ ἀγγελικὰς ψυχὰς, [b]τὸ ὅλον δὴ τοῦτο οἱ πρεσβύτεροι. Καὶ τηροῦσι μὲν αὐτὴν ἐπὶ τῆς οἰκείας τάξεως [c]Πλούταρχος, [1066] καὶ Πορφύριος, καὶ [d]οἱ παλαιότεροι· Πλωτῖνος δὲ πάντων τούτων αὐτὴν [e]ἀφίστησιν. Οἱ δ' ἀρχαιότεροι [f]παραπλησίαν τοῖς θεοῖς κατὰ νοῦν διάθεσιν ἀγαθοειδῆ, καὶ προστασίαν τῶν τῇδε αὐτῇ ἀπονέμουσι καλῶς. Πορφύριος δὲ καὶ [g]τούτους ἀπ' αὐτῆς ἀφαιρεῖ. Τῶν δὲ πρεσβυτέρων τινὲς ὑπερέχειν μὲν αὐτὴν λογισμοῦ φασὶ, τὰ δὲ ἔργα αὐτῆς οὕτω διηκριβωμένα ἀφορίζονται, ὡς οὐκ ἂν [h]ἐξευρῇ τῶν λο-

[r] ταύτας] ταύτης V. A. Tum ὑπερέχων (ει supra) A.

[s] συνάπτονται] συνέπονται V. A. E.

[t] τινὲς] τινὰς (ε supra) A.

66.

[a] Περὶ τῆς—τοῦ σώματος litteris rubris A. tanquam lemma.

[aa] δὲ καὶ] τε καὶ Heeren.

[b] τὸ ὅλον δὴ τοῦτο] τὸν ὅ. δὴ τ. A. τὸ ὅλον διάδουσιν Heeren. secutus, ut videtur, Canteri versionem Latinam, qui hæc sic reddidit: *De remuneratione animarum, quam post exitum consequuntur in angelos translatæ, dissentiunt vetustiores.*

[c] *Retinere ordinem quem in hac vita habuerunt.* Respicit forte ad ea quæ Plutarchus disputat de Fac. in Orb. Lun. Op. II. p. 943. Porphyrii sententiam expositam invenies infra p. [1068.] HEEREN.

[d] Pro οἱ παλαιότεροι legendum duco οἱ Πλατωνικοὶ, quibus annumerari solent Plutarchus et Porphyrius; nam in sequentibus iterum commemorantur οἱ ἀρχαιότεροι et οἱ πρεσβύτεροι. Cant., qui vertit *et reliqui*, voluisse videtur καὶ οἱ λοιποί. HEEREN.

[e] ἀφίστασιν] ἀφίστησιν V. A. E.

[f] παραπλησίοις] παραπλησίαν V. A.

[g] τοῦτο, *hoc quoque iis adimit,* rescripsi pro τούτους. HEEREN.

[h] ἐξεύροι] ἐξεύρῃ V. A.

γισμῶν ὁ καθαρὸς καὶ τελειότατος. Πορφύριος [i]δὲ αὐτὰς ἀφαιρεῖ παντάπασιν ἀπὸ τῆς ἀδεσπότου ζωῆς, ὡς οὔσας συμφυεῖς [k]τῇ γενέσει, καὶ πρὸς ἐπικουρίαν δοθείσας τοῖς συνθέτοις ζώοις. Ὁ δὲ παρὰ Πλάτωνι Τίμαιος, ᾗπερ ἐσπάρησαν διαφερόντως ὑπὸ τοῦ δημιουργοῦ, ἄλλαι μὲν εἰς ἥλιον, ἄλλαι δὲ εἰς γῆν, [l]ταύτῃ καὶ τὴν ἄνοδον αὐτὰς ἀνάγει, μὴ ὑπερβαίνουσαν τὸν ὅρον [m]ἑκάστην τῆς οἰκείας [τάξεως] πρὸς τῆς δημιουργικῆς καταβολῆς. [n]Ἕνωσιν μὲν οὖν καὶ ταυτότητα ἀδιάκριτον τῆς ψυχῆς πρὸς τὰς [o]ἑαυτῆς ἀρχὰς πρεσβεύειν φαίνεται Νουμήνιος, [p]σύμφυσιν δὲ καθ' ἑτέραν
[1068] οὐσίαν οἱ πρεσβύτεροι διασώζουσι. Καὶ ἀναλύσει μὲν ἐκεῖνοι, συντάξει δὲ οὗτοι προσεοίκασι. Καὶ οἱ μὲν ἀδιορίστῳ [q]συναφῇ, οἱ δὲ [r]διωρισμένῃ χρῶνται. Οὐ μέντοι κρατεῖται ὁ διορισμὸς αὐτῶν ὑπὸ τοῦ κόσμου, ἢ κατέχεται [t]ὑπὸ τῆς φύσεως, ὥσπερ τινὲς τῶν Πλατωνικῶν ὑπειλήφασιν· ἀνεῖται δὲ πάντῃ ἀφ' ὅλων ὥσπερ ἐπὶ τῶν ἀχωρίστων οὐσιῶν τουτὶ p. 145.
νοοῦμεν. [u]Οἱ δὲ περὶ Πορφύριον ἄχρι τῶν ἀνθρωπίνων βίων, τὸ δ' ἀπὸ τούτου ψυχῶν ἄλλο εἶδος τὸ ἀλόγιστον ὑποτίθενται. Ἔτι τοίνυν Πορφύριος μὲν ἀφομοιοῖ τὴν ψυχὴν τοῖς πᾶσι, [x]μένουσαν καθ' ἑαυτὴν ἥτις ἐστίν. Κατὰ δὲ τοὺς Πλατωνικοὺς ἐπιμελοῦνται τῶν ἀψύχων. Ἀπολυθεῖσαι δὲ τῆς γενέσεως, κατὰ μὲν τοὺς παλαιούς, συνδιοικοῦσι

[i] δὲ et mox παντάπασιν om. A.

[k] τὴν γένεσιν] τῇ γενέσει V. A.

[l] ταύτῃ] ταύτην V.

[m] ἑκάστην τῆς οἰκείας ed. Heeren. tanquam ex A. Atqui is cum Cantero habet ἕκαστον. Tum post οἰκείας Heeren. addidit [τάξεως.] Cant. in marg.

[n] Ἕνωσιν etc.] Γνῶσιν μὲν οὖν καὶ etc. V. A.

[o] ἑαυτῆς] ἑαυτῶν V.

[p] σύμφησιν δὴ] σύμφυσιν δὲ V. A.

[q] συναφεῖ] συναφῇ Heeren.

[r] διωρισμένῃ] διαχωρισμένοι V. A.

[t] Ante ὑπὸ add. αὐτῶν V. E.

[u] Vix hæc satis cohærent cum præcedentibus, nec male aliquid hic excidisse suspicaberis. De Porphyrii hoc placito cf. ejusdem locum ex libro de Styge supra p. [1005.] HEEREN.

[x] μένουσαν] μὲν οὔσης V.

τοῖς θεοῖς τὰ ὅλα· κατὰ δὲ τοὺς Πλατωνικοὺς [y]θεωροῦσιν αὐτῶν τὴν τάξιν, καὶ [z]ἀγγέλοις ὡσαύτως κατ᾽ ἐκείνους μὲν συνδημιουργοῦσι τὰ ὅλα· κατὰ δὲ τούτους συμπεριπολοῦσιν.

68 Ἑρμοῦ. Λόγος [a]Ἴσιδος πρὸς Ὧρον. [Patrit. p. 34 b.]

[1070] Θαυμαστῶς, εἶπεν Ὧρος, ἕκαστά μοι διηγήσω, ὦ μέγα δυναμένη τεκοῦσα Ἶσι, ὑπὲρ τῆς θαυμαστῆς ψυχοποιΐας τοῦ θεοῦ, καὶ θαυμάζων διατελῶ· οὔπω δέ μοι ἀπήγγειλας ποῦ τῶν σωμάτων ἀπολυθεῖσαι χωροῦσιν αἱ ψυχαί; Βούλομαι οὖν καὶ τῆς θεωρίας ταύτης μύστης γενόμενος εὐχαριστῆσαί σοι, μόνη [b]ἀθάνατε μῆτερ. Καὶ εἶπεν Ἶσις· πρόσεχε παῖ· ἀναγκαιοτάτη γὰρ ζήτησις αὕτη. Τὸ [c]συνεστὸς καὶ μὴ ἀφανιζόμενον χῶρον ἔχει[d]. Ἀλλ᾽ ὧδε γὰρ ἐρεῖ λόγος ἐμός. Οὐ γάρ, ὦ θαυμαστὲ καὶ [e]μεγάλου πατρὸς Ὀσίρεως μέγα τέκνον, ἀκρίτως καὶ ὁρμηδὸν τῶν σωμάτων [f]προελθοῦσαι εἰς ἀέρα [g]ἀναλύονταί τε καὶ διασκεδάννυνται μετὰ τοῦ ἄλλου ἀπείρου πνεύματος, [h]ὥστε οὐκ ἔτι δύνασθαι πάλιν τὰς αὐτὰς οὔσας εἰς σώματα παλινδρομῆσαι, ἀλλὰ μηδὲ εἰς ἐκεῖνον ἔτι τὸν [i]χῶρον, ὅθεν

[y] τηροῦσιν] Sic Heeren. pro θεωροῦσιν citans ex superioribus [p. 1064.] καὶ τηροῦσιν μὲν αὐτὴν ἐπὶ τῆς οἰκείας τάξεως.

[z] ἄγγελοι] ἀγγέλοις V. A.

67.

[a] Ἴσιδος πρὸς Ὧρον] Sic A. ὥρου πρὸς ἴσιν Cant. *Mercurii libro sacro* idem in vers. Lat.

[b] ἀθάνατος μητήρ] ἀθάνατε μ̄ήρ V. A.

[c] συνεστὸς] συνεστῶς A. qui mox ἔχειν.

[d] Sententia quæ in verbis hisce latet, *omnia quæ sint locum occupare*, per se quidem satis commoda est, attamen sermo ipse vix satis cohærere videtur. Adduntur statim in codd. V. A. post ὁ ἐμὸς verba, ποῦ τῶν σωμάτων ἀπολυθεῖσαι διατρίβουσιν αἱ ψυχαί; quæ aperte ex margine in contextum immigrarunt, quo augetur merito suspicio, omnino hunc locum interpolationibus deformatum esse; ac verba ἀλλ᾽ ὧδε γὰρ ἐρεῖ λόγος ἐμὸς vel plane esse delenda, vel falsam sedem occupasse. HEEREN.

[e] μεγάλε] μεγάλου V. A.

[f] προσελθοῦσαι] προελθοῦσαι V. A.

[g] ἀναλύονται] ἀναχύνονται V. A.

[h] ὥστε sensu jubente rescripsi pro εἶτα. HEEREN.

[i] χῶρον εἶναι] εἶναι delevit Heeren.

ἦλθον τὸ [k] πρότερον, ἀναστρέφειν· καθάπερ οὐδὲ τὸ λαμβανόμενον ἐκ τῶν κάτω ἀγγείων ὕδωρ, [l] εἰς τοὺς αὐτοὺς τόπους [1072] ὅθεν ἐλήφθη ἐπέχειν ἐστὶ δυνατὸν, ἀλλ' οὐδ' [m] αὐτὸ παραυτίκα [n] λαμβανόμενον τὴν ἰδίαν λαμβάνει χώραν, πλὴν ἀναμίγνυται τῷ παντὶ τοῦ ὕδατος χύματι. Ἀλλ' οὐκ ἔχει οὕτως, ὦ μεγαλόφρων Ὧρε. [o] Μύστης δὲ ὥσπερ [p] τις ἀθανάτου φύσεως καὐτὴ τυγχάνουσα, καὶ ὡδευκυῖα διὰ τοῦ πεδίου τῆς ἀληθείας, διεξελεύσομαί σοι τῶν ὄντων τὸ καθ' ἕκαστον, ἐκεῖνό σοι φήσασα [q] πρῶτον, ὡς δὴ τὸ ὕδωρ σῶμά ἐστιν ἄλογον, ἐκ πολλῶν συγκριμάτων [r] παρατεθλιμμένον εἰς χύσιν, ἡ δὲ ψυχὴ πρᾶγμα ἰδιοφυὲς, τέκνον, καὶ βασιλικὸν, καὶ ἔργον τῶν τοῦ θεοῦ [s] χειρῶν τε καὶ νοῦ, [t] αὐτό θ' ἑαυτῷ εἰς νοῦν ὁδηγούμενον. Τὸ τοίνυν ἐξ ἑνὸς καὶ οὐκ ἐξ ἄλλου [u] ἀδύνατον ἑτέρῳ ἀναμιγῆναι· ὅθεν [x] δεῖ καὶ τὴν πρὸς τὸ σῶμα αὐτῆς σύνοδον ἁρμονίαν θεοῦ ὑπὸ ἀνάγκης γενομένην εἶναι. Ὅτι δὲ οὔτε εἰς ἕνα καὶ τὸν αὐτὸν τόπον χυδαίως, οὔτε εἰκῇ καὶ ὡς ἔτυχεν, ἀλλὰ [y] ἑκάστη ἐπὶ τὴν ἰδίαν [z] ἀναπέμπεται χώραν, φανερὸν καὶ ἐξ ὧν [a] ἔτι ἐν τῷ σώματι οὖσα καὶ τῷ [b] πλάσματι πάσχει, παρὰ τὴν ἰδίαν φύσιν πεπαχυμένη. Ἀλλὰ καὶ πρόσχες, ὦ περιπόθητε Ὧρε, τῷ λεγομένῳ ὁμοιώματι. Φέρε γὰρ εἰς ἓν καὶ τὸ αὐτὸ συσχετήριον [c] ἐγκεκλεῖσθαι ἀνθρώπους τε καὶ ἀετοὺς, καὶ περιστερὰς, καὶ κύκνους, καὶ ἱέρακας, καὶ χελιδόνας, καὶ

[k] προτέροις] πρότερον V. A. P.
[l] εἰς] εἶτα ed. Heeren.
[m] αὐτὸν] αὐτὸ V. A. P.
[n] λαμβανόμενον] Add. καὶ χεόμενον A.
[o] Μύστας] μύστης V. A. E.
[p] τῆς] τις V.
[q] πρῶτον] πρότερον ed. Heeren.
[r] παραθλιμμένον] παρατεθλιμμένον V. A.
[s] Post χειρῶν add. τε V. A.
[t] αὐτὸ] αὐτῷ A.
[u] ἀδύνατον] ἀδυνάτως V.
[x] δεῖ jubente sensu restitui pro δή. HEEREN.
[y] ἑκάστην] ἑκάστη V. A.
[z] ἀναπέμπονται] ἀναπέμπεται V. A.
[a] ἔστιν] ἔτι V. A.
[b] πλάσματι πάσχει, παρὰ] Sic Heeren. πλάσματι πάσχει γὰρ παρὰ A. Cant. f. l. πάσχει, πάσχει γάρ.
[c] ἐγκεκλεῖσθαι] ἐκκεκλεῖσθαι A.

[1074] στρουθοὺς, καὶ μυίας, καὶ ὄφεις, καὶ λέοντας, καὶ παρδάλεις, καὶ λύκους, [d]καὶ κύνας, καὶ λαγωοὺς, καὶ βόας, καὶ ποίμνια, καί τινα τῶν τῆς [e]κοινότητος ἐχομένων ζώων, οἱονεὶ φώκας, καὶ ἐνύδρεις, καὶ χελώνας, καὶ τοὺς ἡμετέρους κροκοδείλους· ἔπειτα τούτους, ὦ τέκνον, ὑπὸ μίαν ῥοπὴν ἀπολυθῆναι τοῦ συσχετηρίου, πάντως τραπήσονται ὁ μὲν ἄνθρωπος εἴς τε ἀγορὰς καὶ στεγάς· ὁ δὲ ἀετὸς εἰς τὸν αἰθέρα, ὅπου καὶ φύσιν ἔχει διαιτᾶσθαι· αἱ δὲ περιστεραὶ εἰς τὸν πλησίον ἀέρα· οἱ δὲ ἱέρακες [f]ὑπεράνω τούτων· αἱ δὲ [g]χελιδόνες οὐχὶ [h]ὅπου ἂν οἰκῶσιν ἄνθρωποι, οἱ δὲ στρουθοὶ περὶ τὰ καρποφόρα τῶν [i]δενδρῶν· οἱ δὲ κύκνοι, ὅπου ἔξεστιν αὐτοῖς ᾄδειν· αἱ δὲ μυῖαι, περὶ αὐτὴν τὴν γῆν, τοσοῦτον αὐτῆς ἀπέχουσαι ὅσον ἀναβῆναι δύνανται ἀνθρώπων τῇ p. 146.
ὀσμῇ, (ἀνθρωπόλιχνον γὰρ ἰδίως, ὦ τέκνον, ἐστὶν ἡ μυῖα καὶ χαμαιπετές·) οἱ δὲ λέοντες καὶ παρδάλεις, οὐκ ἐπὶ τὰ ὄρη, οἱ δὲ λύκοι, [k]ἐπὶ τὰς ἐρημίας· οἱ δὲ κύνες κατ᾽ ἴχνος ἀνθρώπων· λαγωοὶ δὲ, δρυμούς· καὶ βόες αὐλιστήρια [l]καὶ πεδία· καὶ εἰς τὰς νομὰς τὰ ποίμνια· οἱ δὲ ὄφεις εἰς τὰ μύχια τῆς γῆς· φῶκαι δὲ καὶ χελῶναι, μετὰ τῶν ὁμοίων εἰς βάθη καὶ νάματα, ὡς μὴ πεδιάδος γῆς στεροῖντο, μηδὲ τοῦ συγγενοῦς ἀπολειφθεῖεν ὕδατος, [m]ἑκάστου εἰς τὴν [n]οἰκείαν χώραν ὑπὸ τοῦ ἔνδον κριτηρίου ἀνατρεπομένου.

Οὕτως ἑκάστη ψυχὴ, καὶ ἀνθρωπευομένη καὶ ἄλλως ἐπι-
[1076] γείζουσα, οἶδεν ὅπου πορευτέον [o]ἐστὶν αὐτῇ, πλὴν εἰ μή τις

[d] Post κύνας add. καὶ λαγωοὺς V. A. P.

[e] καινότητος] κοινότητος V. A. P.

[f] ὑπεράνω] ὑπάνω cum ὑπεράνω in marg. A.

[g] χελιδόνες] χελιδόναι A. οὐχὶ deleret Heeren. et οὐκ infra ante ἐπὶ τὰ ὄρη. Idem mox male οἰκοῦσιν.

[h] οὐχὶ ὅπου] ὅπου deest V. A. Leg. οὐχ ᾗ, et seqq. interrogative sumenda.

[i] δένδρον] δένδρων A.

[k] ἐπὶ τὰς] οὐκ ἐπὶ τὰς sic A. teste Heeren. In A. certe deest οὐκ.

[l] καὶ ante πεδία deest V. A.

[m] ἕκαστον] ἑκάστου V. A.

[n] οἰκείαν] ἰδίαν A.

[o] ἐστὶ deest V. αὐτῇ ἐστιν A.

τῶν [p] τυφωνίων, ὦ τέκνον, παρελθὼν [q] λέγοι, ὅτι δυνατὸν ταῦρον μὲν ἐν βυθῷ, καὶ [r] ἐν ἀέρι χελώνην διαζῆν. Εἰ δὴ τοῦτο πάσχουσι σαρκὶ καὶ αἵματι βεβαπτισμέναι, ὡς [s] μηδὲν παρὰ τάξιν πράσσειν κἂν κολάζωνται, (κόλασις γὰρ αὐταῖς ἡ ἐνσωμάτωσις,) πόσου πλέον, βαπτισμοῦ καὶ κολάσεως καὶ ἐλευθερίας ἰδίας μετασχοῦσαι; Ἔχει δὲ ἡ διάταξις [t] ἡ ἱερωτάτη οὕτως. Ἤδη ποτὲ ἄνω, μεγαλοφυέστατε παῖ, βλέπε ψυχῶν διατάξεις· τὸ ἀπ' οὐρανοῦ κορυφῆς μέχρι σελήνης θεοῖς καὶ ἄστροις καὶ [u] τῇ ἄλλῃ προνοίᾳ σχολάζει· τὸ δὲ ἀπὸ σελήνης, ὦ τέκνον, ἐφ' ἡμᾶς, ψυχῶν ἐστὶν οἰκητήριον. [x] Ἔχει μέντοι ἐν [y] ἑαυτῷ ὁδὸν ὁ [z] τοσοῦτος ἀὴρ, ὃν ἄνεμον καλεῖν ἔθος ἐστὶν ἡμῖν, ἴδιον μέγεθος ἐν ᾧ κινεῖται πρὸς ἀνάψυξιν τῶν ἐπιγείων, ὃ δὴ καὶ ὕστερον ἐρῶ· κατ' οὐδένα μέντοι τρόπον πρὸς ἑαυτὸν κινούμενος ἐμπόδιον γίνεται ψυχαῖς· κινουμένου γὰρ τούτου ἐξὸν ψυχαῖς [a] ἀναΐσσειν καὶ καταΐσσειν, ὡς ἂν τύχῃ, ἀδια-
[1078] κωλύτως. Ῥέουσι γὰρ [b] δι' αὐτοῦ ἀμιγῶς καὶ [c] ἀκολλητὶ, ὡς δι' ἐλαίου ὕδωρ. Τὸ δὲ διάστημα τοῦτο, ὦ τέκνον Ὧρε, μοιρῶν μέν ἐστι γενικῶν τεσσάρων· ἰδικῶν δὲ χωρῶν [d] ἑξήκοντα. [e] Ὧν ἡ μὲν ἀπὸ γῆς ἄνω χωρῶν ἐστι τεσσάρων, ὡς τὴν γῆν κατά τινας λόφους καὶ [f] ἀκρωρείας ἀνατεῖναι, καὶ [g] φθάνειν ἄχρι τοσούτου· ὑπὲρ γὰρ ταύτας αὐτὴν ἀνα-

[p] τυφωνίων] Vid. Jablonski Panth. Ægypt. T. II. p. 69.

[q] δὲ λέγοι] λέγει V.

[r] ἐν ἀέρι] καὶ ἐν ἀέρι V. A. Mox σαρκϊκαὶ A.

[s] μηδὲν] μηδὲ V.

[t] ἡ ἱερωτάτη] ἡερωτάτη A.

[u] τῇ ἄλλῃ προνοίᾳ, i. e. τοῖς προνοητικοῖς vel ἡγεμονικοῖς, *naturis divinis, quæ curam rerum humanarum habent.* HEEREN.

[x] Ἔχει] ἔχοι Cant.

[y] ἑαυτοῦ] ἑαυτῷ V. A.

[z] τοσοῦτος] τοιοῦτος Heeren.

[a] Post ἀναίσειν (sic) add. καὶ καταίσειν V. ἀναΐσειν A.

[b] δι' αὐτοῦ] διὰ τοῦ V.

[c] ἀκολλητὶ] ἀκωλύτι V.

[d] ἑξ] ἑξήκοντα Heeren. post Canterum tamen in versione. Vid. infra p. 146, 50. ed. Cant.

[e] Manca est oratio. Vult scriptor: *terram eatenus montium juga extollere.* Legendum itaque videtur ἕως γὰρ τούτου τὴν γῆν etc. HEEREN.

[f] ἀκρωτήρια] ἀκρωρείας V. A.

[g] φθάνει] φθάνειν V. A.

βῆναι [h]τὸ ὕψος οὐκ ἔχει φύσιν. Ἡ δ' ἀπὸ ταύτης δευτέρα ἐστὶ χωρῶν [i]ὀκτὼ, ἐν αἷς γίγνονται ἀνέμων κινήσεις, (πρόσεχε παῖ, ἀρρήτων γὰρ ἐπακούεις μυστηρίων,) γῆς τε καὶ οὐρανοῦ, καὶ παντὸς τοῦ μέσου ἱεροῦ πνεύματος· ὅπου ἡ τοῦ ἀνέμου κίνησις, καὶ ἡ τῶν ὀρνέων πτῆσις. [k]Ὑπὲρ γὰρ ταύτης οὔτε ἀὴρ κινεῖται, οὔτε ζῶον βαστάζει. Ἔχει μέντοι παρὰ τῆς φύσεως ταύτην τὴν ἐξουσίαν ὁ ἀὴρ οὗτος, ὥστε καὶ ἐν ταῖς ἰδίαις [l]ᾗ χώραις, καὶ ἐν ταῖς τῆς γῆς τέτταρσι [m]περιπολεῖ, μεθ' ὧν ἔχει ζώων, τῆς γῆς εἰς τὰς [n]αὐτοῦ [1080] ἐπαναβῆναι μὴ [o]δυναμένης. Ἡ δὲ τρίτη χωρῶν ἐστὶν ἑκκαίδεκα, ἀέρος λεπτοῦ καὶ καθαροῦ πλήρης. Ἡ δὲ τετάρτη ἐστὶ δύο καὶ τριάκοντα, ἐν αἷς ἐστι λεπτότατος καὶ εἰλικρινέστατος ἀὴρ, καὶ [p]δι' αὐτῆς διορίζων [q]ἀφ' ἑαυτοῦ [r]τοὺς ἄνω οὐρανοὺς, ἐκπύρους ὄντας τὴν φύσιν. Καὶ ἔστιν ἡ διάταξις αὕτη [s]κατ' εὐθυτενῆ γραμμὴν ἄνωθεν κάτω, ἀκολλητὶ τὴν φύσιν, ὡς εἶναι μοίρας [t]γενικὰς μὲν τέσσαρας, διαστηματικὰς [u]δὲ δώδεκα, χώρας δὲ ἑξήκοντα. Ἐν δὲ ταῖς χώραις ταύταις, ἑξήκοντα οὔσαις τὸν ἀριθμὸν, [x]οἰκοῦσιν αἱ ψυχαὶ, ἑκάστη πρὸς ἣν ἔχει φύσιν, μιᾶς μὲν καὶ τῆς αὐτῆς συστάσεως οὖσαι, οὐκέτι δὲ τιμῆς. Ὅσῳ γὰρ ἑκάστη τῶν χωρῶν ἀπὸ γῆς ὑπερβέβηκε τῆς ἑτέρας, [y]τοσούτῳ καὶ

[h] τὸ ὕψος] τῷ ὕψει ed. Heeren.

[i] ὀκτὼ, quod excidit in codd. hic supplendum esse, res ipsa docet. HEEREN. *regionum est octo* Canter. in vers. ἣ A.

[k] Melius forte legas, mutato verborum ordine; ὁ γὰρ ὑπὲρ ταύτης ἀὴρ οὔτε κινεῖται οὔτε ζῶον βαστάζει. HEEREN.

[l] ᾗ] ∴ἣ A.

[m] περιπολεῖν] –πολεῖ V. A. E.

[n] ἑαυτοῦ] αὐτοῦ Heeren. qui mox inserit μὴ ante δυναμένης, secutus scil. Canteri versionem, *cum id vicissim terræ facere non liceat.*

[o] δυναμένης] δυνάμεις V. A.

[p] δι' αὐτῆς] δι' ἑαυτῆς V.

[q] ἀφ' ἑαυτοῦ] Sic Cant. pro ἐφ' ἑαυτοῦ.

[r] ἄνω] τοὺς ἄνω V. A.

[s] κατ' εὐθυτενῆ] κατεθυτενῆ A.

[t] γενικὰς] γένοικὰς A. Supra ὥστ' Heeren. tacite.

[u] δὲ δώδεκα] δέδωκα A. iterum ἑξήκοντα pro Ἓξ Heerenius cum Canteri versione.

[x] οἰκοῦσιν] εἰκοῦσίν A.

[y] τοσούτῳ καὶ ἐν ταῖς ψυχαῖς ἑτέρα τὴν ἑτέραν καθ' ὑπεροχὴν λείπειν, ὧ

αἱ ἐν [z] αὐταῖς ψυχαὶ ἑτέρα τὴν ἑτέραν καθ' ὑπεροχὴν λείπει, ὦ τέκνον. Τίνες μὲν οὖν εἰς ἑκάτερα τούτων ἀναλύουσι ψυχαὶ, ἐντεῦθέν σοι πάλιν, ὦ μεγαλόδοξε Ὧρε, καταλέγειν ἄρξομαι, ἄνωθεν ἐπὶ τὰ πρόσγεια τὴν τάξιν ποιούμενος.

69 Περὶ ἐμψυχώσεως καὶ μετεμψυχώσεως.

[1082] Τὸ μεταξὺ γῆς καὶ οὐρανοῦ κεχώρισται, τέκνον Ὧρε, πρὸς μέτρον καὶ ἁρμονίαν. Αἱ δὲ χῶραι αὗται ὑπὸ τῶν p. 147. προγόνων καλοῦνται, ὑφ' ὧν μὲν ζῶναι, ὑφ' ὧν δὲ στερεώματα, ὑπὸ δὲ ἑτέρων πτύχαι. [a] Ἐν δὲ ταύταις φοιτῶσιν αἵγε ἀπολελυμέναι τῶν σωμάτων [b] ψυχαὶ, [c] αἵ τε μηδέπω ἐνσωματισθεῖσαι. Ἑκάστη δὲ τούτων, ὦ τέκνον, κατὰ τὴν ἀξίαν καὶ [d] χῶρον ἔχει· ὥς γε τὰς μὲν θείας καὶ βασιλικὰς ἐν τῇ ὑπεράνω πάντων κατοικεῖν· τὰς δὲ ἐλαχίστας [e] κατὰ τιμὴν, καὶ τὰς ἄλλας ὅσαι εἰσὶ χαμαιπετεῖς ἐν τῇ ὑποκάτω πάντων, τὰς δὲ μέσας τῇ μέσῃ. Αἱ μὲν οὖν εἰς τὸ ἄρχειν καταπεμπόμεναι, ὦ τέκνον Ὧρε, ἐκ τῶν ὑπεράνω ζωνῶν καταπέμπονται· αἱ καὶ λυθεῖσαι, εἰς τὰς αὐτὰς, ἢ καὶ ἔτι ὑπεράνω, ἀνέρχονται, πλὴν [f] εἰ μή τινες
[1084] ἔτι εἶεν [[g] παρὰ] τὴν ἀξίαν τῆς ἑαυτῶν φύσεως καὶ τὴν τοῦ θείου νόμου παραγγελίαν πεπραχυῖαι· ὥσπερ ἡ ἄνω

τέκνον, χώρα καὶ ψυχή] Pro ταῖς codd. V. A. legunt αὐταῖς, quo reliqua facile quoque restituuntur. Vult nempe scriptor: *animas præstantiores altiores quoque regiones inhabitare.* Rescripsi itaque καὶ αἱ ἐν αὐταῖς ψυχαὶ—λείπει. Ultima autem verba χώρα καὶ ψυχὴ prorsus hic aliena, a marg. in contextum immigrasse videntur; ubi scriptor, qua de re sermo sit, iis indicare voluerat. HEEREN.

[z] ταῖς] αὐταῖς V. A.

68.

[a] Ἐν δὲ ταυτ' ἃ φοιτῶσιν αἵγαι] ἐν δὲ ταύταις φοιτῶσιν αἵγε etc. V. A.

[b] ψυχαὶ] ψυχῶν A.

[c] αἵτε] αἱδὲ V. A.

[d] χῶρον] χώραν Heeren.

[e] Habet Cant. et cum eo codd. κατατεμεῖν, pro quo ille in marg. rescripsit κατὰ τιμήν. Sed potius legendum duco κατωτέρω μεῖναι, *inferiorem locum occupare*; sequitur enim statim ὑποκάτω, i. e. *infimo loco.* HEEREN.

[f] ἡμῖν τιναις] εἰ μὴ τινὲς V. A. E. εἰ μὴ Cant. in marg.

[g] [παρὰ] addidit Heeren.

πρόνοια πρὸς μέτρον τῶν [h] ἁμαρτημάτων εἰς τὰς ὑποκάτω χώρας ἐξορίζει, ὥσπερ καὶ τὰς ὑποδεεστέρας δυνάμει [i] τε καὶ ἀξίᾳ. Ἐκ γὰρ κατωτέρων ἐπὶ μείζονας καὶ ὑψηλοτέρας ἀνάγει. Εἰσὶ γὰρ ἄνωθεν οἱ δορυφόροι [j] δύο ὄντες τῆς καθόλου προνοίας, [k] ὧν ὁ μὲν ψυχοταμίας, ὁ δὲ ψυχοπομπός· καὶ ὁ μὲν [l] ψυχοταμίας . . . ., ὁ δὲ ψυχοπομπὸς, ἀποστολεύς τε καὶ διατάκτης τῶν ἐνσωματωμένων ψυχῶν. Καὶ ὁ μὲν τηρεῖ, ὁ δὲ πρόεισι, κατὰ γνώμην τοῦ θεοῦ. Τῷ οὖν λόγῳ τούτῳ, ὦ παῖ, καὶ τῇ ἄνω τῶν πραγμάτων ἐξαλλαγῇ, καὶ ἐπὶ γῆς [n] ἐστιν . . . . ἡ φύσις, [o] πλάστρια γὰρ οὖσα, καὶ σκηνοποιὸς, [p] ἀγγείων εἰσβάλλονται αἱ ψυχαί. Παρεστᾶσι δὲ δύο ἐνέργειαι [q] αὐτῇ Μνήμη καὶ Ἐμπειρία·
[1086] καὶ ἡ μὲν [r] γνώμη ἔργον ἔχει τοῦτο, ὅπως ἡ φύσις [s] τηρῇ καὶ περικρατῇ τοῦ τε ἑκάστου τύπου ἐξ ἀρχῆς καταβεβλημένου, καὶ τοῦ φυράματος [t] ὡς ἄνω γίγνεται· ἡ δὲ ἐμπειρία, ὅπως πρὸς ἀνάλογον ἑκάστης τῶν καταβαινουσῶν ψυχῶν [u] εἰς

[h] ἁμαρτηκότων] ἁμαρτημάτων V. A. P.

[i] τε καὶ] τε om. Heeren.

[j] δύο ὄντες] δύο addidit Heeren, tacite secutus Canterum in versione.

[k] ὧν ὁ μὲν—ψυχοπομπὸς add. Heeren. ex V.

[l] ψυχοταμίας ψυχῶν] ψυχοτομίας ψυχῶν A. Habet item Canter. mox ἀστολεὺς et διατάκτως. ubi A. ἀποστολεὺς et διατάκτης.

[n] ἐστὶν ἡ] ἔστι μὴ V. A. E. P.

ib. Mancam hic esse orationem, res ipsa docet. Pro ἔστιν ἡ codd. V. A. habent ἔστι μή. Legendum forte ἔστιν ἴση, quod voluisse videtur Cant. vertens: *hanc rationem superiorum natura in inferioribus imitatur.* HEEREN.

[o] πλάστρια] πλάστειρα Heeren.

[p] ἀγγείων] ἀγγείοις Heeren.

[q] αὐτῇ] αὐτὴ V. καὶ αὐτὴ A. qui mox ἐμπυρία.

[r] γνώμη] Heeren. ed. Μνήμη, secutus fortasse Canteri sententiam, qui hæc sic reddidit: *sic ut animas delapsas circumstent functiones duæ, memoria et experientia, quarum illa dat operam ne impressæ ab initio imagines deleantur.*

[s] τηρῇ κ. ἐπικρατῇ] τηρεῖ κ. περικρατεῖ A.

[t] ὡς rescripsi pro τοῦ, *ut mistura corporum terrestris cœlesti respondeat.* HEEREN.

[u] Verba εἰς—ψυχῶν om. A.

ib. Habet Cant. nullo sensu: εἰς τὸ σώματι κτισθῆναι, καὶ τὸ πλάσμα ἐνεργεῖ καὶ γένηται. Pro quibus edidi εἰς τὸ σώματι ἐγκτισθῆναι, *animæ quæ in terram demittuntur, ut includantur corpori-*

τὸ σώμασι ἐγκτισθῆναι καὶ τὰ πλάσματα [x] ἐνεργῆ γένηται· καὶ ταῖς μὲν ὀξέσι τῶν ψυχῶν ὀξέα γένηται καὶ τὰ σώματα, ταῖς δὲ βραδέσι βραδέα, [y] ταῖς δὲ ἐνεργέσιν ἐνεργῆ, καὶ ταῖς νωθραῖς νωθρὰ, καὶ ταῖς δυναταῖς δυνατὰ, καὶ ταῖς δολίαις δόλια, καὶ ἁπαξαπλῶς ἑκάσταις κατὰ τὸ εἰκός. Οὐ γὰρ [z] ἀσκόπως πτηνὰ μὲν ἐπτίλωσε, λογικὰ δὲ περισσαῖς καὶ ἀκριβεστέραις αἰσθήσεσιν ἐκόσμησε, [a] τετραπόδων δὲ τὰ μὲν κέρασι, τὰ δὲ ὀδοῦσι, τὰ δὲ ὄνυξι καὶ [b] ὁπλαῖς ἐκαρτέρωσε, τὰ δὲ [c] ἕρποντα εὐχαίτοις σώμασι καὶ [d] εὐϋποχωρήτοις ἐμαλάκυνε· καὶ ὅπως μήτε τοῦ σώματος ὑγρότης τέλεον [e] ἀσθενὴς διαμένῃ, ὧν μὲν τὰ στόματα καὶ τοῖς ὀδοῦσι ἐχαράκωσεν, ὧν δὲ τοὺς ὄγκους [f] ὀξύνας δύναμιν περιέθηκεν. Οὕτως τὰ μὲν τῇ τοῦ θανάτου εὐλαβείᾳ ἰσχυρότερα τῶν ἄλλων. Τὰ δὲ νηκτὰ, δειλὰ ὄντα, ἐνοικεῖν ἔδωκε στοιχείῳ, ἐν ᾧ τὸ φῶς [g] οὐδετέραν ὧν ἔχει
[1088] δυνάμεων [h] ἐνεργεῖν ἰσχύει· ἐν γὰρ ὕδατι τὸ πῦρ οὔτε φαίνει οὔτε καίει. Ἕκαστον δὲ αὐτῶν ἢ φολίσιν ἢ ἀκάνθαις ἐν ὕδατι νηχόμενον, [i] φεύγει ὅπη ἂν θέλῃ, τὴν ἰδίαν περιβεβλημένον δειλίαν, καὶ σκεπαστήριον ἔχον εἰς τὸ μὴ ὁρᾶσθαι τὸ ὕδωρ. Εἰς γὰρ ἕκαστον τῶν σωμάτων τούτων καθ' ὁμοι-

bus. Suspicari quoque posses scripsisse auctorem εἰς τὸ σωματισθῆναι, ex σωματίζω, quod infra occurrit, eodem sensu. Pro ἐνεργεῖ cod. V. habet ἐνεργῆ, unde patet legendum esse καὶ τὰ πλάσματα ἐνεργῆ γένηται, *ut corpora vim suam habeant*. HEEREN.

[x] ἐνεργεῖ] ἐνεργῆ V.

[y] ταῖς δὲ ἐνεργέσιν ἐνεργῆ] ταῖς δὲ ἐναργέσιν ἐναργῆ A. E.

[z] ἀσκέπτως] ἀσκόπως V. A. E.

[a] τὸ τετ.] τὸ deest V. A. E.

ib. τῶν τετραπόδων δὲ rescripsi pro τὸ τετραπόδων μέν. HEEREN.

[b] ὁπλαῖς ἐκατέρωσε] ὁπλὰς V. ὁπλᾶς ἐκαρτέρωσε A. E.

[c] ἕρποντα] ἑρπετὰ ed. Heeren.

[d] ἐνυποχωρήτοις] εὐϋποχωρήτοις V. E.

[e] ἀσθενὴς] Sic Heeren. ἀσθενῆ A. Cant.

[f] ὀξυνίας] ὀξύνας V. A. E.

[g] οὐδετέραν—τὸ πῦρ om. A.

[h] Habet Cant. nullo sensu: ἐνεργεῖν, ἰσχύειν γὰρ ὕδατι, pro quo edidi, ἐνεργεῖν ἰσχύει, ἐν γὰρ etc. HEEREN.

[i] φεύγει] φεύγῃ A. et infra ἔχων.

ότητα ἐγκλείονται αἱ ψυχαὶ, ὥστε εἰς μὲν ἀνθρώπους χωρεῖν τὰς κριτικὰς, εἰς δὲ πτηνὰ τὰς ἀπανθρώπους, [k]εἰς δὲ τετράποδα τὰς ἀκρίτους· νόμος γὰρ ἐκείνοις ἐστὶν ἡ ἰσχύς· εἰς δὲ ἑρπετὰ τὰς [l]δολίας· οὐδὲν γὰρ αὐτῶν ἐξ ἐναντίου ἐπεξέρχεται τοῖς ἀνθρώποις, λοχήσαντα δὲ καταβάλλει· εἰς δὲ τὰ νηκτὰ τὰς [m]δειλὰς, ἢ ὅσα τῶν λοιπῶν στοιχείων [n]ἀπολαύειν ἀνάξια τυγχάνει. Γίγνεται μὲν οὖν καὶ ἐν ἑκάστῳ εὑρεῖν [o]ζῶον τῇ ἰδίᾳ φύσει μὴ καταχρώμενον.

Πῶς πάλιν, ὦ τεκοῦσα; εἶπεν Ὧρος.

Καὶ ἀπεκρίθη Ἶσις, ὥστε ἄνθρωπον μὲν, ὦ τέκνον, τὸ κριτικὸν ὑπερβῆναι, τετράπουν δὲ τὴν ἀνάγκην παραλλάξαι, ἑρπετὰ δὲ τὸ δόλιον ἀπολέσαι, καὶ νηκτὸν τῆς δειλίας p. 148.
[p]καταφρονῆσαι, καὶ πτηνὸν τῆς ἀπανθρωπίας ἐκπεσεῖν. Καὶ τὰ μὲν περὶ τῆς διαθέσεως τῶν ἄνω, καὶ τῆς καταβάσεως αὐτῶν, καὶ τῆς σωματουργίας τοσαῦτα. Συμβαίνει δὲ, ὦ τέκνον, ἐν ἑκάστῳ εἴδει εὑρίσκεσθαι καὶ [q]γένει τῶν προκειμένων βασιλικάς τινας ψυχὰς, καταβαίνειν δὲ καὶ ἄλλας ἀλλοίους, τὰς μὲν διαπύρους, τὰς δὲ ψυχρὰς,
[1090] τὰς δὲ ὑπερηφάνους, τὰς δὲ πραείας, τὰς δὲ βαναύσους, τὰς δὲ ἐμπείρους, τὰς δὲ ἀπείρους, τὰς δὲ ἀργὰς, τὰς δὲ ἐνεργεῖς, τὰς δὲ ἄλλο τι ἄλλως οὔσας. Συμβαίνει δὲ τοῦτο παρὰ τὴν τῶν τόπων θέσιν, ὅθεν εἰς τὸ ἐνσωματισθῆναι [r]καθάλλονται αἱ ψυχαί. [s]Αἱ μὲν γὰρ [t]ἀπὸ βασιλικοῦ

[k] εἰς δὲ τετράποδα, ἀκρίτους] Heeren. edidit εἰς δὲ τετράπους τὰς ἀκρίτους. δὲ deest V. εἰς τετράποδα ἀκρίτους A. τὰς add. Heeren.

[l] διλίας] δολίας V. A.

[m] δειλίας, ἢ ὅσα] δειλὰς, καὶ ὅσα V. A.

[n] ἀπολαβνει] ἀπολαύει V. A.

[o] ζῶον] ζώων A.

[p] ἀφρονῆσαι] καταφρονῆσαι V. A. E. P.

[q] γένη] γένει V. A.

[r] καὶ βάλλονται] καὶ θάλλονται A. V. unde Heeren. ed. καθάλλονται. Cant. in marg. καταβάλλονται.

[s] Quæ sequuntur corruptiora sunt, quam ut prorsus expediri possent. Διάζωμα βασιλικὸν explicandum videtur de regione ubi animæ regiæ habitant. Est enim διάζωμα proprie quidem *cingulum*, tum vero id quod cingulo oblique

διαζώματος καταπηδῶσι τῆς ὁμοιοπαθοῦς [u] βασιλικῆς ψυχῆς, πολλαὶ γάρ εἰσι βασιλείαι. Αἱ μὲν γὰρ [v] εἰσι ψυχῶν, αἱ δὲ σωμάτων, αἱ δὲ [x] τέχνης, αἱ δὲ ἐπιστήμης, αἱ δὲ αὐτῶν.

Πῶς, πάλιν εἶπεν Ὧρος, καὶ ἑαυτῶν;

Οἷον, ὦ τέκνον, ὡς [y] ἐπιγεγονότων ἤδη ψυχῶν μὲν Ὄσιρις, ὁ πατήρ σου, σωμάτων δὲ [z] ὁ ἑκάστου ἔθνους ἡγεμών· βουλῆς δὲ, ὁ πατὴρ πάντων, καὶ καθηγητὴς, ὁ τρισμέγιστος Ἑρμῆς· ἰατρικῆς δὲ ὁ Ἀσκληπιὸς ὁ Ἡφαίστου· ἰσχύος δὲ [1092] καὶ ῥώμης πάλιν Ὄσιρις· [a] μεθ' ὃν, ὦ τέκνον, αὐτὸς σὺ, φιλοσοφίας δὲ [b] Ἀρνεβεσχῆνις, ποιητικῆς δὲ πάλιν ὁ Ἀσκληπιὸς [c] Ἰμούθης. Καθόλου γὰρ, ὦ τέκνον, εὑρήσεις, ἐὰν [d] ἐξετάσῃς, πολλοὺς καὶ πολλῶν ἄρχοντας, καὶ πολλοὺς πολλῶν βασιλεύοντας. Ἀλλ' ὁ μὲν πάντων κρατῶν, τέκνον,

dividitur, adeoque *regio, plaga.* Codd. V. A. E. habent ἀποβατικοῦ, nullo sensu. Pro βασιλικῆς iidem legunt βασιλευούσης, attamen vel sic verba hæc nec cum præcedentibus cohærent, nec cum iis quæ sequuntur; locusque non corruptus modo sed et mutilus esse videtur. Forte scripserat Hermes: αἱ μὲν γὰρ ἀπὸ βασιλικοῦ διαζώματος καταπηδῶσι, αὗται καὶ ἐνταῦθα, ὁμοιοπαθεῖς οὖσαι, βασιλεύουσι ψυχαί· πολλαὶ δὲ βασιλείαι. *Animas ex regia illa plaga delapsas, natura sua servata, hic quoque regnare; esse autem varia regna;* quæ jam accuratius indicat. HEEREN.

• [t] ἀπὸ βασιλικοῦ] ἀποβατικοῦ V. A. E.

[u] βασιλικῆς] βασιλευούσης V. A. E.

[v] εἰσὶ rescripsi pro εἰς. HEEREN.

[x] Melius forte legeris τεχνῶν et ἐπιστημῶν. Post hæc αἱ δὲ ἀρετῶν rescribendum videtur pro αἱ δὲ αὐτῶν, quod nihili est. Præsidium tamen parari posse videtur lectioni vulgatæ ex iis quæ statim sequuntur, cum interrogat Hermes, πῶς δὲ καὶ ἑαυτῶν; Verum hæc non minus corrupta puto quam illa; nam Isis ad ea non respondet. Legendum forte pro iis, πῶς δὲ καλεῖς τούτους; *quomodo præfectos hosce appellas?* eorum nomina enim jam recenset Isis. HEEREN.

[y] ψυχαὶ ἐπιγεγονότες ἤδη, *animæ quæ jam in vita fuerunt,* adeoque *defunctorum.* HEEREN.

[z] Ante ἑκάστου add. ὁ V. A. E.

[a] μεθ' ὧν] μεθ' ὃν V. A.

[b] Ἀρνεβασκῆνις] Ἀρνεβεσχῆνις V. A. E.

[c] Ἰμούθης] Ἰμοὺθ A. Vid. supra p. 117, 30. ed. Cant.

[d] ἐξετάσῃς] ἐξετάζῃς A.

ἐκ τῆς ὑπεράνω χώρας ἐστὶν, ὁ δὲ [e]τῶν κατὰ μέρος, ἐκείνην ἔσχε [f]τιμὴν, [g]ἀφ' οὗ τόπου ἐστίν. Βασιλικωτέραν [μὲν, οἱ ἐκ τοῦ βασιλικοῦ] διαζώματος τετευχότες· [οἱ δὲ ἐκ πυρὸς,] πυρὸς ἐργάται γίγνονται καὶ [h]τροφεῖς· οἱ δὲ ἀπὸ [i]τοῦ ὑγροῦ, ἐν ὑγροῖς [k]διαζῶσιν· οἱ δὲ ἀπὸ ἐπιστημονικοῦ καὶ [l]τεχνίτου, περὶ ἐπιστήμας [m]γίγνονται καὶ τέχνας· οἱ δὲ ἀπ' ἀργοῦ, ἀργῶς καὶ [n]ἐπιρεμβῶς διαζῶσι. Πάντων γὰρ τῶν ἐπὶ γῆς, ὦ τέκνον, διὰ λόγου καὶ ἔργου πραγμάτων ἄνω εἰσὶν αἱ πηγαὶ, μέτρῳ καὶ σταθμῷ ἐπιχύνουσαι [o]ἡμῖν τὰς οὐσίας, καὶ οὐκ ἔστιν ὃ μὴ ἄνωθεν καταβέβηκε, καὶ πάλιν ἀνέρχεται ἵνα καταβῇ.

Πῶς πάλιν λέγεις τοῦτο, ὦ τεκοῦσα, παράδειξον;

Καὶ ἀπεκρίθη Ἶσις πάλιν· τῆς παλινδρομίας ἐναργὲς
[1094] τοῦτο σημεῖον τοῖς ζώοις ἐνέθηκεν [q]ἡ ἱερωτάτη φύσις. Τοῦτο γὰρ [r]ὃ πνέομεν ἄνωθεν ἐξ ἀέρος πνεῦμα, τοῦτο πάλιν ἄνω [s]πέμπομεν ἵνα λάβωμεν· καί εἰσιν, ὦ τέκνον, τούτου τοῦ ἐνεργήματος τεχνίτιδες ἐν ἡμῖν [t]φύσαι, αἱ ἐπειδὰν [u]μύσωσι τὰ δεκτικὰ ἑαυτῶν τοῦ πνεύματος [x]στόματα, τότε ἡμεῖς οὐκέτι ὧδέ ἐσμεν, ἀλλ' ἀναβεβήκαμεν. Προσεπιγίγνεται [y]δὲ, ὦ παῖ μεγαλόδοξε, καὶ ἕτερά τινα [z]ἡμῖν ἐκτὸς τοῦ φυράματος συσταθμίας.

[e] τῶν κατὰ μέρος etc.] τῶν κάτω, μέρος etc. V. A.

[f] τὴν] τιμὴν Heeren. qui et verba uncis inclusa de suo addidit.

[g] ἀφ' οὗ] ὑφ' οὗ V. A.

[h] τροφεῖς Heeren. tanquam ex A. Is tamen cum Cant. habet τροφῆς.

[i] τοῦ ante ὑγροῦ deest V. A.

[k] διαζώμασιν] διαζῶσιν Cant. in marg.

[l] τεχνίτου] καὶ τεχνίτου V. A.

[m] γίνονται] καταγίνονται V. A. E.

[n] ἐπιρεμβῶς] ἐπιρευμβῶς A. E.

[o] ἡμῖν] ἡμῶν V. A. E.

[q] ἡ deest V.

[r] τὸ μὲν] τὸ μὴ V. A.

[s] πέμπομεν] πέμπωμεν A.

ib. ὃ πνέομεν edidi pro ὡς τὸ μὲν (μὴ A.) ap. Cant. HEEREN.

[t] φύσαι] φύσεις V.

[u] μισῶσι] μύσωσι Cant. in marg.

[x] στόματι] στόματα V. A.

[y] Ante ὦ add. δὲ V. A.

[z] ἡμῖν om. Heeren.

Τί δ' ἐστὶν, Ὦρος εἶπε, τὸ φύραμα [a] τοῦτ' οὖν, ὦ τεκοῦσα;

Σύνοδός ἐστι καὶ κρᾶσις τῶν [b] τεσσάρων στοιχείων, ἐξ ἧς κράσεως καὶ συνόδου ἀναθυμιᾶταί τις ἀτμὸς [c] ὃς περιειλεῖται μὲν τῇ ψυχῇ, διατρέχει δὲ ἐν σώματι, ἀμφοτέροις μεταδιδοὺς, τουτέστι τῷ σώματι καὶ τῇ ψυχῇ, τῆς ἰδίας ποιότητος· καὶ οὕτως αἱ διαφοραὶ τῶν ψυχικῶν καὶ [d] σωματικῶν [e] ἀναλλοιώσεων γίνονται. Εἰ μὲν γὰρ κατὰ τὴν σωματικὴν διάπηξιν πλεονάσειε τὸ πῦρ, [f] τὸ τηνικαῦτα ἡ ψυχὴ θερμὴ τὴν φύσιν ὑπάρχουσα, καὶ ἕτερον θερμὸν προσλαβοῦσα, [g] καὶ ἐκπυρωδεστέρα [h] γενομένη, ποιεῖ τὸ ζῶον [i] ἐνεργότερον καὶ θυμικὸν, τὸ δὲ σῶμα ὀξὺ καὶ εὐκίνητον· εἰ δὲ πλεονάσειεν ὁ ἀὴρ, [f] τὸ τηνικαῦτα καὶ κοῦφον καὶ πηδητικὸν καὶ ἀνέδραστον γίνεται τὸ ζῶον καὶ ψυχῇ καὶ σώματι. Εἰ δὲ τὸ ὕδωρ πλεονάσειε, [f] τὸ τηνικαῦτα καὶ τὸ ζῶον τῇ μὲν ψυχῇ γίγνεται [k] εὔχρουν τε καὶ [l] εὐφυὲς καὶ [m] εὐπερίχυτον, ἱκανῶς τε τοῖς ἄλλοις ἐπιπεσεῖν καὶ
[1096] κολληθῆναι δυνάμενον, διὰ τὸ πρὸς τὰ ἄλλα [n] ἑνωτικὸν καὶ p. 149.
κοινωνικὸν τοῦ ὕδατος, ἐφιζάνει γὰρ πᾶσι, καὶ πολὺ μὲν ὂν εἰς ἑαυτὸν ἀναλύει καὶ περιλαμβάνει, [o] ὀλίγον δὲ [p] ὑπάρχον, καὶ καταδύσαν, ἐκεῖνο γίγνεται [q] ᾧ ἐμίγη. Τὰ μέντοι σώματα ὑπὸ πλαδαρότητος καὶ χαυνότητος εἰς περίσφιγξιν

[a] τοῦτο ὦ] τοῦτ' οὖν A. E.
[b] τεσσάρων deest V.
[c] ὡσπέρα] ὡσπερεὶ V. E. P. ὡσπερ̈εὶ. εἰλεῖται A.
[d] τῶν ante σωμ. deest A. V.
[e] ἀναλλοιώσεων] ἐναλλοιωσ. V. ἐναλλοιώσεως A.
[f] τὸ om. Heeren.
[g] καὶ addidit Heeren.
[h] γενομένη] γιναμένη V. γεναμένη A.
[i] ἐνεργότερον] ἐπεργότερον καὶ θυμικὸν τὸ δὲ σῶμα etc. V. A.
[k] Post εὔχρουν add. τε V. εὔχρουνται A.
[l] εὐφυὲς] ἐμφυὲς A.
[m] εὐπεριέχυτον] εὐπερίχυτον V. A.
[n] Post ἑνωτ. add. καὶ κοινωνικὸν V. A. E.
[o] ὀλίγου] ὀλίγον A.
[p] ὑπάρχειν κ. καταδύσον] ὑπάρχον κ. καταδύσαν V. A. E.
[q] ὡς ἐμίγη] ᾧ ἐμίγη V. A.

[r]οὐκ ἄγεται, ἀλλὰ μικρᾷ τινι νόσου ἀφορμῇ λύεται, καὶ τοῦ ἰδίου συνδέσμου κατ' ὀλίγον ἐκπίπτει. Εἰ δὲ τὸ γεῶδες πλεονάσειε, τὸ τηνικαῦτα ἀμβλεῖα μὲν τοῦ ζώου ἡ ψυχὴ γίνεται, οὐκ ἔχουσα τὴν σωματικὴν ἀραιότητα εὔλυτον, οὐδὲ [s]τόπον δι' οὗ πηδήσεται, πεπαχυμένων τῶν αἰσθητικῶν μελῶν, ἀλλὰ ἔνδον μένει παρ' ἑαυτῇ ὑπὸ βάρους καὶ πυκνότητος πεδηθεῖσα, τὸ δὲ σῶμα στερεὸν μὲν, ἀλλὰ ἀργὸν καὶ βαρὺ, καὶ μετὰ βίας ὑπὸ τῆς προαιρέσεως [t]κινούμενον. [u]Εἰ δὲ σύμμετρος γένοιτο ἡ πάντων στάσις, τότε τὸ ζῶον θερμὸν εἰς πρᾶξιν, κοῦφον δὲ εἰς κίνησιν, [x]εὔκρατον δὲ εἰς ἁφὴν, γενναῖον δὲ [y]εἰς πῆξιν κατασκευάζεται. [z]Ὅσα οὖν τῷδε τῷ λόγῳ κεκοινώνηκε πλείονος μὲν πυρὸς καὶ πνεύματος, ταῦτα ἀπωρνέωται, καὶ ἄνω παρ' ἐκείνοις [a]πολιτεύεται τοῖς στοιχείοις, ἐξ ὧν καὶ ἐγένετο· ὅσα δὲ πλείονος μὲν πυρὸς, ὀλίγου δὲ πνεύματος, ὕδατος δὲ καὶ γῆς ἴσης, ταῦτα ἀπηνθρώπισται, καὶ τῷ ζώῳ τὸ περισσὸν τοῦ θερμοῦ εἰς
[1098] σύνεσιν ἐτράπη· ὁ γὰρ ἐν ἡμῖν νοῦς θερμόν τι χρῆμά ἐστιν, ὃ καίειν μὲν οὐκ οἶδε, [b]διαδύνειν δὲ διὰ πάντων ἐπίσταται· ὅσα δὲ πλείονος μὲν ὕδατος, πλείονος δὲ γῆς, μετρίου δὲ πνεύματος, καὶ ὀλίγου [c]δὲ πυρὸς, ταῦτα [d]τεθηρίωται, τῇ δὲ τοῦ θερμοῦ περιουσίᾳ [e]ἀλκιμώτερα γέγονε τῶν ἄλλων· ὅσα

[r] οὖν] οὐκ Cant. in marg.

[s] τόπον, *nec locum per quem transiliant*, edidi pro τοῦ quod cum Cant. tenent codd. HEEREN.

[t] κινούμενον] μετακινούμενον A.

[u] Εἰ] ἡ A.

[x] εὔκρατον in marg. ἴσως εὐκράτητον eadem marg. A. E.

[y] δι' ἑσθῆξιν] διαθῆξιν V. A. E.

ib. δὲ εἰς πῆξιν, *ad conjunctionem cum aliis*, edidi ex Patrit. pro δι' ἑσθῆξιν ap. Cant. quod nihili est. HEEREN.

[z] Ὅσα] ὅσῳ A. qui mox om. μὲν.

[a] πολιτεύεται] πολιτεύετ$\overset{\text{αι}}{\text{ε}}$ A.

[b] διαδύνειν δὲ κατὰ πάντων ἐπίσταται, *quod omnia penetrare valet*, edidi pro διαδύνει δὲ κατὰ πάντων καὶ ἐπίσταται, quod cum Cant. tenent codd. HEEREN.

[c] δὲ om. Heeren.

[d] θηρίωται] τεθηρίωται V.A. Post ταῦτα add. τε E.

[e] ἀλκιμώτερα] ἀλκιμώτατα A.

δὲ γῆς καὶ ὕδατος [f]ἴσον κεκοινώνηκε, ταῦτα [g]ἐφειρπώθη, καὶ τῇ τοῦ πυρὸς στερήσει ἄτολμα γέγονε καὶ ἀπαρρησίαστα, τῇ δὲ τοῦ ὕδατος κοινωνίᾳ ψυχρὰ ἐγένετο, τῇ δὲ τῆς γῆς βαρέα καὶ νωθρὰ, τῇ [h]δὲ τοῦ πνεύματος [i]εὐκίνητα, εἰ προαιρέσει τὸ κινεῖσθαι· ὅσα δὲ πλείονος μὲν ὑγροῦ, ὀλίγου δὲ ξηροῦ, ταῦτα [k]ἀπιχθύωται, καὶ τῇ μὲν τοῦ θερμοῦ καὶ ἀέρος στερήσει δειλά ἐστι καὶ [l]ἄδυτα, τῇ δὲ τοῦ ὑγροῦ [m]περιουσίᾳ καὶ [n]τῇ τοῦ γεώδους ἐν λελυμένῃ γῇ καὶ ὕδατι διὰ τὸ συγγενὲς κατοικεῖ. Καὶ πρὸς μὲν τὴν τοῦ ἑκάστου στοιχείου μοῖραν, καὶ τῆς μοίρας τὴν περιοχὴν, καὶ τὰ σώματα ἡλικιάζεται· καὶ πρὸς τὴν ὀλιγομετρίαν τὰ λοιπὰ ζῶα μεμετροποίηται, πρὸς ἐνέργειαν τὴν ἑκάστῳ τῶν στοιχείων [o]οὐσιομετρίαν. Καὶ ἔτι, ὦ παῖ περιπόθητε, [p]λέγω, ὅτε ἐκ ταύτης τῆς οὕτω συστάσεως ἡ κατὰ τὴν πρώτην σύνοδον γενομένη κρᾶσις, καὶ ὁ ἐκ ταύτης ἀναθυμιώμενος
[1100] ἀτμὸς, ἐφ' ὅσον τὴν ἰδίαν τηροῦσιν ἰδιότητα, ὥστε τὸ μὲν θερμὸν ἕτερον μὴ λαβεῖν θερμὸν, [q]ἢ τὸ ἀερῶδες πνεῦμα ἕτερον, μηδὲ τὸ ὑγρὸν ἑτέραν [r]ὑγρασίαν, μηδὲ τὸ γεῶδες ἑτέραν πυκνότητα, τὸ τηνικαῦτα τὸ ζῶον ὑγιαίνει. Ἐπὰν γὰρ μὴ

f ἴσον] ἴσων V. A.

g ἐφειρπώθη] ἐφηρπώθη A.

h δὲ τοῦ πνεύματος] τοῦ πνεύματος δὲ A.

i εὐκίνητα] δυσκίνητα Cant. in marg. probante Heerenio. Sed recte vulg. Nam supplendum ex proximis κοινωνίᾳ.

k ἀπιχθύωται] ἀπιχθύονται V.

l ἄδυτα] ὕδατα V.

m περιουσία om. E.

n τῇ ante τοῦ deest V.

o οὐσιομετρίαν] –τρίας V. A. E.

ib. Locum hunc depravatum intactum reliqui, quod vanis conjecturis indulgere nolim. Sensus quidem in universum satis clarus est. Pendere durationem corporum ex eorum compositione, quatenus hæc vel illa elementa in iis vel abundent, (κατὰ περιοχὴν), vel deficiant (κατὰ ὀλιγομετρίαν). Sed hæreo in verbis τὰ λοιπὰ ζῶα, quæ quomodo alteri τὰ σώματα opponuntur, non assequor. Præterea ultimum οὐσιομετρίαν nullum sensum fundit. Legendum forte pro eo ἐνοῦσαν, scil. τὴν ἐνεργείαν, *vis quæ iis inest*, terminatione μετρίαν ex præcedentibus male repetita. HEEREN.

p λέγω ὅτε] λέγων ὅτι A. ἔλεγω ὅτι Cant.

q ἢ τὸ] Sic Heeren. καὶ τὸ A. Cant.

r ὑγρασίαν] ἐργασίαν V. A.

οὕτως μένῃ, ὦ τέκνον, ἐφ᾽ οἷς [s]ἔσχεν ἐξ ἀρχῆς μέτροις, ἀλλ᾽ [t]ἤτοι [u]πλεονάσῃ ταῦτα, οὐκ [x]ἐνεργείᾳ λέγω κατὰ περιοχὴν οὐδὲ τῇ κατ᾽ αὔξησιν [y]γινομένῃ μεταβολῇ τοῦ γένους καὶ τῶν σωμάτων, ἀλλὰ τῇ ὡς προέφαμεν συστατικῇ τῶν στοιχείων κράσει, ὥστε τὸ μὲν θερμὸν ἐπὶ πλέον αὐξηθῆναι, ἢ ἐπὶ πλέον ἐλαττωθῆναι, τὰ δὲ ἄλλα ὁμοίως, τηνικαῦτα οὕτως [z]νοσήσει τὸ ζῶον. Ἐπὰν γὰρ οὕτως διατεθῇ τό τε θερμὸν καὶ τὸ ἀερῶδες, ἃ δὴ σύσκηνά ἐστι τῆς ψυχῆς, τότε ἐν ἀλληγορίαις καὶ ἐκστάσεσι γίγνεται τὸ ζῶον. Πεπύκνωται γὰρ τὰ στοιχεῖα, δι᾽ ὧν διαφθείρεται τὰ σώματα. Αὐτὸ μὲν γὰρ τὸ γεῶδές ἐστιν ἡ τοῦ σώματος [a]πῆξις, τὸ δὲ ὑγρὸν [b]καὶ ἐν τούτῳ ἐστὶν εἰς συμπαγίαν [c]περίχυσις. Τὸ γὰρ ἀερῶδές ἐστι τὸ ἐν ἡμῖν κινητικὸν, [d]καὶ τούτων πάντων διεγερτικὸν τὸ πῦρ. Ὥσπερ οὖν [e]ὁ ἐκ τῆς πρώτης συνόδου καὶ κράσεως τῶν στοιχείων γιγνόμενος ἀτμὸς, καὶ ὡσανεὶ ἔξαψις καὶ ἀναθυμίασις, ὁποῖος [f]ἂν ᾖ, παραμιγεὶς τῇ ψυχῇ p. 150. ἄγει [g]ἑαυτὴν εἰς ἑαυτὸν, [h]ὡς ἂν ἔχῃ φύσεως, εἴτε [i]σπουδαίας, εἴτε μή. Τῇ γὰρ ἐξ ἀρχῆς πρὸς αὐτὸν [k]οἰκειότητι [1102] καὶ συντροφίᾳ ἐπιμένουσα ἡ ψυχὴ, τὴν τάξιν διατηρεῖ. Ὅταν δὲ ἐπιπροσγένηται ἤτοι τῷ ὅλῳ [l]συγκράματι, ἢ καὶ μέρεσιν, [m]ἢ μέρει αὐτοῦ, ἔξωθέν τις [n]πλείων μοῖρα τοῦ προκαταβεβλημένου [o]τε καὶ ὁ ἐντεῦθεν μεταλλοιούμενος ἀτμὸς μεταλλοιοῖ ἤτοι τὴν τῆς ψυχῆς διάθεσιν, [p]ἢ τὴν τοῦ σώμα-

[s] ἔσχεν deest V. A. E.
[t] ἤ τι] ἤ τοι A. E.
[u] πλεονάσῃ] πλεονάσει (η) A.
[x] ἐνεργείᾳ λέγω] Sic Cant. in marg. ἐνεργεῖ ἀλλ᾽ ἐγὼ A. Cant.
[y] γινομένῃ] γενομ. A. qui inf. προέφημεν.
[z] νοσήσει] νόει A.
[a] πῆξιν] πῆξις V. A. E.
[b] καὶ ἐν] ἡ ἐν V. A.
[c] περίχυσις] περίχωσις (υ) A.
[d] καὶ τούτω πάντων διενεργητικὸν] καὶ τούτων πάντων διεγερτικὸν V. A. E.
[e] ἐκ τῆς] ὁ ἐκ τῆς V. A.
[f] ἂν] ἐὰν A.
[g] ἑαυτὴν om. Heeren.
[h] ὡς] οὕτως ed. Heeren.
[i] σπουδαῖος] σπουδαίας (ο) A.
[k] οἰκειότητι] ἰδιότητι V. A. E.
[l] συγκράματι] συγκράμματι A.
[m] ἢ καὶ μέρει] καὶ om. A. Cant.
[n] πλείων] πλείω V. A.
[o] τε καὶ] τε om. Heeren.
[p] καὶ τὴν] ἢ τὴν V. A. E.

τος. Τὸ γὰρ πῦρ καὶ τὸ πνεῦμα, ἀνωφερῆ ὄντα, ἐπὶ τὴν ψυχὴν, ὁμοιόχωρον αὐτοῖς ὑπάρχουσαν, ἀνατρέχει· τὸ δὲ ὑγρὸν καὶ τὸ γεῶδες, κατωφερῆ ὄντα, τῷ σώματι, [q] ὁμωέδρῳ ὄντι, ἐφιζάνει.

Κεφ. μβ'.

ΠΕΡΙ ΑΙΣΘΗΣΕΩΣ ΚΑΙ ΑΙΣΘΗΤΩΝ.

I

ΠΛΑΤΩΝ τὴν αἴσθησιν ἀποφαίνεται ψυχῆς καὶ σώματος κοινωνίαν πρὸς τὰ ἐκτός. Ἡ μὲν γὰρ δύναμις, ψυχῆς, τὸ δὲ ὄργανον, σώματος. Ἄμφω δὲ διὰ φαντασίας ἀντιληπτικὰ τῶν ἔξωθεν. Λέγει δὲ ἐν τῷ Φιλήβῳ ὧδε·[a] "τὸ δὲ ἐν ἑνὶ πάθει τὴν ψυχὴν καὶ τὸ σῶμα κοινῇ "γιγνόμενον κοινῇ καὶ κινεῖσθαι, ταύτην δὲ τὴν κίνησιν "ὀνομάζων αἴσθησιν, οὐκ ἀπὸ τρόπου φθέγγοιο ἄν; Ἀλη"θέστατα λέγεις[b]."

[1104] [c] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ τὴν αἴσθησιν μὴ πλανᾶσθαι περὶ τὸ ἴδιον, περὶ δὲ τὸ συμβεβηκός.

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ καὶ Πλάτων καθαρὸν ἕκαστον εἶναι τῶν 31
[d] αἰσθητῶν ἐξ ἑκάστου στοιχείου προσερχόμενον. Πρὸς μὲν οὖν τὴν ὅρασιν τὸ αἰθερῶδες πεφυκέναι, πρὸς δὲ τὴν ἀκοὴν τὸ

q ὡμωέδρῳ ὄντι] ἐμῷ ἑδρόεντι V. ἐμῷεδρόοντι A.

I.

Platonis decretum exstat quoque ap. Plut. de Pl. IV. 8. et Galen. c. XXIV. HEEREN. qui capitis inscriptionem supplevit ex Photio.

a Verba Plat. ad quæ provocat exstant in Philebo Op. II. p. 34. τῷ δὲ ἐν ἑνὶ rescripsi ex edit. pro τὸ δ' ἑνὶ ap. Stob. HEEREN. τῶδε δ' ἐνὶ A. τὸ δ' mss. Plat.

b Inseruntur hic ap. Cant. verba Ἀριστοτέλης τὴν αἴσθησιν rel. usque ad μέγεθος καὶ ἀριθμὸς, quæ infra [p. 151, 30. ed. Cant.] iterum occurrunt. Delent vero ea hic codd. V. A. E. quorum auctoritatem adeo secuti sumus. HEEREN.

c ὁ αὐτὸς] Ἀριστοτέλης sic V. A. E. ib. Disputat de hisce Aristot. de Anim. III. 2. Quæ autem statim Pythagoræ simul et Platonis sententia affertur, hausta est ex Timæo Op. III. p. 66. HEEREN.

d αἰσθητικῶν] αἰσθητῶν V. A.

πνευματικὸν, πρὸς δὲ τὴν ὄσφρησιν τὸ [e] πυρῶδες, πρὸς δὲ τὴν γεῦσιν τὸ ὑγρὸν, πρὸς δὲ τὴν ἀφὴν τὸ γεῶδες.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 60.]

Ὡς ἄτοπον, ἔφη, ὦ ἄνδρες, ἔοικεν εἶναι τοῦτο ὃ καλοῦσιν οἱ ἄνθρωποι ἡδύ· ὡς θαυμασίως πέφυκε πρὸς τὸ δοκοῦν ἐναντίον εἶναι τὸ λυπηρόν· τῷ ἅμα μὲν αὐτῷ μὴ θέλειν παραγίνεσθαι τῷ ἀνθρώπῳ, ἐὰν δέ τις διώκῃ τὸ ἕτερον καὶ λαμβάνῃ, σχεδόν τι ἀναγκάζεσθαι ἀεὶ λαμβάνειν καὶ τὸ ἕτερον, ὥσπερ ἐκ μικρᾶς κορυφῆς ἡμμένω [d] δύ' ὄντε· καί μοι δοκεῖ, ἔφη, εἰ ἐνενόησεν αὐτὰ Αἴσωπος μῦθον ἂν συνθεῖναι, ὡς ὁ θεὸς βουλόμενος αὐτὰ διαλλάξαι πολεμοῦντα, ἐπειδὴ οὐκ ἠδύνατο, συνῆψεν εἰς ταὐτὸν αὐτῶν τὰς κορυφὰς, καὶ διὰ ταῦτα ᾧ ἂν τὸ ἕτερον παραγένηται, ἐπακολουθῇ ὕστερον καὶ τὸ ἕτερον· ὥσπερ οὖν καὶ αὐτῷ μοι ἔοικεν, ἐπειδὴ ὑπὸ τοῦ δέσμου ἦν ἐν τῷ σκέλει τὸ ἀλγεῖν, ἥκειν δὲ φαίνεται ἐπακολουθοῦν τὸ ἡδύ.

3 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Θεαιτήτου [p. 153.]

[a] Ἀπόλαβε τοίνυν, ὦ ἄριστε, οὑτωσὶ [b] καὶ τὰ ὄμματα πρῶτον· ὃ δὴ καλεῖς χρῶμα λευκὸν, μὴ εἶναι αὐτὸ ἕτερόν τι ἔξω τῶν σῶν ὀμμάτων, μηδ' ἐν τοῖς ὄμμασι· μηδὲ [c] τὴν αὐτῷ χώραν ἀποτάξῃς. Ἤδη γὰρ ἂν εἴη τε ἄν που ἐν τάξει καὶ [d] μένον, καὶ οὐκ ἂν ἐν τῇ γενέσει γίγνοιτο. Ἀλλὰ πῶς; [e] Ἑπόμεθα τῷ ἄρτι λόγῳ, μηδὲν [f] αὐτὸ καθ' [g] αὑτὸ ἓν ὂν τιθέντες· καὶ ἡμῖν οὕτω μέλαν τε καὶ λευκὸν καὶ ὁτιοῦν ἄλλο χρῶμα ἐκ τῆς προσβολῆς τῶν ὀμμάτων πρὸς τὴν προσήκουσαν φορὰν φανεῖται γεγενημένον, καὶ ὃ δὴ ἕκαστον εἶναί φαμεν χρῶμα, οὔτε τὸ προσβάλλον οὔτε τὸ

[e] πυρῶδες] πυρρῶδες A.

[d] δυοῖντε A. Cant. et infra συνθῆναι. Seqq. damus cum A. ubi tamen τῷ ἀλγεῖν.

3.

[a] Ὑπόλαβε Plat.

[b] κατὰ Plat.

[c] τιν' Plat.

[d] μένοι Plat.

[e] Ἑπώμεθα Plat.

[f] αὐτῶ A.

[g] αὑτῶ A.

προσβαλλόμενον ἔσται, ἀλλὰ μεταξύ τι ἑκάστῳ ἴδιον γεγονός· ἢ σὺ [h]διϊσχυρίσαι ἂν ὡς οἷον σοὶ φαίνεται ἕκαστον χρῶμα, τοιοῦτον καὶ κυνὶ καὶ [i]ὅτῳ ἂν ζώῳ; Μὰ Δί' οὐκ ἔγωγε. [k]Τί; ἄλλῳ ἀνθρώπῳ ἆρ' ὅμοιον καὶ σοὶ φαίνεται ὁτιοῦν, ἔχεις [l]τούτοις ἰσχυρῶς, ἢ πολὺ μᾶλλον, ὅτι οὐδὲ [m]σοὶ ταὐτὸν, διὰ τὸ μηδέποτε ὁμοίως αὐτὸν [n]σεαυτὸν ἔχειν; Τοῦτο μᾶλλον [o]δοκεῖ μοι ἢ ἐκεῖνο. Οὐκοῦν εἰ μὲν [p]ᾧ παρεμετρούμεθα, ἢ [q]ᾧ ἐφαπτόμεθα, μέγα ἢ λευκὸν ἢ θερμὸν ἦν, οὐκ ἄν ποτε [r]ἄλλῳ προσπεσὸν ἄλλο ἂν ἐγεγόνει, αὐτό γε μηδὲν μεταβάλλον· εἰ δὲ αὖ τὸ παραμετρούμενον ἢ [s]τὸ ἐφαπτόμενον ἕκαστον ἦν τούτων, οὐκ ἂν αὖ ἄλλου προσελθόντος, ἤ τι παθόντος, αὐτὸ μηδὲν παθὸν [t]ἂν ἄλλο ἐγένετο.

4 Ἐν ταυτῷ [p. 157.]

Μὴ τοίνυν ἀπολίπωμεν ὅσον ἐλλεῖπον αὐτοῦ. Λείπεται δὲ, ἐνυπνίων τε πέρι καὶ νόσων [a]τε τῶν ἄλλων καὶ μανίας, ὅσα τε παρακούειν, ἢ παροραν, ἢ ἄλλο τι παραισθάνεσθαι λέγεται. Οἶσθα γάρ που ὅτι ἐν πᾶσι τούτοις ὁμολογουμένως ἐλέγχεσθαι δοκεῖ ὃν ἄρτι διῇμεν λόγον· ὥστε παντὸς μᾶλλον [b]ἂν ἡμῖν ψευδεῖς αἰσθήσεις ἐν αὐτοῖς γιγνομένας· p. 151. καὶ πολλοῦ [c]δὴ τὰ φαινόμενα ἑκάστῳ, ταῦτα καὶ εἶναι, ἀλλὰ πᾶν τοὐναντίον οὐδὲν [d]ὧν φαίνεται εἶναι. Ἀληθὲς ταῦτα λέγεις, ὦ Σώκρατες. Τίς δὴ οὖν, ὦ παῖ, λείπεται λόγος τῷ τὴν αἴσθησιν ἐπιστήμην τιθεμένῳ, καὶ τὰ φαινόμενα ἑκάστῳ ταῦτα [e]εἶναι, ἃ φαίνεται;

[h] διϊσχυρίσαιο Plat.
[i] ὁτῳοῦν Plat.
[k] Τί δέ Plat.
[l] τοῦτο Plat.
[m] σοὶ αὐτῷ Plat.
[n] σεαυτῷ Plat.
[o] μοι δοκεῖ Plat.
[p] ᾧ παραμετρούμεθα Plat.
[q] οὗ Plat.
[r] ἄλλῳ τῳ Plat. ἄ. προέπεσον A.
[s] τὸ om. Plat.
[t] ἄλλο ἂν Plat.

4.

[a] τῶν τε Plat. Mox π. ὅτι ἄλλο π. A. Cant.
[b] ἂν om. Plat.
[c] δεῖ Plat.
[d] ὃν A.
[e] καὶ εἶναι τούτῳ, ᾧ φαίνεται Plat.

5 Ἐν ταυτῷ [p. 179.]

Μετρίως ἄρα ἡμῖν πρὸς τὸν διδάσκαλόν σου εἰρήσεται, ὅτι ἀνάγκη αὐτῷ ὁμολογεῖν, σοφώτερόν τε ἄλλον ἄλλου εἶναι, καὶ τὸν [a] μὲν τοιοῦτον, μέτρον εἶναι, ἐμοὶ δὲ τῷ ἀνεπιστήμονι μηδὲ ὁπωστιοῦν ἀνάγκη εἶναι μέτρῳ γίγνεσθαι. Πολλαχῇ οὖν, ὦ Θεόδωρε, καὶ [b] ἄλλῃ ἂν τό γε τοιοῦτον [c] ἁλοίη, μὴ πᾶσαν [d] παντὸς ἀληθῆ δόξαν εἶναι· περὶ δὲ τὸ παρὸν ἑκάστῳ πάθος, ἐξ ὧν [e] αἱ αἰσθήσεις καὶ αἱ κατὰ [f] ταύτας δόξαι γίγνονται, χαλεπώτερον ἑλεῖν ὡς οὐκ [g] ἀληθεῖς.

6 Ἐν ταυτῷ [p. 183.]

[1106] Οὐκοῦν, ὦ Θεόδωρε, τοῦ τε σου ἑταίρου ἀπηλλάγμεθα, καὶ [h] οὔπω συγχωροῦμεν αὐτῷ πάντ' ἄνδρα πάντων χρημάτων μέτρον εἶναι.

7 Πλάτωνος ἐν τῷ Τιμαίῳ [p. 37.]

Λόγος δὲ ὁ κατ' αὐτὸν γιγνόμενος, περί τε θάτερον ὤν, καὶ περὶ τὸ ταὐτὸν ἐν τῷ κινουμένῳ ὑπ' αὐτοῦ φερόμενος ἄνευ φθόγγου καὶ ἠχῆς, ὅταν μὲν περὶ τὸ αἰσθητὸν γίγνηται, καὶ ὁ τοῦ θατέρου κύκλος ὀρθὸς ἰὼν εἰς πᾶσαν αὐτοῦ τὴν ψυχὴν διαγγείλῃ, δόξαι καὶ πίστεις γίγνονται βέβαιοι καὶ ἀληθεῖς· ὅταν δὲ αὖ περὶ τὸ λογικὸν ᾖ, καὶ ὁ τοῦ ταὐτοῦ κύκλος εὔτροχος ὢν αὐτὰ μηνύσῃ, νοῦς ἐπιστήμη τε ἐξ ἀνάγκης ἀποτελεῖται, τοῦτο δὲ ἐν ᾧ τῶν ὄντων [a] ἐγγίγνεσθον, ἄν ποτέ τις αὐτὸ ἄλλο πλὴν ψυχὴν εἴπῃ πᾶν μᾶλλον ἢ τἀληθές.

5.

[a] μέντοι οὗ τὸ A.
[b] ἄλλοι A. Cant.
[c] ἀλλ' οἴει A. Cant.
[d] πάντως A. Cant.
[e] αἱ om. A. Cant.
[f] ταῦτα A. Cant.
[g] ἀληθὲς A. Cant.
[h] οὔπω] Sic A. ex em. οὕτω Cant.

7.

[a] ἐγγίγνεσθὧν A.

Κεφ. μγ΄.

[a]ΠΟΣΑΙ ΕΙΣΙΝ ἩΑΙ ΑΙΣΘΗΣΕΙΣ, ΚΑΙ ΠΟΙΑΣ ΟΥΣΙΑΣ ΚΑΙ ΕΝΕΡΓΕΙΑΣ ἙΚΑΣΤΗ.

1

[b]ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ ἕκτην μὲν οὐ λέγει, κοινὴν δὲ αἴσθησιν τῶν συνθέτων εἰδῶν κριτικήν, εἰς ἣν πᾶσαι συμβάλλουσιν αἱ ἁπλαῖ τὰς ἰδίας ἑκάστη φαντασίας, ἐν ᾗ τὸ μεταβατικὸν ἀφ᾽ ἑτέρου πρὸς ἕτερον, οἱονεὶ σχήματος καὶ κινήσεως [[c]σώματος, μεθορίῳ τοῦ λογικοῦ καὶ τοῦ ἀλόγου, μνήμης καὶ νοῦ μετέχουσα, διατείνουσα καὶ ἐπὶ τὰ ἄλογα τῶν ζώων, καθ᾽ ὁπόσην διανοίας ἀναλογίαν ἔχει. Κοινὰ δ᾽ ἐστὶ ὄψεως μὲν καὶ ἀφῆς σχῆμα, ὄψεως καὶ ἀκοῆς
[1108] διάστημα, πασῶν δὲ κίνησις καὶ μέγεθος καὶ ἀριθμός.]

Τὸ δὴ αἰσθητικὸν, ὃ δὴ [d]κοινῶς ἁπάντων τῶν ζώων ἴδιον, (αἰσθήσει γὰρ διαφέρειν τὸ ζῶον τοῦ φυτοῦ,) πενταπλοῦν ἐοικέναι. Τοῦτο γὰρ, τὸ μὲν ὅρασιν, τὸ δὲ ἀκοὴν, τὸ δ᾽ ὄσφρησιν, τὸ δὲ γεῦσιν, τὸ δὲ ἀφήν. Ὑπάρχειν δέ τινα καὶ σύνθετον αἴσθησιν, ἐν ᾗ τό τε [e]φανταστικὸν πᾶν γίγνεσθαι, καὶ τὸ μνημονευτικὸν, καὶ τὸ δοξαστικὸν, ὅπερ οὖν οὐδ᾽ ἄμοιρα τοῦ νοῦ τυγχάνει. Αἰσθάνεσθαι δ᾽ ἡμᾶς παθούσης τι τῆς αἰσθήσεως.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος [p. 96.]

Ὁ δὲ ἐγκέφαλός ἐστιν, ὁ τὰς αἰσθήσεις παρέχων τοῦ

1.

[a] Capitis inscriptio, servata ap. Phot., periit in codd. HEEREN.

[b] Pauca ex Aristotelis placito servavit quoque Plut. de Pl. IV. 10. Cf. Gal. cap. XXIV. HEEREN. Dedi ἕκτην ex Plut. pro ἕκτον.

ib. Repetuntur jam hic verba, quæ supra p. 150, 20. ed. Cant. male inserta erant, Aristotelis placitum continentia. Hausta autem sunt hæc Stagiritæ placita ex iis quæ de Anima III. 1. etc. disputat. HEEREN.

[c] Verba quæ uncis inclusi, revocavi ex prioribus p. 150, 23. male enim hic ap. Cant. omissa sunt. HEEREN. om. item Plut. qui post κινήσεως add. δείκνυται.

[d] κοινῶν A.

[e] τε om. A. qui mox ἄμοιρον.

ἀκούειν καὶ ὁρᾶν καὶ ὀσφραίνεσθαι. Ἐκ τούτων δὲ γίγνοιτο μνήμη καὶ δόξα. Ἐκ δὲ μνήμης καὶ δόξης, λαβούσης τὸ ἠρεμεῖν, [a] κατὰ ταῦτα γίγνεσθαι ἐπιστήμην.

Κεφ. μδ'.

[a] ΠΕΡΙ ὉΡΑΣΕΩΣ, ΚΑΙ ΚΑΤΟΠΤΡΙΚΩΝ ΕΜΦΑΣΕΩΝ.

1

[b] ΠΛΑΤΩΝ συναύγειαν [c] τοῦ μὲν ἐκ τῶν ὀφθαλμῶν φωτὸς ἐπὶ ποσὸν ἀπορρέοντος εἰς τὸν ὁμογενῆ ἀέρα, τοῦ δὲ ἀπὸ τῶν σωμάτων ἀντιφερομένου, τοῦ δὲ περὶ τὸν μεταξὺ p. 152. ἀέρα, εὐδιάχυτον ὄντα καὶ εὔτρεπτον, συνεντεινομένου τῷ πυρώδει τῆς ὄψεως. [Ταύτῃ λέγεται Πλατωνικὴ συναύγεια.]

[1110] [d] ἈΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ, ὁρᾶν ἡμᾶς κατὰ κίνησιν τοῦ κατ' ἐνέργειαν διαφανοῦς. Διαφανὲς δὲ οὐ μόνον εἶναι τὸν ἀέρα, ἀλλὰ καὶ τὸ ὕδωρ, καί τινα τῶν συνισταμένων [e] ποθέν, οἷον ὕαλον, καὶ κρύσταλλον, καί τινας τῶν λαμπρῶν λίθων. Ἀκούειν δὲ κατ' ἐνέργειαν τοῦ μεταξὺ διεχοῦς. Διεχὲς δ' εἶναι καὶ τὸν ἀέρα, καὶ τὸ πῦρ, καὶ τὸ ὕδωρ, καί τινα τῶν συγκριμάτων.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 45.]

Τῶν δὲ ὀργάνων πρῶτον μὲν [a] φωσφόρα συνετεκτήναντο

2.

[a] κατὰ recepi ex Platonis ed. pro καί. HEEREN.

1.

[a] Hic quoque capitis inscriptio revocanda erat ex Phot. deest enim in codd. HEEREN.

[b] Platonis placitum ex parte quoque invenies ap. Plut. IV. 13. petitum est illud ex Timæo Op. III. p. 67. Pro Πλάτων, quod exhibent codd. V. A. E. ap. Cant. legitur ὁ αὐτός. HEEREN. συναυγίαν A. qui εὔτρεπτον pro εὔτρεπον et inf. πυρῶδες.

[c] τοῦ supplent codd. V. A. E. qui et statim ποσὸν habent pro πόσος. Verba ταύτῃ λέγεται—συναύγεια, uncis inclusi, quod glossema redolent. HEEREN. αὕτη Plut.

[d] Excerpta sunt hæc Aristotelis decreta ex libris de Anima II. 7. HEEREN.

[e] Male ap. Cant. hic inseritur πόθεν, quod delent codd. V. A. E. HEEREN. Habet A. perspicue ποθέν.

2.

[a] φωσφόρα Plat. φωσφόρου A. Cant.

ὄμματα, τοιᾷδε [b]ἐνδήσαντες αἰτίᾳ· τοῦ πυρὸς ὅσον τὸ μὲν καίειν οὐκ ἔσχε, τὸ δὲ παρέχειν φῶς [d]ἡμερινὸν, οἰκεῖον ἑκάστης ἡμέρας, σῶμα ἐμηχανήσαντο γίγνεσθαι. Τὸ γὰρ ἐντὸς ἡμῶν ἀδελφὸν ὂν τούτου πῦρ εἰλικρινὲς ἐποίησαν διὰ τῶν ὀμμάτων ῥεῖν λεῖον καὶ πυκνὸν, ὅλον μὲν, μάλιστα δὲ τὸ μέσον συμπιλήσαντες τῶν ὀμμάτων, ὥστε τὸ μὲν ἄλλο ὅσον παχύτερον στέγειν πᾶν, τὸ [e]τοιοῦτον δὲ μόνον αὐτὸ καθαρὸν διηθεῖν. Ὅταν οὖν [f]μεθημερινὸν ᾖ φῶς περὶ τὸ τῆς ὄψεως ῥεῦμα, τότε [g]ἐκπίπτον ὅμοιον πρὸς ὅμοιον, ξυμπαγὲς γενόμενον, ἓν σῶμα οἰκειωθὲν συνέστη κατὰ [h]τὴν εὐθυωρίαν, ὅπῃ περ ἂν ἀντερείδῃ τὸ προσπίπτον ἔνδοθεν, πρὸς ὃ [i]τῶν ἔξω συνέπεσεν. Ὁμοιοπαθὲς δὴ δι' ὁμοιότητα πᾶν γενόμενον, [k]ὅτου τε ἂν αὐτό ποτε ἐφάπτηται, καὶ ὃ ἂν ἄλλο ἐκείνου, [l]τούτων τὰς κινήσεις διαδιδὸν, εἰς ἅπαν τὸ σῶμα μέχρι τῆς ψυχῆς αἴσθησιν παρέσχετο ταύτην, [m]ᾗ δὴ ὁρᾶν φαμέν. Ἀπελθόντος δὲ εἰς νύκτα, τοῦ ξυγγενοῦς πυρὸς ἀποτέτμηται. Πρὸς γὰρ ἀνόμοιον ἐξιὸν ἀλλοιοῦταί τε αὐτὸ καὶ κατασβέννυται, ξυμφυὲς οὐκέτι τῷ πληρίον ἀέρι γιγνόμενον, ἅτε πῦρ οὐκ ἔχοντι. Παύεται [p]τε οὖν ὁρῶν, ἔτι [p]τε [q]ἐπαγωγὸν ὕπνου γίγνεται. Σωτηρίαν γὰρ ἣν οἱ θεοὶ [r]τῆς ὄψεως ἕνεκα ἐμηχανήσαντο, τὴν τῶν βλεφάρων φύσιν, ὅταν ταῦτα [s]συμμύσῃ, καθείργνυσι τὴν τοῦ πυρὸς [t]ἐντὸς δύναμιν. [u]Εἰ δὲ διαχεῖται, καὶ ὁμαλύνει τὰς ἐντὸς κινήσεις· ὁμαλυνθεισῶν δὲ, ἡσυχία γίγνεται. Γενομένης δὲ πολλῆς

[b] ἐνδύσαντες A.
[d] ἥμερον Plat. Mox ξυμπλήσαντες Cant.
[e] τοιοῦτο Plat.
[f] μεσημερινὸν Plat.
[g] ἐκπίπτο A.
[h] τὴν τῶν ὀμμάτων Plat.
[i] τὸ Plat.
[k] ὅπου A.
[l] τούτῳ Plat.
[m] ἤδη A.
[p] δὲ Plat.
[q] ἐπαγωγοὶ A.
[r] ἕνεκα τῆς ὄψεως Plat.
[s] συμμηνύσῃ A.
[t] ἔνδον Plat.
[u] ἡ δὲ διαχεῖ τε Plat.

μὲν ἡσυχίας, [x]βραχυόνειρος ὕπνος [y]ξυμπίπτει· καταληφθεισῶν δὲ τινῶν κινήσεων μειζόνων, οἷαι καὶ ἐν [z]οἵοις ἂν τόποις [a]λίπωνται, τοιαῦτα καὶ τοσαῦτα [b]παρέσχον τὰ ἀφομοιωθέντα ἐντὸς [c]ἔξωθέν τε ἐγερθεῖσιν ἀπομνημονευόμενα φαντάσματα. Τὸ δὲ περὶ τὴν τῶν κατόπτρων εἰδωλοποιΐαν, καὶ πάντα ὅσα ἐμφανῆ καὶ λεῖα, κατιδεῖν οὐδὲν ἔτι χαλεπόν. Ἐκ γὰρ τῆς [d]ἐντὸς ἐκτός τε τοῦ πυρὸς [e]ἑκάτερον κοινωνίας ἀλλήλοις, ἑνός τε αὖ περὶ τὴν λειότητα [f]ἑκάστου γενομένου, καὶ πολλαχῇ [g]μεταρρυθμισθέντος, πάντα τὰ τοιαῦτα ἐξ ἀνάγκης ἐμφαίνεται, τοῦ περὶ τὸ πρόσωπον πυρὸς τῷ περὶ τὴν ὄψιν πυρὶ περὶ τὸ λεῖον καὶ λαμπρὸν ξυμπαγεῖ [h]γιγνόμενον.

3 Ἐν ταυτῷ [p. 67.] Εἰς τὸ περὶ χρωμάτων.

[a]Ἔστι γένος ἡμῖν αἰσθητικὸν, ὃ διελέσθαι δεῖ, συχνὰ ἐν αὐτῷ ποικίλματα κεκτημένον· ἃ ξύμπαντα μὲν χρόας ἐκαλέσαμεν, φλόγα τῶν σωμάτων ἑκάστων ἀπορρέουσαν, ὄψει σύμμετρα μόρια ἔχουσαν πρὸς αἴσθησιν. Ὄψεως δὲ ἐν τοῖς πρόσθεν [b]αὐτὸ περὶ τῶν αἰτίων τῆς γενέσεως ἐρρήθη· [c]τῇδ' οὖν τῶν χρωμάτων πέρι μάλιστα εἰκὸς [d]πρέποι τ' ἂν [e]τὸν [f]ἐπιεικῆ λόγῳ διεξελθεῖν, τὰ φερόμενα ἀπὸ τῶν ἄλλων [g]μόρια [h]ἐμπίπτοντά τε εἰς τὴν ὄψιν, τὰ μὲν, ἐλάττω, τὰ δὲ, μείζω, τὰ δ' ἴσα [i]τοῖς αὐτῆς [k]ὄψεως μέρεσιν εἶναι. Τὰ μὲν οὖν ἴσα [l]ἀναίσθητά τε διαφανῆ λέγομεν, τὰ δὲ

x βραχὺ, ὄνειρος A.
y ἐμπίπτει Plat.
z οἵαις (οις) A.
a λείπωνται Plat.
b παρέσχετο Plat.
c ἔξω Plat.
d ἐκτὸς ἐντός Plat.
e ἑκατέρου Plat.
f ἑκάστοτε Plat.
g μεταρρυμηθέντος Plat.
h γιγνομένῳ Plat.

3.

a ἔτι Plat.
b αὐτῶν Plat.
c τι A.
d πρέπει A.
e τὸν om. Plat.
f ἐπιεικεῖ Plat. Tum λόγον Cant.
g μορίων Plat.
h ἐμπίπτοντα δὲ Plat.
i τῆς A.
k τῆς ὄψεως Plat. Cant.
l ἀναίσθητα· ἃ δὴ καὶ Plat. αἰσθητά Cant.

μείζω [m]καὶ ἐλάττω, τὰ μὲν, συγκρίνοντα, τὰ δὲ, διακρίνοντα αὐτὴν τοῖς περὶ τὴν σάρκα θερμοῖς καὶ ψυχροῖς, καὶ τοῖς περὶ τὴν γλῶτταν στρυφνοῖς· καὶ ὅσα θερμαντικὰ ὄντα, δριμέα ἐκαλέσαμεν, ἀδελφὰ εἶναι [n]ταῦτα εἴη ἂν τά τε λευκὰ καὶ [o]μέλανα, ἐκείνων παθήματα γεγονότα, ἐν ἄλλῳ γένει ταὐτὰ, φανταζόμενα δὲ ἄλλα διὰ ταύτας [p]αἰτίας. Οὕτως οὖν αὐτὰ προσρητέον· τὸ μὲν διακριτικὸν τῆς ὄψεως, λευκόν· τὸ δ' ἐναντίον αὐτοῦ, μέλαν· τὴν δ' ὀξυτέραν φορὰν καὶ γένους [q]πρὸς ἑτέρου προσπίπτουσαν καὶ διακρίνουσαν τὴν ὄψιν μέχρι τῶν [r]ὀφθαλμῶν, αὐτάς τε τῶν [s]ὀμμάτων τὰς διεξόδους βίᾳ [t]διωθοῦσαν, πῦρ μὲν, [u]καὶ ὕδωρ ἄθροον, ὃ δάκρυ καλοῦμεν, ἐκεῖθεν ἐκχέουσαν, αὐτὴν δὲ οὖσαν πῦρ, ἐξ ἐναντίας ἀπαντῶσαν. Καὶ τοῦ μὲν ἐκπηδῶντος πυρὸς, οἷον ἀπ' ἀστραπῆς, τοῦ δ' εἰσιόντος καὶ [x]περὶ τὸ νότερον κατασβεννυμένου, παντοδαπῶν ἐν τῇ [y]κυκλήσει ταύτῃ γιγνομένων χρωμάτων, μαρμαρυγὰς μὲν τὸ πάθος [z]προσείπομεν, τὸ δὲ τοῦτο ἀπεργαζόμενον, λαμπρόν τε καὶ στίλβον ἐπωνομάσαμεν. Τὸ δὲ τούτων αὖ μεταξὺ πυρὸς γένος, πρὸς μὲν τὸ τῶν ὀμμάτων ὑγρὸν ἀφικνούμενον, καὶ κεραννύμενον αὐτῷ, στίλβον δὲ οὒ, [a]τῇ δὲ διὰ τῆς νοτίδος [b]αὐτῇ τοῦ πυρὸς μιγνυμένῃ χρῶμα ἔναιμον παρασχομένῃ, τοὔνομα ἐρυθρὸν λέγομεν. Λαμπρὸν [c]δὲ ἐρυθρῷ λευκῷ τε μιγνύμενον, ξανθὸν γέγονε. Τὸ δ' ὅσον μέτρον [d]ὅσον οὐ, οὐδ' εἴτις εἰδείη, [e]νοῦν ἔχοι τὸ λέγειν· ὧν μήτε τινὰ ἀνάγκην, μήτε τὸν εἰκότα λόγον καὶ μετρίως ἂν τις εἰπεῖν εἴη δυνατός. Ἐρυθρὸν δὲ δὴ μέλανι

m ἢ Plat.
n ταῦτα εἴη ἂν om. Plat.
o τὰ μέλανα Plat.
p τὰς αἰτίας Plat.
q πυρὸς Plat.
r ὀμμάτων Plat.
s ὀφθαλμῶν Plat.
t διωθοῦσαν καὶ τήκουσαν Plat.
u καὶ ὕδωρ—καλοῦμεν om. A.
x περιτονώτερον A.
y κυκήσει Plat.
z προσείπ$\overset{o}{\omega}$μεν A.
a τῆς A.
b αὐγῇ Plat.
c τε Plat.
d ὅσοις, οὐδ' Plat. τὸ δὲ μέτρον ὅσον, οὐδ' Cant.
e νοῦν ἔχοι Cant. Plat. νουνεχῇ A.

λευκῷ τε κραθὲν, [f] ἁλουργὸν, ὄρφνειον δὲ, ὅταν τούτοις μεμιγμένοις καυθεῖσί τε μᾶλλον συγκραθῇ μέλαν· πυῤῥὸν δὲ ξανθοῦ [h] καὶ φαιοῦ κράσει γίγνεται· φαιὸν δὲ, λευκοῦ τε καὶ μέλανος. Τὸ δὲ ὠχρὸν, λευκοῦ ξανθῷ [i] μιγνυμένου, [k] λαμπρῷ τε λευκὸν συνελθὸν, καὶ εἰς μέλαν κατακορὲς ἐμπεσὸν, κυανοῦν χρῶμα ἀποτελεῖται. Κυανοῦ δὲ λευκῷ κεραννυμένου, γλαυκόν· πυῤῥοῦ δὲ μέλανι, [m] πράσινον. Τὰ δὲ ἄλλα ἀπὸ τούτων σχεδὸν δῆλα, αἷς ἂν ἀφομοιούμενα μίξεσι [n] διασώζοι τὸν εἰκότα μῦθον. Εἰ δέ τις τούτων ἔργῳ σκοπούμενος βάσανον [o] λαμβάνοι, τὸ τῆς ἀνθρωπίνης καὶ θείας φύσεως ἠγνοηκὼς ἂν εἴη διάφορον· ὅτι θεὸς μὲν τὰ πολλὰ εἰς ἓν [q] μὲν συγκεραννύναι, καὶ πάλιν ἐξ ἑνὸς εἰς πολλὰ διαλύειν [s] ἱκανὸς, ἐπιστάμενος ἅμα καὶ [t] δυνατός· ἀνθρώπων δὲ οὐδεὶς οὐδέτερα τούτων ἱκανὸς οὔτε ἔστι νῦν, οὔτ' εἰσαῦθίς ποτ' ἔσται.

Κεφ. μέ.

[a] ΠΕΡΙ ΑΚΟΗΣ, ΠΕΡΙ ΟΣΦΡΗΣΕΩΣ, ΠΕΡΙ ΓΕΥΣΕΩΣ, ΠΕΡΙ ʽΑΦΗΣ.

I

[b] Οἱ ἀπὸ Πλάτωνος, πλήττεσθαι τὸν ἐν τῇ κεφαλῇ ἀέρα, 46

f ʽΑλουργοῦν. Ὄρφνινον Plat. ὀρφνέειον (ει superscr.) A. ὄρφνινον Cant.
h τε καὶ Plat.
i μεμιγμένου Plat.
k λαμπρὸν δὲ, λευκῷ Plat. Cant.
m πράσιον Plat.
n διασώζει A.
o λαμβάνει A.
q μὲν om. Plat.
s ἱκανὸς, ὡς Plat. ἱκανὸς Cant. -ῶς A.
t δυνατός Plat. Cant. -ῶς A.

I.

a Inscriptio capitis iterum repetenda erat ex Phot. interiit enim in codd. Nonnulla ex iis quæ eo continentur, exstant quoque ap. Plut. IV. 16—19. et Gal. cap. XXVI. HEEREN.

b Habet hæc quoque Plut. l. c. apud quem, Πλάτων, καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ etc. Respicit ad ea quæ habet philosophus in Tim. Op. II. p. 67. HEEREN.

τοῦτον δ' ἀνακλᾶσθαι εἰς τὰ ἡγεμονικὰ, καὶ γίγνεσθαι τῆς ἀκοῆς αἴσθησιν.

2 Πλάτωνος ἐν Τιμαίῳ [p. 67.]

[a] Τὸ δὲ αἰσθητικὸν ἐν ἡμῖν μέρος [aa] ἐπιζητοῦσι τὸ περὶ τὴν ἀκοὴν, δι' ἃς αἰτίας τὰ περὶ αὐτὰ συμβαίνει παθήματα λεκτέον. Ὅλως μὲν οὖν φωνὴν θῶμεν, τὴν δι' [b] ὤτων ὑπ' ἀέρος ἐγκεφάλου τε καὶ αἵματος μέχρι ψυχῆς πληγὴν [c] διαδιδομένην· τελευτῶσαν δὲ περὶ τὴν τοῦ ἥπατος ἕδραν, ἀκοήν. Ὅσα δ' αὐτῆς [d] ταχεῖα, ὀξεῖαν· ὅση δὲ [e] βραδυτέραν, βαρυτέραν. Τὴν [f] δὲ, ὁμαλὴν λείαν· τὴν δ' ἐναντίαν, τρα- p. 153.
χεῖαν. Μεγάλην δὲ, τὴν πολλήν· ὅση δ' ἐναντία, σμικράν. [g] Τὰ δὲ περὶ ξυμφωνίας αὐτῶν ἐν τοῖς ὕστερον λεχθησομένοις ἀνάγκη ῥηθῆναι.

3 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 66.]

[1112] Περὶ δὲ τὴν τῶν μυκτήρων δύναμιν, [a] οὐκ ἔνι. Τὸ γὰρ τῶν ὀσμῶν πᾶν, ἡμιγενές. [b] Ἤδη δὲ οὐδενὶ συμβέβηκε συμμετρία πρὸς τὸ τινὰ [c] ἔχειν ὀσμήν. [d] Ἀλλ' ἡμῶν αἱ περὶ τὰ [e] τοιαῦτα φλέβες πρὸς μὲν τὰ γῆς ὕδατός τε γένη στενώτεραι ξυνέστησαν, πρὸς δὲ τὰ πυρὸς ἀέρος τε, εὐρύτεραι. Διὸ τούτων οὐδεὶς οὐδενὸς ὀσμῆς πώποτε ᾔσθετο τινὸς, ἀλλ' [f] ἢ βρεχομένων, ἢ σηπομένων, ἢ τηκομένων, ἢ θυμιωμένων γίγνονται τινῶν. Μεταβάλλοντος γὰρ ὕδατος εἰς ἀέρα, ἀέρος τε εἰς ὕδωρ, ἐν τῷ μεταξὺ τούτων γεγόνασιν. Εἰσί τε ὀσμαὶ ξύμπασαι, καπνὸς, ἢ [g] ὁμίχλη. Τὸ δὲ ἐξ ὕδατος

2.

a Τρίτον δὲ Plat.
aa ἐπισκοποῦσι Plat.
b ὄντων A.
c διαδιδομένην· τὴν δὲ ὑπ' αὐτῆς κίνησιν, ἀπὸ τῆς κεφαλῆς μὲν ἀρχομένην, τελευτῶσαν Plat.
d παχεῖα A. qui supra ὅση.
e δὲ βραδυτέρα Plat. δὲ om. A.
f δὲ μίαν, ὁμαλήν τε καὶ λείαν Plat.
g τὰς δὲ πέριξ Cant.

3.

a εἴδη μὲν οὐκ Plat.
b εἴδει Plat.
c σχεῖν Plat.
d ἀλλήλων A.
e ταῦτα A.
f ἀεὶ Plat.
g ὁμίχλη. τούτων δὲ, τὸ μὲν ἐξ ἀέρος εἰς ὕδωρ ἰὸν, ὁμίχλη· Plat.

εἰς ἀέρα, καπνός. Ὅθεν [h]λεπτόμεραι μὲν ὕδατος, παχύτεραι δὲ ὀσμαὶ [i]ξύμπασι γεγόνασιν ἀέρος. [k]Δηλοῦται δὲ, ὁπόταν τινὸς ἀντιφραχθέντος περὶ τὴν ἀναπνοὴν, [l]ἄγει τὶς βίᾳ τὸ πνεῦμα εἰς αὐτόν. Τότε γὰρ ὀσμὴ μὲν οὐδεμία ξυνδιηθεῖται, τὸ δὲ πνεῦμα τῶν ὀσμῶν [n]ἐρημωθὲν, αὐτὸ μόνον ἕπεται. Δι' οὖν ταῦτα, [o]ἀνώνυμα τούτων ποικίλματα γέγονεν, οὐκ ἐκ πολλῶν οὐδ' ἁπλῶν εἰδῶν ὄντα, ἀλλὰ διχῇ, [p]τό τε ἡδὺ καὶ τὸ λυπηρὸν αὐτόθι [q]μόνον διαφανῆ λέγεσθον, τὸ μὲν, τραχῦνόν τε καὶ βιαζόμενον τὸ κύτος ἅπαν, ὅσον ἡμῶν μεταξὺ κορυφῆς τοῦ τε ὀμφαλοῦ κεῖται, [r]τὸ δὲ, ταὐτὸν τοῦτο καταπραΰνον, καὶ πάλιν ᾗ πέφυκεν ἀγαπητῶς ἀποδιδόν.

4

[a]Ἀριστοτέλης γεύσεσθαι διὰ τοῦ μεταξὺ τῶν γευστῶν ὑγρῶν.

5 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 65.]

Πρῶτον [a]οὖν ὅσα τῶν χυμῶν πέρι λέγοντες ἐν τοῖς πρόσθεν [b]ἀπελίπομεν, ἴδι' ὄντα παθήματα περὶ τὴν γλῶτταν, ἐμφανιστέον [c]εἰ δυνατόν. Φαίνεται δὲ καὶ ταῦτα, ὥσπερ οὖν καὶ [d]τὰ πολλὰ, διὰ συγκρίσεών τε τινῶν καὶ διακρίσεων γίγνεσθαι, πρὸς δὲ αὐταῖς κεχρῆσθαι μᾶλλόν τι τῶν ἄλλων τραχύτησί τε καὶ λειότησιν. Ὅσα μὲν γὰρ εἰσιόντα περὶ τὰ φλεβία, οἷόν περ δοκίμια τῆς γλώττης,

h λεπτότεραι Plat.
i ξύμπασαι Plat.
k δηλοῦνται Plat.
l ἄγῃ Plat.
n ἐρημοθὲν A.
o ἀνώμμα A.
p τὸ Plat.
q μόνω Plat.
r τὸ δὲ, ταὐτὸ Plat. τοῦ δὲ τ. A.

4.

Copiose hæc exponit philosophus de An. II. 10. HEEREN.

a Ἀριστοτέλης γεύσεσθαι] γενέσθαι A. ubi Ἀριστοτέλους rubris litteris in marg.

5.

a μὲν οὖν Plat.
b ἀπολίπομεν A.
c ᾗ Plat.
d τὰ om. Plat.

τεταμένα ἐπὶ τὴν καρδίαν, εἰς τὰ [c]νοτερὰ τῆς σαρκὸς καὶ ἁπαλὰ ἐμπίπτοντα, γήϊνα μέρη κατατηκόμενα, ξυνάγει τὰ φλεβία καὶ ἀποξηραίνει· τραχύτερα μὲν ὄντα, στρυφνά· ἧττον δὲ τραχύνοντα, αὐστηρὰ φαίνεται. Τὰ δὲ τούτων [g]τε ῥυπτικὰ, καὶ πᾶν τὸ περὶ τὴν γλῶτταν ἀποπλύνοντα, πέρα μὲν τοῦ μετρίου τοῦτο δρῶντα καὶ προσεπιλαμβανόμενα, ὥστε ἀποτήκειν [h]αὐτῆς τῆς φύσεως, οἷον ἡ τῶν νίτρων δύναμις, πικρὰ πάνθ' οὕτως ὠνόμασται· τὰ δὲ ὑποδεέστερα τῆς νιτρώδους ἕξεως, ἐπὶ τὸ μέτριόν τε τῇ ῥύψει χρώμενα, ἁλυκὰ, ἄνευ πικρότητος τραχείας, καὶ φίλα μᾶλλον ἡμῖν [i]φαντάζεσθαι. Τὰ δὲ [j]τοῦ σώματος θερμότητι κοινωνήσαντα, καὶ [k]λίαν μὲν ὑπ' αὐτοῦ συνεκπυρούμενα, καὶ πάλιν αὐτὰ [l]ἀντικάαντα τὸ διαθερμῆναν, [m]φερόμενόν τε ὑπὸ κουφότητος ἄνω πρὸς [n]τὰς κεφαλῆς αἰσθήσεις, [o]τέμνοντα πάνθ' ὅσοις ἂν προσπίπτῃ διὰ ταύτας τὰς δυνάμεις, [p]δριμέα πάντα τὰ τοιαῦτα ἐλέχθη. Τῶν δὲ αὐτῶν [q]προλελεπτισμένων μὲν ὑπὸ σηπεδόνος, εἰς δὲ τὰς στενὰς φλέβας ἐνδυομένων, καὶ τοῖς ἐνοῦσιν αὐτόθι μέρεσι γεώδεσι, καὶ ὅσα ἀέρος ξυμμετρίαν ἔχοντα, ὥστε κινήσαντα περὶ ἄλληλα ποιεῖν κυκᾶσθαι, κυκώμενα δὲ περιπίπτειν τε, καὶ εἰς ἕτερα ἐνδυόμενα, ἕτερα κοῖλα ἀπεργάζεσθαι, [r]περιγινόμενα τοῖς εἰσιοῦσιν· ἃ δὴ, νοτίδος περὶ ἀέρα κοίλης περιταθείσης, τοτὲ μὲν γεώδους, τοτὲ [s]δὲ καθαρᾶς, νοτερὰ ἀγγεῖα ἀέρος ὕδατα κοῖλα περιφερῆ τε γενέσθαι· καὶ τὰ μὲν τῆς καθαρᾶς, διαφανεῖς περιστῆναι, κληθείσας [t]ὀνόματα πομφόλυγας, [v]τὰς δὲ τῆς

[c] νωτερὰ A.
[g] τε om. Plat.
[h] αὐτῆς τι τῆς Plat.
[i] φαντάζεται Plat.
[j] τῇ τοῦ Plat. Tum στόματος Plat.
[k] λειαινόμενα Plat.
[l] ἀντικάοντα Plat.
[m] φερόμενά Plat.
[n] τὰς τῆς Plat.
[o] τέμνοντά τε Plat.
[p] δρῦμέα A.
[q] προλελεπτυσμένων Plat.
[r] περιτεινόμενα Plat.
[s] δὲ καὶ Plat.
[t] ὄνομα Plat.
[v] τὰ Plat.

γεώδους, ὁμοῦ κινουμένης [u]τε καὶ [x]ἀναιρουμένης, ζέσιν τε καὶ ζύμωσιν [y]ἐπικληθῆναι, τὸ δὲ τούτων αἴτιον τῶν παθημάτων, ὀξὺ προσρηθῆναι. Ξύμπασι [z]δὲ περὶ ταῦτα εἰρημένοις πάθος ἐναντίον ἀπ᾽ ἐναντίας ἐστὶ προφάσεως, ὁπόταν [a]ἡ τῶν εἰσιόντων [b]σύστασις ἐν ὑγροῖς, οἰκεία τῇ τῆς γλώττης ἕξει πεφυκυῖα, [c]λειαίνῃ μὲν ἐπαλείφουσα τὰ τραχυνθέντα, τὰ δὲ παρὰ φύσιν συνεστῶτα, ἢ κεχυμένα, τὰ μὲν [d]συνάγῃ, τὰ δὲ, χαλᾷ, καὶ πάνθ᾽ ὁτιμάλιστα [e]ἱδρύῃ κατὰ φύσιν. Ἡδὺ καὶ προσφιλὲς [f]πάντῃ πᾶν τὸ τοιοῦτον ἴαμα τῶν βιαίων παθημάτων γιγνόμενον, κέκληται γλυκύ. Καὶ τὰ μὲν δὴ ταύτῃ, ταῦτα.

6 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 75.]

Τὴν δὲ δὴ τοῦ στόματος ἡμῶν δύναμιν ὀδοῦσι καὶ γλώττῃ καὶ χείλεσιν ἕνεκα τῶν ἀναγκαίων καὶ τῶν ἀρίστων διεκόσμησαν οἱ διακοσμοῦντες, ᾗ νῦν διατέτακται· τὴν μὲν εἴσοδον, τῶν ἀναγκαίων μηχανώμενοι χάριν· τὴν δὲ ἔξοδον, τῶν ἀρίστων· ἀναγκαῖον μὲν γὰρ πᾶν ὅσον [a]συνέρχεται τροφὴν διδὸν τῷ σώματι· τὸ δὲ λόγων νᾶμα ἔξω ῥέον, καὶ ὑπηρετοῦν φρονήσει, κάλλιστον καὶ ἄριστον πάντων ναμάτων.

7 Περὶ ἁφῆς.

[a]Ἀριστοτέλης ἅπτεσθαι δὲ διὰ τοῦ μεταξὺ σώματος τῆς σαρκὸς [b]καὶ τὸ ἀπὸ τούτου. Τὸ δὴ τοιοῦτον ἀέρα ἢ τὸ ὕδωρ ὑπάρχειν, ἢ ἐκ τούτων τι κοινόν. Λανθάνειν [c]δὲ ἐπί

[u] τε om. Plat.
[x] αἰρομένης Plat.
[y] ἐπίκλην κληθῆναι Plat.
[z] δὲ τοῖς Plat.
[a] ᾗ A.
[b] σύστασιν A.
[c] λεῖα· ἡ A.
[d] συνάγει A.
[e] ἱδρύει A.
[f] παντὶ Plat.

6.

[a] εἰσέρχεται Plat.

7.

Disputantem de hisce invenies Stagiritam de Anima II. 11. HEEREN.

[a] Ἀριστοτέλης] Περὶ ἁφῆς Ἀριστοτέλους A. rubris litteris.

[b] καὶ τοῦ ἁπτομένου, *et ejus quod tangitur,* rescripsi pro καὶ τὸ ἀπὸ τούτου. HEEREN. Idem mox τοιοῦτο ἢ τόν.

[c] δὲ] τε A.

τε τῆς γεύσεως καὶ τῆς ἁφῆς, διὰ τὸ μὴ διὰ μακροῦ γίγνεσθαι, καθάπερ ἐπὶ τῶν ὁρατῶν καὶ ἀκουστῶν καὶ ὀσφραντῶν. Τοῦ δὲ [d] κινητοῦ κατὰ τόπον ὃν δὴ προσείπομεν ὁρμητικὸν, τὸ πρῶτον κινοῦν, καὶ ἐν ἡμῖν καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ζώοις ἀκίνητον εἶναι.

Κεφ. μς΄.

ΠΕΡΙ ΦΩΝΗΣ ΚΑΙ ΕΙ ΑΣΩΜΑΤΟΣ Ἡ ΦΩΝΗ ΚΑΙ ΤΙ ΑΥΤΗΣ ΤΟ ἩΓΕΜΟΝΙΚΟΝ.

Πλάτων τὴν φωνὴν ὁρίζεται πνεῦμα διὰ στόματος ἀπὸ διανοίας, καὶ πληγὴν ὑπ᾽ ἀέρος δι᾽ ὤτων καὶ ἐγκεφάλου καὶ αἵματος μέχρι ψυχῆς διαδιδομένην. Λέγεται δὲ καὶ
[1114] καταχρηστικῶς ἐπὶ τῶν ἀλόγων ζώων φωνὴ καὶ τῶν ἀψύχων, ὡς [a] χρεμετισμοὶ καὶ ψόφοι. Κυρίως δὲ φωνὴ ἔναρθρός ἐστι, ἔστι γὰρ φωτίζουσα τὸ νοούμενον.

Κεφ. μζ΄.

[a] ΠΕΡΙ ΦΑΝΤΑΣΙΑΣ ΚΑΙ ΚΡΙΤΗΡΙΟΥ.

Ἀριστοτέλης φαντασίαν δ᾽ εἶναι πάθος τι, καὶ [b] κίνησιν τῆς κατ᾽ ἐνέργειαν αἰσθήσεως. Ὠνομάσθαι [c] δ᾽ ἀπὸ μιᾶς

d κινητοῦ] νικητικοῦ A.

I.

Platonis placitum exstat quoque ap. Plut. IV. 19. et Gal. c. XXVII. Habet vero hanc *vocis* definitionem Plato in Timæo Op. III. p. 67. Quæ tamen de abusu nominis adduntur, non Platonis sunt, sed ex ipso scriptoris ingenio profecta videntur. HEEREN. Mox διαδεδομένην Heeren.

a χρεμετισμοὶ] χλεμετισμοὶ A.

I.

a Capitis titulum iterum ex Phot. supplevi, deest enim in codd. Desumta autem sunt hæc Aristotelica maxime ex Libr. de Anima III. 3. HEEREN.

b κίνησιν] κίνησις A.

c δ᾽ ἀπὸ bene codd. V. A. E. pro ἀπό. In proximis τῷ, *eo quod*, rescripsi pro τό. Voces nempe φαίνεσθαι et φαντασία derivata esse ex φάος. Ceterum ap. Arist. hanc

τῶν αἰσθήσεων τῆς ὁράσεως, τῷ φαίνεσθαι παρὰ τὸ φάος ἔχειν τὴν ἐπίρρησιν. [d]Τοῦτο δ' οἰκεῖον [e]εἶναι τῆς ὄψεως, διατείνειν δὲ εἰς πάσας τὰς αἰσθήσεις καὶ τὰς διανοητικὰς κινήσεις, καὶ γὰρ ταύτας ὁμωνύμως λέγεσθαι φαντασίας. Κριτήρια δ' εἶναι τῆς τούτων γνώσεως τόν τε νοῦν καὶ τὴν αἴσθησιν, τὸν μὲν τῶν νοητῶν, τὴν δὲ τῶν αἰσθητῶν. [f]Οὔτε γὰρ τὸ καθόλου δύναιτ' ἂν αἴσθησις ἐπικρίνειν, οὔτε τὸ καθ' ἕκαστον νοῦς. Πάντα δ' ἐκ τούτων συνεστάναι καὶ διὰ τούτων.

Κεφ. μή.

ΠΕΡΙ ΔΟΞΗΣ.

1 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Σοφιστοῦ [p. 263.]

Τί δὲ δὴ διάνοιά τε καὶ δόξα καὶ φαντασία; Μῶν οὐκ ἤδη δῆλον ὅτι ταῦτα [a]γε ψευδῆ τε καὶ ἀληθῆ πάνθ' ἡμῶν ἐν ταῖς ψυχαῖς [b]ἐγγίγνεται; Ὧδ' [c]εἴσει ῥᾷον, [d]πρῶτον λάβῃς αὐτὰ, τί ποτ' ἐστὶ, καὶ τί διαφέρουσιν ἕκαστα ἀλλήλων. [e]Διδοῦ μόνον. Οὐκοῦν διάνοια μὲν καὶ λόγος ταυτόν· πλὴν ὁ μὲν ἐντὸς τῆς ψυχῆς πρὸς αὐτὴν διάλογος ἄνευ φωνῆς γιγνόμενος, τοῦτ' [f]αὐτὸ ἡμῖν ἐπωνομάσθη διάνοια; Πάνυ μὲν οὖν. Τὸ [g]δὲ ἀπ' ἐκείνης ῥεῦμα διὰ τοῦ στόματος ἰὸν μετὰ φθόγγου, κέκληται λόγος; Ἀληθῆ. Καὶ μὴν ἐν λόγοις [h]γε αὖ, οἷς μὲν ἐνόν. Τὸ ποῖον; Φάσιν τε καὶ ἀπό-

etymologiam frustra quæris. HEEREN.

[d] Τοῦτο, nempe τὸ φαίνεσθαι. Post διατείνει addidi εἰς, *spectat ad ceteros quoque census*. HEEREN.

[e] μὲν εἶναι Heeren.

[f] Corrupte exstat ap. Cant. οὔτε γὰρ τὸ καθόλου δύναται ἀναισθήσεις ἐπικρίνειν, οὔτε τὸ καθ' ἕκαστον. Rescripsi δύναιτ' ἂν αἴσθησις, et post ἕκαστον supplevi νοῦς, codd. V. A. auctoritate. HEEREN.

1.

[a] γένη Plat.

[b] ἐγγίγνεται; Πῶς; Plat.

[c] εἴσῃ Plat. εἴσι A.

[d] ἂν πρῶτον λάβῃς Plat. π. λάβεις A.

[e] Δίδου Plat. αἰδοῦ A.

[f] αὐτόν μιν A.

[g] δέ γ' ἀπ' Plat.

[h] γε αὐτὸ ἴσμεν ὂν Plat.

φασιν. Ἴσμεν. Ὅταν οὖν τοῦτο ἐν ψυχῇ κατὰ διάνοιαν ἐγγίγνηται μετὰ σιγῆς, πλὴν δόξης, ἔχεις ὅ τι προσείπῃς αὐτό; Καὶ πῶς; Τί δ᾽, ὅταν [i]δόξα μὴ καθ᾽ [k]αὑτὸ, ἀλλὰ δι᾽ αἰσθήσεως παρῇ τινι τὸ τοιοῦτον αὖ πάθος, [l]οἷόν τε ὀρθῶς εἰπεῖν ἕτερόν τι πλὴν [m]φαντασίας; Οὐδέν. Οὐκοῦν ἐπείπερ λόγος ἀληθὴς ἦν καὶ ψευδὴς, τούτων δ᾽ ἐφάνη διάνοια μὲν αὐτῆς πρὸς ἑαυτὴν ψυχῆς διάλογος, δόξα δὲ διανοίας ἀποτελεύτησις, [n]φαίνεσθαι δὲ ὃ λέγομεν, σύμμιξις αἰσθήσεως καὶ δόξης· ἀνάγκη δὴ καὶ τούτων [o]τῶν λόγων συγ- p. 154.
γενῶν ὄντων, ψευδῆ τε αὐτῶν ἔνια καὶ ἐνίοτε εἶναι; Πῶς δ᾽ οὔ; Κατανοεῖς οὖν, ὅτι πρᾳότερον [p]εὑρὲ ψευδὴς δόξα καὶ λόγος.

2 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Συμποσίου [p. 219.]

[1116] Ἤτοι τῆς διανοίας [a]ὀξὺ βλέπειν, ὅταν ἡ τῶν ὀμμάτων τῆς ἀκμῆς λήγειν ἐπιχειρῇ.

3 Πλάτωνος Πολιτείας γ΄. [p. 413.]

Φαίνεταί μοι δόξα ἐξιέναι ἐκ διανοίας, ᾗ ἑκουσίως ἢ ἀκουσίως· [a]ἑκουσίως μὲν, ἡ ψευδὴς τοῦ μεταμανθάνοντος· ἀκουσίως δὲ, πᾶσα ἡ ἀληθής. Τὸ μὲν τῆς ἑκουσίου, ἔφη, μανθάνω· τὸ δὲ τῆς ἀκουσίου [b]οὐ δέομαι μαθεῖν. Τί δέ; οὐ καὶ σὺ ἡγῇ, ἔφην ἐγὼ, τῶν μὲν ἀγαθῶν [c]ἑκουσίως στέρεσθαι τοὺς ἀνθρώπους, τῶν δὲ κακῶν, [d]ἀκουσίως; ἢ οὐ τὸ μὲν ἐψεῦσθαι τῆς ἀληθείας, κακὸν, τὸ δὲ ἀληθεύειν, ἀγαθόν; οὐ τὸ τὰ ὄντα δοξάζειν, ἀληθεύειν δοκεῖ σοι εἶναι; Ἀλλ᾽, ἦ δ᾽ ὅς, ὀρθῶς λέγεις· καί μοι δοκοῦσιν ἄκοντες ἀληθοῦς δόξης στερίσκεσθαι.

[i] δόξα om. Plat.
[k] αὐτὴν Plat.
[l] ἆρ᾽ οἷόν Plat.
[m] φαντασίαν Plat.
[n] φαίνεται Plat.
[o] τῷ λόγῳ Plat.
[p] εὑρέθη Plat.

2.
[a] ὀξὺ βλέπειν A. Cant. ἄρχεται ὀξὺ βλέπειν Plat. Supra . . τοι A.

3.
[a] ἑκουσίως—μεταμανθάνοντος om. A.
[b] οὐ om. Plat.
[c] ἀκουσίως Plat.
[d] ἑκουσίως Plat.

Κεφ. μθʹ.

[a]ΠΕΡΙ ΑΝΑΠΝΟΗΣ ΚΑΙ ΠΑΘΩΝ.

Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου [p. 79.]

Πάλιν δὲ τὸ τῆς ἀναπνοῆς ἴδωμεν πάθος, αἷς χρώμενον αἰτίαις τοιοῦτον γέγονεν οἷόν περ τὰ νῦν ἐστιν. Ὧδ' οὖν. Ἐπειδὴ κενὸν οὐδέν ἐστιν [b]ὃ τῶν φερομένων δύναιτ' ἂν εἰσελθεῖν τι, τὸ δὲ πνεῦμα φέρεται παρ' ἡμῶν ἔξω, τὸ μετὰ τοῦτο ἤδη παντὶ δῆλον, ὡς οὐκ εἰς κενὸν, ἀλλὰ τὸ πλησίον ἐκ τῆς ἕδρας ὠθεῖ· τὸ δὲ ὠθούμενον ἐξελαύνει τὸ πλησίον ἀεὶ, καὶ [c]κατ' αὐτὴν τὴν ἀνάγκην πᾶν περιελαυνόμενον εἰς τὴν ἕδραν, ὅθεν ἐξῆλθε τὸ πνεῦμα εἰσιὸν ἐκεῖσε, καὶ ἀναπληροῦν αὐτὴν, ξυνέπεται τῷ πνεύματι, καὶ τοῦτο ἅμα πᾶν οἷον τροχοῦ περιαγομένου γίγνεται, διὰ τὸ κενὸν μηδὲν εἶναι. Διὸ [d]δὴ τῶν μὲν στηθῶν καὶ [e]τοῦ πνεύμονος ἔξω μεθιὲν τὸ πνεῦμα, πάλιν ὑπὸ τοῦ περὶ τὸ σῶμα ἀέρος, εἴσω διὰ μανῶν τῶν [f]σαρκικῶν δυομένου καὶ περιελαυνομένου, γίνεται πλῆρες· αὖθις δὲ ἀποτρεπόμενος ὁ ἀὴρ, καὶ διὰ τοῦ σώματος [g]ἔξωθεν ἰὼν, εἴσω τὴν ἀναπνοὴν περιωθεῖ, κατὰ [h]τὴν στόματος καὶ τὴν τῶν μυκτήρων δίοδον. Τὴν δὲ αἰτίαν τῆς ἀρχῆς αὐτῶν θετέον τήνδε. Πᾶν ζῶον αὐτοῦ [i]τὰ ἐντὸς περὶ [k]τὰς φλέβας καὶ τὸ αἷμα θερμότητα ἔχει, οἷον ἐν

I.

[a] Capitis inscriptio desideratur in codd. adeoque ex Photio a me suppleta est. Sanam tamen eam esse, vix mihi persuadeo. Nam de *passionibus* hic agi alienum videtur, nec in loco Platonis quidquam de iis occurrit. Legendum itaque suspicor, περὶ τῶν τῆς ἀναπνοῆς παθῶν, *de respirationis affectionibus*, ut statim ap. Plat. in initio loci, τὸ τῆς ἀναπνοῆς ἴδωμεν πάθος. HEEREN.

[b] εἰς ὃ Plat. Cant.

[c] κατὰ ταύτην Plat.

[d] δὴ τὸ τῶν στηθῶν Plat.

[e] τὸ τοῦ Plat.

[f] σαρκῶν Plat.

[g] ἔξω Plat.

[h] τὴν τοῦ Plat.

[i] πάντως Plat.

[k] τὸ αἷμα καὶ τὰς φλέβας Plat. Cant.

αὐτῷ πηγήν τινα ἐνοῦσαν πυρός· ὃ δὴ καὶ προσεικάζομεν
τῷ τοῦ κύρτου πλέγματι κατὰ μέσον διατεταμένον ἐκ πυρὸς
πεπλέχθαι πᾶν· τὰ δὲ ἄλλα ὅσα ἔξωθεν, ἀέρος. Τὸ θερμὸν
δὴ κατὰ φύσιν εἰς τὴν αὑτοῦ χώραν ἔξω πρὸς τὸ ξυγγενὲς
ὁμολογητέον ἰέναι. Δυοῖν δὲ ταῖν διεξόδοιν οὔσαιν, τῆς μὲν
κατὰ τὸ σῶμα ἔξω, τῆς δὲ αὖ κατὰ [l]στόμα καὶ τὰς ῥῖνας,
ὅταν μὲν ἐπὶ [m]θάτερα ὁρμήσῃ, θάτερα περιωθεῖ· τὸ δὲ [n]περιωθὲν,
εἰς τὸ πῦρ ἐμπίπτον, θερμαίνεται, τὸ δ' ἐξιὸν, ψύχεται.
[o]Μεταβαλλούσης δὲ τῆς [p]ψυχρότητος, καὶ τῶν κατὰ τὴν
ἑτέραν ἔξοδον θερμοτέρων γιγνομένων, πάλιν ἐκείνῃ ῥέπον αὖ τὸ
θερμότερον μᾶλλον, πρὸς τὴν αὑτοῦ φύσιν φερόμενον, περιωθεῖ
τὸ κατὰ θάτερα. Τὸ δὲ, τὰ αὐτὰ πάσχον καὶ τὰ αὐτὰ
[q]ἀνταποδιδὸν ἀεὶ, [r]κύκλον ἀεὶ σαλευόμενον, ἔνθα καὶ ἔνθα
ἀπειργασμένον ὑπ' ἀμφοτέρων, τὴν ἀναπνοὴν καὶ ἐκπνοὴν
γίγνεσθαι παρέχεται. Καὶ δὴ καὶ τὰ τῶν περὶ τὰς ἰατρικὰς
σικύας παθημάτων αἴτια, καὶ τὰ τῆς πόσεως, τά τε
τῶν ῥιπτουμένων, ὅσα ἀφεθέντα μετέωρα καὶ ὅσα [s]ἐκ πηγῆς
φέρεται, ταύτῃ διωκτέον, καὶ ὅσοι φθόγγοι ταχεῖς καὶ
βραδεῖς, ὀξεῖς τε καὶ βαρεῖς φαίνονται· τοτὲ μὲν, ἀνάρ- p. 155.
μοστοι φερόμενοι, δι' ἀνομοιότητα τῆς ἐν ἡμῖν ὑπ' αὐτῶν
κινήσεως· τοτὲ δὲ, ξύμφωνοι, δι' ὁμοιότητα. Τὰς γὰρ τῶν
προτέρων καὶ θαττόνων [t]καὶ βραδύτερων κινήσεις ἀποπαυο-
μένας, ἤδη τε εἰς ὅμοιον ἐληλυθυίας, αἷς ὕστερον αὐτοὶ προσ-
φερόμενοι κινοῦσιν ἐκείνας, καταλαμβάνουσι· καταλαμβά-
νοντες δὲ, οὐκ ἄλλην ἐπεμβάλλοντες ἀνετάραξαν κίνησιν,
ἀλλ' ἀρχὴν βραδυτέρας φορᾶς, [u]καὶ κατὰ [x]τοῦ θάττονος·

[l] τὸ στόμα Plat.
[m] θάτερα ὁρμήσῃ om. A.
[n] περιωσθὲν Plat.
[o] μεταβαλούσης Plat.
[p] θερμότητος Plat.
[q] ἀποδιδὸν A.
[r] κύκλῳ οὕτω Plat.
[s] ἐπὶ γῆς Plat.
[t] οἱ βραδύτεροι Plat.
[u] καὶ om. Plat.
[x] τὴν τῆς θάττονος Plat.

ἀποληγούσης δὲ ὁμοιότητα προσάψαντες, μίαν ἐξ ὀξείας καὶ βαρείας [y] συνεκεράσαντο πάθην· ὅθεν ἡδονὴν μὲν τοῖς ἄφροσιν, εὐφροσύνην δὲ τοῖς ἔμφροσι, διὰ τὴν τῆς θείας ἁρμονίας [z] κίνησιν, ἐν θνηταῖς γενομένην φοραῖς παρέσχον. Καὶ δὴ καὶ τὰ τῶν ὑδάτων πάντα ῥεύματα, ἔτι [a] τε τὰ τῶν κεραυνῶν πτώματα, καὶ τὰ θαυμαζόμενα ἠλέκτρων πέρι τῆς [b] ἕλξεως καὶ τῶν Ἡρακλείων λίθων, πάντων τούτων ὁλκὴ μὲν οὐκ ἔστιν [c] οὐδενὶ ποτέ· τὸ δὲ κενὸν εἶναι μηδὲν, περιωθεῖν τε αὐτὰ ταῦτα εἰς ἄλληλα, [d] τὰ τὸ δὲ διακρινόμενα καὶ συγκρινόμενα πρὸς τὴν αὑτῶν διαμειβόμενα ἕδραν ἕκαστα ἰέναι πάντα, τούτοις τοῖς παθήμασι πρὸς ἄλληλα συμπλεχθεῖσι, [e] τεθαυματουργημέναι τῷ κατὰ τρόπον [f] φανήσεται ζητοῦντι. Καὶ δὴ καὶ τὸ τῆς ἀναπνοῆς (ὅθεν ὁ λόγος ὥρμησε) κατὰ ταῦτα καὶ διὰ τούτων γέγονεν, ὥσπερ ἐν τοῖς [g] ἔμπροσθεν εἴρηται, τέμνοντος μὲν τὰ [h] σῖτα τοῦ πυρὸς, αἰωρουμένου δὲ ἐντὸς τῷ πνεύματι συνεπομένου, τὰς φλέβας δὲ ἐκ τῆς κοιλίας τῇ [i] συναιωρήσει πληροῦντος, τῷ τὰ τετμημένα αὐτόθεν ἐπαντλεῖν, καὶ διὰ ταῦτα δὴ καθ' ὅλον τὸ σῶμα πᾶσι τοῖς ζώοις τὰ τῆς τροφῆς νάματα οὕτως ἐπίρρυτα γεγονέναι. Νεότμητα δὲ καὶ ἀπὸ συγγενῶν ὄντα, τὰ μὲν, καρπῶν, τὰ δὲ, χλόης, ἃ [k] ὁ θεὸς ἐπ' αὐτὸ τοῦθ' ἡμῖν ἐφύτευσεν, εἶναι τροφὴν, παντοδαπὰ μὲν χρώματα [l] ἔχει διὰ τὴν σύμμιξιν· ἡ δ' ἐρυθρὰ πλείστη περὶ [m] αὐτὰ χρόα διαθεῖ, τῆς τοῦ πυρὸς τομῆς τε καὶ ἐξομόρξεως ἐν ὑγρῷ δεδη-

[y] συνεκέρασαν τὸ πάθος A.
[z] μίμησιν Plat. Supra εὔφροσι A. ἐμφ. bis Cant.
[a] δὲ Plat.
[b] λέξεως A.
[c] ὀῦνὶ A.
[d] τε διακρινόμενα καὶ συγκρινόμενα Plat. καὶ συγ. om. A.
[e] τεθαυματουργημένα Plat.
[f] ζητοῦντι φανήσεται Plat.
[g] πρόσθεν Plat.
[h] σιτία Plat.
[i] ξυναιρήσει A.
[k] ὁ om. Plat.
[l] ἴσχει Plat.
[m] αὐτὸ Plat.

μιουργημένη [n]φύσει. Ὅθεν τοῦ κατὰ [o]σῶμα ῥέοντος τὸ χρῶμα ἔσχεν οἵαν ὄψιν διεληλύθαμεν, ὃ καλοῦμεν αἷμα, νομὴν σαρκῶν καὶ ξύμπαντος [p]τοῦ σώματος, ὅθεν ὑδρευόμενα ἕκαστα πληροῖ τὴν τοῦ κενουμένου βάσιν.

[n] φύσις Plat. [o] τὸ σῶμα Plat. [p] τοῦ σώματος om. Cant.

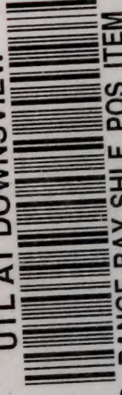
UTL AT DOWNSVIEW
D RANGE BAY SHLF POS ITEM C
39 16 09 11 03 008 5